एकविंशति

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

लिप्यन्तर तथा शब्दार्थ

हरिशंकर शर्मा

साहित्य अकादेमी

Ekavimshati—21 Short Stories by Rabindranath Tagore. Devanagari transliteration and explanatory notes by Harishankar Sharma, with introduction by Somnath Maitra. Frontispiece by Muirhead Bone. Sahitya Akademi, New Delhi (1963).

Price : de luxe Rs. 20; ordinary Rs. 16

आमुख : म्युरहेड बोन के धातु-रेखाचित्र की अनुकृति
(रवीन्द्र-सदन, शान्तिनिकेतन के सौजन्य से)

विश्वभारती प्रकाशन के सौजन्य से
प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन

प्राप्ति-स्थान
साहित्य अकादेमी, रवीन्द्र भवन
फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली

मुद्रक
ब्रजरत्न मूंधड़ा
बिनानी प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड
३८, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता-१

मूल्य
विशेष संस्करण २० रुपये
साधारण संस्करण १६ रुपये

परिचय

:: १ ::

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियों के संकलन का देवनागरी लिपि में प्रकाशन तथा भारत की प्रधान भाषाओं में उनके अनुवाद को प्रकाशित करने की साहित्य अकादमी की योजना की वे सभी भारतीय प्रशंसा करेंगे जो श्रेष्ठ साहित्य का आदर करते हैं।

रवीन्द्रनाथ की कहानियों ने उन्हें विश्व के कहानी-कला के श्रेष्ठतम शिल्पियों में स्थान प्रदान किया है, अतः उनकी कहानियों की प्रमुख विशेषताओं की समीक्षा करना रोचक होगा। किन्तु ऐसा करने के पूर्व हमें यह स्मरण रखना चाहिये कि कहानियाँ लिखना ही उनके जीवन का प्रधान कार्य नहीं था और वे उन धाराओं में से, जिनमें होकर उनकी बहुमुखी प्रतिभा व्यक्त हुई है, केवल एक का प्रतिनिधित्व करती हैं। यहाँ प्रस्तुत की गई कहानियों के उचित मूल्यांकन की दृष्टि से प्रारंभ में ही उनके लेखक के व्यक्तित्व, उसकी उपलब्धियों की प्रकृति तथा सीमाओं को मोटे तौर पर समझ लेना सहायक होगा।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर संसार के महानतम साहित्यकारों में से हैं। यह तो सर्वविदित है कि गीति-कवि की दृष्टि से किसी युग तथा देश में उनकी बराबरी करने वाला दूसरा कवि नहीं हुआ, किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि अन्य अनेक काव्य-रूपों की रचना में भी उन्होंने श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त किया। महाकाव्य को छोड़ कर साहित्यिक अभिव्यक्ति का ऐसा कोई प्रकार नहीं है जिसके प्रयोग में उन्होंने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त न की हो। कवि के रूप में तो वे महान् थे ही, अपने उपन्यासों में, कहानियों में, गद्य-पद्य दोनों में लिखे गये सामाजिक नाटकों तथा रूपकों में, सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक और धार्मिक विषयों पर लिखे अपने निबन्धों मे, अपने अनेक सरस पत्रों में, प्रभावशाली साहित्यिक समीक्षाओं में, बच्चों के लिये लिखी आकर्षक पुस्तकों में, आत्म-परिचयात्मक संस्मरण आदि में भी वे कम नहीं है। सृजनात्मक प्रेरणा उनमें इतनी बलवती और आग्रहशील थी कि साठ वर्ष से भी अधिक समय तक निरन्तर साहित्य-रचना के पश्चात् भी वह क्षीण नहीं हुई। उनके रचे साहित्य की प्रचुरता और विविधता अद्भुत है,

किन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस परिमाण में से अधिकांश बहुत ही उच्च कोटि का है। सुदीर्घ जीवन-व्यापी अपनी कला के सतत अभ्यास ने उसे क्षीण और रसहीन बनाने की अपेक्षा उल्टे अनुपम सौन्दर्य से युक्त नई कृतियां प्रदान कीं।

लेखक के रूप में रवीन्द्रनाथ की पहुंच और गहराई उनके समृद्ध और उच्च व्यक्तित्व के केवल एक पक्ष को ही प्रकट करती हैं, और उनके विषय में यह कहना नितान्त सत्य है कि अपनी प्रसिद्ध कविता के सम्राट् शाहजहां के समान वह अपनी रचनाओं से भी महान् हैं। उनकी महत्ता तथा हमारे समय और भविष्य के लिए उनके महत्त्व को पूर्ण रूप से तब तक समझना संभव नहीं होगा जब तक हम उनके विविध कार्यों को एक-दूसरे के साथ मिला कर नहीं देखेंगे और उनके जीवन को एक पूर्ण प्रकाशमान नक्षत्र के रूप में नहीं देखेंगे। उनकी आरंभिक अवस्था का समय ऐसा था जब उन्होंने अपनी पारिवारिक जायदाद की देख-भाल करते हुए पद्मा नदी के किनारे स्थित बंगाल के गांव के आकर्षक वातावरण में जन-समाज की आंखों से ओझल रह कर एकान्त जीवन बिताना पसन्द किया था, जहां वे गरीबों के घरों के नीरव जीवन-प्रवाह का सहानुभूति से निरीक्षण करते थे और विविध प्रकार की साहित्य-रचना करके, विशेष कर कविताओं और कहानियों की रचना में सारा दिन व्यतीत करते थे। किन्तु उनके लिए वह जीवन बहुत दिन तक नहीं टिक सकता था, क्योंकि उनके अन्दर की शक्ति उन्हे निरन्तर चिर नूतन कार्यों के लिये प्रेरित कर रही थी और उन्हें बीच में आराम करने के लिये नहीं छोड़ सकती थी। इसलिए हम उन्हें सदा आगे बढ़ता पाते हैं और अपने लिए किसी एक काम या सफलता पर संतोष करके बैठे नहीं देखते। उस समय के लिखे हुए पत्रों में से एक में हम उन्हें यह कहता हुआ पाते हैं कि वे विविध प्रकार के कार्य स्वीकार कर रहे थे; क्योंकि वे सोचते थे कि वास्तविक महत्त्व के कार्य द्वारा ही मनुष्य अपने को पूर्ण कर सकता है। विशाल जगत् के मनुष्यों और उनके विविध क्रिया-कलापों के साथ अपने को एक रूप करने की अपनी इच्छा के कारण पद्मा के किनारे के सुखमय एकान्त शान्तिपूर्ण जीवन को छोड़कर वे परिश्रम और संघर्ष के जगत में प्रविष्ट हुए। यह केवल एक उदाहरण है कि जब जीवन एक विशेष ढंग पर निर्बाध गति से प्रवाहित होने लगता तो वे कैसे एक प्रकार की ऊब का अनुभव करने लगते और मुड़ कर एक नया पथ ग्रहण कर लेते जो सृजनात्मक प्रयास के विशाल क्षेत्र में ले जाता। उनके जीवन

में यह बार-बार घटित हुआ और एक अध्याय बन्द करके नये अध्याय का प्रारंभ करने में, जो उनके व्यक्तित्व के अभी तक किसी अज्ञात पहलू को प्रकट होने का स्वतंत्र अवसर प्रदान कर सकता, उन्होंने कभी संकोच का अनुभव नहीं किया।

रवीन्द्रनाथ की सृजनात्मकता की किसी एक अभिव्यक्ति को अलग करके देखना भूल है। उन्होंने जो कुछ किया उसमें से—उनकी साहित्यिक कृतियों में, उनकी गीति-रचनाओं में, विश्वभारती तथा ग्राम-संगठन-केन्द्र और श्री-निकेतन के कार्य में, हर प्रकार के अन्याय और उत्पीड़न के विरुद्ध उनके संघर्ष में, स्वाधीनता के लिये राष्ट्रीय संघर्ष में उनके योगदान में, संसार के लोगों के समीप भारत का सन्देश पहुँचाने के लिए पूर्व और पश्चिम में की गई उनकी अनेक यात्राओं में, संसार के प्रतिष्ठित व्यक्ति के नाते प्रत्येक देश के उच्चतम व्यक्तियों के साथ उनके घनिष्ठ संपर्क में, और अन्य अगणित कार्यों में—एकता और सामंजस्य का स्पष्ट स्वर सुनाई पड़ता है। वह प्रधान और केन्द्रीय स्वर कहाँ से आया यह हम अभी देखेंगे। एक व्यक्ति का इतने प्रकार की प्रतिभाओं से सम्पन्न होना एक अद्भुत बात है। और उनमें इन शक्तियों का जो सम्मिलित सामंजस्य था वह और भी दुर्लभ बात है। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न अंगों ने एक-दूसरे से जैसे अभिन्न रूप में मिल कर उनके व्यक्तित्व को सर्वाङ्ग पूर्णता प्रदान की थी। जो भी कार्य उन्होंने किये अथवा अपने हाथ में लिये, जैसा कि हम स्पष्ट करने की चेष्टा करते आ रहे हैं, वे विविध, विभिन्न तथा प्राय: प्रभावशाली महत्व के थे। किन्तु वे उन्हें इतनी शान्ति के साथ तथा ऐसे सलीके और अधिकार के साथ करते कि दर्शक उन्हें बिल्कुल सरल समझ बैठता था—और यह भूल जाता था कि उनके पीछे प्राय: जीवन भर की तैयारी थी। निरन्तर कार्य में लगे रहने पर भी इस महापुरुष को नीरवता और विश्राम का जो वातावरण घेरे हुए दिखता उसका ध्यान आते ही आश्चर्य होने लगता है। उनकी भावनाएँ, निजी जीवन की संकीर्ण सीमाओं में नहीं, अपितु विश्व-भर की मानवता में बसती थीं; और उनमें मानवीय भाव-जगत् और मानवीय जीवन की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के प्रति आश्चर्यजनक संवेदनशीलता थी। फिर भी उनका चित्त और व्यक्तित्व अविचलित रहता था।

अपने आत्म-परिचय के एक सुन्दर उद्धरण में उन्होंने उस विश्वास और आदर्श के रहस्य से हमें परिचित कराया है जिसने जीवन में उन्हें प्रेरणा दी, उनका पथ-प्रदर्शन किया और उनके नाना कार्यों को यह समन्वय प्रदान

किया। मैं उसको यहां प्रस्तुत कर रहा हूं, "मैंने इस पृथ्वी को प्रेम किया है, महत्ता के सम्मुख श्रद्धा से सिर झुकाया है, मैंने मुक्ति की कामना की है—उस मुक्ति की जो परमात्मा के समक्ष आत्म-समर्पण से आती है। उसमें निहित मानव-सत्य में मैंने विश्वास किया है, वह सदा मानव-हृदय में निवास करता है। मैं अपनी बाल्यावस्था से साहित्य-साधना बड़ी लगन से करता आ रहा हूं, मैं उसके क्षेत्र से परे पहुंच गया हूं, और मैंने यथाशक्ति अपने समस्त कृतित्व और त्याग को परमात्मा के प्रति नैवेद्य के रूप में एकत्रित किया है। यदि बाहर से मुझे विरोध मिला है, तो गहन आन्तरिक संतोष से मैं पुरस्कृत भी हुआ हूं। मैं इस पवित्र तीर्थ, इस पृथ्वी पर आया हूं। यहां प्रत्येक युग और देश में मानव-इतिहास के केन्द्र में उसका ईश्वर रहता है। उसी ईश्वर की वेदी के चरण तले मैं ध्यानमग्न होकर बैठा हूं, और अहंकार और भेद-बुद्धि से मुक्त होने के कठिन प्रयत्न में निरंतर लगा रहा हूं।"

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जो कुछ लिखा तथा जो कुछ किया उस सब में यही आदर्श प्रेरित कर रहा था। अपने देशवासियों के लिये जो सर्वोत्तम देन वे दे सकते थे उसे वे अपनी साहित्य-रचना तथा अपने अनुपम, सुन्दर और उदात्त जीवन की अमूल्य विरासत के रूप में छोड़ गये हैं। उनका मस्तिष्क सारे संसार के लिये उन्मुक्त था। वह मस्तिष्क जहाँ "सारा विश्व एक ही नीड़ में एक साथ समा सकता था।" अपनी उपलब्धियों की महत्ता और अपने व्यक्तित्व की महिमा के फलस्वरूप उन्होंने अपने युग पर अधिकार किया और अपनी जाति के लोगों को जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित किया। उन्होंने उनको शिथिलता और मिथ्या आत्म-संतोष से बचाने का प्रयत्न किया, और कर्म, आत्म-विश्वास और सत्य के निर्भय अनुगमन द्वारा पूर्णता और सुख का मार्ग दिखाया। परन्तु उनका हृदय केवल देशवासियों के ही लिये नहीं वरन् सम्पूर्ण मानवता के लिए अर्पित था। वे जीवन के पथों के पथिक थे और विषाद और कुरूपता के बीच सौन्दर्य की खोज करते और उसके गीत गाते थे। और ऐसे संसार को मानव-धर्म का उपदेश दे रहे थे जिसके अमानवीय हो जाने का भय था। ये सब बातें जर्मन दार्शनिक काउंट हेरमन्न केयसेरलिंग के मन में रही होंगी, जब सन् १९३१ में 'गोल्डन बुक अव् टैगोर' में उन्होंने टैगोर की प्रशंसा करते हुए लिखा था। उसके कुछ स्मरणीय शब्दों को मैं उद्धृत करता हूं: "कई शतियों तक उनके समान हमारी पृथ्वी पर और कोई नहीं हुआ...वे एक राष्ट्र के निर्माता हैं... मैं अपने परम मित्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जितनी प्रशंसा करता हूं उतनी और

किसी जीवित व्यक्ति की नहीं करता, क्योंकि वे सर्वाधिक विश्वजनीन हैं, सबसे अधिक विशाल और जहाँ तक मुझे ज्ञात है सबसे अधिक पूर्ण मानव हैं।"

: २ :

अब हमें रवीन्द्रनाथ की कहानियों को देखना चाहिए। कहानियों को लेकर उनके साहित्यिक स्रोत खोजना या प्रभाव की खोज करना व्यर्थ होगा, क्योंकि अपनी कहानियों में रवीन्द्रनाथ अनुपम हैं। बंगाल में कहानी-कला के क्षेत्र में उनसे पहले कोई नहीं था और किसी विदेशी लेखक का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अपनी कहानियों में वे नितान्त और अद्‌भुत ढंग से स्वयं हैं। यथार्थ में प्रवेश करने की सूक्ष्म दृष्टि से समन्वित उनकी सजीव कल्पना, सार तत्त्वों को ग्रहण करने की क्षमता, अतिशयोक्ति और भावुकता से दूर रहने की प्रवृत्ति, उनकी विशाल मानवता, अनृत और अन्याय के प्रति उनकी असहिष्णुता तथा उनकी अनुपम रचनात्मक क्षमता आदि उनकी प्रतिभा के विशिष्ट गुणों के प्रदर्शन की दृष्टि से उनकी कहानियाँ केवल उनकी कविता से पीछे हैं। और फिर वे उस दृष्टि से भी रोचक हैं कि उनमें उनके आस-पास के वातावरण तथा उन विचारों और भावों तथा उन समस्याओं की झलक मिलती है, जिन्होंने उनके जीवन में समय-समय पर उनके मन को प्रभावित किया।

गल्पगुच्छ की तीन जिल्दों में तीन-चार कहानियों को छोड़ कर उनकी सब कहानियाँ संग्रहीत हैं; जिनकी संख्या ८४ है (से, और **गल्पसल्प** को मैं छोड़ देता हूँ; क्योंकि वे ऐसी कल्पित, तारतम्यहीन और रेखाचित्रात्मक हैं कि वे कहानियों की सीमा में नहीं आ सकतीं)। इनमें से आधी कहानियाँ सन् १८९१ और १८९५ के बीच में लिखी गईं जो उनके रचनात्मक जीवन का पहला महान् काल था, जिसे साधारण रूप से **साधना**-काल कहा जाता है। यह नाम इसी नाम के मासिक पत्र के आधार पर दिया गया है, जिसके सम्पादक रवीन्द्रनाथ ठाकुर थे। शेष कहानियाँ समय-समय पर लिखी जाती रहीं, कभी-कभी कई वर्षों के अन्तर से।

बाद का सबसे बड़ा गल्प-समूह—सात सन् १९१४ में तथा तीन १९१७ में—उस युग से सम्बन्धित हैं जो 'सबुज-पत्र'-काल कहलाता है और जो सामान्यतः उनका सर्वोत्तम रचना-काल माना जाता है। इस काल में वे अपनी रचनाएँ प्रायः 'सबुज-पत्र' (हरे पत्ते) नामक मासिक पत्र में छपाते थे,

जिसका सम्पादन प्रमथ चौधुरी करते थे। प्रस्तुत संग्रह की प्रथम ग्यारह कहानियां प्रारंभिक तथा सबसे बड़े गल्प-समूह से सम्बन्धित हैं, दूसरी छः कहानियां १८९८ और १९११ के बीच में प्रकाशित हुई थीं और शेष चार 'सबुज-पत्र'-काल से सम्बन्ध रखती हैं। अंतिम कहानी पात्र और पात्री सन् १९१७ में प्रकाशित हुई थी।

मैं उनके जीवन के उस वसंत काल का उल्लेख कर चुका हूं जब वे प्रायः सिलाइदा, पातीसार, शाजादपुर आदि गांवों में रह कर अपनी पारिवारिक जायदाद की देख-भाल कर रहे थे, जिसकी अत्यन्त सुन्दर झांकियां 'छिन्न पत्रों' में मिलती हैं। ग्रामीण बंगाल के इसी वातावरण में इनकी प्रारंभिक कहानियां लिखी गई और उनमें से कई का प्रारंभ हम इन अनुपम पत्रों में खोज सकते हैं। अपनी समस्त कहानियों में रवीन्द्रनाथ को ये प्रारंभिक कहानियां सबसे अधिक प्रिय थीं। वे प्रायः कहा करते थे कि इनमें विचारों की ऐसी ताजगी और निरीक्षण की ऐसी सिधाई है जो उनमें वर्णित वातावरण तथा लेखक की यौवनावस्था के फलस्वरूप उन्हें मिली है और जो, (उन्होंने खेदपूर्वक कहा) ज्यों-ज्यों वे वृद्ध होते गए, निरन्तर बढ़ते गये और उत्तरदायित्वों से उत्पन्न चिन्ताओं और समस्याओं का भार ज्यों-ज्यों बढ़ता गया त्यों-त्यों विलीन होती गई। अपने बाद के जीवन में जब इन कहानियों को वे पढ़ते तो वे अनुभव करते थे मानो धरती से एक शालीनता चली गई हो। सन् १९३२ में इस विषय पर लिखे हुए एक पत्र में वे कहते हैं: "जब मैं बंगाल के गांवों में प्रकृति के सामने उपस्थित हुआ तो मेरे दिन प्रसन्नता से उमड़ पड़े। वह हर्ष इन सरल, अनलंकृत कहानियों में प्रवाहित है......ग्रामीण बंगाल के उस स्नेहपूर्ण आतिथ्य से मैं अब बहुत दूर चला आया हूँ, और इसका परिणाम यह हुआ है कि मोटर-कार में सवार मेरी कलम अब कभी साहित्य के उन शीतल छायामय हरे मार्गों में नहीं चलेगी।"

इन प्रारंभिक कहानियों की प्रकृति का अनुमान उनकी उत्पत्ति के विषय में रवीन्द्रनाथ के दिये हुए अपने वर्णन से हो सकेगा। २५ जून १८९५ को एक पत्र में वे शाजादपुर से लिखते हैं, "बैठा हुआ धीरे-धीरे मैं एक कहानी 'साधना' के लिए लिख रहा हूँ, मेरे आस-पास के प्रकाश, छाया और रंग मेरे शब्दों में घुले जा रहे हैं। दृश्य, पात्र और घटनाएँ जिनकी कि मैं अभी कल्पना कर रहा हूँ, उन्हें यह सूर्य, वर्षा, नदियाँ और नदी-किनारे के सरकण्डे, वर्षा ऋतु का आकाश, यह छायापूर्ण गाँव, वर्षा से प्लावित अनाज

के प्रसन्न खेत जीवन और वास्तविकता प्रदान करने तथा उनकी पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने का काम करते हैं।...यदि मैं अपनी कहानी के पृष्ठों में अपने पाठक के सामने वर्षा ऋतु के मेघरहित उस दिन के अपने सामने से बहते हुए छोटे स्रोत के धूप में चमकते हुए जल को उपस्थित कर सकता, यदि मैं गांव के दृश्य की इस शान्ति तथा इन पेड़ों की छाया को तथा इस सरिता-तट को अपने पूर्ण रूप में पाठकों के सामने रख सकता तो वे क्षण-भर में मेरी कहानी के सत्य को पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकते।"

पात्र प्रधानतः ऐसे हैं जो उन्हें गाँवों की यात्रा करते समय मिले थे—नर-नारियाँ, लड़के-लड़कियाँ और बच्चे—जीवन के निम्न स्तर से आने वाले लोग—और घटनाएँ ऐसी हैं जो गरीब लोगों की जीवन-कहानी में प्रायः मिलती हैं। इन सामान्य लोगों के जीवन-नाटक को उन्होंने असीम सहानुभूति और सद्भावना के साथ देखा था, और वास्तविकता से रत्ती-भर भी हटे बिना ऐसे आकर्षक ढंग से चित्रित किया है कि हम दया, क्रोध, हर्ष और विषाद से अभिभूत हो जाते हैं। उदाहरण के लिए **पोस्टमास्टर** की रतन को लीजिए। बारह-तेरह वर्ष की यह अनाथ बालिका, जिसकी चिन्ता करने वाला तथा जिसे अपना कहने वाला कोई नहीं था, पोस्टमास्टर के लिए सब तरह के काम करती है। शहर में पले उलापुर-जैसे सुदूरवर्ती गाँव में नियुक्त पोस्टमास्टर को निर्वासन के जीवन की उदासीनता में उसके सहवास के कारण कुछ राहत मिलती है। फिर वह बीमार हो जाता है और छोटी अपढ़ लड़की रतन के ऊपर उसकी सेवा करने तथा स्वस्थ बनाने का भार आ पड़ता है। अचानक वह नारी के रूप में सामने आती है, वह उसकी देख-भाल उसी प्रकार करती है जैसे माता अपने बच्चे की। वह अच्छा हो कर उठ बैठता है। किन्तु देहाती जीवन से वह थक जाता है और वहाँ से चले जाने का निश्चय करता है। वह किसी प्रकार भी कठोर-हृदय नहीं है, अपने ढंग से वास्तव में वह रतन के प्रति सदय है, और उसे छोड़ने के कारण वह क्षणिक पश्चात्ताप का भी अनुभव करता है। किन्तु उसकी सदय उदासीनता और रतन की गहन आसक्ति तथा संशय-रहित निर्भरता में कितनी महान् विषमता है। जब वह अपना काम छोड़ कर अपने घर कलकत्ता चला जाता और कलकत्ता ले चलने की उसकी भीरु प्रार्थना को अनुचित समझ कर अस्वीकार कर देता है तो उसकी मूक पीड़ा की करुणा हमारे हृदय को अभिभूत कर लेती है और गृह-विहीन बालिका को रवीन्द्रनाथ के पात्रों में एक निश्चित स्थान प्रदान करती है। **पोस्टमास्टर**

के पास से होकर सड़क पर आराम से अपना सौदा बेचता हुआ निकलता तो वह उसे बुलाती, और वह आकर उसके पास बैठ जाता और बातें होने लगतीं। उनका अपना खास बँधा हुआ मज़ाक था, जो प्रतिदिन चलते रहने पर भी बासी नहीं होता था और न अपनी विशेषता खोता था। और तब एक दिन काबुली वाले ने एक आदमी को छुरा भोंक दिया जो उसे धोखा देना चाहता था। फलस्वरूप उसे जेल भेज दिया गया—'ससुराल' में जिसको लेकर मिनी और वह मिल कर कितनी बार हँसे थे। कई वर्षों के पश्चात जब वह लौट कर आया और 'छोटी बच्ची' को देखने गया, तो उसने सोचा था कि मिनी अभी भी बच्ची होगी। पर वह उसके विवाह का दिन था। पहले तो उसके पिता ने बाहर आकर उससे मिलने की अनुमति नहीं दी। इसके पश्चात् मिनी के पिता और काबुलीवाला दो व्यक्तियों का अद्वितीय वर्णन आता है, जाति, भाषा, संस्कृति, सामाजिक स्थिति की दृष्टि से इतना विषम अन्तर होते हुए भी वे एक समान भाव की शृंखला के द्वारा एक-दूसरे के समीप आ गये थे—दोनों एक लड़की के पिता थे, जिसे वे असीम स्नेह करते थे। अपने घर में काबुलीवाला की भी मिनी के समान एक पुत्री थी, और जितने वर्ष वह कलकत्ता की सड़कों पर चक्कर लगाता रहा या जेल में रहा एक छोटे और मैले कागज के टुकड़े पर एक नन्हें तथा मैले हाथ की छाप अपने साथ लिये रहा—अपनी नन्ही पुत्री का स्पर्श। जैसे ही उसने यह सुना और कागज का टुकड़ा देखा तो मिनी के पिता ने अनुभव किया कि अन्य सब स्पष्ट अंतरों के होते हुए भी अपढ़ काबुली और सुसंस्कृत बंगाली मूल बातों में एक समान हैं।

यह किसी भी प्रकार दुःखान्त कहानी नहीं है। फिर भी संसार के हर घर के स्नेह की प्रतीक, अजस्र वाचालता, अदम्य उत्सुकता, और प्रत्येक आदमी के साथ मित्रता स्थापित करने की स्वाभाविक क्षमता से युक्त आकर्षक नन्ही मिनी; अपनी प्रकृति में एक ही कोमल भाव छिपाए अफगानिस्तान के पहाड़ों से आनेवाला ऊँचा, हट्टा-कट्टा फेरीवाला, अपनी पुत्री के लिए उसका स्नेह ही मिनी के लिए उसके स्नेह का कारण होता है, तथा मिनी का पिता जो अपनी प्रिय पुत्री को स्नेहपूर्ण दृष्टि से बड़ी होते हुए देखता है और उसके विवाह योग्य हो जाने पर उसकी आसन्न विदाई की कल्पना करके जिसका हृदय भारी हो जाता है; अपनी कल्पना के इन पात्रों के साथ रवीन्द्रनाथ की अद्‌भुत सहानुभूतिपूर्ण एकात्मकता और उसके चित्रण का अतीव

सौन्दर्य इस कहानी को उत्कृष्ट बना देते हैं जिसको पढ़कर द्रवित हुए बिना नहीं रहा जा सकता।

प्रस्तुत संग्रह की प्रत्येक कहानी विस्तार से विचार करने योग्य हैं। किन्तु स्थानाभाव के कारण उनमें से केवल कुछ का ही उल्लेख-मात्र किया जा सकता है।

मेघ ओ रौद्र (धूप और छाया) यद्यपि सब मिला कर बहुत सुगठित नहीं है, तथापि उसमें महान् काव्य-सौन्दर्य से युक्त कई अवतरण तथा नाटकीय प्रकार की घटनाएँ हैं। यह भी उल्लेख योग्य है कि इस कहानी में जातीय औद्धत्य और शक्ति के दर्प के विषय में रवीन्द्रनाथ का मत प्रदर्शित हुआ है। मनुष्य के अधिकारों का उनके-जैसा सतर्क प्रहरी दूसरा नहीं हुआ। मानवता तथा न्याय का कहीं भी उल्लंघन होने पर रवीन्द्रनाथ की आवाज संसार के सामने उसे प्रकट करने तथा उसकी भर्त्सना करने के लिये गूंज उठती। इस कहानी के तीन अँग्रेज़ों से सम्बन्धित घटनाएँ तत्कालीन (१८९४) तथा आगे के अनेक दशकों के भारत की करुण परिस्थिति की परिचायिका हैं।

समाप्ति में ऊधमी, लापरवाह मृण्मयी का कोमल स्नेहमयी महिला में परिवर्तन सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक तथा चित्ताकर्षक हास्य के साथ दिखाया गया है।

दृष्टिदान अपने पति के लिये अंधी पत्नी के प्रेम का वास्तविक और हृदय-द्रावक चित्र प्रस्तुत करती है जिसमे एक ओर पूर्ण निर्भरता तथा कोमलता दिखती है और दूसरी ओर ईर्ष्या, अविश्वास और झूठ को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता। साधारण लेखक के हाथों में पड़ कर यह कहानी भावुकता का प्रदर्शन-मात्र बन कर रह जाती और पत्नी नाटकीय ढंग से आत्म-प्रवंचना प्रदर्शित करती हुई मर जाती। रवीन्द्रनाथ के अचूक अनुपात-बोध ने उसे ऐसे घिसे-पिटे अन्त से बचा लिया है।

अतिथि का तारापद रवीन्द्रनाथ की अविस्मरणीय सृष्टियों में से है। उसकी आयु के लड़के मे जितने भी गुण संभवतया हो सकते हैं वे सब उसमें हैं और ऊपर से उसकी आकृति भी आकर्षक है। वह जिसके भी संपर्क में आता है उसीको अभिभूत कर लेता है, किन्तु उनमें से किसी के भी साथ वह स्थायी सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाता। प्रकृति ने उसे एक घुमक्कड़ का जीवन दिया है; एक 'अतिथि' का स्वभाव जो क्षणिक आकर्षण के वश चाह जहाँ रुक जाता, है पर सदा के लिए कहीं बस जाना जिसके भाग्य में ही नही है। वह वास्तव में प्रकृति-शिशु है, क्योंकि उसमें पूर्ण उदारता,

पक्षपातहीनता और उदासीनता है; दुनिया की कोई शक्ति उसे स्थायी रूप से किसी व्यक्ति या स्थान में आसक्त नहीं कर सकती। और इसीलिए वह एक दिन चुपचाप प्रेम, स्नेह और मैत्री द्वारा पूर्ण रूप से जकड़े जाने के पहले ही न जाने कहाँ ओझल हो जाता है।

क्षुधित पाषाण, निशीथे (आधी रात में) तथा **माष्टार मशाय** (मास्टर साहब)—प्रस्तुत संग्रह की इन तीन कहानियों में दैवी तत्त्व का स्पर्श मिलता है। इनमें पहली निस्संदेह सुन्दरतम है। यह कल्पना की अनुपम रचना है। इसमें असीम भोगों, प्रणयों, निर्दयताओं और अतृप्त वासनाओं से युक्त एक वीते युग की कल्पना की गई है। यह कहानी सूक्ष्म दर्शन, विशद वर्णन और महान् काव्यात्मक सौन्दर्य के अवतरणों से युक्त है। कहानी का केन्द्र एक मुग़लकालीन विशाल भग्नावशिष्ट महल है, जिसके पत्थर तक जीवित मास के भूखे जान पड़ते हैं। यह धुंधले प्रकाश वाला प्रान्त है, जहाँ अतीत वर्तमान के साथ आदान-प्रदान करता है—रंगीन प्रभामय अतीत के साथ नीरस और दो-टूक वर्तमान।

उस काल की कहानियों में से जिसे रवीन्द्रनाथ का मध्ययुग कहा जा सकता है, **नष्टनीड़** और **रासमणिर छेले** ये दोनों सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। पहली १९०१ में लिखी गई थी और दूसरी १९११ में। **नष्टनीड़** एक विवाहिता महिला के अपने पति के चचेरे भाई के प्रति प्रेम के उदय तथा विकास का शक्तिशाली अध्ययन है। यह प्रेम अन्त में ऐसी सर्वभक्षी वासना का रूप धारण कर लेता है जिसका आवेग असहनीय हो जाता है। यह प्रेम अव्यावहारिक पति की वुद्धिहीन अवहेलना से अनजाने ही पल्लवित होता है—एक ऐसे पति की अवहलना से जो सर्वथा सम्माननीय है, यद्यपि वह कुछ अंतर्मुखी वृत्ति का है। परंपरावादी लोगों को इस कहानी से धक्का लगा था, किन्तु उसमें 'निषिद्ध' प्रेम का चित्रण ऐसा संयमित, ऐसा कोमल तथा अशुद्धता की लेश-मात्र भी व्यंजना से इतना मुक्त है कि मर्मज्ञों ने उत्कृष्ट रचना कह कर इसका स्वागत किया था और अब यह कहानी 'क्लासिक' मानी जाती है।

रासमणिर छेले शैली के ओज की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस कहानी में एक संभ्रांत परिवार की एक दरिद्र शाखा का अभावों से जूझने का करुण संघर्ष, उसकी एक-मात्र आशा—दुर्बल, भावुक तथा अपनी अद्‌भुत लौह इच्छा वाली किन्तु साथ ही स्नेहालु माता रासमणि के समान ही दृढ़ इच्छा वाले—कालीपद की मृत्यु की भयंकर विभीषिका चित्रित है।

'सबुज पत्र' काल की भव्य कहानियों के न तो पात्र ही ग्रामीण जनता के लोग रह गए थे, और न उनकी पृष्ठभूमि ही ग्रामीण बंगाल के दृश्यों की रह गई थी। उनकी प्रकृति भी बदल गई थी; रवीन्द्रनाथ का मस्तिष्क अब समस्याओं में उलझ गया था तथा वे सामाजिक अन्यायों का प्रतिकार करने में लगे हुए थे। बंगाल के मध्यम वर्ग के घरों में स्त्रियों की दुर्दशा से उनको विशेष रूप से क्लेश हुआ और उन्हें ओजपूर्ण प्रभावशाली भाषा में इन अन्यायों को निर्भीक भाव से प्रकट करने की प्रेरणा मिली। सन् १९१४ में प्रकाशित **स्त्रीर पत्र** (स्त्री का पत्र) में बड़े प्रशंसनीय ढंग से उनके विचार प्रकट हुए हैं। पत्नी के रूप में पीड़ा और निराशा के पन्द्रह वर्षों ने यह अनुभव करने में मृणाल की सहायता की कि एक महिला की इतिश्री केवल पत्नीपन तक ही सीमित नहीं है। स्वार्थपरता, झूठ और अकथनीय नीचता का भद्दा वातावरण, जो परिवार के लोगों ने अपने घर में उत्पन्न कर रखा था और जिसके विषय में उन्होंने यह सहज आशा की थी कि उनकी महि-लाएँ उसे स्वाभाविक समझ कर स्वीकार कर लेंगी, अदम्य भावना वाली मृणाल-जैसी महिला के लिए दम घोंटने वाला था। अन्त में पारिवारिक जीवन के घृणित कारावास से जब उसे मुक्त होने का अवसर मिला तो अवर्णनीय हर्ष और मुक्ति के साथ उसने अनुभव किया कि अभी भी एक आत्मा है जिसे वह अपनी कह सकती है। अपने पति को लिखा गया उसका पत्र--यह कहानी पत्र के रूप मे ही लिखी गई है--उसके कभी न लौटने के दृढ़ निश्चय की घोषणा के साथ समाप्त होता है। यह पत्र पुरुष के उन अन्यायों, नीचताओं और निर्दयता के सम्पूर्ण इतिहास पर, एक कटु निर्णय है, जो परंपरा के रूप में अप्रतिहत भाव से माने जाते थे। तथा प्रथा के कारण पवित्र समझे जाते थे।

इस युग की अन्य अनेक कहानियों में इस विषय के अनेक रूपान्तर मिलते हैं, क्योकि समाज में महिलाओं का स्थान तथा नारी जीवन की विशेषताएँ उनके लिए गंभीर चिन्ता के विषय थे और वे इस युग में बराबर उनके विचारों के विषय बने रहे।

रवीन्द्रनाथ की कहानियों की पूर्ण समीक्षा के लिए विस्तृत स्थान की आवश्यकता है। उनकी कहानियों के इस अत्यन्त अपूर्ण पर्यवेक्षण को यहीं समाप्त करना उचित होगा। वास्तव में उनकी कहानियों के परिचय की आवश्यकता नही है, वे अपने विषय में स्वयं बहुत अच्छी तरह बता सकती हैं। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनुवाद में भी उनके अमर सौन्दर्य का

कुछ भाग पाठक के हृदय का हर्ष के साथ स्पर्श करेगा, और क्योंकि मानव-स्वभाव सर्वत्र एक समान है, अतः भारत के विभिन्न भागों के पाठक इन पात्रों में—वंग-भूमि के पुत्र-पुत्रियों में —अपने सगे-संबंधियों की परिचित रूप-रेखाएँ पाएंगे।

२० सितम्बर १९५६ सोमनाथ मैत्र

सूची-पत्र

पोस्ट्मास्टार

प्रथम काज आरम्भ करियाइ उलापुर ग्रामे पोस्ट्मास्टारके आसिते हय। ग्रामटि अति सामान्य। निकटे एकटि नीलकुठि आछे, ताइ कुठिर साहेब अनेक जोगाड़ करिया एइ नूतन पोस्ट्आपिस स्थापन कराइयाछे।

आमादेर पोस्ट्मास्टार कलिकातार छेले। जलेर माछके डाङाय तुलिले येरकम हय, एइ गण्डग्रामेर मध्ये आसिया पोस्ट्मास्टारेरओ सेइ दशा उपस्थित हइयाछे। एकखानि अन्धकार आटचालार मध्ये ताँहार आपिस; अदूरे एकटि पानापुकुर एवं ताहार चारि पाड़े जंगल। कुठिर गोमस्ता प्रभृति ये-सकल कर्मचारी आछे ताहादेर फुरसत प्राय नाइ एवं ताहारा भद्रलोकेर सहित मिशिवार उपयुक्त नहे।

विशेषत कलिकातार छेले भालो करिया मिशिते जाने ना। अपरिचित स्थाने गेले, हय उद्धत नय अप्रतिभ हइया थाके। एइ कारणे स्थानीय लोकेर सहित ताँहार मेलामेशा हइया उठे ना। अथच हाते काज अधिक नाइ। कखनो कखनो दुटो-एकटा कविता लिखिते चेष्टा करेन। ताहाते एमन भाव व्यक्त करियाछेन ये, समस्त दिन तरुपल्लवेर कम्पन एवं आकाशेर मेघ देखिया जीवन वड़ो सुखे काटिया याय—किन्तु अन्तर्यामी जानेन, यदि आरव्य उपन्यासेर कोनो दैत्य आसिया एक रात्रेर मध्ये एइ शाखापल्लव-समेत समस्त गाछगुला काटिया पाका रास्ता वानाइया देय एवं सारि सारि अट्टा-

---

करियाइ—करते ही। आसिते हय—आना पड़ा। नीलकुठि—नील की कोठी। जोगाड़—प्रयत्न, जोड़-तोड़। छेले—लड़का, आदमी। डाङाय तुलिले—धरती पर उठा कर रख देने से। गण्डग्रामेर—बड़े गाँव में। आटचालार—छप्परी में। पानापुकुर—सेवार से ढँका पोखर। चारि पाड़े—चारों किनारे पर। मिशिवार—मिलने-जुलने के। मेलामेशा—मेल-जोल। आरव्य उपन्यासेर—अरबी उपन्यास (सहस्र रजनी चरित) के। गाछगुला—वृक्षों को। सारि-सारि—पंक्ति पर पंक्ति।

लिका आकाशेर मेघके दृष्टिपथ हइते रुद्ध करिया राखे, ताहा हइले एइ आधमरा भद्रसन्तानटि पुनश्च नवजीवन लाभ करिते पारे।

पोस्ट्मास्टारेर वेतन अति सामान्य। निजे राँधिया खाइते हय एवं ग्रामेर एकटि पितृमातृहीन अनाथा वालिका ताँहार काजकर्म करिया देय, चारिटि-चारिटि खाइते पाय। मेयेटिर नाम रतन। बयस बारो-तेरो। विवाहेर विशेष सम्भावना देखा याय ना।

सन्ध्यार समय यखन ग्रामेर गोयालघर हइते धूम कुन्डलायित हइया उठित, झोपे झोपे झिल्लि डाकित, दूरे ग्रामेर नेशाखोर बाउलेर दल खोल-करताल बाजाइया उच्चैःस्वरे गान जुड़िया दित—यखन अन्धकार दाओयाय एकला बसिया गाछेर कम्पन देखिले कविहृदयेओ ईषत् हृत्कम्प उपस्थित हइत, तखन घरेर कोणे एकटि क्षीण-शिखा प्रदीप ज्वालिया पोस्ट्मास्टार डाकितेन—'रतन'। रतन द्वारे बसिया एइ डाकेर जन्य अपेक्षा करिया थाकित किन्तु एक डाकेइ घरे आसित ना; बलित, "की गा बाबु, केन डाकछ।"

पोस्ट्मास्टार। तुइ की करछिस।

रतन। एखनइ चुलो धराते येते हबे—हेंशेलेर—

पोस्ट्मास्टार। तोर हेंशेलेर काज परे हबे एखन—एकबार तामाकटा सेजे दे तो।

अनतिविलम्वे दुटि गाल फुलाइया कलिकाय फुँ दिते दिते रतनेर प्रवेश। हात हइते कलिकाटा लइया पोस्ट्मास्टार फस करिया जिज्ञासा करेन, "आच्छा रतन, तोर माके मने पड़े?"

चारिटि-चारिटि—स्वल्प, थोड़ा-बहुत। **मेयेटिर**—लड़की का।

गोयालघर—ढोर बाँधने का कमरा (गोठ)। **झोपे झोपे**—हर झाड़ी में। **डाकित**—झंकारती। **बाउलेर**—बाऊलों का (बंगाल का गायक साधु-सम्प्रदाय-विशेष)। **खोल**—मृदंग जातीय वाद्य-विशेष। **जुड़िया दित**—आरम्भ कर देते। **दाओयाय**—बरामदे में। **कोणे**—कोने में। **डाकितेन**—पुकारते। **चुलो धराते**—चूल्हा जलाने। **हेंशेलेर**—रसोई का।

तामाकटा सेजे दे—चिलम भर दे।

कलिकाय...दिते—चिलम में फूंक मारते मारते। **फस करिया**—झट से (हठात्)। **मने पड़े**—याद है।

से अनेक कथा; कतक मने पड़े, कतक मने पड़े ना। मायेर चेये बाप ताहाके वेशि भालोवासित, वापके अल्प अल्प मने आछे। परिश्रम करिया बाप सन्ध्यावेलाय घरे फिरिया आसित, ताहारइ मध्ये दैवात् दुटि-एकटि सन्ध्या ताहार मने परिष्कार छविर मतो अंकित आछे। एइ कथा हइते हइते क्रमे रतन पोस्ट्मास्टारेर पायेर काछे माटिर उपर वसिया पड़िल। मने पड़ित, ताहार एकटि छोटोभाइ छिल—बहु पूर्वेकार वर्षार दिने एक दिन एकटा डोबार धारे दुइजने मिलिया गाछेर भाङा डालके छिप करिया मिछामिछि माछधरा खेला करियाछिल—अनेक गुरुतर घटनार चेये सेइ कथाटाइ ताहार मने वेशि उदय हइत। एइरूप कथा-प्रसङ्गे माझे माझे वेशि रात हइया याइत, तखन आलस्यक्रमे पोस्ट्मास्टारेर आर राँधिते इच्छा करित ना। सकालेर वासि व्यंजन थाकित एवं रतन ताड़ाताड़ि उनुन धराइया खानकयेक रुटि सेंकिया आनित—ताहातेइ उभयेर रात्रेर आहार चलिया याइत।

एक-एकदिन सन्ध्यावेलाय सेइ वृहत् आटचालार कोणे आपिसेर काठेर चौकिर उपर वसिया पोस्ट्मास्टारओ निजेर घरेर कथा पाड़ितेन—छोटोभाइ मा एवं दिदिर कथा, प्रवासे एकला घरे वसिया याहादेर जन्य हृदय व्यथित हइया उठित ताहादेर कथा। ये-सकल कथा सर्वदाइ मने उदय हय अथच नीलकुठिर गोमस्तादेर काछे याहा कोनोमतेइ उत्थापन करा याय ना, सेइ कथा एकटि अशिक्षिता क्षुद्र वालिकाके वलिया याइतेन, किछुमात्र असंगत मने हइत ना। अवशेषे एमन हइल, वालिका कथनोपकथनकाले ताँहार घरेर लोकदिगके मा दिदि दादा वलिया चिर-

---

कतक—थोड़ी-बहुत। चेये— अपेक्षा। भालोवासित—स्नेह करता था। काछे—निकट। डोबार—गड्ढे के। मिछामिछि—झूठमूठ। माछधरा—मछली पकड़ने का। माझे-माझे—बीच-बीच में। ताड़ाताड़ि—झटपट। उनुन धराइया—चूल्हा जला कर।

कथा पाड़ितेन—बात छेड़ते। लोकदिगके—लोगों को।

परिचितेर न्याय उल्लेख करित। एमनकि, ताहार क्षुद्र हृदयपटे बालिका ताँहादेर काल्पनिक मूर्तिओ चित्रित करिया लइयाछिल।

एकदिन वर्षाकाले मेघमुक्त द्विप्रहरे ईषत्-तप्त सुकोमल वातास दितेछिल; रौद्रे भिजा घास एवं गाछपाला हइते एकप्रकार गन्ध उत्थित हइतेछिल; मने हइतेछिल, येन क्लान्त धरणीर उष्ण निश्वास गायेर उपरे आसिया लागितेछे; एवं कोथाकार एक नाछोड़वान्दा पाखि ताहार एकटा एकटाना सुरेर नालिश समस्त दुपुरवेला प्रकृतिर दरबारे अत्यन्त करुणस्वरे बारबार आवृत्ति करितेछिल। पोस्ट्मास्टरेर हाते काज छिल ना—सेदिनकार वृष्टिधौत मसृण चिक्कण तरुपल्लवेर हिल्लोल एवं पराभूत वर्षार भग्नावशिष्ट रौद्रशुभ्र स्तूपाकार मेघस्तर वास्तविकइ देखिवार विषय छिल; पोस्ट्मास्टार ताहा देखितेछिलेन एवं भावितेछिलेन, एइ समय काछे एकटि-केह नितान्त आपनार लोक थाकित—हृदयेर सहित एकान्त संलग्न एकटि स्नेहपुत्तलि मानवमूर्त्ति। क्रमे मने हइते लागिल, सेइ पाखि ओइ कथाइ बारबार बलितेछे एवं एइ जनहीन तरुच्छायानिमग्न मध्यान्हेर पल्लवमर्मरेर अर्थओ कतकटा ओइरूप। केह विश्वास करे ना, एवं जानितेओ पाय ना, किन्तु छोटो पल्लीर सामान्य वेतनेर साव-पोस्ट्मास्टारेर मने गभीर निस्तब्ध मध्याह्ने दीर्घ छुटिर दिने एइरूप एकटा भावेर उदय हइया थाके।

पोस्ट्मास्टार एकटा दीर्घनिश्वास फेलिया डाकिलेन 'रतन'। रतन तखन पेयारातलाय पा छड़ाइया दिया काँचा पेयारा खाइतेछिल; प्रभुर कण्ठस्वर शुनिया अविलम्वे छुटिया आसिल—

न्याय—समान। एमनकि—यही नहीं। वातास दितेछिल—हवा बह रही थी। रौद्रे—धूप में। गाछ-पाला—पेड़-पौधे। गायेर—शरीर के। नाछोड़वन्दा—गले पड़ जाने वाला। एकटाना—लगातार। नालिश—शिकायत। भावितेछिलेन—सोच रहे थे। ओइ—वही। कथाइ—बात। कतकटा—कुछ कुछ। पल्लीर—ग्राम का।

पेयारातलाय.....दिया—अमरूद के नीचे पैर फैला कर। प्रभुर—मालिक का। छुटिया—दौड़ती हुई।

हाँपाइते हाँपाइते वलिल, "दादावावु, डाकछ?" पोस्ट्मास्टार वलिलेन, "तोके आमि एकटु एकटु करे पड़ते शेखाव।" वलिया समस्त दुपुरवेला ताहाके लइया 'स्वरे अ' 'स्वरे आ' करिलेन। एवं एइरूपे अल्पदिनेइ युक्त-अक्षर उत्तीर्ण हइलेन।

श्रावण मासे वर्षणेर आर अन्त नाइ। खाल विल नाला जले भरिया उठिल। अहर्निशि भेकेर डाक एवं वृष्टिर शब्द। ग्रामेर रास्ताय चलाचल प्राय एकप्रकार वन्ध—नौकाय करिया हाटे याइते हय।

एकदिन प्रातःकाल हइते खुव वादला करियाछे। पोस्ट्मास्टारेर छात्रीटि अनेकक्षण द्वारेर काछे अपेक्षा करिया वसिया छिल, किन्तु अन्यदिनेर मतो यथासाध्य नियमित डाक शुनिते ना पाइया आपनि खुङ्गिपुँथि लइया धीरे धीरे घरेर मध्ये प्रवेश करिल। देखिल, पोस्ट्मास्टार ताँहार खाटियार उपर शुइया आछेन—विश्राम करितेछेन मने करिया अति निःशब्दे पुनश्च घर हइते वाहिरे याइवार उपक्रम करिल। सहसा शुनिल—'रतन'। ताड़ाताड़ि फिरिया गिया वलिल, "दादावावु, घुमोच्छिले?" पोस्ट्मास्टार कातरस्वरे वलिलेन, "शरीरटा भालो वोध हच्छे ना—देख् तो आमार कपाले हात दिये।"

एइ नितान्त निःसङ्ग प्रवासे घनवर्षाय रोगकातर शरीरे एकटुखानि सेवा पाइते इच्छा करे। तप्त ललाटेर उपर शाँखापरा कोमल हस्तेर स्पर्श मने पड़े। एइ घोर प्रवासे रोगयन्त्रणाय स्नेहमयी नारी-रूपे जननी ओ दिदि पाशे वसिया आछेन एइ कथा मने करिते इच्छा करे, एवं ए स्थले प्रवासीर मनेर अभिलाष व्यर्थ हइल ना। वालिका रतन आर वालिका रहिल ना।

एकटु—थोड़ा। खाल—गड्ढा। भेकेर—मेंढ़क की।

अपेक्षा—प्रतीक्षा। खुङ्गिपुंथि—पुस्तकों की पिटारी (वस्ता)। घरेर मध्ये—कमरे में। घुमोच्छिले—सो रहे थे। शरीरटा...हच्छे ना—तबीयत अच्छी नहीं लग रही है। शाँखापरा—शंख की चूड़ियाँ पहने। (बंगाल में विवाहिता स्त्रियाँ शंख की बनी चूड़ियाँ पहनती हैं)।

सेइ मुहूर्तेइ से जननीर पद अधिकार करिया बसिल, वैद्य डाकिया आनिल, यथासमये वटिका खाओयाइल, साराराात्रि शियरे जागिया रहिल, आपनि पथ्य राँधिया दिल, एवं शतबार करिया जिज्ञासा करिल, "हाँगो दादाबाबु, एकटुखानि भालो बोध हच्छे कि।"

बहुदिन परे पोस्ट्मास्टार क्षीण शरीरे रोगशय्या त्याग करिया उठिलेन; मने स्थिर करिलेन, आर नय, एखान हइते कोनोमते बदलि हइते हइबे। स्थानीय अस्वास्थ्येर उल्लेख करिया तत्क्षणात् कलिकाताय कर्तृपक्षदेर निकट बदलि हइबार जन्य दरखास्त करिलेन।

रोगसेवा हइते निष्कृति पाइया रतन द्वारेर बाहिरे आबार ताहार स्वस्थान अधिकार करिल। किन्तु पूर्ववत् आर ताहाके डाक पड़े ना। माझे-माझे उँकि मारिया देखे, पोस्ट्मास्टार अत्यन्त अन्यमनस्कभावे चौकिते बसिया अथवा खाटियाय शुइया आछेन। रतन यखन आह्वान प्रत्याशा करिया बसिया आछे, तिनि तखन अधीरचित्ते ताँहार दरखास्तेर उत्तर प्रतीक्षा करिते-छेन। बालिका द्वारेर बाहिरे बसिया सहस्रवार करिया ताहार पुरानो पड़ा पड़िल। पाछे येदिन सहसा डाक पड़िबे सेदिन ताहार युक्त-अक्षर समस्त गोलमाल हइया याय, एइ ताहार एकटा आशंका छिल। अवशेषे सप्ताहखानेक परे एकदिन सन्ध्यावेलाय डाक पड़िल। उद्वेलितहृदये रतन गृहेर मध्ये प्रवेश करिया बलिल, "दादाबाबु, आमाके डाकछिले ?"

पोस्ट्मास्टार बलिलेन, "रतन, कालइ आमि याच्छि।"

रतन। कोथाय याच्छ, दादाबाबु।

पोस्ट्मास्टार। बाड़ि याच्छि।

शियरे—सिरहाने। हाँगो—क्यों जी।

आर नय—अब और नहीं। कोनोमते—किसी प्रकार। कर्तृपक्षदेर—अफसरों के।

निष्कृति—मुक्ति। आबार—फिर से। उँकि मारिया—झांक कर। बाड़ि—घर।

रतन । आवार कवे आसवे ।

पोस्ट्मास्टार । आर आसव ना ।

रतन आर कोनो कथा जिज्ञासा करिल ना । पोस्ट्मास्टार आपनिइ ताहाके वलिलेन, तिनि वदलिर जन्य दरखास्त करियाछिलेन, दरखास्त नामञ्जूर हइयाछे; ताइ तिनि काजे जवाव दिया वाड़ि याइतेछेन । अनेकक्षण आर केह कोनो कथा कहिल ना । मिट्मिट् करिया प्रदीप ज्वलिते लागिल एवं एक स्थाने घरेर जीर्ण चाल भेद करिया एकटि माटिर सरार उपर टप्टप् करिया वृष्टिर जल पड़िते लागिल ।

किछुक्षण परे रतन आस्ते आस्ते उठिया रान्नाघरे रुटि गड़िते गेल । अन्य दिनेर मतो तेमन चट्पट् हइल ना । वोध करि मध्ये मध्ये माथाय अनेक भावना उदय हइयाछिल । पोस्ट्मास्टारेर आहार समाप्त हइले पर वालिका ताँहाके जिज्ञासा करिल, "दादावावु, आमाके तोमादेर वाड़ि निये यावे ?"

पोस्ट्मास्टार हासिया कहिलेन, "से की करे हवे ।" व्यापारटा ये की की कारणे असम्भव ताहा वालिकाके वुझानो आवश्यक वोध करिलेन ना ।

समस्त रात्रि स्वप्ने एवं जागरणे वालिकार काने पोस्ट्मास्टारेर हास्यध्वनिर कण्ठस्वर वाजिते लागिल—'से की करे हवे' ।

भोरे उठिया पोस्ट्मास्टार देखिलेन, ताँहार स्नानेर जल ठिक आछे; कलिकातार अभ्यास-अनुसारे तिनि तोला जले स्नान करितेन । कखन तिनि यात्रा करिवेन से कथा वालिका की कारणे जिज्ञासा करिते पारे नाइ; पाछे प्रातःकाले आवश्यक हय

आपनिइ—स्वयं ही । मिट्मिट् करिया—टिमटिमाता हुआ । चाल—छप्पर । सरार उपर—सकोरे पर ।

रान्नाघरे—रसोई में । रुटि...गेल—रोटी वनाने चली गई । माथाय—दिमाग में । भावना—चिन्ताएँ ।

की करे—कैसे । व्यापारटा—मामला । की—किस ।

वाजिते लागिल—गूंजता रहा । तोला जले—(भर कर) लाए हुए पानी से । की कारणे...नाइ—न जाने क्यों, पूछ नहीं पाई ।

एइजन्य रतन तत रात्रे नदी हइते ताँहार स्नानेर जल तुलिया आनियाछिल। स्नान-समापन हइले रतनेर डाक पड़िल। रतन निःशब्दे गृहे प्रवेश करिल एवं आदेशप्रतीक्षाय एकबार नीरवे प्रभुर मुखेर दिके चाहिल। प्रभु कहिलेन, "रतन, आमार जायगाय ये लोकटि आसबेन ताँके बले दिये याब, तिनि तोके आमार मतन यत्न करबेन; आमि याच्छि बले तोके किछु भाबते हबे ना।" एइ कथागुलि ये अत्यन्त स्नेहगर्भ एवं दयार्द्र हृदय हइते उत्थित से विषये कोनो सन्देह नाइ, किन्तु नारीहृदय के बुझिबे। रतन अनेकदिन प्रभुर अनेक तिरस्कार नीरवे सह्य करियाछे किन्तु एइ नरम कथा सहिते पारिल ना। एकेबारे उच्छ्वसित हृदये काँदिया उठिया कहिल, "ना ना, तोमार काउके किछु बलते हबे ना, आमि थाकते चाइ ने।"

पोस्ट्मास्टार रतनेर एरूप व्यवहार कखनओ देखेन नाइ, ताइ अवाक हइया रहिलेन।

नूतन पोस्ट्मास्टार आसिल। ताहाके समस्त चार्ज बुझाइया दिया पुरातन पोस्ट्मास्टार गमनोन्मुख हइलेन। याइबार समय रतनके डाकिया बलिलेन, "रतन, तोके आमि कखनओ किछु दिते पारि नि। आज याबार समय तोके किछु दिये गेलुम, एते तोर दिन कयेक चलबे।"

किछु पथखरचा बादे ताँहार वेतनेर यत टाका पाइयाछिलेन पकेट हइते बाहिर करिलेन। तखन रतन धुलाय पड़िया ताँहार पा जड़ाइया धरिया कहिल, "दादाबाबु, तोमार दुटि पाये पड़ि, तोमार दुटि पाये पड़ि, आमाके किछु दिते हबे ना; तोमार दुटि

चाहिल—ताका। बले दिये जाब—कह जाऊँगा। यत्न करबेन—ख्याल रखेंगे। बले—इसलिए। कथागुलि—बातें। बुझिबे—समझेगा। एकेबारे—एकबारगी, बिल्कुल। काँदिया उठिया—रोते हुए। थाकते चाइ ने—नहीं रहना चाहती।

कखनओ—कभी भी। ताइ—इसी से।

जड़ाइया धरिया—जोर से पकड़ कर।

पाये पड़ि, आमार जन्ये काउके किछु भावते हवे ना"—वलिया एक-दौड़े सेखान हइते पलाइया गेल।

भूतपूर्व पोस्ट्मास्टार निश्वास फेलिया, हाते कार्पेटेर व्याग झुलाइया, काँधे छाता लइया, मुटेर माथाय नील ओ श्वेत रेखाय चित्रित टिनेर पेंटरा तुलिया धीरे धीरे नौकाभिमुखे चलिलेन।

यखन नौकाय उठिलेन एवं नौका छाड़िया दिल, वर्षाविस्फारित नदी धरणीर उच्छलित अश्रुराशिर मतो चारि दिके छल-छल करिते लागिल, तखन हृदयेर मध्ये अत्यन्त एकटा वेदना अनुभव करिते लागिलेन—एकटि सामान्य ग्राम्य वालिकार करुण मुखच्छवि येन एक विश्वव्यापी वृहत् अव्यक्त मर्मव्यथा प्रकाश करिते लागिल। एकवार नितान्त इच्छा हइल, 'फिरिया याइ, जगतेर क्रोड़विच्युत सेइ अनाथिनीके सङ्गे करिया लइया आसि'—किन्तु तखन पाले वातास पाइयाछे, वर्षार स्रोत खरतर वेगे वहितेछे, ग्राम अतिक्रम करिया नदीकूलेर श्मशान देखा दियाछे—एवं नदीप्रवाहे भासमान पथिकेर उदास हृदये एइ तत्त्वेर उदय हइल, जीवने एमन कत विच्छेद, कत मृत्यु आछे, फिरिया फल की। पृथिवीते के काहार।

किन्तु रतनेर मने कोनो तत्त्वेर उदय हइल ना। से सेइ पोस्ट्आपिस गृहेर चारि दिके केवल अश्रुजले भासिया घुरिया घुरिया वेड़ाइतेछिल। वोध करि ताहार मने क्षीण आशा जागितेछिल, दादावावु यदि फिरिया आसे—सेइ बन्धने पड़िया किछुतेइ दूरे याइते पारितेछिल ना। हाय वुद्धि-

---

पलाइया गेल—भाग गई।

मुटेर मायाय—मजूर के सिर पर। तुलिया—उठवा कर।

उठिलेन—चढ़े। छाड़ियादिल—छूट गई। मतो—समान। नितान्त—उत्कट। वातास पाइयाछे—हवा भर चुकी थी। भासमान—वहते हुए। कत—कितना। के काहार—कौन किसका है।

भासिया—तिरती। वेड़ाइतेछिल—घूम रही थी। वोध करि—लगता है।

हीन मानवहृदय! भ्रान्ति किछुतेइ घोचे ना, युक्तिशास्त्रेर विधान बहु विलम्बे माथाय प्रवेश करे, प्रबल प्रमाणकेओ अविश्वास करिया मिथ्या आशाके दुइ बाहुपाशे बाँधिया बुकेर भितरे प्राण-पणे जड़ाइया धरा याय, अवशेषे एकदिन समस्त नाड़ी काटिया हृदयेर रक्त शुषिया से पलायन करे, तखन चेतना हय एवं द्वितीय भ्रान्तिपाशे पड़िबार जन्य चित्त व्याकुल हइया उठे।

१८९१

किछुतेइ—किसी भी प्रकार। घोचे ना—नहीं मिटती।

एकरात्रि

सुरबालार सङ्गे एकत्रे पाठशालाय गियाछि, एवं बउ-बउ खेलियाछि। ताहादेर बाड़िते गेले सुरबालार मा आमाके बड़ो यत्न करितेन एवं आमादेर दुइजनके एकत्र करिया आपना-आपनि बलावलि करितेन, "आहा दुटिते वेश मानाय।"

छोटो छिलाम, किन्तु कथाटार अर्थ एकरकम बुझिते पारिताम। सुरबालार प्रति ये सर्वसाधारणेर अपेक्षा आमार किछु विशेष दावि छिल, से धारणा आमार मने बद्धमूल हइया गियाछिल। सेइ अधिकारमदे मत्त हइया ताहार प्रति ये आमि शासन एवं उपद्रव ना करिताम ताहा नहे। सेओ सहिष्णुभावे आमार सकलरकम फरमाश खाटित एवं शास्ति वहन करित। पाड़ाय ताहार रूपेर प्रशंसा छिल, किन्तु बर्बर बालकेर चक्षे से सौन्दर्येर कोनो गौरव छिल ना—आमि केवल जानिताम, सुरबाला आमारइ प्रभुत्व स्वीकार करिबार जन्य पितृगृहे जन्मग्रहण करियाछे, एइजन्य से आमार विशेषरूप अवहेलार पात्र।

आमार पिता चौधुरी-जमिदारेर नायेब छिलेन। ताँहार इच्छा छिल, आमार हातटा पाकिलेइ आमाके जमिदारि-सेरेस्तार काज शिखाइया एकटा कोथाओ गोमस्तागिरिते प्रवृत्त कराइया दिवेन। किन्तु, आमि मने मने ताहाते नाराज छिलाम। आमादेर पाड़ार नीलरतन येमन कलिकाताय पालाइया लेखापड़ा

बउ खेलियाछि—वर-वधू बनने का खेल खेला है। बाड़िते—घर पर। यत्न करितेन—खातिर करतीं। आपना...करितेन—अपने-आप कहा करतीं। आहा...मानाय—वाह, दोनों की जोड़ी कैसी जँचती है।

एकरकम—एक प्रकार से। दावि—अधिकार। खाटित—पूरी करती थी। शास्ति—दण्ड। पाड़ाय—मुहल्ले में। करिबार जन्य—करने के लिए।

हातटा पाकिलेइ—हाथ जमते (अभ्यस्त होते) ही। पालाइया—भाग कर।

शिखिया कालेक्टार साहेबेर नाजिर हइयाछे, आमारओ जीवनेर लक्ष्य सेइरूप अत्युच्च छिल—कालेक्टारेर नाजिर ना हइते पारि तो जज-आदालतेर हेड्क्लार्क हइब, इहा आमि मने-मने निश्चय स्थिर करिया राखियाछिलाम।

सर्वदाइ देखिताम, आमार बाप उक्त आदालतजीवीदिगके अत्यन्त सम्मान करितेन—नाना उपलक्षे माछटा-तरकारिटा टाकाटा-सिकेटा लइया ये ताँहादेर पूजार्चना करिते हइत ताहाओ शिशुकाल हइते आमार जाना छिल; एइजन्य आदालतेर छोटो कर्मचारी एमन-कि पेयादागुलाके पर्यन्त हृदयेर मध्ये खुब एकटा सम्भ्रमेर आसन दियाछिलाम। इँहारा आमादेर बांलादेशेर पूज्य देवता; तेत्रिश कोटिर छोटो छोटो नूतन संस्करण। वैषयिक सिद्धिलाभ सम्बन्धे स्वयं सिद्धिदाता गणेश अपेक्षा इँहादेर प्रति लोकेर आन्तरिक निर्भर ढेर बेशि; सुतरां पूर्वे गणेशेर याहा-किछु पाओना छिल आजकाल इँहाराइ ताइ समस्त पाइया थाकेन।

आमिओ नीलरतनेर दृष्टान्ते उत्साहित हइया एक समय विशेष सुविधायोगे कलिकाताय पालाइया गेलाम। प्रथमे ग्रामेर एकटि आलापी लोकेर बासाय छिलाम, ताहार परे बापेर काछ हइतेओ किछु किछु अध्ययनेर साहाय्य पाइते लागिलाम। लेखा-पड़ा यथानियमे चलिते लागिल।

इहार उपरे आबार सभासमितितेओ योग दिताम। देशेर जन्य हठात् प्राणविसर्जन करा ये आशु आवश्यक, ए सम्बन्धे आमार सन्देह छिल ना। किन्तु, की करिया उक्त दुःसाध्य काज करा याइते पारे आमि जानिताम ना, एवं केह दृष्टान्तओ देखाइत ना। किन्तु, ताहा बलिया उत्साहेर कोनो त्रुटि छिल ना। आमरा पाड़ागेंये छेले, कलिकातार इँचड़े-पाका छेलेर मतो सकल

टाकाटा-सिकेटा—रुपया-पैसा।

आलापी—परिचित। बासाय—वासस्थान पर।

आशु—तत्काल। पाड़ागेंये—गँवईगाँव के। इँचड़े पाका—अकाल-पक्व।

जिनिसकेइ परिहास करिते शिखि नाइ; सुतरां आमादेर निष्ठा अत्यन्त दृढ़ छिल। आमादेर सभार कर्तृपक्षीयेरा वक्तृता दितेन, आर आमरा चाँदार खाता लइया ना-खाइया दुपुर रौद्रे टो-टो करिया बाड़ि बाड़ि भिक्षा करिया बेड़ाइताम, रास्तार धारे दाँड़ाइया विज्ञापन बिलि करिताम, सभास्थले गिया बेञ्चि चौकि साजाइताम, दलपतिर नामे केह एकटा कथा बलिले कोमर बाँधिया मारामारि करिते उद्यत हइताम। शहरेर छेलेरा एइ-सब लक्षण देखिया आमादिगके बाङाल बलित।

नाजिर सेरेस्तादार हइते आसियाछिलाम, किन्तु माट्सीनि गारिबाल्डि हइवार आयोजन करिते लागिलाम।

एमन समये आमार पिता एवं सुरबालार पिता एकमत हइया सुरबालार सहित आमार विवाहेर जन्य उद्योगी हइलेन।

आमि पनेरो वत्सर वयसेर समय कलिकाताय पालाइया आसि, तखन सुरबालार वयस आट; एखन आमि आठोरो। पितार मते आमार विवाहेर वयस क्रमे उत्तीर्ण हइया याइतेछे। किन्तु, ए दिके आमि मने मने प्रतिज्ञा करियाछि, आजीवन विवाह ना करिया स्वदेशेर जन्य मरिब—बापके बलिलाम, विद्याभ्यास सम्पूर्ण समाधा ना करिया विवाह करिब ना।

दुइ-चारि मासेर मध्ये खबर पाइलाम, उकिल रामलोचन बाबुर सहित सुरबालार विवाह हइया गियाछे। पतित भारतेर चाँदा-आदायकार्ये व्यस्त छिलाम, एइ सम्वाद अत्यन्त तुच्छ बोध हइल।

एन्ट्रेन्स् पास करियाछि, फार्स्ट् आर्ट्स् दिब, एमन समय पितार मृत्यु हइल। संसारे केवल आमि एका नइ; माता एवं दुटि भगिनी आछेन। सुतरां कालेज छाड़िया काजेर सन्धाने

जिनिसकेइ—चीजों का ही। चाँदार खाता—चंदे की रसीद वही। रौद्रे—धूप में। टो टो करिया—वेकार। बाड़ि—घर। धारे—किनारे। बिलि—वितरित। बाङाल—ग्रामीण (असभ्य); उस शब्द से पूर्व बंगाल के लोगों का मजाक उड़ाया जाता है। पनेरो—पंद्रह। समाधा—समापन, समाप्त।

फिरिते हइल। बहु चेष्टाय नओयाखालि विभागेर एकटि छोटो शहरे एन्ट्रेन्स् स्कुलेर सेकेन्ड् मास्टारि पद प्राप्त हइलाम।

मने करिलाम, आमार उपयुक्त काज पाइयाछि। उपदेश एवं उत्साह दिया एक-एकटि छात्रके भावी भारतेर एक-एकटि सेनापति करिया तुलिब।

काज आरम्भ करिया दिलाम। देखिलाम, भावी भारतवर्ष अपेक्षा आसन्न एग्जामिनेर ताड़ा ढेर बेशि। छात्रदिगके ग्रामार अ्याल्जेब्रार बहिर्भूत कोनो कथा बलिले हेड्मास्टार राग करे। मास-दुयेकेर मध्ये आमरओ उत्साह निस्तेज हइया आसिल।

आमादेर मतो प्रतिभाहीन लोक घरे बसिया नानारूप कल्पना करे, अवशेषे कार्यक्षेत्रे नामिया घाड़े लाङल बहिया पश्चात् हइते लेज-मला खाइया नतशिरे सहिष्णुभावे प्रात्यहिक माटि-भाङार काज करिया सन्ध्यावेलाय एक-पेट जाव्ना खाइते पाइलेइ सन्तुष्ट थाके; लम्फे-झम्फे आर उत्साह थाके ना।

अग्निदाहेर आशङ्काय एकजन करिया मास्टार स्कुलेर घरेतेइ वास करित। आमि एका मानुष, आमार उपरेइ सेइ भार पड़ियाछिल। स्कुलेर बड़ो आटचालार संलग्न एकटि चालाय आमि वास करिताम।

स्कुलघरटि लोकालय हइते किछु दूरे, एकटि बड़ो पुष्करिणीर धारे। चारि दिके सुपारि नारिकेल एवं मादारेर गाछ,

---

नओयाखालि विभागेर—नोआखाली-अंचल के।

करिया तुलिब—बना डालूंगा।

ताड़ा—त्वरा, जल्दी। राग—क्रोध। नामिया—उतर कर।

घाड़े लाङल बहिया—गर्दन पर हल (का भार) ढोते हुए। लेज-मला खाइया—पूंछ में उमेठा खा कर। भाङार—तोड़ने का। जावना—सानी। लम्फे-झम्फे—उछल-कूद में। घरेतेइ—कमरे में ही।

आटचालार—आठ खंभों पर बनी हुई (मंडप सदृश) झोंपड़ी के। चालाय—छपरी में।

धारे—किनारे। मादारेर—आक के। गाछ—वृक्ष।

एवं स्कुलगृहेर प्राय गायेइ दुटा प्रकान्ड वृद्ध निम गाछ गाये गाये संलग्न हइया छाया दान करितेछे।

एकटा कथा एतदिन उल्लेख करि नाइ एवं एतदिन उल्लेखयोग्य वलिया मने हय नाइ। एखानकार सरकारि उकिल रामलोचन रायेर वासा आमादेर स्कुलघरेर अनतिदूरे। एवं ताँहार सङ्गे ताँहार स्त्री—आमार वाल्यसखी सुरवाला—छिल, ताहा आमार जाना छिल।

रामलोचनवावुर सङ्गे आमार आलाप हइल। सुरवालार सहित वाल्यकाले आमार जानाशोना छिल ताहा रामलोचनवावु जानितेन कि ना जानि ना, आमिओ नूतन परिचये से सम्वन्धे कोनो कथा वला संगत वोध करिलाम ना। एवं सुरवाला ये कोनो काले आमार जीवनेर सङ्गे कोनोरूपे जड़ित छिल, से कथा आमार भालो करिया मने उदय हइल ना।

एकदिन छुटिर दिने रामलोचनवावुर वासाय ताँहार सहित साक्षात् करिते गियाछि। मने नाइ की विषये आलोचना हइते-छिल, वोध करि वर्तमान भारतवर्षेर दुरवस्था सम्वन्धे। तिनि ये सेजन्य विशेष चिन्तित एवं म्रियमाण छिलेन ताहा नहे, किन्तु विषयटा एमन ये तामाक टानिते टानिते ए सम्वन्धे घन्टाखानेक-देड़ेक अनर्गल शखेर दुःख करा याइते पारे।

एमन समये पाशेर घरे अत्यन्त मृदु एकटु चुड़िर टुंटां, कापड़ेर एकटुखानि खस्खस् एवं पायेरओ एकटुखानि शब्द शुनिते पाइलाम; वेश वुझिते पारिलाम, जानालार फाँक दिया कोनो कौतूहलपूर्ण नेत्र आमाके निरीक्षण करितेछे।

गायेइ—सटे हुए ही।

वासा—आवास, घर। जानाशोना—जान-पहचान। तामाक...टानिते—तमाखू का कश खींचते-खींचते। शखेर—शौकिया।

घरे—कमरे में। टुंटां—खन-खन। एकटुखानि—ज़रा-सी। खसखस—सरसराहट। वेश...पारिलाम—अच्छी तरह से समझ गया।

तत्क्षणात् दुखानि चोख आमार मने पड़िया गेल—विश्वास सरलता एवं शैशव-प्रीतिते ढलढल दुखानि बड़ो बड़ो चोख, कालो कालो तारा, घनकृष्ण पल्लव, स्थिरस्निग्ध दृष्टि। सहसा हृत्पिण्डके के येन एकटा कठिन मुष्टिर द्वारा चापिया धरिल एवं वेदनाय भितरटा टन्टन् करिया उठिल।

बासाय फिरिया आसिलाम, किन्तु सेइ व्यथा लागिया रहिल। लिखि पड़ि, याहा करि, किछुतेइ मनेर भार दूर हय ना; मनटा सहसा एकटा बृहत् बोझार मतो हइया बुकेर शिरा धरिया दुलिते लागिल।

सन्ध्यावेलाय एकटु स्थिर हइया भाबिते लागिलाम, एमनटा हइल केन। मनेर मध्य हइते उत्तर आसिल, तोमार से सुरबाला कोथाय गेल।

आमि प्रत्युत्तरे बलिलाम, आमि तो ताहाके इच्छा करिया छाड़िया दियाछि। से कि चिरकाल आमार जन्य बसिया थाकिबे।

मनेर भितरे के बलिल, तखन याहाके इच्छा करिलेइ पाइते पारिते एखन माथा खुँड़िया मरिलेओ ताहाके एकबार चक्षे देखिबार अधिकारटुकुओ पाइबे ना। सेइ शैशवेर सुरबाला तोमार यत काछेइ थाकुक, ताहार चुड़िर शब्द शुनिते पाओ, ताहार माथाघषार गन्ध अनुभव कर, किन्तु माझखाने बराबर एकखानि करिया देयाल थाकिबे।

आमि बलिलाम, ता थाक्-ना, सुरबाला आमार के।

ढल्ढल—छलकते-से। चोख—नेत्र। चापिया धरिल—जकड़ लिया। टनटन...उठिल—कसक उठा।

लागिया रहिल—चिपटी रही। बुकेर—छाती की। दुलित—झूमते।

भाविते—सोचते। एमनटा—ऐसा।

इच्छा करिया—जानबूझ कर।

माथा खुँड़िया—सिर पटक कर। अधिकारटुकुओ—अधिकार तक भी। काछेइ—निकट ही। माझखाने—बीच में। देयाल—दीवार।

उत्तर शुनिलाम, सुरबाला आज तोमार केहइ नय, किन्तु सुरबाला तोमार की ना हइते पारित।

से कथा सत्य। सुरबाला आमार की ना हइते पारित। आमार सब चेये अन्तरङ्ग, आमार सब चेये निकटवर्ती, आमार जीवनेर समस्त सुखदुःखभागिनी हइते पारित—से आज एतदूर, एत पर, आज ताहाके देखा निषेध, ताहार सङ्गे कथा कओया दोष, ताहार विषये चिन्ता करा पाप। आर, एकटा रामलोचन कोथाओ किछु नाइ हठात् आसिया उपस्थित, केवल गोटा-दुयेक मुखस्थ मन्त्र पड़िया सुरबालाके पृथिवीर आर-सकलेर निकट हइते एक मुहूर्ते छों मारिया लइया गेल।

आमि मानवसमाजे नूतन नीति प्रचार करिते बसि नाइ, समाज भाङिते आसि नाइ, बन्धन छिँड़िते चाइ ना। आमि आमार मनेर प्रकृत भावटा व्यक्त करितेछि मात्र। आपन-मने ये-सकल भाव उदय हय ताहार कि सबइ विवेचनासंगत। रामलोचनेर गृहभित्तिर आड़ाले ये सुरबाला विराज करितेछिल से ये रामलोचनेर अपेक्षाओ बेशि करिया आमार, ए कथा आमि किछुतेइ मन हइते ताड़ाइते पारितेछिलाम ना। एरूप चिन्ता नितान्त असंगत एवं अन्याय ताहा स्वीकार करि, किन्तु अस्वाभाविक नहे।

एखन हइते आर कोनो काजे मनःसंयोग करिते पारि ना। दुपुरबेलाय क्लासे यखन छात्रेरा गुन्‌गुन् करिते थाकित, बाहिरे समस्त झाँ-झाँ करित, ईषत् उत्तप्त वातासे निम गाछेर पुष्पमंजरिर सुगन्ध वहन करिया आनित, तखन इच्छा करित—की इच्छा

केहइ नय—कोई भी नहीं है। की...पारित—क्या नहीं हो सकती थी। सब चेये—सर्वापेक्षा। पर—पराई। गोटा—कुल जमा। छों मारिया—झपट्टा मार कर।

भाङिते—तोड़ने। छिँड़िते—छिन्न करने, तोड़ने। आड़ाले—आड़ में। ताड़ाइते...ना—दूर नहीं कर पाता था।

एखन हइते—अब से, इसके बाद से। झाँ-झाँ—साँय-साँय। इच्छा करित—जी में आता।

करित जानि ना—एइ पर्यन्त बलिते पारि, भारतवर्षेर एइ समस्त भावी आशास्पददिगेर व्याकरणेर भ्रम संशोधन करिया जीवन-यापन करिते इच्छा करित ना।

स्कुलेर छुटि हइया गेले आमार वृहत् घरे एकला थाकिते मन टिँकित ना, अथच कोनो भद्रलोक देखा करिते आसिलेओ असह्य बोध हइत। सन्ध्यावेलाय पुष्करिणीर धारे सुपारि-नारिकेलेर अर्थहीन मर्मरध्वनि शुनिते शुनिते भाविताम, मनुष्य समाज एकटा जटिल भ्रमेर जाल। ठिक समये ठिक काज करिते काहारओ मने पड़े ना, ताहार परे बेठिक समये बेठिक वासना लइया अस्थिर हइया मरे।

तोमार मतो लोक सुरबालार स्वामीटि हइया बुड़ावयस पर्यन्त बेश सुखे थाकिते पारित; तुमि किना हइते गेले गारि-बाल्डि, एवं हइले शेषे एकटि पाड़ागेंये इस्कुलेर सेकेन्ड् मास्टार! आर, रामलोचन राय उकिल, ताहार विशेष करिया सुरबालारइ स्वामी हइबार कोनो जरुरि आवश्यक छिल ना; विवाहेर पूर्वमुहूर्त पर्यन्त ताहार पक्षे सुरबालाओ येमन भवशंकरीओ तेमन, सेइ किना किछुमात्र ना भाबिया-चिन्तिया विवाह करिया, सरकारि उकिल हइया दिव्य पाँच टाका रोजगार करितेछे—येदिन दुधे धोँओयार गन्ध हय सेदिन सुरबालाके तिरस्कार करे, येदिन मन प्रसन्न थाके सेदिन सुरबालार जन्य गहना गड़ाइते देय। बेश मोटासोटा, चापकान-परा, कोनो असन्तोष नाइ; पुष्करिणीर धारे बसिया आकाशेर तारार दिके चाहिया कोनोदिन हाहुताश करिया सन्ध्यायापन करे ना।

रामलोचन एकटा बड़ो मकद्दमाय किछुकालेर जन्य अन्यत्र गियाछे।

भाविताम—सोचता।

बेश—अच्छी तरह। तुमि...गेले—तुम तो बनने चले। पाड़ागेंये—गँवई-गांव के। येमन—जैसी। तेमन—तैसी। सेइ किना—वह है कि। दिव्य—खासे। चापकान—अचकन। धारे—किनारे। चाहिया—ताकते हुए। हाहुताश—हा-हू।

आमार स्कुलघरे आमि येमन एकला छिलाम सेदिन सुरबालार घरेओ सुरबाला वोध करि सेइरूप एका छिल।

मने आछे, सेदिन सोमवार। सकाल हइतेइ आकाश मेघाच्छन्न हइया आछे। वेला दशटा हइते टिप्‌टिप् करिया वृष्टि पड़िते आरम्भ करिल। आकाशेर भावगतिक देखिया हेड्‌मास्टार सकाल सकाल स्कुलेर छुटि दिलेन। खण्ड खण्ड कालो मेघ येन एकटा की महा आयोजने समस्त दिन आकाशमय आनागोना करिया वेड़ाइते लागिल। ताहार परदिन विकालेर दिके मुषलधारे वृष्टि एवं सङ्गे सङ्गे झड़ आरम्भ हइल। यत रात्रि हइते लागिल वृष्टि एव झड़ेर वेग वाड़िते चलिल। प्रथमे पूव।दक हइते वातास वहितेछिल, क्रमे उत्तर एवं उत्तर-पूर्व दिया वहिते लागिल।

ए रात्रे घुमाइबार चेष्टा करा वृथा। मने पड़िल, एइ दुर्योगे सुरवाला घरे एकला आछे। आमादेर स्कुलघर ताहादेर घरेर अपेक्षा अनेक मजवुत। कतवार मने करिलाम, ताहाके स्कुलघरे डाकिया आनिया आमि पुष्करिणीर पाड़ेर उपर रात्रियापन करिव। किन्तु, किछुतेइ मन स्थिर करिया उठिते पारिलाम ना।

रात्रि यखन एकटा-देड़टा हइवे हठात् वानेर डाक शोना गेल——समुद्र छुटिया आसितेछे। घर छाड़िया बाहिर हइलाम। सुरवालार बाड़िर दिके चलिलाम। पथे आमादेर पुष्करिणीर पाड़—से पर्यन्त याइते ना याइते आमार हाँटुजल हइल। पाड़ेर उपर यखन उठिया दाँड़ाइलाम तखन द्वितीय आर-एकटा तरङ्ग आसिया उपस्थित हइल।

आमादेर पुकुरेर पाड़ेर एकटा अंशप्राय दश-एगारो हात

वोध करि—सम्भवतः। भावगतिक—आसार, लक्षण, रंगढंग। आनागोना—आना-जाना। झड़—झंझा, आँधी। दिया—से हो कर।

घुमाइवार—सोने की। पाड़ेर उपर—किनारे पर।

वानेर—वाढ़ की। डाक—आवाज़। छुटिया—दौड़ता हुआ। हाँटुजल—घुटनों तक पानी। दाँड़ाइलाम—खड़ा हुआ।

पुकुरेर—पोखर के। एगारो—ग्यारह।

उच्च हइबे। पाड़ेर उपरे आमिओ यखन उठिलाम विपरीत दिक हइते आर-एकटि लोकओ उठिल। लोकटि के ताहा आमार समस्त अन्तरात्मा, आमार माथा हइते पा पर्यन्त बुझिते पारिल। एवं सेओ ये आमाके जानिते पारिल ताहाते आमार सन्देह नाइ।

आर-समस्त जलमग्न हइया गेछे, केवल हात-पाँच-छय द्वीपेर उपर आमरा दुटि प्राणी आसिया दाँड़ाइलाम।

तखन प्रलयकाल, तखन आकाशे तारार आलो छिल ना एवं पृथिवीर समस्त प्रदीप निविया गेछे—तखन एकटा कथा बलिलेओ क्षति छिल ना—किन्तु एकटा कथाओ बला गेल ना। केह काहाकेओ एकटा कुशलप्रश्नओ करिल ना।

केवल दुइजने अन्धकारेर दिके चाहिया रहिलाम। पदतले गाढ़ कृष्णवर्ण उन्मत्त मृत्युस्रोत गर्जन करिया छुटिया चलिल।

आज समस्त विश्वसंसार छाड़िया सुरबाला आमार काछे आसिया दाँड़ाइयाछे। आज आमि छाड़ा सुरबालार आर केह नाइ। कबेकार सेइ शैशवे सुरबाला, कोन्-एक जन्मान्तर, कोन्-एक पुरातन रहस्यान्धकार हइते भासिया, एइ सूर्य-चन्द्रालोकित लोकपरिपूर्ण पृथिवीर उपरे आमारइ पार्श्वे आसिया संलग्न हइया-छिल ; आर, आज कत दिन परे सेइ आलोकमय लोकमय पृथिवी छाड़िया एइ भयंकर जनशून्य प्रलयान्धकारेर मध्ये सुरबाला एकाकिनी आमारइ पार्श्वे आसिया उपनीत हइयाछे। जन्मस्रोते सेइ नवकलिकाके आमार काछे आनिया फेलियाछिल, मृत्युस्रोते सेइ विकशित पुष्पटिके आमारइ काछे आनिया फेलियाछे—एखन केवल आर-एकटा ढेउ आसिलेइ पृथिवीर एइ प्रान्तटुकु हइते, विच्छेदेर एइ वृन्तटुकु हइते, खसिया आमरा दुजने एक हइया याइ।

माथ—सिर। पा—पैर।

निविया गेछे—बुझ गए हैं। चाहिया रहिलाम—ताकते रहे।

आमि छाड़ा—मुझे छोड़। कबेकार—कब की। भासिया—तैरती हुई। ढेउ—लहर। खसिया—खिसल कर, झर कर।

से ढेउ ना आसुक। स्वामीपुत्र गृहधनजन लइया सुरबाला चिरदिन सुखे थाकुक। आमि एइ एक रात्रे महाप्रलयेर तीरे दाँड़ाइया अनन्त आनन्देर आस्वाद पाइयाछि।

रात्रि प्राय शेष हइया आसिल—झड़ थामिया गेल, जल नामिया गेल—सुरबाला कोनो कथा ना बलिया बाड़ि चलिया गेल, आमिओ कोनो कथा ना बलिया आमार घरे गेलाम।

भाबिलाम, आमि नाजिरओ हइ नाइ, सेरेस्तादारओ हइ नाइ, गारिबाल्डिओ हइ नाइ, आमि एक भाङा स्कुलेर सेकेन्ड् मास्टार, आमार समस्त इहजीवने केवल क्षणकालेर जन्य एकटि अनन्तरात्रिर उदय हइयाछिल—आमार परमायुर समस्त दिन-रात्रिर मध्ये सेइ एकटिमात्र रात्रिइ आमार तुच्छ जीवनेर एकमात्र चरम सार्थकता।

मई-जून १८९२

नामिया गेल—उतर गया।
भाङा—भग्न, टूटे हुए।

जीवित ओ मृत

प्रथम परिच्छेद

रानीहाटेर जमिदार शारदाशंकरबाबुदेर बाड़िर विधवा वधूटिर पितृकुले केह छिल ना; सकलेइ एके एके मारा गियाछे। पतिकुलेओ ठिक आपनार बलिते केह नाइ, पतिओ नाइ पुत्रओ नाइ। एकटि भाशुरपो, शारदाशंकरेर छोटो छेलेटि, सेइ ताहार चक्षेर मणि। से जन्मिबार पर ताहार मातार बहुकाल धरिया शक्त पीड़ा हइयाछिल, सेइजन्य एइ विधवा काकि कादम्बिनीइ ताहाके मानुष करियाछे। परेर छेले मानुष करिले ताहार प्रति प्राणेर टान आरओ येन बेशि हय, कारण, ताहार उपरे अधिकार थाके ना; ताहार उपरे कोनो सामाजिक दावि नाइ, केवल स्नेहेर दावि—किन्तु केवलमात्र स्नेह समाजेर समक्षे आपनार दावि कोनो दलिल-अनुसारे सप्रमाण करिते पारे ना एवं चाहेओ ना, केवल अनिश्चित प्राणेर धनटिके द्विगुण व्याकुलतार सहित भालोबासे।

विधवार समस्त रुद्ध प्रीति एइ छेलेटिर प्रति सिंचन करिया एकदिन श्रावणेर रात्रे कादम्बिनीर अकस्मात् मृत्यु हइल। हठात् की कारणे ताहार हृत्स्पन्दन स्तब्ध हइया गेल—समय जगतेर आर-सर्वत्रइ चलिते लागिल, केवल सेइ स्नेहकातर क्षुद्र कोमल वक्षटिर भितर समयेर घड़िर कल चिरकालेर मतो बन्ध हइया गेल।

पाछे पुलिसेर उपद्रव घटे, एइजन्य अधिक आड़म्बर ना करिया जमिदारेर चारिजन ब्राह्मण कर्मचारी अनतिविलम्बे मृतदेह दाह करिते लइया गेल।

ओ—और, भी। बाड़िर—घर की। भाशुरपो—जेठ का लड़का। चक्षेर मणि—आँखों का तारा। मानुष करियाछे—बड़ा किया है। परेर—दूसरे का। टान—आकर्षण। दावि—दावा। सप्रमाण—प्रमाणित। भालोबासे—प्रेम करता है।

रानीहाटेर श्मशान लोकालय हइते बहु दूरे। पुष्करिणीर घारे एकखानि कुटिर, एवं ताहार निकटे एकटा प्रकाण्ड वट-गाछ, बृहत् माठे आर-कोथाओ किछु नाइ। पूर्वे एइखान दिया नदी बहित, एखन नदी एकेबारे शुकाइया गेछे। सेइ शुष्क जलपथेर एक अंश खनन करिया श्मशानेर पुष्करिणी निर्मित हइयाछे। एखनकार लोकेरा एइ पुष्करिणीकेइ पुण्य स्रोतस्विनीर प्रतिनिधिस्वरूप ज्ञान करे।

मृतदेह कुटिरेर मध्ये स्थापन करिया चितार काठ आसिबार प्रतीक्षाय चारजने बसिया रहिल। समय एत दीर्घ बोध हइते लागिल ये, अधीर हइया चारिजनेर मध्ये निताइ एवं गुरुचरण काठ आनिते एत विलम्ब हइतेछे केन देखिते गेल, विधु एवं वनमाली मृतदेह रक्षा करिया बसिया रहिल।

श्रावणेर अन्धकार रात्रि। थम्‌थमे मेघ करिया आछे, आकाशे एकटि तारा देखा याय ना; अन्धकार घरे दुइजने चुप करिया बसिया रहिल। एकजनेर चादरे दियाशलाइ एवं बाति बाँधा छिल। वर्षाकालेर दियाशलाइ बहुचेष्टातेओ ज्वलिल ना—ये लण्ठन सङ्गे छिल ताहाओ निबिया गेछे।

अनेक क्षण चुप करिया थाकिया एकजन कहिल, "भाइ रे, एक छिलिम तामाकेर जोगाड़ थाकिले बड़ो सुविधा हइत। ताड़ाताड़िते किछुइ आना हय नाइ।"

अन्य व्यक्ति कहिल, "आमि चट् करिया एक दौड़े समस्त संग्रह करिया आनिते पारि।"

घारे—किनारे। गाछ—वृक्ष। माठे—मैदान में। एइखान दिया—यहाँ से हो कर। एकेबारे—एकबारगी, बिल्कुल। एखनकार—आजकल के।

थम्‌थमे—घनघोर और अचल। लण्ठन—लालटेन। निबिया गेछे—बुझ गई है।

चुप...थाकिया—चुप रहने पर। छिलिम...जोगाड़—चिलम तमाखू की व्यवस्था। ताड़ाताड़िते—जल्दी में।

वनमालीर पलायनेर अभिप्राय बुझिया विधु कहिल, "माइरि! आर, आमि बुझि एखाने एकला बसिया थाकिब।"

आबार कथावार्ता बन्ध हइया गेल। पाँच मिनिटके एक घण्टा बलिया मने हइते लागिल। याहारा काठ आनिते गियाछिल ताहादिगके मने-मने इहारा गालि दिते लागिल—ताहारा ये दिव्य आरामे कोथाओ बसिया गल्प करिते करिते तामाक खाइतेछे, ए सन्देह क्रमशइ ताहादेर मने घनीभूत हइया उठिते लागिल।

कोथाओ किछु शब्द नाइ—केवल पुष्करिणीतीर हइते अविश्राम झिल्लि एवं भेकेर डाक शुना याइतेछे। एमन समय मने हइल, येन खाटटा ईशत् नड़िल, येन मृतदेह पाश फिरिया शुइल।

विधु एवं वनमाली रामनाम जपिते जपिते काँपिते लागिल। हठात् घरेर मध्ये एकटा दीर्घनिश्वास शुना गेल। विधु एवं वनमाली एक मुहूर्ते घर हइते लम्फ दिया बाहिर हइया ग्रामेर अभिमुखे दौड़ दिल।

प्राय क्रोश-देड़ेक पथ गिया देखिल ताहादेर अवशिष्ट दुइ सङ्गी लण्ठन हाते फिरिया आसितेछे। ताहारा वास्तविकइ तामाक खाइते गियाछिल, काठेर कोनो खबर जाने ना, तथापि सम्वाद दिल, गाछ काटिया काठ फाड़ाइतेछे—अनतिविलम्बे रओना हइबे। तखन विधु एवं वनमाली कुटिरेर समस्त घटना वर्णना करिल। निताइ एवं गुरुचरण अविश्वास करिया उड़ाइया

बुझिया—समझ कर। माइरि—शपथ विशेष।

आबार—फिर। गल्प—बातचीत। तामाक खाइतेछे—हुक्का पी रहे हैं।

हइते—से। भेकेर—मेंढक की। डाक—आवाज़। नड़िल—हिली। पाश फिरिया—करवट बदल कर।

लम्फ दिया—छलाँग मार कर।

गाछ—वृक्ष। फाड़ाइतेछे—चीरा जा रहा है। रओना—रवाना।

दिल, एवं कर्तव्य त्याग करिया आसार जन्य अपर दुइजनेर प्रति अत्यन्त राग करिया विस्तर भर्त्सना करिते लागिल।

कालविलम्ब ना करिया चारजनेइ श्मशाने सेइ कुटिरे गिया उपस्थित हइल। घरे ढुकिया देखिल मृतदेह नाइ, शून्य खाट पड़िया आछे।

परस्पर मुख चाहिया रहिल। यदि श्रृगाले लइया गिया थाके? किन्तु आच्छादनवस्त्रटि पर्यन्त नाइ। सन्धान करिते करिते बाहिरे गिया देखे कुटिरेर द्वारेर काछे खानिकटा कादा जमियाछिल, ताहाते स्त्रीलोकेर सद्य एवं क्षुद्र पदचिह्न।

शारदाशंकर सहज लोक नहेन, ताँहाके एइ भूतेर गल्प बलिले हठात् ये कोनो शुभफल पाओया याइबे एमन सम्भावना नाइ। तखन चारजने विस्तर परामर्श करिया स्थिर करिल ये, दाहकार्य समाधा हइयाछे एइरूप खबर देओयाइ भालो।

भोरेर दिके याहारा काठ लइया आसिल ताहारा संवाद पाइल, विलम्ब देखिया पूर्वेइ कार्य शेष करा हइयाछे, कुटिरेर मध्ये काष्ठ संचित छिल। ए सम्बन्धे काहारओ सहजे सन्देह उपस्थित हइते पारे ना—कारण, मृतदेह एमन-किछु बहुमूल्य सम्पत्ति नहे ये केह फाँकि दिया चुरि करिया लइया याइबे।

द्वितीय परिच्छेद

सकलेइ जानेन, जीवनेर यखन कोनो लक्षण पाओया याय ना तखनो अनेक समय जीवन प्रच्छन्न भावे थाके, एवं समयमतो पुनर्बार मृतवत् देहे ताहार कार्य आरम्भ हय। कादम्बिनीओ

राग—क्रोध। विस्तर—बहुत।

ढुकिया—घुस कर।

चाहिया रहिल—ताकते रहे। काछे खानिकटा कादा—निकट थोड़ा-सा कीचड़। सद्य—ताजे।

समाधा—सम्पन्न।

फाँकि दिया—धोखा दे कर।

मरे नाइ—हठात् की कारणे ताहार जीवनेर क्रिया बन्ध हइया गियाछिल ।

यखन से सचेतन हइया उठिल, देखिल चतुर्दिके निविड़ अन्धकार। चिराभ्यासमतो येखाने शयन करिया थाके, मने हइल एटा से जायगा नहे। एकबार डाकिल 'दिदि'—अन्धकार घरे केह साड़ा दिल ना। सभये उठिया बसिल, मने पड़िल सेइ मृत्युशय्यार कथा। सेइ हठात् वक्षेर काछे एकटि वेदना—श्वासरोधेर उपक्रम। ताहार बड़ो जा घरेर कोणे बसिया एकटि अग्निकुण्डेर उपरे खोकार जन्य दुध गरम करितेछे—कादम्बिनी आर दाँड़ाइते ना पारिया बिछानार उपर आछाड़ खाइया पड़िल—रुद्धकण्ठे कहिल, 'दिदि' एकबार खोकाके आनिया दाओ, आमार प्राण केमन करितेछे।' ताहार पर समस्त कालो हइया आसिल—येन एकटि लेखा खातार उपरे दोयातसुद्ध कालि गड़ाइया पड़िल—कादम्बिनीर समस्त स्मृति एवं चेतना, विश्व-ग्रन्थेर समस्त अक्षर एक मुहूर्ते एकाकार हइया गेल। खोका ताहाके एकबार शेषबारेर मतो ताहार सेइ सुमिष्ट भालोबासार स्वरे काकिमा बलिया डाकियाछिल कि ना, ताहार अनन्त अज्ञात मरणयात्रार पथे चिरपरिचित पृथिवी हइते एइ शेष स्नेहपाथेय-टुकु संग्रह करिया आनियाछिल कि ना, विधवार ताहाओ मने पड़े ना ।

प्रथमे मने हइल, यमालय बुझि एइरूप चिरनिर्जन एवं चिरान्धकार। सेखाने किछुइ देखिबार नाइ, शुनिबार नाइ, काज करिबार नाइ, केवल चिरकाल एइरूप जागिया उठिया बसिया थाकिते हइबे।

एटा—यह। से—वह। साड़ा—आहट। बसिल—बैठ गई। कथा—बात। काछे—निकट। बड़ो जा—बड़ी जिठानी। कोणे—कोने में। खोकार जन्य—बच्चे के लिए। दाँड़ाइते ना पारिया—खड़ी न रह सकने के कारण। आछाड़ खाइया—पछाड़ खा कर। प्राण केमन करितेछे—जी कैसा कर रहा है। ताहारपर—उसके बाद। लेखा....उपरे—लिखी हुई कापी पर। दोयातसुद्ध—पूरी की पूरी दावात। कालि—स्याही। गड़ाइया पड़िल—लुढ़क पड़ी। खोका—बच्चा।

बुझि—शायद। सेखाने—वहाँ। एइरूप—इसी प्रकार।

ताहार पर यखन मुक्त द्वार दिया हठात् एकटा ठाण्डा वादलार वातास दिल एवं वर्षार भेकेर डाक काने प्रवेश करिल, तखन एक मुहूर्ते ताहार एइ स्वल्प जीवनेर आशैशव समस्त वर्षार स्मृति घनीभूतभावे ताहार मने उदय हइल एवं पृथिवीर निकट-संस्पर्श से अनुभव करिते पारिल। एकवार विद्युत चमकिया उठिल; सम्मुखे पुष्करिणी, वटगाछ, वृहत् माठ एवं सुदूर तरुश्रेणी एक पलके चोखे पड़िल। मने पड़िल, माझे माझे पुण्यतिथि उपलक्षे एइ पुष्करिणीते आसिया स्नान करियाछे, एवं मने पड़िल, सेइ समये एइ श्मशाने मृतदेह देखिया मृत्युके की भयानक मने हइत।

प्रथमेइ मने हइल, वाड़ि फिरिया याइते हइवे। किन्तु तखनि भाविल, 'आमि तो वाँचिया नाइ, आमाके वाड़िते लइवे केन। सेखाने ये अमङ्गल हइवे। जीवराज्य हइते आमि ये निर्वासित हइया आसियाछि—आमि ये आमार प्रेतात्मा।'

ताइ यदि ना हइवे तवे से एइ अर्धरात्रे शारदाशंकरेर सुरक्षित अन्तःपुर हइते एइ दुर्गम श्मशाने आसिल केमन करिया। एखनओ यदि तार अन्त्येष्टिक्रिया शेष ना हइया थाके तवे दाह करिवार लोकजन गेल कोथाय। शारदाशंकरेर आलोकित गृहे ताहार मृत्युर शेष मुहूर्त मने पड़िल, ताहार परेइ एइ वहुदूरवर्ती जनशून्य अन्धकार श्मशानेर मध्ये आपनाके एकाकिनी देखिया से जानिल, 'आमि एइ पृथिवीर जनसमाजेर आर केह नहि—आमि अति भीषण, अकल्याणकारिणी; आमि आमार प्रेतात्मा।'

एइ कथा मने उदय हइवामात्रइ ताहार मने हइल, ताहार

वादलार...दिल—वरसाती हवा का झोंका आया। भेकेर डाक—मेंढक की टर्राहट। माठ—मैदान। चोखे—आँखों में। मने पड़िल—याद आया। माझे माझे—बीच-बीच में।

वाड़ि—घर। भाविल—सोचा। वाँचिया नाइ—बची (जीवित) नहीं हूँ। लइवे केन—ग्रहण क्यों करेंगे। सेखाने—वहाँ।

ताइ—वही। केमन करिया—क्यों कर। एखनओ—अभी भी। शेष—समाप्त।

हइवामात्रइ—होते ही।

चतुर्दिक हइते विश्वनियमेर समस्त बन्धन येन छिन्न हइया गियाछे, येन ताहार अद्भुत शक्ति, असीम स्वाधीनता—येखाने इच्छा याइते पारे, याहा इच्छा करिते पारे। एइ अभूतपूर्व नूतन भावेर आविर्भावे से उन्मत्तेर मतो हइया हठात् एकटा दमका वातासेर मतो घर हइते बाहिर हइया अन्धकार श्मशानेर उपर दिया चलिल—मने लज्जा-भय-भाबनार लेशमात्र रहिल ना।

चलिते चलिते चरण श्रान्त, देह दुर्बल हइया आसिते लागिल। माठेर पर माठ आर शेष हय ना—माझे माझे धान्यक्षेत्र, कोथाओ वा एक-हाँटु जल दाँड़ाइया आछे। यखन भोरेर आलो अल्प अल्प देखा दियाछे तखन अदूरे लोकालयेर बाँशझाड़ हइते दुटो-एकटा पाखिर डाक शुना गेल।

तखन ताहार केमन भय करिते लागिल। पृथिवीर सहित जीवित मनुष्येर सहित एखन ताहार किरूप नूतन सम्पर्क दाँड़ाइ-याछे से किछु जाने ना। यतक्षण माठे छिल, श्मशाने छिल, श्रावणरजनीर अन्धकारेर मध्ये छिल ततक्षण से येन निर्भये छिल। येन आपन राज्ये छिल। दिनेर आलोके लोकालय ताहार पक्षे अति भयंकर स्थान बलिया बोध हइल। मानुष भूतके भय करे, भूतओ मानुषके भय करे; मृत्युनदीर दुइ पारे दुइजनेर वास।

तृतीय परिच्छेद

कापड़े कादा माखिया, अद्भुत भावेर वशे ओ रात्रिजागरणे पागलेर मतो हइया, कादम्बिनीर येरूप चेहारा हइयाछिल ताहाते

दमका...मतो—हवा के झोंके की तरह। श्मशानेर...दिया—श्मशान से हो कर। भाबनार—चिन्ता का।

माठ—मैदान। माझे माझे—बीच-बीच में। एक-हांटु—घुटने भर। बाँशझाड़—बांस की झाड़ी।

केमन—कैसा। किरूप—किस प्रकार का।

कादा माखिया—कीचड़ साने।

मानुष ताहाके देखिया भय पाइते पारित एवं छेलेरा वोध हय दूरे पलाइया गिया ताहाके ढेला मारित। सौभाग्यक्रमे एकटि पथिक भद्रलोक ताहाके सर्वप्रथमे एइ अवस्थाय देखिते पाय।

से आसिया कहिल, "मा, तोमाके भद्रकुलवधू वलिया वोध हइतेछे, तुमि ए अवस्थाय एकला पथे कोथाय चलियाछ।"

कादम्बिनी प्रथमे कोनो उत्तर ना दिया ताकाइया रहिल। हठात् किछुइ भाविया पाइल ना। से ये संसारेर मध्ये आछे, ताहाके ये भद्र-कुलवधूर मतो देखाइतेछे, ग्रामेर पथे पथिक ताहाके ये प्रश्न जिज्ञासा करितेछे, ए-समस्तइ ताहार काछे अभावनीय वलिया वोध हइल।

पथिक ताहाके पुनश्च कहिल, "चलो मा, आमि तोमाके घरे पौँछाइया दिइ—तोमार वाड़ि कोथाय आमाके वलो।"

कादम्बिनी चिन्ता करिते लागिल। श्वशुरवाड़ि फिरिवार कथा मने स्थान देओया याय ना, वापेर वाड़ि तो नाइ—तखन छेलेवेलार सइके मने पड़िल।

सइ योगमायार सहित यदिओ छेलेवेला हइतेइ विच्छेद तथापि माझे माझे चिठिपत्र चले। एक-एक समय रीतिमतो भालोवासार लड़ाइ चलिते थाके—कादम्बिनी जानाइते चाहे, भालोवासा ताहार दिकेइ प्रवल; योगमाया जानाइते चाहे, कादम्बिनी ताहार भालोवासार यथोपयुक्त प्रतिदान देय ना। कोनो सुयोगे एकवार उभये मिलन हइते पारिले ये एक दण्ड केह काहाके चोखेर आड़ाल करिते पारिवे ना, ए विषये कोनो पक्षेरइ कोनो सन्देह छिल ना।

कादम्बिनी भद्रलोकटिके कहिल, "निशिन्दापुरे श्रीपतिचरण-वावुर वाड़ि याइव।"

पथिक कलिकाताय याइतेछिलेन; निशिन्दापुर यदिओ निकट-

छेलेरा—वच्चे। वोध हय—लगता है। पलाइया—भाग कर।
भाविया पाइल ना—सोच न पाई।
छेलेवेलार सइके—वचपन की सखी की।
एक-एक समय—कभी-कभी। रीतिमतो—वाकायदा। जानाइते चाहे—जता देना चाहती है। आड़ाल—ओट।

वर्ती नहे तथापि ताँहार गम्य पयेइ पड़े। तिनि स्वयं वन्दोवस्त करिया कादम्बिनीके श्रीपतिचरणवाबुर वाड़ि पौँछाइया दिलेन।

दुइ सइये मिलन हइल। प्रथमे चिनिते एकटु विलम्ब हइयाछिल, तार पर वाल्यसादृश्य उभयेर चक्षे क्रमशइ परिस्फुट हइया उठिल।

योगमाया कहिल, "ओमा, आमार की भाग्य। तोमार ये दर्शन पाइव एमन तो आमार मनेइ छिल ना। किन्तु, भाइ, तुमि की करिया आसिले। तोमार श्वशुरवाड़िर लोकेरा ये तोमाके छाड़िया दिल!"

कादम्बिनी चुप करिया रहिल; अवशेषे कहिल, "भाइ, श्वशुरवाड़िर कथा आमाके जिज्ञासा करियो ना। आमाके दासीर मतो वाड़िर एक प्रान्ते स्थान दियो, आमि तोमादेर काज करिया दिव।"

योगमाया कहिल, "ओमा, से की कथा। दासीर मतो थाकिवे केन। तुमि आमार सइ, तुमि आमार"—इत्यादि।

एमन समय श्रीपति घरे प्रवेश करिल। कादम्बिनी खानिकक्षण ताहार मुखेर दिके ताकाइया धीरे धीरे घर हइते वाहिर हइया गेल—माथाय कापड़ देओया, वा कोनोरूप संकोच वा सम्भ्रमेर लक्षण देखा गेल ना।

पाछे ताहार सइयेर विरुद्धे श्रीपति किछु मने करे, एजन्य व्यस्त हइया योगमाया नानारूपे ताहाके वुझाइते आरम्भ करिल। किन्तु, एतइ अल्प वुझाइते हइल एवं श्रीपति एत सहजे योगमायार समस्त प्रस्तावे अनुमोदन करिल ये, योगमाया मने-मने विशेष सन्तुष्ट हइल ना।

ताँहार—उनके।
चिनिते—पहचानने में। तार पर—उसके वाद।
खानिकक्षण—कुछ देर।
पाछे—वाद में कहीं। व्यस्त—व्यग्र। वुझाइते—समझाना।

कादम्बिनी सइयेर बाड़िते आसिल, किन्तु सइयेर सङ्गे मिशिते पारिल ना—माझे मृत्युर व्यवधान। आत्मसम्बन्धे सर्वदा एकटा सन्देह एवं चेतना थाकिले परेर सङ्गे मेला याय ना। कादम्बिनी योगमायार मुखेर दिके चाय एवं की येन भावे—मने करे, 'स्वामी एवं घरकन्ना लइया ओ येन बहु दूरे आर-एक जगते आछे। स्नेह-ममता एवं समस्त कर्तव्य लइया ओ येन पृथिवीर लोक, आर आमि येन शून्य छाया। ओ येन अस्तित्वेर देशे आर आमि येन अनन्तेर मध्ये।'

योगमायारओ केमन केमन लागिल, किछुइ बुझिते पारिल ना। स्त्रीलोक रहस्य सह्य करिते पारे ना—कारण अनिश्चितके लइया कवित्व करा याय, वीरत्व करा याय, पाण्डित्य करा याय, किन्तु घरकन्ना करा याय ना। एइजन्य स्त्रीलोक येटा बुझिते पारे ना, हय सेटार अस्तित्व विलोप करिया ताहार सहित कोनो सम्पर्क राखे ना, नय ताहाके स्वहस्ते नूतन मूर्ति दिया निजेर व्यवहारयोग्य एकटि सामग्री गड़िया तोले—यदि दुइयेर कोनोटाइ ना पारे तबे ताहार उपर भारि राग करिते थाके।

कादम्बिनी यतइ दुर्बोध हइया उठिल योगमाया ताहार उपर ततइ राग करिते लागिल; भाविल, ए की उपद्रव स्कन्धेर उपर चापिल।

आबार आर-एक विपद। कादम्बिनीर आपनाके आपनि भय करे। से निजेर काछ हइते निजे किछुतेइ पलाइते पारे ना। याहादेर भूतेर भय आछे ताहारा आपनार पश्चाद्दिगके भय करे—येखाने दृष्टि राखिते पारे ना सेखानेइ भय। किन्तु, कादम्बिनीर आपनार मध्येइ सर्वापेक्षा बेशि भय, बाहिरे तार भय नाइ।

मिशिते...ना—घुल-मिल नहीं पाई। माझे—बीच में। चाय—ताकती। की येन भावे—जाने क्या सोचती। घरकन्ना—घर-गृहस्थी। येन—मानो।
केमन—कैसा। बुझिते पारिल ना—समझ न सकी।
गड़िया तोले—गढ़ लेती है। ना पारे—नहीं कर पाती।
राग—क्रोध। उपद्रव...चापिल—झंझट सिर पर आ पड़ा।

एइजन्य विजन द्विप्रहरे से एका घरे एक-एकदिन चीत्कार करिया उठित, एवं सन्ध्यावेलाय दीपालोके आपन। र छाया देखिले ताहार गा छम्छम् करिते थाकित।

ताहार एइ भय देखिया बाड़िसुद्ध लोकेर मने केमन एकटा भय जन्मिया गेल। चाकरदासीरा एवं योगमायाओ यखन-तखन येखाने-सेखाने भूत देखिते आरम्भ करिल।

एकदिन एमन हइल, कादम्बिनी अर्धरात्रे आपन शयनगृह हइते काँदिया बाहिर हइया एकेबारे योगमायार गृहद्वारे आसिया कहिल, "दिदि, दिदि, तोमार दुटि पाये पड़ि गो! आमाय एकला फेलिया राखियो ना।"

योगमायार येमन भयओ पाइल तेमनि रागओ हइल। इच्छा करिल तद्दण्डेइ कादम्बिनीके दूर करिया देय। दयापरवश श्रीपति अनेक चेष्टाय ताहाके ठाण्डा करिया पार्श्ववर्ती गृहे स्थान दिल।

परदिन असमये अन्तःपुरे श्रीपतिर तलव हइल। योगमाया ताहाके अकस्मात् भर्त्सना करिते आरम्भ करिल, "हाँ गा, तुमि केमनधारा लोक। एकजन मेयेमानुष आपन श्वशुरघर छाड़िया तोमार घरे आसिया अधिष्ठान हइल, मासखानेक हइया गेल तबु याइबार नाम करे ना, आर तोमार मुखे ये एकटि आपत्ति-मात्र शुनि ना। तोमार मनेर भावटा की बुझाइया बलो देखि। तोमरा पुरुषमानुष एमनि जातइ बटे।"

वास्तविक, साधारण स्त्रीजातिर 'परे पुरुषमानुषेर एकटा निर्विचार पक्षपात आछे एवं सेजन्य स्त्रीलोकेराइ ताहादिगके अधिक

एइजन्य—इसीलिए। गा...थाकित—शरीर सिहर उठता।
बाड़िसुद्ध—घर-भर के। यखन-तखन—जब-तब। येखाने-सेखाने—जहाँ-तहाँ। काँदिया—रोते हुए। गो—(सम्बोधनसूचक शब्द-विशेष।)
तद्दण्डेइ—उसी क्षण।
हाँ गा—क्यों जी। एकटि—तनिक। बलो देखि—बताओ तो सही। ताहादिगके—उन को।

अपराधी करे। निःसहाय अथच सुन्दरी कादम्बिनीर प्रति श्रीपतिर करुणा ये यथोचित मात्रार चेये किंचित अधिक छिल ताहार विरुद्धे तिनि योगमायार गात्रस्पर्शपूर्वक शपथ करिते उद्यत हइलेओ, ताँहार व्यवहारे ताहार प्रमाण पाओया याइत।

तिनि मने करितेन, 'निश्चयइ श्वशुरवाड़िर लोकेरा एइ पुत्रहीना विधवार प्रति अन्याय अत्याचार करित, ताइ नितान्त सह्य करिते ना पारिया पलाइया कादम्बिनी आमार आश्रय लइयाछे। यखन इहार वाप मा केहइ नाइ तखन आमि इहाके की करिया त्याग करि।' एइ वलिया तिनि कोनोरूप सन्धान लइते क्षान्त छिलेन एवं कादम्बिनीकेओ एइ अप्रीतिकर विषये प्रश्न करिया व्यथित करिते ताँहार प्रवृत्ति हइत ना।

तखन ताँहार स्त्री ताँहार असाड़ कर्तव्यवुद्धिते नानाप्रकार आघात दिते लागिल। कादम्बिनीर श्वशुरवाड़िते खवर देओया ये ताँहार गृहेर शान्तिरक्षार पक्षे एकान्त आवश्यक, ताहा तिनि वेश वुझिते पारिलेन। अवशेषे स्थिर करिलेन, हठात् चिठि लिखिया वसिले भालो फल ना'ओ हइते पारे, अतएव रानीहाटे तिनि निजे गिया सन्धान लइया याहा कर्तव्य स्थिर करिवेन।

श्रीपति तो गेलेन, ए दिके योगमाया आसिया कादम्बिनीके कहिल, "सइ, एखाने तोमार आर थाका भालो देखाइतेछे ना। लोके वलिवे की।"

कादम्बिनी गम्भीरभावे योगमायार मुखेर दिके ताकाइया कहिल, "लोकेर सङ्गे आमार सम्पर्क की।"

योगमाया कथा शुनिया अवाक हइया गेल। किंचित रागिया कहिल, "तोमार ना थाके, आमादेर तो आछे। आमरा परेर घरेर वधूके की वलिया आटक करिया राखिव।"

कादम्बिनी कहिल, "आमार श्वशुरघर कोथाय।"

चेये—अपेक्षा।

असाड़—जड़, बोधशक्तिहीन। आटक करिया—अटका कर।

योगमाया भाविल, 'आ मरण। पोड़ाकपालि बले की।'

कादम्बिनी धीरे धीरे कहिल, "आमि कि तोमादेर केह। आमि कि ए पृथिवीर। तोमरा हासितेछ, काँदितेछ, भालोवासितेछ, सबाइ आपन आपन लइया आछ, आमि तो केवल चाहिया आछि। तोमरा मानुष आर आमि छाया। बुझिते पारि ना, भगवान आमाके तोमादेर एइ संसारेर माझखाने केन राखियाछेन। तोमराओ भय कर पाछे तोमादेर हासिखेलार मध्ये आमि अमङ्गल आनि—आमिओ बुझिया उठिते पारि ना, तोमादेर सङ्गे आमार की सम्पर्क। किन्तु, ईश्वर यखन आमादेर जन्य आर-कोनो स्थान गड़िया राखेन नाइ, तखन काजे-काजेइ बन्धन छिँड़िया याय तबु तोमादेर काछेइ घुरिया घुरिया बेड़ाइ।"

एमनि भावे चाहिया कथागुला बलिया गेल ये, योगमाया केमन एकरकम करिया मोटेर उपर एकटा की बुझिते पारिल, किन्तु आसल कथाटा बुझिल ना, जबावओ दिते पारिल ना। द्वितीयबार प्रश्न करितेओ पारिल ना। अत्यन्त भारग्रस्त गम्भीर भावे चलिया गेल।

चतुर्थ परिच्छेद

रात्रि प्राय यखन दशटा तखन श्रीपति रानीहाट हइते फिरिया आसिलेन। मूषलधारे वृष्टिते पृथिवी भासिया याइतेछे। क्रमागतइ ताहार झर् झर् शब्दे मने हइतेछे, वृष्टिर शेष नाइ, आज रात्रिरओ शेष नाइ।

पोड़ाकपालि—हतभागिनी।

काँदितेछ—रोते हो। आपन....आछ—अपने में भूले हुए हो। चाहिया—देखा करती हूँ। माझखाने—बीच में। गड़िया—रचा, बनाया। काजे...याय—इसीलिए बन्धन टूट जाता है। घुरिया बेड़ाइ—भटकती फिरती हूँ।

चाहिया—ताकती हुई। केमन...बुझिते पारिल—किसी प्रकार से सब मिला कर कुछ न कुछ समझ लिया।

भासिया याइतेछे—बही जा रही थी। मने हइतेछे—(ऐसा) लगता था।

योगमाया जिज्ञासा करिलेन, "की हइल।"

श्रीपति कहिलेन, "से अनेक कथा। परे हइबे।" बलिया कापड़ छाड़िया आहार करिलेन एवं तामाक खाइया शुइते गेलेन। भावटा अत्यन्त चिन्तित।

योगमाया अनेक क्षण कौतूहल दमन करिया छिलेन, शय्याय प्रवेश करियाइ जिज्ञासा करिलेन, "की शुनिले, वलो।"

श्रीपति कहिलेन, "निश्चय तुमि एकटा भुल करियाछ।"

शुनिबामात्र योगमाया मने-मने ईषत् राग करिलेन। भुल मेयेरा कखनोइ करे ना, यदि-बा करे कोनो सुबुद्धि पुरुषेर सेटा उल्लेख करा कर्तव्य हय ना, निजेर घाड़ पातिया लओयाइ सुयुक्ति। योगमाया किंचित् उष्णभावे कहिलेन, "किरकम शुनि।"

श्रीपति कहिलेन, "ये स्त्रीलोकटिके तोमार घरे स्थान दियाछ से तोमार सइ कादम्बिनी नहे।"

एमनतरो कथा शुनिले सहजेइ राग हइते पारे—विशेषत निजेर स्वामीर मुखे शुनिले तो कथाइ नाइ। योगमाया कहिलेन, "आमार सइके आमि चिनि ना, तोमार काछ हइते चिनिया लइते हइबे—की कथार श्री।"

श्रीपति बुझाइलेन, ए स्थले कथार श्री लइया कोनोरूप तर्क हइतेछे ना, प्रमाण देखिते हइबे। योगमायार सइ कादम्बिनी ये मारा गियाछे ताहाते कोनो सन्देह नाइ।

योगमाया कहिलेन, "ओइ शोनो। तुमि निश्चय एकटा गोल पाकाइया आसियाछ। कोथाय याइते कोथाय गियाछ,

---

कापड़ छाड़िया—धोती बदल कर। भावटा—मुद्रा।

शुनिबामात्र—सुनते ही। कखनोइ—कभी भी। सेटा—उसका। घाड़ पातिया लओयाइ—गर्दन झुका लेना (चुप रह जाना) ही। किरकम—किस प्रकार। सइ—सखी।

एमनतरो—इस प्रकार की। कथाइ नाइ—बात ही नहीं। की...श्री—क्या सुन्दर बात कही है।

गोल पाकाइया आसियाछ—गोल-माल करके आए हो।

की शुनिते की शुनियाछ ताहार ठिक नाइ। तोमाके निजे याइते के वलिल, एकखाना चिठि लिखिया दिलेइ समस्त परिष्कार हइत।"

निजेर कर्मपटुतार प्रति स्त्रीर एइरूप विश्वासेर अभावे श्रीपति अत्यन्त क्षुण्ण हइया विस्तारितभावे समस्त प्रमाण प्रयोग करिते लागिलेन, किन्तु कोनो फल हइल ना। उभय पक्षे हाँ ना करिते करिते रात्रि द्विप्रहर हइया गेल।

यदिओ कादम्बिनीके एइ दण्डेइ गृह हइते वहिष्कृत करिया देओया सम्वन्धे स्वामी स्त्री काहारओ मतभेद छिल ना—कारण, श्रीपतिर विश्वास ताँहार अतिथि छद्मपरिचये ताँहार स्त्रीके एतदिन प्रतारणा करियाछे एवं योगमायार विश्वास से कुलत्यागिनी—तथापि उपस्थित तर्कटा सम्वन्धे उभयेर केहइ हार मानिते चाहेन ना।

उभयेर कण्ठस्वर क्रमेइ उच्च हइया उठिते लागिल, भुलिया गेलेन पाशेर घरेइ कादम्बिनी शुइया आछे।

एकजन वलेन, "भालो विपदेइ पड़ा गेल। आमि निजेर काने शुनिया आसिलाम।"

आर-एकजन दृढ़स्वरे वलेन, "से कथा वलिले मानिव केन, आमि निजेर चक्षे देखितेछि।"

अवशेषे योगमाया जिज्ञासा करिलेन, "आच्छा, कादम्बिनी कवे मरिल वलो देखि।"

भाविलेन कादम्बिनीर कोनो-एकटा चिठिर तारिखेर सहित अनैक्य वाहिर करिया श्रीपतीर भ्रम सप्रमाण करिया दिबेन।

श्रीपति ये तारिखेर कथा वलिलेन, उभये हिसाव करिया देखिलेन, येदिन सन्ध्यावेलाय कादम्बिनी ताँहादेर वाड़िते आसे से तारिख ठिक ताहार पूर्वेर दिनेइ पड़े। शुनिवामात्र योगमायार

एइरूप—इस प्रकार। उपस्थित—प्रस्तुत, वर्तमान।
अनैक्य—असंगति। सप्रमाण—प्रमाणित।

वुकटा हठात् काँपिया उठिल, श्रीपतिरओ केमन एकरकम बोध हइते लागिल।

एमन समये ताँहादेर घरेर द्वार खुलिया गेल, एकटा वादलार वातास आसिया प्रदीपटा फस् करिया निबिया गेल। वाहिरेर अन्धकार प्रवेश करिया एक मुहूर्ते समस्त घरटा आगागोड़ा भरिया गेल। कादम्बिनी एकेवारे घरेर भितरे आसिया दाँड़ाइल। तखन रात्रि आड़ाइ प्रहर हइया गियाछे, वाहिरे अविश्राम वृष्टि पड़ितेछे।

कादम्बिनी कहिल, "सइ, आमि तोमार सेइ कादम्बिनी, किन्तु एखन आमि आर वाँचिया नाइ। आमि मरिया आछि।"

योगमाया भये चीत्कार करिया उठिलेन; श्रीपतिर वाक्यस्फूर्ति हइल ना।

"किन्तु आमि मरियाछि छाड़ा तोमादेर काछे आर की अपराध करियाछि। आमार यदि इहलोकेओ स्थान नाइ, परलोकेओ स्थान नाइ—ओगो, आमि तबे कोथाय याइब।" तीव्रकण्ठे चीत्कार करिया येन एइ गभीर वर्षानिशीथे सुप्त विधाताके जाग्रत करिया जिज्ञासा करिल, "ओगो, आमि तबे कोथाय याइब।"

एइ बलिया मूर्छित दम्पतिके अन्धकार घरे फेलिया विश्वजगते कादम्बिनी आपनार स्थान खुँजिते गेल।

पञ्चम परिच्छेद

कादम्बिनी ये केमन करिया रानीहाटे फिरिया गेल, ताहा वला कठिन। किन्तु, प्रथमे काहाकेओ देखा दिल ना। समस्त दिन अनाहारे एकटा भाङा पोड़ो मंदिरे यापन करिल।

बुकटा—छाती। **केमन...लागिल**—जाने कैसा-कैसा लगने लगा।
बादलार—बरसाती। **निबिया गेल**—बुझ गया। **आगागोड़ा**—सम्पूर्ण। **एकेबारे**—बिल्कुल।
छाड़ा—अतिरिक्त। **काछे**—निकट। **ओगो**—अरे। **येन**—मानो।
भाङा—टूटे हुए। **पोड़ो**—अव्यवहृत।

वर्षार अकाल सन्ध्या यखन अत्यन्त घन हइया आसिल एवं आसन्न दुर्योगेर आशंकाय ग्रामेर लोकेरा व्यस्त हइया आपन आपन गृह आश्रय करिल तखन कादम्बिनी पथे बाहिर हइल। श्वशुर-बाड़िर द्वारे गिया एकबार ताहार हृत्कम्प उपस्थित हइयाछिल, किन्तु मस्त घोमटा टानिया यखन भितरे प्रवेश करिल दासीभ्रमे द्वारीरा कोनोरूप बाधा दिल ना। एमन समय वृष्टि खुब चापिया आसिल, वातासओ वेगे बहिते लागिल।

तखन बाड़िर गृहिणी शारदाशंकरेर स्त्री ताँहार विधवा ननदेर सहित तास खेलितेछिलेन। झि छिलो रान्नाघरे एवं पीड़ित खोका ज्वरेर उपशमे शयनगृहे बिछानाय घुमाइतेछिल। कादम्बिनी सकलेर चक्षु एड़ाइया सेइ घरे गिया प्रवेश करिल। से ये की भाबिया श्वशुरबाड़ि आसियाछिल जानि ना, से निजेओ जाने ना, केवल एइटुकु जाने ये एकबार खोकाके चक्षे देखिया याइबार इच्छा। ताहार पर कोथाय याइबे, की हइबे, से कथा से भाबेओ नाइ।

दीपालोके देखिल, रुग्ण शीर्ण खोका हात मुठा करिया घुमाइया आछे। देखिया उत्तप्त हृदय येन तृषातुर हइया उठिल—ताहार समस्त बालाइ लइया ताहाके एकबार बुके चापिया ना धरिले कि बाँचा याय। आर, ताहार पर मने पड़िल, 'आमि नाइ, इहाके देखिबार के आछे। इहार मा सङ्ग भालोबासे, गल्प भालोबासे, खेला भालोबासे, एतदिन आमार हाते भार दियाइ से निश्चिन्त

अकाल—असमय। दुर्योगेर—आँधी-पानी की। व्यस्त—व्याकुल। मस्त घोमटा टानिया—खूब लम्बा घूंघट काढ़ कर। चापिया—ज़ोर से, जम कर।

झि—महरी, दासी। रान्नाघर—रसोईघर। खोका—बच्चा। घुमाइतेछिल—सो रहा था। चक्षु एड़ाइया—आँख बचा कर। भाबिया—सोच कर। एइटुकु—इतना भर। से...नाइ—उसने सोची भी नहीं।

हात मुठा करिया—मुट्ठी बाँधे। बालाइ—बलाएँ। बुके.... याय—छाती से लगाए बिना क्या रहा जा सकता है। सङ्ग—मिलना-जुलना।

छिल, कखनो ताहाके छेलेमानुष करिबार कोनो दाय पोहाइते हय नाइ। आज इहाके के तेमन करिया यत्न करिबे।"

एमन समय खोका हठात् पाश फिरिया अर्धनिद्रित अवस्थाय बलिया उठिल, "काकिमा, जल दे।" आ मरिया याइ! सोना आमार, तोर काकिमाके एखनओ भुलिस नाइ। ताड़ाताड़ि कुँजा हइते जल गड़ाइया लइया, खोकाके बुकेर उपर तुलिया कादम्बिनी ताहाके जल पान कराइल।

यतक्षण घुमेर घोर छिल, चिराभ्यासमतो काकिमार हात हइते जल खाइते खोकार किछुइ आश्चर्य बोध हइल ना। अवशेषे कादम्बिनी यखन बहुकालेर आकाङ्क्षा मिटाइया ताहार मुखचुम्बन करिया ताहाके आबार शुयाइया दिल, तखन तार घुम भाङिया गेल एवं काकिमाके जड़ाइया धरिया जिज्ञासा करिल, "काकिमा, तुइ मरे गियेछिलि?"

काकिमा कहिल, "हाँ, खोका।"

"आबार तुइ खोकार काछे फिरे एसेछिस? आर तुइ मरे याबि ने?"

इहार उत्तर दिबार पूर्वेइ एकटा गोल बाधिल—झि एक-बाटि सागु हाते करिया घरे प्रवेश करियाछिल, हठात् बाटि फेलिया 'मागो' बलिया आछाड़ खाइया पड़िया गेल।

चीत्कार शुनिया तास फेलिया गिन्नि छुटिया आसिलेन, घरे ढुकितेइ तिनि एकेबारे काठेर मतो हइया गेलेन, पलाइतेओ पारिलेन ना, मुख दिया एकटि कथाओ सरिल ना।

छेले...नाइ—पाल-पोस कर बड़ा करने का झमेला उठाना नहीं पड़ा। तेमन करिया—उस प्रकार।

पाश फिरिया—करवट बदल कर। आ मरिया जाइ—(स्नेह-संवेदना-सूचक) अहा, बलि जाऊँ। ताड़ाताड़ि—जल्दी से। गड़ाइया—ढाल कर।

घुमेर घोर—नींद की शिथिलता। जड़ाइया धरिया—चिपटा कर।
गोल बाधिल—झमेला उठ खड़ा हुआ। झि—महरी, दासी। बाटि—कटोरी। मागो—मैया री। आछाड़ खाइया—पछाड़ खा कर।
गिन्नि...आसिलेन—गृहिणी दौड़ी-दौड़ी आईं। ढुकितेइ—घुसते ही। पलाइतेओ पारिलेन ना—भाग भी न सकीं। सरिल ना—न निकली।

एइ-सकल व्यापार देखिया खोकारओ मने भयेर सञ्चार हइया उठिल—सें काँदिया बलिया उठिल, "काकिमा, तुइ या।"

कादम्बिनी अनेक दिन परे आज अनुभव करियाछे ये, से मरे नाइ—सेइ पुरातन घरद्वार, सेइ समस्त, सेइ खोका, सेइ स्नेह, ताहार पक्षे समान जीवन्तभावेइ आछे, मध्ये कोनो विच्छेद कोनो व्यवधान जन्माय नाइ। सइयेर बाड़ि गिया अनुभव करिया छिल बाल्यकालेर से सइ मरिया गियाछे; खोकार घरे आसिया बुझिते पारिल, खोकार काकिमा तो एकतिलओ मरे नाइ।

व्याकुलभावे कहिल, "दिदि, तोमरा आमाके देखिया केन भय पाइतेछ। एइ देखो, आमि तोमादेर सेइ तेमनि आछि।"

गिन्नि आर दाँड़ाइया थाकिते पारिलेन ना, मूर्छित हइया पड़िया गेलेन। भग्नीर काछे सम्वाद पाइया शारदाशंकरबाबु स्वयं अन्तःपुरे आसिया उपस्थित हइलेन; तिनि जोड़हस्ते कादम्बिनीके कहिलेन, "छोटोबउमा, एइ कि तोमार उचित हय। सतीश आमार वंशेर एकमात्र छेले, उहार प्रति तुमि केन दृष्टि दितेछ। आमरा कि तोमार पर। तुमि याओयार पर हइते ओ प्रतिदिन शुकाइया याइतेछे, उहार व्यामो आर छाड़े ना, दिनरात केवल 'काकिमा' 'काकिमा' करे। यखन संसार हइते विदाय लइयाछ तखन ए मायाबन्धन छिँड़िया याओ—आमरा तोमार यथोचित सत्कार करिब।"

तखन कादम्बिनी आर सहिते पारिल ना; तीव्रकण्ठे बलिया उठिल, "ओगो, आमि मरि नाइ गो, मरि नाइ। आमि केमन करिया तोमादेर बुझाइब, आमि मरि नाइ। एइ देखो, आमि बाँचिया आछि।"

एकतिलओ—तिलभर भी। तेमनि—वैसे ही।

दाँड़ाइया—खड़ी। छेले—लड़का, संतान। दृष्टि दितेछ—नज़र गड़ा रही हो। पर—पराये। व्यामो—व्याधि। छिँड़िया याओ—तोड़ दो। सत्कार—श्राद्ध आदि।

आर...ना—और न सह सकी। केमन...बुझाइब—क्यों कर तुम्हें समझाऊँ।

वलिया काँसार वाटिटा भूमि हइते तुलिया कपाले आघात करिते लागिल, कपाल फाटिया रक्त वाहिर हइते लागिल।

तखन वलिल, "एइ देखो, आमि वाँचिया आछि।"

शारदाशंकर मूर्तिर मतो दाँड़ाइया रहिलेन; खोका भये वावाके डाकिते लागिल; दुइ मूर्छिता रमणी माटिते पड़िया रहिल।

तखन कादम्विनी "ओगो, आमि मरि नाइ गो, मरि नाइ गो, मरि नाइ—" वलिया चीत्कार करिया घर हइते वाहिर हइया, सिँड़ि वाहिया नामिया अन्तःपुरेर पुष्करिणीर जलेर मध्ये गिया पड़िल। शारदाशंकर उपरेर घर हइते शुनिते पाइलेन झपास् करिया एकटा शव्द हइल।

समस्त रात्रि वृष्टि पड़िते लागिल; ताहार परदिन सकालेओ वृष्टि पड़ितेछे, मध्याह्नेओ वृष्टिर विराम नाइ। कादम्विनी मरिया प्रमाण करिल, से मरे नाइ।

जुलाई-अगस्त १८९२

तुलिया—उठा कर।
सिँड़ि वाहिया—सीढ़ियाँ पार कर। मरिया—मर कर।

काबुलिओयाला

आमार पाँच बछर वयसेर छोटो मेये मिनि एक दण्ड कथा ना कहिया थाकिते पारे ना। पृथिवीते जन्मग्रहण करिया भाषा शिक्षा करिते से केवल एकटि वत्सर काल व्यय करियाछिल, ताहार पर हइते यतक्षण से जागिया थाके एक मुहूर्त मौनभावे नष्ट करे ना। ताहार मा अनेक समय धमक दिया ताहार मुख बन्ध करिया देय, किन्तु आमि ताहा पारि ना। मिनि चुप करिया थाकिले एमनि अस्वाभाविक देखिते हय ये, से आमार बेशिक्षण सह्य हय ना। एइजन्य आमार सङ्गे ताहार कथोपकथनटा किछु उत्साहेर सहित चले।

सकालवेलाय आमार नभेलेर सप्तदश परिच्छेदे हात दियाछि एमन समय मिनि आसियाइ आरम्भ करिया दिल, "बाबा, रामदयाल दरोयान काकके कौया बलछिल, से किछु जाने ना। ना?"

आमि पृथिवीते भाषार विभिन्नता सम्बन्धे ताहाके ज्ञानदान करिते प्रवृत्त हइबार पूर्वेइ से द्वितीय प्रसङ्गे उपनीत हइल। "देखो बाबा, भोला बलछिल आकाशे हाति शुँड़ दिये जल फेले, ताइ वृष्टि हय। मा गो, भोला एत मिछिमिछि बकते पारे! केवलइ बके, दिनरात बके।"

ए सम्बन्धे आमार मतामतेर जन्य किछुमात्र अपेक्षा ना करिया हठात् जिज्ञासा करिया बसिल, "बाबा, मा तोमार के हय।"

मने मने कहिलाम श्यालिका; मुखे कहिलाम, "मिनि तुइ भोलार सङ्गे खेला कर् गे या। आमार एखन काज आछे।"

मेये—लड़की। **थाकिते पारे ना**—रह नहीं सकती। **पर हइते**—बाद से। **धमक दिया**—धमका कर। **पारि ना**—नहीं कर पाता।

मा गो—मैया री। **मिछिमिछि**—झूठमूठ। **बकते पारे**—बकवास कर सकता है।

अपेक्षा—प्रतीक्षा।

से तखन आमार लिखिबार टेबिलेर पार्श्वे आमार पायेर काछे बसिया निजेर दुइ हाँटु एवं हात लइया अतिद्रुत उच्चारणे 'आग्डुम् वाग्डुम्' खेलिते आरम्भ करिया दिल। आमार सप्तदश परिच्छेदे प्रतापसिंह तखन कांचनमालाके लइया अन्धकार रात्रे कारागारेर उच्च वातायन हइते निम्नवर्ती नदीर जले झाँप दिया पड़ितेछेन।

आमार घर पथेर धारे। हठात् मिनि आग्डुम्-वाग्डुम् खेला राखिया जानालार धारे छुटिया गेल एवं चीत्कार करिया डाकिते लागिल, "काबुलिओयाला, ओ काबुलिओयाला।"

मयला ढिला कापड़ परा, पागड़ि माथाय, झुलि घाड़े, हाते गोटादुइ-चार आङुरेर बाक्स, एक लम्बा काबुलिओयाला मृदुमन्द गमने पथ दिया याइतेछिल—ताहाके देखिया आमार कन्यारत्नेर किरूप भावोदय हइल बला शक्त, ताहाके ऊर्ध्वश्वासे डाकाडाकि आरम्भ करिया दिल। आमि भाविलाम, एखनइ झुलि घाड़े एकटा आपद आसिया उपस्थित हइबे, आमार सप्तदश परिच्छेद आर शेष हइबे ना।

किन्तु, मिनिर चीत्कारे येमनि काबुलिओयाला हासिया मुख फिराइल एवं आमादेर बाड़िर दिके आसिते लागिल अमनि से ऊर्ध्वश्वासे अन्तःपुरे दौड़ दिल, ताहार आर चिह्न देखिते पाओया गेल ना। ताहार मनेर मध्ये एकटा अन्ध विश्वासेर मतो छिल ये, ओइ झुलिटार भितर सन्धान करिले ताहार मतो दुटो-चारटे जीवित मानवसन्तान पाओया याइते पारे।

ए दिके काबुलिओयाला आसिया सहास्ये आमाके सेलाम

हाँटु—घुटने। आग्डुम् वाग्डुम्—(बच्चों के खेल की निरर्थक शब्दावली)। झाँप—छलाँग।

राखिया—छोड़ कर। जानालार धारे—जंगले के किनारे। छुटिया गेल—दौड़ गई। डाकिते लागिल—पुकारने लगी।

घाड़े—कंधे पर। गोटा दुइ चार—दो-चार। डाकाडाकि—हाँक-पुकार। भाविलाम—सोचा। बाड़िर दिके—घर की ओर। मतो—भाँति।

करिया दाँड़ाइल—आमि भाविलाम, यदिच प्रतापसिंह एवं कांचन-
मालार अवस्था अत्यन्त संकटापन्न तथापि लोकटाके घरे डाकिया
आनिया ताहार काछ हइते किछु ना केनाटा भालो हय ना ।

किछु केना गेल । ताहार पर पाँचटा कथा आसिया पड़िल ।
आवदर रहमान, रुस इंराज प्रभृतिके लइया सीमान्तरक्षानीति
सम्बन्धे गल्प चलिते लागिल ।

अवशेषे उठिया याइवार समय से जिज्ञासा करिल, "वावु,
तोमार लड़की कोयाय गेल ।"

आमि मिनिर अमूलक भय भाङाइया दिवार अभिप्राये
ताहाके अन्तःपुर हइते डाकाइया आनिलाम—से आमार गा
घेंषिया काबुलिर मुख एवं झुलिर दिके सन्दिग्ध नेत्रक्षेप करिया
दाँड़ाइया रहिल । काबुलि झुलिर मध्य हइते किस्मिस खोवानि
वाहिर करिया ताहाके दिते गेल, से किछुतेइ लइल ना, द्विगुण
सन्देहेर सहित आमार हाँटुर काछे संलग्न हइया रहिल । प्रथम
परिचयटा एमनि भावे गेल ।

किछुदिन परे एकदिन सकालवेलाय आवश्यकवशत वाड़ि
हइते वाहिर हइवार समय देखि, आमार दुहिताटि द्वारेर समीपस्थ
वेंचिर उपर वसिया अनर्गल कथा कहिया याइतेछे एवं काबुलि-
ओयाला ताहार पदतले वसिया सहास्यमुखे शुनितेछे एवं मध्ये
मध्ये प्रसङ्गक्रमे निजेर मतामतओ दो-आँशला वांलाय व्यक्त
करितेछे । मिनिर पंचवर्षीय जीवनेर अभिज्ञताय वावा छाड़ा
एमन धैर्यवान श्रोता से कखनो पाय नाइ । आवार देखि, ताहार

दाँड़ाइल—खड़ा हो गया । केनाटा—खरीदना । भालो—ठीक । किछु...
गेल—कुछ खरीद हुई ।

ताहार...पड़िल—उसके बाद इधर-उधर की बातें होने लगीं । लइया—
ले कर ।

डाकाइया आनिलाम—बुलवा भेजा । गा घेंषिया—शरीर से सट कर ।
आवश्यकवशत—आवश्यक कार्य से । अनर्गल—लगातार । दो-
आँशला—खिचड़ी । बाबा छाड़ा—पिता के अतिरिक्त ।

क्षुद्र आँचल वादाम-किस्‌मिसे परिपूर्ण। आमि काबुलिओयालाके कहिलाम, "उहाके ए-सव केन दियाछ। अमन आर दियो ना।" बलिया पकेट हइते एकटा आधुलि लइया ताहाके दिलाम। से असंकोचे आधुलि ग्रहण करिया झुलिते पुरिल।

वाड़िते फिरिया आसिया देखि, सेइ आधुलिटि लइया षोलो-आना गोलयोग वाधिया गेछे।

मिनिर मा एकटा श्वेत चक्‌चके गोलाकार पदार्थ लइया भर्त्सनार स्वरे मिनिके जिज्ञासा करितेछेन, "तुइ ए आधुलि कोथाय पेलि।"

मिनि वलितेछे, "कावुलिओयाला दियेछे।"

ताहार मा वलितेछेन, "कावुलिओयाला काछ हइते आधुलि तुइ केन निते गेलि।"

मिनि क्रन्दनेर उपक्रम करिया कहिल, "आमि चाइ नि, से आपनि दिले।"

आमि आसिया मिनिके ताहार आसन्न विपद हइते उद्धार करिया वाहिरे लइया गेलाम।

संवाद पाइलाम, कावुलिओयालार सहित मिनिर एइ ये द्वितीय साक्षात् ताहा नहे, इतिमध्ये से प्राय प्रत्यह आसिया पेस्तावादाम घुष दिया मिनिर क्षुद्र लुब्ध हृदयटुकु अनेकटा अधिकार करिया लइयाछे।

देखिलाम, एइ दुटि वन्धुर मध्ये गुटिकतक बाँधा कथा एवं ठाट्टा प्रचलित आछे—यथा रहमतके देखिबामात्र आमार कन्या हासिते हासिते जिज्ञासा करित, "कावुलिओयाला, ओ काबुलि-ओयाला, तोमार ओ झुलिर भितर की।"

आधुलि—अठन्नी। पुरिल—डाल ली।

गोलयोग...गेछे—वखेड़ा मच गया है।

चाइ नि—माँगी नहीं। से...दिले—वह आप ही दे गया। घुष—घूस।

गुटिकतक—कुछेक। बाँधा कथा—नियमित बातचीत।

रहमत एकटा अनावश्यक चन्द्रविन्दु योग करिया हासिते हासिते उत्तर करित, "हाँति।"

अर्थात्, ताहार झुलिर भितरे ये एकटा हस्ती आछे एइटेइ ताहार परिहासेर सूक्ष्म मर्म। खुव ये वेशि सूक्ष्म ताहा वला याय ना, तथापि एइ परिहासे उभयेइ वेश एकटु कौतुक अनुभव करित—एवं शरत्कालेर प्रभाते एकटि वयस्क एवं एकटि अप्राप्त-वयस्क शिशुर सरल हास्य देखिया आमारओ वेश लागित।

उहादेर मध्ये आरो-एकटा कथा प्रचलित छिल। रहमत मिनिके वलित, "खोँखी, तोमि ससुरवाड़ि कखुनु यावे ना!"

वाङालिर घरेर मेये आजन्मकाल 'श्वशुरवाड़ि' शब्दटार सहित परिचित, किन्तु आमरा किछु एकेले धरनेर लोक हओयाते शिशु मेयेके श्वशुरवाड़ि सम्वन्धे सज्ञान करिया तोला हय नाइ। एइजन्य रहमतेर अनुरोधटा से परिष्कार वुझिते पारित ना, अथच कथाटार एकटा-कोनो जवाव ना दिया चुप करिया थाका नितान्त ताहार स्वभावविरुद्ध—से उल्टिया जिज्ञासा करित, "तुमि श्वशुरवाड़ि यावे?"

रहमत काल्पनिक श्वशुरेर प्रति प्रकाण्ड मोटा मुष्टि आस्फा-लन करिया वलित, "हामि ससुरके मारवे।"

शुनिया मिनि श्वशुर-नामक कोनो-एक अपरिचित जीवेर दुरवस्था कल्पना करिया अत्यन्त हासित।

एखन शुभ्र शरत्काल। प्राचीनकाले एइ समयेइ राजारा दिग्विजये वाहिर हइतेन। आमि कलिकाता छाड़िया कखनो कोथाओ याइ नाइ, किन्तु सेइजन्यइ आमार मनटा पृथिवीमय

एइटेइ—यही। वेश एकटु—अच्छा-खासा। वेश—वहुत अच्छा। खोँखी—विटिया। कखुनु—कभी भी। श्वशुरवाड़ि—ससुराल। एकेले धरनेर—आधुनिक (नयी चाल के)। हओयाते—होने से। सज्ञान...नाइ—सचेत नहीं किया गया। एकटा-कोनो—कुछ न कुछ। पृथिवीमय...वेड़ाय—सारी धरती पर घूमता-फिरता है।

वेशि दिन नहे) पृथिवीते वास करियाओ से विभीषिका ताँहार मन हइते दूर हइया याय नाइ।

रहमत कावुलिओयाला सम्बन्धे तिनि सम्पूर्ण निःसंशय छिलेन ना। ताहार प्रति विशेष दृष्टि राखिवार जन्य तिनि आमाके वार वार अनुरोध करियाछिलेन। आमि ताँहार सन्देह हासिया उड़ाइया दिवार चेष्टा करिले तिनि पर्यायक्रमे आमाके गुटिकतक प्रश्न करिलेन, "कखनो कि काहारओ छेले चुरि याय ना। कावुलदेशे कि दासव्यवसाय प्रचलित नाइ। एकजन प्रकाण्ड कावुलिर पक्षे एकटि छोटो छेले चुरि करिया लइया याओया एकेवारेइ कि असम्भव।"

आमाके मानिते हइल, व्यापारटा ये असम्भव ताहा नहे किन्तु अविश्वास्य। विश्वास करिवार शक्ति सकलेर समान नहे, एइजन्य आमार स्त्रीर मने भय रहिया गेल। किन्तु, ताइ वलिया विना दोषे रहमतके आमादेर वाड़िते आसिते निषेध करिते पारिलाम ना।

प्रति वत्सर माघ मासेर माझामाझि रहमत देशे चलिया याय। एइ *समयटा समस्त पाओनार टाका आदाय करिवार* जन्य से वड़ो व्यस्त थाके। वाड़ि वाड़ि फिरिते हय किन्तु तवु एकवार मिनिके दर्शन दिया याय। देखिले वास्तविक मने हय, उभयेर मध्ये येन एकटा षड्यन्त्र चलितेछे। सकाले ये दिन आसिते पारे ना से दिन देखि, सन्ध्यार समय आसियाछे; अन्धकारे घरेर कोणे सेइ ढिलेढाला जामा-पायजामा-परा, सेइ झोलाझुलि-ओयाला लम्वा लोकटाके देखिले वास्तविक हठात् मनेर भितरे एकटा आशङ्का उपस्थित हय। किन्तु, यखन देखि, मिनि 'कावुलिओयाला' करिया हासिते हासिते छुटिया आसे एवं दुइ

गुटिकतक—कई एक। छेले—बच्चा।
माझामाझि—लगभग बीच में। आदाय...जन्य—वसूल करने के लिए। जामा—कुर्ता। परा—पहने।

असमवयसी वन्धुर मध्ये पुरातन सरल परिहास चलिते थाके, तखन समस्त हृदय प्रसन्न हइया उठे।

एक दिन सकाले आमार छोटो घरे वसिया प्रुफ्शीट संशोधन करितेछि। विदाय लइवार पूर्वे आज दिन-दुइतिन हइते शीतटा खुव कन्कने हइया उठियाछे, चारि दिके एकेवारे हीहीकार पड़िया गेछे। जानाला भेद करिया सकालेर रौद्रटि टेविलेर नीचे आमार पायेर उपर आसिया पड़ियाछे, सेइ उत्तापटुकु वेश मधुर वोध हइतेछे। वेला वोधकरि आटटा हइवे—माथाय-गलावन्ध-जड़ानो उषाचरगण प्रातर्भ्रमण समाधा करिया प्राय सकले घरे फिरिया आसियाछे। एमन समय रास्ताय भारि एकटा गोल शुना गेल।

चाहिया देखि, आमादेर रहमतके दुइ पाहाराओयाला वाँधिया लइया आसितेछे—ताहार पश्चाते कौतूहली छेलेर दल चलियाछे। रहमतेर गात्रवस्त्रे रक्तचिह्न एवं एकजन पाहाराओयालार हाते रक्ताक्त छोरा। आमि द्वारेर वाहिरे गिया पाहाराओयालाके दाँड़ कराइलाम, जिज्ञासा करिलाम व्यापारटा की।

कियदंश ताहार काछे, कियदंश रहमतेर काछे शुनिया जानिलाम ये, आमादेर प्रतिवेशी एकजन लोक रामपुरी चादरेर जन्य रहमतेर काछे किञ्चित् धारित—मिथ्यापूर्वक सेइ देना से अस्वीकार करे एवं ताहाइ लइया वचसा करिते करिते रहमत ताहाके एक छुरि वसाइया दियाछे।

रहमत सेइ मिथ्यावादीर उद्देशे नानारूप अश्राव्य गालि

कन्कने—पीड़ादायक, कड़ाके की। रौद्रटि—धूप। वोध करि—लगता है। माथाय—सिर पर। जड़ानो—लपेटे। समाधा—समाप्त, सम्पन्न। गोल—हल्ला।

चाहिया—ताक कर। पाहाराओयाला—पहरेदार। छोरा—छुरा। दाँड़ कराइलाम—रोका, ठहराया। व्यापारटा—मामला।

प्रतिवेशी—पड़ोसी। धारित—कर्जदार। वचसा—वहस। वसाइया दियाछे—बिठा दी, मार दी है।

दितेछे, एमन समये 'काबुलिओयाला, ओ काबुलिओयाला' करिया डाकिते डाकिते मिनि घर हइते बाहिर हइया आसिल।

रहमतेर मुख मुहूर्तेर मध्ये कौतुकहास्ये प्रफुल्ल हइया उठिल। ताहार स्कन्धे आज झुलि छिल ना, सुतरां झुलि सम्बन्धे ताहादेर अभ्यस्त आलोचना हइते पारिल ना। मिनि एकेवारेइ ताहाके जिज्ञासा करिल, "तुमि श्वशुरवाड़ि यावे?"

रहमत हासिया कहिल, "सिखानेइ याच्छे।"

देखिल उत्तरटा मिनिर हास्यजनक हइल ना, तखन हात देखाइया वलिल, "ससुराके मारिताम, किन्तु की करिब—हात बाँधा।"

सांघातिक आघात करा अपराधे कयेक वत्सर रहमतेर कारादण्ड हइल।

ताहार कथा एक प्रकार भुलिया गेलाम। आमरा यखन घरे बसिया चिराभ्यस्त-मतो नित्य काजेर मध्ये दिनेर पर दिन काटाइताम तखन एकजन स्वाधीन पर्वतचारी पुरुष काराप्राचीरेर मध्ये ये केमन करिया वर्षयापन करितेछे, ताहा आमादेर मनेओ उदय हइत ना।

आर, चंचलहृदया मिनिर आचरण ये अत्यन्त लज्जाजनक ताहा ताहार वापकेओ स्वीकार करिते हय। से स्वच्छन्दे ताहार पुरातन बन्धुके विस्मृत हइया प्रथमे नबी सहिसेर सहित सख्य स्थापन करिल। परे क्रमे यत ताहार वयस वाड़िया उठिते लागिल ततइ सखार परिवर्ते एकटि एकटि करिया सखी जुटिते लागिल। एमन-कि, एखन ताहार बावार लिखिवार घरेओ ताहाके आर देखिते पाओया याय ना। आमि तो ताहार सहित एकप्रकार आड़ि करियाछि।

कत वत्सर काटिया गेल। आर-एकटि शरत्काल आसियाछे।

सहिसेर—साईस के। परिवर्ते—स्थान पर। आड़ि—कुट्टी।

आमार मिनिर विवाहेर सम्बन्ध स्थिर हइयाछे। पूजार छुटिर मध्ये ताहार विवाह हइबे। कैलासवासिनीर सङ्गे सङ्गे आमार घरेर आनन्दमयी पितृभवन अंधकार करिया पतिगृहे यात्रा करिबे।

प्रभातटि अति सुन्दर हइया उदय हइयाछे। वर्षार परे एइ शरतेर नूतनधौत रौद्र येन सोहागाय-गलानो निर्मल सोनार मतो रङ धरियाछे। एमन-कि, कलिकातार गलिर भितरकार इष्टकजर्जर अपरिच्छन्न घेँषाघेँषि वाड़िगुलिर उपरेओ एइ रौद्रेर आभा एकटि अपरूप लावण्य विस्तार करियाछे।

आमार घरे आज रात्रि शेष हइते ना हइते सानाइ वाजितेछे। से वाँशि येन आमार बुकेर पञ्जरेर हाड़ेर मध्ये हइते काँदिया काँदिया बाजिया उठितेछे। करुण भैरवी रागिनीते आमार आसन्न विच्छेदव्यथाके शरतेर रौद्रेर सहित समस्त विश्वजगत्‌मय व्याप्त करिया दितेछे। आज आमार मिनिर विवाह।

सकाल हइते भारि गोलमाल, लोकजनेर आनागोना। उठाने बाँश बाँधिया पाल खाटानो हइतेछे; बाड़िर घरे घरे एवं वारान्दाय झाड़ टाङाइवार ठुं ठां शब्द उठितेछे; हाँकडाकेर सीमा नाइ।

आमि आमार लिखिबार घरे बसिया हिसाब देखितेछि, एमन समय रहमत आसिया सेलाम करिया दाँड़ाइल।

आमि प्रथम ताहाके चिनिते पारिलाम ना। ताहार से झुलि नाइ, ताहार से लम्बा चुल नाइ, ताहार शरीरे पूर्वेर मतो से तेज नाइ। अवशेषे ताहार हासि देखिया ताहाके चिनिलाम।

कहिलाम, "की रे रहमत, कबे आसिलि।"

रौद्र—धूप। घेँषाघेँषि—घिचपिच।

शेष—समाप्त। बुकेर—छाती के। काँदिया—रोते हुए।

गोलमाल—कोलाहल। आनागोना—आना-जाना। उठाने—आँगन में। खाटानो हइतेछे—लगाया जा रहा है। घरे—कमरे में। हाँकडाकेर—चीख-पुकार।

चिनिते—पहचान। चुल—बाल। आसिलि—आया।

से कहिल, "काल सन्ध्यावेलाय जेल हइते खालास पाइयाछि।"

कथाटा शुनिया केमन काने खट् क रिया उठिल। कोनो खुनीके कखनो प्रत्यक्ष देखि नाइ, इहाके देखिया समस्त अन्तःकरण येन संकुचित हइया गेल। आमार इच्छा करिते लागिल, आजिकार एइ शुभदिने ए लोकटा एखाने हइते गेलेइ भालो हय।

आमि ताहाके कहिलाम, "आज आमादेर बाड़िते एकटा काज आछे, आमि किछु व्यस्त आछि, तुमि आज याओ।"

कथाटा शुनियाइ से तत्क्षणात् चलिया याइते उद्यत हइल, अवशेषे दरजार काछे गिया एकटु इतस्तत करिया कहिल, "खोंखीके एकबार देखिते पाइब ना?"

ताहार मने बुझि विश्वास छिल, मिनि सेइ भावेइ आछे। से येन मने करियाछिल, मिनि आबार सेइ पूर्वेर मतो 'काबुलिओयाला, ओ काबुलिओयाला' करिया छुटिया आसिबे, ताहादेर सेइ अत्यन्त कौतुकावह पुरातन हास्यालापेर कोनोरूप व्यत्यय हइबे ना। एमन-कि, पूर्वबन्धुत्व स्मरण करिया से एक-बाक्स आङुर एवं कागजेर मोड़के किंचित् किस्मिस बादाम बोध करि कोनो स्वदेशीय बन्धुर निकट हइते चाहिया-चिन्तिया संग्रह करिया आनियाछिल—ताहार से निजेर झुलिटि आर छिल ना।

आमि कहिलाम, "आज बाड़िते काज आछे, आज आर काहारओ सहित देखा हइते पारिबे ना।"

से येन किछु क्षुण्ण हइल। स्तब्धभावे दाँड़ाइया एकबार स्थिर दृष्टिते आमार मुखेर दिके चाहिल, तार परे 'बाबु सेलाम' बलिया द्वारेर बाहिर हइया गेल।

खालास—मुक्ति, रिहाई।

कखनो—कभी। भालो—अच्छा।

काछे—निकट। एकटु—कुछ। खोंखीके—बच्ची को।

बुझि—सम्भवतः। भावेइ—प्रकार ही। आबार—फिर। मोड़के—लिफाफे में। चाहिया-चिन्तिया—माँग-जाँच कर।

येन—मानो। चाहिल—ताका।

आमार मने केमन एकटु व्यथा वोध हइल। मने करितेछि ताहाके फिरिया डाकिव, एमन समये देखि से आपनि फिरिया आसितेछे।

काछे आसिया कहिल, "एइ आङुर एवं किञ्चित् किस्‌मिस वादाम खोंखीर जन्य आनियाछिलाम, ताहाके दिवेन।"

आमि सेगुलि लइया दाम दिते उद्यत हइले से हठात् आमार हात चापिया धरिल; कहिल, "आपनार वहुत् दया, आमार चिरकाल स्मरण थाकिवे—आमाके पयसा दिवेन ना।—वावु, तोमार येमन एकटि लड़की आछे, तेमनि देशे आमारओ एकटि लड़की आछे। आमि ताहारइ मुखखानि स्मरण करिया तोमार खोंखीर जन्य किछु किछु मेओया हाते लइया आसि, आमि तो सओदा करिते आसि ना।"

एइ वलिया से आपनार मस्त ढिला जामाटार भितर हात चालाइया दिया वुकेर काछे कोथा हइते एक-टुकरा मयला कागज वाहिर करिल। वहु सयत्ने भाँज खुलिया दुइ हस्ते आमार टेविलेर उपर मेलिया धरिल।

देखिलाम, कागजेर उपर एकटि छोटो हातेर छाप। फोटोग्राफ नहे, तेलेर छवि नहे, हाते खानिकटा भुषा माखाइया कागजेर उपरे ताहार चिह्न धरिया लइयाछे। कन्यार एइ स्मरणचिह्नटुकु वुकेर काछे लइया रहमत प्रति वत्सर कलिकातार रास्ताय मेओया वेचिते आसे—येन सेइ सुकोमल क्षुद्र शिशुहस्तटुकुर स्पर्शखानि ताहार विराट विरही वक्षेर मध्ये सुधासञ्चार करिया राखे।

देखिया आमार चोख छल्‌छल् करिया आसिल। तखन से ये एकजन कावुलि मेओयाओयाला आर आमि ये एकजन

एमन—ऐसे। आपनि—स्वयं।
चापिया धरिल—पकड़ लिया।
जामाटार—कुरते के। वुकेर—छाती के। भाँज—तह। मेलिया—फैला कर।
छवि—चित्र। भुषा माखाइया—कालिख लगा कर।
चोख—नेत्र।

वाङालि सम्भ्रान्तवंशीय, ताहा भुलिया गेलाम—तखन बुझिते पारिलाम सेओ ये आमिओ से, सेओ पिता आमिओ पिता। ताहार पर्वतगृहवासिनी क्षुद्र पार्वतीर सेइ हस्तचिह्न आमारइ मिनिके स्मरण कराइया दिल। आमि तत्क्षणात् ताहाके अन्तःपुर हइते डाकाइया पाठाइलाम। अन्तःपुरे इहाते अनेक आपत्ति उठियाछिल। किन्तु, आमि किछुते कर्णपात करिलाम ना। राङाचेलिपरा कपाले-चन्दन-आँका वधूवेशिनी मिनि सलज्जभावे आमार काछे आसिया दाँड़ाइल।

ताहाके देखिया काबुलिओयाला प्रथमटा थतमत खाइया गेल, ताहादेर पुरातन आलाप जमाइते पारिल ना। अवशेषे हासिया कहिल, "खोंखी, तोमि ससुरवाड़ि याबिस?"

मिनि एखन श्वशुरवाड़िर अर्थ बोझे, एखन आर से पूर्वेर मतो उत्तर दिते पारिल ना—रहमतेर प्रश्न शुनिया लज्जाय आरक्त हइया मुख फिराइया दाँड़ाइल। काबुलिओयालार सहित मिनिर ये दिन प्रथम साक्षात् हइयाछिल, आमार सेइ दिनेर कथा मने पड़िल। मनटा केमन व्यथित हइया उठिल।

मिनि चलिया गेले एकटा गभीर दीर्घनिश्वास फेलिया रहमत माटिते बसिया पड़िल। से हठात् स्पष्ट बुझिते पारिल, ताहार मेयेटिओ इतिमध्ये एइरूप बड़ो हइयाछे, ताहार सङ्गेओ आबार नूतन आलाप करिते हइबे—ताहाके ठिक पूर्वेर मतो तेमनटि आर पाइबे ना। ए आट वत्सरे ताहार की हइयाछे ताइ वा के जाने। सकालवेलाय शरतेर स्निग्ध रौद्रकिरणेर मध्ये सानाइ बाजिते लागिल, रहमत कलिकातार एक गलिर भितरे बसिया आफगानिस्थानेर एक मरुपर्वतेर दृश्य देखिते लागिल।

डाकाइया पाठाइलाम—बुला भेजा। राङाचेलिपरा—(विवाह के समय पहनी जानेवाली रेशम की) लाल साड़ी पहने।

थतमत खाइया गेल—सकपका गया।

बोझे—समझती है।

मेयेटिओ—लड़की भी। रौद्र—धूप। सानाइ—शहनाई।

आमि एकखानि नोट लइया ताहाके दिलाम। बलिलाम, "रहमत, तुमि देशे तोमार मेयेर काछे फिरिया याओ; तोमादेर मिलनसुखे आमार मिनिर कल्याण हउक।"

एइ टाकाटा दान करिया हिसाब हइते उत्सव-समारोहेर दुटो-एकटा अङ्ग छाँटिया दिते हइल। येमन मने करियाछिलाम तेमन करिया इलेक्ट्रिक आलो ज्वालाइते पारिलाम ना, गड़ेर वाद्यओ आसिल ना, अन्तःपुरे मेयेरा अत्यन्त असन्तोष प्रकाश करिते लागिलेन, किन्तु मङ्गल-आलोके आमार शुभ उत्सव उज्जवल हइया उठिल।

नवम्बर-दिसम्बर १८९२

टाकाटा—रुपये। छाँटिया दिते हइल—काट देने पड़े। गड़ेर वाद्यओ—अंग्रेजी बाजे भी।

शास्ति

प्रथम परिच्छेद

दुखिराम रुइ एवं छिदाम रुइ दुइ भाइ सकाले यखन दा. हाते लइया जन खाटिते बाहिर हइलो तखन ताहादेर दुइ स्त्रीर मध्ये बकाबकि चेँचामेचि चलितेछे। किन्तु, प्रकृतिर अन्यान्य नाना-विध नित्यकलरवेर न्याय एइ कलह-कोलाहलओ पाड़ासुद्ध लोकेर अभ्यास हइया गेछे। तीव्र कण्ठस्वर शुनिबामात्र लोके परस्परके बले, "ओइ रे बाधिया गियाछे!" अर्थात्, येमनटि आशा करा याय ठिक तेमनिटि घटियाछे, आजओ स्वभावेर नियमेर कोनोरूप व्यत्यय हय नाइ। प्रभाते पूर्वदिके सूर्य उठिले येमन केह ताहार कारण जिज्ञासा करे ना तेमनि एइ कुरिदेर बाड़िते दुइ जायेर मध्ये यखन एकटा है-है पड़िया याय तखन ताहार कारण निर्णयेर जन्य काहारओ कोनोरूप कौतूहलेर उद्रेक हय ना।

अवश्य एइ कोन्दल-आन्दोलन प्रतिवेशीदेर अपेक्षा दुइ स्वामीके बेशि स्पर्श करित सन्देह नाइ, किन्तु सेटा ताहारा कोनोरूप असुविधार मध्ये गण्य करित ना। ताहारा दुइ भाइ येन दीर्घ संसारपथ एकटा एक्कागाड़िते करिया चलियाछे, दुइ दिकेर दुइ स्प्रिंविहीन चाकार अविश्राम छड़् छड़् खड़् खड़् शब्दटाके जीवन-रथयात्रार एकटा विधिविहित नियमेर मध्येइ धरिया लइयाछे।

वरंच घरे ये दिन कोनो शब्दमात्र नाइ, समस्त थम्‌थम्

दा—दाव (लकड़ी काटने का हथियार)। जन खाटिते—मजदूरी करने। बकाबकि—बक-झक। चेँचामेचि—हल्ला-गुल्ला। पाड़ासुद्ध—मुहल्ले-भर के। बाधिया गियाछे—(झगड़ा) छिड़ गया है। कुरिदेर—जाति विशेष। जायेर—देवरानी-जिठानी के। है-है—चीख-पुकार। पड़िया याय—मच जाती है।

कोन्दल—कलह। प्रतिवेशीदेर—पड़ोसियों की। बेशि—अधिक। चाकार—पहियों की। थम्‌थम्—सनसन।

छम्छम् करितेछे, से दिन एकटा आसन्न अनैसर्गिक उपद्रवेर आशङ्का जन्मित; से दिन ये कखन की हइबे ताहा केह हिसाब करिया वलिते पारित ना।

आमादेर गल्पेर घटना ये दिन आरम्भ हइल से दिन संध्यार प्राक्काले दुइ भाइ यखन जन खाटिया श्रान्तदेहे घरे फिरिया आसिल तखन देखिल स्तब्ध गृह गम्गम् करितेछे।

वाहिरेओ अत्यन्त गुमट। दुइ-प्रहरेर समय खुब एक-पशला वृष्टि हइया गियाछे। एखनओ चारि दिके मेघ जमिया आछे। वातासेर लेशमात्र नाइ। वर्षाय घरेर चारि दिके जङ्गल एवं आगाछागुला अत्यन्त वाड़िया उठियाछे, सेखान हइते एवं जलमग्न पाटेर खेत हइते सिक्त उद्भिज्जेर घन गन्धवाष्प चतुर्दिके एकटि निश्चल प्राचीरेर मतो जमाट हइया दाँड़ाइया आछे। गोयालेर पश्चाद्वर्ती डोबार मध्य हइते भेक डाकितेछे एवं झिल्लीरवे सन्ध्यार निस्तब्ध आकाश एकेवारे परिपूर्ण।

अदूरे वर्षार पद्मा नवमेघच्छायाय बड़ो स्थिर भयंकर भाव धारण करिया चलियाछे। शस्यक्षेत्रेर अधिकांशइ भाङिया लोकालयेर काछाकाछि आसिया पड़ियाछे। एमन-कि भाङ्गनेर धारे दुइ-चारिटा आम-काँठाल गाछेर शिकड़ वाहिर हइया देखा दियाछे, येन ताहादेर निरुपाय मुष्टिर प्रसारित अंगुलिगुलि शून्ये एकटा-किछु अन्तिम अवलम्बन आँकड़ाइया धरिवार चेष्टा करितेछे।

दुखिराम एवं छिदाम सेदिन जमिदारेर काछारि-घरे काज करिते गियाछिल। ओ पारेर चरे जलिधान पाकियाछे।

छम्छम्—भाँय-भाँय। गम्गम्—(गम्भीर शब्द-सूचक)।

गुमट—उमस। पशला—झला। आगाछागुला—झाड़-झंखाड़। पाटेर—सन के। जमाट—घनीभूत। गोयालेर—गोठ के। डोबार—गढ़हे में। भेक—मेढक।

भाङिया—तोड़ कर। काछाकाछि—सन्निकट। एमन-कि—यही नहीं। भाङ्गनेर—कगार के। काँठल—कटहल। शिकड़—जड़। आँकड़ाइया—जकड़ कर। काछारि—कचहरी। चरे—दीयर में।

वर्षाय चर भासिया याइबार पूर्वेइ धान काटिया लइबार जन्य देशेर दरिद्र लोक मात्रइ केह वा निजेर खेते केह वा पाट खाटिते नियुक्त हइयाछे; केवल, काछारि हइते पेयादा आसिया एइ दुइ भाइके जबर्दस्ति करिया धरिया लइया गेल। काछारि-घरे चाल भेद करिया स्थाने स्थाने जल पड़ितेछिल ताहाइ सारिया दिते एवं गोटाकतक झाँप निर्माण करिते ताहारा समस्त दिन खाटियाछे। बाड़ि आसिते पाय नाइ, काछारि हइतेइ किंचित् जलपान खाइयाछे। मध्ये मध्ये वृष्टितेओ भिजिते हइयाछे—उचितमतो पाओना मजुरि पाय नाइ, एवं ताहार परिवर्ते ये-सकल अन्याय कटु कथा शुनिते हइयाछे से ताहादेर पाओनार अनेक अतिरिक्त।

पथेर कादा एवं जल भाङिया सन्ध्यावेलाय बाड़ि फिरिया आसिया दुइ भाइ देखिल, छोटो जा चन्दरा भूमिते अंचल पातिया चुप करिया पड़िया आछे—आजिकार एइ मेघला दिनेर मतो सेओ मध्याह्ने प्रचुर अश्रु-वर्षणपूर्वक सायाह्नेर काछाकाछि क्षान्त दिया अत्यन्त गुमट करिया आछे; आर बड़ो जा राधा मुखटा मस्त करिया दाओयाय बसिया छिल; ताहार देड़ वत्सरेर छोटो छेलेटि काँदितेछिल, दुइ भाइ यखन प्रवेश करिल देखिल, उलङ्ग शिशु प्राङ्गणेर एक पार्श्वे चित् हइया पड़िया घुमाइया आछे।

क्षुधित दुखिराम आर कालविलम्ब ना करिया बलिल, "भात दे।"

बड़ोबउ बारुदेर बस्ताय स्फुलिङ्गपातेर मतो एक मुहूर्तेइ तीव्र कण्ठस्वर आकाश-परिमाण करिया बलिया उठिल, "भात

भासिया याइबार—डूब जाने के। चाल—छप्पर। सारिया दिते—मरम्मत करने। झाँप—टट्टर। खाटियाछे—परिश्रम करते रहे हैं। पाओना—प्राप्य। कादा—कीचड़। छोटो जा—देवरानी। पातिया—बिछा कर। मेघला—बदली के। सायाह्नेर—साँझ के। क्षान्त दिया—निवृत्त हो कर। गुमट—उमस। मस्त—भारी। दाओयाय—बरामदे में। काँदितेछिल—रो रहा था। उलङ्ग—नंग-धड़ंग। घुमाइया आछे—सो रहा है। बस्ताय—बोरे में।

कोथाय ये भात दिब। तुइ कि चाल दिया गियाछिलि। आमि कि निजे रोजगार करिया आनिब।"

सारादिनेर श्रान्ति ओ लांछनार पर अन्नहीन निरानन्द अन्धकार घरे, प्रज्वलित क्षुधानले, गृहिणीर रुक्ष वचन, विशेषत शेष कथाटार गोपन कुत्सित श्लेष दुखिरामेर हठात् केमन एकेबारेइ असह्य हइया उठिल। क्रुद्ध व्याघ्रेर न्याय गम्भीर गर्जने बलिया उठिल, "की बलिलि।" बलिया मुहूर्तेर मध्ये दा लइया किछु ना भाविया एकेवारे स्त्रीर माथाय बसाइया दिल। राधा ताहार छोटो जायेर कोलेर काछे पड़िया गेल एवं मृत्यु हइते मुहूर्त विलम्ब हइल ना।

चन्दरा रक्तसिक्त वस्त्रे "की हल गो" बलिया चीत्कार करिया उठिल। छिदाम ताहार मुख चापिया धरिल। दुखिराम दा फेलिया मुखे हात दिया हतबुद्धिर मतो भूमिते बसिया पड़िल। छेलेटा जागिया उठिया भये चीत्कार करिया काँदिते लागिल।

बाहिरे तखन परिपूर्ण शान्ति। राखालबालक गोरु लइया ग्रामे फिरिया आसितेछे। परपारेर चरे याहारा नूतनपक्व धान काटिते गियाछिल ताहारा पाँच-सातजने एक-एकटि छोटो नौकाय ए पारे फिरिया परिश्रमेर पुरस्कार दुइ-चारि आँटि धान माथाय लइया प्राय सकलेइ निज निज घरे आसिया पौँछियाछे।

चक्रवर्तीदेर बाड़िर रामलोचन खुड़ो ग्रामेर डाकघरे चिठि दिया घरे फिरिया निश्चिन्तमने चुपचाप तामाक खाइतेछिलेन। हठात्

चाल—चावल।

ना भाविया—बिना सोचे। माथाय—सिर पर। कोलेर काछे—गोद के निकट।

चापिया धरिल—दबा दिया।

राखाल—ग्वाले। गोरु—गाय-बैल। आँटि—पूली।

खुड़ो—काका। तामाक खाइतेछिलेन—हुक्का पी रहे थे।

मने पड़िल, ताँहार कोर्फा प्रजा दुखिर अनेक टाका खाजना बाकि; आज कियदंश शोध करिबे प्रतिश्रुत हइयाछिल। एतक्षणे ताहारा बाड़ि फिरियाछे स्थिर करिया, चादरटा काँधे फेलिया छाता लइया बाहिर हइलेन।

कुरिदेर बाड़िते ढुकिया ताँहार गा छम् छम् करिया उठिल। देखिलेन, घरे प्रदीप ज्वाला हय नाइ। अन्धकार दाओयाय दुइ-चारिटा अन्धकार मूर्ति अस्पष्ट देखा याइतेछे। रहिया रहिया दाओयार एक कोण हइते एकटा अस्फुट रोदन उच्छ्वसित हइया उठितेछे—एवं छेलेटा यत 'मा मा' बलिया काँदिया उठिते चेष्टा करितेछे छिदाम ताहार मुख चापिया धरितेछे।

रामलोचन किछु भीत हइया जिज्ञासा करिलेन, "दुखि, आछिस नाकि।"

दुखि एतक्षण प्रस्तरमूर्तिर मतो निश्चल हइया बसिया छिल, ताहार नाम धरिया डाकिबामात्र एकेबारे अबोध बालकेर मतो उच्छ्वसित हइया काँदिया उठिल।

छिदाम ताड़ाताड़ि दाओया हइते अङ्गने नामिया चक्रवर्तीर निकटे आसिल। चक्रवर्ती जिज्ञासा करिलेन, "मागीरा बुझि झगड़ा करिया बसिया आछे? आज तो समस्त दिनइ चीत्कार शुनियाछि।"

एतक्षण छिदाम किंकर्तव्य किछुइ भाबिया उठिते पारे नाइ। नाना असम्भव गल्प ताहार माथाय उठितेछिल। आपातत स्थिर करियाछिल, रात्रि किंचित् अधिक हइले मृतदेह कोथाओ सराइया फेलिबे। इतिमध्ये ये चक्रवर्ती आसिया उपस्थित हइबे,

कोर्फा प्रजा—दूसरे किसान की ज़मीन ले कर खेती करने वाला। **खाजना**—लगान।

ढुकिया—घुसते ही। **गा**—शरीर। **छम् छम् करिया**—सिहर कर। **दाओयाय**—बरामदे में। **यत**—जितना ही। **नाम...डाकिबामात्र**—नाम ले कर पुकारते ही।

नामिया—उतर कर। **मागीरा**—स्त्रियाँ (अवज्ञा सूचक)। **बुझि**—शायद।

भाबिया—सोच कर। **सराइया फेलिबे**—हटा देगा।

ए से मनेओ करे नाइ। फस् करिया कोनो उत्तर जोगाइल ना। वलिया फेलिल, "हाँ, आज खुब झगड़ा हइया गियाछे।"

चक्रवर्ती दाओयार दिके अग्रसर हइवार उपक्रम करिया वलिल, "किन्तु सेजन्य दुखि काँदे केन रे।"

छिदाम देखिल, आर रक्षा हय ना; हठात् वलिया फेलिल, "झगड़ा करिया छोटोवउ वड़ोवउयेर माथाय एक दायेर कोप वसाइया दियाछे।"

उपस्थित विपद छाड़ा ये आर-कोनो विपद थाकिते पारे, ए कथा सहजे मने हय ना। छिदाम तखन भावितेछिल, 'भीषण सत्येर हात हइते की करिया रक्षा पाइव।' मिथ्या ये तदपेक्षा भीषण हइते पारे ताहा ताहार ज्ञान हइल ना। रामलोचनेर प्रश्न शुनिवामात्र ताहार माथाय तत्क्षणात् एकटा उत्तर जोगाइल एवं तत्क्षणात् वलिया फेलिल।

रामलोचन चमकिया उठिया कहिल, "अ्याँ! वलिस की! मरे नाइ तो!"

छिदाम कहिल, "मरियाछे।" वलिया चक्रवर्तीर पा जड़ाइया धरिल।

चक्रवर्ती पालाइवार पथ पाय ना। भाविल, 'राम राम! सन्ध्यावेलाय ए की विपदेइ पड़िलाम। आदालते साक्ष्य दिते दितेइ प्राण वाहिर हइया पड़िवे।' छिदाम किछुतेइ ताँहार पा छाड़िल ना; कहिल, "दादाठाकुर, एखन आमार वउके वाँचाइवार की उपाय करि।"

मामला-मोकद्दमार परामर्शे रामलोचन समस्त ग्रामेर प्रधान मन्त्री छिलेन। तिनि एकटु भाविया वलिलेन, "देख्, इहार एक उपाय आछे। तुइ एखनइ थानाय छुटिया या—वल् गे, तोर वड़ो भाइ दुखि सन्ध्यावेलाय घरे आसिया भात चाहियाछिल,

---

फस् करिया—चट से। जोगाइल ना—न सूझा।
कोप—आघात। छाड़ा—अतिरिक्त। शुनिवामात्र—सुनते ही।
पालाइवार—भागने का।

भात प्रस्तुत छिल ना बलिया स्त्रीर माथाय दा बसाइया दियाछे। आमि निश्चय बलितेछि, ए कथा बलिले छुँड़िटा बाँचिया याइबे।"

छिदामेर कण्ठ शुष्क हइया आसिल; उठिया कहिल, "ठाकुर, बउ गेले बउ पाइब, किन्तु आमार भाइ फाँसि गेले आर तो भाइ पाइब ना।" किन्तु, यखन निजेर स्त्रीर नामे दोषारोप करियाछिल तखन ए-सकल कथा भाबे नाइ। ताड़ाताड़िते एकटा काज करिया फेलियाछे, एखन अलक्षितभावे मन आपनार पक्षे युक्ति एवं प्रबोध संचय करितेछे।

चक्रवर्तीओ कथाटा युक्तिसंगत बोध करिलेन; कहिलेन, "तबे येमनटि घटियाछे ताइ बलिस, सकल दिक रक्षा करा असम्भव।"

बलिया रामलोचन अविलम्बे प्रस्थान करिल एवं देखिते देखिते ग्रामे राष्ट्र हइल ये, कुरिदेर बाड़िर चन्दरा रागारागि करिया ताहार बड़ो जायेर माथाय दा बसाइया दियाछे।

बाँध भाङिले येमन जल आसे ग्रामेर मध्ये तेमनि हुहुः शब्दे पुलिस आसिया पड़िल; अपराधी एवं निरपराधी सकलेइ विषम उद्विग्न हइया उठिल।

द्वितीय परिच्छेद

छिदाम भाबिल, ये पथ काटिया फेलियाछे सेइ पथेइ चलिते हइबे। से चक्रवर्तीर काछे निजमुखे एक कथा बलिया फेलियाछे, से कथा गाँ-सुद्ध राष्ट्र हइया पड़ियाछे; एखन आबार आर-एकटा किछु प्रकाश हइया पड़िले की जानि की हइते की हइया पड़िबे से निजेइ किछु भाबिया पाइल ना। मने करिल कोनोमते से कथाटा

छुँड़िटा—छोकरी।

ग्रामे राष्ट्र हइल—गाँव-भर में फैल गई। रागारागि करिया—क्रोध में।

हुहुः शब्दे—धड़धड़ाते हुए। काटिया फेलियाछे—तय कर लिया है।

गाँ-सुद्ध—गाँव-भर में।

प्रकाश—प्रकट। कोनोमते—किसी प्रकार।

रक्षा करिया ताहार सहित आर पाँचटा गल्प जुड़िया स्त्रीके रक्षा करा छाड़ा आर कोनो पथ नाइ।

छिदाम ताहार स्त्री चन्दराके अपराध निज स्कन्धे लइबार जन्य अनुरोध करिल। से तो एकेबारे वज्राहत हइया गेल। छिदाम ताहाके आश्वास दिया कहिल, "याहा बलितेछि ताइ कर्, तोर कोनो भय नाइ, आमरा तोके बाँचाइया दिब।"

आश्वास दिल बटे किन्तु गला शुकाइल, मुख पांशुवर्ण हइया गेल।

चन्दरार वयस सतेरो-आठारोर अधिक हइबे ना। मुखखानि हृष्टपुष्ट गोलगाल; शरीरटि अनतिदीर्घ, आँटसाँट; सुस्थसबल अङ्गप्रत्यङ्गेर मध्ये एमन एकटि सौष्ठव आछे ये चलिते-फिरिते नड़िते-चड़िते देहेर कोथाओ येन किछु बाधे ना। एकखानि नूतन-तैरी नौकार मतो; बेश छोटो एवं सुडोल, अत्यन्त सहजे सरे एवं ताहार कोथाओ कोनो ग्रन्थि शिथिल हइया याय नाइ। पृथिवीर सकल विषयेइ ताहार एकटा कौतुक एवं कौतूहल आछे; पाड़ाय गल्प करिते याइते भालोबासे, एवं कुम्भ कक्षे घाटे याइते-आसिते दुइ अङ्गुलि दिया घोमटा ईषत् फाँक करिया उज्ज्वल चंचल घनकृष्ण चोख दुटि दिया पथेर मध्ये दर्शनयोग्य याहा-किछु समस्त देखिया लय।

बड़ोबउ छिल ठिक इहार उल्टा; अत्यन्त एलोमेलो, ढिलेढाला, अगोछालो। माथार कापड़, कोलेर शिशु, घरकन्नार काज किछुइ से सामलाइते पारित ना। हाते विशेष एकटा किछु काजओ नाइ, अथच कोनो काले येन से अवसर करिया उठिते पारे ना। छोटो जा ताहाके अधिक किछु कथा बलित

छाड़ा—अतिरिक्त। ताइ—वही।

दिल बटे—दिया तो सही।

आँटसाँट—चुस्त। नड़िते-चड़िते—हिलने-डुलने में। बाधे ना—अटकता नहीं। सरे—सरकती है। पाड़ाय—मुहल्ले में। भालोबासे—प्रिय है (अच्छा लगता है)। घोमटा—घूँघट। फाँक करिया—हटा कर।

एलोमेलो—विशृंखल। अगोछालो—बेतरतीब। घरकन्नार—घरबार का। अवसर...पारे ना—फुरसत नहीं निकाल पाती थी। छोटो जा—देवरानी।

ना, मृदुस्वरे दुइ-एकटा तीक्ष्ण दंशन करित, आर से हाउ-हाउ दाउ-दाउ करिया रागिया-मागिया बकिया-झकिया सारा हइत एवं पाड़ासुद्ध अस्थिर करिया तुलित।

एइ दुइ जुड़ि स्वामी-स्त्रीर मध्येओ स्वभावेर एकटा आश्चर्य ऐक्य छिल। दुखिराम मानुषटा किछु बृहदायतनेर—हाड़गुला खुब चओड़ा, नासिका खर्व, दुटि चक्षु एइ दृश्यमान संसारके येन भालो करिया बोझे ना, अथच इहाके कोनोरूप प्रश्न करितेओ चाय ना। एमन निरीह अथच भीषण, एमन सबल अथच निरुपाय मानुष अति दुर्लभ।

आर छिदामके एकखानि चक्चके कालो पाथरे के येन बहु यत्ने कुँदिया गड़िया तुलियाछे। लेशमात्र बाहुल्य-वर्जित एवं कोथाओ येन किछु टोल खाय नाइ। प्रत्येक अङ्गटि बलेर सहित नैपुण्येर सहित मिशिया अत्यन्त सम्पूर्णता लाभ करियाछे। नदीर उच्च पाड़ हइते लाफाइया पड़ुक, लगि दिया नौका ठेलुक, बाँश-गाछे चड़िया बाछिया बाछिया कञ्चि काटिया आनुक, सकल काजेइ ताहार एकटि परिमित पारिपाट्य, एकटि अवलीलाकृत शोभा प्रकाश पाय। बड़ो बड़ो कालो चुल तेल दिया कपाल हइते यत्ने आँचड़ाइया तुलिया काँधे आनिया फेलियाछे—वेशभूषा साजसज्जाय विलक्षण एकटु यत्न आछे।

अपरापर ग्रामवधूदिगेर सौन्दर्येर प्रति यदिओ ताहार उदासीन दृष्टि छिल ना, एवं ताहादेर चक्षे आपनाके मनोरम करिया तुलिवार इच्छा ताहार यथेष्ट छिल—तबु छिदाम ताहार युवती स्त्रीके एकटु विशेष भालोबासित। उभये झगड़ाओ हइत, भावओ

हाउ-हाउ...हइत—सिसक-सुबक कर, धधक कर, बिगड़ कर, बक-झक कर ही मानती। पाड़ासुद्ध—मुहल्ले-भर को।

चक्चके—चमचमाते। कुँदिया—तराश कर। टोल—दचका। मिशिया—मिला कर। पाड़—किनारे। लाफाइया पड़ुक—कूद पड़े। लगि—लग्गी। बाछिया...आनुक—छाँट-छाँट कर बाँस की टहनियाँ काट लाए। अवलीलाकृत—सहज। चुल—बाल। आँचड़ाइया—काढ़ कर। भावओ—मित्रता (मेल) भी।

हइत, केह काहाकेओ परास्त करिते पारित ना। आर-एकटि कारणे उभयेर मध्ये वन्धन किछु सुदृढ़ छिल। छिदाम मने करित, चन्दरा येरूप चटुल चंचल प्रकृतिर स्त्रीलोक ताहाके यथेष्ट विश्वास नाइ; आर चन्दरा मने करित, आमार स्वामिटिर चतुर्दिकेइ दृष्टि, ताहाके किछु कपाकषि करिया ना बाँधिले कोन्‌दिन हातछाड़ा हइते आटक नाइ।

उपस्थित घटना घटिवार किछुकाल पूर्वे हइते स्त्री-पुरुषेर मध्ये भारि एकटा गोलयोग चलितेछिल। चन्दरा देखियाछिल, ताहार स्वामी काजेर ओजर करिया माझे माझे दूरे चलिया याय, एमन-कि दुइ-एकदिन अतीत करिया आसे, अथच किछु उपार्जन करिया आने ना। लक्षण मन्द देखिया सेओ किछु वाड़ावाड़ि देखाइते लागिल। यखन-तखन घाटे याइते आरम्भ करिल एवं पाड़ा पर्यटन करिया आसिया काशी मजुमदारेर मेजो छेलेटिर प्रचुर व्याख्या करिते लागिल।

छिदामेर दिन एवं रात्रिगुलिर मध्ये के येन विष मिशाइया दिल। काजे कर्मे कोथाओ एक दण्ड गिया सुस्थिर हइते पारे ना। एकदिन भाजके आसिया भारि भर्त्सना करिल। से हात नाड़िया झंकार दिया अनुपस्थित मृत पिताके सम्बोधन करिया वलिल, "ओ मेये झड़ेर आगे छोटे, उहाके आमि सामलाइब! आमि जानि, ओ कोन्‌दिन की सर्वनाश करिया बसिबे।"

चन्दरा पाशेर घर हइते आसिया आस्ते आस्ते कहिल, "केन दिदि, तोमार एत भय किसेर।" एइ तो दुइ जाये विषम द्वन्द्व वाधिया गेल।

कपाकषि करिया—कस कर। हातछाड़ा—वे हाथ। आटक—रुकावट।

गोलयोग—गोलमाल। ओजर—वहाना। वाड़ावाड़ि—ज्यादती। मेजो—मँझले।

मिशाइया दिल—घोल दिया। भाजके—भाभी को। नाड़िया—हिला कर। झड़ेर—आँधी के। छोटे—दौड़ती है। सामलाइब—सम्हालूँगी।

वाधिया गेल—आरम्भ हो गया।

छिदाम चोख पाकाइया बलिल, "एबार यदि कखनो शुनि तुइ एकला घाटे गियाछिस, तोर हाड़ गुँड़ाइया दिब।"

चन्दरा बलिल, "ताहा हइले तो हाड़ जुड़ाय।" बलिया तत्क्षणात् बाहिरे याइबार उपक्रम करिल।

छिदाम एक लम्फे ताहार चुल धरिया टानिया घरे पुरिया बाहिर हइते द्वार रुद्ध करिया दिल।

कर्मस्थान हइते सन्ध्यावेलाय फिरिया आसिया देखे घर खोला, घरे केह नाइ। चन्दरा तिनटे ग्राम छाड़ाइया एकेबारे ताहार मामार बाड़ि गिया उपस्थित हइयाछे।

छिदाम सेखान हइते बहु कष्टे अनेक साध्यसाधनाय ताहाके घरे फिराइया आनिल, किन्तु एबार परास्त मानिल। देखिल, एक-अंजलि पारदके मुष्टिर मध्ये शक्त करिया धरा येमन दुःसाध्य एइ मुष्टिमेय स्त्रीटुकुकेओ कठिन करिया धरिया राखा तेमनि असम्भव—ओ येन दश आङ्गुलेर फाँक दिया बाहिर हइया पड़े।

आर-कोनो जबर्दस्ति करिल ना, किन्तु बड़ो अशान्तिते वास करिते लागिल। ताहार एइ चंचला युवती स्त्रीर प्रति सदा-शंकित भालोबासा उग्र एकटा वेदनार मतो विषम टन्‌टने हइया उठिल। एमन-कि, एक-एकबार मने हइत, ए यदि मरिया याय तबे आमि निश्चिन्त हइया एकटुखानि शान्तिलाभ करिते पारि। मानुषेर उपरे मानुषेर यतटा ईर्षा हय यमेर उपरे एतटा नहे।

एमन समये घरे सेइ विपद घटिल।

चन्दराके यखन ताहार स्वामी खुन स्वीकार करिया लइते कहिल से स्तम्भित हइया चाहिया रहिल; ताहार कालो दुटि चक्षु कालो अग्निर न्याय नीरवे ताहार स्वामीके दग्ध करिते

चोख पाकाइया—आँखें तरेरते हुए। गुँड़ाइया दिब—चूर-चूर कर दूंगा।
हाड़ जुड़ाय—संतोष ही हो जाए।
लम्फे—छलांग में। घरे पुरिया—कोठरी में धकेल कर।
साध्यसाधनाय—मान-मनुहार करके। फाँक—झिरी।
टन्‌टने—तीक्ष्ण। चाहिया—ताकती।

लागिल । ताहार समस्त शरीर मन येन क्रमेइ संकुचित हइया स्वामीराक्षसेर हात हइते वाहिर हइया आसिवार चेष्टा करिते लागिल। ताहार समस्त अन्तरात्मा एकान्त विमुख हइया दाँड़ाइल।

छिदाम आश्वास दिल, "तोमार किछु भय नाइ।" वलिया पुलिसेर काछे म्याजिस्ट्रेटेर काछे की वलिते हइवे वारवार शिखाइया दिल। चन्दरा से-समस्त दीर्घ काहिनी किछुइ शुनिल ना, काठेर मूर्ति हइया वसिया रहिल।

समस्त काजेइ छिदामेर उपर दुखिरामेर एकमात्र निर्भर। छिदाम यखन चन्दरार उपर दोषारोप करिते वलिल दुखि वलिल, "ताहा हइले वउमार की हइवे।"

छिदाम कहिल, "ओहाके आमि वाँचाइया दिव।" वृहत्काय दुखिराम निश्चिन्त हइल।

तृतीय परिच्छेद

छिदाम ताहार स्त्रीके शिखाइया दियाछिल ये, "तुइ वलिस; वड़ो जा आमाके वँटि लइया मारिते आसियाछिल, आमि ताहाके दा लइया ठेकाइते गिया हठात् केमन करिया लागिया गियाछे।" ए-समस्तइ रामलोचनेर रचित। इहार अनुकूले ये ये अलंकार एवं प्रमाण-प्रयोगेर आवश्यक ताहाओ से विस्तारितभावे छिदामके शिखाइयाछिल।

पुलिस आसिया तदन्त करिते लागिल। चन्दराइ ये ताहार वड़ो जाके खुन करियाछे ग्रामेर सकल लोकेर मने एइ विश्वास वद्धमूल हइया गियाछे। सकल साक्षीर द्वाराइ सेइरूप प्रमाण हइल। पुलिस यखन चन्दराके प्रश्न करिल, चन्दरा कहिल, "हाँ, आमि खुन करियाछि।"

वउमार—बहूरानी का।
वँटि—हँसिया, दराँत।
ठेकाइते—रोकने।
तदन्त—तहकीकात।

"केन खुन करियाछ ।"

"आमि ताहाके देखिते पारिताम ना ।"

"कोनो बचसा हइयाछिल ?"

"ना ।"

"से तोमाके प्रथमे मारिते आसियाछिल ?"

"ना ।"

"तोमार प्रति कोनो अत्याचार करियाछिल ।"

"ना ।"

एइरूप उत्तर शुनिया सकले अवाक हइया गेल ।

छिदाम तो एकेबारे अस्थिर हइया उठिल । कहिल, "उनि ठिक कथा बलितेछेन ना । बड़ोबउ प्रथमे—"

दारोगा खुब एक ताड़ा दिया ताहाके थामाइया दिल । अवशेषे ताहाके विधिमते जेरा करिया बार बार सेइ एकइ उत्तर पाइल—बड़ोबउयेर दिक हइते कोनोरूप आक्रमण चन्दरा किछुतेइ स्वीकार करिल ना ।

एमन एकगुंये मेयेओ तो देखा याय ना । एकेबारे प्राणपणे फाँसिकाष्ठेर दिके झुंकियाछे, किछुतेइ ताहाके टानिया राखा याय ना । ए की निदारुण अभिमान । चन्दरा मने मने स्वामीके बलितेछे, 'आमि तोमाके छाड़िया आमार एइ नवयौवन लइया फाँसिकाठके वरण करिलाम—आमार इहजन्मेर शेषबन्धन ताहार सहित ।'

बन्दिनी हइया चन्दरा, एकटि निरीह क्षुद्र चंचल कौतुकप्रिय ग्रामवधू, चिरपरिचित ग्रामेर पथ दिया, रथतला दिया, हाटेर मध्य दिया, घाटेर प्रान्त दिया, मजुमदारदेर बाड़िर सम्मुख दिया, पोस्टापिस एवं इस्कुल-घरेर पार्श्व दिया, समस्त परिचित लोकेर

बचसा—झगड़ा ।
ताड़ा दिया—डाँट कर । जेरा—जिरह ।
एकगुंये—ज़िद्दी । टानिया—खींच कर ।
पथ दिया—रास्ते से हो कर ।

चक्षेर उपर दिया, कलङ्केर छाप लइया चिरकालेर मतो गृह छाड़िया चलिया गेल। एक-पाल छेले पिछन पिछन चलिल एवं ग्रामेर मेयेरा, ताहार सइ-साङातरा, केह घोमटार फाँक दिया, केह द्वारेर प्रान्त हइते, केह वा गाछेर आड़ाले दाँड़ाइया, पुलिस-चालित चन्दराके देखिया लज्जाय घृणाय भये कण्टकित हइया उठिल।

डेपुटि म्याजिस्ट्रेटेर काछेओ चन्दरा दोष स्वीकार करिल। एवं खुनेर समय बड़ोबउ ये ताहार प्रति कोनोरूप अत्याचार करियाछिल ताहा प्रकाश हइल ना।

किन्तु, सेदिन छिदाम साक्ष्यस्थले आसियाइ एकेबारे काँदिया जोड़हस्ते कहिल, "दोहाइ हुजुर, आमार स्त्रीर कोनो दोष नाइ।" हाकिम धमक दिया ताहार उच्छ्वास निवारण करिया ताहाके प्रश्न करिते लागिलेन, से एके एके सत्य घटना प्रकाश करिल।

हाकिम ताहार कथा विश्वास करिलेन ना। कारण, प्रधान विश्वस्त भद्रसाक्षी रामलोचन कहिल, "खुनेर अनतिविलम्बेइ आमि घटनास्थले उपस्थित हइयाछिलाम। साक्षी छिदाम आमार निकट समस्त स्वीकार करिया आमार पा जड़ाइया धरिया कहिल, 'बउके की करिया उद्धार करिब आमाके युक्ति दिन।' आमि भालो मन्द किछुइ बलिलाम ना। साक्षी आमाके बलिल, 'आमि यदि बलि, आमार बड़ो भाइ भात चाहिया भात पाय नाइ बलिया रागेर माथाय स्त्रीके मारियाछे, ताहा हइले से कि रक्षा पाइबे।' आमि कहिलाम, 'खबर्दार हारामजादा, आदालते एक-वर्णओ मिथ्या बलिस ना—एतबड़ो महापाप आर नाइ।" इत्यादि।

रामलोचन प्रथमे चन्दराके रक्षा करिबार उद्देशे अनेकगुला

चक्षेर उपर दिया—आँखों के सामने से। पाल—झुंड। सइ-साङातरा—सखी-सहेलियाँ। घोमटार—घूंघट की। आड़ाले—आड़ में।
काँदिया—रोते हुए। धमक दिया—धमका कर।
भालो मन्द—भला-बुरा। रागेर माथाय—क्रोध की झोंक में।

गल्प बानाइया तुलियाछिल, किन्तु यखन देखिल चन्दरा निजे बाँकिया दाँड़ाइयाछे तखन भाविल, 'ओरे बाप रे, शेषकाले कि मिथ्या साक्ष्येर दाये पड़िब। येटुकु जानि सेइटुकु बला भालो।' एइ मने करिया रामलोचन याहा जाने ताहाइ बलिल। वरञ्च ताहार चेयेओ किछु बेशि बलिते छाड़िल ना।

डेपुटि म्याजिस्ट्रेट सेशने चालान दिलेन।

इतिमध्ये चाषबास हाटबाजार हासिकान्ना पृथिवीर समस्त काज चलिते लागिल। एवं पूर्व पूर्व वत्सरेर मतो नवीन धान्य-क्षेत्रे श्रावणेर अविरल वृष्टिधारा वर्षित हइते लागिल।

पुलिस आसामी एवं साक्षी लइया आदालते हाजिर। सम्मुखवर्ती मुन्सेफेर कोर्टे विस्तर लोक निज निज मोकद्दमार अपेक्षाय बसिया आछे। रन्धनशालार पश्चाद्वर्ती एकटि डोबार अंश-विभाग लइया कलिकाता हइते एक उकिल आसियाछे एवं तदुपलक्षे वादीर पक्षे उनचल्लिशजन साक्षी उपस्थित आछे। कत शत लोक आपन आपन कड़ागण्डा हिसाबेर चुलचेरा मीमांसा करिबार जन्य व्यग्र हइया आसियाछे, जगते आपातत तदपेक्षा गुरुतर आर-किछुइ उपस्थित नाइ एइरूप ताहादेर धारणा। छिदाम वातायन हइते एइ अत्यन्त व्यस्तसमस्त प्रतिदिनेर पृथिवीर दिके एकदृष्टे चाहिया आछे, समस्तइ स्वप्नेर मतो बोध हइतेछे। कम्पाउण्डेर बृहत् वटगाछ हइते एकटि कोकिल डाकितेछे—ताहादेर कोनोरूप आइन-आदालत नाइ।

चन्दरा जजेर काछे कहिल, "ओगो साहेब, एक कथा आर बारबार कत बार करिया बलिब।"

बाँकिया—प्रतिकूल हो कर। दाये पड़िब—मुसीवत में फँसूंगा।
चालान दिलेन—भेज दिया।
चाषबास—खेती-बाड़ी। हासिकान्ना—हँसना-रोना।
डोबार—तलैया के। कड़ागण्डा—कौड़ी-गंडा। चुलचेरा मीमांसा—बाल की खाल निकालने वाली मीमांसा। हइते—से। व्यस्तसमस्त—बहुत व्यस्त। चाहिया आछे—ताक रहा है। ओगो—(संबोधनसूचक) अजी।

जजसाहेब ताहाके बुझाइया बलिलेन, "तुमि ये अपराध स्वीकार करितेछ ताहार शास्ति की जान ?"

चन्दरा कहिल, "ना।"

जजसाहेब कहिलेन, "ताहार शास्ति फाँसि।"

चन्दरा कहिल, "ओगो, तोमार पाये पड़ि, ताइ दाओ-ना, साहेव। तोमादेर याहा खुशि करो, आमार तो आर सह्य हय ना।"

यखन छिदामके आदालते उपस्थित करिल चन्दरा मुख फिराइल। जज कहिलेन, "साक्षीर दिके चाहिया बलो, ए तोमार के हय।"

चन्दरा दुइ हाते मुख ढाकिया कहिल, "ओ आमार स्वामी हय।"

प्रश्न हइल, "ओ तोमाके भालोबासे ना ?"

उत्तर। उः, भारि भालोबासे।

प्रश्न। तुमि उहाके भालोबास ना ?

उत्तर। खुब भालोबासि।

छिदामके यखन प्रश्न हइल छिदाम कहिल, "आमि खुन करियाछि।"

प्रश्न। केन।

छिदाम। भात चाहियाछिलाम, बड़ोबउ भात देय नाइ।

दुखिराम साक्ष्य दिते आसिया मूर्छित हइया पड़िल। मूर्छा-भङ्गेर पर उत्तर करिल, "साहेब खुन आमि करियाछि।"

"केन।"

"भात चाहियाछिलाम, भात देय नाइ।"

विस्तर जेरा करिया एवं अन्यान्य साक्ष्य शुनिया जजसाहेब स्पष्ट बुझिते पारिलेन, घरेर स्त्रीलोकके फाँसिर अपमान हइते बाँचाइवार जन्य इहारा दुइ भाइ अपराध स्वीकार करितेछे।

भालोवासे ना—प्यार नहीं करता। विस्तर—बहुत।

किन्तु, चन्दरा पुलिस हइते सेशन आदालत पर्यन्त बराबर एक कथा बलिया आसितेछे, ताहार कथार तिलमात्र नड़चड़ हय नाइ। दुइजन उकिल स्वेच्छाप्रवृत्त हइया ताहाके प्राणदण्ड हइते रक्षा करिबार जन्य विस्तर चेष्टा करियाछे, किन्तु अवशेषे ताहार निकट परास्त मानियाछे।

ये दिन एकरत्ति वयसे एकटि कालोकोलो छोटोखाटो मेये ताहार गोलगाल मुखटि लइया खेलार पुतुल फेलिया बापेर घर हइते श्वशुरघरे आसिल से दिन रात्रे शुभलग्नेर समय आजिकार दिनेर कथा के कल्पना करिते पारित। ताहार बाप मरिबार समय एइ बलिया निश्चिन्त हइयाछिल ये, 'याहा हउक, आमार मेयेटिर एकटि सद्गति करिया गेलाम।'

जेलखानाय फाँसिर पूर्वे दयालु सिभिल सार्जन चन्दराके जिज्ञासा करिल, "काहाकेओ देखिते इच्छा कर?"

चन्दरा कहिल, "एकवार आमार माके देखिते चाइ।"

डाक्तार कहिल, "तोमार स्वामी तोमाके देखिते चाय, ताहाके कि डाकिया आनिब।"

चन्दरा कहिल, "मरण!—"

जुलाई-अगस्त १८९३

नड़चड़—फ़र्क। एकरत्ति वयसे—रत्ती-भर, छोटी-सी उम्र में।
छोटोखाटो—छोटी-मोटी। पुतुल—गुड़िया। डाकिया आनिब—बुला लाऊँ।

समाप्ति

प्रथम परिच्छेद

अपूर्वकृष्ण बि०ए० पास करिया कलिकाता हइते देशे फिरिया आसितेछेन।

नदीटि क्षुद्र। वर्षा-अन्ते प्राय शुकाइया याय। एखन श्रावणेर शेषे जले भरिया उठिया एकेवारे ग्रामेर बेड़ा ओ बाँश-झाड़ेर तलदेश चुम्बन करिया चलियाछे।

बहुदिन घन वर्षार परे आज मेघमुक्त आकाशे रौद्र देखा दियाछे।

नौकाय आसीन अपूर्वकृष्णेर मनेर भितरकार एकखानि छवि यदि देखिते पाइताम तबे देखिताम, सेखानेओ एइ युवकेर मानसनदी नववर्षाय कूले कूले भरिया आलोके ज्वल् ज्वल् एवं वातासे छल् छल् करिया उठितेछे।

नौका यथास्थाने घाटे आसिया लागिल। नदीतीर हइते अपूर्वदेर बाड़िर पाका छाद गाछेर अन्तराल दिया देखा याइतेछे। अपूर्वर आगमनसंवाद बाड़िर केह जानित ना, सेइजन्य घाटे लोक आसे नाइ। माझि ब्याग लइते उद्यत हइले अपूर्व ताहाके निवारण करिया निजेइ ब्याग हाते लइया आनन्दभरे ताड़ाताड़ि नामिया पड़िल।

नामिवामात्र, तीरे छिल पिछल, ब्याग-समेत अपूर्व कादाय पड़िया गेल। येमन पड़ा अमनि कोथा हइते एक सुमिष्ट उच्च

फिरिया—लौट कर। शेषे—अन्त में। बेड़ा—सीमा।

रौद्र—धूप। छवि—चित्र। कूले—किनारे तक। ज्वल् ज्वल्—झिलमिल। छल् छल्—छपछप।

छाद—छत। नामिया पड़िल—उतर पड़ा।

नामिवामात्र—उतरते ही। पिछल—फिसलन। कादाय—कीचड़ में। येमन....अमनि—जैसे ही गिरना था वैसे ही।

कण्ठे तरल हास्यलहरी उच्छ्वसित हइया निकटवर्ती अशथ गाछेर पाखिगुलिके सचकित करिया दिल।

अपूर्व अत्यन्त लज्जित हइया ताड़ाताड़ि आत्मसम्वरण करिया चाहिया देखिल। देखिल, तीरे महाजनेर नौका हइते नूतन इँट राशीकृत करिया नामाइया राखा हइयाछे, ताहारइ उपरे बसिया एकटि मेये हास्यवेगे एखनि शतधा हइया याइबे एमनि मने हइतेछे।

अपूर्व चिनिते पारिल, ताहादेरइ नूतन प्रतिवेशिनीर मेये मृण्मयी। दूरे बड़ो नदीर धारे इहादेर बाड़ि छिल, सेखाने नदीर भाङने देशत्याग करिया बछर दुइ-तिन हइल एइ ग्रामे आसिया वास करितेछे।

एइ मेयेटिर अख्यातिर कथा अनेक शुनिते पाओया याय। पुरुष ग्रामवासीरा स्नेहभरे इहाके पागली बले, किन्तु ग्रामेर गृहिणीरा इहार उच्छृङ्खल स्वभावे सर्वदा भीत चिन्तित शङ्कान्वित। ग्रामेर यत छेलेदेर सहितइ इहार खेला; समवयसी मेयेदेर प्रति अवज्ञार सीमा नाइ। शिशुराज्ये एइ मेयेटि एकटि छोटो-खाटो बर्गिर उपद्रव बलिलेइ हय।

बापेर आदरेर मेये किना, सेइजन्य इहार एतटा दुर्दान्त प्रताप। एइ सम्बन्धे बन्धुदेर निकट मृण्मयीर मा स्वामीर विरुद्धे सर्वदा अभियोग करिते छाड़ित ना; अथच बाप इहाके भालोबासे, बाप काछे थाकिले मृण्मयीर चोखेर अश्रुबिन्दु ताहार अन्तरे बड़ोइ बाजित, इहाइ मने करिया प्रवासी स्वामीके स्मरण-पूर्वक मृण्मयीर मा मेयेके किछुतेइ काँदाइते पारित ना।

अशथ—पीपल। पाखिगुलिके—पक्षियों को। सचकित....दिल—चौंका दिया।
चाहिया—ताक कर। नामाइया—उतार कर। मेये—लड़की।
प्रतिवेशिनीर—पड़ोसिन की। भाङने—कगार तोड़ देने के (कारण)। बछर—बरस। यत—तमाम। बर्गिर—प्राचीन महाराष्ट्रीय अश्वारोही सैनिकों का।
बापेर.....किना—बाप की लाड़ली बेटी थी न। बाजित—व्यथा पहुँचाते थे। काँदाइते.....ना—रुला नहीं पाती थी।

मृण्मयी देखिते श्यामवर्ण ; छोटो कोँकड़ा चुल पिठ पर्यन्त पड़ियाछे। ठिक येन बालकेर मतो मुखेर भाव। मस्त मस्त दुटि कालो चक्षुते ना आछे लज्जा, ना आछे भय, ना आछे हाव-भावलीलार लेशमात्र। शरीर दीर्घ, परिपुष्ट, सुस्थ, सबल, किन्तु ताहार वयस अधिक कि अल्प से प्रश्न काहारओ मने उदय हय ना ; यदि हइत, तबे एखनओ अविवाहित आछे बलिया लोके ताहार पितामाताके निन्दा करित। ग्रामे विदेशी जमिदारेर नौका कालक्रमे ये दिन घाटे आसिया लागे से दिन ग्रामेर लोकेरा सम्भ्रमे शशव्यस्त हइया उठे, घाटेर मेयेदेर मुखरङ्गभूमिते अकस्मात् नासाग्रभागपर्यन्त यवनिकापतन हय, किन्तु मृण्मयी कोथा हइते एकटा उलङ्ग शिशुके कोले लइया कोँकड़ा चुलगुलि पिठे दोलाइया छुटिया घाटे आसिया उपस्थित। ये देशे व्याध नाइ, विपद नाइ, सेइ देशेर हरिणशिशुर मतो निर्भीक कौतूहले दाँड़ाइया चाहिया चाहिया देखिते थाके, अवशेषे आपन दलेर बालक सङ्गीदेर निकट फिरिया गिया एइ नवागत प्राणीर आचारव्यवहार सम्बन्धे विस्तर बाहुल्य वर्णना करे।

आमादेर अपूर्व इतिपूर्वे छुटि उपलक्षे बाड़ि आसिया एइ बन्धनहीन बालिकाटिके दुइ-चारिबार देखियाछे एवं अवकाशेर समय, एमन-कि अनवकाशेर समयओ इहार सम्बन्धे चिन्ता करियाछे। पृथिवीते अनेक मुख चोखे पड़े, किन्तु एक-एकटि मुख बला कहा नाइ एकेबारे मनेर मध्ये गिया उत्तीर्ण हय। से केवल सौन्दर्येर जन्य नहे, आर-एकटा की गुण आछे। से गुणटि बोध करि स्वच्छता। अधिकांश मुखेर मध्येइ मनुष्य-प्रकृतिटि आपनाके परिस्फुटरूपे प्रकाश करिते पारे ना ; ये

कोँकड़ा चुल—घुँघराले बाल। मस्त मस्त—बड़ी-बड़ी। शशव्यस्त—अत्यन्त व्यग्र। उलङ्ग—नंग-धड़ंग। दोलाइया—झुलाते हुए। विस्तर—प्रचुर।

एक-एकटि—कोई-कोई। बला कहा नाइ—बिना कहे-सुने। बोध करि—जान पड़ता है।

मुखे सेइ अन्तरगुहावासी रहस्यमय लोकटि अबाधे बाहिर हइया देखा देय से मुख सहस्रेर मध्ये चोखे पड़े एवं एक पलके मने मुद्रित हइया याय। एइ बालिकार मुखे चोखे एकटि दुरन्त अबाध्य नारीप्रकृति उन्मुक्त वेगवान अरण्यमृगेर मतो सर्वदा देखा देय, खेला करे; सेइजन्य एइ जीवनचंचल मुखखानि एकवार देखिले आर सहजे भोला याय ना।

पाठकदिगके बला बाहुल्य, मृण्मयीर कौतुकहास्यध्वनि यतइ सुमिष्ट हउक, दुर्भागा अपूर्वेर पक्षे किंचित् क्लेशदायक हइयाछिल। से ताड़ाताड़ि माझिर हाते ब्याग समर्पण करिया रक्तिममुखे द्रुतवेगे गृह-अभिमुखे चलिते लागिल।

आयोजनटि अति सुन्दर हइयाछिल। नदीर तीर, गाछेर छाया, पाखिर गान, प्रभातेर रौद्र, कुड़ि वत्सर वयस; अवश्य इँटेर स्तूपटा तेमन उल्लेखयोग्य नहे, किन्तु ये व्यक्ति ताहार उपर बसिया छिल से एइ शुष्क कठिन आसनेर प्रतिओ एकटि मनोरम श्री विस्तार करियाछिल। हाय, एमन दृश्येर मध्ये प्रथम पदक्षेपमात्रइ ये समस्त कवित्व प्रहसने परिणत हय इहा अपेक्षा अदृष्टेर निष्ठुरता आर की हइते पारे।

द्वितीय परिच्छेद

सेइ इष्टकशिखर हइते प्रवहमान हास्यध्वनि शुनिते शुनिते चादरे ओ ब्यागे कादा माखिया गाछेर छाया दिया अपूर्व बाड़िते गिया उपस्थित हइल।

अकस्मात् पुत्रेर आगमने ताहार विधवा माता पुलकित हइया उठिलेन। तत्क्षणात् क्षीर दधि रुइमाछेर सन्धाने दूरे निकटे लोक दौड़िल एवं पाड़ा-प्रतिवेशीर मध्येओ एकटा आन्दोलन उपस्थित हइल।

दुरन्त—चंचल। भोला......ना—भूलता नहीं। कुड़ि—बीस।
कादा माखिया—कीचड़ लपेटे।
क्षीर—खोआ। रुइमाछेर—रोहू मछली की।

आहारान्ते मा अपूर्वर विवाहेर प्रस्ताव उत्थापन करिलेन। अपूर्व सेजन्य प्रस्तुत हइया छिल। कारण, प्रस्ताव अनेक पूर्वेइ छिल, किन्तु पुत्र नव्यतन्त्रेर नूतन धुया धरिया जेद करिया बसियाछिल ये, 'बि०ए० पास ना करिया विवाह करिब ना।' एतकाल जननी सेइजन्य अपेक्षा करिया छिलेन, अतएव एखन आर-कोनो ओजर करा मिथ्या। अपूर्व कहिल, "आगे पात्री देखा हउक, ताहार पर स्थिर हइबे।" मा कहिलेन, "पात्री देखा हइयाछे, सेजन्य तोके भाबिते हइबे ना।" अपूर्व ओइ भावनाटा निजे भाबिते प्रस्तुत हइल एवं कहिल, "मेये ना देखिया विवाह करिते पारिब ना।" मा भाबिलेन एमन सृष्टिछाड़ा कथाओ कखनो शोना याय नाइ; किन्तु सम्मत हइलेन।

से रात्रे अपूर्व प्रदीप निबाइया बिछानाय शयन करिले पर वर्षानिशीथेर समस्त शब्द एवं समस्त निस्तब्धतार परप्रान्त हइते विजन विनिद्र शय्याय एकटि उच्छ्वसित उच्च मधुर कण्ठेर हास्यध्वनि ताहार काने आसिया क्रमागत बाजिते लागिल। मन निजेके केवलइ एइ बलिया पीड़ा दिते लागिल ये, सकालवेलाकार सेइ पदस्खलनटा येन कोनो एकटा उपाये संशोधन करिया लओया उचित। बालिका जानिल ना ये, 'आमि अपूर्वकृष्ण अनेक विद्या उपार्जन करियाछि, कलिकाताय बहुकाल यापन करिया आसियाछि, दैवात् पिछले पा दिया कादाय पड़िया गेलेओ आमि उपहास्य उपेक्षणीय एकजन ये-से ग्राम्य युवक नहि।'

परदिन अपूर्व कने देखिते याइबे। अधिक दूरे नहे, पाड़ातेइ ताहादेर बाड़ि। एकटु विशेष यत्नपूर्वक साज करिल। धुति

नव्यतन्त्रेर......धरिया—नई रोशनी की नई टेक पकड़ कर। जेद—ज़िद। पात्री—लड़की। भावनाटा—चिन्ता। सृष्टिछाड़ा—तीन लोक से न्यारी।

निबाइया—बुझा कर। परप्रान्त हइते—उस पार से। पिछले—फिसलन में। ये-से—जो-सो, ऐरा-गैरा। कने—कन्या। पाड़ातेइ—मुहल्ले में ही।

ओ चादर छाड़िया सिल्केर चापकान जोब्बा, माथाय एकटा गोलाकार पागड़ि, एवं वार्निशकरा एकजोड़ा जुता पाये दिया, सिल्केर छाता हस्ते प्रातःकाले बाहिर हइल।

सम्भावित श्वशुरबाड़िते पदार्पण करिबामात्र महा समारोह-समादरेर घटा पड़िया गेल। अवशेषे यथाकाले कम्पितहृदय मेयेटिके झाड़िया मुछिया, रङ करिया, खोँपाय राङ्ता जड़ाइया, एकखानि पात्ला रङिन कापड़े मुड़िया वरेर सम्मुखे आनिया उपस्थित करा हइल। से एक कोणे नीरवे माथा प्राय हाँटुर काछे ठेकाइया बसिया रहिल एवं एक प्रौढ़ा दासी ताहाके साहस दिबार जन्य पश्चाते उपस्थित रहिल। कनेर एक बालक भाइ ताहादेर परिवारेर मध्ये एइ एक नूतन अनधिकार-प्रवेशोद्यत लोकटिर पागड़ि, घड़िर चेन एवं नवोद्गत श्मश्रु एकमने निरीक्षण करिते लागिल। अपूर्व कियत्काल गोँफे ता दिया अवशेषे गम्भीर-भावे जिज्ञासा करिल, "तुमि की पड़।" वसनभूषणाच्छन्न लज्जास्तूपेर निकट हइते ताहार कोनो उत्तर पाओया गेल ना। दुइ-तिनबार प्रश्न एवं प्रौढ़ा दासीर निकट हइते पृष्ठदेशे विस्तर उत्साहजनक करताड़नेर पर बालिका मृदुस्वरे एक निश्वासे अत्यन्त द्रुत बलिया गेल, चारुपाठ द्वितीय भाग, व्याकरणसार प्रथम भाग, भूगोल विवरण, पाटिगणित, भारतवर्षेर इतिहास। एमन समय बहिर्देशे एकटा अशान्त गतिर धुप्धाप् शब्द शोना गेल एवं मुहूर्तेर मध्ये दौड़िया हाँपाइया पिठेर चुल दोलाइया मृण्मयी घरे आसिया प्रवेश करिल। अपूर्वकृष्णेर प्रति दृक्पात ना करिया एकेबारे कनेर भाइ राखालेर हात धरिया टानाटानि आरम्भ करिया दिल। राखाल तखन आपन पर्यवेक्षणशक्तिर

जोब्बा—जुब्बा।

घटा पड़िया गेल—धूम मच गई। **झाड़िया मुछिया**—झाड़-पोंछ कर। **खोँपाय राङ्ता जड़ाइया**—जूड़े में पन्नी लपेट कर। **मुड़िया**—लपेट कर। **हाँटुर काछे ठेकाइया**—घुटनों से टिका कर। **गोँफे ता दिया**—मूँछों पर ताव दे कर। **पाटिगणित**—अंक गणित। **धुप्धाप**—धम-धम। **दोलाइया**—हिलाती-डुलाती हुई। **टानाटानि**—खींच-तान।

चर्चाय एकान्तमने नियुक्त छिल, से किछुतेइ उठिते चाहिल ना। दासीटि ताहार संयत कण्ठस्वरेर मृदुता रक्षार प्रति दृष्टि राखिया यथासाध्य तीव्रभावे मृण्मयीके भर्त्सना करिते लागिल। अपूर्वकृष्ण आपनार समस्त गाम्भीर्य एवं गौरव एकत्र करिया पागड़ि-परा मस्तके अभ्रभेदी हइया बसिया रहिल एवं पेटेर काछे घड़िर चेन नाड़िते लागिल। अवशेषे सङ्गीटिके किछुतेइ विचलित करिते ना पारिया, ताहार पिठे एकटा सगब्द चपेटाघात करिया एवं चट करिया कन्नेर मायार घोमटा टानिया खुलिया दिया झड़ेर मतो मृण्मयी घर हइते बाहिर हइया गेल। दासीटि गुमरिया गर्जन करिते लागिल एवं भग्नीर अकस्मात् अवगुण्ठन-मोचने राखाल खिल् खिल् शब्दे हासिते आरम्भ करिल। निजेर पृष्ठेर प्रबल चपेटाघाताटि से अन्याय प्राप्य मने करिल ना, कारण, एरूप देना-पाओना ताहादेर मध्ये सर्वदाइ चलितेछे। एमन-कि पूर्वे मृण्मयीर चुल काँध छाड़ाइया पिठेर माझामाझि आसिया पड़ित; राखालइ एक दिन हठात् पश्चात् हइते आसिया ताहार झुँटिर मध्ये काँचि चालाइया देय। मृण्मयी तखन अत्यन्त राग करिया ताहार हात हइते काँचिटि काड़िया लइया निजेर अवशिष्ट पश्चातेर चुल क्याँच् क्याँच् शब्दे निर्दयभावे काटिया फेलिल, ताहार कोँकड़ा चुलेर स्तबकगुलि शाखाच्युत कालो आङुरेर स्तूपेर मतो गुच्छ गुच्छ माटिते पड़िया गेल। उभयेर मध्ये एरूप शासनप्रणाली प्रचलित छिल।

अतःपर एइ नीरव परीक्षासभा आर अधिक क्षण स्थायी हइल ना। पिण्डाकार कन्याटि कोनोमते पुनश्च दीर्घाकार हइया दासी-सहकारे अन्तःपुरे चलिया गेल। अपूर्व परम गम्भीर-

---

नाड़िते—हिलाने। घोमटा—घूंघट। टानिया—खींच कर। झड़ेर मतो—आँधी के समान। गुमरिया—मन ही मन उबलते हुए। एरूप.....पाओना—ऐसा लेन-देन। झुँटिर मध्ये—लटूरी में। काँचि—कैंची। काड़िया लइया—छीन कर। क्याँच् क्याँच्—कच-कच। कोँकड़ा—घुंघराले।

दासी-सहकारे—दासी सहित।

भावे विरल गुम्फरेखाय ता दिते दिते उठिया घरेर बाहिरे याइते उद्यत हइल। द्वारेर निकटे गिया देखे वार्निशकरा नूतन जुता-जोड़ाटि येखाने छिल सेखाने नाइ, एवं कोथाय आछे ताहाओ बहु चेष्टाय अवधारण करा गेल ना।

बाड़िर लोक सकलेइ विषम विव्रत हइया उठिल एवं अप-राधीर उद्देशे गालि ओ भर्त्सना अजस्र वर्षित हइते लागिल। अनेक खोँज करिया अवशेषे अनन्योपाय हइया बाड़िर कर्तार पुरातन छिन्न ढिला चटिजोड़ाटा परिया, प्याण्टलुन चापकान पागड़ि-समेत सुसज्जित अपूर्व कर्दमाक्त ग्रामपथे अत्यन्त सावधाने चलिते लागिल।

पुष्करिणीर धारे निर्जन पथप्रान्ते आबार हठात् सेइ उच्च कण्ठेर अजस्र हास्य-कलोच्छ्वास। येन तरुपल्लवेर मध्य हइते कौतुकप्रिया वनदेवी अपूर्वर ओइ असंगत चटिजुताजोड़ार दिके चाहिया हठात् आर हासि धारण करिया राखिते पारिल ना।

अपूर्व अप्रतिभभावे थमकिया दाँड़ाइया इतस्तत निरीक्षण करितेछे, एमन समय घन वन हइते बाहिर हइया एकटि निर्लज्ज अपराधिनी ताहार सम्मुखे नूतन जुताजोड़ाटि राखियाइ पलाय-नोद्यत हइल। अपूर्व द्रुतवेगे दुइ हात धरिया ताहाके बन्दी करिया फेलिल।

मृण्मयी आँकिया-बाँकिया हात छाड़ाइया पलाइबार चेष्टा करिल, किन्तु पारिल ना। कोँकड़ा चुले वेष्टित ताहार परिपुष्ट सहास्य दुष्ट मुखखानिर उपरे शाखान्तराल-च्युत सूर्यकिरण आसिया पड़िल। रौद्रोज्ज्वल निर्मल चंचल निर्झरिणीर दिके अवनत हइया कौतूहली पथिक येमन निविष्ट दृष्टिते ताहार

गुम्फरेखाय—मूँछों की रेखा पर। अवधारण—निश्चित।

विव्रत—बहुत परेशान। कर्तार—गृहपति की। चटिजोड़ाटा—चप्पलों की जोड़ी। कर्दमाक्त—कीचड़ से सने हुए।

थमकिया—ठिठक कर।

आँकिया-बाँकिया—सीधी-तिरछी हो कर। पारिल ना—(भाग) न सकी।

तलदेश देखिते थाके अपूर्व तेमनि करिया गभीर गम्भीर नेत्रे मृण्मयीर ऊर्ध्वोत्क्षिप्त मुखेर उपर, तड़ित्तरल दुटि चक्षुर मध्ये चाहिया देखिल एवं अत्यन्त धीरे धीरे मुष्टि शिथिल करिया येन यथाकर्त्तव्य असम्पन्न राखिया बन्दिनीके छाड़िया दिल। अपूर्व यदि राग करिया मृण्मयीके धरिया मारित ताहा हइले से किछुइ आश्चर्य हइत ना, किन्तु निर्जन पथेर मध्ये एइ अपरूप नीरव शास्तिर से कोनो अर्थ बुझिते पारिल ना।

नृत्यमयी प्रकृतिर नूपुरनिक्वणेर न्याय चंचल हास्यध्वनिटि समस्त आकाश व्यापिया वाजिते लागिल एवं चिन्तानिमग्न अपूर्वकृष्ण अत्यन्त धीरपदक्षेपे बाड़िते आसिया उपस्थित हइल।

तृतीय परिच्छेद

अपूर्व समस्त दिन नाना छुता करिया अन्त:पुरे मार सहित साक्षात् करिते गेल ना। बाहिरे निमन्त्रण छिल, खाइया आसिल। अपूर्वर मतो एमन एकजन कृतविद्य गम्भीर भावुक लोक एकटि सामान्य अशिक्षिता बालिकार काछे आपनार लुप्त गौरव उद्धार करिबार, आपनार आन्तरिक माहात्म्येर परिपूर्ण परिचय दिबार जन्य केन ये एतटा बेशि उत्कण्ठित हइया उठिबे ताहा बुझा कठिन। एकटि पाड़ागाँयेर चंचल मेये ताँहाके सामान्य लोक मने करिलइ वा। से यदि मुहूर्तकालेर जन्य ताँहाके हास्यास्पद करिया तार पर ताँहार अस्तित्व विस्मृत हइया राखाल-नामक एकटि निर्बोध निरक्षर बालकेर सहित खेला करिबार जन्य व्यग्रता प्रकाश करे, ताहातेइ वा ताँहार क्षति की। ताहार काछे प्रमाण करिबार आवश्यक की ये, तिनि विश्वदीप-नामक मासिक पत्रे ग्रन्थसमालोचना करिया थाकेन, एवं ताँहार तोरङ्गेर मध्ये

तेमनि करिया—उसी प्रकार। राग करिया—गुस्से में आ कर।
छुता—बहाना। मार—मां के। बुझा—समझना। पाड़ागाँयेर—गँवई-गाँव की। तोरङ्गेर मध्ये—ट्रंक में।

एसेन्स, जुता, रुबिनिर क्याम्फर, रङिन चिठिर कागज एवं 'हारमोनियम-शिक्षा' वहिर सङ्गे एकखानि परिपूर्ण खाता निशीथेर गर्भे भावी उषार न्याय प्रकाशेर प्रतीक्षाय रहियाछे। किन्तु मनके बुझानो कठिन एवं एइ पल्लिवासिनी चंचला मेयेटिर काछे श्रीयुक्त अपूर्वकृष्ण राय, बि०ए०, किछुतेइ पराभव स्वीकार करिते प्रस्तुत नहे।

सन्ध्यार समये अन्तःपुरे प्रवेश करिले मा ताहाके जिज्ञासा करिलेन, "केमन रे अपु, मेये केमन देखलि। पछन्द हय तो?"

अपूर्व किंचित् अप्रतिभभावे कहिल, "मेये देखेछि मा, ओर मध्ये एकटिके आमार पछन्द हयेछे।"

मा आश्चर्य हइया कहिलेन, "तुइ आबार कटि मेये देखलि!"

अवशेषे अनेक इतस्ततर पर प्रकाश पाइल, प्रतिवेशिनी शरतेर मेये मृण्मयीके ताँहार छेले पछन्द करियाछे। एत लेखा-पड़ा शिखिया एमनि छेलेर पछन्द!

प्रथमे अपूर्वर पक्षे अनेकटा परिमाण लज्जा छिल, अवशेषे मा यखन प्रबल आपत्ति करिते लागिलेन तखन ताहार लज्जा भाङिया गेल। से रोखेर माथाय बलिया बसिल, 'मृण्मयीके छाड़ा आर-काहाकेओ विवाह करिब ना।' अन्य जड़पुत्तलि मेयेटिके से यतइ कल्पना करिते लागिल ततइ विवाह-सम्बन्धे ताहार विषम वितृष्णार उद्रेक हइल।

दुइ-तिन दिन उभयपक्षे मान-अभिमान, अनाहार-अनिद्रार पर अपूर्वइ जयी हइल। मा मनके बोझाइलेन ये, मृण्मयी छेलेमानुष एवं मृण्मयीर मा उपयुक्त शिक्षादाने असमर्थ, विवाहेर पर ताँहार हाते पड़िलेइ ताहार स्वभावेर परिवर्तन हइबे। एवं

बहिर—पुस्तक के। खाता—कॉपी। पल्लि—ग्राम।
पछन्द—पसन्द। कटि—कितनी।
प्रतिवेशिनी—पड़ोसिन। एमनि—ऐसी। भाङिया गेल—टूट गई। रोखेर माथाय—ज़िद की झोंक में। छाड़ा—छोड़ कर।
बोझाइलेन—समझा लिया। छेलेमानुष—बच्ची।

क्रमश इहाओ विश्वास करिलेन ये, मृण्मयीर मुखखानि सुन्दर। किन्तु, तखनइ आवार ताहार खर्व केशराशि ताँहार कल्पनापथे उदित हइया हृदय नैराश्ये पूर्ण करिते लागिल, तथापि आशा करिलेन दृढ़ करिया चुल वाँधिया एवं जव्‌जवे करिया तेल लेपिया काले ए त्रुटिओ संशोधन हइते पारिवे।

पाड़ार लोक सकलेइ अपूर्वर एइ पछन्दटिके अपूर्व-पछन्द वलिया नामकरण करिल। पागली मृण्मयीके अनेकेइ भालो-वासित, किन्तु ताइ वलिया निजेर पुत्रेर विवाहयोग्या वलिया केह मने करित ना।

मृण्मयीर वाप ईशान मजुमदारके यथाकाले संवाद देओया हइल। से कोनो एकटि स्टीमार कोम्पानिर केरानि-रूपे दूरे नदीतीरवर्ती एकटि क्षुद्र स्टेशने एकटि छोटो टिनेर-छाद-विशिष्ट कुटिरे माल-ओठानो-नावानो एवं टिकिट-विक्रय-कार्ये नियुक्त छिल।

ताहार मृण्मयीर विवाहप्रस्तावे दुइ चक्षु वहिया जल पड़िते लागिल। ताहार मध्ये कतखानि दुःख एवं कतखानि आनन्द छिल परिमाण करिया वलिवार कोनो उपाय नाइ।

कन्यार विवाह-उपलक्षे ईशान हेड-आपिसेर साहेवेर निकट छुटि प्रार्थना करिया दरखास्त दिल। साहेव उपलक्षटा नितान्तइ तुच्छ ज्ञान करिया छुटि नामंजुर करिया दिलेन। तखन, पूजार समय एक सप्ताह छुटि पाइवार सम्भावना जानाइया, से-पर्यन्त विवाह स्थगित राखिवार जन्य देशे चिठि लिखिया दिल। किन्तु अपूर्वर मा कहिल, 'एइ मासे दिन भालो आछे, आर विलम्ब करिते पारिव ना।'

उभयतइ प्रार्थना अग्राह्य हइले पर व्यथित हृदय ईशान

जव्‌जवे—(अतिशय सिक्तता वोधक)।
पाड़ार—मुहल्ले के। ताइ वलिया—इसीलिए।
केरानि—कारिन्दा, क्लर्क। ओठानो-नावानो—चढ़ाना-उतारना।
वहिया—से हो कर।
हइले पर—होने के वाद।

आर-कोनो आपत्ति ना करिया पूर्वमतो माल ओजन एवं टिकिट विक्रय करिते लागिल।

अतःपर मृण्मयीर मा एवं पल्लीर यत वर्षीयसीगण सकले मिलिया भावी कर्तव्य सम्बन्धे मृण्मयीके अहर्निशि उपदेश दिते लागिल। क्रीड़ासक्ति, द्रुत गमन, उच्चहास्य, बालकदिगेर सहित आलाप एवं क्षुधा-अनुसारे भोजन सम्बन्धे सकलेइ निषेध परामर्श दिया विवाहटाके विभीषिकारूपे प्रतिपन्न करिते सम्पूर्ण कृतकार्य हइल। उत्कण्ठित शङ्कित हृदये मृण्मयी मने करिल, ताहार यावज्जीवन कारादण्ड एवं तदवसाने फाँसिर हुकुम हइयाछे।

से दुष्ट पोनि घोड़ार मतो घाड़ बाँकाइया पिछु हटिया बलिया बसिल, 'आमि विवाह करिब ना।'

चतुर्थ परिच्छेद

किन्तु, तथापि विवाह करिते हइल।

तार परे शिक्षा आरम्भ हइल। एक रात्रिर मध्ये मृण्मयीर समस्त पृथिवी अपूर्वर मार अन्तःपुरे आसिया आबद्ध हइया गेल।

शाशुड़ि संशोधनकार्ये प्रवृत्त हइलेन। अत्यन्त कठिन मुख करिया कहिलेन, "देखो बाछा, तुमि किछु आर कचि खुकि नओ, आमादेर घरे एमन बेहायापना करिले चलिबे ना।"

शाशुड़ि ये भावे बलिलेन मृण्मयी से भावे कथाटा ग्रहण करिल ना। से भाबिल, ए घरे यदि ना चले तबे बुझि अन्यत्र याइते हइबे। अपराह्णे ताहाके आर देखा गेल ना। से कोथाय गेल, कोथाय गेल, खोँज पड़िल। अवशेषे विश्वासघातक

वर्षीयसीगण—बड़ी-बूढ़ियाँ। मने करिल—सोचा, समझा। घाड़ बाँकाइया—गर्दन टेढ़ी कर। बलिया बसिल—कह बैठी।

शाशुड़ि—सास। बाछा—वत्स। कचि खुकि—कच्ची (उम्र की), छोटी बच्ची। बेहायापना—बेहयाई।

भाबिल—सोचा। बुझि—लगता है, शायद।

राखाल ताहाके ताहार गोपन स्थान हइते धराइया दिल। से वटतलाय राधाकान्त ठाकुरेर परित्यक्त भाङा रथेर मध्ये गिया बसिया छिल।

शाशुड़ि मा एवं पाड़ार समस्त हितैषिणीगण मृण्मयीके येरूप लाञ्छना करिल ताहा पाठकगण एवं पाठिकागण सहजेइ कल्पना करिते पारिबेन।

रात्रे घन मेघ करिया झुप् झुप् शब्दे वृष्टि हइते आरम्भ हइल। अपूर्वकृष्ण बिछानार मध्ये अति धीरे धीरे मृण्मयीर काछे ईषत् अग्रसर हइया ताहार काने काने मृदुस्वरे कहिल, "मृण्मयी, तुमि आमाके भालोबास ना?"

मृण्मयी सतेजे वलिया उठिल, "ना। आमि तोमाके कक्खनोइ भालोवासव ना।" ताहार यत राग एवं यत शास्तिविधान समस्तइ पुञ्जीभूत वज्रेर न्याय अपूर्वर माथार उपर निक्षेप करिल।

अपूर्व क्षुण्ण हइया कहिल, "केन, आमि तोमार काछे की दोष करेछि।"

मृण्मयी कहिल, "तुमि आमाके बिये करले केन।"

ए अपराधेर सन्तोषजनक कैफियत देओया कठिन। किन्तु, अपूर्व मने मने कहिल, येमन करिया हउक एइ दुर्बाध्य मनटिके वश करिते हइबे।

परदिन शाशुड़ि मृण्मयीर विद्रोही भावेर समस्त लक्षण देखिया ताहाके घरे दरजा बन्ध करिया राखिया दिल। से नूतन पिञ्जराबद्ध पाखिर मतो प्रथम अनेकक्षण घरेर मध्ये धड़् फड़् करिया बेड़ाइते लागिल। अवशेषे कोथाओ पालाइबार

धराइया दिल—पकड़वा दिया। भाङा—टूटे हुए। बसिया छिल—बैठी थी। पाड़ार—मुहल्ले के।
भालोबास ना—प्यार नहीं करतीं।
कक्खनोइ—कभी भी। राग—क्रोध। शास्तिविधान—दण्डविधान। बिये—विवाह।
येमन करिया हउक—जैसे भी हो। दुर्बाध्य—कठिनाई से वशीभूत।
दरजा—दरवाज़ा। धड़् फड़्—छटपट। पालाइबार—भागने का।

कोनो पथ ना देखिया निष्फल क्रोधे बिछानार चादरखाना दाँत दिया छिँड़िया कुटिकुटि करिया फेलिल, एवं माटिर उपर उपुड़ हइया पड़िया मने मने बाबाके डाकिते डाकिते काँदिते लागिल।

एमन समये धीरे धीरे के ताहार पाशे आसिया बसिल। सस्नेहे ताहार धूलिलुण्ठित चुलगुलि कपोलेर उपर हइते तुलिया दिबार चेष्टा करिल। मृण्मयी सबले माथा नाड़िया ताहार हात सराइया दिल। अपूर्व कानेर काछे मुख नत करिया मृदु स्वरे कहिल, "आमि लुकिये दरजा खुले दियेछि। एसो आमरा खिड़किर बागाने पालिये याइ।" मृण्मयी प्रबलवेगे माथा नाड़िया सतेजे सरोदने कहिल, "ना।" अपूर्व ताहार चिबुक धरिया मुख तुलिया दिबार चेष्टा करिया कहिल, "एकबार देखो के एसेछे।" राखाल भूपतित मृण्मयीर दिके चाहिया हतबुद्धिर न्याय द्वारेर काछे दाँड़ाइया छिल। मृण्मयी मुख ना तुलिया अपूर्वर हात ठेलिया दिल। अपूर्व कहिल, "राखाल तोमार सङ्गे खेला करते एसेछे, खेलते याबे?" से विरक्ति-उच्छ्वसित स्वरे कहिल, "ना।" राखालओ सुविधा नय बुझिया कोनोमते घर हइते पालाइया हाँप छाड़िया बाँचिल। अपूर्व चुप करिया बसिया रहिल। मृण्मयी काँदिते काँदिते श्रान्त हइया घुमाइया पड़िल, तखन अपूर्व पा टिपिया बाहिर हइया द्वारे शिकल दिया चलिया गेल।

ताहार परदिन मृण्मयी बापेर काछ हइते एक पत्र पाइल।

छिँड़िया—फाड़ कर। कुटिकुटि—टुकड़े-टुकड़े। उपुड़ हइया—औंधी हो कर। काँदिते लागिल—रोने लगी।

चुलगुलि—बालों को। उपर हइते तुलिया दिबार—ऊपर से हटा देने की। माथा नाड़िया—सिर हिला कर। सराइया दिल—हटा दिया। काछे—निकट। खिड़किर बागाने पालिये याइ—पिछवाड़े के बाग में भाग जाएँ। चिबुक धरिया—ठोड़ी पकड़ कर। मृण्मयीर दिके चाहिया—मृण्मयी की ओर ताकते हुए। सुविधा नय बुझिया—मौका नहीं है (यह) समझ कर। हाँप छाड़िया बाँचिल—दीर्घ निश्वास छोड़ कर निश्चिन्त हुआ। घुमाइया पड़िल—सो गई। पा टिपिया—दबे पाँव। शिकल दिया—सांकल लगा कर। परदिन—अगले दिन।

तिनि ताँहार प्राणप्रतिमा मृण्मयीर विवाहेर समय उपस्थित थाकिते पारेन नाइ बलिया विलाप करिया नवदम्पतिके अन्तरेर आशीर्वाद पाठाइयाछेन ।

मृण्मयी शाशुड़िके गिया कहिल, "आमि बाबार काछे याब ।" शाशुड़ि अकस्मात् एइ असम्भव प्रार्थनाय ताहाके भर्त्सना करिया उठिलेन, "कोथाय ओर बाप थाके तार ठिकाना नेइ; बले 'बाबार काछे याब'। अनासृष्टि आवदार।" से उत्तर ना करिया चलिया गेल। आपनार घरे गिया द्वार रुद्ध करिया नितान्त हताश्वास व्यक्ति येमन करिया देवतार काछे प्रार्थना करे तेमनि करिया बलिते लागिल, "बाबा, आमाके तुमि निये याओ। एखाने आमार केउ नेइ। एखाने थाकले आमि बाँचब ना।"

गभीर रात्रे ताहार स्वामी निद्रित हइले धीरे धीरे द्वार खुलिया मृण्मयी गृहेर बाहिर हइल। यदिओ एक-एकबार मेघ करिया आसितेछिल तथापि ज्योत्स्नारात्रे पथ देखिबार मतो आलोक यथेष्ट छिल। बापेर काछे याइते हइले कोन् पथ अवलम्बन करिते हइबे मृण्मयी ताहार किछुइ जानित ना। केवल ताहार मनेर विश्वास छिल, ये पथ दिया डाकेर पत्रवाहक 'रानार' गण चले सेइ पथ दिया पृथिवीर समस्त ठिकानाय याओया याय। मृण्मयी सेइ डाकेर पथ धरिया चलिते लागिल। चलिते चलिते शरीर श्रान्त हइया आसिल, रात्रिओ प्राय शेष हइल। वनेर मध्ये यखन उसखुस करिया अनिश्चित सुरे दुटो-एकटा पाखि डाकिबार उपक्रम करितेछे अथच निःसंशये समय निर्णय करिते ना पारिया इतस्तत करितेछे तखन मृण्मयी पथेर शेषे नदीर धारे एकटा बृहत् बाजारेर मतो स्थाने आसिया उपस्थित हइल।

बलिया—इसलिए। ओर—उसका। थाके—रहता है। अनासृष्टि आवदार—अद्भुत प्रार्थना। बाँचब—बचूंगी।

मेघ....छिल—बादल घिरे आ रहे थे। डाकेर—डाक का। रानार—सं० 'रनर'। उसखुस करिया—अधीर हो कर। डाकिबार—चहचहाने (बोलने) का। धारे—किनारे।

अतःपर कोन् दिके याइते हइबे भावितेछे एमन समय परिचित झम्झम् शब्द शुनिते पाइल। चिठिर थोले काँधे करिया ऊर्ध्व-श्वासे डाकेर रानार आसिया उपस्थित हइल। मृण्मयी ताड़ाताड़ि ताहार काछे गिया कातर श्रान्तस्वरे कहिल, "कुशीगंजे आमि बाबार काछे याब, आमाके तुमि सङ्गे निये चलो-ना।" से कहिल, "कुशीगंज कोथाय आमि जानि ने।" एइ बलिया घाटे-बाँधा डाकनौकार माझिके जागाइया दिया नौका छाड़िया दिल। ताहार दया करिबार वा प्रश्न करिबार समय नाइ।

देखिते देखिते हाट एवं बाजार सजाग हइया उठिल। मृण्मयी घाटे नामिया एकजन माझिके डाकिया कहिल, "माझि, आमाके कुशीगंजे निये याबे?" माझि ताहार उत्तर दिबार पूर्वेइ पाशेर नौका हइते एकजन बलिया उठिल, "आरे के ओ! मिनु मा, तुमि एखाने कोथा थेके।" मृण्मयी उच्छ्वसित व्यग्रतार सहित बलिया उठिल, "वनमाली, आमि कुशीगंजे बाबार काछे याब, आमाके तोर नौकाय निये चल्।" वनमाली ताहादेर ग्रामेर माझि; से एई उच्छृङ्खलप्रकृति बालिकाटिके विलक्षण चिनित; से कहिल, "बाबार काछे याबे? से तो बेश कथा। चलो, आमि तोमाके निये याच्छि।" मृण्मयी नौकाय उठिल।

माझि नौका छाड़िया दिल। मेघ करिया मुषलधारे वृष्टि आरम्भ हइल। भाद्र-मासेर पूर्ण नदी फुलिया फुलिया नौका दोलाइते लागिल, मृण्मयीर समस्त शरीर निद्राय आच्छन्न हइया आसिल; अंचल पातिया से नौकार मध्ये शयन करिल एवं एइ दुरन्त बालिका नदी-दोलाय प्रकृतिर स्नेहपालित शान्त शिशुटिर मतो अकातरे घुमाइते लागिल।

थोले—थैला। कोथाय—कहाँ। माझिके—मांझी को। छाड़िया दिल—छोड़ दी।
नामिया—उतर कर। ताहार—उसका। तुमि....थेके—तुम यहाँ कहाँ से (आ गई)। तोर—तेरी (अपनी)। विलक्षण चिनित—अच्छी तरह पहचानता था। बेश कथा—अच्छी (ठीक) बात है।
फुलिया फुलिया—उफन-उफन कर। पातिया—बिछा कर। दुरन्त—दुर्दमनीय। मतो—समान, तरह। घुमाइते लागिल—सोती रही।

जागिया उठिया देखिल, से ताहार श्वशुरबाड़िते खाटे शुइया आछे। ताहाके जाग्रत देखिया झि बकिते आरम्भ करिल। झिर कण्ठस्वरे शाशुड़ि आसिया अत्यन्त कठिन कठिन करिया बलिते लागिलेन। मृण्मयी विस्फारितनेत्रे नीरवे ताँहार मुखेर दिके चाहिया रहिल। अवशेषे तिनि यखन ताहार बापेर शिक्षादोषेर उपर कटाक्ष करिया बलिलेन तखन मृण्मयी द्रुतपदे पाशेर घरे प्रवेश करिया भितर हइते शिकल वन्ध करिया दिल।

अपूर्व लज्जार माथा खाइया माके आसिया वलिल, "मा, बउके दुइ-एक दिनेर जन्ये एकवार बापेर वाड़ि पाठिये दिते दोष की।"

मा अपूर्वके 'न भूतो न भविष्यति' भर्त्सना करिते लागिलेन, एवं देशे एत मेये थाकिते वाछिया बाछिया एइ अस्थिदाहकारी दस्यु-मेयेके घरे आनार जन्य ताहाके यथेष्ट गञ्जना करिलेन।

पञ्चम परिच्छेद

सेदिन समस्त दिन वाहिरे झड़वृष्टि एवं घरेर मध्येओ अनुरूप दुर्योग चलिते लागिल।

ताहार परदिन गभीर रात्रे अपूर्व मृण्मयीके धीरे धीरे जाग्रत करिया कहिल, "मृण्मयी, तोमार बाबार काछे यावे?"

मृण्मयी सवेगे अपूर्वर हात चापिया धरिया सचकित हइया कहिल, "याव।"

अपूर्व चुपिचुपि कहिल, "तवे एसो, आमरा दुजने आस्ते आस्ते पालिये याइ। आमि घाटे नौका ठिक करे रेखेछि।"

मृण्मयी अत्यन्त सकृतज्ञ हृदये एकवार स्वामीर मुखेर दिके

झि......करिल—दासी ने डाँटना शुरू किया। शिकल—साँकल।
लज्जार माथा खाइया—लाज-शर्म खो कर।
मेये—लड़की। वाछिया—चुन कर। गञ्जना—तिरस्कार।
झड़वृष्टि—आँधी-मेह। दुर्योग—दुःसमय।
चापिया—दबा कर। एसो—चलो। पालिये जाइ—भाग जाएँ।

नदीतीर एकेबारे निर्जन हइया याय, तखन की अबाध स्वाधीनता; एवं तिन जने मिलिया नानाप्रकार जोगाड़ करिया, भुल करिया, एक करिते आर-एक करिया तुलिया राँधाबाड़ा। ताहार परे मृण्मयीर वलयझंकृत स्नेहहस्तेर परिवेशने श्वसुर-जामातार एकत्रे आहार एवं गृहिणीपनार सहस्र त्रुटि प्रदर्शन-पूर्वक मृण्मयीके परिहास ओ ताहा लइया बालिकार आनन्दकलह एवं मौखिक अभिमान। अवशेषे अपूर्व जानाइल, आर अधिक दिन थाका उचित हय ना। मृण्मयी करुणस्वरे आरओ किछु दिन समय प्रार्थना करिल। ईशान कहिल, "काज नाइ।"

बिदायेर दिन कन्याके बुकेर काछे टानिया ताहार माथाय हात राखिया अश्रु-गद्गदकण्ठे ईशान कहिल, "मा, तुमि श्वशुरघर उज्ज्वल करिया लक्ष्मी हइया थाकियो। केह येन आमार मिनुर कोनो दोष ना धरिते पारे।"

मृण्मयी काँदिते काँदिते स्वामीर सहित बिदाय हइल। एवं ईशान सेइ द्विगुण निरानन्द संकीर्ण घरेर मध्ये फिरिया गिया दिनेर पर दिन, मासेर पर मास नियमित माल ओजन करिते लागिल।

षष्ठम परिच्छेद

एइ अपराधीयुगल गृहे फिरिया आसिले मा अत्यन्त गम्भीरभावे रहिलेन, कोनो कथाइ कहिलेन ना। काहारओ व्यवहारेर प्रति एमन कोनो दोषारोप करिलेन ना याहा से क्षालन करिते चेष्टा करिते पारे। एइ नीरव अभियोग, निस्तब्ध अभिमान, लौहभारेर मतो समस्त घरकन्नार उपर अटलभावे चापिया रहिल।

जोगाड़—संग्रह। एक करिते....तुलिया—कुछ करने जा कर कुछ और ही करके। राँधावाड़ा—पकाना-परोसना। अभिमान—रूठना। काज नाइ—(कोई) जरूरत नहीं।

बुकेर....टानिया—छाती के निकट खींच कर। माथाय—सिर पर। थाकियो—रहना। ना धरिते पारे—न पकड़ सके। ओजन—वज़न (तोलने)। घरकन्नार—घर गृहस्थी। चापिया रहिल—दबाए रहा।

अवशेषे असह्य हइया उठिले अपूर्व आसिया कहिल, "मा, कालेज खुलेछे, एखन आमाके आइन पड़ते येते हवे।"

मा उदासीन भावे कहिलेन; "वउयेर की करवे।"

अपूर्व कहिल, "वउ एखानेइ थाक्।"

मा कहिलेन, "ना वापु, काज नाइ; तुमि ताके तोमार सङ्गे निये याओ।" सचराचर मा अपूर्वके 'तुइ' सम्भाषण करिया थाकेन।

अपूर्व अभिमानक्षुण्णस्वरे कहिल, "आच्छा।"

कलिकाता याइवार आयोजन पड़िया गेल। याइवार आगेर रात्रे अपूर्व विछानाय आसिया देखिल, मृण्मयी काँदितेछे।

हठात् ताहार मने आघात लागिल। विषण्णकण्ठे कहिल, "मृण्मयी, आमार सङ्गे कलकाताय येते तोमार इच्छे करछे ना?"

मृण्मयी कहिल, "ना।"

अपूर्व जिज्ञासा करिल, "तुमि आमाके भालोवास ना?" ए प्रश्नेर कोनो उत्तर पाइल ना। अनेक समय एइ प्रश्नटिर उत्तर अतिशय सहज किन्तु आवार एक-एक समय इहार मध्ये मनस्तत्त्वघटित एत जटिलतार संस्रव थाके ये, वालिकार निकट हइते ताहार उत्तर प्रत्याशा करा याय ना।

अपूर्व प्रश्न करिल, "राखालके छेड़े येते तोमार मन केमन करछे?"

मृण्मयी अनायासे उत्तर करिल, "हाँ।"

वालक राखालेर प्रति एइ वि०ए०-परीक्षोत्तीर्ण कृतविद्य युवकेर सूचिर मतो अति सूक्ष्म अथच अति सुतीक्ष्ण ईर्षार उदय हइल। कहिल, "आमि अनेककाल आर वाड़ि आसते पाव ना।" एइ सम्वाद सम्वन्धे मृण्मयीर कोनो वक्तव्य छिल ना।

हइया उठिले—हो उठने पर। पड़ते—पढ़ने। सचराचर—साधारणतः। आयोजन पड़िया गेल—धूम मच गई। काँदितेछे—रो रही है।

मनस्तत्त्वघटित—मनोविज्ञान से उत्पन्न। संस्रव—सम्पर्क। केमन करछे—न जाने कैसा हो रहा है। सूचिर मतो—सुई के समान।

"बो हय दु-वत्सर किम्बा तारओ बेशि हते पारे।"

मृण्मयी आदेश करिल, "तुमि फिरे आसबार समय राखालेर जन्ये एकटा तिन-मुखो रजासेर छुरि किने निये एसो।"

अपूर्व शयान अवस्था हइते ईषत् उत्थित हइया कहिल, "तुमि ता हले एइखानेइ थाकबे?"

मृण्मयी कहिल, "हाँ, आमि मायेर काछे गिये थाकब।"

अपूर्व निश्वास फेलिया कहिल, "आच्छा, ताइ थेको। यत-दिन ना तुमि आमाके आसबार जन्ये चिठि लिखबे, आमि आसब ना। खुब खुशि हले?"

मृण्मयी ए प्रश्नेर उत्तर देओया बाहुल्य बो करिया घुमाइते लागिल। किन्तु, अपूर्वर घुम हइल ना, बालिश उँचु करिया ठेसान दिया बसिया रहिल।

अनेक रात्रे हठात् चाँद उठिया चाँदेर आलो बिछानार उपर आसिया पड़िल। अपूर्व सेइ आलोके मृण्मयीर दिके चाहिया देखिल। चाहिया चाहिया मने हइल, येन राजकन्याके के रुपार काठि छोँयाइया अचेतन करिया राखिया गियाछे। एकबार केवल सोनार काठि पाइलेइ एइ निद्रित आत्माटिके जागाइया तुलिया मालाबदल करिया लओया याय। रुपार काठि हास्य, आर सोनार काठि अश्रुजल।

भोरेर वेलाय अपूर्व मृण्मयीके जागाइया दिल; कहिल, "मृण्मयी, आमार याइबार समय हइयाछे। चलो तोमाके तोमार मार बाड़ि राखिया आसि।"

मृण्मयी शय्यात्याग करिया उठिया दाँड़ाइले अपूर्व ताहार

रजासेर—रॉजर्स कंपनी का। तिन-मुखो—तीन फलवाला। किने—खरीद कर।

शयान—शायित। थाकबे—रहोगी।

बालिश—तकिया। ठेसान दिया—टेक लगा कर।

दिके—ओर। चाहिया—ताक कर। काठि—छड़ी (जादू की लकड़ी)। मालाबदल—(विवाह के अवसर पर) माला की अदला-बदली।

राखिया आसि—पहुँचा आऊँ।

दुइ हात धरिया कहिल, "एखन आमार एकटि प्रार्थना आछे। आमि अनेक समय तोमार अनेक साहाय्य करियाछि, आज याइबार समय ताहार एकटि पुरस्कार दिबे ?"

मृण्मयी विस्मित हइया कहिल, "की।"

अपूर्व कहिल, "तुमि इच्छा करिया, भालोबासिया आमाके एकटि चुम्बन दाओ।"

अपूर्वर एइ अद्भुत प्रार्थना एवं गम्भीर मुखभाव देखिया मृण्मयी हासिया उठिल। हास्य सम्वरण करिया मुख बाड़ाइया चुम्बन करिते उद्यत हइल—काछाकाछि गिया आर पारिल ना, खिल् खिल् करिया हासिया उठिल। एमन दुइबार चेष्टा करिया अवशेषे निरस्त हइया मुखे कापड़ दिया हासिते लागिल। शासनच्छले अपूर्व ताहार कर्णमूल धरिया नाड़िया दिल।

अपूर्वर बड़ो कठिन पण। दस्युवृत्ति करिया काड़िया लुटिया लओया से आत्मावमानना मने करे। से देवतार न्याय सगौरवे थाकिया स्वेच्छानीत उपहार चाय, निजेर हाते किछुइ तुलिया लइबे ना।

मृण्मयी आर हासिल ना। ताहाके प्रत्युषेर आलोके निर्जन पथ दिया ताहार मार बाड़ि राखिया अपूर्व गृहे आसिया माताके कहिल, "भाबिया देखिलाम, बउके आमार सङ्गे कलिकाताय लइया गेले आमार पड़ाशुनार व्याघात हइबे, सेखाने उहारओ केह सङ्गिनी नाइ। तुमि तो ताहाके ए बाड़िते राखिते चाओ ना, आमि ताइ ताहार मार बाड़ितेइ राखिया आसिलाम।"

सुगभीर अभिमानेर मध्ये मातापुत्रेर विच्छेद हइल।

इच्छा करिया—स्वेच्छा से।

मुख बाड़ाइया—मुंह बढ़ा कर। काछाकाछि—निकट। पारिल ना—न कर सकी। निरस्त—विरत। शासनच्छले—सजा देने के बहाने। धरिया....दिल—पकड़ कर हिला दिया।

काड़िया—छीन कर। लुटिया—लूट कर। चाय—चाहता है। तुलिया—उठा कर।

पड़ाशुनार—पढ़ने-लिखने में।

सप्तम परिच्छेद

मार बाड़िते आसिया मृण्मयी देखिल, किछुतेइ आर मन लागितेछे ना। से बाड़िर आगागोड़ा येन बदल हइया गेछे। समय आर काटे ना। की करिबे, कोथाय याइबे, काहार सहित देखा करिबे, भाबिया पाइल ना।

मृण्मयीर हठात् मने हइल, येन समस्त गृहे एवं समस्त ग्रामे केह लोक नाइ। येन मध्याह्ने सूर्यग्रहण हइल। किछुतेइ बुझिते पारिल ना, आज कलिकाताय चलिया याइबार जन्य एत प्राणपण इच्छा करितेछे, काल रात्रे एइ इच्छा कोथाय छिल; काल से जानित ना ये, जीवनेर ये अंश परिहार करिया याइबार जन्य एत मन-केमन करितेछिल तत्पूर्वेइ ताहार सम्पूर्ण स्वाद परिवर्तन हइया गियाछे। गाछेर पक्व-पत्रेर न्याय आज सेइ वृन्तच्युत अतीत जीवनटाके इच्छापूर्वक अनायासे दूरे छुँड़िया फेलिल।

गल्पे शुना याय, निपुण अस्त्रकार एमन सूक्ष्म तरवारि निर्माण करिते पारे ये, तद्द्वारा मानुषके द्विखण्ड करिलेओ से जानिते पारे ना, अवशेषे नाड़ा दिले दुइ अर्धखण्ड भिन्न हइया याय। विधातार तरवारि सेइरूप सूक्ष्म, कखन तिनि मृण्मयीर बाल्य ओ यौवनेर माझखाने आघात करियाछिलेन से जानिते पारे नाइ; आज केमन करिया नाड़ा पाइया बाल्य-अंश यौवन हइते विच्युत हइया पड़िल एवं मृण्मयी विस्मित हइया व्यथित हइया चाहिया रहिल।

मातृगृहे ताहार सेइ पुरातन शयनगृहके आर आपनार बलिया मने हइल ना, सेखाने ये थाकित से हठात् आर नाइ। एखन

आगागोड़ा—आदि से अन्त तक। देखा करिते—भेंट करेगी। भाबिया पाइल ना—सोच न पाई।

बुझिते—समझ। जन्य—लिए। एत—इतनी। गाछेर—पेड़ के। छुँड़िया फेलिल—फेंक दिया।

अस्त्रकार—लुहार। तरबारि—तलवार। नाड़ा दिले—हिलाने पर। माझखाने—बीच में। नाड़ा पाइया—हिलने पर।

हृदयेर समस्त स्मृति सेइ आर-एकटा वाड़ि, आर-एकटा घर, आर-एकटा शय्यार काछे गुन्‌गुन् करिया वेड़ाइते लागिल।

मृण्मयीके आर केह वाहिरे देखिते पाइल ना। ताहार हास्यध्वनि आर शुना याय ना। राखाल ताहाके देखिले भय करे। खेलार कथा मनेओ आसे ना।

मृण्मयी माके वलिल, "मा, आमाके श्वशुरवाड़ि रेखे आय।"

ए दिके, विदायकालीन पुत्रेर विषण्ण मुख स्मरण करिया अपूर्वर मार हृदय विदीर्ण हइया याय। से ये राग करिया वउके वेहानेर वाड़ि राखिया आसियाछे इहा ताँहार मने वड़ोइ विँधिते लागिल।

हेनकाले एकदिन माथाय कापड़ दिया मृण्मयी म्लानमुखे शाशुड़िर पायेर काछे पड़िया प्रणाम करिल। शाशुड़ि तत्क्षणात् छलछलनेत्रे ताहाके वक्षे चापिया धरिलेन। मुहूर्तेर मध्ये उभयेर मिलन हइया गेल। शाशुड़ि वधूर मुखेर दिके चाहिया आश्चर्य हइया गेलेन। से मृण्मयी आर नाइ। एमन परिवर्तन साधारणत सकलेर सम्भव नहे। वृहत् परिवर्तनेर जन्य वृहत् वलेर आवश्यक।

शाशुड़ि स्थिर करियाछिलेन, मृण्मयीर दोषगुलि एकटि एकटि करिया संशोधन करिवेन, किन्तु आर-एकजन अदृश्य संशोधनकर्ता एकटि अज्ञात संक्षेप उपाय अवलम्वन करिया मृण्मयीके येन नूतन जन्म परिग्रह कराइया दिलेन।

एखन शाशुड़िकेओ मृण्मयी वुझिते पारिल, शाशुड़िओ मृण्मयीके चिनिते पारिलेन; तरुर सहित शाखाप्रशाखार येरूप मिल, समस्त घरकन्ना तेमनि परस्पर अखण्डसम्मिलित हइया गेल।

वेड़ाइते लागिल—घूमने लगी।

रेखे आय—पहुँचा दे।

राग—क्रोध। वेहानेर वाड़ि—समधिन के घर। ताँहार—उनके। वड़ोइ—वहुत ही।

हेनकाले—ऐसे समय।

चिनिते—पहचान। मिल—मेल। घरकन्ना—घर-गृहस्थी।
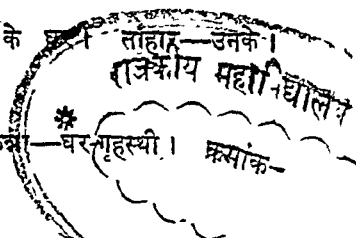
एइ-ये एकटि गम्भीर स्निग्ध विशाल रमणीप्रकृति मृण्मयीर समस्त शरीरे ओ समस्त अन्तरे रेखाय रेखाय भरिया भरिया उठिल, इहाते ताहाके येन वेदना दिते लागिल। प्रथम आषाढ़ेर श्यामसजल नवमेघेर मतो ताहार हृदये एकटि अश्रुपूर्ण विस्तीर्ण अभिमानेर सञ्चार हइल। सेइ अभिमान ताहार चोखेर छाया-मय सुदीर्घ पल्लवेर उपर आर-एकटि गभीरतर छाया निक्षेप करिल। से मने-मने बलिते लागिल, 'आमि आमाके बुझिते पारि नाइ बलिया तुमि आमाके बुझिले ना केन। तुमि आमाके शास्ति दिले ना केन। तोमार इच्छानुसारे आमाके चालना कराइले ना केन। आमि राक्षसी यखन तोमार सङ्गे कलिकाताय याइते चाहिलाम ना, तुमि आमाके जोर करिया धरिया लइया गेले ना केन। तुमि आमार कथा शुनिले केन, आमार अनुरोध मानिले केन, आमार अबाध्यता सहिले केन।'

ताहार पर, अपूर्व येदिन प्रभाते पुष्करिणीतीरेर निर्जन पथे ताहाके बन्दी करिया किछु ना बलिया एकबार केवल ताहार मुखेर दिके चाहियाछिल, सेइ पुष्करिणी, सेइ पथ, सेइ तरुतल, सेइ प्रभातेर रौद्र एवं सेइ हृदयभारावनत गभीर दृष्टि ताहार मने पड़िल एवं हठात् से ताहार समस्त अर्थ बुझिते पारिल। ताहार पर सेइ बिदायेर दिनेर ये चुम्बन अपूर्वर मुखेर दिके अग्रसर हइया फिरिया आसियाछिल, सेइ असम्पूर्ण चुम्बन एखन मरुमरीचिकाभिमुखी तृषार्त पाखिर न्याय क्रमागत सेइ अतीत अवसरेर दिके धावित हइते लागिल, किछुतेइ ताहार आर पिपासा मिटिल ना। एखन थाकिया थाकिया मने केवल उदय हय, 'आहा, अमुक समयटिते यदि एमन करिताम, अमुक प्रश्नेर यदि एइ उत्तर दिताम, तखन यदि एमन हइत।'

चोखेर—आँखों के। बलिया—इसलिए। शास्ति—दण्ड। चालना....केन—क्यों नहीं चलाया। धरिया—पकड़ कर। अबाध्यता—वश न मानना, उद्दण्डता।
रौद्र—धूप। मने पड़िल—याद आई। पाखिर—पक्षी के। थाकिया थाकिया—रह-रह कर। दिताम—देती। हइत—होता।

अपूर्वर मने एइ बलिया क्षोभ जन्मियाछिल ये 'मृण्मयी आमार सम्पूर्ण परिचय पाय नाइ।' मृण्मयीओ आज बसिया बसिया भावे, 'तिनि आमाके की मने करिलेन, की बुझिया गेलेन।' अपूर्व ताहाके ये दुरन्त चपल अविवेचक निर्बोध वालिका बलिया जानिल, परिपूर्ण हृदयामृतधाराय प्रेमपिपासा मिटाइते सक्षम रमणी बलिया परिचय पाइल ना, इहातेइ से परितापे लज्जाय धिक्कारे पीड़ित हइते लागिल। चुम्बनेर एवं सोहागेर से ऋणगुलि अपूर्वर माथार बालिशेर उपर परिशोध करिते लागिल। एमनि भावे कतदिन काटिल।

अपूर्व बलिया गियाछिल, 'तुमि चिठि ना लिखिले आमि बाड़ि फिरिब ना।' मृण्मयी ताहाइ स्मरण करिया एकदिन घरे द्वार रुद्ध करिया चिठि लिखिते वसिल। अपूर्व ताहाके ये सोनालि-पाड़-देओया रङिन कागज दियाछिल ताहाइ बाहिर करिया बसिया भाबिते लागिल। खुब यत्न करिया धरिया लाइन बाँका करिया अंगुलिते कालि माखिया अक्षर छोटो बड़ो करिया उपरे कोनो सम्बोधन ना करिया एकेबारे लिखिल, 'तुमि आमाके चिठि लिख ना केन। तुमि केमन आछ, आर तुमि बाड़ि एसो।' आर की बलिबार आछे किछुइ भाबिया पाइल ना। आसल वक्तव्य कथा सबगुलिइ बला हइया गेल बटे, किन्तु मनुष्यसमाजे मनेर भाव आर-एकटु वाहुल्य करिया प्रकाश करा आवश्यक। मृण्मयीओ ताहा बुझिल; एइजन्य आरओ अनेकक्षण भाबिया भाविया आर कयेकटि नूतन कथा योग करिया दिल—'एइबार तुमि आमाके चिठि लिखो, आर केमन आछो लिखो, आर बाड़ि एसो, मा भालो आछेन, विशु पुँटि भालो आछे, काल आमादेर

एइ बलिया—इसी कारण। जन्मियाछिल—पैदा हुआ था। बसिया बसिया—बैठी-बैठी। भावे—सोचा करती है। दुरन्त—उद्दण्ड। बालिशेर—तकिये के। एमनि भावे—इसी प्रकार।

सोनालि-पाड़-देओया—सुनहरी किनारे वाला। कालि माखिया—स्याही लगा कर। बाड़ि—घर। भाविया—सोच कर।

कालो गोरुर बाछुर हयेछे।' एइ वलिया चिठि शेष करिल। चिठि लेफाफाय मुड़िया प्रत्येक अक्षरटिर उपर एकटि फोँटा करिया मनेर भालोवासा दिया लिखिल, श्रीयुक्त बाबु अपूर्वकृष्ण राय। भालोवासा यतइ दिक, तबु लाइन सोजा, अक्षर सुछाँद एवं बानान शुद्ध हइल ना।

लेफाफाय नामटुकु व्यतीत आरओ ये किछु लेखा आवश्यक मृण्मयीर ताहा जाना छिल ना। पाछे शाशुड़ि अथवा आर-काहारओ दृष्टिपथे पड़े, सेइ लज्जाय चिठिखानि एकटि विश्वस्त दासीर हात दिया डाके पाठाइया दिल।

वला बाहुल्य, ए पत्रेर कोनो फल हइल ना, अपूर्व बाड़ि आसिल ना।

अष्टम परिच्छेद

मा देखिलेन, छुटि हइल तबु अपूर्व बाड़ि आसिल ना। मने करिलेन एखनओ से ताँहार उपर राग करिया आछे।

मृण्मयीओ स्थिर करिल, अपूर्व ताहार उपर विरक्त हइया आछे, तखन आपनार चिठिखाना मने करिया से लज्जाय मरिया याइते लागिल। से चिठिखाना ये कत तुच्छ, ताहाते ये कोनो कथाइ लेखा हय नाइ, ताहार मनेर भाव ये किछुइ प्रकाश करा हय नाइ, सेटा पाठ करिया अपूर्व ये मृण्मयीके आरओ छेलेमानुष मने करितेछे, मने मने आरओ अवज्ञा करितेछे, इहा भाविया से शरविद्धेर न्याय अन्तरे अन्तरे छट्‌फट् करिते लागिल। दासीके बार बार करिया जिज्ञासा करिल, "से चिठिखाना तुइ कि डाके

गोरुर बाछुर—गाय का बछड़ा। फोँटा—बिन्दु। भालोवासा—प्रेम। सोजा—सीधी। सुछाँद—सुडौल। बानान—हिज्जे।

व्यतीत—सिवाय। पाछे—ऐसा न हो कि।

वला बाहुल्य—कहने की आवश्यकता नहीं। मने करिलेन—(उन्होंने) सोचा। विरक्त—असन्तुष्ट। ताहाते—उसमें। पाठ करिया—पढ़ कर। आर ओ—और भी। छेलेमानुष—बच्ची। तुइ......एसेछिस—क्या तू डाक में छोड़ आई है।

दिये एसेछिस।" दासी ताहाके सहस्रवार आश्वास दिया कहिल, "हाँ गो, आमि निजेर हाते बाक्सेर मध्ये फेले दियेछि, वावु ता एतदिने कोन् काले पेयेछे।"

अवशेषे अपूर्वर मा एकदिन मृण्मयीके डाकिया कहिलेन, "वउमा, अपु अनेक-दिन तो वाड़ि एल ना, ताइ मने करछि, कलकाताय गिये ताके देखे आसि गे। तुमि सङ्गे यावे?" मृण्मयी सम्मतिसूचक घाड़ नाड़िल एवं घरेर मध्ये आसिया द्वार रुद्ध करिया विछानार उपर पड़िया वालिशखाना वुकेर उपर चापिया धरिया हासिया नड़िया-चड़िया मनेर आवेग उन्मुक्त करिया दिल; ताहार पर क्रमे गम्भीर हइया, विषण्ण हइया, आशङ्काय परिपूर्ण हइया, वसिया काँदिते लागिल।

अपूर्वके कोनो खवर ना दिया एइ दुटि अनुतप्ता रमणी ताहार प्रसन्नता भिक्षा करिवार जन्य कलिकाताय यात्रा करिल। अपूर्वर मा सेखाने ताँहार जामाइवाड़िते गिया उठिलेन।

सेदिन मृण्मयीर पत्रेर प्रत्याशाय निराश हइया सन्ध्यावेलाय अपूर्व प्रतिज्ञा भङ्ग करिया निजेइ ताहाके पत्र लिखिते वसियाछे। कोनो कथाइ पछन्दमतो हइतेछे ना। एमन एकटा सम्वोधन खुँजितेछे याहाते भालोवासाओ प्रकाश हय अथच अभिमानओ व्यक्त करे; कथा ना पाइया मातृभाषार उपर अश्रद्धा दृढ़तर हइतेछे। एमन समय भग्नीपतिर निकट हइते पत्र पाइल, 'मा आसियाछेन, शीघ्र आसिवे एवं रात्रे एइखानेइ आहारादि करिवे। संवाद समस्त भालो।'—शेष आश्वास सत्त्वेओ अपूर्व अमङ्गल-शङ्काय विमर्ष हइया उठिल। अविलम्बे भग्नीर वाड़ि गिया उपस्थित हइल।

कोन् काले—कव की।

देखे आसि गे—देख आएँ। घाड़ नाड़िल—गर्दन हिला दी। वालिशखाना—तकिये को। वुकेर उपर—छाती पर। नड़िया-चड़िया—हिल-डुल कर, झूम-झाम कर। वसिया—बैठ कर।

जामाइवाड़िते—जमाई के घर। उठिलेन—ठहरीं।

भालोवासाओ—प्रेम भी। सत्त्वेओ—वावजूद।

साक्षात्मात्रइ माके जिज्ञासा करिल, "मा, सब भालो तो?" मा कहिलेन, "सब भालो। तुइ छुटिते बाड़ि गेलि ना, ताइ आमि तोके निते एसेछि।"

अपूर्व कहिल, "सेजन्य एत कष्ट करिया आसिबार की आवश्यक छिल; आइन परीक्षार पड़ाशुना—" इत्यादि।

आहारेर समय भग्नी जिज्ञासा करिल, "दादा, एबार बउके तोमार सङ्गे आनले ना केन।"

दादा गम्भीरभावे कहिते लागिल, "आइनेर पड़ाशुना—" इत्यादि।

भग्नीपति हासिया कहिल, "ओ-समस्त मिथ्या ओजर। आमादेर भये आनते साहस हय ना।"

भग्नी कहिल, "भयंकर लोकटाइ बटे। छेलेमानुष हठात् देखले आचमका आँत्के उठते पारे।"

एइभावे हास्यपरिहास चलिते लागिल, किन्तु अपूर्व अत्यन्त विमर्ष हइया रहिल। कोनो कथा ताहार भालो लागितेछिल ना। ताहार मने हइतेछिल, सेइ यखन मा कलिकाताय आसिलेन तखन मृण्मयी इच्छा करिले अनायासे ताँहार सहित आसिते पारित। बोध हय, मा ताहाके सङ्गे आनिबार चेष्टाओ करियाछिलेन, किन्तु से सम्मत हय नाइ। ए सम्बन्धे संकोचवशत माके कोनो प्रश्न करिते पारिल ना—समस्त मानवजीवन एवं विश्वरचनाटा आगागोड़ा भ्रान्तिसंकुल बलिया बोध हइल।

आहारान्ते प्रबलवेगे बातास उठिया विषम वृष्टि आरम्भ हइल।

भग्नी कहिल, "दादा, आज आमादेर एइखानेइ थेके याओ।"

साक्षात्मात्रइ—भेंट होते ही। गेलि ना—गया नहीं। निते—लेने।
आइन—कानून।
ओजर—उज्र।
बटे—है। आचमका—सहसा। आँत्के—आतंकित।
आगागोड़ा—आदि से अन्त तक। भ्रांतिसंकुल—भ्रान्तिपूर्ण।
बातास—हवा।
एइखानेइ—यहीं। थेके याओ—रह जाओ।

दादा कहिल, "ना, बाड़ि येते हबे ; काज आछे।"

भग्नीपति कहिल; "रात्रे तोमार आबार एत काज किसेर। एखाने एक रात्रि थेके गेले तोमार तो कारओ काछे जवाबदिहि करते हबे ना, तोमार भावना की।"

अनेक पीड़ापीड़िर पर विस्तर अनिच्छा-सत्त्वे अपूर्व से रात्रि थाकिया याइते सम्मत हइल।

भग्नी कहिल, "दादा, तोमाके श्रान्त देखाच्छे, तुमि आर देरि कोरो ना, चलो शुते चलो।"

अपूर्वरओ सेइ इच्छा। शय्यातले अन्धकारेर मध्ये एकला हइते पारिले बाँचे, कथार उत्तर प्रत्युत्तर करिते भालो लागितेछे ना।

शयनगृहेर द्वारे आसिया देखिल घर अन्धकार। भग्नी कहिल, "वातासे आलो निवे गेछे देखछि। ता, आलो एने देब कि, दादा।"

अपूर्व कहिल, "ना, दरकार नेइ, आमि रात्रे आलो राखि ने।"

भग्नी चलिया गेले अपूर्व अन्धकारे सावधाने खाटेर अभिमुखे गेल।

खाटे प्रवेश करिते उद्यत हइतेछे एमन समये हठात् वलयनिक्वणशब्दे एकटि सुकोमल बाहुपाश ताहाके सुकठिन बन्धने बाँधिया फेलिल एवं एकटि पुष्पपुटतुल्य ओष्ठाधर दस्युर मतो आसिया पड़िया अविरल अश्रुजलसिक्त आवेगपूर्ण चुम्बने ताहाके विस्मयप्रकाशेर अवसर दिल ना। अपूर्व प्रथमे चमकिया उठिल, ताहार पर बुझिते पारिल, अनेक दिनेर एकटि हास्यबाधाय-असम्पन्न चेष्टा आज अश्रुजलधाराय समाप्त हइल।

सितम्वर-अक्तूवर, १८९३

भावना—चिन्ता।
पीड़ापीड़िर पर—कहने-सुनने पर।
शुते—सोने।
बाँचे—राहत मिले।
निवे गेछे—बुझ गया है। राखि ने—नहीं रखता।
चमकिया उठिल—चौंक पड़ा।
बुझिते पारिल—समझ सका।

मेघ ओ रौद्र

प्रथम परिच्छेद

पूर्वदिन वृष्टि हइया गियाछे। आज क्षान्तवर्षण प्रात:काले म्लान रौद्र ओ खण्ड मेघे मिलिया परिपक्वप्राय आउश धानेर क्षेत्रेर उपर पर्यायक्रमे आपन आपन सुदीर्घ तूलि बुलाइया याइतेछिल ; सुविस्तृत श्याम चित्रपट एकबार आलोकेर स्पर्शे उज्ज्वल पाण्डुवर्ण धारण करितेछिल आबार परक्षणेइ छायाप्रलेपे गाढ़ स्निग्धताय अङ्कित हइतेछिल।

यखन समस्त आकाशरङ्गभूमिते मेघ एवं रौद्र, दुइटि मात्र अभिनेता, आपन आपन अंश अभिनय करितेछिल तखन निम्ने संसाररङ्गभूमिते कत स्थाने कत अभिनय चलितेछिल ताहार आर संख्या नाइ।

आमरा येखाने एकटि क्षुद्र जीवननाट्येर पट उत्तोलन करिलाम सेखाने ग्रामे पथेर धारे एकटि बाड़ि देखा याइतेछे। बाहिरेर एकटिमात्र घर पाका, एवं सेइ घरेर दुइ पार्श्वे दिया जीर्णप्राय इष्टकेर प्राचीर गुटिकतक माटिर घर वेष्टन करिया आछे। पथ हइते गरादेर जानला दिया देखा याइतेछे, एकटि युवापुरुष खालि गाये तक्तपोषे बसिया वामहस्ते क्षणे क्षणे तालपातार पाखा लइया ग्रीष्म एवं मशक दूर करिबार चेष्टा करितेछेन एवं दक्षिणहस्ते बइ लइया पाठे निविष्ट आछेन।

रौद्र—धूप। ओ—अथवा। मिलिया—मिल कर। आउश धानेर—भदई धान के। पर्यायक्रमे—क्रमश:। बुलाइया याइतेछिल—फेर जाता था।

ताहार.....नाइ—उसकी कोई गिनती नहीं।

धारे—किनारे। बाड़ि—घर। घर पाका—कमरा पक्का। गुटिकतक—कुछ-एक। गरादेर—सींखचों वाले। खालि गाये—खुले बदन। तक्तपोषे—बड़े तख्त पर। तालपातार पाखा—ताड़ के पत्ते का पंखा। मशक—मच्छर। बइ—किताब।

वाहिरे ग्रामेर पथे एकटि डुरे-कापड़-परा वालिका आँचले गुटिकतक कालो जाम लइया एके एके निःशेष करिते करिते उक्त गरादे-देओया जानलार सम्मुख दिया वारम्वार यातायात करितेछिल। मुखेर भावे स्पष्टइ वोझा याइतेछिल, भितरे ये मानुषटि तक्तपोषे वसिया वइ पड़ितेछे ताहार सहित वालिकार घनिष्ठ परिचय आछे—एवं कोनोमते से ताहार मनोयोग आकर्षण-पूर्वक ताहाके नीरवे अवज्ञाभरे जानाइया याइते चाहे ये 'सम्प्रति कालो जाम खाइते आमि अत्यन्त व्यस्त आछि, तोमाके आमि ग्राह्यमात्र करि ना'।

दुर्भाग्यक्रमे, घरेर भितरकार अध्ययनशील पुरुषटि चक्षे कम देखेन, दूर हइते वालिकार नीरव उपेक्षा ताँहाके स्पर्श करिते पारे ना। वालिकाओ ताहा जानित सुतरां अनेकक्षण निष्फल आनागोनार पर नीरव उपेक्षार परिवर्ते कालो जामेर आँटि व्यवहार करिते हइल। अन्धेर निकटे अभिमानेर विशुद्धता रक्षा करा एतइ दुरूह।

यखन क्षणे क्षणे दुइ-चारिटा कठिन आँटि येन दैवक्रमे विक्षिप्त हइया काठेर दरजार उपर ठक् करिया शब्द करिया उठिल तखन पाठरत पुरुषटि माथा तुलिया चाहिया देखिल। मायाविनी वालिका ताहा जानिते पारिया द्विगुण निविष्टभावे अञ्चल हइते दंशनयोग्य सुपक्व कालो जाम निर्वाचन करिते प्रवृत्त हइल। पुरुषटि भ्रूकुञ्चित करिया विशेष चेष्टा-सहकारे निरीक्षणपूर्वक वालिकाके चिनिते पारिल एवं वइ राखिया जानालार काछे उठिया दाँड़ाइया हास्यमुखे डाकिल, "गिरिवाला!"

डुरे-कापड़-परा—डोरिये की साड़ी पहिने। जाम—जामुन। कोनोमते—किसी प्रकार भी, जैसे भी हो। ग्राह्यमात्र करि ना—परवाह तक नहीं करती।

चक्षे—आँखों से। ताँहाके—उन्हें। आनागोनार पर—चक्कर काटने के वाद। परिवर्ते—वदले। आँटि—गुठली। एतइ—ऐसा ही।

माथा तुलिया—सिर उठा कर। निविष्टभावे—मन लगा कर। चिनिते पारिल—पहचान सका। दाँड़ाइया—खड़े हो कर।

गिरिवाला अविचलित भावे निजेर अञ्चलेर मध्ये जाम-परीक्षाकार्ये सम्पूर्ण अभिनिविष्ट थाकिया मृदुगमने आपन-मने एक-एक पा करिया चलिते लागिल।

तखन क्षीणदृष्टि युवापुरुषेर बुझिते बाकि रहिल ना ये, कोनो-एकटि अज्ञानकृत अपराधेर दण्डविधान हइतेछे। ताड़ाताड़ि बाहिरे आसिया कहिलेन, "कइ, आज आमाके जाम दिले ना?" गिरिवाला से कथा काने ना आनिया बहु अन्वेषण ओ परीक्षाय एकटि जाम मनोनीत करिया अत्यन्त निश्चिन्तमने खाइते आरम्भ करिल।

एइ जामगुलि गिरिवालादेर बागानेर जाम एवं युवापुरुषेर दैनिक बराद्द। की जानि, से कथा किछुतेइ आज गिरिवालार स्मरण हइल ना, ताहार व्यवहारे प्रकाश पाइल ये एगुलि से एकमात्र निजेर जन्यइ आहरण करियाछे। किन्तु निजेर बागान हइते फल पाड़िया परेर दरजार सम्मुखे आसिया घटा करिया खाइवार की अर्थ परिष्कार बुझा गेल ना। तखन पुरुषटि काछे आसिया ताहार हात धरिल। गिरिवाला प्रथमटा आँकिया-बाँकिया हात छाड़ाइया चलिया याइवार चेष्टा करिल, ताहार परे सहसा अश्रुजले भासिया काँदिया उठिल, एवं आँचलेर जाम भूतले छड़ाइया फेलिया दिया छुटिया चलिया गेल।

सकालवेलाकार चञ्चल रौद्र एवं चञ्चल मेघ वैकाले शान्त ओ श्रान्त भाव धारण करियाछे; शुभ्र स्फीत मेघ आकाशेर

अभिनिविष्ट थाकिया—मग्न हो कर। आपन मने—अपनी धुन में। एक-एक पा—कदम-कदम।

बुझिते—समझने में। कइ—क्यों। काने ना आनिया—कान न दे कर। मनोनीत करिया—चुन कर।

बागानेर—बाग के। बराद्द—निर्धारित प्राप्य। एगुलि—ये (जामुन)। पाड़िया—तोड़ कर। घटा करिया—दिखा-दिखा कर। आँकिया-बाँकिया—टेढ़ी-तिरछी हो कर। अश्रुजले......उठिल—आंसू उमड़ आए और रो पड़ी। छड़ाइया फेलिया दिया—फेंक कर।

वैकाले—अपराह्न में।

प्रान्तभागे स्तूपाकार हइया पड़िया आछे एवं अपराह्णेर अवसन्न-प्राय आलोक गाछेर पाताय, पुष्करिणीर जले एवं वर्षास्नात प्रकृतिर प्रत्येक अङ्गे प्रत्यङ्गे झिक्झिक् करितेछे। आबार सेइ बालिकाटिके सेइ गरादेर जानलार सम्मुखे देखा याइतेछे एवं घरेर मध्ये सेइ युवा पुरुषटि बसिया आछे। प्रभेदेर मध्ये एवेला बालिकार अञ्चले जाम नाइ एवं युवकेर हस्तेओ बइ नाइ। तदपेक्षा गुरुतर एवं निगूढ़ प्रभेदओ किछु किछु छिल।

एवेलाओ बालिका की विशेष आवश्यके सेइ विशेष स्थाने आसिया इतस्तत करितेछे बला कठिन। आर याहाइ आवश्यक थाक्, घरेर भितरकार मानुषटिर सहित आलाप करिबार ये आवश्यक आछे इहा कोनोमतेइ बालिकार व्यवहारे प्रकाश पाय ना। वरञ्च बोध हइल से देखिते आसियाछे, सकालवेलाय ये जामगुला फेलिया गेछे विकालवेलाय ताहार कोनोटार अंकुर वाहिर हइयाछे कि ना।

किन्तु अंकुर ना वाहिर हइबार अन्यान्य कारणेर मध्ये एकटि गुरुतर कारण एइ छिल ये, फलगुलि सम्प्रति युवकेर सम्मुखेर तक्तपोषर उपर राशीकृत छिल; एवं बालिका यखन क्षणे क्षणे अवनत हइया कोनो एकटा अनिर्देश्य काल्पनिक पदार्थेर अनुसन्धाने नियुक्त छिल तखन युवक मनेर हास्य गोपन करिया अत्यन्त गम्भीरभावे एकटि एकटि जाम निर्वाचन करिया सयत्ने आहार करितेछिल। अवशेषे यखन दुटो-एकटा आँटि दैवक्रमे बालिकार पायेर काछे, एमन कि पायेर उपरे आसिया पड़िल, तखन गिरिबाला बुझिते पारिल युवक बालिकार अभिमानेर प्रतिशोध लइतेछे। किन्तु एइ कि उचित! यखन से आपनार क्षुद्र हृदयटुकुर समस्त गर्व विसर्जन दिया आत्मसमर्पण करिबार

झिक्झिक्—झिलमिल। एवेला—इस समय।
याहाइ—जो भी। थाक्—हो। कोनोटार—किसी का।
एमन कि—यहाँ तक कि।

अवसर खुँजितेछे तखन कि ताहार सेइ अत्यन्त दुरूह पथे बाधा देओया निष्ठुरता नहे। धरा दिते आसियाछे, एइ कथाटा धरा पड़िया बालिका यखन क्रमश आरक्तिम हइया पलायनेर पथ अनुसन्धान करिते लागिल तखन युवक बाहिरे आसिया ताहार हात धरिल।

सकालवेलाकार मतो एवेलाओ बालिका आँकिया-बाँकिया हात छाड़ाइया पालाइबार बहु चेष्टा करिल, किन्तु काँदिल ना। वरञ्च रक्तवर्ण हइया घाड़ बाँकाइया उत्पीड़नकारीर पृष्ठदेशे मुख लुकाइया प्रचुर परिमाणे हासिते लागिल एवं येन केवलमात्र बाह्य आकर्षणे नीत हइया पराभूत बन्दीभावे लौहगरादेवेष्टित कारागारेर मध्ये प्रवेश करिल।

आकाशे मेघरौद्रेर खेला येमन सामान्य, धराप्रान्ते एइ दुटि प्राणिर खेलाओ तेमनि सामान्य, तेमनि क्षणस्थायी। आबार आकाशे मेघरौद्रेर खेला येमन सामान्य नहे एवं खेला नहे, किन्तु खेलार मतो देखिते मात्र, तेमनि एइ दुटि अख्यातनामा मनुष्येर एकटि कर्महीन वर्षादिनेर क्षुद्र इतिहास संसारेर शत शत घटनार मध्ये तुच्छ बलिया प्रतीयमान हइते पारे किन्तु इहा तुच्छ नहे। ये वृद्ध विराट अदृष्ट अविचलित गम्भीरमुखे अनन्तकाल धरिया युगेर सहित युगान्तर गाँथिया तुलितेछे सेइ वृद्धइ बालिकार एइ सकाल-बिकालेर तुच्छ हासिकान्नार मध्ये जीवनव्यापी सुखदुःखेर बीज अंकुरित करिया तुलितेछिल। तथापि बालिकार एइ अकारण अभिमान बड़ोइ अर्थहीन बलिया बोध हइल। केवल दर्शकेर काछे नहे, एइ क्षुद्र नाट्येर प्रधान पात्र उक्त युवकेर निकटेओ। एइ बालिका केन ये एकदिन वा राग करे, एकदिन

धरा दिते—पकड़ाई दे जाने के लिए। कथाटा धरा पड़िया—बात पकड़ी जाने पर।

पालाइबार—भागने की। काँदिल—रोई। घाड़ बाँकाइया—गर्दन झुका कर। लौहगरादेवेष्टित—लोहे के सींखचों से घिरा हुआ।

आबार—फिर। येमन—जिस प्रकार। देखिते मात्र—देखने-भर को (है)। गाँथिया तुलितेछे—गूँथता जा रहा है। हासिकान्नार—हँसने-रोने के। वा—अथवा। राग—क्रोध।

वा अपरिमित स्नेह प्रकाश करिते थाके, कोनोदिन वा दैनिक बराद्द बाड़ाइया देय, कोनोदिन वा दैनिक वराद्द एकेबारेइ वन्ध करे, ताहार कारण खुँजिया पाओया सहज नहे। एक-एकदिन येन ताहार समस्त कल्पना भावना एवं नैपुण्य एकत्र करिया युवकेर सन्तोष-साधने प्रवृत्त हय; आवार एक-एकदिन ताहार समस्त क्षुद्र शक्ति, ताहार समस्त काठिन्य एकत्र संहत करिया ताँहाके आघात करिते चेष्टा करे। वेदना दिते ना पारिले ताहार काठिन्य द्विगुण वाड़िया उठे; कृतकार्य हइले से काठिन्य अनुतापेर अश्रुजले शतधा विगलित हइया अजस्र स्नेहधाराय प्रवाहित हइते थाके।

एइ तुच्छ मेघरौद्र-खेलार प्रथम तुच्छ इतिहास परपरिच्छेदे संक्षेपे विवृत करा याइतेछे।

द्वितीय परिच्छेद

ग्रामेर मध्ये आर सकलेइ दलादलि, चक्रान्त, इक्षुर चाष, मिथ्या मकद्दमा एवं पाटेर कारवार लइया थाकित, भावेर आलो-चना एवं साहित्यचर्चा करित केवल शशिभूषण आर गिरिबाला।

इहाते काहारो औत्सुक्य वा उत्कण्ठार कोनो विषय नाइ। कारण, गिरिबालार वयस दश एवं शशिभूषण एकटि सद्यविकशित एम-ए बि-एल। उभये प्रतिवेशी मात्र।

गिरिबालार पिता हरकुमार एक काले निजग्रामेर पत्तनिदार छिलेन। एखन दुरवस्थाय पड़िया समस्त विक्रय करिया ताँहादेर विदेशी जमिदारेर नायेवि पद ग्रहण करियाछेन। ये परगनाय

भावना—चिन्ता।
पर—अगले, बाद के। विवृत—वर्णित।
इक्षुर चाष—ईख की खेती। पाटेर—पटसन का।
काहारो—किसी के भी। प्रतिवेशी—पड़ोसी।
पत्तनिदार—पट्टेदार। नायेवि—नायब का।

ताँहादेर वास सेइ परगनारइ नायेवि, सुतरां ताँहाके जन्मस्थान हइते नड़िते हय ना।

शशिभूषण एम-ए पास करिया आइनपरीक्षाय उत्तीर्ण हइयाछेन किन्तु किछुतेइ कोनो कर्मे भिड़िलेन ना। लोकेर सङ्गे मेशा वा सभास्थले दुटो कथा बला, सेओ ताँहार द्वारा हइया उठे ना। चोखे कम देखेन वलिया चेना लोकके चिनिते पारेन ना एवं सेइ कारणेइ भ्रू कुञ्चित करिया दृष्टिपात करिते हय, लोके सेटाके औद्धत्य बलिया विवेचना करे।

कलिकाताय जनसमुद्रेर मध्ये आपन-मने एकला थाका शोभा पाय किन्तु पल्लीग्रामे सेटा विशेष स्पर्धार मतो देखिते हय। शशिभूषणेर बाप यखन विस्तर चेष्टाय परास्त हइया अवशेषे ताँहार अकर्मण्य पुत्रटिके पल्लीते ताँहादेर सामान्य विषयरक्षाकार्ये नियोग करिलेन तखन शशिभूषणके पल्लीवासीदेर निकट हइते विस्तर उत्पीड़न उपहास एवं लाञ्छना सहिते हइयाछिल। लाञ्छनार आरओ एकटा कारण छिल; शान्तिप्रिय शशिभूषण विवाह करिते सम्मत छिलेन ना—कन्यादायग्रस्त पितामातागण ताँहार एइ अनिच्छाके दुःसह अहंकार ज्ञान करिया किछुतेइ क्षमा करिते पारितेन ना।

शशिभूषणेर उपर यतइ उपद्रव हइते लागिल शशिभूषण ततइ आपन विवरेर मध्ये अदृश्य हइते लागिलेन। एकटि कोणेर घरे तक्तपोषेर उपर कतकगुलि बाँधानो इंराजि वइ लइया वसिया थाकितेन; यखन येटा इच्छा हइत पाठ करितेन, एइ तो छिल ताँर काज—विषय की करिया रक्षा हइत ताहा विषयइ जाने।

नड़िते हय ना—हिलना (छोड़ कर जाना) नहीं पड़ता।

भिड़िलेन ना—लगे नहीं। मेशा—घुलना-मिलना। चेना—परिचित। चिनिते.....ना—पहचान नहीं पाते।

पल्लीग्रामे—गँवई-गांव में। देखिते हय—दिखाई देता है। विषय-रक्षाकार्ये—सम्पत्ति-रक्षा के काम में। नियोग—नियुक्त।

कोणेर—कोने के। बांधानो इंराजि वइ—जिल्द-बँधी अंग्रेजी पुस्तकें।

एवं पूर्वेइ आभासे वला गियाछे, मानुषेर मध्ये ताँहार सम्पर्क छिल केवल गिरिवालार सहित।

गिरिवालार भाइरा इस्कुले याइत एवं फिरिया आसिया मूढ़ भग्नीटिके कोनोदिन जिज्ञासा करित, पृथिवीर आकार किरूप ; कोनोदिन वा प्रश्न करित, सूर्य वड़ो ना पृथिवी वड़ो—से यखन भूल वलित तखन ताहार प्रति विपुल अवज्ञा देखाइया भ्रम संशोधन करित। सूर्य पृथिवी अपेक्षा वृहत्, ए मतटा यदि गिरिवालार निकट प्रमाणाभावे असिद्ध वलिया वोध हइत एवं सेइ सन्देह यदि से साहस करिया प्रकाश करित तवे ताहार भाइरा ताहाके द्विगुण उपेक्षाभरे कहित, "इस्! आमादेर वइये लेखा आछे आर तुइ—"

छापार वइये एमन कथा लेखा आछे शुनिया गिरिवाला सम्पूर्ण निरुत्तर हइया याइत, द्वितीय आर-कोनो प्रमाण ताहार निकट आवश्यक वोध हइत ना।

किन्तु ताहार मने मने वड़ो इच्छा करित, सेओ दादादेर मतो वइ लइया पड़े। कोनो-कोनोदिन से आपन घरे वसिया कोनो-एकटा वइ खुलिया विड़् विड़् करिया पड़ार भान करित एवं अनर्गल पाता उल्टाइया याइत। छापार कालो कालो छोटो छोटो अपरिचित अक्षरगुलि की येन एक महारहस्यशालार सिंहद्वारे दले दले सार वाँधिया स्कन्धेर उपरे इकार ऐकार रेफ उँचाइया पाहारा दित, गिरिवालार कोनो प्रश्नेर कोनोइ उत्तर करित ना। कथामाला ताहार व्याघ्र शृगाल अश्व गर्दभेर एकटि कथाओ कौतूहलकातर वालिकार निकट फाँस करित ना

आभासे—संकेत से।

प्रकाश—प्रकट। भाइरा—भाई (वहुवचन)।

दादादेर मतो—वड़े भाइयों की तरह। विड़् विड़्...करित....—वड़वड़ करते हुए पढ़ने का दिखावा करती। अनर्गल—वेरोक, वेहिसाव। पाता—पन्ने। दले दले सार वाँधिया—दल के दल कतार वाँध कर। पाहारा—पहरा। कथाओ—वात भी। फाँस करित ना—व्यक्त न करती (नहीं वताती) थी।

एवं आख्यानमञ्जरी ताहार समस्त आख्यानगुलि लइया मौन-व्रतेर मतो नीरवे चाहिया थाकित।

गिरिबाला ताहार भाइदेर निकट पड़ा शिखिबार प्रस्ताव करियाछिल किन्तु ताहार भाइरा से कथाय कर्णपातमात्र करे नाइ। एकमात्र शशिभूषण ताहार सहाय छिल।

गिरिबालार निकट कथामाला एवं आख्यानमञ्जरी येमन दुर्भेद्य रहस्यपूर्ण छिल शशिभूषणओ प्रथम प्रथम अनेकटा सेइरूप छिल। लोहार गरादे-देओया रास्तार धारेर छोटो बसिबार घरटिते युवक एकाकी तक्तपोषेर उपर पुस्तके परिवृत हइया बसिया थाकित। गिरिबाला गरादे धरिया बाहिरे दाँड़ाइया अवाक् हइया एइ नतपृष्ठ पाठनिविष्ट अद्‌भुत लोकटिके निरीक्षण करिया देखित, पुस्तकेर संख्या तुलना करिया मने मने स्थिर करित, शशिभूषण ताहार भाइदेर अपेक्षा अनेक बेशि विद्वान। तदपेक्षा विस्मय-जनक व्यापार ताहार निकट आर किछुइ छिल ना। कथामाला प्रभृति पृथिवीर प्रधान प्रधान पाठ्यपुस्तकगुलि शशिभूषण ये निःशेषपूर्वक पाठ करिया फेलियाछे, ए विषये ताहार सन्देहमात्र छिल ना। एइजन्य, शशिभूषण यखन पुस्तकेर पात उल्टाइत से स्थिरभावे दाँड़ाइया ताहार ज्ञानेर अवधि निर्णय करिते पारित ना।

अवशेषे एइ विस्मयमग्न बालिकाटि क्षीणदृष्टि शशिभूषणेरओ मनोयोग आकर्षण करिल। शशिभूषण एकदिन एकटा झक्‌झके बाँधानो बइ खुलिया बलिल, "गिरिबाला, छबि देखबि आय।" गिरिबाला तत्क्षणात् दौड़िया पलाइया गेल।

किन्तु परदिन से पुनर्बार डुरे कापड़ परिया सेइ गरादेर बाहिरे दाँड़ाइया सेइरूप गम्भीर मौन मनोयोगेर सहित शशिभू-

---

चाहिया थाकित—ताकती रहती।
पड़ा शिखिबार—पढ़ना-(लिखना) सीखने का।
बेशि—अधिक। पाठ......फेलियाछे—पढ़ डाली हैं।
झक्झके—झकाझक। देखबि—देखेगी। आय—आ।

षणेर अध्ययनकार्य निरीक्षण करिया देखिते लागिल। शशिभूषण सेदिनओ डाकिल एवं सेदिनओ से वेणी दुलाइया ऊर्ध्वश्वासे छुटिया पलाइल।

एइरूपे ताहादेर परिचयेर सूत्रपात हइया क्रमे कखन घनिष्ठतर हइया उठिल एवं कखन ये बालिका गरादेर बाहिर हइते शशिभूषणेर घरेर मध्ये प्रवेश करिल, ताहार तक्तपोषेर उपर बाँधानो पुस्तकस्तूपेर मध्ये स्थान पाइल, ठिक से तारिखटा निर्णय करिया दिते ऐतिहासिक गवेषणार आवश्यक।

शशिभूषणेर निकट गिरिबालार लेखापड़ार चर्चा आरम्भ हइल। शुनिया सकले हासिबेन, एइ मास्टारटि ताहार क्षुद्र छात्रीके केवल ये अक्षर बानान एवं व्याकरण शिखाइत ताहा नहे—अनेक बड़ो बड़ो काव्य तर्जमा करिया शुनाइत एवं ताहार मतामत जिज्ञासा करित। बालिका की बुझित ताहा अन्तर्यामीइ जानेन, किन्तु ताहार भालो लागित ताहाते सन्देह नाइ। से बोझा ना-बोझाय मिशाइया आपन बाल्यहृदये नाना अपरूप कल्पनाचित्र आँकिया लइत। नीरवे चक्षु विस्फारित करिया मन दिया शुनित, माझे-माझे एक-एकटा अत्यन्त असंगत प्रश्न जिज्ञासा करित एवं कखनो कखनो अकस्मात् एकटा असंलग्न प्रसङ्गान्तरे गिया उपनीत हइत। शशिभूषण ताहाते कखनो किछु बाधा दित ना—बड़ो बड़ो काव्य सम्बन्धे एइ अतिक्षुद्र समालोचकेर निन्दा प्रशंसा टीका भाष्य शुनिया से विशेष आनन्द लाभ करित। समस्त पल्लीर मध्ये एइ गिरिबालाइ ताहार एकमात्र समजदार बन्धु।

गिरिबालार सहित शशिभूषणेर प्रथम परिचय यखन, तखन गिरिर वयस आट छिल, एखन ताहार वयस दश हइयाछे।

डाकिल—पुकारा। दुलाइया—झुलाते हुए। चर्चा—अभ्यास। बनाना—हिज्जे। बोझा ना-बोझाय मिशाइया—समझी (और) न समझी हुई (बातों) को मिला कर। माझे माझे—बीच-बीच में। कखनो—कभी। समजदार—रसज्ञ। यखन—जब। तखन—तब। आट—आठ। एखन—अब।

एइ दुइ वत्सरे से इंराजि ओ बांगला वर्णमाला शिखिया दुइ-चारिटा सहज बइ पड़िया फेलियाछे। एवं शशिभूषणेर पक्षेओ पल्लीग्राम एइ दुइ वत्सर नितान्त सङ्गविहीन विरस बलिया बोध हय नाइ।

तृतीय परिच्छेद

किन्तु गिरिबालार बाप हरकुमारेर सहित शशिभूषणेर भालोरूप बनिवनाओ हय नाइ। हरकुमार प्रथम प्रथम एइ एम-ए बि-एलेर निकट मकद्दमा मामला सम्बन्धे परामर्श लइते आसित। एम-ए बि-एल ताहाते बड़ो-एकटा मनोयोग करित ना एवं आइनविद्या सम्बन्धे नायेबेर निकट आपन अज्ञता स्वीकार करिते कुण्ठित हइत ना। नायेब सेटाके नितान्तइ छल मने करित। एमनभावे बछर दुयेक काटिल।

सम्प्रति एकटा अबाध्य प्रजाके शासन करा आवश्यक हइयाछे। नायेब महाशय ताहार नामे भिन्न भिन्न जेलाय भिन्न भिन्न अपराध ओ दाविते नालिश रुजु करिया दिबार अभिप्राय प्रकाश करिया परामर्शेर जन्य शशिभूषणके किछु विशेष पीड़ापीड़ि करिया धरिलेन। शशिभूषण परामर्श देओया दूरे थाक्, शान्त अथच दृढ़भावे हरकुमारके एमन गुटिदुइचारि कथा बलिलेन याहा ताँहार किछुमात्र मिष्ट बोध हइल ना।

ए दिके आबार प्रजार नामे एकटि मकद्दमातेओ हरकुमार जितिते पारिलेन ना। ताँहार मने दृढ़ धारणा हइल, शशिभूषण उक्त हतभाग्य प्रजार सहाय छिल; तिनि प्रतिज्ञा करिलेन एमन लोकके ग्राम हइते अविलम्बे ताड़ाइते हइबे।

बइ—पुस्तक।

भालोरूप बनिवनाओ हय नाइ—अच्छी तरह पटरी नहीं बैठी। बछर—बरस। दुयेक—दो-एक।

अबाध्य—उद्दण्ड। दाबिते—दावों की। रुजु—दायर। पीड़ापीड़ि—बार-बार आग्रह। गुटिदुइचारि—दो-चार।

ताड़ाइते—भगाना।

शशिभूषण देखिलेन, ताँहार खेतेर मध्ये गोरु प्रवेश करे, ताँहार कलाइयेर खोलाय आगुन लागिया याय, ताँहार सीमाना लइया विवाद बाधे, ताँहार प्रजारा सहजे खाजना देय ना एवं उल्टिया ताँहार नामे मिथ्या मकद्दमा आनिवार उपक्रम करे—एमन कि सन्ध्यार समय पथे बाहिर हइले ताँहाके मारिबे एवं रात्रे ताँहार बसतबाटीते आगुन लागाइया दिबे, एमन सकल जनश्रुतिओ शोना याइते लागिल।

अवशेषे शान्तिप्रिय निरीहप्रकृति शशिभूषण ग्राम छाड़िया कलिकाताय पलाइबार आयोजन करिलेन।

यात्रार उद्योग करितेछेन एमन समये ग्रामे जयेण्ट् म्याजिस्ट्रेट साहेबेर ताँबु पड़िल। बरकन्दाज कन्स्टेबल खानसामा कुकुर घोड़ा सहिस मेथरे समस्त ग्राम चञ्चल हइया उठिल। छेलेर दल व्याघ्रेर अनुवर्ती शृगालेर न्याय साहेबेर आड्डार निकटे शङ्कित कौतूहल-सहकारे घुरिते लागिल।

नायेब महाशय यथारीति आतिथ्य-शिरे खरच लिखिया साहेबेर मुर्गि आण्डा घृत दुग्ध जोगाइते लागिलेन। जयेण्ट् साहेबेर ये परिमाणे खाद्य आवश्यक नायेब महाशय तदपेक्षा अनेक बेशि अक्षुण्णचित्ते सरबराह करियाछिलेन, किन्तु प्रातःकाले साहेबेर मेथर आसिया यखन साहेबेर कुकुरेर जन्य एकेबारे चार सेर घृत आदेश करिया बसिल तखन दुर्ग्रहवशत सेटा ताँहार सह्य हइल ना—मेथरके उपदेश दिलेन ये, साहेबेर कुत्ता यदिच

गोरु—गाय-बैल, पशु। कलाइयेर खोलाय—उड़द, मटर आदि के खेत में। आगुन—आग। सीमाना लइया—हदबन्दी को ले कर। बाधे—आरम्भ हो जाता। खाजना—लगान। आनिवार—लाने का। बसतबाटीते—रहने के घर में।

पलाइबार—भागने का। जयेण्ट—जॉइण्ट (अं०), संयुक्त। ताँबु—तम्बू (पड़ाव)। सहिस—सईस। मेथरे—महतरों से। पालेर—झुण्ड के। आड्डार—अड्डे के। घुरिते लागिल—घूमने (चक्कर काटने) लगा।

शिरे—खाते। जोगाइते लागिलेन—जुटाने (पहुँचाने) लगे। सरबराह—आयोजन। एकेबारे—एकदम। दुर्ग्रहवशत—दुष्ट ग्रहों के फेर से।

देशि कुकुरेर अपेक्षा अनेकटा घि विना परितापे हजम करिते पारे तथापि एताधिक परिमाणे स्नेहपदार्थ ताहार स्वास्थ्येर पक्षे कल्याणजनक नहे। ताहाके घि दिलेन ना।

मेथर गिया साहेवके जानाइल ये, कुकुरेर जन्य मांस कोथाय पाओया याइते पारे इहाइ से नायेवेर निकट सन्धान लइते गियाछिल, किन्तु से जातिते मेथर वलिया नायेव अवज्ञापूर्वक ताहाके सर्वलोकसमक्षे दूर करिया ताड़ाइया दियाछे, एमन कि, साहेवेर प्रतिओ उपेक्षा प्रदर्शन करिते कुण्ठित हय नाइ।

एके व्राह्मणेर जात्यभिमान साहेव-लोकेर सहजेइ असह्य वोध हय, ताहार उपर ताँहार मेथरके अपमान करिते साहस करियाछे, इहाते धैर्य रक्षा करा ताँहार पक्षे असम्भव हइया उठिल। तत्क्षणात् चापरासिके आदेश करिलेन, "वोलाओ नायेवको।"

नायेव कम्पान्वितकलेवरे दुर्गानाम जप करिते करिते साहेवेर ताम्वुर सम्मुखे खाड़ा हइलेन। साहेव ताम्वु हइते मच्मच् शव्दे वाहिर हइया आसिया नायेवके उच्चकण्ठे विजातीय उच्चारणे जिज्ञासा करिलेन, "टुमि की कारण-वशटो आमार मेठरके डुर करियाछे?"

हरकुमार शशव्यस्त हइया करजोड़े जानाइलेन, साहेवेर मेथरके दूर करिते पारेन एमन स्पर्धा कखनोइ ताँहार सम्भवे ना; तवे कि ना कुकुरेर जन्य एकेवारे चारि सेर घि चाहिया वसाते प्रथमे तिनि उक्त चतुष्पदेर मङ्गलार्थे मृदुभावे आपत्ति प्रकाश करिया परे घृत संग्रह करिया आनिवार जन्य भिन्न भिन्न स्थाने लोक पाठाइयाछेन।

जानाइल—वताया। इहाइ—यही। एमन कि—यहाँ तक कि। कुण्ठित—संकुचित।

एके—एक तो। इहाते—इससे। चापरासिके—चपरासी को।

मच्मच्—चर्रमर्र।

शशव्यस्त—भयभीत (खरगोश की तरह)। चाहिया वसाते—माँग वैठने से।

साहेब जिज्ञासा करिलेन, काहाके पाठानो हइयाछे एवं कोथाय पाठानो हइयाछे।

हरकुमार तत्क्षणात् येमन मुखे आसिल नाम करिया दिलेन। सेइ सेइ-नामीय लोकगण सेइ सेइ ग्रामे घृत आनिवार जन्य गियाछे कि ना सन्धान करिते अति सत्वर लोक पाठाइया दिया साहेब नायेबके ताम्बुते वसाइया राखिलेन।

दूतगण अपराह्ने फिरिया आसिया साहेवके जानाइल, घृत संग्रहेर जन्य केह कोथाओ याय नाइ। नायेबेर समस्त कथाइ मिथ्या एवं मेथर ये सत्य वलियाछे ताहाते आर हाकिमेर सन्देह रहिल ना। तखन जयेण्ट् साहेब क्रोधे गर्जन करिया मेथरके डाकिया कहिलेन, "एइ श्यालकेर कर्ण धरिया ताम्वुर चारि धारे घोड़दौड़ कराओ।" मेथर आर कालविलम्ब ना करिया चतुर्दिके लोकारण्येर मध्ये साहेबेर आदेश पालन करिल।

देखिते देखिते कथाटा घरे घरे राष्ट्र हइया गेल, हरकुमार गृहे आसिया आहार त्याग करिया मुमूर्षुवत् पड़िया रहिलेन।

जमिदारि कार्य उपलक्ष्ये नायेबेर शत्रु विस्तर छिल; ताहारा एइ घटनाय अत्यन्त आनन्दलाभ करिल, किन्तु कलिकाताय गमनोद्यत शशिभूषण यखन एइ संवाद शुनिलेन तखन ताँहार सर्वाङ्गेर रक्त उत्तप्त हइया उठिल। समस्त रात्रि ताँहार निद्रा हइल ना।

परदिन प्राते तिनि हरकुमारेर बाड़िते गिया उपस्थित हइलेन; हरकुमार ताँहार हात धरिया व्याकुलभावे काँदिते लागिलेन। शशिभूषण कहिलेन, "साहेवेर नामे मानहानिर मकद्दमा आनिते हइबे, आमि तोमार उकिल हइया लड़िब।"

काहाके—किसको।
वसाइया राखिलेन—बैठा लिया।
केह—कोई। चारि धारे—चारों ओर। आर—और।
राष्ट्र हइया गेल—(वात) फैल गई।
विस्तर—अनेक।
परदिन—अगले दिन। काँदिते लागिलेन—रोने लगे। उकिल—वकील।

स्वयं म्याजिस्ट्रेट साहेबेर नामे मकद्दमा आनिते हइबे शुनिया हरकुमार प्रथमटा भीत हइया उठिलेन; शशिभूषण किछुतेइ छाड़िलेन ना।

हरकुमार विवेचना करिते समय लइलेन। किन्तु यखन देखिलेन कथाटा चारि दिके राष्ट्र हइयाछे एवं शत्रुगण आनन्द प्रकाश करितेछे तखन तिनि आर थाकिते पारिलेन ना, शशिभूषणेर शरणापन्न हइलेन, कहिलेन, "बापु, शुनिलाम तुमि अकारणे कलिकाताय याइबार आयोजन करितेछ, से तो किछुतेइ हइते पारिबे ना। तोमार मतो एकजन लोक ग्रामे थाकिले आमादेर साहस कत थाके। याहा हउक आमाके एइ घोर अपमान हइते उद्धार करिते हइबे।"

चतुर्थ परिच्छेद

ये शशिभूषण चिरकाल लोकचक्षुर अन्तराले निभृत निर्जनतार मध्ये आपनाके रक्षा करिबार चेष्टा करिया आसियाछेन तिनि आज आदालते आसिया हाजिर हइलेन। म्याजिस्ट्रेट ताँहार नालिश शुनिया ताँहाके प्राइभेट कामरार मध्ये डाकिया लइया अत्यन्त खातिर करिया कहिलेन, "शशीबाबु, ए मकद्दमाटा गोपने मिटमाट करिया फेलिले भालो हय ना कि।"

शशीबाबु टेबिलेर उपरिस्थित एकखानि आइन ग्रन्थेर मलाटेर उपर ताँहार कुञ्चितभ्रू क्षीण दृष्टि अत्यन्त निविष्टभावे रक्षा करिया कहिलेन, "आमार मक्केलके आमि एरूप परामर्श दिते

विवेचना—सोच-विचार। थाकिते पारिलेन ना—(उनसे) न रहा गया। बापु—बेटा (बेटे के समान व्यक्ति के लिए स्नेहपूर्ण सम्बोधन)। हइते पारिबे ना—न हो सकेगा। याहा हउक—जो हो।

हइलेन—हुए। नालिश—अभियोग, शिकायत। मिटमाट—आपस में तय (कर लेना)।

मलाटेर—(पुस्तक के) कवर, आवरण। निविष्टभावे—एकाग्रता से। मक्केलके—मुवक्किल को।

पारि ना। तिनि प्रकाश्यभावे अपमानित हइयाछेन, गोपने इहार मिटमाट हइबे की करिया।"

साहेव दुइचारि कथा कहिया वुझिलेन, एइ स्वल्पभाषी स्वल्प-दृष्टि लोकटिके सहजे विचलित करा सम्भव नहे, कहिलेन, "अल्राइट् वावु, देखा याउक कत दूर की हय।"

एइ वलिया म्याजिस्ट्रेट साहेव मकद्दमार दिन फिराइया दिया मफःस्वलभ्रमणे वाहिर हइलेन।

एदिके जयेण्ट् साहेव जमिदारके पत्र लिखिलेन, "तोमार नायेव आमार भृत्यदिगके अपमान करिया आमार प्रति अवज्ञा प्रकाश करे, आशा करि, तुमि इहार समुचित प्रतिकार करिवे।"

जमिदार शशव्यस्त हइया तत्क्षणात् हरकुमारके तलब करिलेन। नायेव आद्योपान्त समस्त घटना खुलिया वलिलेन। जमिदार अत्यन्त विरक्त हइया कहिलेन, "साहेवेर मेथर यखन चारि सेर घि चाहिल तुमि विना वाक्यव्यये तत्क्षणात् केन दिले ना। तोमार कि वापेर कड़ि लागित।"

हरकुमार अस्वीकार करिते पारिलेन ना ये, इहाते ताँहार पैतृक सम्पत्तिर कोनोरूप क्षति हइत ना। अपराध स्वीकार करिया कहिलेन, "आमार ग्रह मन्द ताइ एमन दुर्बुद्धि घटियाछिल।"

जमिदार कहिलेन, "ताहार पर आवार साहेवेर नामे नालिश करिते तोमाके के वलिल।"

हरकुमार कहिलेन, "धर्मावतार, नालिश करिवार इच्छा आमार छिल ना। ऐ आमादेर ग्रामेर शशी, ताहार कोथाओ कोनो मकद्दमा जोटे ना, से छोँड़ा नितान्त जोर करिया प्राय आमार सम्मति ना लइयाइ एइ हाङ्गामा वाधाइया वसियाछे।"

याउक—जाए। कत......हय—कहाँ तक क्या होता है।

दिन फिराइया दिया—(अगली पेशी की) तारीख डाल कर। मफःस्वल—मुफस्सिल।

एदिके—इधर।

विरक्त—क्षुब्ध। कड़ि—कौड़ी, पैसा।

जोटे ना—नहीं जुटता। छोँड़ा—छोकरा। वाधाइया वसियाछे—खड़ा कर बैठा है।

शुनिया जमिदार शशिभूषणेर उपर अत्यन्त क्रुद्ध हइया उठिलेन। बुझिलेन, लोकटा अपदार्थ नव्य उकिल, कोनो छुताय एकटा हुजुक तुलिया साधारणेर समक्षे परिचित हइबार चेष्टाय आछे। नायेबके हुकुम करिया दिलेन, मकद्दमा तुलिया लइया येन अविलम्बे छोटो बड़ो म्याजिस्ट्रेट युगलके ठाण्डा करा हय।

नायेब साहेबेर जन्य किञ्चित्, फलमूल शीतलभोग उपहार लइया जयेण्ट् म्याजिस्ट्रेटेर बासाय गिया हाजिर हइलेन। साहेबके जानाइलेन, साहेबेर नामे मकद्दमा करा ताँहार आदौ स्वभाव-विरुद्ध ; केवल शशिभूषण नामे ग्रामेर एकटि अजातश्मश्रु अपोगण्ड अर्वाचीन उकिल ताँहाके एकप्रकार ना जानाइया एइरूप स्पर्धार काज करियाछे। साहेब शशिभूषणेर प्रति अत्यन्त विरक्त एवं नायेबेर प्रति बड़ो सन्तुष्ट हइलेन, रागेर माथाय नायेब-बाबुके 'डण्डविढान' करिया तिनि 'डु:खिट्' आछेन। साहेब बांला भाषार परीक्षाय सम्प्रति पुरस्कार लाभ करिया साधारणेर सहित साधुभाषाय वाक्यालाप करिया थाकेन।

नायेब कहिलेन, मा-बाप कखनो वा राग करिया शास्तिओ दिया थाकेन, कखनो वा आदर करिया कोलेओ टानिया लन, इहाते सन्तानेर वा मा-बापेर दु:खेर कोनो कारण नाइ।

अत:पर जयेण्ट् साहेबेर भृत्यवर्गके यथायोग्य पारितोषिक दिया हरकुमार मफ:स्वले म्याजिस्ट्रेट साहेबेर सहित देखा करिते गेलेन। म्याजिस्ट्रेट ताँहार मुखे शशिभूषणेर स्पर्धार कथा

बुझिलेन—समझ गए। छुताय—बहाने। हुजुक—झमेला। ठाण्डा करा हय—शान्त किया जाए।

शीतलभोग—देवता का सायंकालीन भोग। बासाय—घर पर। आदौ—तनिक भी, कतई। अपोगण्ड—नाबालिग। रागेर माथाय—क्रोध में आ कर। डण्डबिढान—दण्ड-विधान। साधुभाषाय—शिष्ट भाषा में। (बँगला के दो भाषा-रूप है : साधु और चलित)।

शास्तिओ—दण्ड भी। आदर—प्यार। कोलेओ टानिया लन—गोद में भी उठा लेते हैं।

शुनिया कहिलेन, "आमिओ आश्चर्य हइतेछिलाम ये, नायेब-बाबुके बराबर भालो लोक वलियाइ जानिताम, तिनि ये सर्वाग्रे आमाके जानाइया गोपने मिटमाट ना करिया हठात् मकद्दमा आनिबेन, ए की असम्भव व्यापार ! एखन समस्त बुझिते पारितेछि।"

अवशेषे नायेबके जिज्ञासा करिलेन, शशी कन्ग्रेसे योग दियाछे कि ना। नायेब अम्लानमुखे बलिलेन, हाँ।

साहेब ताँहार साहेबि बुद्धिते स्पष्टइ बुझिते पारिलेन, ए समस्तइ कन्ग्रेसेर चाल। एकटा पाकचक्र बाधाइया अमृतबाजारे प्रबन्ध लिखिया गवर्मेण्टेर सहित खिटिमिटि करिबार जन्य कन्ग्रेसेर क्षुद्र क्षुद्र चेलागण लुक्कायितभावे चतुर्दिके अवसर अनुसन्धान करितेछे। एइ-सकल क्षुद्र कण्टकगणके एकदमे दलन करिया फेलिबार जन्य म्याजिस्ट्रेटेर हस्ते अधिकतर सरासरि क्षमता देओया हय नाइ बलिया साहेब भारतवर्षीय गवर्मेण्टके अत्यन्त दुर्बल गवर्मेण्ट बलिया मने मने धिक्कार दिलेन। किन्तु कन्ग्रेसओयाला शशिभूषणेर नाम म्याजिस्ट्रेटेर मने रहिल।

पञ्चम परिच्छेद

संसारे बड़ो बड़ो व्यापारगुलि यखन प्रबलभावे गजाइया उठिते थाके तखन छोटो छोटो व्यापारगुलिओ क्षुधित क्षुद्र शिकड़-जाल लइया जगतेर उपर आपन दाबि विस्तार करिते छाड़े ना।

शशिभूषण यखन एइ म्याजिस्ट्रेटेर हाङ्गामा लइया विशेष व्यस्त, यखन विस्तृत पुँथिपत्र हइते आइन उद्धार करितेछेन,

---

हइतेछिलाम—हो रहा था।

पाकचक्र बाधाइया—घटनाचक्र, बखेड़ा खड़ा करके। खिटिमिटि—खटपट। लुक्कायितभावे—लुक-छिप कर। सरासरि—सीधे-सीधे।

व्यापारगुलि—समस्याएँ, मामले। गजाइया उठिते थाके—बढ़ने लगती हैं। शिकड़जाल—(वृक्ष की) जड़ों का जाल। दाबि—दावा, अधिकार।

पुँथिपत्र—पोथी-पत्रों। आइन उद्धार करितेछेन—कानून (के नुक्ते) खोज रहे थे।

मने मने वक्तृताय शाण दितेछेन, कल्पनाय साक्षीके जेरा करिते वसिया गियाछेन ओ प्रकाश्य आदालतेर लोकारण्यदृश्य एवं युद्धपर्वेर भावी पर्वाध्यायगुलि मने आनिया क्षणे क्षणे कम्पित ओ घर्माक्त हइया उठितेछेन, तखन ताँहार क्षुद्र छात्रीटि ताहार छिन्नप्राय चारुपाठ ओ मसीविचित्र लिखिबार खाता, बागान हइते कखनो फुल, कखनो फल, मातृभाण्डार हइते कोनोदिन आचार, कोनोदिन नारिकेलेर मिष्टान्न, कोनोदिन पाताय-मोड़ा केतकी-केशरसुगंधि गृहनिर्मित खयेर आनिया नियमित समये ताँहार द्वारे आसिया उपस्थित हइत।

प्रथम दिनकतक देखिल, शशिभूषण एकखाना चित्रहीन प्रकाण्ड कठोरमूर्ति ग्रन्थ खुलिया अन्यमनस्कभावे पाता उल्टाइतेछेन, सेटा ये मनोयोग दिया पाठ करितेछेन ताहाओ बोध हइल ना। अन्य समये शशिभूषण ये सकल ग्रन्थ पड़ितेन ताहार मध्य हइते कोनो ना कोनो अंश गिरिबालाके बुझाइबार चेष्टा करितेन, किन्तु ऐ स्थूलकाय कालो मलाटेर पुस्तक हइते गिरिबालाके शुनाइबार योग्य कि दुटो कथाओ छिल ना। ता ना थाक्, ताइ बलिया ऐ बइखानि कि एतइ बड़ो, आर गिरिबाला कि एतइ छोटो।

प्रथमटा, गुरुर मनोयोग आकर्षणेर जन्य गिरिबाला सुर करिया, बानान करिया, वेणी-समेत देहेर उत्तरार्ध सवेगे दुलाइते दुलाइते उच्चैःस्वरे आपनिइ पड़ा आरम्भ करिया दिल। देखिल ताहाते विशेष फल हइल ना। कालो मोटा बइखानार

शाण दितेछेन—सान चढ़ा रहे थे। जेरा—जिरह। घर्माक्त—पसीने-पसीने।

ताहार—अपना। खाता—कॉपी। पाताय-मोड़ा—पत्ते में लिपटा हुआ। खयेर—कत्था।

दिनकतक—कुछ दिन। ता ना थाक्—(खैर) वह न सही। ताइ बलिया—इसीलिए।

सुर करिया—सस्वर। बानान करिया—हिज्जे करके। देहेर उत्तरार्ध—शरीर का ऊपरी भाग। दुलाइते—हिलाते। आपनिइ—स्वयं ही।

उपर मने मने अत्यन्त चटिया गेल। ओटाके एकटा कुत्सित कठोर निष्ठुर मानुषेर मतो करिया देखिते लागिल। ऐ बइखाना ये गिरिबालाके बालिका बलिया सम्पूर्ण अवज्ञा करे ताहा येन ताहार प्रत्येक दुर्बोध पाता दुष्ट मानुषेर मुखेर मतो आकार धारण करिया नीरवे प्रकाश करिते लागिल। सेइ बइखाना यदि कोनो चोरे चुरि करिया लइया याइत तबे सेइ चोरके से ताहार मातृ-भाण्डारेर समस्त केयाखयेर चुरि करिया पुरस्कार दिते पारित। सेइ बइखानार विनाशेर जन्य से मने मने देवतार निकट ये-सकल असंगत ओ असम्भव प्रार्थना करियाछिल ताहा देवतारा शुनेन नाइ एवं पाठकदिगकेओ शुनाइबार कोनो आवश्यक देखि ना।

तखन व्यथितहृदय बालिका दुइ-एकदिन चारुपाठ हस्ते गुरुगृहे गमन बन्ध करिल। एवं सेइ दुइ-एकदिन परे एइ विच्छेदेर फल परीक्षा करिया देखिबार जन्य से अन्य छले शशिभूषणेर गृहसम्मुखवर्ती पथे आसिया कटाक्षपात करिया देखिल, शशिभूषण सेइ कालो बइखाना फेलिया एकाकी दाँड़ाइया हात नाड़िया लोहार गरादेगुलार प्रति विजातीय भाषाय वक्तृता प्रयोग करिते-छेन। बोध करि, विचारकेर मन केमन करिया गलाइबेन एइ लोहागुलार उपर ताहार परीक्षा हइतेछे। संसारे-अनभिज्ञ ग्रन्थविहारी शशिभूषणेर धारणा छिल ये, पुराकाले डिमस्थिनीस सिसिरो बार्क् शेरिडन प्रभृति वाग्मीगण वाक्यबले ये-सकल असामान्य कार्य करिया गियाछेन—येरूप शब्दभेदी शर-वर्षणे अन्यायके छिन्नभिन्न, अत्याचारके लाञ्छित एवं अहंकारके धूलिशायी करिया दियाछेन, आजिकार दोकानदारिर दिनेओ ताहा असम्भव नहे। प्रभुत्वमदगर्वित उद्धत इंराजके केमन करिया तिनि जगत्समक्षे लज्जित ओ अनुतप्त करिबेन, तिलकुचि ग्रामेर जीर्ण क्षुद्र गृहे दाँड़ाइया शशिभूषण ताहारइ चर्चा करितेछिलेन। आका-

चटिया गेल—बिगड़ (नाराज हो) गई। ओटाके—उसे। केयाखयेर—केवड़े से सुगन्धित कत्था। देवतारा—देवताओं ने।

बन्ध—बन्द। गरादेगुलार—सींखचों के। तिलकुचि—(गांव का नाम)। ताहारइ—उसी का। चर्चा—अभ्यास।

शेर देवतारा शुनिया हासियाछिलेन कि ताँहादेर देवचक्षु अश्रुसिक्त हइतेछिल, ताहा केह बलिते पारे ना।

सुतरां सेदिन गिरिबाला ताँहार दृष्टिपथे पड़िल ना; सेदिन बालिकार अञ्चले जाम छिल ना; पूर्वे एकवार जामेर आँटि धरा पड़िया अवधि ऐ फल सम्बन्धे से अत्यन्त संकुचित छिल। एमन कि, शशिभूषण यदि कोनोदिन निरीहभावे जिज्ञासा करित "गिरि, आज जाम नेइ?" से सेटाके गूढ़ उपहास ज्ञान करिया सक्षोभे "या:ओ" बलिया तर्जन करिया पलायनेर उपक्रम करित। जामेर आँटिर अभावे आज ताहाके एकटा कौशल अवलम्बन करिते हइल। सहसा दूरेर दिके दृष्टिक्षेप करिया बालिका उच्चै:स्वरे बलिया उठिल, "स्वर्ण भाइ, तुइ यास् ने, आमि एखनि याच्छि।"

पुरुष पाठक मने करिते पारेन ये, कथाटा स्वर्णलता-नामक कोनो दूरवर्तिनी सङ्गिनीके लक्ष्य करिया उच्चारित, किन्तु पाठिकारा सहजेइ बुझिते पारिबेन दूरे केहइ छिल ना, लक्ष्य अत्यन्त निकट। किन्तु हाय, अन्ध पुरुषेर प्रति से लक्ष्य भ्रष्ट हइया गेल। शशिभूषण ये शुनिते पान नाइ ताहा नहे, तिनि ताहार मर्म ग्रहण करिते पारिलेन ना। तिनि मने करिलेन, बालिका सत्यइ क्रीड़ार जन्य उत्सुक—एवं सेदिन ताहाके खेला हइते अध्ययने आकर्षण करिया आनिते ताँहार अध्यवसाय छिल ना, कारण तिनिओ सेदिन कोनो कोनो हृदयेर दिके लक्ष्य करिया तीक्ष्ण शर सन्धान करितेछिलेन। बालिकार क्षुद्र हस्तेर सामान्य लक्ष्य येमन व्यर्थ हइयाछिल ताँहार शिक्षित हस्तेर महत् लक्ष्यओ सेइरूप व्यर्थ हइयाछिल, पाठकेरा से संवाद पूर्वेइ अवगत हइयाछेन।

हइतेछिल—हो रहे थे। केह—कोई।
जामेर आँटि—जामुन की गुठली। धरा......अवधि—पकड़ाई दे जाने के समय से। भाइ—सखी, बहन (सखी के लिए स्नेहपूर्ण सम्बोधन)। तुइ यास् ने—तू जा मत। एखनि याच्छि—अभी आ रही हूँ।
केहइ—कोई भी। अध्यवसाय—चेष्टा। पाठकेरा—पाठकगण।

जामेर आँटिर एकटा गुण एइ ये, एके एके अनेकगुलि निक्षेप करा याय, चारिटि निष्फल हइले अन्तत पञ्चमटि ठिक स्थाने गिया लागिते पारे। किन्तु स्वर्ण हाजार काल्पनिक हउक, ताहाके "एखनि याच्छि" आशा दिया अधिकक्षण दाँड़ाइया थाका याय ना। थाकिले स्वर्णेर अस्तित्व सम्बन्धे लोकेर स्वभावतइ सन्देह जन्मिते पारे। सुतरां से उपायटि यखन निष्फल हइल तखन गिरिबालाके अविलम्बे चलिया याइते हइल। तथापि, स्वर्णनाम्नी कोनो दूरस्थित सहचरीर सङ्ग लाभ करिबार अभिलाष आन्तरिक हइले येरूप सवेगे उत्साहेर सहित पादचारणा करा स्वाभाविक हइत, गिरिबालार गतिते ताहा लक्षित हइल ना। से गेन ताहार पृष्ठ दिया अनुभव करिबार चेष्टा करितेछिल पश्चाते केह आसितेछे कि ना ; यखन निश्चय बुझिल केह आसितेछे ना तखन आशार शेषतम क्षीणतम भग्नांशटुकु लइया एकबार पश्चात् फिरिया चाहिया देखिल, एवं काहाकेओ ना देखिया सेइ क्षुद्र आशाटुकु एवं शिथिलपत्र चारुपाठखानि खण्ड खण्ड करिया छिँड़िया पथे छड़ाइया दिल। शशिभूषण ताहाके ये विद्याटुकु दियाछे सेटुकु यदि से कोनोमते फिराइया दिते पारित तबे बोध हय परित्याज्य जामेर आँटिर मतो से-समस्तइ शशिभूषणेर द्वारेर सम्मुखे सशब्दे निक्षेप करिया दिया चलिया आसित। बालिका प्रतिज्ञा करिल, द्वितीयबार शशिभूषणेर सहित देखा हइबार पूर्वेइ से समस्त पड़ाशुना भुलिया याइबे, तिनि ये प्रश्न जिज्ञासा करिबेन ताहार कोनोटिरइ उत्तर दिते पारिबे ना! एकटि—एकटि—एकटिरओ ना! तखन! तखन शशिभूषण अत्यन्त जब्द हइबे।

जन्मिते पारे—उत्पन्न हो सकता है। हइत—होता। पृष्ठ दिया—पीठ से, पीछे से। बुझिल—समझ गई। छिँड़िया—फाड़ कर। छड़ाइया दिल—बिखेर दिया। सेटुकु—उतनी भर। कोनोमते—किसी प्रकार। हइबार—होने के। पड़ाशुना—पढ़ा-लिखा। एकटिरओ—एक का भी। जब्द—हैरान, पराजित।

गिरिबालार दुइ चक्षु जले भरिया आसिल। पड़ा भुलिया गेले शशिभूषणेर ये किरूप तीव्र अनुतापेर कारण हइबे ताहा मने करिया से पीड़ित हृदये किञ्चित् सान्त्वना लाभ करिल, एवं केवलमात्र शशिभूषणेर दोषे विस्मृतशिक्षा सेइ हतभागिनी भविष्यत् गिरिबालाके कल्पना करिया ताहार निजेर प्रति करुणरस उच्छलित हइया उठिल। आकाशे मेघ करिते लागिल; वर्षाकाले एमन मेघ प्रतिदिन करिया थाके। गिरिबाला पथेर प्रान्ते एकटा गाछेर आड़ाले दाँड़ाइया अभिमाने फुलिया फुलिया काँदिते लागिल; एमन अकारण कान्ना प्रतिदिन कत बालिका काँदिया थाके। उहार मध्ये लक्ष्य करिबार विषय किछुइ छिल ना।

षष्ठ परिच्छेद

शशिभूषणेर आइन-सम्बन्धीय गवेषणा एवं वक्तृताचर्चा की कारणे व्यर्थ हइया गेल ताहा पाठकदेर अगोचर नाइ। म्याजिस्ट्रेटेर नामे मकद्दमा अकस्मात् मिटिया गेल। हरकुमार ताँहादेर जेलार बेञ्चे अनरारि म्याजिस्ट्रेट नियुक्त हइलेन। एकखाना मलिन चापकान ओ तैलाक्त पागड़ि परिया हरकुमार आजकाल प्रायइ जेलाय गिया साहेबदिगके नियमित सेलाम करिया आसेन।

शशिभूषणेर सेइ कालो मोटा बइखानार प्रति एतदिन परे गिरिबालार अभिशाप फलिते आरम्भ करिल, से एकटि अन्धकार कोणे निर्वासित हइया अनादृत विस्मृतभावे धूलिस्तरसंग्रहे प्रवृत्त हइल। किन्तु ताहार अनादर देखिया ये बालिका आनन्द लाभ करिबे सेइ गिरिबाला कोथाय।

आसिल—आए। भुलिया गेले—भूल जाने पर। मने करिया—सोच कर। उच्छलित—उमड़ (पड़ा)। मेघ करिते लागिल—बादल घिरने लगे। गाछेर आड़ाले—पेड़ की आड़ में। फुलिया फुलिया—फफक-फफक कर। काँदिते लागिल—रोने लगी। कान्ना—रुदन।

चर्चा—अभ्यास। मिटिया गेल—निबट गया। जेलार—जिले की। अनरारि—ऑनरेरी। चापकान—चपकन, अचकन।

शशिभूषण येदिन प्रथम आइनेर ग्रन्थ बन्ध करिया बसिलेन सेइ दिनइ हठात् बुझिते पारिलेन, गिरिबाला आसे नाइ। तखन एके एके कयदिनेर इतिहास अल्पे अल्पे ताँहार मने पड़िते लागिल। मने पड़िते लागिल, एकदिन उज्ज्वल प्रभाते गिरिबाला अञ्चल भरिया नववर्षार आर्द्र बकुलफुल आनियाछिल। ताहाके देखियाओ यखन तिनि ग्रन्थ हइते दृष्टि तुलिलेन ना तखन ताहार उच्छ्वासे सहसा बाधा पड़िल। से ताहार अञ्चलविद्ध एकटा सुँचसुता बाहिर करिया नतशिरे एकटि एकटि करिया फुल लइया माला गाँथिते लागिल—माला अत्यन्त धीरे धीरे गाँथिल, अनेक विलम्बे शेष हइल, वेला हइया आसिल, गिरिबालार घरे फिरिबार समय हइल, तथापि शशिभूषणेर पड़ा शेष हइल ना। गिरिबाला मालाटा तक्तपोषेर उपर राखिया म्लानभावे चलिया गेल। मने पड़िल, ताहार अभिमान प्रतिदिन केमन करिया घनीभूत हइया उठिल; कबे हइते से ताँहार घरे प्रवेश ना करिया घरेर सम्मुखवर्ती पथे मध्ये मध्ये देखा दित एवं चलिया याइत; अवशेषे कबे हइते बालिका सेइ पथे आसाओ बन्ध करियाछे, सेओ तो आज किछु दिन हइल। गिरिबालार अभिमान तो एतदिन स्थायी हय ना। शशिभूषण एकटा दीर्घनिश्वास फेलिया हतबुद्धि हतकर्मेर मतो देयाले पिठ दिया बसिया रहिलेन। क्षुद्र छात्रीटि ना आसाते ताँहार पाठ्यग्रन्थगुलि नितान्त विस्वाद हइया आसिल। बइ टानिया टानिया लइया दुइ-चारि पाता पड़िया फेलिया दिते हय। लिखिते लिखिते क्षणे क्षणे सचकिते पथेर दिके द्वारेर अभिमुखे प्रतीक्षापूर्ण दृष्टि विक्षिप्त हइते थाके एवं लेखा भङ्ग हय।

शशिभूषणेर आशङ्का हइल, गिरिबालार असुख हइया थाकिबे

बन्ध—बन्द। आसे नाइ—नहीं आई। मने पड़िते लागिल—याद पड़ने लगा। बकुलफुल—मौलसिरी के फूल। सुँचसुता—सुई-धागा। आसाओ—आना भी। देयाले पीठ दिया—दीवार से पीठ लगा कर। आसाते—आने से। विस्वाद—बेस्वाद, नीरस।

असुख हइया थाकिबे—बीमार हो गई होगी।

गोपने सन्धान लइया जानिलेन, से आशंका अमूलक। गिरिबाला आजकाल आर घर हइते बाहिर हय ना। ताहार जन्य पात्र स्थिर हइयाछे।

गिरि येदिन चारुपाठेर छिन्नखण्डे ग्रामेर पंकिल पथ विकीर्ण करियाछिल ताहार परदिन प्रत्यूषे क्षुद्र अन्चले विचित्र उपहार संग्रह करिया द्रुतपदे घर हइते बाहिर हइया आसितेछिल। अतिशय ग्रीष्म हओयाते निद्राहीन रात्रि अतिवाहन करिया हरकुमार भोरवेला हइते बाहिरे बसिया गा खुलिया तामाक खाइतेछिलेन। गिरिके जिज्ञासा करिलेन, "कोथाय याच्छिस?" गिरि कहिल, "शशिदादार बाड़ि।" हरकुमार धमक दिया कहिलेन, "शशिदादार बाड़ि येते हबे ना, घरे या!" एइ बलिया आसन्नश्वसुरगृहवास वयःप्राप्त कन्यार लज्जार अभाव सम्बन्धे विस्तर तिरस्कार करिलेन। सेइ दिन हइते ताहार बाहिरे आसा बन्ध हइयाछे। एबार आर ताहार अभिमान-भङ्ग करिबार अवसर जुटिल ना। आमसत्त्व केयाखयेर एवं जारक नेबु भाण्डारेर यथास्थाने फिरिया गेल। वृष्टि पड़िते लागिल, बकुल फुल झरिते लागिल, गाछ भरिया पेयारा पाकिया उठिल एवं शाखास्खलित पक्षीचञ्चुक्षत सुपक्व कालोजामे तरुतल प्रतिदिन समाच्छन्न हइते लागिल। हाय, सेइ छिन्नप्राय चारुपाठखानिओ आर नाई।

सप्तम परिच्छेद

ग्रामे गिरिबालार विवाहे येदिन सानाइ बाजितेछिल सेदिन अनिमन्त्रित शशिभूषण नौका करिया कलिकाता अभिमुखे चलितेछिलेन।

मकद्दमा उठाइया लओया अवधि हरकुमार शशीके विषचक्षे देखितेन। कारण, तिनि मने मने स्थिर करियाछिलेन, शशी

पात्र—वर।

तामाक—तम्बाकू। खाइतेछिलेन—पी रहे थे। आमसत्त्व—अमावट। केयाखयेर—केवड़े से सुगन्धित कत्था। जारक नेबु—पाचक नीबू। गाछ—वृक्ष। पेयारा—अमरूद।

सानाइ—शहनाई।

ताँहाके निश्चय घृणा करितेछे। शशीर मुखे चोखे व्यवहारे तिनि ताहार सहस्र काल्पनिक निदर्शन देखिते लागिलेन। ग्रामेर सकल लोकइ ताँहार अपमानवृत्तान्त क्रमश विस्मृत हइतेछे, केवल शशिभूषण एकाकी सेइ दुःस्मृति जागाइया राखियाछे मने करिया तिनि ताहाके दुइ चक्षे देखिते पारितेन ना। ताहार सहित साक्षात् हइवामात्र ताँहार अन्तःकरणेर मध्ये एकटुखानि सलज्ज संकोच एवं सेइ सङ्गे प्रबल आक्रोशेर सञ्चार हइत। शशीके ग्रामछाड़ा करिते हइवे बलिया हरकुमार प्रतिज्ञा करिया बसिलेन।

शशिभूषणेर मतो लोकके ग्रामछाड़ा करा काजटा तेमन दुरूह नहे। नायेब महाशयेर अभिप्राय अनतिविलम्बे सफल हइल। एकदिन सकालवेला पुस्तकेर बोझा एवं गुटिदुइचार टिनेर बाक्स सङ्गे लइया शशी नौकाय चड़िलेन। ग्रामेर सहित ताँहार ये एकटि सुखेर बन्धन छिल सेओ आज समारोह सहकारे छिन्न हइतेछे। सुकोमल बन्धनटि ये कत दृढ़भावे ताँहार हृदयके वेष्टन करिया धरियाछिल ताहा तिनि पूर्वे सम्पूर्णरूपे जानिते पारेन नाइ। आज यखन नौका छाड़िया दिल, ग्रामेर वृक्ष-चूड़ागुलि अस्पष्ट एवं उत्सवेर वाद्यध्वनि क्षीणतर हइया आसिल, तखन सहसा अश्रुवाष्पे हृदय स्फीत हइया उठिया ताँहार कण्ठ रोध करिया धरिल, रक्तोच्छ्वासवेगे कपालेर शिरागुला टन् टन् करिते लागिल एवं जगत्संसारेर समस्त दृश्य छायानिर्मित मायामरीचिकार मतो अत्यन्त अस्पष्ट प्रतिभात हइल।

प्रतिकूल बातास अतिशय वेगे बहितेछिल, सेइजन्य स्रोत अनुकूल हइलेओ नौका धीरे धीरे अग्रसर हइतेछिल। एमनसमय नदीर मध्ये एक काण्ड घटिल याहाते शशिभूषणेर यात्रार व्याघात करिया दिल।

निदर्शन—प्रमाण, चिह्न। ग्रामछाड़ा—ग्राम से निर्वासित।
मतो—समान। हइल—हो गया। ताहा तिनि—उसे वे। छाड़िया दिल—रवाना हुई, चल पड़ी। टन् टन्...लागिल—झनझनाने लगीं।
बहितेछिल—बह रही थी। काण्ड—घटना।

स्टेशन घाट हइते सदर महकुमा पर्यन्त एकटि नूतन स्टिमार लाइन सम्प्रति खुलियाछे। सेइ स्टिमारटि सशब्दे पक्ष सञ्चालन करिया ढेउ तुलिया उजाने आसितेछिल। जाहाजे नूतन लाइनेर अल्पवयस्क म्यानेजार साहेव एवं अल्पसंख्यक यात्री छिल। यात्रीदेर मध्ये शशिभूषणेर ग्राम हइते केह केह उठियाछिल।

एकटि महाजनेर नौका किछु दूर हइते एइ स्टिमारेर सहित पाल्ला दिया आसिते चेष्टा करितेछिल, आबार माझे माझे धरि-धरि करितेछिल, आबार माझे माझे पश्चाते पड़ितेछिल। माझिर क्रमश रोख चापिया गेल। से प्रथम पालेर उपर द्वितीय पाल एवं द्वितीय पालेर उपरे क्षुद्र तृतीय पालटा पर्यन्त तुलिया दिल। वातासेर वेगे सुदीर्घ मास्तुल सम्मुखे आनत हइया पड़िल, एवं विदीर्ण तरङ्गराशि अट्टकलस्वरे नौकार दुइ पार्श्वे उन्मत्तभावे नृत्य करिते लागिल। नौका तखन छिन्नवल्गा अश्वेर न्याय छुटिया चलिल। एक स्थाने स्टिमारेर पथ किञ्चित् बाँका छिल, सेइखाने संक्षिप्ततर पथ अवलम्बन करिया नौका स्टिमारके छाड़ाइया गेल। म्यानेजार साहेब आग्रहेर भरे रेलेर उपर झुंकिया नौकार एइ प्रतियोगिता देखितेछिल। यखन नौका ताहार पूर्णतम वेग प्राप्त हइयाछे एवं स्टिमारके हात-दुयेक छाड़ाइया गियाछे एमन समय साहेब हठात् एकटा बन्दुक तुलिया स्फीत पाल लक्ष्य करिया आओयाज करिया दिल। एक मुहूर्ते पाल फाटिया गेल, नौका डुबिया गेल, स्टिमार नदीर बाँकेर अन्तराले अदृश्य हइया गेल।

म्यानेजार केन ये एमन करिल ताहा बला कठिन। इंराज-नन्दनेर मनेर भाव आमरा बाङालि हइया ठिक बुझिते पारि ना।

ढेउ तुलिया....आसितेछिल—हिलोरें उठाता हुआ प्रवाह के विरुद्ध आ रहा था। पाल्ला दिया—प्रतियोगिता करते हुए। धरि धरि—अब पकड़ा, अब पकड़ा। रोख चापिया गेल—जिद सवार हो गई। तुलिया दिया—चढ़ा दिया। बाँका—टेढ़ा। छाड़ाइया गेल—(पीछे) छोड़ गई। रेलेर—रेलिंग के। बाँकेर—मोड़ के।

हयतो दिशि पालेर प्रतियोगिता से सह्य करिते पारे नाइ, हयतो एकटा स्फीत विस्तीर्ण पदार्थ बन्दुकेर गुलिर द्वारा चक्षेर पलके विदीर्ण करिबार एकटा हिंस्र प्रलोभन आछे, हयतो एइ गर्वित नौकाटार वस्त्रखण्डेर मध्ये गुटिकयेक फुटा करिया निमेषेर मध्ये इहार नौकालीला समाप्त करिया दिबार मध्ये एकटा प्रबल पैशाचिक हास्यरस आछे; निश्चय जानि ना। किन्तु इहा निश्चय, इंराजेर मनेर भितरे एकटुखानि विश्वास छिल ये, एइ रसिकताटुकु करार दरुन से कोनोरूप शास्तिर दायिक नहे—एवं धारणा छिल, याहादेर नौका गेल एवं सम्भवत प्राणसंशय, ताहारा मानुषेर मध्येइ गण्य हइते पारे ना।

साहेब यखन बन्दुक तुलिया गुलि करिल एवं नौका डुबिया गेल तखन शशिभूषणेर पान्सि घटनास्थलेर निकटवर्ती हइयाछे। शेषोक्त व्यापारटि शशिभूषण प्रत्यक्ष देखिते पाइलेन। ताड़ाताड़ि नौका लइया गिया माझि एवं माल्लादिगके उद्धार करिलेन। केवल एक व्यक्ति भितरे बसिया रन्धनेर जन्य मशला पिषितेछिल, ताहाके आर देखा गेल ना। वर्षार नदी खरवेगे बहिया चलिल।

शशिभूषणेर हृत्पिण्डेर मध्ये उत्तप्त रक्त फुटिते लागिल। आइन अत्यन्त मन्दगति—से एकटा वृहत् जटिल लौहयन्त्रेर मतो, तौल करिया से प्रमाण ग्रहण करे एवं निर्विकारभावे से शास्ति विभाग करिया देय, ताहार मध्ये मानवहृदयेर उत्ताप नाइ। किन्तु क्षुधार सहित भोजन, इच्छार सहित उपभोग ओ रोषेर सहित शास्तिके विच्छिन्न करिया देओया शशिभूषणेर निकट समान अस्वाभाविक बलिया बोध हइल। अनेक अपराध आछे याहा प्रत्यक्ष करिबामात्र तत्क्षणात् निज हस्ते ताहार शास्ति

हयतो—सम्भवतः। फुटा करिया—छेद करके। निश्चय—निश्चित रूप से। दरुन—के लिए। शास्तिर—दण्ड का। दायिक—पात्र। ताहारा—वे लोग।

पान्सि—पिनैस (अं०), छोटी नौका। माल्लादिगके—मल्लाहों का। मशला—मसाला।

फुटिते—खौलने। याहा—जो। प्रत्यक्ष करिबामात्र—देखते ही।

विधान ना करिले अन्तर्यामी विधातापुरुष येन अन्तरेर मध्ये थाकिया प्रत्यक्षकारीके दग्ध करिते थाकेन। तखन आइनेर कथा स्मरण करिया सान्त्वना लाभ करिते हृदय लज्जा बोध करे। किन्तु कलेर आइन एवं कलेर जाहाज म्यानेजारटिके शशिभूषणेर निकट हइते दूरे लइया गेल। ताहाते जगतेर आर आर की उपकार हइयाछिल बलिते पारि ना किन्तु से यात्राय निःसन्देह शशिभूषणेर भारतवर्षीय प्लीहा रक्षा पाइयाछिल।

माझिमाल्ला याहारा बाँचिल ताहादिगके लइया शशी ग्रामे फिरिया आसिलेन। नौकाय पाट बोझाइ छिल, सेइ पाट उद्धारेर जन्य लोक नियुक्त करिया दिलेन एवं माझिके म्यानेजारेर विरुद्धे पुलिसे दरखास्त दिते अनुरोध करिलेन।

माझि किछुतेइ सम्मत हय ना। से बलिल, "नौका तो मजियाछे, एक्षणे निजेके मजाइते पारिब ना।" प्रथमत, पुलिसके दर्शनि दिते हइबे; ताहार पर काजकर्म आहारनिद्रा त्याग करिया आदालते घुरिते हइबे; ताहार पर साहेबेर नामे नालिश करिया की विपाके पड़िते हइबे ओ की फललाभ हइबे ताहा भगवान जानेन। अवशेषे से यखन जानिल, शशिभूषण निजे उकिल, आदालतखरचा तिनिइ वहन करिबेन एवं मकद्दमाय भविष्यते खेसारत पाइबार सम्पूर्ण सम्भावना आछे तखन राजि हइल। किन्तु शशिभूषणेर ग्रामेर लोक याहारा स्टिमारे उपस्थित छिल ताहारा किछुतेइ साक्ष्य दिते चाहिल ना। ताहारा शशिभूषणके कहिल, "महाशय, आमरा किछुइ देखि नाइ; आमरा जाहाजेर पश्चात्-भागे छिलाम, कलेर घट् घट् एवं जलेर कल् कल् शब्दे सेखान हइते बन्दुकेर आओयाज शुनिबारओ कोनो सम्भावना छिल ना।"

कलेर—कल (यन्त्र) का। आर—और, अन्य। से यात्राय—उस बार।
पाट—सन। बोझाइ छिल—लदा हुआ था।
मजियाछे—डूब गई। दर्शनि—भेंट, रिश्वत। घुरिते हइबे—चक्कर काटने पड़ेंगे। खेसारत—हर्जाना। घट् घट्—घड़घड़ाहट।

देशेर लोकके आन्तरिक धिक्कार दिया शशिभूषण म्याजिस्ट्रेटेर निकट मकद्दमा चालाइलेन।

साक्षीर कोनो आवश्यक हइल ना। म्यानेजार स्वीकार करिल ये, से वन्दुक छुँड़ियाछिल। कहिल, आकाशे एक झाँक वक उड़ितेछिल, ताहादेरइ प्रति लक्ष्य करा हइयाछिल। स्टिमार तखन पूर्णवेगे चलितेछिल एवं सेइ मुहूर्तेइ नदीर वाँकेर अन्तराले प्रवेश करियाछिल। सुतरां से जानितेओ पारे नाइ, काक मरिल, कि वक मरिल, कि नौकाटा डुविल। अन्तरीक्षे एवं पृथिवीते एत शिकारेर जिनिस आछे ये, कोनो वुद्धिमान व्यक्ति इच्छापूर्वक 'डार्टि र‍्याग' अर्थात् मलिन वस्त्रखण्डेर उपर सिकिपयसा दामेरओ छिटागुलि अपव्यय करिते पारे ना।

वेकसुर खालास पाइया म्यानेजार-साहेव चुरट फुँकिते फुँकिते क्लावे हुइस्ट खेलिते गेल, ये लोकटा नौकार मध्ये मशला-पिषितेछिल नय माइल तफाते ताहार मृतदेह डाङाय आसिया लागिल एवं शशिभूषण चित्तदाह लइया आपन ग्रामे फिरिया आसिलेन।

येदिन फिरिया आसिलेन, सेदिन नौका साजाइया गिरिवालाके श्वसुरवाड़ि लइया याइतेछे। यदिओ ताँहाके केह डाके नाइ तथापि शशिभूषण धीरे धीरे नदीतीरे आसिया उपस्थित हइलेन। घाटे लोकेर भिड़ छिल, सेखाने ना गिया किछु दूरे अग्रसर हइया दाँड़ाइलेन। नौका घाट छाड़िया यखन ताँहार सम्मुख दिया चलिया गेल तखन चकितेर मतो एकवार देखिते पाइलेन, माथाय घोमटा टानिया नववधू नतशिरे वसिया आछे। अनेक दिन हइते गिरिवालार आशा छिल ये, ग्राम त्याग करिया याइवार

झाँक—झुण्ड। वाँकेर—मोड़ पर। जिनिस—जिन्स, वस्तुएँ। सिकिपयसा—चवन्नी-पैसा (छदाम का)। छिटागुलि—छर्रे।

खालास पाइया—छूट कर। हुइस्ट—ह्विस्ट (अं०, ताश का खेल)। तफाते—अन्तर पर, दूर। डाङाय—किनारे पर।

डाके नाइ—बुलाया नहीं था। दाँड़ाइलेन—खड़े हो गए। चकितेर मतो—चौंक कर। घोमटा टानिया—घूंघट काढ़ कर।

पूर्वे कोनोमते एकबार शशिभूषणेर सहित साक्षात् हइबे, किन्तु आज से जानितेओ पारिल ना ये ताहार गुरु अनतिदूरे तीरे दाँड़ाइया आछेन: एकबार से मुख तुलियाओ देखिल ना, केवल निःशब्द रोदने ताहार दुइ कपोल बाहिया अश्रुजल झरिया पड़िते लागिल।

नौका क्रमश दूरे चलिया अदृश्य हइया गेल। जलेर उपर प्रभातेर रौद्र झिक् झिक् करिते लागिल, निकटेर आम्रशाखाय एकटा पापिया उच्छ्वसित कण्ठे मुहुर्मुहु गान गाहिया मनेर आवेग किछुतेइ निःशेष करिते पारिल ना, खेयानौका लोक बोझाइ लइया पारापार हइते लागिल, मेयेरा घाटे जल लइते आसिया उच्च कलस्वरे गिरिर श्वशुरालययात्रार आलोचना तुलिल, शशिभूषण चशमा खुलिया चोख मुछिया सेइ पथेर धारे सेइ गरादेर मध्ये सेइ क्षुद्र गृहे गिया प्रवेश करिलेन। हठात् एकबार मने हइल येन गिरिबालार कण्ठ शुनिते पाइलेन! "शशीदादा!"—कोथाय रे कोथाय? कोथाओ ना! से गृहे ना, से पथे ना, से ग्रामे ना—ताँहार अश्रुजलाभिषिक्त अन्तरेर माझखानटिते।

अष्टम परिच्छेद

शशिभूषण पुनराय जिनिसपत्र बाँधिया कलिकाता-अभिमुखे यात्रा करिलेन। कलिकाताय कोनो काज नाइ, सेखाने याओयार कोनो विशेष उद्देश्य नाइ; सेइजन्य रेलपथे ना गिया बराबर नदीपथे याओयाइ स्थिर करिलेन।

तखन पूर्णवर्षाय बांलादेशेर चारि दिकेइ छोटो बड़ो

तुलियाओ—उठा कर भी। बाहिया—से हो कर।

झिक् झिक्—झिलमिल। मुहुर्मुहु—बार-बार। खेयानौका—खेवे की नौका। बोझाइ लइया—लाद कर, चढ़ा कर। पारापार—इस पार-उस पार। मेयेरा—लड़कियाँ, स्त्रियां। मुछिया—पोंछ कर। धारे—किनारे। गरादेर—सींखचों के। माझखानटिते—बीच में।

जिनिसपत्र—चीज-बस्त।

आँकाबाँका सहस्र जलमय जाल विस्तीर्ण हइया पड़ियाछे। सरस श्यामल वङ्गभूमिर शिरा-उपशिरागुलि परिपूर्ण हइया, तरुलता तृणगुल्म झोपझाड़ धान पाट इक्षुते दश दिके उन्मत्त यौवनेर प्राचुर्य येन एकेबारे उद्दाम उच्छृङ्खल हइया उठियाछे।

शशिभूषणेर नौका सेइ-समस्त संकीर्ण वक्र जलस्रोतेर मध्य दिया चलिते लागिल। जल तखन तीरेर सहित समतल हइया गियाछे। काशवन शरवन एवं स्थाने स्थाने शस्यक्षेत्र जलमग्न हइयाछे। ग्रामेर वेड़ा, बाँशझाड़ ओ आमबागान एकेबारे जलेर अव्यवहित धारे आसिया दाँड़ाइयाछे—देवकन्यारा येन बांलादेशेर तरुमूलवर्ती आलवालगुलि जलसेचने परिपूर्ण करिया दियाछेन।

यात्रार आरम्भकाले स्नानचिक्कण वनश्री रौद्रे उज्ज्वल हास्यमय छिल, अनतिविलम्बेइ मेघ करिया वृष्टि आरम्भ हइल। तखन ये दिके दृष्टि पड़े सेइ दिकइ विषण्ण एवं अपरिच्छन्न देखाइते लागिल। वन्यार समये गोरुगुलि येमन जलवेष्टित मलिन पंकिल संकीर्ण गोष्ठप्राङ्गणेर मध्ये भिड़ करिया करुणनेत्रे सहिष्णुभावे दाँडाइया श्रावणेर धारावर्षणे भिजिते थाके, बांला-देश आपनार कर्दमपिच्छिल घनसिक्त रुद्ध जङ्गलेर मध्ये मूक-विषण्णमुखे सेइरूप पीड़ित भावे अविश्राम भिजिते लागिल। चाषिरा टोका माथाय दिया बाहिर हइयाछे; स्त्रीलोकेरा भिजिते भिजिते बादलार शीतल वायुते संकुचित हइया कुटीर हइते कुटीरान्तरे गृहकार्ये यातायात करितेछे ओ पिछल घाटे अत्यन्त सावधाने पा फेलिया सिक्तवस्त्रे जल तुलितेछे, एवं गृहस्थ पुरुषेरा दाओयाय

आँकाबाँका—टेढ़े-मेढ़े। झोपझाड़—झाड़-झंखाड़। इक्षुते—गन्नों से।

मध्य दिया—बीच से। काशवन—काँस का वन। बेड़ा—घेरा। बाँश-झाड़—बाँस के झुरमुट। आलवालगुलि—थाँवले, थाले।

मेघ करिया—बादल घिर कर। देखाइते लागिल—दिखाई देने लगी। वन्यार—बाढ़ के। गोरुगुलि—गाय-बैल (बहुवचन)। चाषिरा—किसान (बहुवचन)। टोका—ताड़ के पत्तों से बना हुआ टोप के आकार का छाता। पिछल—रपटीले। दाओयाय—बरामदे में।

बसिया तामाक खाइतेछे, नितान्त काजेर दाय थाकिले कोमरे चादर जड़ाइया, जुता हस्ते, छाति माथाय, बाहिर हइतेछे—अबला रमणीर मस्तके छाति एइ रौद्रदग्ध वर्षाप्लावित बङ्गदेशेर सनातन पवित्र प्रथार मध्ये नाइ।

वृष्टि यखन किछुतेइ थामे ना तखन रुद्ध नौकार मध्ये विरक्त हइया उठिया शशिभूषण पुनश्च रेलपथे याओयाइ स्थिर करिलेन। एक जायगाय एकटा प्रशस्त मोहानार मतो जायगाय आसिया शशिभूषण नौका बाँधिया आहारेर उद्योग करिते लागिलेन।

खोँड़ार पा खानाय पड़े—से केवल खानार दोषे नय, खोँड़ार पा'टारओ पड़िबार दिके एकटु विशेष झोँक आछे। शशिभूषण सेदिन ताहार एकटा प्रमाण दिलेन।

दुइ नदीर मोहानार मुखे बाँश बाँधिया जेलेरा प्रकाण्ड जाल पातियाछे। केवल एक पार्श्वे नौका-चलाचलेर स्थान राखियाछे। बहुकाल हइते ताहारा ए कार्य करिया थाके एवं सेजन्य खाजनाओ देय। दुर्भाग्यक्रमे ए वत्सर एइ पथे हठात् जेलार पुलिस-सुपारिण्टेण्डेण्ट्बाहादुरेर शुभागमन हइयाछे। ताँहार बोट आसिते देखिया जेलेरा पूर्व हइते पार्श्ववर्ती पथ निर्देश करिया उच्चैःस्वरे सावधान करिया दिल। किन्तु मनुष्यरचित कोनो बाधाके सम्मान प्रदर्शन करिया घुरिया याओया साहेबेर माझिर अभ्यास नाइ। से सेइ जालेर उपर दियाइ बोट चालाइया दिल। जाल अवनत हइया बोटके पथ छाड़िया दिल, किन्तु ताहार हाल बाधिया गेल। किञ्चित् विलम्बे एवं चेष्टाय हाल छाड़ाइया लइते हइल।

दाय—प्रयोजन। जड़ाइया—लपेट कर। छाति माथाय—सिर पर छतरी।
विरक्त हइया—ऊब कर। मोहानार—मुहाने के। मतो—समान।
खोँड़ार पा खानाय पड़े—लँगड़े का पैर गड्ढे में ही पड़ता है। झोँक—झुकाव, चाव।
जेलेरा—मछुओं ने। जाल पातियाछे—जाल डाला है। खाजनाओ—कर भी। घुरिया याओया—घूम कर जाने का। हाल बाधिया गेल—पतवार उलझ गई।

पुलिस-साहेब अत्यन्त गरम एवं रक्तवर्ण हइया बोट बाँधिलेन। ताँहार मूर्ति देखियाइ जेले चारटे ऊर्ध्वश्वासे पलायन करिल। साहेब ताँहार माल्लादिगके जाल काटिया फेलिते आदेश करिलेन। ताहारा सेइ सात-आट शत टाकार वृहत् जाल काटिया टुकरा टुकरा करिया फेलिल।

जालेर उपर झाल झाड़िया अवशेषे जेलेदिगके धरिया आनिवार आदेश हइल। कन्स्टेबल पलातक जेले चारिटिर सन्धान ना पाइया ये चारिजनके हातेर काछे पाइल ताहादिगके धरिया आनिल। ताहारा आपनादिगके निरपराध बलिया जोड़हस्ते काकुतिमिनति करिते लागिल। पुलिस-बाहादुर यखन सेइ बन्दीदिगके सङ्गे लइवार हुकुम दितेछेन, एमन-समय चशमा-परा शशिभूषण ताड़ाताड़ि एकखाना जामा परिया ताहार बोताम ना लागाइया चटिजुता चट् चट् करिते करिते ऊर्ध्वश्वासे पुलिसेर बोटेर सम्मुखे आसिया उपस्थित हइलेन। कम्पितस्वरे कहिलेन, "सार, जेलेर जाल छिँड़िवार एवं एइ चारिजन लोकके उत्पीड़न करिवार तोमार कोनो अधिकार नाइ।"

पुलिसेर वड़ो कर्ता ताँहाके हिन्दिभाषाय एकटा विशेष असम्मानेर कथा बलिवामात्र तिनि एक मुहूर्ते किञ्चित् उच्च डाङा हइते बोटेर मध्ये लाफाइया पड़ियाइ एकेवारे साहेवेर उपर आपनाके निक्षेप करिलेन। बालकेर मतो, पागलेर मतो मारिते लागिलेन।

ताहार पर की हइल तिनि ताहा जानेन ना। पुलिसेर थानार मध्ये यखन जागिया उठिलेन तखन, बलिते संकोच बोध

चारटे—चारों। टाकार—रुपये का।

झाल झाड़िया—गुस्सा उतार कर। आपनादिगके—अपने को। काकुतिमिनति—अनुनय-विनय। ताड़ाताड़ि—जल्दी से। जामा—कुर्ता या कमीज। बोताम—बटन। चटि-जुता—चप्पलें। सार—(अं०) सर। छिँड़िवार—छिन्न करने का।

कर्ता—अधिकारी। डाङा—कगार। लाफाइया—कूद कर। एकेबारे—बिल्कुल।

हय, येरूप व्यवहार प्राप्त हइलेन ताहाते मानसिक सम्मान अथवा शारीरिक आराम बोध करिलेन ना।

नवम परिच्छेद

शशिभूषणेर बाप उकिल ब्यारिस्टार लागाइया प्रथमत शशीके हाजत हइते जामिने खालास करिलेन। ताहार परे मकद्दमार जोगाड़ चलिते लागिल।

ये-सकल जेलेर जाल नष्ट हइयाछे ताहारा शशिभूषणेर एक परगनार अन्तर्गत, एक जमिदारेर अधीन। विपदेर समय कखनो कखनो शशीर निकटे ताहारा आइनेर परामर्श लइतेओ आसित। याहादिगके साहेब बोटे धरिया आनियाछिलेन ताहाराओ शशिभूषणेर अपरिचित नहे।

शशी ताहादिगके साक्षी मानिबेन बलिया डाकाइया आनिलेन। ताहारा भये अस्थिर हइया उठिल। स्त्रीपुत्र परिवार लइया याहादिगके संसारयात्रा निर्वाह करिते हय पुलिसेर सहित विवाद करिले ताहारा कोथाय गिया निष्कृति पाइबे। एकटार अधिक प्राण काहार शरीरे आछे। याहा लोकसान हइबार ताहा तो हइयाछे, एखन आबार साक्षीर सपिना धराइया ए की मुशकिल! सकले बलिल, "ठाकुर, तुमि तो आमादिगके विषम फ्यासादे फेलिले!"

बिस्तर बला-कहार पर ताहारा सत्यकथा बलिते स्वीकार करिल।

इतिमध्ये हरकुमार येदिन बेन्चे कर्मोपलक्षे जेलार साहेबदिगके सेलाम करिते गेलेन पुलिस-साहेब हासिया कहिलेन,

---

जामिने—जमानत पर। खालास करिलेन—छुड़ाया। जोगाड़—आयोजन। कखनो कखनो—कभी कभी। याहादिगके—जिन्हें।

बलिया—इसलिए। डाकाइया आनिलेन—बुला भेजा। लोकसान—नुकसान। सपिना धराइया—सम्मन जारी करा कर। फ्यासादे—फसाद में। बला-कहार पर—कहने-सुनने के बाद।

"नायेबबाबु, शुनितेछि तोमार प्रजारा पुलिसेर विरुद्धे मिथ्या साक्ष्य दिते प्रस्तुत हइयाछे।"

नायेब सचकित हइया कहिलेन, "हाँ! एओ कि कखनो सम्भव हय। अपवित्रजन्तुजात पुत्रदिगेर अस्थिते एत क्षमता!"

संवादपत्र-पाठकेरा अवगत आछेन, मकद्दमाय शशिभूषणेर पक्ष किछुतेइ टिँकिते पारिल ना।

जेलेरा एके एके आसिया कहिल, पुलिस-साहेब ताहादेर जाल काटिया देन नाइ, बोटे डाकिया ताहादेर नाम धाम लिखिया लइतेछिलेन।

केवल ताहाइ नहे, ताँहार देशस्थ गुटिचारेक परिचित लोक साक्ष्य दिल ये, ताहारा से समये घटनास्थले विवाहेर वरयात्र उपलक्षे उपस्थित छिल। शशिभूषण ये अकारणे अग्रसर हइया पुलिसेर पाहाराओयालादेर प्रति उपद्रव करियाछे, ताहा ताहारा प्रत्यक्ष देखियाछे।

शशिभूषण स्वीकार करिलेन ये, गालि खाइया बोटेर मध्ये प्रवेश करिया तिनि साहेबके मारियाछेन। किन्तु जाल काटिया देओया ओ जेलेदेर प्रति उपद्रवइ ताहार मूल कारण।

एरूप अवस्थाय ये विचारे शशिभूषण शास्ति पाइलेन, ताहाके अन्याय बला याइते पारे ना। तबे शास्तिटा किछु गुरुतर हइल। तिन-चारिटा अभियोग—आघात, अनधिकार प्रवेश, पुलिसेर कर्तव्ये व्याघात इत्यादि, सब क'टाइ ताँहार विरुद्धे पूरा प्रमाण हइल।

शशिभूषण ताँहार सेइ क्षुद्र गृहे ताँहार प्रिय पाठ्यग्रन्थगुलि फेलिया पाँच वत्सर जेल खाटिते गेलेन। ताँहार बाप आपिल

पुत्रदिगेर—पुत्रों की।
डाकिया—बुला कर।
पाहाराओयालादेर—पहरेवालों के।
सब क'टाइ—सभी।
जेल खाटिते—जेल भुगतने।

करिते उद्यत हइले शशिभूषण वारम्वार निषेध करिलेन; कहिलेन, "जेल भालो। लोहार बेड़ि मिथ्या कथा बले ना, किन्तु जेलेर बाहिरे ये स्वाधीनता आछे से आमादिगके प्रतारणा करिया विपदे फेले। आर, यदि सत्सङ्गेर कथा बल तो, जेलेर मध्ये मिथ्यावादी कृतघ्न कापुरुषेर संख्या अल्प, कारण स्थान परिमित—बाहिरे अनेक बेशि।"

दशम परिच्छेद

शशिभूषण जेले प्रवेश करिबार अनतिकाल परेइ ताँहार पितार मृत्यु हइल। ताँहार आर बड़ो केह छिल ना। एक भाइ बहुकाल हइते सेन्ट्राल प्रभिन्से काज करितेन, देशे आसा ताँहार बड़ो घटिया उठित ना, सेइखानेइ तिनि बाड़ि तैयारि करिया सपरिवारे स्थायी हइया बसियाछिलेन। देशे विषय-सम्पत्ति याहा छिल नायेव हरकुमार ताहार अधिकांश नाना कौशले आत्मसात् करिलेन।

जेलेर मध्ये अधिकांश कयेदिके ये परिणामे दुःख भोग करिते हय दैवविपाके शशिभूषणके तदपेक्षा अनेक बेशि सह्य करिते हइयाछिल। तथापि दीर्घ पाँच वत्सर काटिया गेल।

आवार एकदा वर्षार दिने जीर्ण शरीर ओ शून्य हृदय लइया शशिभूषण काराप्राचीरेर बाहिरे आसिया दाँड़ाइलेन। स्वाधीनता पाइलेन किन्तु ताहा छाड़ा कारार बाहिरे ताँहार आर-केह अथवा आर-किछु छिल ना। गृहहीन आत्मीयहीन समाजहीन केवल ताँहार एकलाटिर पक्षे एत बड़ो जगत्संसार अत्यन्त ढिला बलिया ठेकिते लागिल।

प्रभिन्से—प्रॉविन्स में, प्रदेश में। बड़ो घटिया उठित ना—(आना) खास नहीं हो पाता था।

कयेदिके—कैदियों को।

आसिया दाँड़ाइलेन—आ खड़े हुए। ताहा छाड़ा—इसके अतिरिक्त। ढिला—ढीला। ठेकिते लागिल—जान पड़ने लगा।

जीवनयात्रार विच्छिन्न सूत्र आवार कोथा हइते आरम्भ करिबेन एइ कथा भावितेछेन, एमन समये एक वृहत् जुड़ि ताँहार सम्मुखे आसिया दाँड़ाइल। एकजन भृत्य नामिया आसिया जिज्ञासा करिल, "आपनार नाम शशिभूषण बावु?"

तिनि कहिलेन, "हाँ।"

से तत्क्षणात् गाड़िर दरजा खुलिया ताँहार प्रवेशेर प्रतीक्षाय दाड़ाइल।

तिनि आश्चर्य हइया जिज्ञासा करिलेन, "आमाके कोथाय याइते हइवे।"

से कहिल, "आमार प्रभु आपनाके डाकियाछेन।"

पथिकदेर कौतूहलदृष्टिपात असह्य वोध हओयाते तिनि सेखाने आर अधिक वादानुवाद ना करिया गाड़िते उठिया पड़िलेन। भाविलेन, निश्चय इहार मध्ये एकटा किछु भ्रम आछे। किन्तु एकटा कोनो दिके तो चलिते हइवे—नाहय एमनि करिया भ्रम दियाइ एइ नूतन जीवनेर भूमिका आरम्भ हउक।

सेदिनओ मेघ एवं रौद्र आकाशमय परस्परके शिकार करिया फिरितेछिल; पथेर प्रान्तवर्ती वर्षार जल-प्लावित गाढ़श्याम शस्यक्षेत्र चञ्चल छायालोके विचित्र हइया उठितेछिल। हाटेर काछे एकटा वृहत् रथ पड़िया छिल एवं ताहार अदूरवर्ती मुदिर दोकाने एकदल वैष्णव भिक्षुक गुपियंत्र ओ खोल करताल-योगे गान गाहितेछिल—

एसो एसो फिरे एसो—नाथ हे, फिरे एसो!
आमार क्षुधित तृषित तापित चित, वँधु हे, फिरे एसो!

जुड़ि—बग्घी।
दरजा—दरवाजा।
हओयाते—होने से। उठिया पड़िलेन—चढ़ गये। नाहय—न हो तो। भ्रम दियाइ—भ्रम के द्वारा ही। हउक—हो।
आकाशमय—आकाश-भर में। मुदिर दोकाने—मोदी की दूकान पर। गुपियंत्र—एकतारा-विशेष। खोल—(मृदंग की तरह का वाद्य-यंत्र।)
फिरे एसो—लौट आओ। आमार—मेरे। वँधु—बन्धु, सखा।

गाड़ि अग्रसर हइया चलिल, गानेर पद क्रमे दूर हइते दूरतर हइया काने प्रवेश करिते लागिल—

ओगो निष्ठुर, फिरे एसो हे!
आमार करुण कोमल, एसो!
ओगो सजलजलदस्निग्धकान्त सुन्दर, फिरे एसो!

गानेर कथा क्रमे क्षीणतर अस्फुटतर हइया आसिल, आर बुझा गेल ना। किन्तु गानेर छन्दे शशिभूषणेर हृदये एकटा आन्दोलन तुलिया दिल, तिनि आपन मने गुन्‌गुन् करिया, पदेर पर पद रचना करिया योजना करिया चलिलेन, किछुते येन थामिते पारिलेन ना—

आमार निति-सुख, फिरे एसो! आमार चिरदुख, फिरे एसो!
आमार सब-सुख-दुख-मन्थन-धन, अन्तरे फिरे एसो!
आमार चिरवांच्छित, एसो! आमार चितसञ्चित, एसो!
ओहे चञ्चल, हे चिरन्तन, भुज-बन्धने फिरे एसो!
आमार वक्षे फिरिया एसो, आमार चक्षे फिरिया एसो,
आमार शयने स्वपने वसने भूषणे निखिल भुवने एसो!
आमार मुखेर हासिते एसो हे,
आमार चोखेर सलिले एसो!
आमार आदरे, आमार छलने,
आमार अभिमाने फिरे एसो!
आमार सर्वस्मरणे एसो,
आमार सर्वभरमे एसो—
आमार धरम करम सोहाग शरम जनम मरणे एसो!

गाड़ि यखन एकटि प्राचीरवेष्टित उद्यानेर मध्ये प्रवेश करिया

ओगो—अजी। बुझा गेल ना—समझ में न आया। तुलिया दिल—उठा दिया। थामिते......ना—रुक न सके।

निति—नित्य। चक्षे—आँखों में।

हासिते—हँसी में। चोखेर—आँखों के। आदरे—स्नेह में। छलने—छलना, भ्रम में। सोहाग—लाड़।

एकटि द्वितल अट्टालिकार सम्मुखे थामिल तखन शशिभूषणेर गान थामिल।

तिनि कोनो प्रश्न ना करिया भृत्येर निर्देशक्रमे वाड़िर मध्ये प्रवेश करिलेन।

ये घरे आसिया बसिलेन, से घरेर चारि दिकेइ वड़ो वड़ो काचेर आलमारिते विचित्र वर्णेर विचित्र मलाटेर सारि सारि वइ साजानो। सेइ दृश्य देखिवामात्र ताँहार पुरातन जीवन द्वितीयवार कारामुक्त हइया वाहिर हइल। एइ सोनार जले अङ्कित, नाना वर्ण रञ्जित वइगुलि आनन्दलोकेर मध्ये प्रवेश करिवार सुपरिचित रत्नखचित सिंहद्वारेर मतो ताँहार निकटे प्रतिभात हइल।

टेविलेर उपरेओ की कतकगुलि छिल। शशिभूषण ताँहार क्षीणदृष्टि लइया झुंकिया पड़िया देखिलेन, एकखानि विदीर्ण स्लेट, ताहार उपरे गुटिकयेक पुरातन खाता, एकखानि छिन्नप्राय धारापात, कथामाला एवं एकखानि काशीरामदासेर महाभारत।

स्लेटेर काठेर फ्रेमेर उपर शशिभूषणेर हस्ताक्षरे कालि दिया खुव मोटा करिया लेखा—गिरिवाला देवी। खाता ओ वइगुलिर उपरेओ ऐ एक हस्ताक्षरे एक नाम लिखित।

शशिभूषण कोथाय आसियाछेन वुझिते पारिलेन। ताँहार वक्षेर मध्ये रक्तस्रोत तरङ्गित हइया उठिल। मुक्त वातायन दिया वाहिरे चाहिलेन - सेखाने की चक्षे पड़िल। सेइ क्षुद्र गरादे-देओया घर, सेइ असमतल ग्राम्य पथ, सेइ डुरे-कापड़-परा छोटो मेयेटि। एवं सेइ आपनार शान्तिमय निश्चिन्त निभृत जीवनयात्रा।

सारि सारि वइ साजानो—पंक्तिवद्ध पुस्तकें सजी हुई थीं। देखिवामात्र—देखते ही। सोनार जले अंकित—सुनहरे अक्षरों से अंकित।

खाता—कॉपी। धारापात—अंकगणित की पहली पुस्तक। कालि–स्याही। चाहिलेन—ताका। डुरे-कापड़-परा—डोरिए की साड़ी पहने हुए।

सेदिनकार सेइ सुखेर जीवन किछुइ असामान्य वा अत्यधिक नहे; दिनेर पर दिन क्षुद्र काजे क्षुद्र सुखे अज्ञातसारे काटिया याइत, एवं ताँहार निजेर अध्ययनकार्येर मध्ये एकटि वालिका छात्रीर अध्यापनकार्य तुच्छ घटनार मध्येइ गण्य छिल; किन्तु ग्रामप्रान्तेर सेइ निर्जन दिनयापन, सेइ क्षुद्र शान्ति, सेइ क्षुद्र सुख, सेइ क्षुद्र वालिकार क्षुद्र मुखखानि समस्तइ येन स्वर्गेर मतो देशकालेर वहिर्भूत एवं आयत्तेर अतीत रूपे केवल आकाङ्क्षाराज्येर कल्पना-छायार मध्ये विराज करिते लागिल। सेदिनकार सेइ-समस्त छवि एवं स्मृति आजिकार एइ वर्षाम्लान प्रभातेर आलोकेर सहित एवं मनेर मध्ये मृदुगुञ्जित सेइ कीर्तनेर गानेर सहित जड़ित मिश्रित हइया एकप्रकार संगीतमय ज्योतिर्मय अपूर्वरूप धारण करिल। सेइ जङ्गले वेष्टित, कर्दमाक्त, संकीर्ण ग्रामपथेर मध्ये सेइ अनादृत व्यथित वालिकार अभिमानमलिन मुखेर शेष स्मृतिटि येन विधाताविरचित एक असाधारण आश्चर्य अपरूप अति-गभीर अति-वेदनापरिपूर्ण स्वर्गीय चित्रेर मतो ताँहार मानस-पटे प्रतिफलित हइया उठिल। ताहारइ सङ्गे कीर्तनेर करुण सुर वाजिते लागिल एवं मने हइल येन सेइ पल्लीवालिकार मुखे समस्त विश्वहृदयेर एक अनिर्वचनीय दुःख आपनार छाया निक्षेप करियाछे। शशिभूषण दुइ बाहुर मध्ये मुख लुकाइया सेइ टेबिलेर उपर सेइ स्लेट वहि खातार उपर मुख राखिया अनेक काल परे अनेक दिनेर स्वप्न देखिते लागिलेन।

अनेकक्षण परे मृदु शब्दे सचकित हइया मुख तुलिया देखिलेन। ताँहार सम्मुखे रुपार थालाय फलमूलमिष्टान्न राखिया गिरिवाला अदूरे दाँड़ाइया नीरवे अपेक्षा करितेछिल। तिनि मस्तक

अज्ञातसारे......याइत—अनजाने ही कट जाते। आयत्तेर अतीतरूपे—पकड़ के बाहर। आजिकार—आज के। बाजिते लागिल—बजने लगा। पल्लीवालिकार—ग्रामीण बालिका के। वहि—पुस्तक।

सचकित हइया—चौंक कर। रुपार थालाय—चाँदी की थाली में।

तुलितेइ निराभरणा शुभ्रवसना विधवावेशधारिणी गिरिबाला ताँहाके नतजानु हइया भूमिष्ठ प्रणाम करिल।

विधवा उठिया दाँड़ाइया यखन शीर्णमुख म्लानवर्ण भग्नशरीर शशिभूषणेर दिके सकरुण स्निग्धनेत्रे चाहिया देखिल, तखन ताहार दुइ चक्षु झरिया, दुइ कपोल बाहिया अश्रु पड़िते लागिल।

शशिभूषण ताहाके कुशलप्रश्न जिज्ञासा करिते चेष्टा करिलेन किन्तु भाषा खुँजिया पाइलेन ना; निरुद्ध अश्रुवाष्प ताँहार वाक्यपथ सबले अवरोध करिल, कथा एवं अश्रु उभयेइ निरुपायभावे हृदयेर मुखे कण्ठेर द्वारे बद्ध हइया रहिल। सेइ कीर्तनेर दल भिक्षा संग्रह करिते करिते अट्टालिकार सम्मुखे आसिया दाँड़ाइल एवं पुनः पुनः आवृत्ति करिया गाहिते लागिल—एसो एसो हे!

सितम्बर-नवम्बर, १८९४।

तुलितेइ—उठाते ही।
गाहिते लागिल—गाने लगा।

आमार प्रथम पक्षेर स्त्रीर मतो एमन गृहिणी अति दुर्लभ छिल। किन्तु आमार तखन वयस बेशि छिल ना, सहजेइ रसाधिक्य छिल, ताहार उपर आबार काव्यशास्त्रटा भालो करिया अध्ययन करियाछिलाम, ताइ अविमिश्र गृहिणीपनाय मन उठित ना। कालिदासेर सेइ श्लोकटा प्राय मने उदय हइत—

गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।

किन्तु आमार गृहिणीर काछे ललित कलाविधिर कोनो उपदेश खाटित ना एवं सखीभावे प्रणयसम्भाषण करिते गेले तिनि हासिया उड़ाइया दितेन। गङ्गार स्रोते येमन इन्द्रेर ऐरावत नाकाल हइया छिल, तेमनि ताँहार हासिर मुखे बड़ो बड़ो काव्येर टुकरा एवं भालो भालो आदरेर सम्भाषण मुहूर्तेर मध्ये अपदस्थ हइया भासिया याइत। ताँहार हासिबार आश्चर्य क्षमता छिल।

ताहार पर, आज बछर चारेक हइल आमाके सांघातिक रोगे धरिल। ओष्ठव्रण हइया, ज्वरविकार हइया, मरिबार दाखिल हइलाम। बाँचिबार आशा छिल ना। एकदिन एमन हइल ये, डाक्तार जबाब दिया गेल। एमन समय आमार एक आत्मीय कोथा हइते एक ब्रह्मचारी आनिया उपस्थित करिल; से गव्य घृतेर सहित एकटा शिकड़ बाँटिया आमाके खाओयाइया दिल। औषधेर गुणेइ हउक वा अदृष्टक्रमेइ हउक से यात्रा बाँचिया गेलाम।

रोगेर समय आमार स्त्री अहर्निशि एक मुहूर्तेर जन्य विश्राम करेन नाइ। सेइ क'टा दिन एकटि अबला स्त्रीलोक, मानुषेर सामान्य शक्ति लइया, प्राणपण व्याकुलतार सहित, द्वारे समागत

प्रथम पक्षेर स्त्रीर—पहली पत्नी के। **ताहार उपर**—तिस पर।

खाटित ना—लागू नहीं होता था। **नाकाल**—परेशान। **आदरेर**—स्नेहपूर्ण। **अपदस्थ**—अपमानित। **भासिया याइत**—विलुप्त हो जाते। **आश्चर्य**—अद्भुत।

ताहार पर—उसके बाद। **बछर**—बरस। **मरिबार दाखिल हइलाम**—मरने तक की नौबत आ गई। **कोथा हइते**—कहीं से। **शिकड़ बाँटिया**—जड़ी पीस कर। **से यात्रा**—उस बार।

यमदूतगुलार सङ्गे अनवरत युद्ध करियाछिलेन। ताँहार समस्त प्रेम, समस्त हृदय, समस्त यत्न दिया आमार एइ अयोग्य प्राणटाके येन वक्षेर शिशुर मतो दुइ हस्ते झाँपिया ढाकिया राखियाछिलेन। आहार छिल ना, निद्रा छिल ना, जगतेर आर-कोनो-किछुर प्रति दृष्टि छिल ना।

यम तखन पराहत व्याघ्रेर न्याय आमाके ताँहार कवल हइते फेलिया दिया चलिया गेलेन, किन्तु याइवार समय आमार स्त्रीके एकटा प्रवल थावा मारिया गेलेन।

आमार स्त्री तखन गर्भवती छिलेन, अनतिकाल परे एक मृत सन्तान प्रसव करिलेन। ताहार पर हइतेइ ताँहार नानाप्रकार जटिल व्यामोर सूत्रपात हइल। तखन आमि ताँहार सेवा आरम्भ करिया दिलाम। ताहाते तिनि विव्रत हइया उठिलेन। वलिते लागिलेन, "आः करो की! लोके वलिवे की! अमन करिया दिनरात्रि तुमि आमार घरे यातायात करियो ना।"

येन निजे पाखा खाइतेछि, एइरूप भान करिया रात्रे यदि ताँहाके ताँहार ज्वरेर समय पाखा करिते याइताम तो भारि एकटा काड़ा-काड़ि व्यापार पड़िया याइत। कोनोदिन यदि ताँहार शुश्रूषा-उपलक्ष्ये आमार आहारेर नियमित समय दश मिनिट उत्तीर्ण हइया याइत, तवे सेओ नानाप्रकार अनुनय अनुरोध अनुयोगेर कारण हइया दाँड़ाइत। स्वल्पमात्र सेवा करिते गेले हिते विपरीत हइया उठित। तिनि वलितेन, "पुरुषमानुषेर अतटा वाड़ावाड़ि भालो नय।"

आमादेर सेइ वरानगरेर वाड़िटि वोध करि तुमि देखियाछ। वाड़िर सामनेइ वागान एवं वागानेर सम्मुखेइ गङ्गा वहितेछे।

दिया—द्वारा, से। **झाँपिया**—झाँप कर, ढक कर।

थावा—पंजा, थाप।

व्यामोर—बीमारियों, व्याधियों का। **विव्रत**—संकुचित, परेशान।

येन....खाइतेछि—मानो अपने को ही हवा कर रहा हूँ। **काड़ाकाड़ी**—छीना-झपटी। **वाड़ावाड़ि**—अति।

आमादेर शोबार घरेर नीचेइ दक्षिणेर दिके खानिकटा जमि मेहेदिर बेड़ा दिया घिरिया आमार स्त्री निजेर मनेर मतो एक-टुकरा बागान बानाइयाछिलेन। समस्त बागानटिर मध्ये सेइ खण्डटिइ अत्यन्त सादासिधा एवं नितान्त दिशि। अर्थात् ताहार मध्ये गन्धेर अपेक्षा वर्णेर बाहार, फुलेर अपेक्षा पातार वैचित्र्य छिल ना, एवं टबेर मध्ये अकिञ्चित्कर उद्भिज्जेर पार्श्वे काठि अवलम्बन करिया कागजे निर्मित लाटिन नामेर जयध्वजा उड़ित ना। बेल जुँइ गोलाप गन्धराज करवी एवं रजनीगन्धारइ प्रादुर्भाव किछु बेशि। प्रकाण्ड एकटा बकुलगाछेर तला सादा मार्बल पाथर दिया बाँधानो छिल। सुस्थ अवस्थाय तिनि निजे दाँड़ाइया दुइ-बेला ताहा धुइया साफ कराइया राखितेन। ग्रीष्मकाले काजेर अवकाशे सन्ध्यार समय सेइ ताँहार बसिबार स्थान छिल। सेखान हइते गङ्गा देखा याइत, किन्तु गङ्गा हइते कुठिर पान्सिर बाबुरा ताँहाके देखिते पाइत ना।

अनेकदिन शय्यागत थाकिया एकदिन चैत्रेर शुक्लपक्ष सन्ध्याय तिनि कहिलेन, "घरे बद्ध थाकिया आमार प्राण केमन करितेछे; आज एकबार आमार सेइ बागाने गिया बसिब।"

आमि ताँहाके बहु यत्ने धरिया धीरे धीरे सेइ बकुलतलेर प्रस्तर-वेदिकाय लइया गिया शयन कराइया दिलाम। आमारइ जानुर उपरे ताँहार माथाटि तुलिया राखिते पारिताम, किन्तु जानि सेटाके तिनि अद्भुत आचरण बलिया गण्य करिबेन, ताइ एकटि बालिश आनिया ताँहार माथार तलाय राखिलाम।

दुटि-एकटि करिया प्रस्फुट बकुल फुल झरिते लागिल एवं

शोवार—सोने के। **खानिकटा**—कुछ, थोड़ी-सी। **मेहेदिर बेड़ा दिया**—मेंहदी के बड़े से। **दिशि**—देशी। **अकिञ्चित्कर**—नगण्य। **काठि**—खपची। **बेल**—बेला। **जुंइ**—जूही। **गोलाप**—गुलाब। **करवी**—कनेर। **बकुल**—मोलसिरी। **सुस्थ**—स्वस्थ। **सादा**—सफेद। **कुठिर**—कोठी के। **पान्सिर**—पिनेस (अं०), छोटी नौका विशेष।

धरिया—पकड़ कर। **तुलिया**—उठा कर। **बालिश**—तकिया।

शाखान्तराल हइते छायांकित ज्योत्स्ना ताँहार शीर्ण मुखेर उपर आसिया पड़िल। चारि दिक शान्त निस्तब्ध; सेइ घनगन्धपूर्ण छायान्धकारे एक पार्श्वे नीरवे वसिया ताँहार मुखेर दिके चाहिया आमार चोखे जल आसिल।

आमि धीरे धीरे काछेर गोड़ाय आसिया दुइ हस्ते ताँहार एकटा उत्तप्त शीर्ण हात तुलिया लइलाम। तिनि ताहाते कोनो आपत्ति करिलेन ना। किछुक्षण एइरूप चुप करिया वसिया थाकिया आमार हृदय केमन उद्वेलित हइया उठिल; आमि बलिया उठिलाम, "तोमार भालोबासा आमि कोनो काले भुलिब ना।"

तखनि बुझिलाम, कथाटा बलिबार कोनो आवश्यक छिल ना। आमार स्त्री हासिया उठिलेन। से हासिते लज्जा छिल, सुख छिल एवं किञ्चित् अविश्वास छिल, एवं उहार मध्ये अनेकटा परिमाणे परिहासेर तीव्रताओ छिल। प्रतिवादस्वरूपे एकटि कथामात्र ना बलिया केवल ताँहार सेइ हासिर द्वारा जानाइलेन, "कोनो काले भुलिबे ना, इहा कखनो सम्भव नहे एवं आमि ताहा प्रत्याशाओ करि ना।"

ऐ सुमिष्ट सुतीक्ष्ण हासिर भयेइ आमि कखनो आमार स्त्रीर सङ्गे रीतिमत प्रेमालाप करिते साहस करि नाइ। असाक्षाते ये-सकल कथा मने उदय हइत, ताँहार सम्मुखे गेलेइ सेगुलाके नितान्त बाजे कथा बलिया बोध हइत। छापार अक्षरे ये-सब कथा पड़िले दुइ चक्षु बाहिया दर-दर धाराय जल पड़िते थाके सेइगुला मुखे बलिते गेले केन ये हास्येर उद्रेक करे, ए पर्यन्त बुझिते पारिलाम ना।

वादप्रतिवाद कथाय चले किन्तु हासिर उपरे तर्क चले ना, काजेइ चुप करिया याइते हइल। ज्योत्स्ना उज्ज्वलतर हइया उठिल,

---

गोड़ाय—सन्निकट। **भालोबासा**—प्रेम।

उहार मध्ये—उसमें।

रीतिमत—यथारीति। **सेगुलाके**—वे सब (बातें)। **बाजे**—निरर्थक, फ़िजूल।

काजेइ—इसीलिए।

एकटा कोकिल क्रमागतइ कुहु कुहु डाकिया अस्थिर हइया गेल। आमि वसिया वसिया भाविते लागिलाम, एमन ज्योत्स्नारात्रेओ कि पिकवधू वधिर हइया आछे।

वहु चिकित्साय आमार स्त्रीर रोग-उपशमेर कोनो लक्षण देखा गेल ना। डाक्तार वलिल, "एकवार वायुपरिवर्तन करिया देखिले भालो हय।" आमि स्त्रीके लइया एलाहावादे गेलाम।

एइखाने दक्षिणावावु हठात् थमकिया चुप करिलेन। सन्दिग्धभावे आमार मुखेर दिके चाहिलेन, ताहार पर दुइ हातेर मध्ये माथा राखिया भाविते लागिलेन। आमिओ चुप करिया रहिलाम। कुलुङ्गिते केरोसिन मिट् मिट् करिया ज्वलिते लागिल एवं निस्तब्ध घरे मशार भन् भन् शब्द सुस्पष्ट हइया उठिल। हठात् मौन भङ्ग करिया दक्षिणावावु वलिते आरम्भ करिलेन—

सेखाने हारान डाक्तार आमार स्त्रीके चिकित्सा करिते लागिलेन।

अवशेषे अनेककाल एकभावे काटाइया डाक्तारओ वलिलेन, आमिओ वुझिलाम एवं आमार स्त्रीओ वुझिलेन ये, ताँहार व्यामो सारिवार नहे। ताँहाके चिररुग्ण हइयाइ काटाइते हइवे।

तखन एकदिन आमार स्त्री आमाके वलिलेन, "यखन व्यामोओ सारिवे ना एवं शीघ्र आमार मरिवार आशाओ नाइ, तखन आर-कतदिन एइ जीवन्मृतके लइया काटाइवे। तुमि आर-एकटा विवाह करो।"

एटा येन केवल एकटा सुयुक्ति एवं सद्‌विवेचनार कथा—इहार

भाविते—सोचने।

थमकिया—ठिठक कर। कुलुङ्गिते—ताक में। मिट् मिट् करिया—टिमटिमाते हुए। मशार—मच्छरों का।

व्यामो सारिवार नहे—बीमारी अच्छी होनेवाली नहीं। काटाइते हइवे—(जिंदगी) काटनी पड़ेगी।

मध्ये ये भारि एकटा महत्त्व वीरत्व वा असामान्य किछु आछे, एमन भाव ताँहार लेशमात्र छिलो ना ।

एइबार आमार हासिबार पाला छिल । किन्तु, आमार कि तेमन करिया हासिबार क्षमता आछे । आमि उपन्यासेर प्रधान नायकेर न्याय गम्भीर समुच्चभावे बलिते लागिलाम, "यतदिन एइ देहे जीवन आछे—"

तिनि बाधा दिया कहिलेन, "नाओ नाओ ! आर बलिते हइबे ना ! तोमार कथा शुनिया आमि आर बाँचि ना !"

आमि पराजय स्वीकार ना करिया बलिलाम, "ए जीवने आर काहाकेओ भालोबासिते पारिब ना ।"

शुनिया आमार स्त्री भारि हासिया उठिलेन । तखन आमाके क्षान्त हइते हइल ।

जानि ना, तखन निजेर काछेओ कखनो स्पष्ट स्वीकार करियाछि कि ना किन्तु एखन बुझिते पारितेछि, एइ आरोग्य-आशा-हीन सेवाकार्ये आमि मने मने परिश्रान्त हइया गियाछिलाम। ए कार्ये ये भङ्ग दिब, एमन कल्पनाओ आमार मने छिल ना; अथच, चिरजीवन एइ चिररुग्णके लइया यापन करिते हइबे ए कल्पनाओ आमार निकट पीड़ाजनक हइयाछिल । हाय, प्रथम-यौवनकाले यखन सम्मुखे ताकाइयाछिलाम तखन प्रेमेर कुहके, सुखेर आश्वासे, सौन्दर्येर मरीचिकाय समस्त भविष्यत् जीवन प्रफुल्ल देखाइतेछिल । आज हइते शेष पर्यन्त केवलइ आशाहीन सुदीर्घ सतृष्ण मरुभूमि ।

आमार सेवार मध्ये सेइ आन्तरिक श्रान्ति निश्चय तिनि देखिते पाइयाछिलेन । तखन जानिताम ना किन्तु एखन सन्देहमात्र नाइ ये, तिनि आमाके युक्ताक्षरहीन प्रथमभाग शिशुशिक्षार मतो अति सहजे बुझितेन; सेइजन्य यखन उपन्यासेर नायक

पाला—बारी । नाओ नाओ—बस बस । क्षान्त—विरत । भङ्ग—बिरति । कुहके—मायाजाल में ।

साजिया गम्भीरभावे ताँहार निकट कवित्व फलाइते याइताम तिनि एमन सुगभीर स्नेह अथच अनिवार्य कौतुकेर सहित हासिया उठिलेन। आमार निजेर अगोचर अन्तरेर कथाओ अन्तर्यामीर न्याय तिनि समस्तइ जानितेन ए कथा मने करिले आजओ लज्जाय मरिया याइते इच्छा करे।

हारान डाक्तार आमादेर स्वजातीय। ताँहार वाड़िते आमार प्रायइ निमन्त्रण थाकित। किछुदिन यातायातेर पर डाक्तार ताँहार मेयेटिर सङ्गे आमार परिचय कराइया दिलेन। मेयेटि अविवाहित; ताहार वयस पनेरो हइवे। डाक्तार वलेन, तिनि मनेर मतो पात्र पान नाइ वलिया विवाह देन नाइ। किन्तु, वाहिरेर लोकेर काछे गुजव शुनिताम—मेयेटिर कुलेर दोष छिल।

किन्तु, आर कोनो दोष छिल ना। येमन सुरूप तेमनि सुशिक्षा। सेइजन्य माझे माझे एक-एकदिन ताँहार सहित नाना कथार आलोचना करिते करिते आमार वाड़ि फिरिते रात हइत, आमार स्त्रीके औषध खाओयाइवार समय उत्तीर्ण हइया याइत। तिनि जानितेन आमि हारान डाक्तारेर वाड़ि गियाछि, किन्तु विलम्बेर कारण एकदिनओ आमाके जिज्ञासाओ करेन नाइ।

मरु-भूमिर मध्ये आर-एकवार मरीचिका देखिते लागिलाम। तृष्णा यखन वुक पर्यन्त तखन चोखेर सामने कूलपरिपूर्ण स्वच्छ जल छलछल ढलढल करिते लागिल। तखन मनके प्राणपणे टानिया आर फिराइते पारिलाम ना।

रोगीर घर आमार काछे द्विगुण निरानन्द हइया उठिल। तखन प्रायइ शुश्रूषा करिवार एवं औषध खाओयाइवार नियम भङ्ग हइते लागिल।

साजिया—छद्मरूप धारण करके ('हीरो' वन कर—व्यंग्य)। **फलाइते**—प्रदर्शन करने।

पनेरो—पन्द्रह। **पात्र**—वर। **वलिया**—इसलिए। **गुजव**—अफवाह। **वुक**—वक्ष। **टानिया**—खींच कर।

हारान डाक्तार आमाके प्राय माझे माझे बलितेन, याहादेर रोग आरोग्य हइबार कोनो सम्भावना नाइ, ताहादेर पक्षे मृत्युइ भालो ; कारण, बाँचिया ताहादेर निजेरओ सुख नाइ, अन्येरओ असुख। कथाटा साधारणभावे बलिते दोष नाइ, तथापि आमार स्त्रीके लक्ष्य करिया एमन प्रसङ्ग उत्थापन करा ताँहार उचित हय नाइ। किन्तु, मानुषेर जीवनमृत्यु सम्बन्धे डाक्तारदेर मन एमन असाड़ ये, ताहारा ठिक आमादेर मनेर अवस्था बुझिते पारे ना।

हठात् एकदिन पाशेर घर हइते शुनिते पाइलाम, आमार स्त्री हारानबाबुके बलितेछेन, "डाक्तार, कतकगुला मिथ्या औषध गिलाइया डाक्तारखानार देना बाड़ाइतेछ केन। आमार प्राण-टाइ यखन एकटा व्यामो, तखन एमन एकटा औषध दाओ याहाते शीघ्र एइ प्राणटा याय।"

डाक्तार बलिलेन, "छि, एमन कथा बलिबेन ना।"

कथाटा शुनिया हठात् आमार वक्षे बड़ो आघात लागिल। डाक्तार चलिया गेले आमार स्त्रीर घरे गिया ताँहार शय्याप्रान्ते बसिलाम, ताँहार कपाले धीरे धीरे हाथ बुलाइया दिते लागिलाम। तिनि कहिलेन, "ए घर बड़ो गरम, तुमि बाहिरे याओ। तोमार बेड़ाइते याइबार समय हइयाछे। खानिकटा ना बेड़ाइया आसिले आबार रात्रे तोमार क्षुधा हइबे ना।"

बेड़ाइते याओयार अर्थ डाक्तारेर बाड़ि याओया। आमिइ ताँहाके बुझाइयाछिलाम, क्षुधासञ्चारेर पक्षे खानिकटा बेड़ाइया आसा विशेष आवश्यक। एखन निश्चय बलिते पारि, तिनि प्रतिदिनइ आमार एइ छलनाटुकु बुझितेन। आमि निर्बोध, मने करिताम तिनि निर्बोध।

माझे-माझे—बीच-बीच में। **याहादेर**—जिनका। **कथाटा**—बात को। **असाड़**—अनुभूतिहीन, जड़।

कतकगुला—इतनी सारी। **गिलाइया**—निगलवा कर। **देना**—कर्ज। **बुलाइया दिते**—फेरने। **बेड़ाइते**—टहलने। **खानिकटा**—कुछ थोड़ा। **बुझाइयाछिलाम**—समझाया था। **बुझितेन**—समझती थी।

एइ वलिया दक्षिणाचरणबाबु अनेकक्षण करतले माथा राखिया चुप करिया वसिया रहिलेन। अवशेषे कहिलेन, "आमाके एकग्लास जल आनिया दाओ।" जल खाइया वलिते लागिलेन—

एकदिन डाक्तारबाबुर कन्या मनोरमा आमार स्त्रीके देखिते आसिवार इच्छा प्रकाश करिलेन। जानि ना, की कारणे ताँहार से प्रस्ताव आमार भालो लागिल ना। किन्तु, प्रतिवाद करिवार कोनो हेतु छिल ना। तिनि एकदिन सन्ध्यावेलाय आमादेर वासाय आसिया उपस्थित हइलेन।

सेदिन आमार स्त्रीर वेदना अन्य दिनेर अपेक्षा किछु वाड़िया उठियाछिल। येदिन ताँहार व्यथा वाड़े सेदिन तिनि अत्यन्त स्थिर निस्तव्ध हइया थाकेन; केवल माझे माझे मुष्टि बद्ध हइते थाके एवं मुख नील हइया आसे, ताहातेइ ताँहार यन्त्रणा वुझा याय। घरे कोनो साड़ा छिल ना, आमि शय्याप्रान्ते चुप करिया वसियाछिलाम; सेदिन आमाके वेड़ाइते याइते अनुरोध करेन एमन सामर्थ्य ताँहार छिल ना, किम्वा हयतो वड़ो कष्टेर समय आमि काछे थाकि एमन इच्छा ताँहार मने मने छिल। चोखे लागिवे वलिया केरोसिनेर आलोटा द्वारेर पार्श्वे छिल। घर अन्धकार एवं निस्तव्ध। केवल एक-एक-वार यन्त्रणार किञ्चित् उपशमे आमार स्त्रीर गभीर दीर्घनिश्वास शुना याइतेछिल।

एमन समये मनोरमा घरेर प्रवेशद्वारे दाँड़ाइलेन। विपरीत दिक हइते केरोसिनेर आलो आसिया ताँहार मुखेर उपर पड़िल।

खाइया—पी कर।

मुष्टि बद्ध हइते थाके—मुट्ठियाँ वँध जतीं। **वुझा याय**—समझ में आती। **साड़ा**—आहट। **वसियाछिलाम**—वैठा था। **वेड़ाइते**—घूमने। **करेन**—करें। **काछे थाकि**—निकट रहूँ। **चोखे लागिवे**—आँखों में (चौंध) लगेगी। **आलोटा**—प्रकाश, लालटेन आदि।

दाँड़ाइलेन—खड़ी हो गईं।

आलो-आँधारे लागिया तिनि किछुक्षण घरेर किछु देखिते ना पाइया द्वारेर निकट दाँड़ाइया इतस्तत करिते लागिलेन।

आमार स्त्री चमकिया आमार हात धरिया जिज्ञासा करिलेन, "ओ के!"—ताँहार सेइ दुर्बल अवस्थाय हठात् अचेना लोक देखिया भय पाइया आमाके दुइ-तिनवार अस्फुटस्वरे प्रश्न करिलेन, "ओ के! ओ के गो!"

आमार केमन दुर्बुद्धि हइल आमि प्रथमेइ वलिया फेलिलाम, "आमि चिनि ना।" वलिवामात्रइ के येन आमाके कशाघात करिल। परेर मुहूर्तेइ वलिलाम, "ओः, आमादेर डाक्तार-बाबुर कन्या!"

स्त्री एकवार आमार मुखेर दिके चाहिलेन; आमि ताँहार मुखेर दिके चाहिते पारिलाम ना। परक्षणेइ तिनि क्षीणस्वरे अभ्यागतके वलिलेन, "आपनि आसुन।" आमाके वलिलेन, "आलोटा धरो।"

मनोरमा घरे आसिया वसिलेन। ताँहार सहित रोगिणीर अल्पस्वल्प आलाप चलिते लागिल। एमनसमय डाक्तारवावु आसिया उपस्थित हइलेन।

तिनि ताँहार डाक्तारखाना हइते दुइ शिशि ओषुध सङ्गे आनियाछिलेन। सेइ दुटि शिशि वाहिर करिया आमार स्त्रीके बलिलेन, "एइ नील शिशिटा मालिस करिवार, आर एइटि खाइवार। देखिवेन, दुइटाते मिलाइवेन ना, ए ओषुधटा भारि विष।"

आमाकेओ एकवार सतर्क करिया दिया औषध दुटि शय्या-पार्श्ववर्ती टेविले राखिया दिलेन। विदाय लइवार समय डाक्तार ताँहार कन्याके डाकिलेन।

आलो-आँधारे लागिया—चौंध लगने से।

चमकिया—चौंक कर। **हात धरिया**—हाथ पकड़ कर। **अचेना**—अपरिचित। **चिनि ना**—नहीं पहचानता। **वलिवामात्रइ**—कहते ही। **चाहिलेन**—ताका। **आसुन**—आइए। **आलोटा धरो**—रोशनी दिखाओ। **आनियाछिलेन**—लाए थे। **दुटि**—दोनों। **डाकिलेन**—पुकारा।

मनोरमा कहिलेन, "वाबा, आमि थाकि ना केन। सङ्गे स्त्रीलोक केह नाइ, इँहाके सेवा करिबे के।"

आमार स्त्री व्यस्त हइया उठिलेन; बलिलेन, "ना, ना, आपनि कष्ट करिबेन ना। पुरानो झि आछे, से आमाके मायेर मतो यत्न करे।"

डाक्तार हासिया बलिलेन, "उनि मा-लक्ष्मी, चिरकाल परेर सेवा करिया आसियाछेन, अन्येर सेवा सहिते पारेन ना।"

कन्याके लइया डाक्तार गमनेर उद्योग करितेछेन एमनसमय आमार स्त्री बलिलेन, "डाक्तारबाबु, इनि एइ बद्ध घरे अनेकक्षण वसिया आछेन, इँहाके एकबार बाहिरे बेड़ाइया लइया आसिते पारेन?"

डाक्तारबाबु आमाके कहिलेन, "आसुन-ना, आपनाके नदीर धार हइया एकबार बेड़ाइया आनि।"

आमि ईषत् आपत्ति देखाइया अनतिविलम्बे सम्मत हइलाम। डाक्तारबाबु याइबार समय दुइ शिशि औषध सम्बन्धे आबार आमार स्त्रीके सतर्क करिया दिलेन।

सेदिन डाक्तारेर बाड़ितेइ आहार करिलाम। फिरिया आसिते रात हइल। आसिया देखि आमार स्त्री छट्फट् करितेछेन। अनुतापे विद्ध हइया जिज्ञासा करिलाम, "तोमार कि व्यथा बाड़ियाछे।"

तिनि उत्तर करिते पारिलेन ना, नीरवे आमार मुखेर दिके चाहिलेन। तखन ताँहार कण्ठरोध हइयाछे।

बाबा, आमि थाकि ना केन—पिताजी, मैं रुक क्यों न जाऊँ। **इँहाके**—इनकी।

व्यस्त—परेशान। **झि**—महरी, दासी। **यत्न करे**—देख-भाल करती है। **उनि**—वे। **परेर**—दूसरों की।

एमनसमय—इतने में। **इनि**—ये। **इँहाके**—इन्हें।

धार—किनारे।

आबार—फिर। **बाड़ितेइ**—घर पर ही। **फिरिया आसिते**—लौटते। **बाड़ियाछे**—बढ़ गई है।

आमि तत्क्षणात् सेइ रात्रेइ डाक्तारके डाकाइया आनिलाम।

डाक्तार प्रथमटा आसिया अनेकक्षण किछुइ बुझिते पारिलेन ना। अवशेषे जिज्ञासा करिलेन, "सेइ व्यथाटा कि बाड़िया उठियाछे। औषधटा एकबार मालिश करिले हय ना?"

बलिया शिशिटा टेबिले हइते लइया देखिलेन, सेटा खालि।

आमार स्त्रीके जिज्ञासा करिलेन, "आपनि कि भुल करिया एइ ओषुधटा खाइयाछेन।"

आमार स्त्री घाड़ नाड़िया नीरवे जानाइलेन, "हाँ।"

डाक्तार तत्क्षणात् गाड़ि करिया ताँहार बाड़ि हइते पाम्प् आनिते छुटिलेन। आमि अर्धमूर्छितेर न्याय आमार स्त्रीर बिछानार उपर गिया पड़िलाम।

तखन, माता ताहार पीड़ित शिशुके येमन करिया सान्त्वना करे तेमनि करिया तिनि आमार माथा ताँहार वक्षेर काछे टानिया लइया दुइ हस्तेर स्पर्शे आमाके ताँहार मनेर कथा बुझाइते चेष्टा करिलेन। केवल ताँहार सेइ करुण स्पर्शेर द्वाराइ आमाके वारम्वार करिया बलिते लागिलेन, "शोक करियो ना, भालोइ हइयाछे, तुमि सुखी हइबे, एवं सेइ मने करिया आमि सुखे मरिलाम।"

डाक्तार यखन फिरिलेन, तखन जीवनेर सङ्गे सङ्गे आमार स्त्रीर सकल यन्त्रणार अवसान हइयाछे।

दक्षिणाचरण आर-एकबार जल खाइया बलिलेन, "उः, बड़ो गरम!" बलिया द्रुत बाहिर हइया बारकयेक बारान्दाय पायचारि करिया आसिया बसिलेन। बेश बोझा गेल, तिनि

डाकाइया आनिलाम—बुलवा लिया।

हय ना—कैसा रहे।

घाड़ नाड़िया—गर्दन हिला कर।

छुटिलेन—दौड़े।

येमन करिया—जिस प्रकार। **करे**—देती है। **तेमनि करिया**—उसी प्रकार। **बुझाइते**—समझाने की।

पायचारि—चहल कदमी। **बेश बोझा गेल**—साफ समझ में आ गया।

बलिते चाहेन ना किन्तु आमि येन जादु करिया ताँहार निकट हइते कथा काड़िया लइतेछि। आबार आरम्भ करिलेन—

मनोरमाके विवाह करिया देशे फिरिलाम।

मनोरमा ताहार पितार सम्मतिक्रमे आमाके विवाह करिल; किन्तु आमि यखन ताहाके आदरेर कथा बलिताम, प्रेमालाप करिया ताहार हृदय अधिकार करिबार चेष्टा करिताम, से हासित ना, गम्भीर हइया थाकित। ताहार मनेर कोथाय कोन्‌खाने की खटका लागिया गियाछिल, आमि केमन करिया बुझिब।

एइ समय आमार मद खाइबार नेशा अत्यन्त बाड़िया उठिल।

एकदिन प्रथम शरतेर सन्ध्याय मनोरमाके लइया आमादेर बरानगरेर बागाने बेड़ाइतेछि। छम्‌छमे अन्धकार हइया आसियाछे। पाखिदेर बासाय डाना झाड़िबार शब्दटुकुओ नाइ। केवल बेड़ाइबार पथेर दुइ धारे घनछायावृत झाउगाछ बातासे सशब्दे काँपितेछिल।

श्रान्ति बोध करितेइ मनोरमा सेइ बकुलतलार शुभ्र पाथरेर बेदीर उपर आसिया निजेर दुइ बाहुर उपर माथा राखिया शयन करिल। आमिओ काछे आसिया बसिलाम।

सेखाने अन्धकार आरओ घनीभूत; यतटुकु आकाश देखा याइतेछे एकेबारे ताराय आच्छन्न; तरुतलेर झिल्लिध्वनि येन अनन्तगगनवक्षच्युत निःशब्दतार निम्नप्रान्ते एकटि शब्देर सरु पाड़ बुनिया दितेछे।

सेदिनओ बैकाले आमि किछु मद खाइयाछिलाम, मनटा बेश एकटु तरलावस्थाय छिल। अन्धकार यखन चोखे सहिया आसिल

कथा काड़िया लइतेछि—बात निकलवाए ले रहा हूँ। **आबार**—फिर।
आदरेर—प्यार की। **कोन्‌खाने**—किस जगह। **बुझिब**—समझूंगा।
मद खाइबार नेशा—शराब पीने का नशा।
छम्‌छमे—गहन। **बासाय**—घोंसलों में। **गाछ**—पेड़।
सेइ—उसी। **माथा**—सिर।
यतटुकु—जितना, तनिका-सा। **सरु पाड़**—पतली, बारीक किनारी।
बैकाले—अपराह्न में। **चोखे सहिया आसिल**—आँखों को सहन हो गया।

तखन वनच्छायातले पाण्डुर वर्णे अङ्कित सेइ शिथिल-अञ्चल श्रान्त-काय रमणीर आबछाया मूर्तिटि आमार मने एक अनिवार्य आवेगेर सञ्चार करिल। मने हइल, ओ येन एकटि छाया, ओके येन किछुतेइ दुइ बाहु दिया धरिते पारिब ना।

एमनसमय अन्धकार झाउगाछेर शिखरदेशे येन आगुन धरिया उठिल; ताहार परे कृष्णपक्षेर जीर्णप्रान्त हलुदवर्ण चाँद धीरे धीरे गाछेर माथार उपरकार आकाशे आरोहण करिल; सादा पाथरेर उपर सादा शाड़ि-परा सेइ श्रान्तशयान रमणीर मुखेर उपर ज्योत्स्ना आसिया पड़िल। आमि आर थाकिते पारिलाम ना। काछे आसिया दुइ हाते ताहार हातटि तुलिया धरिया कहिलाम, "मनोरमा, तुमि आमाके विश्वास कर ना, किन्तु तोमाके आमि भालोबासि। तोमाके आमि कोनोकाले भुलिते पारिब ना।"

कथाटा बलिबामात्र चमकिया उठिलाम; मने पड़िल, ठिक एइ कथाटा आर-एकदिन आर-काहाकेओ बलियाछि! एवं सेइ मुहूर्तेइ बकुलगाछेर शाखार उपर दिया, झाउगाछेर माथार उपर दिया, कृष्णपक्षेर पीतवर्ण भाङा चाँदेर नीचे दिया, गङ्गार पूर्वपार हइते गङ्गार सुदूर पश्चिमपार पर्यन्त हाहा—हाहा—हाहा—करिया अति द्रुतवेगे एकटा हासि बहिया गेल। सेटा मर्मभेदी हासि कि अभ्रभेदी हाहाकार, बलिते पारि ना। आमि तद्दण्डेइ पाथरेर वेदीर उपर हइते मूर्छित हइया नीचे पड़िया गेलाम।

मूर्छाभङ्गे देखिलाम, आमार घरे बिछानाय शुइया आछि। स्त्री जिज्ञासा करिलेन, "तोमार हठात् एमन हइल केन।"

आबछाया—धुंधली, अस्पष्ट। **येन**—मानो।

झाउगाछेर—झाऊ के वृक्षों की। **आगुन धरिया उठिल**—आग लग गई। **हलुदवर्ण**—हल्दी के रंग का। **भालोबासि**—प्रेम करता हूँ।

आर-काहाकेओ—और किसी से भी। **भाङा चाँदेर**—भग्न, खण्डित चांद के। **हासि बहिया गेल**—हँसी (की लहर) बह गई।

आमि काँपिया उठिया बलिलाम, "शुनिते पाओ नाइ समस्त आकाश भरिया हाहा करिया एकटा हासि वहिया गेल?"

स्त्री हासिया कहिलेन, "से बुझि हासि? सार बाँधिया दीर्घ एकझाँक पाखि उड़िया गेल, ताहादेरइ पाखार शब्द शुनियाछिलाम। तुमि एत अल्पेइ भय पाओ?"

दिनेर वेलाय स्पष्ट बुझिते पारिलाम, पाखिर झाँक उड़िवार शब्दइ वटे, एइ समये उत्तरदेश हइते हंसश्रेणी नदीर चरे चरिवार जन्य आसितेछे। किन्तु सन्ध्या हइले से विश्वास राखिते पारिताम ना। तखन मने हइत, चारि दिके समस्त अन्धकार भरिया घन हासि जमा हइया रहियाछे, सामान्य एकटा उपलक्ष्ये हठात् आकाश भरिया अन्धकार विदीर्ण करिया ध्वनित हइया उठिवे। अवशेषे एमन हइल, सन्ध्यार पर मनोरमार सहित एकटा कथा बलिते आमार साहस हइत ना।

तखन आमादेर बरानगरेर वाड़ि छाड़िया मनोरमाके लइया बोटे करिया बाहिर हइलाम। अग्रहायण मासे नदीर वातासे समस्त भय चलिया गेल। कयदिन बड़ो सुखे छिलाम। चारि दिकेर सौन्दर्ये आकृष्ट हइया मनोरमाओ येन ताहार हृदयेर रुद्ध द्वार अनेक दिन परे धीरे धीरे आमार निकट खुलिते लागिल।

गङ्गा छाड़ाइया, ख'ड़े छाड़ाइया, अवशेष पद्माय आसिया पौँछिलाम। भयंकरी पद्मा तखन हेमन्तेर विवरलीन भुजङ्गिनीर मतो कृशनिर्जीवभावे सुदीर्घ शीतनिद्राय निविष्ट छिल। उत्तरपारे जनशून्य तृणशून्य दिगन्तप्रसारित वालिर चर धू धू करितेछे, एवं दक्षिणेर उच्च पाड़ेर उपर ग्रामेर आमबागानगुलि एइ राक्षसी

आकाश भरिया—आकाश को पूर्ण करके।
सार बाँधिया—पंक्ति बाँध कर। एकझाँक—एक झुण्ड।
शब्दइ वटे—आवाज ही थी। चरे—नदी के बीच की रेतीली जगह में।
बोटे करिया—बोट में बैठ कर।
छाड़ाइया—(पीछे) छोड़ कर। ख'ड़े—नदी (?) वालिर चर—नदी के बीच की वलुई जगह। उच्च पाड़ेर—ऊँचे किनारे के।

नदीर नितान्त मुखेर काछे जोड़हस्ते दाँड़ाइया काँपितेछे; पद्मा घुमेर घोरे एक-एकबार पाश फिरितेछे एवं विदीर्ण तटभूमि झुप्‌झाप् करिया भाङिया भाङिया पड़ितेछे।

एइखाने बेड़ाइबार सुविधा देखिया बोट बाँधिलाम।

एकदिन आमरा दुइजने बेड़ाइते बेड़ाइते बहु दूरे चलिया गेलाम। सूर्यास्तेर स्वर्णच्छाया मिलाइया याइतेइ शुक्लपक्षेर निर्मल चन्द्रालोक देखिते देखिते फुटिया उठिल। सेइ अन्तहीन शुभ्र वालिर चरेर उपर यखन अजस्र अवारित उच्छ्वसित ज्योत्स्ना एकेबारे आकाशेर सीमान्त पर्यन्त प्रसारित हइया गेल, तखन मने हइल येन जनशून्य चन्द्रलोकेर असीम स्वप्नराज्येर मध्ये केवल आमरा दुइजने भ्रमण करितेछि। एकटि लाल शाल मनोरमार माथार उपर हइते नामिया ताहार मुखखानि वेष्टन करिया ताहार शरीरटि आच्छन्न करिया रहियाछे। निस्तब्धता यखन निबिड़ हइया आसिल, केवल एकटि सीमाहीन दिशाहीन शुभ्रता एवं शून्यता छाड़ा यखन आर किछुइ रहिल ना, तखन मनोरमा धीरे धीरे हातटि बाहिर करिया आमार हात चापिया धरिल; अत्यन्त काछे आसिया से येन ताहार समस्त शरीरमन जीवनयौवन आमार उपर विन्यस्त करिया नितान्त निर्भर करिया दाँड़ाइल। पुलकित उद्वेलित हृदये मने करिलाम, घरेर मध्ये कि यथेष्ट भालोबासा याय। एइरूप अनावृत अवारित अनन्त आकाश नहिले कि दुटि मानुषके कोथाओ धरे। तखन मने हइल, आमादेर घर नाइ, द्वार नाइ, कोथाओ फिरिबार नाइ, एमनि करिया हाते हाते धरिया गम्यहीन पथे उद्देश्यहीन भ्रमणे चन्द्रालोकित शून्यतार उपर दिया अवारितभावे चलिया याइब।

घुमेर घोरे—नींद की खुमारी में। **पाश फिरितेछे**—करवट बदल रही है। **झुप्‌झाप्**—छपाक-छपाक। **भाङिया**—टूट कर।

फुटिया उठिल—(चाँदनी) निखर आई। **अवारित**—अबाध। **छाड़ा**—अतिरिक्त। **विन्यस्त करिया**—सौंप कर। **कि दुटि...धरे**—क्या दो जने अँट (समा) पाते हैं।

एइरूपे चलिते चलिते एक जायगाय आसिया देखिलाम, सेइ बालुकाराशिर माझखाने अदूरे एकटि जलाशयेर मतो हइयाछे—पद्मा सरिया याओयार पर सेइखाने जल बाधिया आछे।

सेइ मरुबालुकावेष्टित निस्तरङ्ग निषुप्त निश्चल जलटुकुर उपरे एकटि सुदीर्घ ज्योत्स्नार रेखा मूर्छितभावे पड़िया आछे। सेइ जायगाटाते आसिया आमरा दुइजने दाँड़ाइलाम—मनोरमा की भाविया आमार मुखेर दिके चाहिल, ताहार माथार उपर हइते शालटा हठात् खसिया पड़िल। आमि ताहार सेइ ज्योत्स्ना-विकसित मुखखानि तुलिया धरिया चुम्बन करिलाम।

एमन समय सेइ जनमानवशून्य निःसङ्ग मरुभूमिर मध्ये गंभीर-स्वरे के तिनबार बलिया उठिल, "ओ के। ओ के। ओ के।"

आमि चमकिया उठिलाम, आमार स्त्रीओ काँपिया उठिलेन। किन्तु परक्षणेइ आमरा दुइजनेइ बुझिलाम, एइ शब्द मानुषिक नहे, अमानुषिकओ नहे—चरविहारी जलचर पाखिर डाक। हठात् एत रात्रे ताहादेर निरापद निभृत निवासेर काछे लोक समागम देखिया चकित हइया उठियाछे।

सेइ भयेर चमक खाइया आमरा दुइजनेइ ताड़ाताड़ि बोटे फिरिलाम। रात्रे बिछानाय आसिया शुइलाम; श्रान्तशरीरे मनोरमा अविलम्बे घुमाइया पड़िल। तखन अन्धकारे के एकजन आमार मशारिर काछे दाँड़ाइया सुषुप्त मनोरमार दिके एकटिमात्र दीर्घ शीर्ण अस्थिसार अङ्गुलि निर्देश करिया येन

माझखाने—बीच में। **सरिया याओयार पर**—सरक जाने, हट जाने के बाद। **बाधिया आछे**—रुक गया है।

की भाविया—क्या सोच कर। **माथार**—सिर के। **खसिया पड़िल**—खिसक पड़ा। **तुलिया**—उठा कर।

तिनबार—तीन बार। **ओ के**—वह कौन है ?

चमकिया उठिलाम—चौंक पड़ा। **काछे**—निकट।

चमक खाइया—चौंक कर। **घुमाइया पड़िल**—सो गई। **मशारिर**—मसहरी के।

आमार काने काने अत्यन्त चुपिचुपि अस्फुटकण्ठे केवलइ जिज्ञासा करिते लागिल, "ओ के। ओ के। ओ के गो।"

ताड़ाताड़ि उठिया देशालाइ ज्वालाइया बाति धराइलाम। सेइ मुहूर्तेइ छायामूर्ति मिलाइया गिया, आमार मशारि काँपाइया, बोट दुलाइया, आमार समस्त घर्माक्त शरीरेर रक्त हिम करिया दिया हाहा—हाहा—हाहा करिया एकटा हासि अन्धकार रात्रिर भितर दिया बहिया चलिया गेल। पद्मा पार हइल, पद्मार चर पार हइल, ताहार परवर्ती समस्त सुप्त देश ग्राम नगर पार हइया गेल—येन ताहा चिरकाल धरिया देशदेशान्तर लोकलोकान्तर पार हइया क्रमश क्षीण क्षीणतर क्षीणतम हइया असीम सुदूरे चलिया याइतेछे; क्रमे येन ताहा जन्ममृत्युर देश छाड़ाइया गेल; क्रमे ताहा येन सूचिर अग्रभागेर न्याय क्षीणतम हइया आसिल; एत क्षीण शब्द कखनओ शुनि नाइ, कल्पना करि नाइ; आमार माथार मध्ये येन अनन्त आकाश रहियाछे एवं सेइ शब्द यतइ दूरे याइतेछे किछुतेइ आमार मस्तिष्केर सीमा छाड़ाइते पारितेछे ना; अवशेषे यखन एकान्त असह्य हइया आसिल तखन भाबिलाम, आलो निबाइया ना दिले घुमाइते पारिब ना। येमन आलो निबाइया शुइलाम अमनि आमार मशारिर पाशे, आमार कानेर काछे, अन्धकारे आबार सेइ अवरुद्ध स्वर बलिया उठिल, "ओ के, ओ के, ओ के गो।" आमार बुकेर रक्तेर ठिक समान ताले क्रमागतइ ध्वनित हइते लागिल, "ओ के, ओ के, ओ के गो। ओ के, ओ के, ओ के गो।" सेइ गभीर रात्रे निस्तब्ध बोटेर मध्ये आमार गोलाकार घड़िटाओ सजीव हइया उठिया ताहार घण्टार काँटा मनोरमार दिके प्रसारित

देशालाइ—दियासलाई। **धराइलाम**—जलाई। **मिलाइया गिया**—विलुप्त हो कर। **छाड़ाइया गेल**—पीछे छोड़ गई। **हइया आसिल**—हो आई। **निबाइया ना दिले**—बुझाए विना। **येमन**—ज्यों ही। **अमनि**—त्यों ही। **घण्टार काँटा**—घण्टे की सूई।

करिया शेलफेर उपर हइते ताले ताले बलिते लागिल, "ओ के, ओ के, ओ के गो। ओ के, ओ के, ओ के गो।"

बलिते बलिते दक्षिणाबाबु पांशुवर्ण हइया आसिलेन, ताँहार कण्ठ रुद्ध हइया आसिल। आमि ताँहाके स्पर्श करिया कहिलाम, "एकटु जल खान।"

एमन समय हठात् आमार केरोसिनेर शिखाटा दप् दप् करिते करिते निविया गेल। हठात् देखिते पाइलाम, बाहिरे आलो हइयाछे। काक डाकिया उठिल। दोयेल शिश दिते लागिल। आमार बाड़िर सम्मुखवर्ती पथे एकटा महिषेर गाड़िर क्याँच् क्याँच् शब्द जागिया उठिल। तखन दक्षिणाबाबुर मुखेर भाव एकेबारे बदल हइया गेल। भयेर किछुमात्र चिह्न रहिल ना। रात्रिर कुहके, काल्पनिक शङ्कार मत्तताय आमार काछे ये एत कथा बलिया फेलियाछेन सेजन्य येन अत्यन्त लज्जित एवं आमार उपर आन्तरिक क्रुद्ध हइया उठिलेन। शिष्टसम्भाषणमात्र ना करिया अकस्मात् उठिया द्रुतवेगे चलिया गेलेन।

सेइदिनइ अर्धरात्रे आबार आमार द्वारे आसिया घा पड़िल, "डाक्तार! डाक्तार!"

जनवरी-फरवरी, १८९५।

एकटु जल खान—थोड़ा-सा पानी पीजिए।

दप्दप्—भकभक। निविया गेल—बुझ गई। दोयेल शिश दिते लागिल—दहियर सीटी बजाने लगा। क्याँच् क्याँच्—चर्र-चर्र। कुहके—इन्द्रजाल में। बलिया फेलियाछेन—कह बैठे हैं।

घा पड़िल—खटखटाहट हुई, शब्द सुनाई पड़ा।

ठाकुरदा

प्रथम परिच्छेद

नयनजोड़ेर जमिदारेरा एक काले वावु वलिया विशेष विख्यात छिलेन। तखनकार कालेर बाबुयानार आदर्श बड़ो सहज छिल ना। एखन येमन राजा-रायबाहादुर खेताब अर्जन करिते अनेक खाना नाच घोड़दौड़ एवं सेलाम-सुपारिशेर श्राद्ध करिते हय, तखनओ साधारणेर निकट हइते बावु उपाधि लाभ करिते विस्तर दुःसाध्य तपश्चरण करिते हइत।

आमादेर नयनजोड़ेर बाबुरा पाड़ छिँड़िया फेलिया ढाकाइ कापड़ परितेन, कारण पाड़ेर कर्कशताय ताँहादेर सुकोमल बाबु-याना व्यथित हइत। ताँहारा लक्ष टाका दिया विडालशावकेर विवाह दितेन एवं कथित आछे, एकबार कोनो उत्सव उपलक्ष्ये रात्रिके दिन करिबार प्रतिज्ञा करिया असंख्य दीप ज्वालाइया सूर्यकिरणेर अनुकरणे ताँहारा साँच्चा रुपार जरि उपर हइते वर्षण कराइयाछिलेन।

इहा हइतेइ सकले बुझिबेन, सेकाले बाबुदेर बाबुयाना वंशानुक्रमे स्थायी हइते पारित ना। वहुवर्तिकाविशिष्ट प्रदीपेर मतो निजेर तैल निजे अल्प कालेर धुमधामेइ निःशेष करिया दित।

आमादेर कैलासचन्द्र रायचौधुरी सेइ प्रख्यातयश नयनजोड़ेर

ठाकुरदा—पितामह। **एक काले**—किसी ज़माने में। **बाबु**—रईस। **बावुयानार**—रईसी, आभिजात्य का। **अनेकखाना**—बहुत से। **सुपारिशेर**—सिफारिश की। **श्राद्ध**—फिजूलखर्ची। **हइते**—से। **विस्तर**—अनेक।

पाड़ छिँड़िया—किनारी फाड़ कर। **ढाकाइ**—ढाके की। **कापड़**—धोती। **टाका**—रुपये। **कथित आछे**—कहा जाता है। **साँच्चा रुपार जरि**—सच्ची चाँदी की जरी।

इहा हइतेइ—इसीसे। **सेकाले**—उस ज़माने में।

एकटि निर्वापित वावु। इनि यखन जन्मग्रहण करियाछिलेन तैल तखन प्रदीपेर तलदेशे आसिया ठेकियाछिल ; इहार पितार मृत्यु हइले पर नयनजोड़ेर वावुयाना गोटाकतक असाधारण श्राद्धशान्तिते अन्तिम दीप्ति प्रकाश करिया हठात् निविया गेल। समस्त विषय-आशय ऋणेर दाये विक्रय हइल ; ये अल्प अवशिष्ट रहिल ताहाते पूर्वपुरुषेर ख्याति रक्षा करा असम्भव।

सेइजन्य नयनजोड़ त्याग करिया पुत्रके सङ्गे लइया कैलासवावु कलिकाताय आसिया वास करिलेन—पुत्रटिओ एकटि कन्यामात्र राखिया एइ हतगौरव संसार परित्याग करिया परलोके गमन करिलेन।

आमरा ताँहार कलिकातार प्रतिवेशी। आमादेर इतिहासटा ताँहादेर हइते सम्पूर्ण विपरीत। आमार पिता निजेर चेष्टाय धन उपार्जन करियाछिलेन ; तिनि कखनओ हाँटुर निम्ने कापड़ परितेन ना, कड़ाक्रान्तिर हिसाव राखितेन, एवं वावु उपाधि-लाभेर जन्य ताँहार लालसा छिल ना। सेजन्य आमि ताँहार एकमात्र पुत्र ताँहार निकट कृतज्ञ आछि। आमि ये लेखापड़ा शिखियाछि एवं निजेर प्राण ओ मान-रक्षार उपयोगी यथेष्ट अर्थ विना चेष्टाय प्राप्त हइयाछि, इहाइ आमि परम गौरवेर विषय वलिया ज्ञान करि—शून्य भाण्डारे पैतृक वावुयानार उज्ज्वल इतिहासेर अपेक्षा लोहार सिन्दुकेर मध्ये पैतृक कोम्पानिर कागज आमार निकट अनेक वेशि मूल्यवान वलिया मने हय।

वोध करि सेइ कारणेइ, कैलासवावु ताँहादेर पूर्वगौरवेर फेल्-करा व्यांकेर उपर यखन देदार लम्बाचौड़ा चेक चालाइतेन

निर्वापित वावु—ढलते हुए वावू (रईस)। इनि—इन्होंने। आसिया ठेकियाछिल—आ लगा था। गोटाकतक—कुछ एक। निविया गेल—बुझ गयी। विषय-आशय—धन-सम्पत्ति। ऋणेर दाये—कर्ज में।

प्रतिवेशी—पड़ोसी। हाँटुर—घुटनों से। कड़ाक्रान्तिर—कौड़ी-कौड़ी का। कोम्पानिर—कम्पनी (अंग्रेजी सरकार) के। कागज—वॉण्ड।

फेल्-करा व्यांकेर—फेल हुए (दिवालिया) बैंक के। देदार—प्रचुर। चालाइतेन—काटते।

तखन ताहा आमार एत असह्य ठेकित। आमार मने हइत, आमार पिता स्वहस्ते अर्थ उपार्जन करियाछेन बलिया कैलासबाबु बुझि मने मने आमादेर प्रति अवज्ञा अनुभव करितेछेन। आमि राग करिताम एवं भाविताम, अवज्ञार योग्य के। ये लोक समस्त जीवन कठोर त्याग स्वीकार करिया, नाना प्रलोभन अतिक्रम करिया, लोकमुखेर तुच्छ ख्याति अवहेला करिया, अश्रान्त एवं सतर्क बुद्धि-कौशले समस्त प्रतिकूल बाधा प्रतिहत करिया, समस्त अनुकूल अवसरगुलिके आपनार आयत्तगत करिया एकटि एकटि रौप्येर स्तरे सम्पदेर एकटि समुच्च पिरामिड एकाकी स्वहस्ते निर्माण करिया गियाछेन, तिनि हाँटुर नीचे कापड़ परितेन ना बलिया ये कम लोक छिलेन ताहा नय।

तखन वयस अल्प छिल, सेइजन्य एइरूप तर्क करिताम, राग करिताम। एखन वयस बेशि हइयाछे; एखन मने करि, क्षति की। आमार तो विपुल विषय आछे, आमार किसेर अभाव। याहार किछु नाइ, से यदि अहंकार करिया सुखी हय, ताहाते आमार तो सिकि पयसार लोकसान नाइ, वरं से बेचारार सान्त्वना आछे।

इहाओ देखा गियाछे, आमि व्यतीत आर केह कैलासबाबुर उपर राग करित ना। कारण एत बड़ो निरीह लोक सचराचर देखा याय ना। क्रियाकर्मे सुखे दुःखे प्रतिवेशीदेर सहित ताँहार सम्पूर्ण योग छिल। छेले हइते वृद्ध पर्यन्त सकलकेइ देखा हइबामात्र तिनि हासिमुखे प्रिय सम्भाषण करितेन—येखाने याहार ये-केह आछे सकलेरइ कुशलसंवाद जिज्ञासा करिया तबे-

---

ठेकित—लगता।

बलिया—इस कारण। **बुझि**—लगता है। **राग करिताम**—क्रोध करता। **आयत्तगत करिया**—हस्तगत, अधिकार करके। **कम लोक छिलेन**—छोटे व्यक्ति थे।

किसेर—किस (चीज) का। **सिकि पयसार**—चवन्नी (धेले) का भी

इहाओ—यह भी। **व्यतीत**—अतिरिक्त। **सचराचर**—साधारणतः। **छेले हइते**—बच्चों से। **देखा हइबामात्र**—भेंट होते ही। **ये-केह**—जो कोई।

ताँहार गिष्टता विराम लाभ करित। एइजन्य काहारओ सहित ताँहार देखा हइले एकटा सुदीर्घ प्रश्नोत्तरमालार सृष्टि हइत—"भालो तो? चखी भालो आछे? आमादेर बड़ोबाबु भालो आछेन? मधुर छेलेटिर ज्वर हयेछिल शुनेछिलुम, से एखन भालो आछे तो? हरिचरणबाबु के अनेककाल देखि नि, ताँर असुखविसुख किछु हय नि? तोमादेर राखालेर खबर की? बाड़िर ऐँयारा सकले भालो आछेन?" इत्यादि।

लोकटि भारि परिष्कार परिच्छन्न। कापड़चोपड़ अधिक छिल ना, किन्तु मेरजाइटि चादरटि जामाटि, एमन कि, बिछानाय पातिबार एकटि पुरातन र्‍यापार, बालिशेर ओयाड़, एकटि क्षुद्र सतरञ्च, समस्त स्वहस्ते रौद्रे दिया, झाड़िया, दड़िते खाटाइया, भाँज करिया, आलनाय तुलिया, परिपाटि करिया राखितेन। यखनइ ताहाँके देखा याइत तखनइ मने हइत येन तिनि सुसज्जित प्रस्तुत हइया आछेन। अल्पस्वल्प सामान्य आसबाबेओ ताँहार घरद्वार समुज्ज्वल हइया थाकित। मने हइत येन ताँहार आरओ अनेक आछे।

भृत्याभावे अनेक समय घरेर द्वार रुद्ध करिया तिनि निजेर हस्ते अति परिपाटि करिया धुति कोँचाइतेन एवं चादर ओ जामार आस्तिन बहु यत्ने ओ परिश्रमे गिले करिया राखितेन। ताँहार बड़ो बड़ो जमिदारि ओ बहुमूल्येर विषयसम्पत्ति लोप पाइयाछे; किन्तु एकटि बहुमूल्य गोलापपाश, आतरदान, एकटि सोनार रेकाबि, एकटि रुपार आलबोला, एकटि बहुमूल्य शाल ओ

असुखविसुख—हारी-बीमारी। ऐँयारा—ये लोग।

कापड़चोपड़—कपड़े-लत्ते। जामाटि—कुर्ता, कमीज आदि। र्‍यापर—रैपर, पलंगपोश। बालिशेर ओयाड़—तकिये का गिलाफ। सतरञ्च—दरी। रौद्रे दिया—धूप दिखा कर। दड़िते खाटाइया—रस्सी पर टाँग कर। भाँज करिया—तह करके। आलनाय तुलिया—(कपड़े टाँगने के) स्टैन्ड पर लटका कर।

परिपाटि करिया—सँवार कर। कोँचाइतेन—चुनते। गिले करिया—चुनट डाल कर। रुपार आलबोला—चाँदी का हुक्का, जलबेला।

सेकेले जामाजोड़ा ओ पागड़ि दारिद्र्येर ग्रास हइते बहु चेष्टाय तिनि रक्षा करियाछिलेन। कोनो-एकटा उपलक्ष्य उपस्थित हइले एइगुलि बाहिर हइत एवं नयनजोड़ेर जगद्विख्यात बाबुदेर गौरव रक्षा हइत।

ए दिके कैलासबाबु माटिर मानुष हइलेओ कथाय ये अहंकार करितेन सेटा येन पूर्वपुरुषदेर प्रति कर्त्तव्यबोधे करितेन; सकल लोकेइ ताहाते प्रश्रय दित एवं विशेष आमोद बोध करित।

पाड़ार लोके ताँहाके ठाकुरदामशाइ बलित एवं ताँहार ओखाने सर्वदा विस्तर लोकसमागम हइत; किन्तु दैन्यावस्थाय पाछे ताँहार तामाकेर खरचटा गुरुतर हइया उठे एइजन्य प्रायइ पाड़ार केह ना केह दुइ-एक सेर तामाक किनिया लइया गिया ताँहाके बलित, "ठाकुरदामशाय, एकबार परीक्षा करिया देखो देखि, भालो गयार तामाक पाओया गेछे।"

ठाकुरदामशाय दुइ-एक टान टानिया बलितेन, "बेश भाइ, बेश तामाक!" अमनि सेइ उपलक्ष्ये षाट-पँयषट्टि टाका भरिर तामाकेर गल्प पाड़ितेन; एवं जिज्ञासा करितेन, से तामाक काहारओ आस्वाद करिया देखिबार इच्छा आछे कि ना।

सकलेइ जानित ये यदि केह इच्छा प्रकाश करे तबे निश्चय चाबिर सन्धान पाओया याइबे ना अथवा अनेक अन्वेषणेर पर प्रकाश पाइबे ये, पुरातन भृत्य गणेश बेटा कोथाय ये की राखे ताहार आर ठिकाना नाइ—गणेशओ बिना प्रतिवादे समस्त अपवाद स्वीकार करिया लइबे। एइजन्यइ सकलेइ एक वाक्ये

जामाजोड़ा—कुर्ते आदि का जोड़ा। **एइगुलि**—ये सब।

ए दिके—इधर। **माटिर मानुष**—मिट्टी के पुतले (सीधे-सादे)।

पाड़ार—मुहल्ले के। **ठाकुरदामशाइ**—पितामह महाशय। **ओखाने**—वहाँ। **तामाकेर**—तम्बाकू का। **किनिया**—खरीदकर। **देखो देखि**—देखो तो सही। **गयार**—गया (स्थान का नाम) का।

टान टानिया—कश खींच कर। **षाट्...भरिर**—साठ-पैंसठ रुपये तोले का। **गल्प पाड़ितेन**—किस्सा छेड़ते।

कोथाय ये की राखे—(न जाने) कहाँ क्या रखता है।

बलित, "ठाकुरदामशाय, काज नेइ, से तामाक आमादेर सह्य हबे ना, आमादेर एइ भालो।"

शुनिया ठाकुरदा द्विरुक्ति ना करिया ईषत् हास्य करितेन। सकले विदाय लइबार काले हठात् बलिया उठितेन, "से येन हल, तोमरा कबे आमार एखाने खाबे बलो देखि, भाइ।"

अमनि सकले बलित, "से एकटा दिन ठिक क'रे देखा याबे।"

ठाकुरदामशाय बलितेन, "सेइ भालो, एकटु वृष्टि पड़ुक, ठाण्डा होक, नइले ए गरमे गुरुभोजनटा किछु नय।"

यखन वृष्टि पड़ित तखन ठाकुरदाके केह ताँहार प्रतिज्ञा स्मरण कराइया दित ना, बरञ्च कथा उठिले सकले बलित, "एइ वृष्टिबादलटा ना छाड़ले सुविधे हच्छे ना।"

क्षुद्र बासाबाड़िते बास कराटा ताँहार पक्षे भालो देखाइतेछे ना एवं कष्टओ हइतेछे ए कथा ताँहार बन्धुबान्धव ताँहार समक्षे स्वीकार करित, अथच कलिकाताय किनिबार उपयुक्त बाड़ि खुँजिया पाओया ये कत कठिन से विषयेओ काहारओ सन्देह छिल ना—एमन कि, आज छय-सात वत्सर सन्धान करिया भाड़ा लइबार मतो एकटा बड़ो बाड़ि पाड़ार केह देखिते पाइल ना—अवशेषे ठाकुरदामशाय बलितेन, "ता होक भाइ, तोमादेर काछाकाछि आछि एइ आमार सुख। नयनजोड़े बड़ो बाड़ि तो पड़ेइ आछे, किन्तु सेखाने कि मन टेँके।"

आमार विश्वास, ठाकुरदाओ जानितेन ये, सकले ताँहार अवस्था जाने एवं यखन तिनि भूतपूर्व नयनजोड़के वर्तमान बलिया भान करितेन एवं अन्य सकलेओ ताहाते योग दित तखन मने मने बुझितेन ये, परस्परेर एइ छलना केवल परस्परेर प्रति सौहार्दवशत।

काज नेइ—(कोई) जरूरत नहीं।
से येन हल—(अच्छा) यह सब तो हुआ।
पड़ुक—पड़े, हो। ना छाड़ले—बंद हुए बिना।
किनिबार—खरीदने के। काछाकाछि—निकट।

कोनोटाइ आमार समयोग्य बोध हय नाइ। अवशेषे भवभूतिर न्याय आमार धारणा हइयाछिल ये,

> की जानि जन्मिते पारे मम समतुल—
> असीम समय आछे, वसुधा विपुल।

किन्तु वर्तमान काले एवं क्षुद्र बङ्गदेशे सेइ असम्भव दुर्लभ पदार्थ जन्मियाछे कि ना सन्देह।

कन्यादायग्रस्तगण प्रतिनियत नाना छन्दे आमार स्तवस्तुति एवं विविधोपचारे आमार पूजा करिते लागिल। कन्या पछन्द हउक वा ना हउक, एइ पूजा आमार मन्द लागित ना। भालो छेले बलिया कन्यार पितृगणेर एइ पूजा आमार उचित प्राप्य स्थिर करियाछिलाम। शास्त्रे पड़ा याय, देवता वर दिन आर ना दिन, यथाविधि पूजा ना पाइले विषम क्रुद्ध हइया उठेन। नियमित पूजा पाइया आमारओ मने सेइरूप अत्युच्च देवभाव जन्मियाछिल।

पूर्वेइ बलियाछिलाम, ठाकुरदामशायेर एकटि पौत्री छिल। ताहाके अनेक बार देखियाछि किन्तु कखनओ रूपवती वलिया भ्रम हय नाइ। सुतरां ताहाके विवाह करिबार कल्पनाओ आमार मने उदित हय नाइ। किन्तु इहा ठिक करिया राखियाछिलाम ये, कैलासबावु लोक-मारफत अथवा स्वयं पौत्रीटिके अर्घ्य दिबार मानसे आमार पूजार बोधन करिते आसिवेन, कारण आमि भालो छेले। किन्तु तिनि ताहा करिलेन ना।

शुनिते पाइलाम, आमार कोनो बन्धुके तिनि बलियाछिलेन, नयनजोड़ेर बाबुरा कखनओ कोनो विषये अग्रसर हइया काहारओ

नाना छन्दे—नाना प्रकार से। **पछन्द**—पसन्द। **मन्द**—बुरी। **आमार**—अपना। **देवता....दिन**—देवता वर दें या न दें।

पौत्रिटिके....मानसे—पौत्री का अर्घ्य चढाने की इच्छा से। **बोधन**—(दुर्गापूजा के पूर्व देवी को जगाने की क्रिया विशेष) उद्‌बोधन, स्तुति।

कोनो बन्धुके—किसी मित्रसे।

निकटे प्रार्थना करे नाइ—कन्या यदि चिरकुमारी हइया थाके तथापि से कुलप्रथा तिनि भङ्ग करिते पारिबेन ना।

शुनिया आमार बड़ो राग हइल। से राग अनेक दिन पर्यन्त आमार मनेर मध्ये छिल—केवल भालो छेले बलियाइ चुपचाप करिया छिलाम।

येमन वज्रेर सङ्गे विद्युत् थाके, तेमनि आमार चरित्रे रागेर सङ्गे सङ्गे एकटा कौतुकप्रियता जड़ित छिल। वृद्धके शुद्धमात्र निपीड़न करा आमार द्वारा सम्भव हइत ना—किन्तु एकदिन हठात् एमन एकटा कौतुकावह प्ल्यान माथाय उदय हइल ये, सेटा काजे खाटाइबार प्रलोभन सम्वरण करिते पारिलाम ना।

पूर्वेइ बलियाछि, वृद्धके सन्तुष्ट करिबार जन्य नाना लोके नाना मिथ्या कथार सृजन करित। पाड़ार एकजन पेन्सन्भोगी डेपुटि म्याजिस्ट्रेट प्राय बलितेन, "ठाकुरदा, छोटोलाटेर सङ्गे यखनइ देखा हय तिनि नयनजोड़ेर बाबुदेर खबर ना निये छाड़ेन ना—साहेव बलेन, बांलादेशे बर्धमानेर राजा एवं नयनजोड़ेर बाबु, एइ दुटि मात्र यथार्थ बनेदि वंश आछे।"

ठाकुरदादा भारी खुशि हइतेन, एवं भूतपूर्व डेपुटिबाबुर सहित साक्षात् हइले अन्यान्य कुशल संवादेर सहित जिज्ञासा करितेन, "छोटोलाट-साहेव भालो आछेन? ताँर मेमसाहेव भालो आछेन? ताँर पुत्रकन्यारा सकलेइ भालो आछेन?" साहेवेर सहित शीघ्र एकदिन साक्षात् करिते याइबेन एमन इच्छाओ प्रकाश करितेन। किन्तु भूतपूर्व डेपुटि निश्चयइ जानितेन, नयनजोड़ेर विख्यात चौघुड़ि प्रस्तुत हइया द्वारे आसिते आसिते विस्तर छोटोलाट एवं बड़ोलाट बदल हइया याइबे।

शुद्धमात्र—केवल। प्ल्यान—प्लान (अं०), योजना। माथाय—दिमाग में। काजे खाटाइबार—कार्यरूप में परिणत करने का।

बर्धमानेर—बर्दवान के। बनेदि वंश—पुराने प्रतिष्ठित घराने।

चौघुड़ि—चार घोड़ों की बग्घी। विस्तर—कितने ही।

आमि एकदिन प्रातःकाले गिया कैलासबाबुके आड़ाले डाकिया लइया चुपिचुपि बलिलाम, "ठाकुरदा, काल लेप्टेनेण्ट् गवर्नरेर लेभिते गियेछिलुम। तिनि नयनजोड़ेर बाबुदेर कथा पाड़ाते आमि बललुम, नयनजोड़ेर कैलासबाबु कलकातातेइ आछेन; शुने, छोटोलाट एतदिन देखा करते आसेन नि बले भारि दुःखित हलेन--बले दिलेन, आजइ दुपुरवेला तिनि गोपने तोमार सङ्गे साक्षात् करते आसबेन।"

आर केह हइले कथाटार असम्भवता बुझिते पारित एवं आर काहारओ सम्बन्धे हइले कैलासबाबुओ ए कथाय हास्य करितेन, किन्तु निजेर सम्बन्धीय बलिया ए संवाद ताँहार लेशमात्र अविश्वास्य बोध हइल ना। शुनिया येमन खुशि हइलेन तेमनि अस्थिर हइया उठिलेन--कोथाय बसाइते हइबे, की करिते हइबे, केमन करिया अभ्यर्थना करिबेन--की उपाये नयनजोड़ेर गौरव रक्षित हइबे किछुइ भाबिया पाइलेन ना। ताहा छाड़ा तिनि इंराजि जानेन ना, कथा चालाइबेन की करिया सेओ एक समस्या।

आमि बलिलाम, "सेजन्य भावना नाइ, ताँहार सङ्गे एकजन करिया दोभाषी थाके; किन्तु छोटोलाट-साहेबेर विशेष इच्छा, आर केह उपस्थित ना थाके।"

मध्याह्ने पाड़ार अधिकांश लोक यखन आपिसे गियाछे एवं अवशिष्ट अंश द्वार रुद्ध करिया निद्रामग्न, तखन कैलासबाबुर बासार सम्मुखे एक जुड़ि आसिया दाँड़ाइल।

तकमा-परा चापरासि ताँहाके खबर दिल, "छोटोलाट-

आड़ाले--आड़ में। लेभिते--लेवी, (निमंत्रितों के दरबार) में। कथा पाड़ाते--बात छेड़ने पर।

आर केह हइले--(यदि) और कोई होता। बसाइते हइबे--बैठाना होगा। भाबिया पाइलेन ना--सोच (समझ) न सके। ताहा छाड़ा--इसके अतिरिक्त।

भावना--चिन्ता।

आपिसे--ऑफ़िस में। बासार--घर के। जुड़ि--बग्घी।

तकमा-परा--तमगे लगाए हुए।

साहेब आया।" ठाकुरदा प्राचीनकाल-प्रचलित शुभ्र जामाजोड़ा एवं पागड़ि परिया प्रस्तुत हइया छिलेन, ताँहार पुरातन भृत्य गणेशटिकेओ ताँहार निजेर धुति चादर जामा पराइया ठिकठाक करिया राखियाछिलेन। छोटोलाटेर आगमन-संवाद शुनियाइ हाँपाइते-हाँपाइते काँपिते-काँपिते छुटिया द्वारे गिया उपस्थित हइलेन—एवं सन्नतदेहे वारम्वार सेलाम करिते करिते इंराज-वेशधारी आमार एक प्रिय वयस्यके घरे लइया गेलेन।

सेखाने चौकिर उपरे ताँहार एकमात्र बहुमूल्य शालटि पातिया राखियाछिलेन, ताहारइ उपर कृत्रिम छोटोलाटके वसाइया उर्दुभाषाय एक अतिविनीत सुदीर्घ वक्तृता पाठ करिलेन, एवं नजरेर स्वरूपे स्वर्णरेकाविते ताँहादेर बहुकष्टरक्षित कुलक्रमागत एक आसरफिर माला धरिलेन। प्राचीन भृत्य गणेश गोलापपाश एवं आतरदान लइया उपस्थित छिल।

कैलासबाबु वारम्वार आक्षेप करिते लागिलेन ये, ताँहादेर नयनजोड़ेर बाड़िते हुजुर-बाहादुरेर पदधूलि पड़िले ताँहादेर यथा-साध्य यथोचित आतिथ्येर आयोजन करिते पारितेन—कलिकाताय तिनि प्रवासी—एखाने तिनि जलहीन मीनेर न्याय सर्व विषयेइ अक्षम—इत्यादि।

आमार वन्धु दीर्घ ह्याट-समेत अत्यन्त गम्भीरभावे माथा नाड़िते लागिलेन। इंराजि कायदा-अनुसारे एरूप स्थले माथाय टुपि ना थाकिवार कथा, किन्तु आमार वन्धु धरा पड़िवार भये यथासम्भव आच्छन्न थाकिवार चेष्टाय टुपि खोलेन नाइ। कैलास-बाबु एवं ताँहार गर्वान्ध प्राचीन भृत्यटि छाड़ा आर सकलेइ मुहूर्तेर मध्ये बाङालिर एइ छद्मवेश धरिते पारित।

छुटिया—भागते हुए। सन्नतदेहे—झुक-झुक कर।

शालटि—शाल। पातिया राखियाछिलेन—बिछा रखा था। आसरफिर-अशर्फियों की। आक्षेप—उलाहना। बाड़िते—घर पर।

ह्याट—हैट। माथा नाड़िते लागिलेन—सिर हिलाने लगे। धरा पड़िबार—पकड़े जाने के। छाड़ा—अतिरिक्त। धरिते पारित—पकड़ लेते।

दश मिनिट काल घाड़ नाड़िया आमार बन्धु गात्रोत्थान करिलेन एवं पूर्वशिक्षा-मत चापरासिगण सोनार रेकाविसुद्ध आसरफिर माला, चौकि हइते सेइ शाल, एवं भृत्येर हात हइते गोलापपाश एवं आतरदान संग्रह करिया छद्मवेशीर गाड़िते तुलिया दिल—कैलासबाबु बुझिलेन, इहाइ छोटोलाटेर प्रथा। आमि गोपने एक पाशेर घरे लुकाइया देखितेछिलाम एवं रुद्ध हास्यवेगे आमार पञ्जर विदीर्ण हइबार उपक्रम हइतेछिल।

अवशेषे किछुते आर थाकिते ना पारिया छुटिया किञ्चित् दूरवर्ती एक घरेर मध्ये गिया प्रवेश करिलाम—एवं सेखाने हासिर उच्छ्वास उन्मुक्त करिया दिया हठात् देखि, एकटि बालिका तक्तपोषेर उपर उपुड़ हइया पड़िया फुलिया-फुलिया काँदितेछे।

आमाके हठात् घरे प्रवेश करिया हासिते देखिया से तत्क्षणात् तक्ता छाड़िया दाँड़ाइल, एवं अश्रुरुद्ध कण्ठे रोषेर गर्जन आनिया, आमार मुखेर उपर सजल विपुल कृष्णचक्षेर सुतीक्ष्ण विद्युत् वर्षण करिया कहिल, "आमार दादामशाय तोमादेर की करेछेन—केन तोमरा ताँके ठकाते एसेछ—केन एसेछ तोमरा—" अवशेषे आर कोनो कथा जुटिल ना, वाक्रुद्ध हइया मुखे कापड़ दिया काँदिया उठिल।

कोथाय गेल आमार हास्यवेग! आमि ये काजटि करियाछि ताहार मध्ये कौतुक छाड़ा आर ये किछु छिल एतक्षण ताहा आमार माथाय आसे नाइ—हठात् देखिलाम, अत्यन्त कोमल स्थाने अत्यन्त कठिन आघात करियाछि; हठात् आमार कृतकार्येर वीभत्स निष्ठुरता आमार सम्मुखे देदीप्यमान हइया उठिल, लज्जाय

घाड़ नाड़िया—सिर हिला कर। **रेकाबिसुद्ध**—रकाबी समेत। **तुलिया दिल**—चढ़ा दिया। **पाशेर घरे**—पास के कमरे में।

आर थाकिते ना पारिया छुटिया—मुझसे न रहा गया (तो) भाग कर। **उपुड़ हइया**—औंधी पड़ी हुई। **फुलिया फुलिया काँदितेछे**—फूट-फूट कर रो रही है।

तक्ता—तख्त। **ताँके ठकाते एसेछ**—उन्हें ठगने (बनाने) आए हो। **मुखे कापड़ दिया**—साड़ी से मुँह ढाँप कर।

माथाय—दिमाग में।

एवं अनुतापे पदाहत कुक्कुरेर न्याय घर हइते निःशब्दे वाहिर हइया गेलाम। वृद्ध आमार काछे की दोष करियाछिल। ताहार निरीह अहंकार तो कखनओ कोनो प्राणीके आघात करे नाइ। आमार अहंकार केन एमन हिंस्र मूर्ति धारण करिल।

ताहा छाड़ा आर-एकटि विषये आज हठात् दृष्टि खुलिया गेल। एतदिन आमि कुसुमके कोनो अविवाहित पात्रेर प्रसन्न-दृष्टिपातेर प्रतीक्षाय संरक्षित पण्यपदार्थेर मतो देखिताम—भाविताम, आमि पछन्द करि नाइ वलिया ओ पड़िया आछे, दैवात् याहार पछन्द हइवे ओ ताहारइ हइवे। आज देखिलाम, एइ गृहकोणे ऐ वालिकामूर्तिर अन्तराले एकटि मानवहृदय आछे। ताहार निजेर सुखदुःख अनुरागविराग लइया एकटि अन्तःकरण एक दिके अज्ञेय अतीत आर-एक दिके अभावनीय भविष्यत्-नामक दुइ अनन्त रहस्यराज्येर दिके पूर्वे पश्चिमे प्रसारित हइया रहियाछे। ये मानुषेर मध्ये हृदय आछे से कि केवल पणेर टाका एवं नाक चोखेर परिमाण मापिया पछन्द करिया लइवार योग्य।

समस्त रात्रि निद्रा हइल ना। परदिन प्रत्यूषे वृद्धेर समस्त अपहृत वहुमूल्य द्रव्यगुलि लइया चोरेर न्याय चुपिचुपि ठाकुरदार वासाय गिया प्रवेश करिलाम—इच्छा छिल, काहाकेओ किछु ना वलिया गोपने चाकरेर हस्ते समस्त दिया आसिव।

चाकरके देखिते ना पाइया इतस्तत करितेछि, एमन समय अदूरवर्ती घरे वृद्धेर सहित वालिकार कथनोपकथन शुनिते पाइलाम। वालिका सुमिष्ट सस्नेहस्वरे जिज्ञासा करितेछिल, "दादामशाय, काल लाट-साहेव तोमाके की वललेन।" ठाकुरदा अत्यन्त हर्षितचित्ते लाट-साहेवेर मुखे प्राचीन नयनजोड़-वंशेर विस्तर

काछे—निकट, प्रति।

ताहा छाड़ा—इसके अतिरिक्त। भाविताम—सोचता। पड़िया आछे—पड़ी हुई है। ओ—वह। अभावनीय—अचिन्त्य।

परदिन—अगले दिन। दिया आसिब—दे आऊँगा।

घरे—कमरे में।

काल्पनिक गुणानुवाद बसाइतेछिलेन। बालिका ताहाइ शुनिया महोत्साह प्रकाश करितेछिल।

वृद्ध अभिभावकेर प्रति मातृहृदया एइ क्षुद्र बालिकार सकरुण छलनाय आमार दुइ चक्षे जल छल्छल् करिया आसिल। अनेकक्षण चुप करिया वसिया रहिलाम—अवशेषे ठाकुरदा ताँहार काहिनी समापन करिया चलिया आसिले आमार प्रतारणार बमालगुलि लइया बालिकार निकट उपस्थित हइलाम एवं निःशब्दे ताहार सम्मुखे राखिया चलिया आसिलाम।

वर्तमान कालेर प्रथानुसारे अन्य दिन वृद्धके देखिया कोनोप्रकार अभिवादन करिताम ना—आज ताँहाके प्रणाम करिलाम। वृद्ध निश्चय मने भाबिलेन, गतकल्य छोटोलाट ताँहार बाड़िते आसातेइ सहसा ताँहार प्रति आमार भक्तिर उद्रेक हइयाछे। तिनि पुलकित हइया शतमुखे छोटोलाटेर गल्प बानाइया बलिते लागिलेन—आमिओ कोनो प्रतिवाद ना करिया ताहाते योग दिलाम। बाहिरेर अन्य लोक याहारा शुनिल ताहारा ए कथाटाके आद्योपान्त गल्प बलिया स्थिर करिल, एवं सकौतुके वृद्धेर सहित सकल कथाय साय दिया गेल।

सकले उठिया गेले आमि अत्यन्त सलज्जमुखे दीनभावे वृद्धेर निकट एकटि प्रस्ताव करिलाम। बलिलाम, यदिओ नयनजोड़ेर बाबुदेर सहित आमादेर वंशमर्यादार तुलनाइ हइते पारे ना, तथापि—

प्रस्तावटा शेष हइबामात्र वृद्ध आमाके वक्षे आलिङ्गन करिया धरिलेन, एवं आनन्दवेगे बलिया उठिलेन, "आमि गरिब—आमार ये एमन सौभाग्य हबे ता आमि जानतुम ना, भाइ—आमार कुसुम अनेक पुण्य करेछे ताइ तुमि आज धरा दिले।"

बसाइतेछिलेन—आरोपित कर रहे थे। **ताहाइ**—उसी को।
बमालगुलि—अपहृत सामान को।
आसातेइ—आने से ही। **साय दिया गेल**—हामी भरते रहे।
शेष हइबामात्र—समाप्त होते ही। **धरा दिले**—पकड़ाई दे गए।

बलिते बलिते वृद्धेर चक्षु दिया जल पड़िते लागिल।

वृद्ध, आज एइ प्रथम, ताँहार महिमान्वित पूर्वपुरुषदेर प्रति कर्तव्य विस्मृत हइया स्वीकार करिलेन ये तिनि गरिब, स्वीकार करिलेन ये आमाके लाभ करिया नयनजोड़-वंशेर गौरवहानि हय नाइ। आमि यखन वृद्धके अपदस्थ करिबार जन्य चक्रान्त करितेछिलाम तखन वृद्ध आमाके परम सत्पात्र जानिया एकान्तमने कामना करितेछिलेन।

मई–जून, १८९५।

लाभ करिया—पा कर। अपदस्थ—अपमानित। चक्रान्त—षड्यन्त्र।

क्षुधित पाषाण

आमि एवं आमार आत्मीर पूजार छुटिते देशभ्रमण सारिया कलिकाताय फिरिया आसितेछिलाम, एमन समय रेलगाड़िते वावुटिर सङ्गे देखा हय। ताँहार वेषभूषा देखिया प्रथमटा ताँहाके पश्चिमदेशीय मुसलमान वलिया भ्रम हइयाछिल। ताँहार कथावार्ता शुनिया आरओ धाँधा लागिया याय। पृथिवीर सकल विषयेइ एमन करिया आलाप करिते लागिलेन, येन ताँहार सहित प्रथम परामर्श करिया विश्वविधाता सकल काज करिया थाकेन। विश्वसंसारेर भितरे भितरे ये एमन-सकल अश्रुतपूर्व निगूढ़ घटना घटितेछिल, रशियानरा ये एत दूर अग्रसर हइयाछे, इंराजदेर ये एमन-सकल गोपन मत्लव आछे, देशीय राजादेर मध्ये ये एकटा खिचुड़ि पाकिया उठियाछे, ए-समस्त किछुइ ना जानिया आमरा सम्पूर्ण निश्चिन्त हइया छिलाम। आमादेर नवपरिचित आलापीटि ईषत् हासिया कहिलेन : There happen more things in heaven and earth, Horatio, than are reported in your newspapers. आमरा एइ प्रथम घर छाड़िया बाहिर हइयाछि, सुतरां लोकटिर रकम-सकम देखिया अवाक हइया गेलाम। लोकटा सामान्य उपलक्ष्ये कखनओ विज्ञान वले, कखनओ वेदेर व्याख्या करे, आवार हठात् कखनओ पार्सि वयेत आओड़ाइते थाके; विज्ञान वेद एवं पार्सिभाषाय आमादेर कोनोरूप अधिकार ना थाकाते ताँहार प्रति आमादेर भक्ति उत्तरोत्तर वाड़िते लागिल। एमन कि,

---

पूजार—दशहरे की। सारिया—समाप्त कर। आसितेछिलाम—आ रहे थे। देखा हय—भेंट हुई। कथावार्ता—वातचीत। धाँधा लागिया याय—परेशानी वढ़ गई। आलाप—वातचीत। खिचुड़ि.....उठियाछे—खिचड़ी पक रही है। आलापीटि—वक्ता। घर छाड़िया—घर छोड़ कर, घर से वाहर। रकम-सकम—रंग-ढंग। उपलक्ष्ये—प्रसंग में। पार्सि वयेत आओड़ाइते थाके—फारसी वैतों (छन्दों) का उद्धरण देते। भक्ति—श्रद्धा।

आमार थियसफिस्ट् आत्मीयटिर मने दृढ़ विश्वास हइल ये, आमादेर एइ सहयात्रीर सहित कोनो-एक रकमेर अलौकिक व्यापारेर किछु एकटा योग आछे—कोनो-एकटा अपूर्व म्यागनेटिज्म् अथवा दैव-शक्ति, अथवा सूक्ष्म शरीर, अथवा ऐ भावेर एकटा-किछु। तिनि एइ असामान्य लोकेर समस्त सामान्य कथाओ भक्तिविह्वल मुग्धभावे शुनितेछिलेन एवं गोपने नोट करिया लइतेछिलेन। आमार भावे बोध हइल, असामान्य व्यक्तिटिओ गोपने ताहा बुझिते पारियाछिलेन, एवं किछु खुशि हइयाछिलेन।

गाड़िटि आसिया जंशने थामिले आमरा द्वितीय गाड़िर अपेक्षाय ओयेटिंरुमे समवेत हइलाम। तखन रात्रि साड़े दशटा। पथेर मध्ये एकटा-की व्याघात हओयाते गाड़ि अनेक विलम्बे आसिबे शुनिलाम। आमि इतिमध्ये टेबिलेर उपर बिछाना पातिया घुमाइब स्थिर करियाछि, एमन समये सेइ असामान्य व्यक्तिटि निम्नलिखित गल्प फाँदिया बसिलेन। से रात्रे आमार आर घुम हइल ना।—

राज्यचालना सम्बन्धे दुइ-एकटा विषये मतान्तर हओयाते आमि जुनागड़ेर कर्म छाड़िया दिया हाइद्राबादे यखन निजाम-सरकारे प्रवेश करिलाम तखन आमाके अल्पवयस्क ओ मजबुत लोक देखिया प्रथमे बरीचे तुलार माशुल-आदाये नियुक्त करिया दिल।

बरीच जायगाटि बड़ो रमणीय। निर्जन पाहाड़ेर नीचे बड़ो बड़ो बनेर भितर दिया शुस्ता नदीटि (संस्कृत स्वच्छतोयार अपभ्रंश) उपलमुखरित पथे निपुणा नर्तकीर मतो पदे पदे बाँकिया बाँकिया द्रुत नृत्ये चलिया गियाछे। ठिक सेइ नदीर धारेइ

ऐ भावेर एकटा किछु—इसी प्रकार का और कुछ।
एकटा-की—कोई कुछ। बिछाना पातिया—बिछौना बिछा कर। घुमाइब—सोऊँगा। फाँदिया बसिलेन—शुरु कर दी, छेड़ दी।
जुनागड़ेर—जूनागढ़ का। तुलार—रुई की। माशुल-आदाये—महसूल वसूलने। बाँकिया बाँकिया—इठलाती हुई। धारेइ—किनारे ही।

पाथर-बाँधानो देड़ शत सोपानमय अत्युच्च घाटेर उपरे एकटि श्वेत-प्रस्तरेर प्रासाद शैलपदमूले एकाकी दाँड़ाइया आछे—निकटे कोथाओ लोकालय नाइ। बरीचेर तुलार हाट एवं ग्राम एखान हइते दूरे।

प्राय आड़ाइ शत वत्सर पूर्वे द्वितीय शा-मामुद भोगविलासेर जन्य प्रासादटि एइ निर्जन स्थाने निर्माण कराइयाछिलेन। तखन हइते स्नानशालार फोयारार मुख हइते गोलापगन्धि जलधारा उत्क्षिप्त हइते थाकित एवं सेइ शीकरशीतल निभृत गृहेर मध्ये मर्मरखचित स्निग्ध शिलासने बसिया, कोमल नग्न पदपल्लव जलाशयेर निर्मल जलराशिर मध्ये प्रसारित करिया तरुणी पारसिक रमणीगण स्नानेर पूर्वे केश मुक्त करिया दिया, सेतार कोले, द्राक्षावनेर गजल गान करित।

एखन आर से फोयारा खेले ना, से गान नाइ, सादा पाथरेर उपर शुभ्र चरणेर सुन्दर आघात पड़े ना—एखन इहा आमादेर मतो निर्जनवासपीड़ित सङ्गिनीहीन माशुल-कालेक्टरेर अति बृहत् एवं अति शून्य वासस्थान। किन्तु आपिसेर वृद्ध केरानि करिम खाँ आमाके एइ प्रासादे वास करिते वारम्वार निषेध करियाछिल। वलियाछिल, "इच्छा हय दिनेर वेला थाकिबेन, किन्तु कखनओ एखाने रात्रियापन करिबेन ना।" आमि हासिया उड़ाइया दिलाम। भृत्येरा बलिल, ताहारा सन्ध्या पर्यन्त काज करिबे किन्तु रात्रे एखाने थाकिबे ना। आमि बलिलाम, "तथास्तु।" ए बाड़िर एमन बदनाम छिल ये रात्रे चोरओ एखाने आसिते साहस करित ना।

प्रथम प्रथम आसिया एइ परित्यक्त पाषाणप्रासादेर विजनता

पाथर-बाँधानो—पत्थर की चिनाई का।

शा-मामुद—शाह महमूद। **पारसिक**—फ़ारस की। **सेतार कोले**—गोद में सितार (लिए)। **द्राक्षावनेर**—अंगूरी चमन की।

फोयारा खेले ना—फव्वारे नहीं छूटते। **माशुल**—महसूल। **केरानि**—क्लर्क। **हय**—हो (तो)।

आमार बुकेर उपर येन एकटा भयंकर भारेर मतो चापिया थाकित, आमि यतटा पारिताम बाहिरे थाकिया, अविश्राम काज-कर्म करिया, रात्रे घरे फिरिया श्रान्तदेहे निद्रा दिताम।

किन्तु सप्ताहखानेक ना याइतेइ बाड़िटार एक अपूर्व नेशा आमाके क्रमशः आक्रमण करिया धरिते लागिल। आमार से अवस्था वर्णना कराओ कठिन एवं से कथा लोकके विश्वास करानोओ शक्त। समस्त बाड़िटा एकटा संजीव पदार्थेर मतो आमाके ताहार जठरस्थ मोहरसे अल्पे अल्पे येन जीर्ण करिते लागिल।

बोध हय ए बाड़िते पदार्पणमात्रेइ ए प्रक्रियार आरम्भ हइयाछिल—किन्तु आमि येदिन सचेतनभावे प्रथम इहार सूत्रपात अनुभव करि सेदिनकार कथा आमार स्पष्ट मने आछे।

तखन ग्रीष्मकालेर आरम्भे बाजार नरम; आमार हाते कोनो काज छिल ना। सूर्यास्तेर किछु पूर्वे आमि सेइ नदीतीरे घाटेर निम्नतले एकटा आरामकेदारा लइया बसियाछि। तखन शुस्ता नदी शीर्ण हइया आसियाछे; ओपारे अनेकखानि बालुतट अपराह्णेर आभाय रङिन हइया उठियाछे, एपारे घाटेर सोपानमूले स्वच्छ अगभीर जलेर तले नुड़िगुलि झिक् झिक् करितेछे। सेदिन कोथाओ वातास छिल ना। निकटेर पाहाड़े वनतुलसी पुदिना ओ मौरिर जङ्गल हइते एकटा घन सुगन्ध उठिया स्थिर आकाशके भाराक्रान्त करिया राखियाछिल।

सूर्य यखन गिरिशिखरेर अन्तराले अवतीर्ण हइल, तत्क्षणात् दिवसेर नाट्यशालाय एकटा दीर्घ छायायवनिका पड़िया गेल—एखाने पर्वतेर व्यवधान थाकाते सूर्यास्तेर समय आलो-आंधारेर

बुकेर उपर—छाती पर। चापिया थाकित—दबाए रहती। निद्रा दिताम—नींद लेता।

सप्ताहखानेक—लगभग एक सप्ताह। नेशा—नशा। मोहरसे—मोह रस से।

हाते—हाथ में। आरामकेदारा—आरामकुर्सी। नुड़िगुलि—गोल बटियाँ। पुदिना—पुदीना। मौरिर—सौंफ के।

सम्मिलन अधिकक्षण स्थायी हय ना। घोड़ाय चड़िया एकबार छुटिया बेड़ाइया आसिब मने करिया उठिब-उठिब करितेछि, एमन समय सिँड़िते पायेर शब्द शुनिते पाइलाम। पिछने फिरिया देखिलाम—केह नाइ।

इन्द्रियेर भ्रम मने करिया पुनराय फिरिया बसितेइ, एकेबारे अनेकगुलि पायेर शब्द शोना गेल—येन अनेके मिलिया छुटाछुटि करिया नामिया आसितेछे। ईषत् भयेर सहित एक अपरूप पुलक मिश्रित हइया आमार सर्वाङ्ग परिपूर्ण करिया तुलिल। यदिओ आमार सम्मुखे कोनो मूर्ति छिल ना तथापि स्पष्ट प्रत्यक्षवत् मने हइल ये, एइ ग्रीष्मेर सायाह्ने एकदल प्रमोदचञ्चल नारी शुस्तार जलेर मध्ये स्नान करिते नामियाछे। यदिओ सेइ सन्ध्याकाले निस्तब्ध गिरितटे, नदीतीरे, निर्जन प्रासादे कोथाओ किछुमात्र शब्द छिल ना, तथापि आमि येन स्पष्ट शुनिते पाइलाम निर्झरेर शतधारार मतो सकौतुक कलहास्येर सहित परस्परेर द्रुत अनुधावन करिया आमार पार्श्व दिया स्नानार्थिनीरा चलिया गेल। आमाके येन लक्ष्य करिल ना। ताहारा येमन आमार निकट अदृश्य, आमिओ येन सेइरूप ताहादेर निकट अदृश्य। नदी पूर्ववत् स्थिर छिल, किन्तु आमार निकट स्पष्ट बोध हइल, स्वच्छतोयार अगभीर स्रोत अनेकगुलि वलयशिञ्जित बाहुविक्षेपे विक्षुब्ध हइया उठियाछे, हासिया हासिया सखीगण परस्परेर गाये जल छुँड़िया मारितेछे एवं सन्तरणकारिणीदेर पदाघाते जलबिन्दु-राशि मुक्तामुष्टिर मतो आकाशे छिँटिया पड़ितेछे।

आमार वक्षेर मध्ये एकप्रकार कम्पन हइते लागिल; से उत्तेजना भयेर कि आनन्देर कि कौतूहलेर, ठिक बलिते पारि ना। बड़ो इच्छा हइते लागिल, भालो करिया देखि, किन्तु सम्मुखे

सिँड़िते—सीढ़ियों पर।

अनेकगुलि—बहुत से। छुटाछुटि—भाग-दौड़। सायाह्ने—साँझ को। गाये—शरीर पर। छुँड़िया मारितेछे—उलीच रही हैं। छिँटिया पड़ितेछे—बिखर जाती है।

देखिवार किछुइ छिल ना; मने हइल, भालो करिया कान पातिलेइ उहादेर कथा समस्तइ स्पष्ट शोना याइबे—किन्तु एकान्तमने कान पातिया केवल अरण्येर झिल्लिरव शोना याय। मने हइल, आड़ाइ शत वत्सरेर कृष्णवर्ण यवनिका ठिक आमार सम्मुखे दुलितेछे, भये भये एकटि धार तुलिया भितरे दृष्टिपात करि—सेखाने वृहत् सभा वसियाछे, किन्तु गाढ़ अन्धकारे किछुइ देखा याय ना।

हठात् गुमोट भाङ्गिया हु हु करिया एकटा वातास दिल—शुस्तार स्थिर जलतल देखिते देखिते अप्सरीर केशदामेर मतो कुञ्चित हइया उठिल, एवं सन्ध्याछायाच्छन्न समस्त वनभूमि एक मुहूर्ते एकसङ्गे मर्मरध्वनि करिया येन दुःस्वप्न हइते जागिया उठिल। स्वप्नइ वलो आर सत्यइ वलो, आड़ाइ शत वत्सरेर अतीत क्षेत्र हइते प्रतिफलित हइया आमार सम्मुखे ये-एक अदृश्य मरीचिका अवतीर्ण हइयाछिल ताहा चकितेर मध्ये अन्तर्हित हइल। ये मायामयीरा आमार गायेर उपर दिया देहहीन द्रुतपदे शब्दहीन उच्चकलहास्ये छुटिया शुस्तार जलेर उपर गिया झाँप दिया पड़ियाछिल, ताहारा सिक्त अञ्चल हइते जल निष्कर्षण करिते करिते आमार पाश दिया उठिया गेल ना। वातासे येमन करिया गन्ध उड़ाइया लइया याय, वसन्तेर एक निश्वासे ताहारा तेमनि करिया उड़िया चलिया गेल।

तखन आमार वड़ो आशंका हइल ये, हठात् वुझि निर्जन पाइया कवितादेवी आमार स्कन्धे आसिया भर करिलेन। आमि वेचारा तुलार माशुल आदाय करिया खाटिया खाइ, सर्वनाशिनी

कान पातिलेइ—कान लगा कर सुनते ही। दुलितेछे—झूल रही है। एकटि धार तुलिया—एक किनारा उठा कर।

गुमोट भाङ्गिया—उमस को तोड़ती हुई। एकटा वातास दिल—हवा का एक झोंका आया। केशदामेर मतो—केशपाश के समान। चकितेर मध्ये—क्षण-भर में। झाँप दिया पड़ियाछिल—कूद पड़ी थीं। पाश दिया—बगल से। बुझि—शायद। भर करिलेन—सहारा लिया है। खाटिया खाइ—मेहनत करके खाता हूँ।

एइवार वुझि आमार मुण्डपात करिते आसिलेन। भाविलाम, भालो करिया आहार करिते हइबे; शून्य उदरेइ सकल प्रकार दुरारोग्य रोग आसिया चापिया धरे। आमार पाचकटिके डाकिया प्रचुरघृतपक्व मसला-सुगन्धि रीतिमतो मोगलाइ खाना हुकुम करिलाम।

परदिन प्रात:काले समस्त व्यापारटि परम हास्यजनक बलिया बोध हइल। आनन्दमने साहेबेर मतो सोला-टुपि परिया, निजेर हाते गाड़ि हाँकाइया, गड़् गड़् शब्दे आपन तदन्तकार्ये चलिया गेलाम। सेदिन त्रैमासिक रिपोर्ट् लिखिवार दिन थाकाते विलम्बे वाड़ि फिरिवार कथा। किन्तु सन्ध्या हइते ना हइतेइ आमाके वाड़िर दिके टानिते लागिल। के टानिते लागिल बलिते पारि ना; किन्तु मने हइल, आर विलम्ब करा उचित हय ना। मने हइल, सकले वसिया आछे। रिपोर्ट् असमाप्त राखिया सोलार-टुपि माथाय दिया सेइ सन्ध्याधूसर तरुच्छायाघन निर्जन पथ रथचक्रशब्दे सचकित करिया सेइ अन्धकार शैलान्तवर्ती निस्तब्ध प्रकाण्ड प्रासादे गिया उत्तीर्ण हइलाम।

सिँड़िर उपरे सम्मुखेर घरटि अतिबृहत्। तिन सारि वड़ो वड़ो थामेर उपर कारुकार्यखचित खिलाने विस्तीर्ण छाद धरिया राखियाछे। एइ प्रकाण्ड घरटि आपनार विपुलशून्यता-भरे अहर्निश गम् गम् करिते थाके। सेदिन सन्ध्यार प्राक्काले तखनओ प्रदीप ज्वालानो हय नाइ। दरजा ठेलिया आमि सेइ बृहत् घरे येमन प्रवेश करिलाम अमनि मने हइल, घरेर मध्ये येन भारि एकटा विप्लव वाधिया गेल—येन हठात् सभा भङ्ग

दुरारोग्य धरे—असाध्य रोग(आ) धर दवाते हैं। रीतिमतो—बाक़ायदा।

तदन्तकार्ये—तहक़ीक़ात के काम पर। टानिते लागिल—खींचने लगा। मने हइल—जान पड़ा।

घरटि—कमरा। तिन सारि—तीन पंक्तियाँ। थामेर—खम्भों के। खिलाने—मेहराबों पर। छाद—छत। गम् गम्—सांय-सांय। विप्लव वाधिया गेल—उथल-पुथल मच गई।

करिया चारि दिकेर दरजा जानला घर पथ बारान्दा दिया के कोन् दिके पलाइल ताहार ठिकाना नाइ। आमि कोथाओ किछु ना देखिते पाइया अवाक हइया दाँड़ाइया रहिलाम। शरीर एकप्रकार आवेशे रोमाञ्चित हइया उठिल। येन बहुदिवसेर लुप्तावशिष्ट मायाघषा ओ आतरेर मृदु गन्ध आमार नासार मध्ये प्रवेश करिते लागिल। आमि सेइ दीपहीन जनहीन प्रकाण्ड घरेर प्राचीनप्रस्तरस्तम्भ श्रेणीर माझखाने दाँड़ाइया शुनिते पाइलाम—झर्झर शब्दे फोयारार जल सादा पाथरेर उपरे आसिया पड़ितेछे, सेतारे की सुर बाजितेछे बुझिते पारितेछि ना, कोथाओ वा स्वर्णभूषणेर शिञ्जित, कोथाओ वा नूपुरेर निक्कण, कखनओ वा बृहत् ताम्रघण्टाय प्रहर बाजिबार शब्द, अति दूरे नहबतेर आलाप, बातासे दोदुल्यमान झाड़ेर स्फटिकदोलकगुलिर ठुन् ठुन् ध्वनि, बारान्दा हइते खाँचार बुलबुलेर गान, बागान हइते पोषा सारसेर डाक आमार चतुर्दिके एकटा प्रेतलोकेर रागिणी सृष्टि करिते लागिल।

आमार एमन एकटा मोह उपस्थित हइल, मने हइल एइ अस्पृश्य अगम्य अवास्तव व्यापारइ जगते एकमात्र सत्य, आर-समस्तइ मिथ्या मरीचिका। आमि ये आमि—अर्थात् आमि ये श्रीयुक्त अमुक, ˚अमुकेर ज्येष्ठ पुत्र, तुलार माशुल संग्रह करिया साड़े चार शो टाका वेतन पाइ, आमि ये सोलार टुपि एवं खाटो कोर्ता परिया टम्टम् हाँकाइया आपिस करिते याइ, ए-समस्तइ आमार काछे एमन अद्भुत हास्यकर अमूलक मिथ्या कथा बलिया बोध हइल ये, आमि सेइ विशाल निस्तब्ध अन्धकार घरेर माझखाने दाँड़ाइया हा हा करिया हासिया उठिलाम।

तखनइ आमार मुसलमान भृत्य प्रज्वलित केरोसिन

पलाइल—भागा। मायाघषा—सिर की मालिश। नहबतेर—नौबत का। झाड़ेर—झाड़ (फानूस) के। खाँचार—पिंजरे में (बन्द)। पोषा सारसेर—पालतू सारस की।
˚अमुकेर—स्वर्गीय अमुक (व्यक्ति) का। खाटो कोर्ता—ऊँचा कुर्ता, कमीज। आपिस करिते—ऑफिस (काम करने) जाता हूँ।

ल्याम्प् हाते करिया घरेर मध्ये प्रवेश करिल। से आमाके पागल मने करिल कि ना जानि ना, किन्तु तत्क्षणात् आमार स्मरण हइल ये, आमि अमुकचन्द्रेर ज्येष्ठपुत्र श्रीयुक्त अमुकनाथ बटे; इहाओ मने करिलाम ये, जगतेर भितरे अथवा बाहिरे कोथाओ अमूर्त फोयारा नित्यकाल उत्सारित ओ अदृश्य अङ्गुलिर आघाते कोनो माया-सेतारे अनन्त रागिणी ध्वनित हइतेछे कि ना ताहा आमादेर महाकवि ओ कविवरेराइ बलिते पारेन, किन्तु ए कथा निश्चय सत्य ये, आमि बरीचेर हाटे तुलार माशुल आदाय करिया मासे साड़े चार शो टाका वेतन लइया थाकि। तखन आबार आमार पूर्वक्षणेर अद्भुत मोह स्मरण करिया केरोसिन-प्रदीप्त ल्याम्प्टेबिलेर काछे खबरेर कागज लइया सकौतुके हासिते लागिलाम।

खबरेर कागज पड़िया एवं मोगलाइ खाना खाइया एकटि क्षुद्र कोणेर घरे प्रदीप निबाइया दिया बिछानाय गिया शयन करिलाम। आमार सम्मुखवर्ती खोला जानालार भितर दिया अन्धकार वनवेष्टित अराली पर्वतेर ऊर्ध्वदेशेर एकटि अत्युज्ज्वल नक्षत्र सहस्र कोटि योजन दूर आकाश हइते सेइ अतितुच्छ ल्याम्प्खाटेर उपर श्रीयुक्त माशुल-कालेक्टरके एकदृष्टे निरीक्षण करिया देखितेछिल—इहाते आमि विस्मय ओ कौतुक अनुभव करिते करिते कखन घुमाइया पड़ियाछिलाम बलिते पारि ना। कतक्षण घुमाइयाछिलाम ताहाओ जानि ना। सहसा एक समय शिहरिया जागिया उठिलाम—घरे ये कोनो शब्द हइयाछिल ताहा नहे, कोनो ये लोक प्रवेश करियाछिल ताहाओ देखिते पाइलाम ना। अन्धकार पर्वतेर उपर हइते अनिमेष नक्षत्रटि अस्तमित हइयाछे एवं कृष्णपक्षेर क्षीणचन्द्रालोक अनधिकारसंकुचित म्लान-भावे आमार वातायनपथे प्रवेश करियाछे।

ल्याम्प्—लैम्प। **बटे**—हूँ तो सही। **ल्याम्प्टेबिलेर**—लैम्प टेबिल के। **खबरेर कागज**—अखबार।

कोणेर घरे—कोने के कमरे में। **निबाइया दिया**—बुझा कर। **खोला**—खुले हुए। **घुमाइया पड़ियाछिलाम**—सो गया था। **शिहरिया**—सिहर कर।

कोनो लोककेइ देखिलाम ना। तवु येन आमार स्पष्ट मने हइल, के एकजन आमाके आस्ते आस्ते ठेलितेछे। आमि जागिया उठितेइ से कोनो कथा ना वलिया केवल येन ताहार अङ्गुरीखचित पाँच अङ्गुलिर इङ्गिते अति सावधाने ताहार अनुसरण करिते आदेश करिल।

आमि अत्यन्त चुपिचुपि उठिलाम। यदिओ सेइ शतकक्ष-प्रकोष्ठमय, प्रकाण्डशून्यतामय, निद्रित ध्वनि एवं सजाग प्रतिध्वनि-मय वृहत् प्रासादे आमि छाड़ा आर जनप्राणीओ छिल ना, तथापि पदे पदे भय हइते लागिल, पाछे केह जागिया उठे। प्रासादेर अधिकांश घर रुद्ध थाकित एवं से-सकल घरे आमि कखनओ याइ नाइ।

से रात्रे निःशब्दपदविक्षेपे संयतनिश्वासे सेइ अदृश्य आह्वान-रूपिणीर अनुसरण करिया आमि ये कोथा दिया कोथाय याइतेछिलाम, आज ताहा स्पष्ट करिया वलिते पारि ना। कत संकीर्ण अन्धकार पथ, कत दीर्घ वारान्दा, कत गम्भीर निस्तब्ध सुवृहत् सभागृह, कत रुद्धवायु क्षुद्र गोपन कक्ष पार हइया याइते लागिलाम ताहार ठिकाना नाइ।

आमार अदृश्य दूतीटिके यदिओ चक्षे देखिते पाइ नाइ तथापि ताहार मूर्ति आमार मनेर अगोचर छिल ना। आरव रमणी, झोला आस्तिनेर भितर दिया श्वेतप्रस्तररचितवत् कठिन निटोल हस्त देखा याइतेछे, टुपिर प्रान्त हइते मुखेर उपरे एकटि सूक्ष्म वसनेर आवरण पड़ियाछे, कटिवन्धे एकटि बाँका छुरि बाँधा।

आमार मने हइल, आरव्य उपन्यासेर एकाधिक सहस्र रजनीर एकटि रजनी आज उपन्यासलोक हइते उड़िया आसियाछे।

अङ्गुरीखचित—अंगूठियों से सुशोभित।
आमि छाड़ा—मेरे अतिरिक्त। पाछे.....उठे—कहीं कोई जाग न उठे।
झोला—ढीली। निटोल—सुडौल।

आमि येन अन्धकार निशीथे सुप्तिमग्न बोग्दादेर निर्वापितदीप संकीर्ण पथे कोनो-एक संकटसंकुल अभिसारे यात्रा करियाछि।

अवशेषे आमार दूती एकटि घननील पर्दार सम्मुखे सहसा थमकिया दाँड़ाइया येन निम्ने अङ्गुलि निर्देश करिया देखाइल। निम्ने किछुइ छिल ना, किन्तु भये आमार वक्षेर रक्त स्तम्भित हइया गेल। आमि अनुभव करिलाम, सेइ पर्दार सम्मुखे भूमितले किंखाबेर साज-परा एकटि भीषण काफ्रि खोजा कोलेर उपर खोला तलोयार लइया, दुइ पा छड़ाइया दिया, बसिया ढुलितेछे। दूती लघुगतिते ताहार दुइ पा डिङाइया पर्दार एक प्रान्तदेश तुलिया धरिल।

भितर हइते एकटि पारस्य-गालिचा-पाता घरेर कियदंश देखा गेल। तक्तेर उपरे के बसिया आछे देखा गेल ना—केवल जाफ़रान रङेर स्फीत पायजामार निम्नभागे जरिर चटि-परा दुइखानि सुन्दर चरण गोलापि मखमल-आसनेर उपर अलसभावे स्थापित रहियाछे देखिते पाइलाम। मेजेर एक पार्श्वे एकटि नीलाभ स्फटिकपात्रे कतकगुलि आपेल, नाशपाति, नाराङ्गि एवं प्रचुर आङुरेर गुच्छ सज्जित रहियाछे एवं ताहार पार्श्वे दुइटि छोटो पेयाला ओ एकटि स्वर्णाभ मदिरार काचपात्र अतिथिर जन्य अपेक्षा करिया आछे। घरेर भितर हइते एकटा अपूर्व धूपेर एक प्रकार मादक सुगन्धि धूम्र आसिया आमाके विह्वल करिया दिल।

आमि कम्पितवक्षे सेइ खोजार प्रसारित पदद्वय येमन लङ्घन करिते गेलाम, अमनि से चमकिया उठिल—ताहार कोलेर उपर हइते तलोयार पाथरेर मेजेय शब्द करिया पड़िया गेल।

बोगदादेर—बग़दाद के।

थमकिया दाँड़ाइया—ठिठक कर खड़ी हो कर। **किंखाबेर**—कीमखाब। **साज-परा**—पोशाक पहने। **काफ्रि**—हब्शी। **कोलेर उपर**—गोद में। **पा छड़ाइया दिया**—पैर फैलाए। **ढुलितेछे**—ऊँघता हुआ झूम रहा है। **डिङाइया**—लाँघ कर।

जरिर चटि—जरी की जूतियाँ। **मेजेर**—फ़र्श के। **आपेल**—सेब।

चमकिया उठिल—चौंक पड़ा।

ताहार पर अन्धकार यतइ घनीभूत हइत ततइ की-ये एक अद्भुत व्यापार घटिते थाकित ताहा आमि वर्णना करिते पारि ना। ठिक येन एकटा चमत्कार गल्पेर कतकगुलि छिन्न अंश वसन्तेर आकस्मिक वातासे एइ वृहत् प्रासादेर विचित्र घरगुलिर मध्ये उड़िया बेड़ाइत। खानिकटा दूर पर्यन्त पाओया याइत ताहार परे आर शेष देखा याइत ना। आमिओ सेइ घूर्णमान विच्छिन्न अंशगुलिर अनुसरण करिया समस्त रात्रि घरे घरे घुरिया वेड़ाइताम।

एइ खण्डस्वप्नेर आवर्तेर मध्ये, एइ क्वचित् हेनार गन्ध, क्वचित् सेतारेर शव्द, क्वचित् सुरभिजलशीकरमिश्र वायुर हिल्लोलेर मध्ये एकटि नायिकाके क्षणे क्षणे विद्युत्शिखार मतो चकिते देखिते पाइताम। ताहारइ जाफ्रान रङेर पायजामा, एवं दुटि शुभ्ररक्तिम कोमल पाये वक्रशीर्ष जरिर चटि परा, वक्षे अतिपिनद्ध जरिर फुलकाटा काँचुलि आवद्ध, माथाय एकटि लाल टुपि एवं ताहा हइते सोनार झालर झुलिया ताहार शुभ्र ललाट एवं कपोल वेष्टन करियाछे।

से आमाके पागल करिया दियाछिल। आमि ताहारइ अभिसारे प्रति रात्रे निद्रार रसातलराज्ये स्वप्नेर जटिलपथसंकुल मायापुरीर मध्ये गलिते गलिते कक्षे कक्षे भ्रमण करिया वेड़ाइयाछि।

एक-एकदिन सन्ध्यार समय वड़ो आयनार दुइ दिके दुइ वाति ज्वालाइया यत्नपूर्वक शाहजादार मतो साज करितेछि एमन समय हठात् देखिते पाइलाम, आयनार आमार प्रतिविम्वेर पार्श्वे क्षणिकेर जन्य सेइ तरुणी इरानीर छाया आसिया पड़िल—

खानिकटा.....याइत—(कहानी का उक्त छिन्न अंश) कुछ दूर तक मिलता। घुरिया वेड़ाइताम—चक्कर काटता फिरता। हेनार—हिना की। चकिते ......पाइतम—पल-भर को देख पाता। काँचुलि—अँगिया।

गलिते-गलिते—गली-गली मे।

पलकेर मध्ये ग्रीवा बाँकाइया, ताहार घनकृष्ण विपुल चक्षु-तारकाय सुगभीर आवेगतीव्र वेदनापूर्ण आग्रहकटाक्षपात करिया, सरस सुन्दर विम्बाधरे एकटि अस्फुट भाषार आभासमात्र दिया, लघु ललित नृत्ये आपन यौवनपुष्पित देहलताटिके द्रुत वेगे ऊर्ध्वाभिमुखे आवर्तित करिया—मुहूर्तकालेर मध्ये वेदना वासना ओ विभ्रमेर, हास्य कटाक्ष ओ भूषणज्योतिर स्फुलिङ्ग वृष्टि करिया दिया दर्पणेइ मिलाइया गेल। गिरिकाननेर समस्त सुगन्ध लुण्ठन करिया एकटा उद्दाम वायुर उच्छ्वास आसिया आमार दुइटा बाति निवाइया दित; आमि साजसज्जा छाड़िया दिया वेशगृहेर प्रान्तवर्ती शय्यातले पुलकितदेहे मुद्रितनेत्रे शयन करिया थाकिताम —आमार चारि दिके सेइ वातासेर मध्ये, सेइ आराली गिरि-कुञ्जेर समस्त मिश्रित सौरभेर मध्ये येन अनेक आदर अनेक चुम्बन अनेक कोमल करस्पर्श निभृत अन्धकार पूर्ण करिया भासिया वेड़ाइत, कानेर काछे अनेक कलगुञ्जन शुनिते पाइताम, आमार कपालेर उपर सुगन्ध निश्वास आसिया पड़ित, एवं आमार कपोले एकटि मृदुसौरभरमणीय सुकोमल ओड़ना वारम्बार उड़िया उड़िया आसिया स्पर्श करित। अल्पे अल्पे येन एकटि मोहिनी सर्पिणी ताहार मादकवेष्टने आमार सर्वाङ्ग बाँधिया फेलित, आमि गाढ़ निश्वास फेलिया असाड़ देहे सुगभीर निद्राय अभिभूत हइया पड़िताम।

एकदिन अपराह्ले आमि घोड़ाय चड़िया बाहिर हइव संकल्प करिलाम—के आमाके निषेध करिते लागिल जानि ना—किन्तु सेदिन निषेध मानिलाम ना। एकटा काष्ठदण्डे आमार साहेबि ह्याट एवं खाटो कोर्ता दुलितेछिल, पाड़िया लइया परिवार उपक्रम

बाँकाइया—टेढ़ी कर। मिलाइया गेल—विलीन हो गई। छाड़िया दिया—वदल कर। आदर—दुलार, स्नेह। ओड़ना—ओढ़नी। असाड़—शिथिल, वेसुध।

दुलितेछिल—झूल रहा था। पाड़िया....परिवार—उतार कर पहनने का।

करितेछि, एमन समय शुस्ता नदीर वालि एवं अराली पर्वतेर शुष्क पल्लवराशिर ध्वजा तुलिया हठात् एकटा प्रवल घूर्णावातास आमार सेइ कोर्ता एवं टुपि घुराइते घुराइते लइया चलिल एवं एकटा अत्यन्त सुमिष्ट कलहास्य सेइ हाओयार सङ्गे घुरिते घुरिते कौतुकेर समस्त पर्दाय पर्दाय आघात करिते करिते उच्च हइते उच्चतर सप्तके उठिया सूर्यास्तलोकेर काछे गिया मिलाइया गेल।

सेदिन आर घोड़ाय चड़ा हइल ना एवं ताहार परदिन हइते सेइ कौतुकावह खाटो कोर्ता एवं साहेवि ह्याट परा एकेवारे छाड़िया दियाछि।

आवार सेइदिन अर्धरात्रे विछानार मध्ये उठिया वसिया शुनिते पाइलाम, के येन गुमरिया गुमरिया वुक फाटिया फाटिया काँदितेछे—येन आमार खाटेर नीचे, मेझेर नीचे एइ वृहत् प्रासादेर पाषाणभित्तिर तलवर्ती एकटा आर्द्र अन्धकार गोरेर भितर हइते काँदिया काँदिया वलितेछे, 'तुमि आमाके उद्धार करिया लइया याओ—कठिन माया, गभीर निद्रा, निष्फल स्वप्नेर समस्त द्वार भाङिया फेलिया तुमि आमाके घोड़ाय तुलिया तोमार वुकेर काछे चापिया धरिया, वनेर भितर दिया, पाहाड़ेर उपर दिया, नदी पार हइया तोमादेर सूर्यालोकित घरेर मध्ये आमाके लइया याओ। आमाके उद्धार करो।'

आमि के! आमि केमन करिया उद्धार करिव! आमि एइ घूर्णमान परिवर्तमान स्वप्नप्रवाहेर मध्य हइते कोन् मज्जमाना कामनासुन्दरीके तीरे टानिया तुलिव! तुमि कवे छिले, कोथाय छिले, हे दिव्यरूपिणी! तुमि कोन् शीतल उत्सेर तीरे खर्जुर-

---

तुलिया—फहराती हुई। घुराइते—चक्कर देते। **मिलाइया गेल**—विलीन हो गया।

परदिन हइते—अगले दिन से। एकेवारे—कतई।

गुमरिया गुमरिया—घुट-घुट कर। **वुक फाटिया फाटिया काँदितेछे**—छाती फाड़ कर रो रही है। **मेझेर**—फ़र्श के। **गोरेर**—कब्र के।

कुञ्जेर छायाय कोन् गृहहीना मरुवासिनीर कोले जन्मग्रहण करियाछिले। तोमाके कोन् वेदुयीन दस्यु, वनलता हइते पुष्प-कोरकेर मतो, मातृक्रोड़ हइते छिन्न करिया विद्युत्गामी अश्वेर उपरे चड़ाइया ज्वलन्त वालुकाराशि पार हइया कोन् राजपुरीर दासीहाटे विक्रयेर जन्य लइया गियाछिल। सेखाने कोन् वाद-शाहेर भृत्य तोमार नवविकसित सलज्जकातर यौवनशोभा निरीक्षण करिया स्वर्णमुद्रा गणिया दिया, समुद्र पार हइया, तोमाके सोनार शिविकाय वसाइया, प्रभुगृहेर अन्तःपुरे उपहार दियाछिल। सेखाने से की इतिहास। सेइ सारङ्गीर संगीत, नूपुरेर निक्कण एवं सिराजेर सुवर्णमदिरार मध्ये मध्ये छुरिर झलक, विषेर ज्वाला, कटाक्षेर आघात। की असीम ऐश्वर्य, की अनन्त कारागार। दुइ दिके दुइ दासी वलयेर हीरके विजुलि खेलाइया चामर दुलाइतेछे। शाहेनशा वादशा शुभ्र चरणेर तले मणि-मुक्ताखचित पादुकार काछे लुटाइतेछे; वाहिरेर द्वारेर काछे यमदूतेर मतो हाब्शि देवदूतेर मतो साज करिया, खोला तलोयार हाते दाँड़ाइया। ताहार परे सेइ रक्तकलुषित ईर्षाफेनिल षड्यन्त्रसंकुल भीषणोज्ज्वल ऐश्वर्यप्रवाहे भासमान हइया, तुमि मरुभूमिर पुष्पमञ्जरी कोन् निष्ठुर मृत्युर मध्ये अवतीर्ण अथवा कोन् निष्ठुरतर महिमातटे उत्क्षिप्त हइयाछिले!

एमन समय हठात् सेइ पागला मेहेर आलि चीत्कार करिया उठिल, "तफात याओ, तफात याओ। सब झुंट ह्याय, सब झुंट ह्याय।" चाहिया देखिलाम, सकाल हइयाछे; चापराशि डाकेर चिठिपत्र लइया आमार हाते दिल एवं पाचक आसिया सेलाम करिया जिज्ञासा करिल, आज किरूप खाना प्रस्तुत करिते हइवे।

आमि कहिलाम, ना, आर ए वाड़िते थाका हय ना। सेइ-

कोले—गोद में। वेदुयीन—बद्दू। झलक—कौंध। बिजुलि खेलाइया—बिजली चमकाती हुई। साज करिया—पोशाक पहन कर।

थाका—रहना।

दिनइ आमार जिनिसपत्र तुलिया आपिसघरे गिया उठिलाम। आपिसेर वृद्ध केरानि करिम खाँ आमाके देखिया ईषत् हासिल। आमि ताहार हासिते विरक्त हइया कोनो उत्तर ना करिया काज करिते लागिलाम।

यत बिकाल हइया आसिते लागिल ततइ अन्यमनस्क हइते लागिलाम—मने हइते लागिल, एखनइ कोथाय याइबार आछे—तुलार हिसाब परीक्षार काजटा नितान्त अनावश्यक मने हइल, निजामेर निजामतओ आमार काछे वेशि-किछु बोध हइल ना—याहा-किछु वर्तमान, याहा-किछु आमार चारि दिके चलितेछे फिरितेछे खाटितेछे खाइतेछे समस्तइ आमार काछे अत्यन्त दीन अर्थहीन अकिञ्चित्कर बलिया बोध हइल।

आमि कलम छुंड़िया फेलिया, बृहत् खाता बन्ध करिया तत्क्षणात् टम्टम् चड़िया छुटिलाम। देखिलाम, टम्टम् ठिक गोधूलिमुहूर्ते आपनिइ सेइ पाषाण-प्रासादेर द्वारेर काछे गिया थामिल। द्रुतपदे सिंड़िगुलि उत्तीर्ण हइया घरेर मध्ये प्रवेश करिलाम।

आज समस्त निस्तब्ध। अन्धकार घरगुलि येन राग करिया मुख भार करिया आछे। अनुतापे आमार हृदय उद्वेलित हइया उठिते लागिल किन्तु काहाके जानाइब, काहार निकट मार्जना चाहिब, खुंजिया पाइलाम ना। आमि शून्यमने अन्धकार घरे घुरिया बेड़ाइते लागिलाम। इच्छा करिते लागिल एकखाना यन्त्र हाते लइया काहाकेओ उद्देश्य करिया गान गाहि; बलि, 'हे वह्नि, ये पतङ्ग तोमाके फेलिया पलाइबार चेष्टा करियाछिल, से आबार मरिबार जन्य आसियाछे। एबार ताहाके मार्जना करो, ताहार दुइ पक्ष दग्ध करिया दाओ, भस्मसात करिया फेलो।'

जिनिसपत्र तुलिया—चीजवस्त उठा कर।
विकाल—अपराह्ण। खाटितेछे—परिश्रम (काम-काज) कर रहा है।
छुंड़िया फेलिया—फेंक कर।
राग करिया—नाराज हो कर। जानाइब—बताऊँगा। गान गाहि—गीत गाऊँ।

हठात् उपर हइते आमार कपाले दुइ फोँटा अश्रुजल पड़िल। सेदिन अराली पर्वतेर चूड़ाय घनघोर मेघ करिया आसियाछिल। अन्धकार अरण्य एवं शुस्तार मसीवर्ण जल एकटि भीषण प्रतीक्षाय स्थिर हइया छिल। जल स्थल आकाश सहसा शिहरिया उठिल; एवं अकस्मात् एकटा विद्युद्दन्तविकशित झड़ शृङ्खलछिन्न उन्मादेर मतो पथहीन सुदूर वनेर भितर दिया आर्त चीत्कार करिते करिते छुटिया आसिल। प्रासादेर बड़ो बड़ो शून्य घरगुला समस्त द्वार आछड़ाइया तीव्र वेदनाय हुहु करिया काँदिते लागिल।

आज भृत्यगण सकलेइ आपिसघरे छिल, एखाने आलो ज्वालाइबार केह छिल ना। सेइ मेघाच्छन्न अमावस्यार रात्रे गृहेर भितरकार निकषकृष्ण अन्धकारेर मध्ये आमि स्पष्ट अनुभव करिते लागिलाम---एकजन रमणी पालङ्केर तलदेशे गालिचार उपरे उपुड़ हइया पड़िया दुइ दृढ़बद्धमुष्टिते आपनार आलुलायित केशजाल टानिया छिँड़ितेछे, ताहार गौरवर्ण ललाट दिया रक्त फाटिया पड़ितेछे, कखनओ से शुष्क तीव्र अट्टहास्ये हा-हा करिया हासिया उठितेछे, कखनओ फुलिया-फुलिया फाटिया-फाटिया काँदितेछे, दुइ हस्ते वक्षेर काँचुलि छिँड़िया फेलिया अनावृत वक्षे आघात करितेछे, मुक्त वातायन दिया वातास गर्जन करिया आसितेछे एवं मुषलधारे वृष्टि आसिया ताहार सर्वाङ्ग अभिषिक्त करिया दितेछे।

समस्त रात्रि झड़ओ थामे ना, क्रन्दनओ थामे ना। आमि निष्फल परितापे घरे घरे अन्धकारे घुरिया बेड़ाइते लागिलाम। केह कोथाओ नाइ; काहाके सान्त्वना करिब। एइ प्रचण्ड अभिमान काहार। एइ अशान्त आक्षेप कोथा हइते उत्थित हइतेछे।

फोँटा---बूंद। **झड़**---आँधी। **छुटिया आसिल**---दौड़ी चली आई। **आछड़ाइया**---पछाड़ खा-खा कर।

उपुड़ हइया---औंधी हो कर। **टानिया छिँड़ितेछे**---नोच-नोच कर फेंक रही है। **फाटिया पड़ितेछे**---फूट-फूट कर बह रहा है। **फुलिया....काँदितेछे**---फफक-फफक कर, फूट-फूट कर रो रही है। **काँचुलि**---चोली।

पागल चीत्कार करिया उठिल, "तफात याओ, तफात याओ ! सब झुंट ह्याय, सब झुंट ह्याय ।"

देखिलाम, भोर हइयाछे एवं मेहेर आलि एइ घोर दुर्योगेर दिनेओ यथानियमे प्रासाद प्रदक्षिण करिया ताहार अभ्यस्त चीत्कार करितेछे । हठात् आमार मने हइल, हयतो ओइ मेहेर आलिओ आमार मतो एक समय एइ प्रासादे वास करियाछिल, एखन पागल हइया बाहिर हइयाओ एइ पाषाण-राक्षसेर मोहे आकृष्ट हइया प्रत्यह प्रत्यूषे प्रदक्षिण करिते आसे ।

आमि तत्क्षणात् सेइ वृष्टिते पागलेर निकट छुटिया गिया ताहाके जिज्ञासा करिलाम, "मेहेर आलि, क्या झुंट ह्याय रे ?"

से आमार कथाय कोनो उत्तर ना करिया आमाके ठेलिया फेलिया अजगरेर कवलेर चतुर्दिके घूर्णमान मोहाविष्ट पक्षीर न्याय चीत्कार करिते करिते बाड़िर चारि दिके घुरिते लागिल । केवल प्राणपणे निजेके सतर्क करिबार जन्य वारम्वार बलिते लागिल, "तफात याओ, तफात याओ, सब झुंट ह्याय, सब झुंट ह्याय ।"

आमि सेइ जलझड़ेर मध्ये पागलेर मतो आपिसे गिया करिम खाँके डाकिया बलिलाम, "इहार अर्थ की आमाय खुलिया बलो ।"

वृद्ध याहा कहिल ताहार मर्मार्थ एइ : एक-समय ओइ प्रासादे अनेक अतृप्त वासना, अनेक उन्मत्त सम्भोगेर शिखा आलोड़ित हइत—सेइ-सकल चित्तदाहे, सेइ-सकल निष्फल कामनार अभिशापे एइ प्रासादेर प्रत्येक प्रस्तरखण्ड क्षुधार्त तृषार्त हइया आछे, सजीव मानुष पाइले ताहाके लालायित पिशाचीर मतो खाइया फेलिते चाय । याहारा त्रिरात्रि ओइ प्रासादे वास करियाछे, ताहादेर मध्ये केवल मेहेर आलि पागल हइया बाहिर

आमाके ठेलिया—मुझे धकेल कर। घुरिते लागिल—घूमने लगा ।
जलझड़ेर मध्ये—आँधी-पानी के बीच ।
खाइया फेलिते चाय—खा डालना चाहती है ।

हइया आसियाछे, ए पर्यन्त आर केह ताहार ग्रास एड़ाइते पारे नाइ।

आमि जिज्ञासा करिलाम, "आमार उद्धारेर कि कोनो पथ नाइ।"

वृद्ध कहिल, "एकटिमात्र उपाय आछे, ताहा अत्यन्त दुरूह। ताहा तोमाके वलितेछि—किन्तु तत्पूर्वे ओइ गुलवागेर एकटि इरानी क्रीतदासीर पुरातन इतिहास वला आवश्यक। तेमन आश्चर्य एवं तेमन हृदयविदारक घटना संसारे आर कखनओ घटे नाइ।"

एमन समय कुलिरा आसिया खवर दिल, गाड़ि आसितेछे। एत शीघ्र? ताड़ाताड़ि बिछानापत्र बाँधिते बाँधिते गाड़ि आसिया पड़िल। से गाड़िर फार्स्ट क्लासे एकजन सुप्तोत्थित इंराज जानला हइते मुख वाड़ाइया स्टेशनेर नाम पड़िवार चेष्टा करितेछिल, आमादेर सहयात्री वन्धुटिके देखियाइ 'हालो' वलिया चीत्कार करिया उठिल एवं निजेर गाड़िते तुलिया लइल। आमरा सेकेण्ड क्लासे उठिलाम। वावुटि के खवर पाइलाम ना, गल्पेरओ शेष शोना हइल ना।

आमि वलिलाम, लोकटा आमादिगके वोकार मतो देखिया कौतुक करिया ठकाइया गेल; गल्पटा आगागोड़ा वानानो।

एइ तर्केर उपलक्ष्ये आमार थियसफिस्ट् आत्मीयटिर सहित आमार जन्मेर मतो विच्छेद घटिया गेछे।

जुलाई-अगस्त, १८९५।

ग्रास एड़ाइते पारे नाइ—ग्रास से (अपने को) बचा नहीं सका।

कुलिरा—कुलियों ने। ताड़ाताड़ि—जल्दी-जल्दी। गाड़िते तुलिया लइल—डिब्बे में चढ़ा लिया।

वोकार मतो देखिया—मूर्ख जान कर। ठकाइया गेल—मूर्ख बना गया। गल्पटा आगागोड़ा वानानो—आदि से अन्त तक सारी कहानी मनगढ़न्त है।

जन्मेर मतो—जन्म-भर के लिए।

अतिथि

प्रथम परिच्छेद

काँठालियार जमिदार मतिलालबाबु नौका करिया सपरिवारे स्वदेशे याइतेछिलेन। पथेर मध्ये मध्याह्ने नदीतीरेर एक गञ्जेर निकट नौका बाँधिया पाकेर आयोजन करितेछेन एमन समय एक ब्राह्मणबालक आसिया जिज्ञासा करिल, "बाबु, तोमरा याच्छ कोथाय।" प्रश्नकर्तार वयस पनेरो-षोलोर अधिक हइबे ना।

मतिबाबु उत्तर करिलेन, "काँठाले।"

ब्राह्मणबालक कहिल, "आमाके पथेर मध्ये नन्दीगाँये नाबिये दिते पार?"

बाबु सम्मति प्रकाश करिया जिज्ञासा करिलेन, "तोमार नाम की।"

ब्राह्मणबालक कहिल, "आमार नाम तारापद।"

गौरवर्ण छेलेटिके बड़ो सुन्दर देखिते। बड़ो बड़ो चक्षु एवं हास्यमय ओष्ठाधरे एकटि सुललित सौकुमार्य प्रकाश पाइतेछे। परिधाने एकखानि मलिन धुति। अनावृत देहखानि सर्वप्रकार बाहुल्यवर्जित; कोनो शिल्पी येन बहु यत्ने निखुँत निटोल करिया गड़िया दियाछेन। येन से पूर्वजन्मे तापस-बालक छिल एवं निर्मल तपस्यार प्रभावे ताहार शरीर हइते शरीरांश बहुल परिमाणे क्षय हइया एकटि सम्मार्जित ब्राह्मण्यश्री परिस्फुट हइया उठियाछे।

गञ्जेर—गंज, मंडी के। **पाकेर**—रसोई का। **पनेरो-षोलोर**—पन्द्रह-सोलह से।

नाबिये दिते पार—उतार दोगे।

छेलेटिके—लड़का। **निखुँत......दियाछेन**—सुडोल और निर्दोष रूप से गढ़ा हो।

मतिलालवावु ताहाके परम स्नेहभरे कहिलेन, "वावा, तुमि स्नान करे एसो, एइखानेइ आहारादि हवे।"

तारापद वलिल, "वसुन।" वलिया तत्क्षणात् असंकोचे रन्धनेर आयोजने योगदान करिल। मतिलालवावुर चाकरटा छिल हिन्दुस्थानी, माछ-कोटा प्रभृति कार्ये ताहार तेमन पटुता छिल ना ; तारापद ताहार काज निजे लइया अल्पकालेर मध्येइ सुसम्पन्न करिल एवं दुइ-एकटा तरकारिओ अभ्यस्त नैपुण्येर सहित रन्धन करिया दिल। पाककार्य शेष हइले तारापद नदीते स्नान करिया वोँचका खुलिया एकटि शुभ्र वस्त्र परिल ; एकटि छोटो काठेर काँकइ लइया माथार वड़ो वड़ो चुल कपाल हइते तुलिया ग्रीवार उपर फेलिल एवं मार्जित पइतार गोच्छा वक्षे विलम्बित करिया नौकाय मतिवावुर निकट गिया उपस्थित हइल।

मतिवावु ताहाके नौकार भितरे लइया गेलेन। सेखाने मतिवावुर स्त्री एवं ताँहार नवमवर्षीया एक कन्या वसिया छिलेन। मतिवावुर स्त्री अन्नपूर्णा एइ सुन्दर वालकटिके देखिया स्नेहे उच्छ्वसित हइया उठिलेन—मने मने कहिलेन, आहा, काहार वाछा, कोथा हइते आसियाछे—इहार मा इहाके छाड़िया केमन करिया प्राण धरिया आछे।

यथासमये मतिवावु एवं एइ छेलेटिर जन्य पाशापाशि दुइखानि आसन पड़िल। छेलेटि तेमन भोजनपटु नहे ; अन्नपूर्णा ताहार स्वल्प आहार देखिया मने करिलेन, से लज्जा करितेछे ; ताहाके एटा ओटा

वावा—वेटा।

हिन्दुस्थानी—हिन्दी भाषी। **माछ-कोटा**—मछली काटना। **शेष हइले**—समाप्त होने पर। **वोँचका खुलिया**—पोटली खोल कर। **काँकइ**—कंघी। **तुलिया**—उठा कर। **पइतार गोच्छा**—जनेऊ का गुच्छा।

वाछा—वेटा, वत्स। **कोथा हइते**—कहाँ से। **प्राण धरिया आछे**—जी रही है।

पाशापाशि—अगल-वगल। **एटा ओटा**—यह-वह।

खाइते विस्तर अनुरोध करिलेन; किन्तु यखन से आहार हइते निरस्त हइल, तखन से कोनो अनुरोध मानिल ना। देखा गेल, छेलेटि सम्पूर्ण निजेर इच्छा अनुसारे काज करे अथच एमन सहजे करे ये, ताहाते कोनो प्रकार जेद वा गों प्रकाश पाय ना। ताहार व्यवहारे लज्जार लक्षणओ लेशमात्र देखा गेल ना।

सकलेर आहारादिर परे अन्नपूर्णा ताहाके काछे बसाइया प्रश्न करिया ताहार इतिहास जानिते प्रवृत्त हइलेन। विस्तारित विवरण किछुइ संग्रह हइल ना। मोट कथा एइटुकु जाना गेल, छेलेटि सात-आट वत्सर वयसेइ स्वेच्छाक्रमे घर छाड़िया पलाइया आसियाछे।

अन्नपूर्णा प्रश्न करिलेन, "तोमार मा नाइ ?"

तारापद कहिल, "आछेन।"

अन्नपूर्णा जिज्ञासा करिलेन, "तिनि तोमाके भालोबासेन ना ?"

तारापद एइ प्रश्न अत्यन्त अद्‌भुत ज्ञान करिया हासिया उठिया कहिल, "केन भालोबासेन ना।"

अन्नपूर्णा प्रश्न करिलेन, "तबे तुमि ताँके छेड़े एले ये ?"

तारापद कहिल, "ताँर आरओ चारटि छेले एवं तिनटि मेये आछे।"

अन्नपूर्णा बालकेर एइ अद्‌भुत उत्तरे व्यथित हइया कहिलेन, "ओमा, से की कथा! पाँचटि आङुल आछे ब'ले कि एकटि आङुल त्याग करा याय।"

तारापदर वयस अल्प, ताहार इतिहासओ सेइ परिमाणे संक्षिप्त किन्तु छेलेटि सम्पूर्ण नूतनतर। से ताहार पितामातार

जेद वा गों—ज़िद या हठ।

काछे बसाइया—पास बैठा कर। मोट कथा—संक्षेप में। एइटुकु—इतना-भर। पलाइया आसियाछे—भाग आया है।

आछेन—हैं।

भालोबासेन ना—प्यार नहीं करतीं।

मेये—लड़कियाँ।

ओमा—मैया री (विस्मयादि सूचक)। आङुल—उँगलियाँ।

चतुर्थ पुत्र, शैशवेइ पितृहीन हय। बहु सन्तानेर घरेओ तारापद सकलेर अत्यन्त आदरेर छिल; मा भाइ बोन एवं पाड़ार सकलेरइ निकट हइते से अजस्र स्नेह लाभ करित। एमन कि, गुरुमहाशयओ ताहाके मारित ना—मारिलेओ बालकेर आत्मीय पर सकलेइ ताहाते वेदना बोध करित। एमन अवस्थाय ताहार गृहत्याग करिबार कोनोइ कारण छिल ना। ये उपेक्षित रोगा छेलेटा सर्वदाइ चुरि-करा गाछेर फल एवं गृहस्थ लोकदेर निकट ताहार चतुर्गुण प्रतिफल खाइया बेड़ाय सेओ ताहार परिचित ग्रामसीमार मध्ये ताहार निर्यातनकारिणी मार निकट पड़िया रहिल, आर समस्त ग्रामेर एइ आदरेर छेले एकटा विदेशी यात्रार दलेर सहित मिलिया अकातरचित्ते ग्राम छाड़िया पलायन करिल।

सकले खोँज करिया ताहाके ग्रामे फिराइया आनिल। ताहार मा ताहाके वक्षे चापिया धरिया अश्रुजले आर्द्र करिया दिल, ताहार बोनरा काँदिते लागिल; ताहार बड़ो भाइ पुरुष-अभिभावकेर कठिन कर्तव्य पालन उपलक्ष्ये ताहाके मृदु रकम शासन करिबार चेष्टा करिया अवशेषे अनुतप्तचित्ते विस्तर प्रश्रय एवं पुरस्कार दिल। पाड़ार मेयेरा ताहाके घरे घरे डाकिया प्रचुरतर आदर एवं बहुतर प्रलोभने बाध्य करिते चेष्टा करिल। किन्तु बन्धन, एमन कि स्नेहबन्धनओ ताहार सहिल ना; ताहार जन्मनक्षत्र ताहाके गृहहीन करिया दियाछे। से यखनइ देखित नदी दिया विदेशी नौका गुण टानिया चलियाछे, ग्रामेर बृहत् अश्वत्थगाछेर तले कोन् दूरदेश हइते एक संन्यासी

आदरेर—लाड़ला, प्यारा। **बोन**—बहन। **पाड़ार**—मुहल्ले के। **एमन कि**—यहाँ तक कि। **पर**—पराये। **कोनोइ**—कोई भी। **रोगा छेलेटा**—दुबला-पतला लड़का। **गाछेर फल**—वृक्ष के फल। **प्रतिफल खाइया**—परिणाम भुगत कर, मार खा कर। **निर्यातनकारिणी**—पीड़ित करने वाली। **विदेशी यात्रार दलेर**—परदेसी स्वांग-मंडली के दल के।

बोनरा काँदिते लागिल—बहनें रोने लगीं। **शासन करिबार**—धमकाने की। **सहिल ना**—सहन न हुआ, न रुचा। **गुण टानिया**—रस्सी से खींची जा कर। **अश्वत्थगाछेर**—पीपल के पेड़ के।

आसिया आश्रय लइयाछे, अथवा बेदेरा नदीर तीरेर पतित माठे छोटो छोटो चाटाइ बाँधिया बाँखारि छुलिया चाङारि निर्माण करिते बसियाछे, तखन अज्ञात बहिःपृथिवीर स्नेहहीन स्वाधीनतार जन्य ताहार चित्त अशान्त हइया उठित। उपरि-उपरि दुइ-तिनबार पलायनेर पर ताहार आत्मीयवर्ग एवं ग्रामेर लोक ताहार आशा परित्याग करिल।

प्रथमे से एकटा यात्रार दलेर सङ्ग लइयाछिल। अधिकारी यखन ताहाके पुत्रनिर्विशेषे स्नेह करिते लागिल एवं दलस्थ छोटो-बड़ो सकलेरइ यखन से प्रियपात्र हइया उठिल, एमन कि, ये बाड़िते यात्रा हइत से बाड़िर अध्यक्षगण, विशेषत पुरमहिलावर्ग यखन विशेषरूपे ताहाके आह्वान करिया समादर करिते लागिल, तखन एकदिन से काहाकेओ किछु ना बलिया कोथाय निरुद्देश हइया गेल ताहार आर सन्धान पाओया गेल ना।

तारापद हरिणशिशुर मतो बन्धनभीरु, आबार हरिणेरइ मतो संगीतमुग्ध। यात्रार गानेइ ताहाके प्रथम घर हइते बिबागि करिया देय। गानेर सुरे ताहार समस्त शिरार मध्ये अनुकम्पन एवं गानेर ताले ताहार सर्वाङ्गे आन्दोलन उपस्थित हइत। यखन से नितान्त शिशु छिल तखनओ संगीतसभाय से येरूप संयत गम्भीर वयस्क-भावे आत्मविस्मृत हइया बसिया बसिया दुलित, देखिया प्रवीण लोकेर हास्य सम्वरण करा दुःसाध्य हइत। केवल संगीत केन, गाछेर घन पल्लवेर उपर यखन श्रावणेर वृष्टिधारा पड़ित, आकाशे मेघ डाकित, अरण्येर भितर मातृहीन दैत्यशिशुर न्याय वातास क्रन्दन करिते थाकित, तखन ताहार चित्त येन

बेदेरा—बंजारे, जिप्सी। **पतित**—पड़े हुए। **माठे**—मैदान में। **बाँखारि छुलिया**—बाँस की खपच्चियाँ छील कर। **चाङारि**—डलियाँ। **उपरि-उपरि**—एक के बाद एक।

अधिकारी—स्वाँग की टोली का परिचालक। **एमन कि**—यहाँ तक कि। **निरुद्देश**—लापता।

बिबागि—विरक्त। **दुलित**—झूमता। **मेघ डाकित**—बादल गरजते। **वातास**—हवा।

उच्छृङ्खल हइया उठित। निस्तब्ध द्विप्रहरे बहु दूर आकाश हइते चिलेर डाक, वर्षार सन्ध्याय भेकेर कलरव, गभीर रात्रे शृगालेर चीत्कारध्वनि सकलइ ताहाके उतला करित। एइ संगीतेर मोहे आकृष्ट हइया से अनतिविलम्बे एक पाँचालिर दलेर मध्ये गिया प्रविष्ट हइल। दलाध्यक्ष ताहाके परम यत्ने गान शिखाइते एवं पाँचालि मुखस्थ कराइते प्रवृत्त हइल, एवं ताहाके आपन वक्षपिञ्जरेर पाखिर मतो प्रिय ज्ञान करिया स्नेह करिते लागिल। पाखि किछु किछु गान शिखिल एवं एकदिन प्रत्यूषे उड़िया चलिया गेल।

शेषवारे से एक जिमन्यास्टिकेर दले जुटियाछिल। ज्येष्ठ-मासेर शेषभाग हइते आषाढ़मासेर अवसान पर्यन्त ए अञ्चले स्थाने स्थाने पर्यायक्रमे बारोयारिर मेला हइया थाके। तदुपलक्ष्ये दुइ-तिन दल यात्रा, पाँचालि, कवि, नर्तकी एवं नानाविध दोकान नौकायोगे छोटो छोटो नदी उपनदी दिया एक मेला-अन्ते अन्य मेलाय घुरिया वेड़ाय। गत वत्सर हइते कलिकातार एक क्षुद्र जिमन्यास्टिकेर दल एइ पर्यटनशील मेलार आमोदचक्रेर मध्ये योग दियाछिल। तारापद प्रथमत नौकारोही दोकानिर सहित मिलिया मिशिया मेलाय पानेर खिलि विक्रयेर भार लइयाछिल। परे ताहार स्वाभाविक कौतूहलवशत एइ जिमन्यास्टिकेर आश्चर्य व्यायामनैपुण्ये आकृष्ट हइया एइ दले प्रवेश करियाछिल। तारा-पद निजे निजे अभ्यास करिया भालो बाँशि बाजाइते शिखियाछिल—जिमन्यास्टिकेर समय ताहाके द्रुत ताले लक्नौ ठुंरिर सुरेर बाँशि वाजाइते हइत—एइ ताहार एकमात्र काज छिल।

चिलेर डाक—चील का स्वर। **भेकेर**—मेढ़कों का। **उतला करित**—चंचल वना देते। **पाँचालिर**—(बँगला का गीतिकाव्य) का गान करने वालों के।

जुटियाछिल—जा मिला था। **बारोयारिर मेला**—मुहल्ले के लोगों की सहायता से अनुष्ठित मेले, पंचायती मेले। **यात्रा**—स्वाँग-मंडलियाँ। **कवि**—बंगाल के आशु लोक-कवि। **घुरिया वेड़ाय**—घूमती रहती हैं। **दोकानिर**—दूकानदार के। **मिलिया मिशिया**—घुल-मिल कर। **पानेर खिलि**—पान के बीड़े। **लक्नौ**—लखनऊ की। **ठुंरिर**—ठुमरी के।

एइ दल हइतेइ ताहार शेष पलायन। से शुनियाछिल, नन्दीग्रामेर जमिदारबाबुरा महासमारोहे एक शखेर यात्रा खुलितेछेन—शुनिया से ताहार क्षुद्र बोँचकाटि लइया नन्दीग्रामे यात्रार आयोजन करितेछिल, एमन समय मतिबाबुर सहित ताहार साक्षात् हय।

तारापद पर्यायक्रमे नाना दलेर मध्ये भिड़ियाओ आपन स्वाभाविक कल्पनाप्रवण प्रकृति-प्रभावे कोनो दलेर विशेषत्व प्राप्त हय नाइ। अन्तरेर मध्ये से सम्पूर्ण निर्लिप्त एवं मुक्त छिल। संसारे अनेक कुत्सित कथा से सर्वदा शुनियाछे एवं अनेक कदर्य दृश्य ताहार दृष्टिगोचर हइयाछे, किन्तु ताहा ताहार मनेर मध्ये सञ्चित हइबार तिलमात्र अवसर प्राप्त हय नाइ। ए छेलेटिर किछुतेइ खेयाल छिल ना। अन्यान्य बन्धनेर न्याय कोनोप्रकार अभ्यासबन्धनओ ताहार मनके बाध्य करिते पारे नाइ। से एइ संसारे पंकिल जलेर उपर दिया शुभ्रपक्ष राजहंसेर मतो साँतार दिया बेड़ाइत। कौतूहलवशत यतबारइ डुब दित ताहार पाखा सिक्त बा मलिन हइते पारित ना। एइजन्य एइ गृहत्यागी छेलेटिर मुखे एकटि शुभ्र स्वाभाविक तारुण्य अम्लानभावे प्रकाश पाइत, ताहार सेइ मुखश्री देखिया प्रवीण विषयी मतिलालबाबु ताहाके बिना प्रश्ने, बिना सन्देहे परम आदरे आह्वान करिया लइयाछिलेन।

द्वितीय परिच्छेद

आहारान्ते नौका छाड़िया दिल। अन्नपूर्णा परम स्नेहे एइ ब्राह्मणबालकके ताहार घरेर कथा, ताहार आत्मीय-

---

शखेर यात्रा—शौकिया स्वाँग-मंडली। **बोँचकाटि लइया**—पोटली ले कर। **भिड़ियाओ**—शामिल हो कर भी। **उपर दिया**—ऊपर से। **साँतार दिया बेड़ाइत**—तैरता रहता। **डुब दित**—डुबकी मारता। **विषयी**—धनी। **छाड़िया दिल**—खोल दी गई, चल पड़ी।

परिजनेर संवाद जिज्ञासा करिते लागिलेन; तारापद अत्यन्त संक्षेपे ताहार उत्तर दिया वाहिरे आसिया परित्राण लाभ करिल। बाहिरे वर्षार नदी परिपूर्णतार शेष रेखा पर्यन्त भरिया उठिया आपन आत्महारा उद्दाम चाञ्चल्ये प्रकृतिमाताके येन उद्विग्न करिया तुलियाछिल। मेघनिर्मुक्त रौद्रे नदीतीरेर अर्धनिमग्न काशतृणश्रेणी, एवं ताहार ऊर्ध्वे सरस सघन इक्षुक्षेत्र एवं ताहार परप्रान्ते दूरदिगन्तचुम्बित नीलाञ्जनवर्ण वनरेखा समस्तइ येन कोनो-एक रूपकथार सोनार काठिर स्पर्शे सद्योजाग्रत नवीन सौन्दर्येर मतो निर्वाक् नीलाकाशेर मुग्धदृष्टिर सम्मुखे परिस्फुट हइया उठियाछिल, समस्तइ येन सजीव, स्पन्दित, प्रगल्भ, आलोके उद्भासित, नवीनताय सुचिक्कण, प्राचुर्ये परिपूर्ण।

तारापद नौकार छादेर उपरे पालेर छायाय गिया आश्रय लइल। पर्यायक्रमे ढालु सबुज माठ, प्लावित पाटेर खेत, गाढ़ श्यामल आमनधान्येर आन्दोलन, घाट हइते ग्रामाभिमुखी संकीर्ण पथ, घनवनवेष्टित छायामय ग्राम ताहार चोखेर उपर आसिया पड़िते लागिल। एइ जल स्थल आकाश, एइ चारिदिके सचलता सजीवता मुखरता, एइ ऊर्ध्व-अधोदेशेर व्याप्ति एवं वैचित्र्य एवं निर्लिप्त सुदूरता, एइ सुबृहत् चिरस्थायी निर्निमेष वाक्यविहीन विश्वजगत् तरुण बालकेर परमात्मीय छिल; अथच से एइ चञ्चल मानवकटिके एक मुहूर्तेर जन्यओ स्नेहबाहु द्वारा धरिया राखिते चेष्टा करित ना। नदीतीरे बाछुर लेज तुलिया छुटितेछे, ग्राम्य टाट्टुघोड़ा सम्मुखेर दुइ दड़ि-बाँधा पा लइया लाफ दिया

आत्महारा—आत्म-विस्मृत, तन्मय। रौद्रे—धूप में। रूपकथार—परियों की कहानी के। काठिर स्पर्शे—छड़ी के स्पर्श से।

छादेर—छत के। सबुज माठ—सब्ज मैदान। पाटेर खेत—सन के खेत। आमनधान्येर—हेमन्त में होने वाले धान का। चोखेर .....लागिल—आँखों के सामने से गुजरने लगे। मानवकटिके—बालक को। बाछुर लेज तुलिया—बछड़े पूँछ उठा कर। टाट्टुघोड़ा—टट्टू। दुइ दड़ि बाँधा पा लइया—रस्सी से बँधे हुए पैरों से। लाफ दिया—उछल-उछल कर।

दिया घास खाइया बेड़ाइतेछे, माछराङा जेलेदेर जाल बाँधिबार वंशदण्डेर उपर हइते झप् करिया सवेगे जलेर मध्ये झाँपाइया माछ धरितेछे, छेलेरा जलेर मध्ये पड़िया मातामाति करितेछे, मेयेरा उच्चकण्ठे सहास्य गल्प करिते करिते आवक्ष जले वसनाञ्चल प्रसारित करिया दुइ हस्ते ताहा मार्जन करिया लइतेछे, कोमर-बाँधा मेछुनिरा चुपड़ि लइया जेलेदेर निकट हइते माछ किनितेछे, ए-समस्तइ से चिरनूतन अश्रान्त कौतूहलेर सहित वसिया बसिया देखे, किछुतेइ ताहार दृष्टिर पिपासा निवृत्त हय ना।

नौकार छातेर उपरे गिया तारापद क्रमश दाँड़ि-माझिदेर सङ्गे गल्प जुड़िया दिल। माझे माझे आवश्यकमते माल्लादेर हात हइते लगि लइया निजेइ ठेलिते प्रवृत्त हइल; माझिर यखन तामाक खाइबार आवश्यक, तखन से निजे गिया हाल धरिल—यखन ये दिके पाल फिरानो आवश्यक समस्त से दक्षतार सहित सम्पन्न करिया दिल।

सन्ध्यार प्राक्काले अन्नपूर्णा तारापदके डाकिया जिज्ञासा करिलेन, "रात्रे तुमि की खाओ।"

तारापद कहिल, "या पाइ ताइ खाइ; सकल दिन खाइओ ना।"

एइ सुन्दर ब्राह्मणबालकटिर आतिथ्यग्रहणे औदासीन्य अन्न-पूर्णाके ईषत् पीड़ा दिते लागिल। ताँहार बड़ो इच्छा, खाओ-याइया पराइया एइ गृहच्युत पान्थ वालकटिके परितृप्त करिया देन। किन्तु किसे ये ताहार परितोष हइबे ताहार कोनो सन्धान पाइलेन ना। अन्नपूर्णा चाकरदेर डाकिया ग्राम हइते दुध मिष्टान्न

माछराङा—रामचिरैया (मीनरंक)। **जेलेदेर**—मछुओं के। **झाँपाइया**—कूद कर। **मातामाति करितेछे**—मस्ती कर रहे हैं। **मेयेरा**—लड़कियाँ, स्त्रियाँ। **मेछुनिरा**—धीवरियाँ। **चुपड़ि लइया**—टोकरी ले कर। **किनितेछे**—खरीद रही है।

दाँड़ि-माझिदेर—डाँड़-पतवार चलाने वाले माझियों के। **जुड़िया दिल**—शुरू कर दी। **लगि**—लग्गी। **तामाक**—तम्बाकू। **हाल**—पतवार।

या पाइ ताइ खाइ—जो पाता हूँ वही खा लेता हूँ।

प्रभृति क्रय करिया आनिबार जन्य धुमधाम बाधाइया दिलेन। तारापद यथापरिमाणे आहार करिल, किन्तु दुध खाइल ना। मौनस्वभाव मतिलालबाबुओ ताहाके दुध खाइबार जन्य अनुरोध करिलेन; से संक्षेपे बलिल, "आमार भालो लागे ना।"

नदीर उपर दुइ-तिनदिन गेल। तारापद राँधाबाड़ा, बाजार-करा हइते नौकाचालना पर्यन्त सकल काजेइ स्वेच्छा ओ तत्परतार सहित योग दिल। ये-कोनो दृश्य ताहार चोखेर सम्मुखे आसे ताहार प्रति तारापदर सकौतूहल दृष्टि धावित हय, ये-कोनो काज ताहार हातेर काछे आसिया उपस्थित हय ताहातेइ से आपनि आकृष्ट हइया पड़े। ताहार दृष्टि, ताहार हस्त, ताहार मन सर्वदाइ सचल हइया आछे; एइजन्य से एइ नित्य-सचला प्रकृतिर मतो सर्वदाइ निश्चिन्त उदासीन, अथच सर्वदाइ क्रियासक्त। मानुषमात्रेरइ निजेर एकटि स्वतन्त्र अधिष्ठान-भूमि आछे; किन्तु तारापद एइ अनन्त नीलाम्बरवाही विश्व-प्रवाहेर एकटि आनन्दोज्ज्वल तरङ्ग—भूत-भविष्यतेर सहित ताहार कोनो सम्बन्ध नाइ—सम्मुखाभिमुखे चलिया याओयाइ ताहार एकमात्र कार्य।

ए दिके अनेकदिन नाना सम्प्रदायेर सहित योग दिया अनेक-प्रकार मनोरञ्जनी विद्या ताहार आयत्त हइयाछिल। कोनोप्रकार चिन्तार द्वारा आच्छन्न ना थाकाते ताहार निर्मल स्मृतिपटे सकल जिनिस आश्चर्य सहजे मुद्रित हइया याइत। पाँचालि, कथकता, कीर्तनगान, यात्राभिनयेर सुदीर्घ खण्डसकल ताहार कण्ठाग्रे छिल। मतिलालबाबु चिरप्रथामत एकदिन सन्ध्यावेलाय ताँहार स्त्री-कन्याके रामायण पड़िया शुनाइतेछिलेन; कुशलवेर कथार सूचना हइतेछे, एमन समये तारापद उत्साह संवरण करिते ना पारिया

बाधाइया दिलेन—मचा दी। भालो—अच्छा।
राँधाबाड़ा—राँधना-परोसना।
आयत्त हइयाछिल—अधिकार कर लिया था। जिनिस—चीज़ें। कथकता—भावभंगी और गीत आदि सहित पुराण-पाठ।

नौकार छादेर उपर हइते नामिया आसिया कहिल, "बइ राखुन। आमि कुशलवेर गान करि, आपनारा शुने यान।"

एइ बलिया से कुशलवेर पाँचालि आरम्भ करिया दिल। बाँशिर मतो सुमिष्ट परिपूर्णस्वरे दाशुरायेर अनुप्रास क्षिप्रवेगे वर्षण करिया चलिल; दाँड़ि-माझि सकलेइ द्वारेर काछे आसिया झुंकिया पड़िल; हास्य करुणा एवं संगीते सेइ नदीतीरेर संध्याकाशे एक अपूर्व रसस्रोत प्रवाहित हइते लागिल—दुइ निस्तब्ध तटभूमि कुतूहली हइया उठिल, पाश दिया ये-सकल नौका चलितेछिल, ताहादेर आरोहीगण क्षणकालेर जन्य उत्कण्ठित हइया सेइ दिके कान दिया रहिल; यखन शेष हइया गेल सकलेइ व्यथित चित्ते दीर्घनिश्वास फेलिया भाबिल, इहारइ मध्ये शेष हइल केन।

सजलनयना अन्नपूर्णार इच्छा करिते लागिल, छेलेटिके कोले बसाइया वक्षे चापिया ताहार मस्तक आघ्राण करेन। मतिलाल बाबु भाबिते लागिलेन, 'एइ छेलेटिके यदि कोनोमते काछे राखिते पारि तबे पुत्रेर अभाव पूर्ण हय।' केवल क्षुद्र बालिका चारुशशीर अन्तःकरण ईर्षा ओ विद्वेषे परिपूर्ण हइया उठिल।

तृतीय परिच्छेद

चारुशशी ताहार पितामातार एकमात्र सन्तान, ताँहादेर पितृमातृस्नेहेर एकमात्र अधिकारिणी। ताहार खेयाल एवं जेदेर अन्त छिल ना। खाओया, कापड़ परा, चुल बाँधा सम्बन्धे ताहार निजेर स्वाधीन मत छिल, किन्तु से मतेर किछुमात्र स्थिरता छिल ना। येदिन कोथाओ निमन्त्रण थाकित सेदिन

नामिया—उतर कर। बइ राखुन—पुस्तक रहने दीजिए।
दाशुरायेर—दाशु राय के। पाश दिया—बगल से। भाबिल—सोचा इहारइ मध्ये—इसी बीच।
कोले—गोद में। कोनोमते—किसी प्रकार।
खेयाल—झोंक, सनक। कापड़—साड़ी। चुल बाँधा—केश बाँधने के।

ताहार मायेर भय हइत, पाछे मेयेटि लाजसज्जा सम्बन्धे एकटा असम्भव भेद करिया बसे। यदि दैवात् एकबार चुलबाँधाटा ताहार मनेर मतो ना हइल, तबे सेदिन यतबार चुल खुलिया यतरकम करिया बाँधिया देओया याक किछुतेइ ताहार मन पाओया याइबे ना, अवशेषे महा कान्नाकाटिर पाला पड़िया याइबे। सकल विषयेइ एइरूप। आबार एक-एक समय चित्त यखन प्रसन्न थाके तखन किछुतेइ ताहार कोनो आपत्ति थाके ना। तखन से अतिमात्राय भालोबासा प्रकाश करिया ताहार माके जड़ाइया धरिया चुम्बन करिया हासिया बकिया एकेबारे अस्थिर करिया तोले। एइ क्षुद्र मेयेटि एकटि दुर्भेद्य प्रहेलिका।

एइ बालिका ताहार दुर्बाध्य हृदयेर समस्त वेग प्रयोग करिया मने मने तारापदके सुतीव्र विद्वेषे ताड़ना करिते लागिल। पितामाताकेओ सर्वतोभावे उद्वेजित करिया तुलिल। आहारेर समय रोदनोन्मुखी हइया भोजनेर पात्र ठेलिया फेलिया देय, रन्धन ताहार रुचिकर बोध हय ना, दासीके मारे, सकल विषयेइ अकारण अभियोग करिते थाके। तारापदर विद्यागुलि यतइ ताहार एवं अन्य सकलेर मनोरञ्जन करिते लागिल, ततइ येन ताहार राग बाड़िया उठिल। तारापदर ये कोनो गुण आछे इहा स्वीकार करते ताहार मन विमुख हइल, अथच ताहार प्रमाण यखन प्रबल हइते लागिल, ताहार असन्तोषेर मात्राओ उच्चे उठिल। तारापद येदिन कुशलवेर गान करिल सेदिन अन्नपूर्णा मने करिलेन, 'संगीते वनेर पशु वश हय, आज बोध हय आमार मेयेर मन गलियाछे।' ताहाके जिज्ञासा करिलेन,

---

पाछे—डर है कहीं। करिया बसे—कर दे। ताहार मन....याइबे ना—उसे सन्तोष नहीं होता। कान्नाकाटिर पाला पड़िया याइबे—रोने-धोने का सिलसिला शुरू हो जाता। भालोबासा—प्रेम। जड़ाइया धरिया—लिपट कर।

उद्वेजित—परेशान, उद्विग्न। अभियोग—शिकायत। राग—क्रोध। मेयेर—लड़की का। गलियाछे—पिघला है।

"चारु, केमन लागल।" से कोनो उत्तर ना दिया अत्यन्त प्रबल वेगे माथा नाड़िया दिल। एइ भङ्गिटिके भाषाय तर्जमा करिले एइरूप दाँड़ाय, किछुमात्र भालो लाग नाइ एवं कोनोकाले भालो लागिबे ना।

चारुर मने ईर्षार उदय हइयाछे बुझिया ताहार माता चारुर सम्मुखे तारापदर प्रति स्नेह प्रकाश करिते विरत हइलेन। सन्ध्यार परे यखन सकाल-सकाल खाइया चारु शयन करित तखन अन्नपूर्णा नौका-कक्षेर द्वारेर निकट आसिया बसितेन एवं मतिबाबु ओ तारापद बाहिरे बसित एवं अन्नपूर्णार अनुरोधे तारापद गान आरम्भ करित; ताहार गाने यखन नदीतीरेर विश्रामनिरता ग्रामश्री सन्ध्यार विपुल अन्धकारे मुग्ध निस्तब्ध हइया रहित एवं अन्नपूर्णार कोमल हृदयखानि स्नेहे ओ सौन्दर्यरसे उच्छलित हइते थाकित तखन हठात् चारु द्रुतपदे बिछाना हइते उठिया आसिया सरोष-सरोदने बलित, "मा, तोमरा की गोल करछ, आमार घुम हच्छे ना।" पितामाता ताहाके एकला घुमाइते पाठाइया तारापदके घिरिया संगीत उपभोग करितेछेन इहा ताहार एकान्त असह्य हइया उठित।

एइ दीप्तकृष्णनयना बालिकार स्वाभाविक सुतीव्रता तारापदर निकटे अत्यन्त कौतुकजनक बोध हइत। से इहाके गल्प शुनाइया, गान गाहिया, बाँशि बाजाइया, वश करिते अनेक चेष्टा करिल किन्तु किछुतेइ कृतकार्य हइल ना। केवल तारापद मध्याह्ने यखन नदीते स्नान करिते नामित, परिपूर्ण जलराशिर मध्ये गौरवर्ण सरल तनुदेहखानि नाना संतरणभङ्गिते अवलीलाक्रमे सञ्चालन करिया तरुण जलदेवतार मतो शोभा पाइत, तखन

माथा नाड़िया दिल—सिर हिला दिया। **एइरूप दाँड़ाय**—तो वह कुछ इस प्रकार होगा। **किछुमात्र**—तनिक भी।

बुझिया—समझ कर। **गोल करछ**—शोर-गुल मचा रहे हो। **घुम**—नींद। **एकान्त**—बिल्कुल।

नामित—उतरता। **अवलीलाक्रमे**—अनायास।

बालिकार कौतूहल आकृष्ट ना हइया थाकित ना; से सेइ समयटिर जन्य प्रतीक्षा करिया थाकित; किन्तु आन्तरिक आग्रह काहाकेओ जानिते दित ना, एवं एइ अशिक्षापटु अभिनेत्री पशमेर गलाबन्ध बोना एकमने अभ्यास करिते करिते माझे माझे येन अत्यन्त उपेक्षाभरे कटाक्षे तारापदर सन्तरणलीला देखिया लइत।

चतुर्थ परिच्छेद

नन्दीग्राम कखन छाड़ाइया गेल तारापद ताहार खोँज लइल ना। अत्यन्त मृदुमन्द गतिते बृहत् नौकाखाना कखनओ पाल तुलिया, कखनओ गुण टानिया, नाना नदीर शाखाप्रशाखार भितर दिया चलिते लागिल; नौकारोहीदेर दिनगुलिओ एइ-सकल नदी-उपनदीर मतो शान्तिमय सौन्दर्यमय वैचित्र्येर मध्य दिया सहज सौम्य गमने मृदुमिष्ट कलस्वरे प्रवाहित हइते लागिल। काहारओ कोनोरूप ताड़ा छिल ना; मध्याह्ने स्नानाहारे अनेकक्षण विलम्ब हइत; ए दिके, सन्ध्या हइते ना हइतेइ एकटा बड़ो देखिया ग्रामेर धारे, घाटेर काछे, झिल्लिमन्द्रित, खद्योत-खचित वनेर पार्श्वे नौका बाँधित।

एमनि करिया दिनदशेके नौका काँठालियाय पौँछिल। जमिदारेर आगमने बाड़ि हइते पालकि एवं टाटुघोड़ार समागम हइल एवं बाँशेर लाठि हस्ते पाइक-बरकन्दाजेर दल घन घन बन्दुकेर फाँका आओयाजे ग्रामेर उत्कण्ठित काकसमाजके यत्परोनास्ति मुखर करिया तुलिल।

एइ-समस्त समारोहे कालविलम्ब हइतेछे, इतिमध्ये तारापद

काहाकेओ—किसीको भी। पशमेर—ऊन का।
छाड़ाइया गेल—निकल गया। गुण टानिया—रस्सी से खिंच कर। दिनगुलिओ—दिन (बहुवचन) भी। ताड़ा—जल्दी। धारे—किनारे।
दिनदशेके—दसेक दिन में। पाइक-बरकन्दाजेर—प्यादे और बरकंदाजों के। घन घन—बार-बार। फाँका—खाली।

नौका हइते द्रुत नामिया एकबार समस्त ग्राम पर्यटन करिया लइल। काहाकेओ दादा, काहाकेओ खुड़ा, काहाकेओ दिदि, काहाकेओ मासि बलिया दुइ-तिन घण्टार मध्ये समस्त ग्रामेर सहित सौहार्द्य-बन्धन स्थापित करिया लइल। कोथाओ ताहार प्रकृत कोनो बन्धन छिल ना बलियाइ एइ बालक आश्चर्य सत्वर ओ सहजे सकलेरइ सहित परिचय करिया लइते पारित। तारापद देखिते देखिते अल्प दिनेर मध्येइ ग्रामेर समस्त हृदय अधिकार करिया लइल।

एत सहजे हृदय हरण करिबार कारण एइ, तारापद सकलेरइ सङ्गे ताहादेर निजेर मतो हइया स्वभावतइ योग दिते पारित। से कोनोप्रकार विशेष संस्कारेर द्वारा बद्ध छिल ना, अथच सकल अवस्था, सकल काजेर प्रतिइ ताहार एकप्रकार सहज प्रवणता छिल। बालकेर काछे से सम्पूर्ण स्वाभाविक बालक अथच ताहादेर हइते श्रेष्ठ ओ स्वतंत्र, वृद्धेर काछे से बालक नहे अथच ज्याठाओ नहे, राखालेर सङ्गे से राखाल अथच ब्राह्मण। सकलेर सकल काजेइ से चिरकालेर सहयोगीर न्याय अभ्यस्त-भावे हस्तक्षेप करे; मयरार दोकाने गल्प करिते करिते मयरा बले, "दादाठाकुर, एकटु बसो तो भाइ, आमि आसछि"—तारापद अम्लानवदने दोकाने बसिया एकखाना शालपाता लइया सन्देशेर माछि ताड़ाइते प्रवृत्त हय। भियान करितेओ से मजबुत, ताँतेर रहस्यओ ताहार किछु किछु जाना आछे, कुमारेर चक्रचालनओ ताहार सम्पूर्ण अज्ञात नहे।

तारापद समस्त ग्रामटि आयत्त करिया लइल, केवल ग्रामवासिनी एकटि बालिकार ईर्षा से एखनओ जय करिते पारिल

खुड़ा—काका। बलियाइ—इसीलिए।
ज्याठाओ—ज्येष्ठ भी। राखालेर—ग्वालों के। मयरार—हलवाई की। शालपाता—शाल का पत्ता। संदेशेर—संदेश (एक मिठाई) की। माछि—मक्खियाँ। ताड़ाइते—उड़ाने में। भियान करितेओ—मिठाई बनाने में भी। ताँतेर—करघे का। कुमारेर—कुम्हार का।

ना। एइ बालिकाटि तारापदर सुदूरे निर्वासन तीव्रभावे कामना करितेछे जानियाइ बोध करि तारापद एइ ग्रामे एतदिन आबद्ध हइया रहिल।

किन्तु बालिकावस्थातेओ नारीदेर अन्तररहस्य भेद करा सुकठिन, चारुशशी ताहार प्रमाण दिल।

बामुनठाकरुनेर मेये सोनामणि पाँच बछर वयसे विधवा हय; सेइ चारुर समवयसी सखी। ताहार शरीर असुस्थ थाकाते गृहप्रत्यागत सखीर सहित से किछुदिन साक्षात् करिते पारे नाइ। सुस्थ हइया येदिन देखा करिते आसिल सेदिन प्राय बिना कारणेइ दुइ सखीर मध्ये एकटु मनोविच्छेद घटिबार उपक्रम हइल।

चारु अत्यन्त फाँदिया गल्प आरम्भ करियाछिल। से भावियाछिल तारापद-नामक ताहादेर नवार्जित परमरत्नटिर आहरणकाहिनी सविस्तारे वर्णना करिया से ताहार सखीर कौतूहल एवं विस्मय सप्तमे चड़ाइया दिबे। किन्तु यखन से शुनिल, तारापद सोनामणिर निकट किछुमात्र अपरिचित नहे, बामुनठाकरुनके से मासि बले एवं सोनामणि ताहाके दादा बलिया डाके, यखन शुनिल, तारापद केवल ये बाँशिते कीर्तनेर सुर बाजाइया माता ओ कन्यार मनोरञ्जन करियाछे ताहा नहे, सोनामणिर अनुरोधे ताहाके स्वहस्ते एकटि बाँशेर बाँशि बानाइया दियाछे, ताहाके कतदिन उच्च शाखा हइते फल ओ कण्टक-शाखा हइते फुल पाड़िया दियाछे, तखन चारुर अन्तःकरणे येन तप्तशेल बिँधिते लागिल। चारु जानित, तारापद विशेषरूपे ताहादेरइ तारापद—अत्यन्त गोपने संरक्षणीय, इतरसाधारणे

बामुनठाकरुनेर—ब्राह्मण ठाकुरानी की (ठाकुर, ठाकुरानी—ब्राह्मणों की सम्मानसूचक उपाधि विशेष)। मेये—लड़की। बछर—वरस (की)।

फाँदिया—विस्तारपूर्वक। भावियाछिल—सोचा था। सप्तमे...... दिबे—बहुत बढ़ा देगी। डाके—पुकारती है। पाड़िया दियाछे—तोड़ दिए हैं।

ताहार एकटु-आधटु आभासमात्र पाइबे अथच कोनोमते नागाल पाइबे ना, दूर हइते ताहार रूपे गुणे मुग्ध हइबे एवं चारुशशीदेर धन्यवाद दिते थाकिबे। एइ आश्चर्य दुर्लभ दैवलब्ध ब्राह्मण-बालकटि सोनामणिर काछे केन सहजगम्य हइल। आमरा यदि एत यत्न करिया ना आनिताम, एत यत्न करिया ना राखिताम, ताहा हइले सोनामणिरा ताहार दर्शन पाइत कोथा हइते। सोनामणिर दादा! शुनिया सर्वशरीर ज्वलिया याय।

ये तारापदके चारु मने मने विद्वेषशरे जर्जर करिते चेष्टा करियाछे, ताहारइ एकाधिकार लइया एमन प्रबल उद्वेग केन।—बुझिबे काहार साध्य।

सेइदिनइ अपर एकटा तुच्छ सूत्रे सोनामणिर सहित चारुर मर्मान्तिक आड़ि हइया गेल। एवं से तारापदर घरे गिया ताहार शखेर बाँशिटि बाहिर करिया ताहार उपर लाफाइया माड़ाइया सेटाके निर्दयभावे भाङ्गिते लागिल।

चारु यखन प्रचण्ड आवेगे एइ बंशिध्वंसकार्ये नियुक्त आछे एमन समय तारापद आसिया घरे प्रवेश करिल। से बालिकार एइ प्रलयमूर्ति देखिया आश्चर्य हइया गेल। कहिल, "चारु, आमार बाँशिटा भाङ्गछ केन?" चारु रक्तनेत्रे रक्तिममुखे "बेश करछि, खुब करछि" बलिया आरओ बार दुइ-चार विदीर्ण बाँशिर उपर अनावश्यक पदाघात करिया उच्छ्वसित कण्ठे काँदिया घर हइते बाहिर हइया गेल। तारापद बाँशिटि तुलिया उल्टिया पाल्टिया देखिल, ताहाते आर पदार्थ नाइ। अकारणे ताहार पुरातन निरपराध बाँशिटार एइ आकस्मिक दुर्गति देखिया से

एकटु-आधटु—थोड़ा-बहुत। **नागाल पाइबे ना**—सामीप्य नहीं पा सकेंगे, पास नहीं फटक सकेंगे। **बुझिबे**—समझ पाए। **साध्य**—सामर्थ्य।

आड़ि—खुट्टी। **शखेर बाँशिटि**—चाव से बनाई गई बांसुरी। **लाफाइया माड़ाइया**—कूद-कुचल कर। **भाङ्गिते लागिल**—तोड़ने लगी।

बेश—अच्छा। **तुलिया**—उठा कर। **पदार्थ**—सार, तत्त्व।

आर हास्य सम्वरण करिते पारिल ना। चारुशशी प्रतिदिनइ ताहार पक्षे परम कौतूहलेर विषय हइया उठिल।

ताहार आर एकटि कौतूहलेर क्षेत्र छिल मतिलालवावुर लाइब्रेरिते इंराजि छविर वइगुलि। वाहिरेर संसारेर सहित ताहार यथेष्ट परिचय हइयाछे, किन्तु एइ छविर जगते से किछुतेइ भालो करिया प्रवेश करिते पारे ना। कल्पनार द्वारा आपनार मने अनेकटा पूरण करिया लइत किन्तु ताहाते मन किछुतेइ तृप्ति मानित ना।

छविर वहिर प्रति तारापदर एइ आग्रह देखिया एकदिन मतिलालवावु वलिलेन, "इंरिजि् शिखवे? ता हले ए-समस्त छविर माने वुझते पारवे।" तारापद तत्क्षणात् वलिल, "शिखव।"

मतिवावु खुव खुशि हइया ग्रामेर एन्ट्रेन्स् स्कुलेर हेड्मास्टार रामरतन वावुके प्रतिदिन सन्ध्यावेलाय एइ वालकेर इंराजि-अध्यापनकार्ये नियुक्त करिया दिलेन।

पञ्चम परिच्छेद

तारापद ताहार प्रखर स्मरणशक्ति एवं अखण्ड मनोयोग लइया इंराजि-शिक्षाय प्रवृत्त हइल। से येन एक नूतन दुर्गम राज्येर मध्ये भ्रमणे वाहिर हइल, पुरातन संसारेर सहित कोनो सम्पर्क राखिल ना; पाड़ार लोकेरा आर ताहाके देखिते पाइल ना; यखन से सन्ध्यार पूर्वे निर्जन नदीतीरे द्रुतवेगे पदचारण करिते करिते पड़ा मुखस्थ करित तखन ताहार उपासक वालक-सम्प्रदाय दूर हइते क्षुण्णचित्ते ससम्भ्रमे ताहाके निरीक्षण करित, ताहार पाठे व्याघात करिते साहस करित ना।

ताहार पक्षे—उसके लिए।

छविर वइगुलि—सचित्र पुस्तकें। भालो करिया—अच्छी तरह से। वहिर—पुस्तकों के। आग्रह—आसक्ति। वुझते पारवे—समझ सकोगे। पड़ा मुखस्थ करित—पाठ याद करता।

चारुओ आजकाल ताहाके बड़ो एकटा देखिते पाइत ना। पूर्वे तारापद अन्तःपुरे गिया अन्नपूर्णार स्नेहदृष्टिर सम्मुखे बसिया आहार करित—किन्तु तदुपलक्ष्ये प्राय माझे माझे किछु विलम्ब हइया याइत बलिया से मतिबाबुके अनुरोध करिया बाहिरे आहारेर बन्दोबस्त करिया लइल। इहाते अन्नपूर्णा व्यथित हइया आपत्ति प्रकाश करियाछिलेन, किन्तु मतिबाबु बालकेर अध्ययनेर उत्साहे अत्यन्त सन्तुष्ट हइया एइ नूतन व्यवस्थार अनुमोदन करिलेन।

एमन समय चारुओ हठात् जिद धरिया बसिल, आमिओ इंराजि शिखिब। ताहार पितामाता ताँहादेर खामखेयालि कन्यार एइ प्रस्तावटिके प्रथमे परिहासेर विषय ज्ञान करिया स्नेहमिश्रित हास्य करिलेन—किन्तु कन्याटि एइ प्रस्तावेर परिहास्य-अंशटुकुके प्रचुर अश्रुजलधाराय अति शीघ्रइ निःशेषे धौत करिया फेलियाछिल। अवशेषे एइ स्नेहदुर्बल निरुपाय अभिभावकद्वय बालिकार प्रस्ताव गम्भीरभावे ग्राह्य करिलेन। चारु मास्टारेर निकट तारापदर सहित एकत्र अध्ययने नियुक्त हइल।

किन्तु पड़ाशुना करा एइ अस्थिरचित्त बालिकार स्वभावसंगत छिल ना। से निजे किछु शिखिल ना, केवल तारापदर अध्ययने व्याघात करिते लागिल। से पिछाइया पड़े, पड़ा मुखस्थ करे ना, किन्तु तबु किछुतेइ तारापदर पश्चाद्वर्ती हइया थाकिते चाहे ना। तारापद ताहाके अतिक्रम करिया नूतन पड़ा लइते गेले से महा रागारागि करित, एमन कि कान्नाकाटि करिते छाड़ित ना। तारापद पुरातन बइ शेष करिया नूतन बइ किनिले

बड़ो एकटा—विशेष।

जिद धरिया बसिल—जिद कर बैठी। **खामखेयालि**—अस्थिर चित्त, झक्की। **अंशटुकुके**—अंशमात्र को। **ग्राह्य**—स्वीकार।

पिछाइया पड़े—पिछड़ जाती। **पड़ा लइते गेले**—पाठ लेने (जाने) पर। **रागारागि**—क्रोध। **कान्नाकाटि**—रोना-धोना। **किनिले**—खरीदने पर।

ताहाकेओ सेइ नूतन वइ किनिया दिते हइत। तारापद अवसरेर समय निजे घरे वसिया लिखित एवं पड़ा मुखस्थ करित, इहा सेइ ईर्षापरायणा कन्याटिर सह्य हइत ना, से गोपने ताहार लेखा खाताय काली ढालिया आसित, कलम चुरि करिया राखित, एमन कि वइयेर येखाने अभ्यास करिबार, सेइ अंशटि छिंड़िया आसित। तारापद एइ बालिकार अनेक दौरात्म्य सकौतुके सह्य करित, असह्य हइले मारित, किन्तु किछुतेइ शासन करिते पारित ना।

दैवात् एकटा उपाय बाहिर हइल। एकदिन बड़ो विरक्त हइया निरुपाय तारापद ताहार मसीविलुप्त लेखा खाता छिन्न करिया फेलिया गम्भीर विषण्णमुखे वसिया छिल; चारु द्वारेर काछे आसिया मने करिल, आज मार खाइबे। किन्तु ताहार प्रत्याशा पूर्ण हइल ना। तारापद एकटि कथामात्र ना कहिया चुप करिया वसिया रहिल। बालिका घरेर भितरे बाहिरे घुर्‌घुर् करिया वेड़ाइते लागिल। बारम्बार एत काछे धरा दिल ये, तारापद इच्छा करिले अनायासेइ ताहार पृष्ठे एक चपेटाघात वसाइया दिते पारित। किन्तु से ताहा ना दिया गम्भीर हइया रहिल। बालिका महा मुशकिले पड़िल। केमन करिया क्षमा प्रार्थना करिते हय से विद्या ताहार कोनोकालेइ अभ्यास छिल ना, अथच अनुतप्त क्षुद्र हृदयटि ताहार सहपाठीर क्षमालाभेर जन्य एकान्त कातर हइया उठिल। अवशेषे कोनो उपाय ना देखिया छिन्न खातार एक टुकरा लइया तारापदर निकटे वसिया खुब बड़ो बड़ो करिया लिखिल, "आमि आर कखनओ खाताय कालि माखाब ना।" लेखा शेष करिया सेइ लेखार प्रति तारापदर

सह्य—सहन। लेखा खाताय—लिखने की कापी पर। काली—स्याही। छिंड़िया आसित—फाड़ आती। दौरात्म्य—उपद्रव। शासन....पारित ना—वश में नहीं ला पाता।

विरक्त—खीझ (कर)। घुर्‌घुर् करिया—इधर से उधर (घूमने लगी)। काछे धरा दिल—निकट पहुँच जाती। कोनो कालेइ—कभी भी। एकान्त—अत्यन्त। कालि माखाब ना—स्याही नहीं पोतूंगी।

मनोयोग आकर्षणेर जन्य अनेकप्रकार चाञ्चल्य प्रकाश करिते लागिल। देखिया तारापद हास्य सम्वरण करिते पारिल ना—हासिया उठिल। तखन बालिका लज्जाय क्रोधे क्षिप्त हइया उठिया घर हइते द्रुतवेगे छुटिया बाहिर हइया गेल। ये कागजेर टुकराय से स्वहस्ते दीनता प्रकाश करियाछे सेटा अनन्त काल एवं अनन्त जगत् हइते सम्पूर्ण लोप करिते पारिले तबे ताहार हृदयेर निदारुण क्षोभ मिटिते पारित।

ए दिके संकुचितचित्त सोनामणि दुइ-एकदिन अध्ययनशालार बाहिरे उँकिझुँकि मारिया फिरिया चलिया गियाछे। सखी चारुशशीर सहित ताहार सकल विषयेइ विशेष हृद्यता छिल, किन्तु तारापदर सम्बन्धे चारुके से अत्यन्त भय एवं सन्देहेर सहित देखित। चारु ये समये अन्तःपुरे थाकित, सेइ समयटि बाछिया सोनामणि ससंकोचे तारापदर द्वारेर काछे आसिया दाँड़ाइत। तारापद बइ हइते मुख तुलिया सस्नेहे बलित, "की सोना, खबर की। मासि केमन आछे।"

सोनामणि कहित, "अनेकदिन याओ नि, मा तोमाके एकबार येते बलेछे। मार कोमरे व्यथा बले देखते आसते पारे ना।"

एमन समय हयतो हठात् चारु आसिया उपस्थित। सोनामणि शशव्यस्त। से येन गोपने ताहार सखीर सम्पत्ति चुरि करिते आसियाछिल। चारु कण्ठस्वर सप्तमे चड़ाइया चोख मुख घुराइया बलित, "उयाँ सोना! तुइ पड़ार समय गोल करते एसेछिस, आमि एखनइ बाबाके गिये बले देब।" येन तिनि निजे तारापदर एकटि प्रवीणा अभिभाविका; ताहार पड़ाशुनाय

घर हइते—कमरे से। **करिते पारिले**—कर पाने पर।

उँकिझुँकि मारिया—ताक-झाँक कर। **हृद्यता**—सौहार्द्र। **बाछिया**—छाँट कर।

कोमरे—कमर में। **बले**—इसी से।

शशव्यस्त—घबरा जाती। **चड़ाइया**—चढ़ा कर। **घुराइया**—मटका कर। **गोल करते एसेछिस**—शोर-गुल मचाने आई है।

लेशमात्र व्याघात ना घटे रात्रिदिन इहार प्रतिइ ताहार एकमात्र दृष्टि। किन्तु से निजे की अभिप्राये एइ असमये तारापदर पाठगृहे आसिया उपस्थित हइयाछिल ताहा अन्तर्यामीर अगोचर छिल ना एवं तारापदओ ताहा भालोरूप जानित। किन्तु सोनामणि बेचारा भीत हइया तत्क्षणात् एकराश मिथ्या कैफियत सृजन करित; अवशेषे चारु यखन घृणाभरे ताहाके मिथ्यावादी बलिया सम्भाषण करित तखन से लज्जित शङ्कित पराजित हइया व्यथितचित्ते फिरिया याइत। दयार्द्र तारापद ताहाके डाकिया बलित, "सोना, आज सन्ध्यावेलाय आमि तोदेर बाड़ि याब एखन।" चारु सर्पिणीर मतो फोँस करिया उठिया बलित, "यावे बइकि। तोमार पड़ा करते हबे ना? आमि मास्टारमशायके बले देब ना?"

चारुर एइ शासने भीत ना हइया तारापद दुइ-एकदिन सन्ध्यार पर बामुनठाकरुनेर बाड़ि गियाछिल। तृतीय वा चतुर्थ बारे चारु फाँका शासन ना करिया आस्ते आस्ते एक समय बाहिर हइते तारापदर घरेर द्वारे शिकल आँटिया दिया मार मसलार बाक्सर चाबिताला आनिया ताला लागाइया दिल। समस्त सन्ध्यावेला तारापदके एइरूप बन्दी अवस्थाय राखिया आहारेर समय द्वार खुलिया दिल। तारापद राग करिया कथा कहिल ना एवं ना खाइया चलिया याइबार उपक्रम करिल। तखन अनुतप्त व्याकुल बालिका करजोड़े सानुनये बारम्बार बलिते लागिल, "तोमार दुटि पाये पड़ि, आर आमि एमन करब ना। तोमार दुटि पाये पड़ि, तुमि खेये याओ।" ताहातेओ यखन तारापद वश मानिल ना, तखन से अधीर हइया काँदिते लागिल; तारापद संकटे पड़िया फिरिया आसिया खाइते बसिल।

भालोरूप—अच्छी तरह से। **बेचारा**—बेचारी। **एकराश**—ढेर। **तोदेर**—तुम लोगों के, तुम्हारे। **फोँस करिया**—फुफकार कर। **यावे बइकि**—बेशक जाओगे।

शासने—धमकी से। **फाँका**—कोरी। **शिकले आँटिया दिया**—साँकल चढ़ा कर। **खेये याओ**—(खाना) खा कर जाओ। **वश मानिल ना**—वश में न आया।

चारु कतवार एकान्तमने प्रतिज्ञा करियाछे ये, से तारापदर सहित सद्‌व्यवहार करिबे, आर कखनओ ताहाके मुहूर्तेर जन्य विरक्त करिबे ना, किन्तु सोनामणि प्रभृति आर पाँचजन माझे आसिया पड़ाते कखन ताहार किरूप मेजाज हइया याय, किछुतेइ आत्मसम्वरण करिते पारे ना। किछुदिन यखन उपरि-उपरि से भालोमानुषि करिते थाके, तखनइ एकटा उत्कट आसन्न विप्लवेर जन्य तारापद सतर्कभावे प्रस्तुत हइते थाके। आक्रमणटा हठात् की उपलक्ष्ये कोन् दिक हइते आसे किछुइ बला याय ना। ताहार परे प्रचण्ड झड़, झड़ेर परे प्रचुर अश्रुवारिवर्षण, ताहार परे प्रसन्न स्निग्ध शान्ति।

षष्ठ परिच्छेद

एमन करिया प्राय दुइ वत्सर काटिल। एत सुदीर्घकालेर जन्य तारापद कखनओ काहारओ निकट धरा देय नाइ। बोध करि, पड़ाशुनार मध्ये ताहार मन एक अपूर्व आकर्षणे बद्ध हइयाछिल; बोध करि, वयोवृद्धि-सहकारे ताहार प्रकृतिर परिवर्तन आरम्भ हइयाछिल एवं स्थायी हइया बसिया संसारेर सुखस्वच्छन्दता भोग करिबार दिके ताहार मन पड़ियाछिल; बोध करि, ताहार सहपाठिका बालिकार नियतदौरात्म्यचञ्चल सौन्दर्य अलक्षितभावे ताहार हृदयेर उपर बन्धन विस्तार करितेछिल।

ए दिके चारुर वयस एगारो उत्तीर्ण हइया याय। मतिबाबु सन्धान करिया ताँहार मेयेर विवाहेर जन्य दुइ-तिनटि भालो भालो सम्बन्ध आनाइलेन। कन्यार विवाहवयस उपस्थित हइयाछे जानिया मतिबाबु ताहार इंराजि पड़ा एवं बाहिरे याओया

एकान्तमने—पूरे मन से। **भालोमानुषि**—भलमनसाहत। **झड़**—आँधी।
धरा देय नाइ—पकड़ में नहीं आया। **बोध करि**—सम्भवतः। **दिके**—ओर।
ए दिके—इधर। **एगारो**—ग्यारह। **सम्बन्ध**—विवाह सम्बन्धी प्रस्ताव।

निषेध करिया दिलेन। एइ आकस्मिक अवरोधे चारु घरेर मध्ये भारि एकटा आन्दोलन उपस्थित करिल।

तखन एकदिन अन्नपूर्णा मतिबाबुके डाकिया कहिलेन, "पात्रेर जन्ये तुमि अत खोँज करे बेड़ाच्छ केन। तारापद छेलेटि तो बेश। आर तोमार मेयेरओ ओके पछन्द हयेछे।"

शुनिया मतिबाबु अत्यन्त विस्मय प्रकाश करिलेन। कहिलेन, "सेओ कि कखनओ हय। तारापदर कुलशील किछुइ जाना नेइ। आमार एकटिमात्र मेये, आमि भालो घरे दिते चाइ।"

एकदिन रायडाङार बाबुदेर बाड़ि हइते मेये देखिते आसिल। चारुके वेशभूषा पराइया बाहिर करिबार चेष्टा करा हइल। से शोवार घरेर द्वार रुद्ध करिया वसिया रहिल—किछुतेइ बाहिर हइल ना। मतिबाबु घरेर बाहिर हइते अनेक अनुनय करिलेन, भर्त्सना करिलेन, किछुतेइ किछु फल हइल ना। अवशेषे बाहिरे आसिया रायडाङार दूतवर्गेर निकट मिथ्या करिया बलिते हइल, कन्यार हठात् अत्यन्त असुख करियाछे, आज आर देखानो हइबे ना। ताहारा भाबिल, मेयेर बुझि कोनो एकटा दोष आछे, ताइ एइरूप चातुरी अवलम्बन करा हइल।

तखन मतिबाबु भाबिते लागिलेन, तारापद छेलेटि देखिते शुनिते सकल हिसाबेइ भालो; उहाके आमि घरेइ राखिते पारिब, ताहा हइले आमार एकमात्र मेयेटिके परेर बाड़ि पाठाइते हइबे ना। इहाओ चिन्ता करिया देखिलेन, ताँहार अशान्त अवाध्य मेयेटिर दुरन्तपना ताँहादेर स्नेहेर चक्षे यतइ मार्जनीय बोध हउक श्वशुरबाड़िते केह सह्य करिबे ना।

डाकिया—बुला कर। **बेश**—बहुत अच्छा है। **मेयेरओ....हयेछे**—लड़की को भी वह पसन्द आया है। **दिते चाइ**—देना चाहता हूँ।

हइते—से। **असुख करियाछे**—बीमार हो गई है। **भाबिल**–सोचा। **बुझि**—सम्भवतः।

परेर बाड़ि—दूसरे के घर। **अवाध्य**—बात न सुनने वाली। **दुरन्तपना**—उपद्रव, शरारत।

तखन स्त्री-पुरुषे अनेक आलोचना करिया तारापदर देशे ताहार समस्त कौलिक सम्वाद सन्धान करिबार जन्य लोक पाठाइलेन। खबर आसिल ये, वंश भालो किन्तु दरिद्र। तखन मतिबाबु छेलेर मा एवं भाइयेर निकट विवाहेर प्रस्ताव पाठाइलेन। ताँहारा आनन्दे उच्छ्वसित हइया सम्मति दिते मुहूर्तमात्र विलम्ब करिलेन ना।

काँठालियाय मतिबाबु एवं अन्नपूर्णा विवाहेर दिनक्षण आलोचना करिते लागिलेन, किन्तु स्वाभाविक गोपनताप्रिय सावधानी मतिबाबु कथाटा गोपने राखिलेन।

चारुके धरिया राखा गेल ना। से माझे माझे बर्गिर हाङ्गामार मतो तारापदर पाठगृहे गिया पड़ित। कखनओ राग, कखनओ अनुराग, कखनओ विरागेर द्वारा ताहार पाठचर्यार निभृत शान्ति अकस्मात् तरङ्गित करिया तुलित। ताहाते आजकाल एइ निर्लिप्त मुक्तस्वभाव ब्राह्मणबालकेर चित्ते माझे माझे क्षणकालेर जन्य विद्युत्स्पन्दनेर न्याय एक अपूर्व चाञ्चल्य-संचार हइत। ये व्यक्तिर लघुभार चित्त चिरकाल अक्षुण्ण अव्याहत भावे कालस्रोतेर तरङ्गचूड़ाय भासमान हइया सम्मुखे प्रवाहित हइया याइत, से आजकाल एक-एकबार अन्यमनस्क हइया विचित्र दिवास्वप्नजालेर मध्ये जड़ीभूत हइया पड़े। एक-एकदिन पड़ाशुना छाड़िया दिया से मतिबाबुर लाइब्रेरिर मध्ये प्रवेश करिया छबिर बइयेर पाता उल्टाइते थाकित ; सेइ छबिगुलिर मिश्रणे ये कल्पनालोक सृजित हइत ताहा पूर्वेकार हइते अनेक स्वतंत्र एवं अधिकतर रङिन। चारुर अद्भुत आचरण लक्ष्य करिया से आर पूर्वेर मतो स्वभावत परिहास करिते पारित ना, दुष्टामि करिले ताहाके मारिबार कथा मनेओ उदय हइत ना।

स्त्री-पुरुषे—पति-पत्नी ने।

बर्गिर—प्राचीन मराठे सैनिकों के। हाङ्गामार मतो—उत्पात की तरह। पड़ाशुना—पढ़ना-लिखना। पाता—पृष्ठ, पन्ने। दुष्टामि—ऊधम।

निजेर एइ गूढ़ परिवर्तन, एइ आबद्ध आसक्त भाव ताहार निजेर काछे एक नूतन स्वप्नेर मतो मने हइते लागिल।

श्रावण मासे विवाहेर शुभ दिन स्थिर करिया मतिबाबु तारापदर मा ओ भाइदेर आनिते पाठाइलेन, तारापदके ताहा जानिते दिलेन ना। कलिकातार मोक्तारके गड़ेर वाद्य बायना दिते आदेश करिलेन एवं जिनिसपत्रेर फर्द पाठाइया दिलेन।

आकाशे नववर्षार मेघ उठिल। ग्रामेर नदी एतदिन शुष्क-प्राय हइया छिल, माझे माझे केवल एक-एकटा डोबाय जल बाधिया थाकित; छोटो छोटो नौका सेइ पंकिल जले डोबानो छिल एवं शुष्क नदीपथे गोरुर गाड़ि-चलाचलेर सुगभीर चक्रचिह्न क्षोदित हइतेछिल—एमन समय एकदिन पितृगृह-प्रत्यागत पार्वतीर मतो, कोथा हइते द्रुतगामिनी जलधारा कलहास्य-सहकारे ग्रामेर शून्यवक्षे आसिया समागत हइल—उलङ्ग बालकबालिकारा तीरे आसिया उच्चैःस्वरे नृत्य करिते लागिल, अतृप्त आनन्दे वारम्वार जले झाँप दिया दिया नदीके येन आलिङ्गन करिया धरिते लागिल, कुटिरवासिनीरा ताहादेर परिचित प्रियसङ्गिनीके देखिबार जन्य बाहिर हइया आसिल—शुष्क निर्जीव ग्रामेर मध्ये कोथा हइते एक प्रबल विपुल प्राणहिल्लोल आसिया प्रवेश करिल। देश-विदेश हइते बोझाइ हइया छोटो बड़ो आयतनेर नौका आसिते लागिल—बाजारेर घाट सन्ध्यावेलाय विदेशी माझिर संगीते ध्वनित हइया उठिल। दुइ तीरेर ग्रामगुलि सम्वत्सर आपनार निभृत कोणे आपनार क्षुद्र घरकन्ना लइया एकाकिनी दिनयापन करिते थाके, वर्षार समय बाहिरेर बृहत् पृथिवी विचित्र पण्योपहार

मोक्तारके—मुख्तार को। **गड़ेर वाद्य**—फौजी बैण्ड। **बायना**—पेशगी। **जिनिसपत्रेर फर्द**—चीजवस्त की सूची।

डोबाय जल बाधिया थाकित—गड्ढे में पानी रुका रहता। **डोबानो छिल**—डुबाई (पड़ी) हुई थीं। **उलङ्ग**—नंग-धड़ंग। **झाँप दिया**—छलांग मार कर। **बोझाइ हइया**—लदी हुई। **आयतनेर**—आकार की। **सम्वत्सर**—पूरे बरस। **घरकन्ना**—घर-गृहस्थी।

लइया गैरिकवर्ण जलरथे चड़िया एइ ग्रामकन्यकागुलिर तत्त्व लइते आसे ; तखन जगतेर सङ्गे आत्मीयतागर्वे किछुदिनेर जन्य ताहादेर क्षुद्रता घुचिया याय, समस्तइ सचल सजाग सजीव हइया उठे एवं मौन निस्तब्ध देशेर मध्ये सुदूर राज्येर कलालापध्वनि आसिया चारि दिकेर आकाशके आन्दोलित करिया तुले।

एइ समये कुड़ुलकाटाय नागबाबुदेर एलाकाय विख्यात रथयात्रार मेला हइबे। ज्योत्स्ना-सन्ध्याय तारापद घाटे गिया देखिल, कोनो नौका नागरदोला, कोनो नौका यात्रार दल, कोनो नौका पण्यद्रव्य लइया प्रबल नवीन स्रोतेर मुखे द्रुतवेगे मेला-अभिमुखे चलियाछे ; कलिकातार कंसर्टेर दल विपुलशब्दे द्रुततालेर बाजना जुड़िया दियाछे, यात्रार दल बेहालार सङ्गे गान गाहितेछे एवं समेर काछे हाहाहा: शब्दे चीत्कार उठितेछे, पश्चिमदेशी नौकार दाँड़िमाल्लागुलो केवलमात्र मादल एवं करताल लइया उन्मत्त उत्साहे बिना संगीते खचमच शब्दे आकाश विदीर्ण करितेछे—उद्दीपनार सीमा नाइ। देखिते देखिते पूर्वदिगन्त हइते घन मेघराशि प्रकाण्ड कालो पाल तुलिया दिया आकाशेर माझखाने उठिया पड़िल, चाँद आच्छन्न हइल—पुबे-वातास वेगे बहिते लागिल, मेघेर पश्चाते मेघ छुटिया चलिल, नदीर जल खल खल हास्ये स्फीत हइया उठिते लागिल—नदीतीरवर्ती आन्दोलित वनश्रेणीर मध्ये अन्धकार पुञ्जीभूत हइया उठिल, भेक डाकिते आरम्भ करिल, झिल्लिध्वनि येन करात दिया अन्धकारके चिरिते लागिल। सम्मुखे आज येन समस्त जगतेर रथयात्रा—चाका घुरितेछे, ध्वजा उड़ितेछे, पृथिवी काँपितेछे ; मेघ उड़ियाछे,

---

तत्त्व—खोज-खबर। **घुचिया याय**—नष्ट हो जाती है।

एलाकाय—इलाके में। **नागरदोला**—हिंडोला। **बाजना जुड़िया दियाछे**—बाजे बजाना शुरू कर दिया है। **बेहालार**—बेले के। **समेर काछे**—सम पर, ताल की समाप्ति पर। **दाँड़िमाल्लागुलो**—माँझि आदि। **मादल**—मृदंग जातीय वाद्य विशेष। **पुबे-बातास**—पुरवाई। **भेक डाकिते**—मेढ़क ने टर्राना। **करात दिया**—आरी से। **चाका घुरितेछे**—पहिए घूम रहे हैं।

वातास छुटियाछे, नदी बहियाछे, नौका चलियाछे, गान उठियाछे ; देखिते देखिते गुरु गुरु शब्दे मेघ डाकिया उठिल, विद्युत् आकाशके काटिया काटिया झलसिया उठिल, सुदूर अंधकार हइते एकटा मुषलधारावर्षी वृष्टिर गन्ध आसिते लागिल। केवल नदीर एक तीरे एक पार्श्वे काँठालिया ग्राम आपन कुटिर द्वार बन्ध करिया दीप निबाइया दिया निःशब्दे घुमाइते लागिल।

परदिन तारापदर माता ओ भ्रातागण काँठालियाय आसिया अवतरण करिलेन, परदिन कलिकाता हइते विविधसामग्रीपूर्ण तिनखाना बड़ो नौका आसिया काँठालियार जमिदारि काछारिर घाटे लागिल एवं परदिन अति प्राते सोनामणि कागजे किञ्चित् आमसत्त एवं पातार ठोङाय किञ्चित् आचार लइया भये भये तारापदर पाठगृहद्वारे आसिया निःशब्दे दाँड़ाइल—किन्तु परदिन तारापदके देखा गेल ना। स्नेह-प्रेम-बन्धुत्वेर षडयन्त्रबन्धन ताहाके चारिदिक हइते सम्पूर्णरूपे घिरिबार पूर्वेइ समस्त ग्रामेर हृदयखानि चुरि करिया एकदा वर्षार मेघान्धकार रात्रे एइ ब्राह्मण-बालक आसक्तिविहीन उदासीन जननी विश्वपृथिवीर निकट चलिया गियाछे।

अगस्त-नवम्बर, १८९५

गुरु गुरु—गड़गड़ाहट। **झलसिया**—कौंध। **दीप निबाइया दिया**—दीपक बुझा कर।

काछारिर—कचहरी के। **आमसत्त**—अमावट। **ठोङाय**—दोने में। **घिरिबार**—घेरने के। **चुरि करिया**—चुरा कर।

दुराशा

दार्जिलिङे गिया देखिलाम, मेघे वृष्टिते दश दिक् आच्छन्न। घरेर बाहिर हइते इच्छा हय ना, घरेर मध्ये थाकिते आरओ अनिच्छा जन्मे।

होटेले प्रातःकालेर आहार समाधा करिया पाये मोटा बुट एवं आपादमस्तक म्याकिण्टश परिया बेड़ाइते बाहिर हइयाछि। क्षणे क्षणे टिप् टिप् करिया वृष्टि पड़ितेछे एवं सर्वत्र घन मेघेर कुज्झटिकाय मने हइतेछे येन विधाता हिमालय पर्वत-सुद्ध समस्त विश्वचित्र रबार दिया घषिया घषिया मुछिया फेलिबार उपक्रम करियाछेन।

जनशून्य क्याल्काटा रोडे एकाकी पदचारण करिते करिते भाबितेछिलाम—अवलम्बनहीन मेघराज्ये आर तो भालो लागे ना, शब्दस्पर्शरूपमयी विचित्रा धरणीमाताके पुनराय पाँच इन्द्रिय द्वारा पाँच रकमे आँकड़िया धरिबार जन्य प्राण आकुल हइया उठियाछे।

एमन समये अनतिदूरे रमणीकण्ठेर सकरुण रोदनगुञ्जन-ध्वनि शुनिते पाइलाम। रोगशोकसंकुल संसारे रोदनध्वनिटा किछुइ विचित्र नहे, अन्यत्र अन्य समय हइले फिरिया चाहिताम कि ना सन्देह, किन्तु एइ असीम मेघराज्येर मध्ये से रोदन समस्त लुप्त जगतेर एकमात्र रोदनेर मतो आमार काने आसिया प्रवेश करिल, ताहाके तुच्छ बलिया मने हइल ना।

शब्द लक्ष्य करिया निकटे गिया देखिलाम गैरिकवसनावृता

समाधा करिया—समाप्त करके। **म्याकिन्टश** (अं०)—बरसाती। **पर्वत-सुद्ध**—पर्वत समेत। **मुछिया फेलिबार**—मिटा देने का।

आँकड़िया धरिबार जन्य—जकड़ने के लिए।

फिरिया चाहिताम—पलट कर देखता।

नारी, ताहार मस्तके स्वर्णकपिश जटाभार चूड़ा-आकारे आवद्ध, पथप्रान्ते शिलाखण्डेर उपर बसिया मृदुस्वरे क्रंदन करितेछे। ताहा सद्यशोकेर विलाप नहे, बहुदिनसञ्चित निःशब्द श्रान्ति ओ अवसाद आज मेघान्धकार निर्जनतार भारे भाङिया उच्छ्वसित हइया पड़ितेछे।

मने मने भाविलाम, ए वेश हइल, ठिक येन घर-गड़ा गल्पेर मतो आरम्भ हइल; पर्वतशृंगे संन्यासिनी बसिया काँदितेछे इहा ये कखनओ चर्मचक्षे देखिब एमन आशा कस्मिनकाले छिल ना।

मेयेटि कोन् जात ठाहर हइल ना। सदय हिन्दि भाषाय जिज्ञासा करिलाम, "के तुमि, तोमार की हइयाछे।"

प्रथमे उत्तर दिल ना, मेघेर मध्य हइते सजलदीप्तनेत्रे आमाके एकबार देखिया लइल।

आमि आबार कहिलाम, "आमाके भय करियो ना। आमि भद्रलोक।"

शुनिया से हासिया खास हिन्दुस्थानीते बलिया उठिल, "बहुदिन हइते भयडरेर माथा खाइया बसिया आछि, लज्जाशरमओ नाइ। वाबुजि, एकसमय आमि ये जेनानाय छिलाम सेखाने आमार सहोदर भाइके प्रवेश करिते हइलेओ अनुमति लइते हइत, आज विश्वसंसारे आमार पर्दा नाइ।"

प्रथमटा एकटु राग हइल; आमार चालचलन समस्तइ साहेबि। किन्तु एइ हतभागिनी बिना द्विधाय आमाके बाबुजि सम्बोधन करे केन। भाबिलाम, एइखानेइ आमार उपन्यास शेष करिया सिगारेटेर धोँया उड़ाइया उद्यतनासा साहेबियानार

भाङिया—टूट कर।

ए बेश हइल—यह तो खूब हुआ। घर-गड़ा—घर पर बैठ कर गढ़ी हुई।

ठाहर हइल ना—निर्णय नहीं हो सका।

माथा खाइया—खो कर, ताक पर रख कर। जेनानाय—जनानखाने में।

भाबिलाम—सोचा। शेष—समाप्त। उद्यतनासा—नाक (मुंह) ऊपर उठाए, अकड़ कर। साहेबियानार—साहबी फ़ैशन से।

रेलगाड़िर मतो सशब्दे सवेगे सदर्पे प्रस्थान करि। अवशेषे कौतूहल जयलाभ करिल। आमि किछु उच्चभाव धारण करिया वक्रग्रीवाय जिज्ञासा करिलाम, "तोमाके किछु साहाय्य करिते पारि? तोमार कोनो प्रार्थना आछे?"

से स्थिरभावे आमार मुखेर दिके चाहिल एवं क्षणकाल परे संक्षेपे उत्तर करिल, "आमि बद्राओनेर नबाब गोलामकादेर खाँर पुत्री।"

बद्राओन कोन् मुल्लुके एवं नबाब गोलामकादेर खाँ कोन् नवाब एवं ताँहार कन्या ये की दुःखे संन्यासिनीवेशे दार्जिलिङ क्यालकाटा रोडेर धारे बसिया काँदिते पारे आमि ताहार बिन्दु-विसर्ग जानि ना एवं विश्वासओ करि ना, किन्तु भाबिलाम रसभङ्ग करिब ना, गल्पटि दिव्य जमिया आसितेछे।

तत्क्षणात् सुगम्भीर मुखे सुदीर्घ सेलाम करिया कहिलाम, "बिबिसाहेब, माप करो, तोमाके चिनिते पारि नाइ।"

चिनिते ना पारिबार अनेकगुलि युक्तिसंगत कारण छिल, ताहार मध्ये सर्वप्रधान कारण, ताँहाके पूर्वे कस्मिनकाले देखि नाइ, ताहार उपर एमनि कुयाशा ये निजेर हात पा कयखानिइ चिनिया लओया दुःसाध्य।

बिबिसाहेबओ आमार अपराध लइलेन ना एवं सन्तुष्टकण्ठे दक्षिणहस्तेर इङ्गिते स्वतन्त्र शिलाखण्ड निर्देश करिया आमाके अनुमति करिलेन, "बैठिये।"

देखिलाम, रमणीटिर आदेश करिबार क्षमता आछे। आमि ताँहार निकट हइते सेइ सिक्त शैवालाच्छन्न कठिनबन्धुर शिला-खण्डतले आसन ग्रहणेर सम्मति प्राप्त हइया एक अभावनीय सम्मान लाभ करिलाम। बद्राओनेर गोलामकादेर खाँर पुत्री

मुल्लुके—मुल्क में। **बिन्दुविसर्ग**—तनिक भी। **दिव्य**—अच्छी-खासी। **चिनिते**—पहचान।
अपराध लइलेन ना—अपराध पर ध्यान न दिया।
कठिन बन्धुर—कठोर असमतल।

नुरउन्नीसा वा मेहेरउन्नीसा वा नुर-उल्मुल्क् आमाके दार्जिलिङे क्याल्काटा रोडेर धारे ताँहार अनतिदूरवर्ती अनति-उच्च पङ्किल आसने वसिवार अधिकार दियाछेन। होटेल हइते म्याकिण्टश परिया वाहिर हइवार समय एमन सुमहत् सम्भावना आमार स्वप्नेरओ अगोचर छिल।

हिमालयवक्षे शिलातले एकान्ते दुइटि पान्थ नरनारीर रहस्यालापकाहिनी सहसा सद्यसम्पूर्ण कवोष्ण काव्यकथार मतो शुनिते हय, पाठकेर हृदयेर मध्ये दूरागत निर्जन गिरिकन्दरेर निर्झरप्रपातध्वनि एवं कालिदास-रचित मेघदूत-कुमारसम्भवेर विचित्र संगीतमर्मर जाग्रत हइया उठिते थाके, तथापि ए कथा सकलकेइ स्वीकार करिते हइवे ये, वुट एवं म्याकिण्टश परिया क्याल्काटा रोडेर धारे कर्दमासने एक दीनवेशिनी हिन्दुस्थानी रमणीर सहित एकत्र उपवेशन-पूर्वक सम्पूर्ण आत्मगौरव अक्षुण्णभावे अनुभव करिते पारे एमन नव्यवङ्ग अति अल्पइ आछे। किन्तु सेदिन घनघोर वाष्पे दश दिक आवृत छिल, संसारेर निकट चक्षुलज्जा राखिवार कोनो विषय कोथाओ छिल ना, केवल अनन्त मेघराज्येर मध्ये वद्राओनेर नवाव गोलामकादेर खाँर पुत्री एवं आमि—एक नवविकशित वाङालि साहेव—दुइजने दुइखानि प्रस्तरेर उपर विश्वजगतेर दुइखण्ड प्रलयावशेषेर न्याय अवशिष्ट छिलाम, एइ विसदृश सम्मिलनेर परम परिहास केवल आमादेर अदृष्टेर गोचर छिल, काहारओ दृष्टिगोचर छिल ना।

आमि कहिलाम, "विविसाहेव, तोमार ए हाल के करिल।"

वद्राओनकुमारी कपाले कराघात करिलेन। कहिलेन, "के ए-समस्त कराय ता आमि कि जानि! एतवड़ो प्रस्तरमय कठिन हिमालयके के सामान्य वाष्पेर मेघे अन्तराल करियाछे।"

आमि कोनोरूप दार्शनिक तर्क ना तुलिया समस्त स्वीकार

कवोष्ण—थोड़ी गरम, गुनगुनी। नव्यवङ्ग—आधुनिक वंगाली। अन्तराल करियाछे—आड़ में छिपा दिया है।

करिया लइलाम ; कहिलाम, "ता बटे, अदृष्टेर रहस्य के जाने ! आमरा तो कीटमात्र।"

तर्क तुलिताम, बिबिसाहेबके आमि एत सहजे निष्कृति दिताम ना किन्तु आमार भाषाय कुलाइत ना। दरोयान एवं बेहारादेर संसर्गे येटुकु हिन्दि अभ्यस्त हइयाछे ताहाते क्यालकाटा रोडेर धारे बसिया बद्राओनेर अथवा अन्य कोनो स्थानेर कोनो नबाबपुत्रीर सहित अदृष्टवाद ओ स्वाधीन-इच्छा-वाद सम्बन्धे सुस्पष्टभावे आलोचना करा आमार पक्षे असम्भव हइत।

बिबिसाहेब कहिलेन, "आमार जीवनेर आश्चर्य काहिनी अद्यइ परिसमाप्त हइयाछे, यदि फरमायेस करेन तो बलि।"

आमि शशव्यस्त हइया कहिलाम, "बिलक्षण ! फरमायेस किसेर। यदि अनुग्रह करेन तो शुनिया श्रवण सार्थक हइबे।"

केह ना मने करेन, आमि ठिक एइ कथागुलि एमनिभावे हिन्दुस्थानी भाषाय बलियाछिलाम, बलिबार इच्छा छिल किन्तु सामर्थ्य छिल ना। बिबिसाहेब यखन कथा कहितेछिलेन आमार मने हइतेछिल येन शिशिरस्नात स्वर्णशीर्ष स्निग्धश्यामल शस्य-क्षेत्रेर उपर दिया प्रभातेर मन्दमधुर वायु हिल्लोलित हइया याइतेछे, ताहार पदे पदे एमन सहज नम्रता, एमन सौन्दर्य, एमन वाक्येर अवारित प्रवाह। आर आमि अति संक्षेपे खण्ड खण्ड भावे बर्बरेर मतो सोजा सोजा उत्तर दितेछिलाम। भाषाय सेरूप सुसम्पूर्ण अविच्छिन्न सहज शिष्टता आमार कोनोकाले जाना छिल ना ; बिबिसाहेबेर सहित कथा कहिबार समय एइ प्रथम निजेर आचरणेर दीनता पदे पदे अनुभव करिते लागिलाम।

तिनि कहिलेन, "आमार पितृकुले दिल्लिर सम्राटवंशेर रक्त प्रवाहित छिल, सेइ कुलगर्व रक्षा करिते गिया आमार उपयुक्त

ता बटे—सो तो है।

आमार भाषाय कुलाइत ना—अपनी भाषा में बाँध (व्यक्त न कर) पाता। **बेहारादेर**—बैरा लोगों के। **बिलक्षण**—खब। **केह......करेन**—कोई ऐसा न समझें। **सोजा सोजा**—सीधे-सीधे।

पात्रेर सन्धान पाओया दुःसाध्य हइयाछिल। लक्नौयेर नवावेर सहित आमार सम्बन्धेर प्रस्ताव आसियाछिल, पिता इतस्ततः करितेछिलेन, एमनसमय दाँते टोटा काटा लइया सिपाहिलोकेर सहित सरकारवाहादुरेर लड़ाइ वाधिल, कामानेर धोँयाय हिन्दुस्थान अन्धकार हइया गेल।"

स्त्रीकण्ठे, विशेष सम्भ्रान्त महिलार मुखे हिन्दुस्थानी कखनओ शुनि नाइ, शुनिया स्पष्ट वुझिते पारिलाम, ए भाषा आमिरेर भाषा—ए ये दिनेर भाषा से दिन आर नाइ, आज रेलोये-टेलिग्राफे, काजेर भिड़े, आभिजात्येर विलोपे समस्तइ येन ह्रस्व खर्व निरलंकार हइया गेछे। नवावजादीर भाषामात्र शुनिया सेइ इंराजरचित आधुनिक शैलनगरी दार्जिलिङेर घनकुज्झटिकाजालेर मध्ये आमार मनश्चक्षेर सम्मुखे मोगलसम्राटेर मानसपुरी मायावले जागिया उठिते लागिल—श्वेतप्रस्तररचित वड़ो वड़ो अभ्रभेदी सौधश्रेणी, पथे लम्वपुच्छ अश्वपृष्ठे मछलन्देर साज, हस्तीपृष्ठे स्वर्णझालरखचित हाओदा, पुरवासीगणेर मस्तके विचित्र वर्णेर उष्णीष, शालेर रेशमेर मस्लिनेर प्रचुरप्रसर जामा पायजामा, कोमरवन्धे वक्र तरवारि, जरीर जुतार अग्रभागे वक्रशीर्ष—सुदीर्घ अवसर, सुलम्व परिच्छद, सुप्रचुर शिष्टाचार।

नवावपुत्री कहिलेन, "आमादेर केल्ला यमुनार तीरे। आमादेर फौजेर अधिनायक छिल एकजन हिन्दु ब्राह्मण। ताहार नाम छिल केशरलाल।"

रमणी एइ केशरलाल शब्दटिर उपर ताहार नारीकण्ठेर समस्त संगीत येन एकेवारे एक मुहूर्ते उपुड़ करिया ढालिया

पात्रेर—वर की। लक्नौयेर—लखनऊ के। दाँते टोटा काटा लइया—दाँत से कारतूस काटने की वात को ले कर। लड़ाइ वाधिल—लड़ाई छिड़ गई। कामानेर धोँयाय—तोपों के धुंए से।

काजेर भिड़े—कान-काज की भीड़, व्यस्तता में।

मछलन्देर साज—वारीक चटाई का साज (मछलन्द : सम्भवतः मसनद से)। तरवारि—तलवार। सुदीर्घ अवसर—पर्याप्त समय। केल्ला—किला। उपुड़ करिया—औंधा कर।

दिल। आमि छड़िटा भूमिते राखिया नड़िया-चड़िया खाड़ा हइया बसिलाम।

"केशरलाल परम हिन्दु छिल। आमि प्रत्यह प्रत्युषे उठिया अन्तःपुरेर गवाक्ष हइते देखिताम, केशरलाल आवक्ष यमुनार जले निमग्न हइया प्रदक्षिण करिते करिते जोड़करे ऊर्ध्वमुखे नवोदित सूर्येर उद्देशे अञ्जलि प्रदान करित। परे सिक्तवस्त्रे घाटे बसिया एकाग्रमने जप समापन करिया परिष्कार सुकण्ठे भैरों रागे भजनगान करिते करिते गृहे फिरिया आसित।

आमि मुसलमानबालिका छिलाम किन्तु कखनओ स्वधर्मेर कथा शुनि नाइ एवं स्वधर्मसंगत उपासनाविधिओ जानिताम ना; तखनकार दिने विलासे मद्यपाने स्वेच्छाचारे आमादेर पुरुषेर मध्ये धर्मबन्धन शिथिल हइया गियाछिल एवं अन्तःपुरेर प्रमोदभवनेओ धर्म सजीव छिल ना।

विधाता आमार मने बोधकरि स्वाभाविक धर्मपिपासा दियाछिलेन। अथवा आर-कोनो निगूढ़ कारण छिल कि ना बलिते पारि ना। किन्तु प्रत्यह प्रशान्त प्रभाते नवोन्मेषित अरुणालोके निस्तरङ्ग नील यमुनार निर्जन श्वेत सोपानतटे केशरलालेर पूजार्चनादृश्ये आमार सद्यसुप्तोत्थित अन्तःकरण एकटि अव्यक्त भक्तिमाधुर्ये परिप्लुत हइया याइत।

नियत संयत शुद्धाचारे ब्राह्मण केशरलालेर गौरवर्ण प्राणसार सुन्दर तनु देहखानि धूमलेशहीन ज्योतिःशिखार मतो बोध हइत; ब्राह्मणेर पुण्यमाहात्म्य अपूर्व श्रद्धाभरे एइ मुसलमानदुहितार मूढ़ हृदयके विनम्र करिया दित।

आमार एकटि हिन्दु बाँदि छिल, से प्रतिदिन नत हइया प्रणाम करिया केशरलालेर पदधूलि लइया आसित, देखिया आमार

नड़िया-चड़िया—हिल-डुल कर। **खाड़ा हइया**—सीधा हो कर।

तखनकार दिने—उन दिनों।

बोधकरि—सम्भवतः। **प्राणसार**—दुर्बल।

आनन्दओ हइत ईर्षाओ जन्मित। क्रियाकर्म-पार्वण उपलक्ष्ये एइ वन्दिनी मध्ये मध्ये ब्राह्मणभोजन कराइया दक्षिणा दित। आमि निजे हइते ताहाके अर्थसाहाय्य करिया वलिताम, 'तुइ केशरलालके निमन्त्रण करिवि ना?' से जिभ काटिया वलित 'केशरलालठाकुर काहारओ अन्नग्रहण वा दानप्रतिग्रह करेन ना।'

एइरूपे प्रत्यक्षे वा परोक्षे केशरलालके कोनोरूप भक्तिचिह्न देखाइते ना पारिया आमार चित्त येन क्षुब्ध क्षुधातुर हइया थाकित।

आमादेर पूर्वपुरुषेर केह-एकजन एकटि ब्राह्मणकन्याके वलपूर्वक विवाह करिया आनियाछिलेन, आमि अन्तःपुरेर प्रान्ते वसिया ताँहारइ पुण्यरक्तप्रवाह आपन शिरार मध्ये अनुभव करिताम, एवं सेइ रक्तसूत्रे केशरलालेर सहित एकटि ऐक्य सम्वन्ध कल्पना करिया कियत्परिमाणे तृप्तिवोध हइत।

आमार हिन्दु दासीर निकट हिन्दुधर्मेर समस्त आचार व्यवहार, देवदेवीर समस्त आश्चर्य काहिनी, रामायण-महाभारतेर समस्त अपूर्व इतिहास तन्न तन्न करिया शुनिताम, शुनिया सेइ अन्तःपुरेर प्रान्ते वसिया हिन्दुजगतेर एक अपरूप दृश्य आमार मनेर सम्मुखे उद्घाटित हइत। मूर्तिप्रतिमूर्ति, शङ्खघण्टाध्वनि, स्वर्णचूड़ाखचित देवालय, धूपधुनार धूम, अगुरुचन्दनमिश्रित पुष्पराशिर सुगन्ध, योगीसंन्यासीर अलौकिक क्षमता, ब्राह्मणेर अमानुषिक माहात्म्य, मानुष-छद्मवेशधारी देवतादेर विचित्रलीला, समस्त जड़ित हइया आमार निकटे एक अति पुरातन, अति विस्तीर्ण, अतिसुदूर अप्राकृत मायालोक सृजन करित, आमार चित्त येन नीड़हारा क्षुद्र पक्षीर न्याय प्रदोषकालेर एकटि प्रकाण्ड

पार्वण—पर्व, उत्सव।

प्रान्ते—कोने में। ताँहारइ—उन्हीं का।

तन्न तन्न करिया—विस्तृत रूप से, ब्यौरेवार। धूपधुनार धूम—धूपबत्ती और धूनी का धुंआ।

जड़ित हइया—मिल कर। नीड़हारा—जिसका नीड़ खो गया है (ऐसा पक्षी)।

प्राचीन प्रासादेर कक्षे कक्षे उड़िया उड़िया बेड़ाइत। हिन्दु-संसार आमार बालिकाहृदयेर निकट एकटि परमरमणीय रूप-कथार राज्य छिल।

एमनसमय कोम्पानिबाहादुरेर सहित सिपाहिलोकेर लड़ाइ बाधिल। आमादेर बद्राओनेर क्षुद्र केल्लाटिर मध्येओ विप्लवेर तरङ्ग जागिया उठिल।

केशरलाल बलिल, 'एइबार गो-खादक गोरालोकके आर्यावर्त हइते दूर करिया दिया आर-एकबार हिन्दुस्थाने हिन्दुमुसलमाने राजपद लइया द्यूतक्रीड़ा बसाइते हइबे।'

आमार पिता गोलामकादेर खाँ सावधानी लोक छिलेन; तिनि इंराज जातिके कोनो-एकटि विशेष कुटुम्ब-सम्भाषणे अभिहित करिया बलिलेन, 'उहारा असाध्य साधन करिते पारे, हिन्दुस्थानेर लोक उहादेर सहित पारिया उठिबे ना। आमि अनिश्चित प्रत्याशे आमार एइ क्षुद्र केल्लाटुकु खोयाइते पारिब ना, आमि कोम्पानिबाहादुरेर सहित लड़िब ना।'

यखन हिन्दुस्थानेर समस्त हिन्दुमुसलमानेर रक्त उत्तप्त हइया उठियाछे, तखन आमार पितार एइ वणिकेर मतो सावधान-ताय आमादेर सकलेर मनेइ धिक्कार उपस्थित हइल। आमार बेगम मातृगण पर्यन्त चञ्चल हइया उठिलेन।

एमन समये फौज लइया सशस्त्र केशरलाल आसिया आमार पिताके बलिलेन, 'नबाबसाहेब, आपनि यदि आमादेर पक्षे योग ना देन तबे यतदिन लड़ाइ चले आपनाके बन्दी राखिया आपनार केल्लार आधिपत्यभार आमि ग्रहण करिब।'

उड़िया बेड़ाइत—उड़ता फिरता। **रूपकथार**—परियों की कहानी का।

कोम्पानिबाहादुरेर—कम्पनी बहादुर (ईस्ट इंडिया कम्पनी) के। **लड़ाइ बाधिल**—लड़ाई छिड़ गई।

पारिया उठिबे ना—पार नहीं पा सकेंगे। **खोयाइते पारिब ना**—खोना नहीं चाहता।

पिता बलिलेन 'से-समस्त हाङ्गामा किछुइ करिते हइबे ना, तोमादेर पक्षे आमि रहिब।'

केशरलाल कहिलेन, 'धनकोष हइते किछु अर्थ बाहिर करिते हइबे।'

पिता विशेष किछु दिलेन ना ; कहिलेन, 'यखन येमन आवश्यक हइबे आमि दिब।'

आमार सीमन्त हइते पदांगुलि पर्यन्त अंगप्रत्यङ्गेर यतकिछु भूषण छिल समस्त कापड़े बाँधिया आमार हिन्दु दासी दिया गोपने केशरलालेर निकट पाठाइया दिलाम। तिनि ग्रहण करिलेन। आनन्दे आमार भूषणविहीन प्रत्येक अङ्गप्रत्यङ्ग पुलके रोमाञ्चित हइया उठिल।

केशरलाल मरिचापड़ा बन्दुकेर चोङ एवं पुरातन तलोयारगुलि माजिया घषिया साफ करिते प्रस्तुत हइलेन, एमनसमय हठात् एकदिन अपराह्णे जिलार कमिशनार-साहेब लालकुर्ति गोरा लइया आकाशे धुला उड़ाइया आमादेर केल्लार मध्ये आसिया प्रवेश करिल।

आमार पिता गोलामकादेर खाँ गोपने ताँहाके विद्रोह-संवाद दियाछिलेन।

बद्राओनेर फौजेर उपर केशरलालेर एमन एकटि अलौकिक आधिपत्य छिल ये, ताँहार कथाय ताहारा भाङ्गा बन्दुक ओ भोँता तरबारि हस्ते लड़ाइ करिया मरिते प्रस्तुत हइल।

विश्वासघातक पितार गृह आमार निकट नरकेर मतो बोध हइल। क्षोभे दुःखे लज्जाय घृणाय बुक फाटिया याइते लागिल, तबु चोख दिया एक फोँटा जल बाहिर हइल ना। आमार भीरु भ्रातार परिच्छद परिया छद्मवेशे अन्तःपुर हइते बाहिर हइया गेलाम, काहारओ देखिबार अवकाश छिल ना।

हाङ्गामा—हंगामा।
सीमन्त—माँग (चोटी, सिर)। दासी दिया—दासी के द्वारा।
मरिचापड़ा—मोरचा लगी, जंग लगी। चोङ—नाली।
भोँता—भोथरी।
बुक—वक्ष, छाती। चोख दिया—आँखों से। फोँटा—बूंद।

तखन धुला एवं बारुदेर धोँया, सैनिकेर चित्कार एवं बन्दुकेर शब्द थामिया गिया मृत्युर भीषण शान्ति जलस्थल-आकाश आच्छन्न करियाछे। यमुनार जल रक्तरागे रञ्जित करिया सूर्य अस्त गियाछे, सन्ध्याकाशे शुक्लपक्षेर परिपूर्णप्राय चन्द्रमा।

रणक्षेत्र मृत्युर विकट दृश्ये आकीर्ण। अन्य समय हइले करुणाय आमार वक्ष व्यथित हइया उठित, किन्तु सेदिन स्वप्नाविष्टेर मतो आमि घुरिया घुरिया बेड़ाइतेछिलाम, खुँजितेछिलाम कोथाय आछे केशरलाल, सेइ एकमात्र लक्ष्य छाड़ा आर समस्त आमार निकट अलीक बोध हइतेछिल।

खुँजिते खुँजिते रात्रि द्विप्रहरेर उज्ज्वल चन्द्रालोके देखिते पाइलाम, रणक्षेत्रेर अदूरे यमुनार तीरे आम्रकाननच्छायाय केशरलाल एवं ताँहार भक्तभृत्य देओकिनन्दनेर मृतदेह पड़िया आछे। बुझिते पारिलाम, सांघातिक आहत अवस्थाय, हय प्रभु भृत्यके अथवा भृत्य प्रभुके, रणक्षेत्र हइते एइ निरापदस्थाने वहन करिया आनिया शान्तिते मृत्युहस्ते आत्मसमर्पण करियाछे।

प्रथमेइ आमि आमार बहुदिनेर बुभुक्षित भक्तिवृत्तिर चरितार्थता साधन करिलाम। केशरलालेर पदतले लुण्ठित हइया पड़िया आमार आजानुविलम्बित केशजाल उन्मुक्त करिया दिया वारम्वार ताँहार पदधूलि मुछिया लइलाम, आमारउ तप्त ललाटे ताँहार हिमशीतल पादपद्म तुलिया लइलाम, ताँहार चरण चुम्बन करिबामात्र वहुदिवसेर निरुद्ध अश्रुराशि उद्वेल हइया उठिल।

एमन समये केशरलालेर देह विचलित हइल, एवं सहसा ताँहार मुख हइते वेदनार अस्फुट आर्तस्वर शुनिया आमि ताँहार चरणतल छाड़िया चमकिया उठिलाम; शुनिलाम, निमीलित नेत्रे शुष्क कण्ठे एकवार वलिलेन, 'जल'।

घुरिया घुरिया—चक्कर काटते हुए। **छाड़ा**—अतिरिक्त। **अलीक**—मिथ्या।

मुछिया लइलाम—पोंछ ली। **तुलिया लइलाम**—उठा लिए।

चमकिया उठिलाम—चौंक पड़ी।

आमि तत्क्षणात् आमार गात्रवस्त्र यमुनार जले भिजाइया छुटिया चलिया आसिलाम। वसन निंगड़ाइया केशरलालेर आनीलित ओष्ठाधरेर मध्ये जल दिते लागिलाम, एवं वामचक्षु नष्ट करिया ताँहार कपाले ये निदारुण आघात लागियाछिल सेइ आहत स्थाने आमार सिक्त वसनप्रान्त छिँड़िया बाँधिया दिलाम।

एमनि बारकतक यमुनार जल आनिया ताँहार मुखे चक्षे सिञ्चन करार पर अल्पे अल्पे चेतनार सञ्चार हइल। आमि जिज्ञासा करिलाम, 'आर जल दिब?' केशरलाल कहिलेन, 'के तुमि।' आमि आर थाकिते पारिलाम ना, बलिलाम, 'अधीना आपनार भक्त सेविका। आमि नबाव गोलामकादेर खाँर कन्या।' मने करियाछिलाम, केशरलाल आसन्न मृत्युकाले ताँहार भक्तेर शेष परिचय सङ्गे करिया लइया याइबेन, ए सुख हइते आमाके केह वञ्चित करिते पारिबे ना।

आमार परिचय पाइबामात्र केशरलाल सिंहेर न्याय गर्जन करिया उठिया बलिलेन, 'बेइमानेर कन्या, विधर्मी! मृत्युकाले यवनेर जल दिया तुइ आमार धर्म नष्ट करिलि!' एइ बलिया प्रबल बले आमार कपोलदेशे दक्षिण करतलेर आघात करिलेन, आमि मूर्छितप्राय हइया चक्षे अन्धकार देखिते लागिलाम।

तखन आमि षोड़शी, प्रथम दिन अन्तःपुर हइते बाहिरे आसियाछि. तखनओ बहिराकाशेर लुब्ध तप्त सूर्यकर आमार सुकुमार कपोलेर रक्तिम लावण्यविभा अपहरण करिया लय नाइ; सेइ बहिःसंसारे पदक्षेप करिबामात्र संसारेर निकट हइते, आमार संसारेर देवतार निकट हइते एइ प्रथम सम्भाषण प्राप्त हइलाम।"

वसन निंगड़ाइया—वस्त्र निचोड़ कर। छिँड़िया—फाड़ कर।
बारकतक—कई बार। शेष परिचय—अंतिम परिचय।
पाइबामात्र—पाते ही। चक्षे अन्धकार देखिते लागिलाम—आँखों के सामने अँधेरा छा गया।

16

आमि निर्वापित-सिगारेटे एतक्षण मोहमुग्ध चित्रार्पितेर न्याय बसिया छिलाम। गल्प शुनितेछिलाम कि भाषा शुनितेछिलाम कि संगीत शुनितेछिलाम जानि ना, आमार मुखे एकटि कथा छिल ना। एतक्षण परे आमि आर थाकिते पारिलाम ना, हठात् बलिया उठिलाम, "जानोयार।"

नबाबजादी कहिलेन, "के जानोयार! जानोयार कि मृत्युयन्त्रणार समय मुखेर निकट समाहृत जलबिन्दु परित्याग करे।"

आमि अप्रतिभ हइया कहिलाम, "ता बटे। से देवता।"

नबाबजादी कहिलेन, "किसेर देवता! देवता कि भक्तेर एकाग्रचित्तेर सेवा प्रत्याख्यान करिते पारे!"

आमि बलिलाम, "ताओ बटे।" बलिया चुप करिया गेलाम।

नबाबपुत्री कहिते लागिलेन, "प्रथमटा आमार बड़ो विषम बाजिल। मने हइल, विश्वजगत् हठात् आमार माथार उपर चुरमार हइया भाङिया पड़िया गेल। मुहूर्तेर मध्ये संज्ञा लाभ करिया सेइ कठोर कठिन निष्ठुर निर्विकार पवित्र ब्राह्मणेर पदतले दूर हइते प्रणाम करिलाम—मने मने कहिलाम, हे ब्राह्मण, तुमि हीनेर सेवा, परेर अन्न, धनीर दान, युवतीर यौवन, रमणीर प्रेम किछुइ ग्रहण कर ना; तुमि स्वतन्त्र, तुमि एकाकी, तुमि निर्लिप्त, तुमि सुदूर, तोमार निकट आत्मसमर्पण करिबार अधिकारओ आमार नाइ!

नबाबदुहिताके भूलुण्ठितमस्तके प्रणाम करिते देखिया केशर-लाल की मने करिल बलिते पारि ना, किन्तु ताहार मुखे विस्मय अथवा कोनो भावान्तर प्रकाश पाइल ना। शान्तभावे एकबार

निर्वापित—बुझी हुई। थाकिते पारिलाम ना—रह न सका।
समाहृत—संग्रहीत (आई हुई)।
ता बटे—सो तो है। किसेर—कैसा।
विषम बाजिल—बुरा लगा। माथार—सिर के।

आमार मुखेर दिके चाहिल; ताहार पर धीरे धीरे उठिल। आमि सचकित हइया आश्रय दिवार जन्य आमार हस्त प्रसारण करिलाम, से ताहा नीरवे प्रत्याख्यान करिल एवं बहु कष्टे यमुनार घाटे गिया अवतीर्ण हइल। सेखाने एकटि खेयानौका बाँधा छिल। पार हइबार लोकओ छिल ना, पार करिबार लोकओ छिल ना। सेइ नौकार उपर उठिया केशरलाल बाँधन खुलिया दिल, नौका देखिते देखिते मध्यस्रोते गिया क्रमश अदृश्य हइया गेल—आमार इच्छा हइते लागिल, समस्त हृदयभार, समस्त यौवनभार, समस्त अनादृत भक्तिभार लइया सेइ अदृश्य नौकार अभिमुखे जोड़कर करिया सेइ निस्तब्ध निशीथे सेइ चन्द्रालोकपुलकित निस्तरङ्ग यमुनार मध्ये अकालवृन्तच्युत पुष्पमञ्जरीर न्याय एइ व्यर्थ जीवन विसर्जन करि।

किन्तु पारिलाम ना। आकाशेर चन्द्र, यमुनापारेर घनकृष्ण वनरेखा, कालिन्दीर निविड़ नील निष्कम्प जलराशि, दूरे आम्रवनेर ऊर्ध्वे आमादेर ज्योत्स्नाचिक्कण केल्लार चूड़ाग्रभाग, सकलेइ निःशब्दगम्भीर ऐकताने मृत्युर गान गाहिल; सेइ निशीथे ग्रहचन्द्रताराखचित निस्तब्ध तिन भुवन आमाके एकवाक्ये मरिते कहिल। केवल वीचिभङ्गविहीन प्रशान्त यमुनावक्षोवाहित एकखानि अदृश्य जीर्ण नौका सेइ ज्योत्स्नारजनीर सौम्यसुन्दर शान्तशीतल अनन्त भुवनमोहन मृत्युर प्रसारित आलिङ्गनपाश हइते विच्छिन्न करिया आमाके जीवनेर पथे टानिया लइया चलिल। आमि मोहस्वप्नाभिहतार न्याय यमुनार तीरे तीरे कोथाओ वा काशवन, कोथाओ वा मरुवालुका, कोथाओ वा बन्धुर विदीर्ण तट, कोथाओ वा घनगुल्मदुर्गम वनखण्डेर भितर दिया चलिते लागिलाम।"

चाहिल—देखा। खेयानौका—खेवे की नाव। बाँधन—बन्धन। जोड़कर करिया—हाथ जोड़ कर।

किन्तु पारिलाम ना—किन्तु (विसर्जित) कर न सकी। टानिया लइया चलिल—खींच ले चला। बन्धुर—ऊँचा-नीचा।

एइखाने वक्ता चुप करिल। आमिओ कोनो कथा कहिलाम ना।

अनेकक्षण परे नबाबदुहिता कहिल, "इहार परे घटनावली बड़ो जटिल। से केमन करिया विश्लेष करिया परिष्कार करिया बलिब जानि ना। एकटा गहन अरण्येर माझखान दिया यात्रा करियाछिलाम, ठिक कोन् पथ दिया कखन चलियाछिलाम से कि आर खुंजिया बाहिर करिते पारि। कोथाय आरम्भ करिब, कोथाय शेष करिब, कोन्टा त्याग करिब, कोन्टा राखिब, समस्त काहिनीके की उपाये एमन स्पष्ट प्रत्यक्ष करिया तुलिब याहाते किछुइ असाध्य असम्भव अप्रकृत बोध ना हय।

किन्तु जीवनेर एइ कयटा दिने बुझियाछि ये, असाध्य असम्भव किछुइ नाइ। नबाब-अन्तःपुरेर बालिकार पक्षे बाहिरेर संसार एकान्त दुर्गम बलिया मने हइते पारे, किन्तु ताहा काल्पनिक; एकबार बाहिर हइया पड़िलेइ एकटा चलिबार पथ थाकेइ। से पथ नबाबि पथ नहे, किन्तु पथ; से पथे मानुष चिरकाल चलिया आसियाछे—ताहा बन्धुर विचित्र सीमाहीन, ताहा शाखा-प्रशाखाय विभक्त, ताहा सुखेदुःखे बाधाविघ्ने जटिल, किन्तु ताहा पथ।

सेइ साधारण मानवेर पथे एकाकिनी नबाबदुहितार सुदीर्घ भ्रमणवृत्तान्त सुखश्राव्य हइबे ना, हइलेओ से-सब कथा बलिबार उत्साह आमार नाइ। एक कथाय, दुःखकष्ट विपद अवमानना अनेक भोग करिते हइयाछे, तबु जीवन असह्य हय नाइ। आतसबाजिर मतो यत दाहन ततइ उद्दाम गति लाभ करियाछि। यतक्षण वेगे चलियाछिलाम ततक्षण पुड़ितेछि बलिया बोध छिल ना, आज हठात् सेइ परम दुःखेर, सेइ चरम सुखेर आलोकशिखाटि निबिया गिया एइ पथप्रान्तेर धूलिर उपर जड़पदार्थेर न्याय पड़िया

माझखान दिया—बीच से हो कर।

कयटा—कुछेक-एक। **बुझियाछि**—समझ गई हूँ।

आतसबाजिर. . .करियाछि—आतिशबाजी की तरह जितनी जली हूँ उतनी ही उद्दाम गति को प्राप्त हुई हूँ। **पुड़ितेछि**—जल रही हूँ। **निबिया गिया**—बुझ कर।

गियाछि—आज आमार यात्रा शेष हइया गेछे, एइखानेइ आमार काहिनी समाप्त।"

एइ बलिया नबाबपुत्री थामिल। आमि मने मने घाड़ नाड़िलाम; एखाने तो कोनोमतेइ शेष हय ना। किछुक्षण चुप करिया थाकिया भाङा हिन्दिते बलिलाम, "बेयादबि माप करिबेन, शेष दिककार कथाटा आर-एकटु खोलसा करिया बलिले अधीनेर मनेर व्याकुलता अनेकटा ह्रास हय।"

नबाबपुत्री हासिलेन। बुझिलाम, आमार भाङा हिन्दिते फल हइयाछे। यदि आमि खास हिन्दिते बात् चालाइते पारिताम ताहा हइले आमार काछे ताँहार लज्जा भाङित ना, किन्तु आमि ये ताँहार मातृभाषा अति अल्पइ जानि सेइटेइ आमादेर उभयेर मध्ये बृहत् व्यवधान, सेइटेइ एकटा आब्रु।

तिनि पुनराय आरम्भ करिलेन, "केशरलालेर संवाद आमि प्रायइ पाइताम किन्तु कोनोमतेइ ताँहार साक्षात् लाभ करिते पारि नाइ। तिनि ताँतियाटोपिर दले मिशिया सेइ विप्लवाच्छन्न आकाशतले अकस्मात् कखनओ पूर्वे, कखनओ पश्चिमे, कखनओ ईशाने, कखनओ नैऋते, वज्रपातेर मतो मुहूर्तेर मध्ये भाङिया पड़िया, मुहूर्तेर मध्ये अदृश्य हइतेछिलेन।

आमि तखन योगिनी साजिया काशीर शिवानन्दस्वामीके पितृसम्बोधन करिया ताँहार निकट संस्कृत शास्त्र अध्ययन करिते-छिलाम। भारतवर्षेर समस्त संवाद ताँहार पदतले आसिया समागत हइत, आमि भक्तिभरे शास्त्र शिक्षा करिताम एवं मर्मान्तिक उद्वेगेर सहित युद्धेर संवाद संग्रह करिताम।

घाड़ नाड़िलाम—गर्दन हिलाई। कोनोमतेइ—किसी भी प्रकार। भाङा हिन्दिते—टूटी-फूटी हिन्दी में। बेयादबि—बेअदबी। शेषदिककार—आखिरी हिस्से की।

लज्जा भाङित ना—शरम न खुल पाती, खुल कर न कह पातीं। आब्रु—पर्दा। मिशिया—मिल कर। भाङिया पड़िया—टूट कर।

योगिनी साजिया—योगिनी का वेश धारण कर।

क्रमे ब्रिटिशराज हिन्दुस्थानेर विद्रोहवह्नि पदतले दलन करिया निबाइया दिल। तखन सहसा केशरलालेर संवाद आर पाओया गेल ना। भीषण प्रलयालोकेर रक्तरश्मिते भारतवर्षेर दूरदूरान्तर हइते ये-सकल वीरमूर्ति क्षणे क्षणे देखा याइतेछिल, हठात् ताहारा अन्धकारे पड़िया गेल।

तखन आमि आर थाकिते पारिलाम ना। गुरुर आश्रय छाड़िया भैरवीवेशे आबार बाहिर हइया पड़िलाम। पथे पथे, तीर्थे तीर्थे, मठे मन्दिरे भ्रमण करियाछि, कोथाओ केशरलालेर कोनो सन्धान पाइ नाइ। दुइ-एकजन याहारा ताहार नाम जानित, कहिल, 'से हय युद्धे नय राजदण्डे मृत्युलाभ करियाछे।' आमार अन्तरात्मा कहिल, 'कखनओ नहे, केशरलालेर मृत्यु नाइ। सेइ ब्राह्मण, सेइ दुःसह ज्वलदग्नि कखनओ निर्वाण पाय नाइ, आमार आत्माहुति ग्रहण करिबार जन्य से एखनओ कोनो दुर्गम निर्जन यज्ञवेदीते ऊर्ध्वशिखा हइया ज्वलितेछे।'

हिन्दुशास्त्रे आछे, ज्ञानेर द्वारा तपस्यार द्वारा शूद्र ब्राह्मण हइयाछे, मुसलमान ब्राह्मण हइते पारे कि ना से कथार कोनो उल्लेख नाइ, ताहार एकमात्र कारण, तखन मुसलमान छिल ना। आमि जानिताम, केशरलालेर सहित आमार मिलनेर बहु विलम्ब आछे, कारण तत्पूर्वे आमाके ब्राह्मण हइते हइबे। एके एके त्रिश वत्सर उत्तीर्ण हइल। आमि अन्तरे बाहिरे आचारे व्यवहारे कायमनोवाक्ये ब्राह्मण हइलाम, आमार सेइ ब्राह्मण पितामहीर रक्त निष्कलुष तेजे आमार सर्वाङ्गे प्रवाहित हइल, आमि मने मने आमार सेइ यौवनारम्भेर प्रथम ब्राह्मण, आमार यौवनशेषेर शेष ब्राह्मण, आमार त्रिभुवनेर एक ब्राह्मणेर पदतले सम्पूर्ण निःसंकोचे आपनाके प्रतिष्ठित करिया एकटि अपरूप दीप्ति लाभ करिलाम।

सन्धान पाइ नाइ—पता न चला। **याहारा**—जो लोग। **से हय युद्धे**—वह या तो युद्ध में। **नय**—नहीं तो।
एके एके—एक-एक कर।

युद्धविप्लवेर मध्ये केशरलालेर वीरत्वेर कथा आमि अनेक शुनियाछि, किन्तु से कथा आमार हृदये मुद्रित हय नाइ। आमि सेइ-ये देखियाछिलाम निःशब्दे ज्योत्स्नानिशीथे निस्तब्ध यमुनार मध्यस्रोते एकखानि क्षुद्र नौकार मध्ये एकाकी केशरलाल भासिया चलियाछे, सेइ चित्रइ आमार मने अङ्कित हइया आछे। आमि केवल अहरह देखितेछिलाम, ब्राह्मण निर्जन स्रोत वाहिया निशिदिन कोन् अनिर्देश रहस्याभिमुखे धावित हइतेछे—ताहार कोनो सङ्गी नाइ, कोनो सेवक नाइ, काहाकेओ ताहार कोनो आवश्यक नाइ, सेइ निर्मल आत्मनिमग्न पुरुष आपनाते आपनि सम्पूर्ण; आकाशेर ग्रहचन्द्रतारा ताहाके निःशब्दे निरीक्षण करितेछे।

एमनसमय संवाद पाइलाम केशरलाल राजदण्ड हइते पलायन करिया नेपाले आश्रय लइयाछे। आमि नेपाले गेलाम। सेखाने दीर्घकाल वास करिया संवाद पाइलाम, केशरलाल बहुकाल हइल नेपाल त्याग करिया कोथाय चलिया गियाछे केह जाने ना।

ताहार पर पाहाड़े पाहाड़े भ्रमण करितेछि। ए हिन्दुर देश नहे—भुटिया-लेप्चागण म्लेच्छ, इहादेर आहार-व्यवहारे आचार विचार नाइ, इहादेर देवता, इहादेर पूजार्चनाविधि सकलइ स्वतन्त्र; बहुदिनेर साधनाय आमि ये विशुद्ध शुचिता लाभ करियाछि, भय हइते लागिल, पाछे ताहाते रेखामात्र चिह्न पड़े। आमि बहु चेष्टाय आपनाके सर्वप्रकार मलिन संस्पर्श हइते रक्षा करिया चलिते लागिलाम। आमि जानिताम, आमार तरी तीरे आसिया पौँछियाछे, आमार जीवनेर चरमतीर्थ अनतिदूरे।

ताहार परे आर की बलिब। शेष कथा अति स्वल्प। प्रदीप यखन नेवे तखन एकटि फुत्कारेइ निबिया याय, से कथा आर सुदीर्घ करिया की व्याख्या करिब।

भासिया चलियाछे—बहा चला जा रहा है। बाहिया—(धार में) बहता हुआ। आपनाते आपनि सम्पूर्ण—अपने आप में सम्पूर्ण है।
ताहार पर—उसके बाद। आपनाके—अपने को।
नेवे—बुझता है। फुत्कारेइ—फूंक में ही।

आटत्रिश वत्सर परे एइ दार्जिलिङे आसिया आज प्रातःकाले केशरलालेर देखा पाइयाछि।"

वक्ताके एइखाने क्षान्त हइते देखिया आमि औत्सुक्येर सहित जिज्ञासा करिलाम, "की देखिलेन।"

नबाबपुत्री कहिलेन, "देखिलाम, वृद्ध केशरलाल भुटियापल्लीते भुटिया स्त्री एवं ताहार गर्भजात पौत्रपौत्री लइया म्लानवस्त्रे मलिन अङ्गने भुट्टा हइते शस्य संग्रह करितेछे।"

गल्प शेष हइल; आमि भाबिलाम, एकटा सान्त्वनार कथा बला आवश्यक। कहिलाम, "आटत्रिश वत्सर एकादिक्रमे याहाके प्राणभये विजातीयेर संस्रवे अहरह थाकिते हइयाछे से केमन करिया आपन आचार रक्षा करिबे।"

नबाबकन्या कहिलेन, "आमि कि ताहा बुझि ना। किन्तु एतदिन आमि की मोह लइया फिरितेछिलाम! ये ब्रह्मण्य आमार किशोर हृदय हरण करिया लइयाछिल आमि कि जानिताम ताहा अभ्यास ताहा संस्कार मात्र। आमि जानिताम ताहा धर्म, ताहा अनादि अनन्त। ताहाइ यदि ना हइबे तबे षोलो वत्सर वयसे प्रथम पितृगृह हइते बाहिर हइया सेइ ज्योत्स्नानिशीथे आमार विकसित पुष्पित भक्तिवेगकम्पित देहमनप्राणेर प्रतिदाने ब्राह्मणेर दक्षिण हस्त हइते ये दुःसह अपमान प्राप्त हइयाछिलाम, केन ताहा गुरुहस्तेर दीक्षार न्याय निःशब्दे अवनत मस्तके द्विगुणित भक्तिभरे शिरोधार्य करिया लइयाछिलाम। हाय ब्राह्मण, तुमि तो तोमार एक अभ्यासेर परिवर्ते आर एक अभ्यास लाभ करियाछ, आमि आमार एक यौवन एक जीवनेर परिवर्ते आर-एक जीवन यौवन कोथाय फिरिया पाइब!"

एइ बलिया रमणी उठिया दाँड़ाइया कहिल, "नमस्कार बाबुजि!"

क्षान्त—विरत।
पल्लीते—मुहल्ले में। अङ्गने—आँगन में। भुट्टा हइते—भुट्टों से।
एकादिक्रमे—निरन्तर। संस्रवे—संसर्ग में।
बुझि ना—समझती नहीं।

मुहूर्तपरेइ येन संशोधन करिया कहिल, "सेलाम बाबुसाहेब !" एइ मुसलमान-अभिवादनेर द्वारा से येन जीर्णभित्ति धूलिशायी भग्न ब्रह्मण्येर निकट शेष विदाय ग्रहण करिल। आमि कोनो कथा ना वलितेइ से सेइ हिमाद्रिशिखरेर धूसर कुज्झटिकाराशिर मध्ये मेघेर मतो मिलाइया गेल।

आमि क्षणकाल चक्षु मुद्रित करिया समस्त घटनावली मानस-पटे चित्रित देखिते लागिलाम। मछलन्देर आसने यमुनातीरेर गवाक्षे सुखासीना षोडशी नवाववालिकाके देखिलाम, तीर्थमन्दिरे सन्ध्यारतिकाले तपस्विनीर भक्तिगदगद एकाग्र मूर्ति देखिलाम, ताहार परे एइ दार्जिलिङे क्यालकाटा रोडेर प्रान्ते प्रवीणार कुहेलिकाच्छन्न भग्नहृदयभारकातर नैराश्यमूर्तिओ देखिलाम—एकटि सुकुमार रमणीदेहे ब्राह्मणमुसलमानेर रक्ततरङ्गेर विपरीत संघर्षजनित विचित्र व्याकुल संगीतध्वनि सुन्दर सुसम्पूर्ण उर्दूभाषाय विगलित हइया आमार मस्तिष्केर मध्ये स्पन्दित हइते लागिल।

चक्षु खुलिया देखिलाम, हठात् मेघ काटिया गिया स्निग्ध रौद्रे निर्मल आकाश झलमल करितेछे, ठेलागाड़िते इंराज रमणी ओ अश्वपृष्ठे इंराज पुरुषगण वायुसेवने बाहिर हइयाछे, मध्ये मध्ये दुइ-एकटि वाङालिर गलावन्धविजड़ित मुखमण्डल हइते आमार प्रति सकौतुक कटाक्ष वर्षित हइतेछे।

द्रुत उठिया पड़िलाम, एइ सूर्यालोकित अनावृत जगत्दृश्येर मध्ये सेइ मेघाच्छन्न काहिनीके आर सत्य वलिया मने हइल ना। आमार विश्वास आमि पर्वतेर कुयाशार सहित आमार सिगारेटेर धूम भूरिपरिमाणे मिश्रित करिया एकटि कल्पनाखण्ड रचना करियाछिलाम—सेइ मुसलमानब्राह्मणी, सेइ विप्रवीर, सेइ यमुनातीरेर केल्ला किछुइ हयतो सत्य नहे।

अप्रैल-मई, १८९८

मिलाइया गेल—विलीन हो गई। मछलन्देर—कालीन के। गवाक्षे—खिड़की में। खुलिया—खोल कर। मेघ काटिया गिया—बादल छँट कर। कुयाशार—कुहासे के।

दृष्टिदान

शुनियाछि, आजकाल अनेक बाङालिर मेयेके निजेर चेष्टाय स्वामी संग्रह करिते हय। आमिओ ताइ करियाछि किन्तु देवतार सहायताय। आमि छेलेबेला हइते अनेक व्रत एवं अनेक शिवपूजा करियाछिलाम।

आमार आट वत्सर वयस उत्तीर्ण ना हइतेइ विवाह हइया गियाछिल। किन्तु पूर्वजन्मेर पाप-वशत आमि आमार एमन स्वामी पाइयाओ सम्पूर्ण पाइलाम ना। मा त्रिनयनी आमार दुइचक्षु लइलेन। जीवनेर शेषमुहूर्त पर्यन्त स्वामीके देखिया लइबार सुख दिलेन ना।

बाल्यकाल हइतेइ आमार अग्निपरीक्षार आरम्भ हय। चोद्द वत्सर पार ना हइतेइ आमि एकटि मृतशिशु जन्म दिलाम, निजेओ मरिबार काछाकाछि गियाछिलाम; किन्तु याहाके दुःखभोग करिते हइबे से मरिले चलिबे केन। ये दीप ज्वलिबार जन्य हइयाछे ताहार तेल अल्प हय ना; रात्रिभोर ज्वलिया तबे ताहार निर्वाण।

बाँचिलाम बटे किन्तु शरीरेर दुर्बलताय, मनेर खेदे, अथवा ये कारणेइ हउक, आमार चोखेर पीड़ा हइल।

आमार स्वामी तखन डाक्तारि पड़ितेछिलेन। नूतन विद्या-शिक्षार उत्साह-वशत चिकित्सा करिबार सुयोग पाइले तिनि खुशि हइया उठितेन। तिनि निजेइ आमार चिकित्सा आरम्भ करिलेन।

छेलेबेला हइते—बचपन से।
आट—आठ। **मा त्रिनयनी**—दुर्गा, काली।
चोद्द—चौदह। **काछाकाछि**—निकट। **मरिले चलिबे केन**—मरने से कैसे (काम) चलेगा। **रात्रिभोर**—रातभर।
बाँचिलाम बटे—बच तो गई।

दादा से बछर बि-एल दिबेन बलिया कालेजे पड़ितेछिलेन। तिनि एकदिन आसिया आमार स्वामीके कहिलेन, "करितेछ की। कुमुर चोख दुटो ये नष्ट करिते बसियाछ। एकजन भालो डाक्तार देखाओ।"

आमार स्वामी कहिलेन, "भालो डाक्तार आसिया आर नूतन चिकित्सा की करिबे। ओषुधपत्र तो सब जानाइ आछे।"

दादा किछु रागिया कहिलेन, "तबे तो तोमार सङ्गे तोमादेर कलेजेर बड़ोसाहेबेर कोनो प्रभेद नाइ।"

स्वामी बलिलेन, "आइन पड़ितेछ डाक्तारिर तुमि की बोझ। तुमि यखन विवाह करिबे तखन तोमार स्त्रीर सम्पत्ति लइया यदि कखनओ मकद्दमा बाधे तुमि कि आमार परामर्शमतो चलिबे।"

आमि मने मने भाबितेछिलाम, राजाय राजाय युद्ध हइले उलुखड़ेरइ विपद सबचेये बेशि। स्वामीर सङ्गे विवाद बाधिल दादार, किन्तु दुइपक्ष हइते बाजितेछे आमाकेइ। आबार भाबिलाम, दादारा यखन आमाके दानइ करियाछेन तखन आमार सम्बन्धे कर्तव्य लइया ए-समस्त भागाभागि केन। आमार सुख-दुःख, आमार रोग ओ आरोग्य, से तो समस्तइ आमार स्वामीर।

सेदिन आमार एइ एक सामान्य चोखेर चिकित्सा लइया दादार सङ्गे आमार स्वामीर येन एकटु मनान्तर हइया गेल। सहजेइ आमार चोख दिया जल पड़ितेछिल, आमार जलेर धारा आरओ बाड़िया उठिल; ताहार प्रकृत कारण आमार स्वामी किम्बा दादा केहइ तखन बुझिलेन ना।

बि-एल दिबेन—बी. एल. (की परीक्षा) देंगे। करिते बसियाछ—करने चले हो।

की बोझ—क्या समझो। मकद्दमा बाधे—मुकदमा चले।

भाबितेछिलाम—सोच रही थी। उलुखड़—काँस की तरह की घास विशेष। सबचेये बेशि—सबसे ज्यादा। राजाय...बेशि—(कहा०—जोगी-जोगी लड़ें खप्परों की हानि)। बाजितेछे—तकलीफ होती है, भुगतना पड़ता है। भागाभागि—बँटवारा।

आमार स्वामी कालेजे गेले विकालवेलाय हठात् दादा एक डाक्तार लइया आसिया उपस्थित। डाक्तार परीक्षा करिया कहिल, सावधाने ना थाकिले पीड़ा गुरुतर हइबार सम्भावना आछे। एइ बलिया की-समस्त ओषुध लिखिया दिल, दादा तखनइ ताहा आनाइते पाठाइलेन।

डाक्तार चलिया गेले आमि दादाके बलिलाम, "दादा, आपनार पाये पड़ि, आमार ये चिकित्सा चलितेछे ताहाते कोनोरूप व्याघात घटाइबेन ना।"

आमि शिशुकाल हइते दादाके खुब भय करिताम, ताँहाके ये मुख फुटिया एमन करिया किछु बलिते पारिब इहा आमार पक्षे एक आश्चर्य घटना। किन्तु आमि बेश बुझियाछिलाम, आमार स्वामीके लुकाइया दादा आमार ये चिकित्सार व्यवस्था करितेछेन ताहाते आमार अशुभ वइ शुभ नाइ।

दादाओ आमार प्रगल्भताय बोध करि किछु आश्चर्य हइलेन। किछुक्षण चुप करिया भाबिया अवशेषे बलिलेन, "आच्छा, आमि आर डाक्तार आनिब ना, किन्तु ये ओषुधटा आसिवे ताहा विधिमते सेवन करिया देखिस।" ओषुध आसिले पर आमाके ताहा व्यवहारेर नियम बुझाइया दिया दादा चलिया गेलेन। स्वामी कालेज हइते आसिबार पूर्वेइ आमि से कौटा शिशि तुलि एवं विधिविधान समस्तइ सयत्ने आमादेर प्राङ्गणेर पातकुयार मध्ये फेलिया दिलाम।

दादार सङ्गे किछु आड़ि करियाइ आमार स्वामी येन आरओ द्विगुण चेष्टाय आमार चोखेर चिकित्साय प्रवृत्त हइलेन। ए

विकालवेलाय—अपराह्न में। ना थाकिले—न रहने से। आनाइते—लाने को।

घटाइबेन ना—मत डालिए।

मुख फुटिया—मुंह खोल कर, वाचाल हो कर। वइ—छोड़।

देखिस—देखना। बुझाइया दिया—समझा कर। कौटा—डिब्बा। तुलि—रुई। पातकुयार मध्ये—छोटे कुंए में।

आड़ि—खुट्टी, अनबन।

वेला ओ वेला ओषुध बदल हइते लागिल। चोखे ठुलि परिलाम, चशमा परिलाम, चोखे फोँटा फोँटा करिया ओषुध ढालिलाम, गुँड़ा लागाइलाम, दुर्गन्ध माछेर तेल खाइया भितरकार पाकयन्त्रसुद्ध यखन वाहिर हइवार उद्यम करित ताहाओ दमन करिया रहिलाम। स्वामी जिज्ञासा करितेन, केमन वोध हइतेछे। आमि वलिताम, अनेकटा भालो। आमि मने करितेओ चेष्टा करिताम ये, भालोइ हइतेछे। यखन वेशि जल पड़िते थाकित तखन भाविताम, जल काटिया याओयाइ भालो लक्षण; यखन जल पड़ा बन्ध हइत तखन भाविताम, एइ तो आरोग्येर पथे दाँड़ाइयाछि।

किन्तु किछुकाल परे यन्त्रणा असह्य हइया उठिल। चोखे झापसा देखिते लागिलाम एवं माथार वेदनाय आमाके स्थिर थाकिते दिल ना। देखिलाम, आमार स्वामीओ येन किछु अप्रतिभ हइयाछेन। एतदिन परे की छुता करिया ये डाक्तार डाकिवेन, भाविया पाइतेछेन ना

आमि ताँहाके वलिलाम, "दादार मन रक्षार जन्य एकबार एकजन डाक्तार डाकिते दोष की। एइ लइया तिनि अनर्थक राग करितेछेन, इहाते आमार मने कष्ट हय। चिकित्सा तो तुमिइ करिवे, डाक्तार एकजन उपसर्ग थाका भालो।"

स्वामी कहिलेन, "ठिक वलियाछ।" एइ बलिया सेइदिनइ एक इंराज डाक्तार लइया हाजिर करिलेन। की कथा हइल जानि ना किन्तु मने हइल, येन साहेब आमार स्वामीके किछु भर्त्सना करिलेन; तिनि नतशिरे निरुत्तरे दाँड़ाइया रहिलेन।

डाक्तार चलिया गेले आमि आमार स्वामीर हात धरिया

ठुलि—ढकनी। फोँटा फोँटा करिया—बूँद-बूँद करं। गुँड़ा—बुकनी, पाउडर। पाकयन्त्रसुद्ध—आँतें तक। काटिया याओयाइ—निकल जाना, बह जाना।
झापसा—धुंधला। छुता करिया—बहाने से।
मन रक्षार जन्य—मन रखने के लिए।

बलिलाम, "कोथा हइते एकटा गोँयार गोरा-गर्दभ धरिया आनियाछ, एकजन देशी डाक्तार आनिलेइ हइत। आमार चोखेर रोग ओ कि तोमार चेये भालो बुझिबे।"

स्वामी किछु कुण्ठित हइया वलिलेन, "चोखे अस्त्र करा आवश्यक हइयाछे।"

आमि एकटु रागेर भान करिया कहिलाम, "अस्त्र करिते हइबे, से तो तुमि जानिते किन्तु प्रथम हइतेइ से कथा आमार काछे गोपन करिया गेछ। तुमि कि मने कर, आमि भय करि।"

स्वामीर लज्जा दूर हइल; तिनि वलिलेन, "चोखे अस्त्र करिते हइबे शुनिले भय ना करे पुरुषेर मध्ये एमन वीर कयजन आछे।"

आमि ठाट्टा करिया वलिलाम, "पुरुषेर वीरत्व केवल स्त्रीर काछे।"

स्वामी तत्क्षणात् म्लानगम्भीर हइया कहिलेन, "से कथा ठिक। पुरुषेर केवल अहंकार सार।"

आमि ताँहार गाम्भीर्य उड़ाइया दिया कहिलाम, "अहंकारेओ बुझि तोमरा मेयेदेर सङ्गे पार? ताहातेओ आमादेर जित।"

इतिमध्ये दादा आसिले आमि दादाके विरले डाकिया बलिलाम, "दादा, आपनार सेइ डाक्तारेर व्यवस्थामत चलिया एतदिन आमार चोख वेश भालोइ हइतेछिल, एकदिन भ्रमक्रमे खाइबार ओषुधटा चक्षे लेपन करिया ताहार पर हइते चोख याय-याय हइया उठियाछे। आमार स्वामी बलितेछेन चोखे अस्त्र करिते हइबे।"

दादा वलिलेन, "आमि भावितेछिलाम, तोर स्वामीर चिकित्साइ चलितेछे, ताइ आरओ आमि राग करिया एतदिन आसि नाइ।"

गोँयार—गँवार। **ओ कि तोमार चेये**—वह क्या तुम्हारी अपेक्षा।
अस्त्र करा—चीर-फाड़, ऑपरेशन कराना। **मने कर**—सोचते हो।
पार—बराबरी कर सकते हो।
विरले—एकान्त में। **याय-याय हइया उठियाछे**—लगता है अब गई, अब गई।

आमि बलिलाम, "ना, आमि गोपने सेइ डाक्तारेर व्यवस्था-मतइ चलितेछिलाम, स्वामीके जानाइ नाइ, पाछे तिनि राग करेन।"

स्त्रीजन्म ग्रहण करिले एत मिथ्याओ बलिते हय! दादार मनेओ कष्ट दिते पारि ना, स्वामीर यशओ क्षुण्ण करा चले ना। मा हइया कोलेर शिशुके भुलाइते हय, स्त्री हइया शिशुर बापके भुलाइते हय—मेयेदेर एत छलनार प्रयोजन।

छलनार फल हल एइ ये, अन्ध हइबार पूर्वे आमार दादा एवं स्वामीर मिलन देखिते पाइलाम। दादा भाबिलेन, गोपन चिकित्सा करिते गिया एइ दुर्घटना घटिल; स्वामी भाबिलेन, गोड़ाय आमार दादार परामर्श शुनिलेइ भालो हइत। एइ भाबिया दुइ अनुतप्त हृदय भितरे भितरे क्षमाप्रार्थी हइया परस्परेर अत्यन्त निकटवर्ती हइल। स्वामी दादार परामर्श लइते लागिलेन, दादाओ विनीतभावे सकल विषये आमार स्वामीर मतेर प्रतिइ निर्भर प्रकाश करिलेन।

अवशेषे उभयेर परामर्शक्रमे एकदिन एकजन इंराज डाक्तार आसिया आमार वाम चोखे अस्त्राघात करिल। दुर्बल चक्षु से आघात काटाइया उठिते पारिल ना, ताहार क्षीण दीप्तिटुकु हठात् निबिया गेल। ताहार परे बाकि चोखटाओ दिने दिने अल्पे अल्पे अन्धकारे आवृत हइया गेल। बाल्यकाले शुभदृष्टिर दिने ये चन्दनचर्चित तरुणमूर्ति आमार सम्मुखे प्रथम प्रकाशित हइयाछिल ताहार उपरे चिरकालेर मतो पर्दा पड़िया गेल।

एकदिन स्वामी आमार शय्यापार्श्वे आसिया कहिलेन, "तोमार काछे आर मिथ्या बड़ाइ करिब ना, तोमार चोखदुटि आमिइ नष्ट करियाछि।"

कोलेर—गोद के।
गोड़ाय—शुरू में ही।
आघात...पारिल ना—(ऑपरेशन) के आघात को झेल न सकी। **निबिया गेल**—बुझ गई, जाती रही। **शुभदृष्टिर**—विवाह के समय वर-कन्या का परस्पर दर्शन। **बड़ाइ...ना**—डींग नहीं हांकूंगा।

देखिलाम, ताँहार कण्ठस्वरे अश्रुजल भरिया आसियाछे। आमि दुइ हाते ताँहार दक्षिणहस्त चापिया कहिलाम, "बेश करियाछ, तोमार जिनिस तुमि लइयाछ। भाबिया देखो देखि, यदि कोनो डाक्तारेर चिकित्साय आमार चोख नष्ट हइत ताहाते आमार की सान्त्वना थाकित। भवितव्यता यखन खण्डे ना तखन चोख तो आमार केहइ बाँचाइते पारित ना, से चोख तोमार हाते गियाछे एइ आमार अन्धतार एकमात्र सुख। यखन पूजाय फुल कम पड़ियाछिल तखन रामचन्द्र ताँहार दुइ चक्षु उत्पाटन करिया देवताके दिते गियाछिलेन। आमार देवताके आमार दृष्टि दिलाम—आमार पूर्णिमार ज्योत्स्ना, आमार प्रभातेर आलो, आमार आकाशेर नील, आमार पृथिवीर सबुज सब तोमाके दिलाम ; तोमार चोखे यखन याहा भालो लागिबे आमाके मुखे बलियो, से आमि तोमार चोखेर देखार प्रसाद बलिया ग्रहण करिब।"

आमि एत कथा बलिते पारि नाइ, मुखे एमन करिया बलाओ याय ना ; ए-सब कथा आमि अनेकदिन धरिया भाबियाछि। माझे माझे यखन अवसाद आसित, निष्ठार तेज म्लान हइया पड़ित, निजेके व्रञ्चित दुःखित दुर्भाग्यदग्ध बलिया मने हइत, तखन आमि निजेर मनके दिया एइ-सब कथा बलाइया लइताम ; एइ शान्ति, एइ भक्तिके अवलम्बन करिया निजेर दुःखेर चेयेओ निजेके उच्च करिया तुलिते चेष्टा करिताम। से दिन कतकटा कथाय कतकटा नीरवे बोध करि आमार मनेर भावटा ताँहाके एकरकम करिया बुझाइते पारियाछिलाम। तिनि कहिलेन, "कुमु, मूढ़ता करिया तोमार या नष्ट करियाछि से आर फिराइया दिते पारिब ना, किन्तु आमार यतदूर साध्य तोमार चोखेर अभाव मोचन करिया तोमार सङ्गे सङ्गे थाकिब।"

चापिया—दबा कर। **जिनिस**—चीज़। **भाबिया...देखि**—सोचो तो सही। **खण्डे ना**—टूटती, टलती नहीं।

आमि कहिलाम, "से कोनो काजेर कथा नय। तुमि ये तोमार घरकन्नाके एकटि अन्धेर हाँसपाताल करिया राखिवे, से आमि किछुतेइ हइते दिव ना। तोमाके आर-एकटि विवाह करितेइ हइवे।"

की जन्य ये विवाह करा नितान्त आवश्यक ताहा सविस्तारे वलिवार पूर्वे आमार एकटुखानि कण्ठरोध हइवार उपक्रम हइल। एकटु काशिया, एकटु सामलाइया लइया वलिते याइतेछि, एमन-समय आमार स्वामी उच्छ्वसित आवेगे वलिया उठिलेन, "आमि मूढ़, आमि अहंकारी, किन्तु ताइ वलिया आमि पाषण्ड नइ। निजेर हाते तोमाके अन्ध करियाछि, अवशेषे सेइ दोषे तोमाके परित्याग करिया यदि अन्य स्त्री ग्रहण करि तवे आमादेर इष्टदेव गोपीनाथेर शपथ करिया वलितेछि, आमि येन ब्रह्महत्या-पितृ-हत्यार पातकी हइ।"

एतवड़ो शपथटा करिते दिताम ना, वाधा दिताम, किन्तु अश्रु तखन वुक वाहिया, कण्ठ चापिया, दुइ चक्षु छापिया, झरिया पड़िवार जो करितेछिल; ताहाके सम्वरण करिया कथा वलिते पारितेछिलाम ना। तिनि याहा वलिलेन ताहा शुनिया विपुल आनन्देर उद्वेगे वालिशेर मध्ये मुख चापिया काँदिया उठिलाम। आमि अन्ध, तवु तिनि आमाके छाड़िवेन ना। दुःखीर दुःखेर मतो आमाके हृदये करिया राखिवेन। एत सौभाग्य आमि चाइ ना, किन्तु मन तो स्वार्थपर।

अवशेषे अश्रुर प्रथम पशलाटा सवेगे वर्षण हइया गेले ताँहार मुख आमार वुकेर काछे टानिया लइया वलिलाम, "एमन भयंकर

घरकन्नाके—घर-गृहस्थी को। एकटुखानि—जरा-सा। काशिया—खाँस कर। सामलाइया लइया—सँभाल कर। पाषण्ड नइ—पाखण्डी नहीं हूँ।

वुक वाहिया—हृदय में उमड़ कर। छापिया—प्लावित कर। जो करितेछिल—उपक्रम, उपाय कर रहे थे। वालिशेर मध्ये—तकिये में। मुख चापिया—मुँह गड़ा कर। काँदिया उठिलाम—रो पड़ी। चाइ ना—नहीं चाहती।

पशलाटा—रेला, बौछार। काछे....लइया—निकट खींच कर।

शपथ केन करिले। आमि कि तोमाके निजेर सुखेर जन्य विवाह करिते बलियाछिलाम। सतिनके दिया आमि आमार स्वार्थ साधन करिताम। चोखेर अभावे तोमार ये काज निजे करिते पारिताम ना से आमि ताहाके दिया कराइताम!"

स्वामी कहिलेन, "काज तो दासीतेओ करे। आमि कि काजेर सुविधार जन्य एकटा दासी विवाह करिया आमार एइ देवीर सङ्गे एकासने बसाइते पारि।" बलिया आमार मुख तुलिया धरिया आमार ललाटे एकटि निर्मल चुम्बन करिलेन; सेइ चुम्बनेर द्वारा आमार येन तृतीय नेत्र उन्मीलित हइल, सेइक्षणे आमार देवीत्वे अभिषेक हइया गेल। आमि मने-मने कहिलाम, सेइ भालो। यखन अन्ध हइयाछि तखन आमि एइ बहिःसंसारेर आर गृहिणी हइते पारि ना, एखन आमि संसारेर उपरे उठिया देवी हइया स्वामीर मङ्गल करिब। आर मिथ्या नय, छलना नय, गृहिणी रमणीर यत-किछु क्षुद्रता एवं कपटता आछे समस्त दूर करिया दिलाम।

सेदिन समस्त दिन निजेर सङ्गे एकटा विरोध चलिते लागिल। गुरुतर शपथे बाध्य हइया स्वामी ये कोनोमतेइ द्वितीयबार विवाह करिते पारिबेन ना, एइ आनन्द मनेर मध्ये येन एकेबारे दंशन करिया रहिल; किछुतेइ ताहाके छाड़ाइते पारिलाम ना। अद्य आमार मध्ये ये नूतन देवीर आविर्भाव हइयाछे तिनि कहिलेन, हयतो एमन दिन आसिते पारे यखन एइ शपथ-पालन अपेक्षा विवाह करिले तोमार स्वामीर मङ्गल हइबे। किन्तु आमार मध्ये ये पुरातन नारी छिल से कहिल, ता हउक, किन्तु तिनि यखन शपथ करियाछेन तखन तो आर विवाह करिते पारिबेन

सतीनके दिया—सौत के द्वारा।

दासीतेओ—दासी भी। **मुख तुलिया**—मुँह उठा कर। **उपरे उठिया**—ऊपर उठ कर।

कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। **छाड़ाइते पारिलाम ना**—छुड़ा न सकी। **एमन दिन**—ऐसा दिन।

ना। देवी कहिलेन, ता हउक, किन्तु इहाते तोमार खुशि हइवार कोनो कारण नाइ। मानवी कहिल, सकलइ वुझि, किन्तु यखन तिनि शपथ करियाछेन तखन, इत्यादि। वार वार सेइ एक कथा। देवी तखन केवल निरुत्तरे भ्रूकुटि करिलेन एवं एकटा भयंकर आशंकार अन्धकारे आमार समस्त अन्तःकरण आच्छन्न हइया गेल।

आमार अनुतप्त स्वामी चाकरदासीके निषेध करिया निजे आमार सकल काज करिया दिते उद्यत हइलेन। स्वामीर उपर तुच्छ विषयेओ एइरूप निरुपाय निर्भर प्रथमटा भालोइ लागित। कारण, एमनि करिया सर्वदाइ ताँहाके काछे पाइताम। चोखे ताँहाके देखिताम ना वलिया ताँहाके सर्वदा काछे पाइवार आकांक्षा अत्यन्त वाड़िया उठिल। स्वामीसुखेर ये अंश आमार चोखेर भागे पड़ियाछिल सेइटे एखन अन्य इन्द्रियेरा वाँटिया लइया निजेदेर भाग वाड़ाइया लइवार चेष्टा करिल। एखन आमार स्वामी अधिकक्षण वाहिरेर काजे थाकिले मने हइत, आमि येन शून्ये रहियाछि, आमि येन कोथाओ किछु धरिते पारितेछि ना, आमार येन सव हाराइल। पूर्वे स्वामी यखन कालेजे याइतेन तखन विलम्व हइले पथेर दिकेर जानाला एकटुखानि फाँक करिया पथ चाहिया थाकिताम। ये जगते तिनि वेड़ाइतेन से जगत्टाके आमि चोखेर द्वारा निजेर सङ्गे वाँधिया राखियाछिलाम। आज आमार दृष्टिहीन समस्त शरीर ताँहाके अन्वेषण करिते चेष्टा करे। ताँहार पृथिवीर सहित आमार पृथिवी ये प्रधान साँको छिल सेटा आज भाङ्गिया गेछे। एखन ताँहार एवं आमार माझखाने एकटा दुस्तर अन्धता; एखन आमाके केवल निरुपाय

सकलइ वुझि—सव कुछ समझती हूँ। **भ्रूकुटि करिलेन**—भौंहें तानीं।
काछे—निकट। **वाड़िया उठिल**—वढ़ गई। **सेइटे**—उसी को। **वाड़ाइया लइवार**—वढ़ा लेने की। **धरिते पारितेछि ना**—पकड़ नहीं पा रही हूँ। **हाराइल**—खो गया हो। **पथ चाहिया थाकिताम**—रास्ता देखती रहती। **साँको**—पुल।

व्यग्रभावे वसिया थाकिते हय, कखन तिनि ताँहार पार हइते आमार पारे आपनि आसिया उपस्थित हइवेन। सेइजन्य एखन, यखन क्षणकालेर जन्यओ तिनि आमाके छाड़िया चलिया यान तखन आमार समस्त अन्ध देह उद्यत हइया ताँहाके धरिते याय, हाहाकार करिया ताँहाके डाके।

किन्तु एत आकांक्षा, एत निर्भर तो भालो नय। एके तो स्वामीर उपरे स्त्रीर भारइ यथेष्ट, ताहार उपरे आवार अन्धतार प्रकाण्ड भार चापाइते पारि ना। आमार एइ विश्वजोड़ा अन्धकार, ए आमिइ वहन करिव। आमि एकाग्रमने प्रतिज्ञा करिलाम, आमार एइ अनन्त अन्धता द्वारा स्वामीके आमि आमार सङ्गे बाँधिया राखिव ना।

अल्पकालेर मध्येइ केवल शब्द-गन्ध-स्पर्शेर द्वारा आमि आमार समस्त अभ्यस्त कर्म सम्पन्न करिते शिखिलाम। एमन-कि आमार अनेक गृहकर्म पूर्वेर चेये अनेक वेशि नैपुण्येर सहित निर्वाह करिते पारिलाम। एखन मने हइते लागिल, दृष्टि आमादेर काजेर यतटा साहाय्य करे ताहार चेये ढेर वेशि विक्षिप्त करिया देय। यतटुकु देखिले काज भालो हय चोख ताहार चेये ढेर वेशि देखे। एवं चोख यखन पाहारार काज करे कान तखन अलस हइया याय, यतटा ताहार शोना उचित ताहार चेये से कम शोने। एखन चञ्चल चोखेर अवर्तमाने आमार अन्य समस्त इन्द्रिय ताहादेर कर्तव्य शान्त एवं सम्पूर्णभावे करिते लागिल।

एखन आमार स्वामीके आर आमार कोनो काज करिते दिलाम ना, एवं ताँहार समस्त काज आवार पूर्वेर मतो आमिइ करिते लागिलाम।

एके तो—एक तो। **भार चापाइते पारि ना**—बोझ नहीं लाद सकती। **विश्वजोड़ा**—विश्वव्यापी।

चेये—अपेक्षा। **पाहारार**—पहरा देने का। **किसेर**—कैसा।

स्वामी आमाके कहिलेन, "आमार प्रायश्चित्त हइते आमाके वञ्चित करितेछ।"

आमि कहिलाम, "तोमार प्रायश्चित्त किसेर आमि जानि ना, किन्तु आमार पापेर भार आमि वाड़ाइव केन।"

याहाइ वलुन, आमि यखन ताँहाके मुक्ति दिलाम तखन तिनि निश्वास फेलिया वाँचिलेन। अन्ध स्त्रीर सेवाके चिरजीवनेर व्रत करा पुरुषेर कर्म नहे।

आमार स्वामी डाक्तारि पास करिया आमाके सङ्गे लइया मफस्वले गेलेन।

पाड़ागाँये आसिया येन मातृक्रोड़े आसिलाम मने हइल। आमार आट वत्सर वयसेर समय आमि ग्राम छाड़िया शहरे आसियाछिलाम। इतिमध्ये दश वत्सरे जन्मभूमि आमार मनेर मध्ये छायार मतो अस्पष्ट हइया आसियाछिल। यतदिन चक्षु छिल कलिकाता शहर आमार चारि दिके आर-समस्त स्मृतिके आड़ाल करिया दाँड़ाइयाछिल। चोख याइतेइ वुझिलाम, कलिकाता केवल चोख भुलाइया राखिवार शहर, इहाते मन भरिया राखे ना। दृष्टि हाराइवामात्र आमार सेइ वाल्यकालेर पल्लिग्राम दिवावसाने नक्षत्रलोकेर मतो आमार मनेर मध्ये उज्ज्वल हइया उठिल।

अग्रहायणेर शेपाशेषि आमरा हासिमपुरे गेलाम। नूतन देश, चारि दिक देखिते किरकम ताहा वुझिलाम ना, किन्तु वाल्यकालेर सेइ गन्धे एवं अनुभावे आमाके सर्वाङ्गे वेष्टन करिया धरिल। सेइ शिशिरे-भेजा नूतन चषा खेत हइते प्रभातेर हाओया

याहाइ वलुन—जो भी कहिए। **निश्वास...वाँचिलेन**—राहत की साँस ली।

मफस्वले—मुफस्सिल में।

पाड़ागाँये—गँवई-गाँव में। **इतिमध्ये**—इस वीच। **आड़ाल**—ओट। **चोख भुलाइया राखिवार शहर**—आँखों (दृष्टि) को भ्रम में डाल देने वाला शहर है। **इहाते...राखे ना**—यह मन को भरता नहीं।

किरकम—कैसा। **शिशिरे-भेजा**—ओस से भीगे हुए। **चषा खेत**—जुते हुए खेत।

सेइ सोना-ढाला अड़र एवं सरिषा खेतेर आकाश-भरा कोमल सुमिष्ट गन्ध, सेइ राखालेर गान, एमनकि, भाङा रास्ता दिया गोरुर गाड़ि चलार शब्द पर्यन्त आमाके पुलकित करिया तुलिल। आमार सेइ जीवनारम्भेर अतीत स्मृति ताहार अनिर्वचनीय ध्वनि ओ गन्ध लइया प्रत्यक्ष वर्तमानेर मतो आमाके घिरिया वसिल; अन्ध चक्षु ताहार कोनो प्रतिवाद करिते पारिल ना। सेइ वाल्यकालेर मध्ये फिरिया गेलाम, केवल माके पाइलाम ना। मने-मने देखिते पाइलाम, दिदिमा ताँहार विरल केशगुच्छ मुक्त करिया रौद्रे पिठ दिया प्राङ्गणे वड़ि दितेछेन, किन्तु ताँहार सेइ मृदुकम्पित प्राचीन दुर्बल कण्ठे आमादेर ग्राम्य साधु भजनदासेर देहतत्त्वगान गुञ्जनस्वरे शुनिते पाइलाम ना; सेइ नवान्नेर उत्सव शीतेर शिशिरस्नात आकाशेर मध्ये सजीव हइया जागिया उठिल, किन्तु ढेँकिशाले नूतन धान कुटिबार जनतार मध्ये आमार छोटो छोटो पल्लिसङ्गिनीदेर समागम कोथाय गेल! सन्ध्यावेला अदूरे कोथा हइते हाम्बाध्वनि शुनिते पाइ, तखन मने पड़े, मा सन्ध्यादीप हाते करिया गोयाले आलो देखाइते याइतेछेन; सेइ-सङ्गे भिजा जाबनार ओ खड़-ज्वालानो धोँयार गन्ध येन हृदयेर मध्ये प्रवेश करे एवं शुनिते पाइ, पुकुरेर पाड़े विद्यालंकारदेर ठाकुरबाड़ि हइते काँसरघण्टार शब्द आसितेछे। के येन आमार सेइ शिशुकालेर आटटि वत्सरेर मध्य हइते ताहार समस्त वस्तु-अंश छाँकिया लइया केवल ताहार रसटुकु गन्धटुकु आमार चारिदिके राशीकृत करियाछे।

एइसङ्गे आमार सेइ छेलेवेलाकार व्रत एवं भोरवेलाय फुल

सोना-ढाला अड़र—सोने में ढली अरहर। **सरिषा खेतेर**—सरसों के खेत की। राखालेर—ग्वालों के। **भाङा**—टूटे हुए। **दिदिमा**—नानी। **रौद्रे**—धूप में। **वड़ि दितेछेन**—वड़ियाँ तोड़ रही है। **ढेँकिशाले**—(धान कूटने की, पैरों से चलाई जाने वाली, छोटे आकार की ढेकली का स्थान)। **हाम्बाध्वनि**—रँभाने की ध्वनि। **गोयाले**—गोठ में। **जावनार**—चारा, सानी। **खड़-ज्वालानो**—जलाए हुए पुआल के। **पुकुरेर पाड़े**—पोखर के किनारे। **वस्तु-अंश**—सारांश। **छाँकिया लइया**—छान कर।

तुलिया शिवपूजार कथा मने पड़िल। ए कथा स्वीकार करितेइ हइबे, कलिकातार आलाप आलोचना आनागोनार गोलमाले बुद्धिर एकटु विकार घटेइ। धर्मकर्म-भक्तिश्रद्धार मध्ये निर्मल सरलता-टुकु थाके ना। सेदिनेर कथा आमार मने पड़े येदिन अन्ध हओयार परे कलिकाताय आमार पल्लिवासिनी एक सखी आसिया आमाके बलियाछिल, "तोर राग हय ना, कुमु ? आमि हइले एमन स्वामीर मुख देखिताम ना।" आमि बलिलाम, "भाइ, मुख देखा तो बन्धइ बटे, सेजन्ये ए पोड़ा चोखेर उपर राग हय, किन्तु स्वामीर उपर राग करिते याइब केन।" यथासमये डाक्तार डाकेन नाइ बलिया लावण्य आमार स्वामीर उपर अत्यन्त रागिया-छिल एवं आमाकेओ रागाइबार चेष्टा करियाछिल। आमि ताहाके बुझाइलाम, संसारे थाकिले इच्छाय अनिच्छाय ज्ञाने अज्ञाने भुले भ्रान्तिते दुःख सुख नानारकम घटिया थाके; किन्तु मनेर मध्ये यदि भक्ति स्थिर राखिते पारि तबे दुःखेर मध्येओ एकटा शान्ति थाके, नहिले केवल रागारागि रेषारेषि बकाबकि करियाइ जीवन काटिया याय। अन्ध हइयाछि एइ तो यथेष्ट दुःख, ताहार परे स्वामीर प्रति विद्वेष करिया दुःखेर बोझा बाड़ाइब केन। आमार मतो बालिकार मुखे सेकेले कथा शुनिया लावण्य राग करिया अवज्ञाभरे माथा नाड़िया चलिया गेल। किन्तु याइ बलि, कथार मध्ये विष आछे, कथा एकेबारे व्यर्थ हय ना। लावण्येर मुख हइते रागेर कथा आमार मनेर मध्ये दुटो-एकटा स्फुलिङ्ग फेलिया गियाछिल, आमि सेटा पा दिया माड़ाइया निबाइया दियाछिलाम, किन्तु तबु दुटो-एकटा दाग थाकियाछिल। ताइ बलितेछिलाम, कलिकाताय अनेक तर्क, अनेक कथा; सेखाने—देखिते देखिते बुद्धि अकाले पाकिया कठिन हइया उठे।

आनागोनार—आने-जाने के। **पोड़ा चोखेर**—जली (गाली के अर्थ में) आँखों के। **बलिया**—इसलिए। **नहिले**—अन्यथा। **रेषारेषि**—ईर्ष्या-द्वेष। **बकाबकि**—वकझक। **सेकेले**—पुराने ज़माने की। **पा दिया माड़ाइया**—पैरों से कुचल कर। **पाकिया**—पक कर।

पाड़ागाँये आसिया आमार सेइ शिवपूजार शीतल शिउलिफुलेर गन्धे हृदयेर समस्त आशा ओ विश्वास आमार सेइ शिशुकालेर मतोइ नवीन ओ उज्ज्वल हइया उठिल। देवताय आमार हृदय एवं आमार संसार परिपूर्ण हइया गेल। आमि नतशिरे लुटाइया पड़िलाम। बलिलाम, "हे देव, आमार चक्षु गेछे बेश हइयाछे, तुमि तो आमार आछ।"

हाय, भुल बलियाछिलाम। तुमि आमार आछ, ए कथाओ स्पर्धार कथा। आमि तोमार आछि, केवल एइटुकु बलिबारइ अधिकार आछे। ओगो, एकदिन कण्ठ चापिया आमार देवता एइ कथाटा आमाके बलाइया लइबे। किछुइ ना थाकिते पारे, किन्तु आमाके थाकितेइ हइबे। काहारओ उपरे कोनो जोर नाइ; केवल निजेर उपरेइ आछे।

किछुकाल बेश सुखे काटिल। डाक्तारिते आमार स्वामीरओ प्रतिपत्ति बाड़िते लागिल। हाते किछु टाकाओ जमिल।

किन्तु टाका जिनिसटा भालो नय। उहाते मन चापा पड़िया याय। मन यखन राजत्व करे तखन से आपनार सुख आपनि सृष्टि करिते पारे, किन्तु धन यखन सुखसञ्चयेर भार नेय तखन मनेर आर काज थाके ना। तखन, आगे येखाने मनेर सुख छिल, जिनिसपत्र आसबाब-आयोजन सेइ जायगाटुकु जुड़िया बसे। तखन सुखेर परिवर्ते केवल सामग्री पाओया याय।

कोनो विशेष कथा वा विशेष घटनार उल्लेख करिते पारि ना, किन्तु अन्धेर अनुभवशक्ति बेशि बलिया, किम्वा की कारण जानि ना, अवस्थार सच्छलतार सङ्गे सङ्गे आमार स्वामीर

शिउलिफुलेर—शेफाली के फूलों की। **लुटाइया पड़िलाम**—लोट गई। **चापिया**—दबा कर।

बेश—अच्छे। **प्रतिपत्ति**—प्रतिष्ठा। **टाकाओ जमिल**—रुपया-पैसा भी इकट्ठा हो गया।

जिनिसटा—चीज़। **चापा पड़िया याय**—दब जाता है। **जुड़िया बसे**—घेर लेते हैं। **सच्छलतार**—संपन्नता के।

परिवर्तन आमि वेश वुझिते पारिताम। यौवनारम्भे न्याय-अन्याय धर्म-अधर्म सम्बन्धे आमार स्वामीर ये-एकटि वेदनाबोध छिल सेटा येन प्रतिदिन असाड़ हइया आसितेछिल। मने आछे, तिनि एकदिन वलितेन, "डाक्तारि ये केवल जीविकार जन्य शिखितेछि ताहा नहे, इहाते अनेक गरिवेर उपकार करिते पारिव।" ये-सव डाक्तार दरिद्र मुमूर्षुर द्वारे आसिया आगाम भिजिट ना लइया नाड़ि देखिते चाय ना ताहादेर कथा वलिते गिया घृणाय ताँहार वाक्रोध हइत। आमि वुझिते पारि, एखन आर सेदिन नाइ। एकमात्र छेलेर प्राणरक्षार जन्य दरिद्र नारी ताँहार पा जड़ाइया धरियाछे, तिनि ताहा उपेक्षा करियाछेन; शेषे आमि माथार दिव्य दिया ताँहाके चिकित्साय पाठाइयाछि, किन्तु मनेर सङ्गे काज करेन नाइ। यखन आमादेर टाका अल्प छिल तखन अन्याय उपार्जनके आमार स्वामी की चक्षे देखितेन ताहा आमि जानि। किन्तु व्याङ्के एखन अनेक टाका जमियाछे, एखन एकजन धनी लोकेर आमला आसिया ताँहार सङ्गे गोपने दुइ दिन धरिया अनेक कथा वलिया गेल, की वलिल आमि किछुइ जानि ना, किन्तु ताहार परे यखन तिनि आमार काछे आसिलेन, अत्यन्त प्रफुल्लतार सङ्गे अन्य नाना विषये नाना कथा वलिलेन, तखन आमार अन्तःकरणेर स्पर्शशक्तिद्वारा वुझिलाम, तिनि आज कलंक माखिया आसियाछेन।

अन्ध हइवार पूर्वे आमि याँहाके शेषवार देखियाछिलाम आमार से स्वामी कोथाय! यिनि आमार दृष्टिहीन दुइचक्षुर माझखाने एकटि चुम्बन करिया आमाके एकदिन देवीपदे अभिषिक्त करियाछिलेन, आमि ताँहार की करिते पारिलाम। एकदिन

वेदनाबोध—अनुभूति। असाड़ हइया आसितेछिल—वह (बोधशक्तिहीन) शिथिल होती जा रही थी। आगाम—पेशगी। जड़ाइया धरियाछे—लिपट गई है। माथार दिव्य दिया—सिर की सौगन्ध दिला कर। की चक्षे—किस दृष्टि से। आमला—गुमाश्ता। कलंक माखिया आसियाछेन—कलंक (का टीका) लगा कर आए हैं।

एकटा रिपुर झड़ आसिया याहादेर अकस्मात् पतन हय ताहारा आर-एकटा हृदयावेगे आबार उपरे उठिते पारे, किन्तु एइ-ये दिने दिने पले पले मज्जार भितर हइते कठिन हइया याओया, बाहिरे बाड़िया उठिते उठिते अन्तरके तिले तिले चापिया फेला, इहार प्रतिकार भाबिते गेले कोनो रास्ता खुँजिया पाइ ना।

स्वामीर सङ्गे आमार चोखे-देखार ये विच्छेद घटियाछे से किछुइ नय; किन्तु प्राणेर भितरटा ये हाँपाइया उठे यखन मने करि, आमि येखाने तिनि सेखाने नाइ; आमि अन्ध, संसारेर आलोकवर्जित अन्तरप्रदेशे आमार सेइ प्रथम वयसेर नवीन प्रेम, अक्षुण्ण भक्ति, अखण्ड विश्वास लइया वसिया आछि—आमार देवमन्दिरे जीवनेर आरम्भे आमि बालिकार करपुटे ये शेफालिकार अर्घ्यदान करियाछिलाम ताहार शिशिर एखनओ शुकाय नाइ; आर, आमार स्वामी एइ छायाशीतल चिरनवीनतार देश छाड़िया टाका उपार्जनेर पश्चाते संसारमरुभूमिर मध्ये कोथाय अदृश्य हइया चलिया याइतेछेन! आमि याहा विश्वास करि, याहाके धर्म बलि, याहाके सकल सुखसम्पत्तिर अधिक बलिया जानि, तिनि अतिदूर हइते ताहार प्रति हासिया कटाक्षपात करेन। किन्तु एकदिन ए विच्छेद छिल ना, प्रथम वयसे आमरा एक पथेइ यात्रा आरम्भ करियाछिलाम; ताहार परे कखन ये पथेर भेद आरम्भ हइतेछिल ताहा तिनिओ जानिते पारेन नाइ, आमिओ जानिते पारि नाइ, अवशेषे आज आमि आर ताँहाके डाकिया साड़ा पाइ ना।

एक-एक समय भावि, हयतो अन्ध बलिया सामान्य कथाके आमि बेशि करिया देखि। चक्षु थाकिले आमि हयतो संसारके ठिक संसारेर मतो करिया चिनिते पारिताम।

रिपुर झड़—(षड्) रिपुओं की आँधी। **कठिन**—कठोर। **शिशिर**—ओस। **साड़ा पाइ ना**—प्रत्युत्तर नहीं मिलता। **बेशि करिया देखि**—बढ़ा-चढ़ा कर देखती हूँ।

आमार स्वामीओ आमाके एकदिन ताहाइ बुझाइया बलिलेन। सेदिन सकाले एकटि वृद्ध मुसलमान ताहार पौत्रीर ओलाउठार चिकित्सार जन्य ताँहाके डाकिते आसियाछिल। आमि शुनिते पाइलाम से कहिल, "बाबा, आमि गरिब, किन्तु आल्ला तोमार भालो करिबेन।" आमार स्वामी कहिलेन, "आल्ला याहा करिबेन केवल ताहातेइ आमार चलिबे ना, तुमि की करिबे सेटा आगे शुनि।" शुनिबामात्रइ भाविलाम, ईश्वर आमाके अन्ध करियाछेन, किन्तु बधिर करेन नाइ केन। वृद्ध गभीर दीर्घ-निश्वासेर सहित 'हे आल्ला' बलिया बिदाय हइया गेल। आमि तखनइ झिके दिया ताहाके अन्तःपुरेर खिड़कि-द्वारे डाकाइया आनिलाम; कहिलाम, "बाबा, तोमार नातनिर जन्य एइ डाक्तारेर खरचा किछु दिलाम, तुमि आमार स्वामीर मङ्गल प्रार्थना करिया पाड़ा हइते हरिश डाक्तारके डाकिया लइया याओ।"

किन्तु समस्त दिन आमार मुखे अन्न रुचिल ना। स्वामी अपराह्णे निद्रा हइते जागिया जिज्ञासा करिलेन, "तोमाके विमर्ष देखितेछि केन।" पूर्वकालेर अभ्यस्त उत्तर एकटा मुखे आसिते-छिल—'ना, किछुइ हय नाइ'; किन्तु छलनार काल गियाछे, आमि स्पष्ट करिया बलिलाम, "कतदिन तोमाके बलिब मने करि, किन्तु बलिते गिया भाविया पाइ ना, ठिक की बलिबार आछे। आमार अन्तरेर कथाटा आमि बुझाइया बलिते पारिब कि ना जानि ना, किन्तु निश्चय तुमि निजेर मनेर मध्ये बुझिते पार, आमरा दुजने येमनभावे एक हइया जीवन आरम्भ करियाछिलाम आज ताहा पृथक हइया गेछे।" स्वामी हासिया कहिलेन, "परिवर्तनइ तो संसारेर धर्म।" आमि कहिलाम, "टाकाकड़ि रूपयौवन सकलेरइ परिवर्तन हय, किन्तु नित्य जिनिस कि किछुइ नाइ।" तखन तिनि एकटु गम्भीर हइया कहिलेन, "देखो,

---

ओलाउठार—हैजे की। **झिके दिया**—महरी, दासी के द्वारा। **खिड़कि-द्वारे**—पिछले दरवाजे पर। **नातनि**—पौत्री।
भाविया पाइ ना— सोच नहीं पाती।

अन्य स्त्रीलोकेरा सत्यकार अभाव लइया दुःख करे—काहारओ स्वामी उपार्जन करे ना, काहारओ स्वामी भालोबासे ना ; तुमि आकाश हइते दुःख टानिया आन।" आमि तखनइ बुझिलाम, अन्धता आमार चोखे एक अञ्जन माखाइया आमाके एइ परिवर्तमान संसारेर बाहिरे लइया गेछे ; आमि अन्य स्त्रीलोकेर मतो नहि ; आमाके आमार स्वामी बुझिबेन ना।

इतिमध्ये आमार एक पिस्‌शाशुड़ि देश हइते ताँहार भ्रातुष्पुत्रेर सम्वाद लइते आसिलेन। आमरा उभये ताँहाके प्रणाम करिया उठितेइ तिनि प्रथम कथातेइ बलिलेन, "बलि बउमा, तुमि तो कपालक्रमे दुइटि चक्षु खोयाइया बसियाछ, एखन आमादेर अविनाश अन्ध स्त्रीके लइया घरकन्ना चालाइबे की करिया। उहार आर-एकटा बियेथाओया दिया दाओ!" स्वामी यदि ठाट्टा करिया बलितेन, 'ता बेश तो पिसिमा, तोमरा देखिया-शुनिया एकटा घटकालि करिया दाओ-ना' ताहा हइले समस्त परिष्कार हइया याइत। किन्तु तिनि कुण्ठित हइया कहिलेन, "आः पिसिमा, की बलितेछ।" पिसिमा उत्तर करिलेन, "केन, अन्याय की बलितेछि। आच्छा बउमा, तुमिइ बलो तो बाछा।" आमि हासिया कहिलाम, "पिसिमा, भालो लोकेर काछे परामर्श चाहितेछ। याहार गाँठ काटिते हइबे ताहार कि केह सम्मति नेय।" पिसिमा उत्तर करिलेन, "हाँ, से कथा ठिक बटे। ता, तोते आमाते गोपने परामर्श करिब, की बलिस, अविनाश। ताओ बलि, बउमा, कुलीनेर मेयेर सतिन यत बेशि हय, ताहार स्वामिगौरव ततइ बाडे। आमादेर छेले डाक्तारि ना करिया यदि विवाह करित, तबे उहार रोजगारेर भावना की छिल। रोगी

आकाश हइते—शून्य से, अकारण। **अञ्जन माखाइया**—अंजन आँज कर।

पिस्‌शाशुड़ी—फुफेरी सास। **बियेथाओया**—विवाह। **पिसिमा**—बूआजी। **घटकालि**—विवाह सम्बन्ध। **बाछा**—बच्ची, बेटी। **तोते आमाते**—तुझमें-मुझमें, तू और मैं। **सतिन**—सौतें। **भावना**—चिन्ता।

तो डाक्तारेर हाते पड़िलेइ मरे, मरिले तो आर भिजिट देय ना, किन्तु विधातार शापे कुलीनेर स्त्रीर मरण नाइ एवं से यतदिन बाँचे ततदिनइ स्वामीर लाभ।"

दुइदिन बादे आमार स्वामी आमार सम्मुखे पिसिमाके जिज्ञासा करिलेन, "पिसिमा, आत्मीयेर मतो करिया वधूर साहाय्य करिते पारे, एमन एकटि भद्रघरेर स्त्रीलोक देखिया दिते पार? उनि चोखे देखिते पान ना, सर्वदा ओँर एकटि सङ्गिनी केह थाकिले आमि निश्चिन्त थाकिते पारि।" यखन नूतन अन्ध हइयाछिलाम तखन ए कथा बलिले खाटित, किन्तु एखन चोखेर अभावे आमार किम्वा घरकन्नार विशेष की असुविधा हय जानि ना; किन्तु प्रतिवादमात्र ना करिया चुप करिया रहिलाम। पिसिमा कहिलेन, "अभाव की। आमारइ तो भासुरेर एक मेये आछे, येमन सुन्दरी तेमनि लक्ष्मी। मेयेटिर वयस हइल, केवल उपयुक्त वरेर प्रत्याशाय अपेक्षा करिया आछे; तोमार मतो कुलीन पाइले एखनइ विवाह दिया देय।" स्वामी चकित हइया कहिलेन, "विवाहेर कथा के बलितेछे।" पिसिमा कहिलेन, "ओमा, विवाह ना करिले भद्र घरेर मेये कि तोमार घरे अमनि आसिया पड़िया थाकिबे।" कथाटा संगत बटे एवं स्वामी ताहार कोनो सदुत्तर दिते पारिलेन ना।

आमार रुद्ध चक्षुर अनन्त अन्धकारेर मध्ये आमि एकला दाँड़ाइया ऊर्ध्वमुखे डाकिते लागिलाम, भगवान, आमार स्वामीके रक्षा करो।

ताहार दिनकयेक परे एकदिन सकालबेलाय आमार पूजा-आह्निक सारिया बाहिरे आसितेइ पिसिमा कहिलेन, "बउमा, ये भासुरझिर कथा बलियाछिलाम सेइ आमादेर हेमाङ्गिनी आज

ओँर—उनकी। खाटित—लागू होती। भासुरेर—जेठ की। वयस हइल—(विवाह लायक) उमर हो गई है। अपेक्षा—प्रतीक्षा। अमनि—ऐसे ही।

सारिया—समाप्त कर। भासुरझिर—जेठ की लड़की की।

देश हइते आसियाछे। हिमु, इनि तोमार दिदि, इँहाके प्रणाम करो।"

एमनसमय आमार स्वामी हठात् आसिया येन अपरिचित स्त्रीलोकके देखिया फिरिया याइते उद्यत हइलेन। पिसिमा कहिलेन, "कोथा यास, अविनाश।" स्वामी जिज्ञासा करिलेन, "इनि के।" पिसिमा कहिलेन, "एइ मेयेटिइ आमार सेइ भासुरझि हेमाङ्गिनी।" इहाके कखन आना हइल, के आनिल, की वृत्तान्त, लइया आमार स्वामी वारम्वार अनेक अनावश्यक विस्मय प्रकाश करिते लागिलेन।

आमि मने-मने कहिलाम, याहा घटितेछे ताहा तो सबइ बुझितेछि, किन्तु इहार उपरे आबार छलना आरम्भ हइल। लुकाचुरि, ढाकाढाकि, मिथ्याकथा! अधर्म करिते यदि हय तो करो, से निजेर अशान्त प्रवृत्तिर जन्य, किन्तु आमार जन्य केन हीनता करा। आमाके भुलाइबार जन्य केन मिथ्याचरण।

हेमाङ्गिनीर हात धरिया आमि ताहाके आमार शयनगृहे लइया गेलाम। ताहार मुखे गाये हात बुलाइया ताहाके देखिलाम; मुखटि सुन्दर हइबे, वयसओ चोद्द-पनेरोर कम हइबे ना।

बालिका हठात् मधुर उच्चकण्ठे हासिया उठिल; कहिल, "ओ की करितेछ। आमार भूत झाड़ाइया दिबे नाकि।"

सेइ उन्मुक्त सरल हास्यध्वनिते आमादेर माझखानेर एकटा अन्धकार मेघ येन एक मुहूर्ते काटिया गेल। आमि दक्षिणबाहुते ताहार कण्ठ वेष्टन करिया कहिलाम, "आमि तोमाके देखितेछि, भाइ।" बलिया ताहार कोमल मुखखानिते आर-एकबार हात बुलाइलाम।

"देखितेछ?" बलिया से आबार हासिते लागिल। कहिल,

कोथा यास—कहाँ चला।

भुलाइबार जन्य—भुलाने के लिए।

गाये हात बुलाइया—शरीर पर हाथ फेर कर।

"आमि कि तोमार बागानेर सिम ना बेगुन ये हात बुलाइया देखितेछ कतबड़ोटा हइयाछि।"

तखन आमार हठात् मने हइल, आमि ये अन्ध ताहा हेमाङ्गिनी जाने ना। कहिलाम, "बोन, आमि ये अन्ध।" शुनिया से किछुक्षण आश्चर्य हइया गम्भीर हइया रहिल। बेश बुझिते पारिलाम, ताहार कुतूहली तरुण आयत नेत्र दिया से आमार दृष्टिहीन चक्षु एवं मुखेर भाव मनोयोगेर सहित देखिल ; ताहार परे कहिल, "ओः, ताइ बुझि काकिके एखाने आनाइयाछ?"

आमि कहिलाम, "ना, आमि डाकि नाइ। तोमार काकि आपनि आसियाछेन।"

बालिका आबार हासिया उठिया कहिल, "दया करिया? ताहा हइले दयामयी शीघ्र नड़ितेछेन ना! किन्तु, बाबा आमाके एखाने केन पाठाइलेन।"

एमन समये पिसिमा घरे प्रवेश करिलेन। एतक्षण आमार स्वामीर सङ्गे ताँहार कथावार्ता चलितेछिल। घरे आसितेइ हेमाङ्गिनी कहिल, "काकि, आमरा बाड़ि फिरिब कबे बलो।"

पिसिमा कहिलेन, "ओमा! एइमात्र आसियाइ अमनि याइ-याइ। अमन चञ्चल मेयेओ तो देखि नाइ।"

हेमाङ्गिनी कहिल, "काकि, तोमार तो एखान हइते शीघ्र नड़िबार गतिक देखि ना। ता, तोमार ए हल आत्मीयघर, तुमि यतदिन खुशि थाको ; आमि किन्तु चलिया याइब, ता तोमाके बलिया राखितेछि।" एइ बलिया आमार हात धरिया कहिल, "की बलो भाइ, तोमरा तो आमार ठिक आपन नओ।" आमि ताहार एइ सरल प्रश्नेर कोनो उत्तर ना दिया ताहाके

सिम—सेम। बेगुन—बैंगन।
आनाइयाछ—बुलाया है। **डाकि नाइ**—नहीं बुलाया।
शीघ्र नड़ितेछेन ना—शीघ्र हिलेंगी (टलेंगी) नहीं।
बाबा—पिता। **याइ-याइ**—जाऊँ-जाऊँ।
नड़िबार गतिक—हिलने के लक्षण।

आमार बुकेर काछे टानिया लइलाम। देखिलाम, पिसिमा यतइ प्रबला हउन, एइ कन्याटिके ताँहार सामलाइबार साध्य नाइ। पिसिमा प्रकाश्ये राग ना देखाइया हेमाङ्गिनीके एकटु आदर करिबार चेष्टा करिलेन; से ताहा येन गा हइते झाड़िया फेलिया दिल। पिसिमा समस्त व्यापारटाके आदुरे मेयेर एकटा परिहासेर मतो उड़ाइया दिया हासिया चलिया याइते उद्यत हइलेन। आबार की भाबिया, फिरिया आसिया हेमाङ्गिनीके कहिलेन, "हिमु, चल्, तोर स्नानेर वेला हइल।" से आमार काछे आसिया कहिल, "आमरा दुइजने घाटे याइब, की बलो, भाइ।" पिसिमा अनिच्छासत्त्वेओ क्षान्त दिलेन; तिनि जानितेन, टानाटानि करिते गेले हेमाङ्गिनीरइ जय हइबे एवं ताँहादेर मध्येकार विरोध अशोभनरूपे आमार सम्मुखे प्रकाश हइबे।

खिड़किर घाटे याइते याइते हेमाङ्गिनी आमाके जिज्ञासा करिल, "तोमार छेलेपुले नाइ केन।" आमि ईषत् हासिया कहिलाम, "केन ताहा की करिया जानिब, ईश्वर देन नाइ।" हेमाङ्गिनी कहिल, "अवश्य तोमार भितरे किछु पाप छिल।" आमि कहिलाम, "ताहाओ अन्तर्यामी जानेन।" बालिका प्रमाणस्वरूपे कहिल, "देखो-ना, काकिर भितरे एत कुटिलता ये उँहार गर्भे सन्तान जन्मिते पाय ना।" पापपुण्य सुखदुःख दण्डपुरस्कारेर तत्त्व निजेओ बुझि ना, बालिकाकेओ बुझाइलाम ना; केवल एकटा निश्वास फेलिया मने-मने ताँहाके कहिलाम, तुमिइ जान! हेमाङ्गिनी तत्क्षणात् आमाके जड़ाइया धरिया हासिया उठिया कहिल, "ओमा, आमार कथा शुनियाओ तोमार निश्वास पड़े! आमार कथा बुझि केह ग्राह्य करे!"

आदर—लाड़-प्यार। **गा हइते**—शरीर से। **आदुरे मेयेर**—लाड़ली लड़की के। **क्षान्त दिलेन**—विरत हो गईं, टाल गईं।

खिड़किर घाटे—घर के पिछवाड़े के घाट को। **छेलेपुले**—बाल-बच्चा। **बुझि केह ग्राह्य करे**—भला कोई ध्यान भी देता है।

देखिलाम, स्वामीर डाक्तारि-व्यवसाये व्याघात हइते लागिल। दूरे डाक पड़िले तो यानइ ना, काछे कोथाओ गेलेओ चट्पट् सारिया चलिया आसेन। पूर्वे यखन कर्मेर अवसरे घरे थाकितेन, मध्याह्ने आहार एवं निद्रार समये केवल बाड़िर भितरे आसितेन। एखन पिसिमाओ यखन-तखन डाकिया पाठान, तिनिओ अनावश्यक पिसिमार खबर लइते आसेन। पिसिमा यखन डाक छाड़िया वलेन, "हिमु, आमार पानेर बाटाटा निये आय तो", आमि बुझिते पारि पिसिमार घरे आमार स्वामी आसियाछेन। प्रथम प्रथम दिन-दुइतिन हेमाङ्गिनी पानेर बाटा, तेलेर बाटि, सिँदुरेर कौटो प्रभृति यथादिष्ट लइया याइत। किन्तु, ताहार परे डाक पड़िले से आर किछुतेइ नड़ित ना, झिर हात दिया आदिष्ट द्रव्य पाठाइया दित। पिसि डाकितेन, "हेमाङ्गिनी, हिमु, हिमि"—बालिका येन आमार प्रति एकटा करुणार आवेगे आमाके जड़ाइया थाकित; एकटा आशंका एवं विषादे ताहाके आच्छन्न करित। इहार पर हइते आमार स्वामीर कथा से आमार काछे भ्रमेओ उल्लेख करित ना।

इतिमध्ये आमार दादा आमाके देखिते आसिलेन। आमि जानिताम, दादार दृष्टि तीक्ष्ण। व्यापारटा किरूप चलितेछे ताहा ताँहार निकट गोपन करा प्राय असाध्य हइबे। आमार दादा बड़ो कठिन विचारक। तिनि लेशमात्र अन्यायके क्षमा करिते जानेन ना। आमार स्वामी ये ताँहारइ चक्षेर सम्मुखे अपराधीरूपे दाँड़ाइबेन, इहाइ आमि सबचेये भय करिताम। आमि अतिरिक्त प्रफुल्लता द्वारा समस्त आच्छन्न करिया राखिलाम। आमि बेशि कथा वलिया, बेशि व्यस्तसमस्त हइया, अत्यन्त धुमधाम करिया, चारि दिके येन एकटा धुला उड़ाइया

अवसरे—फुर्सत में। **डाक छाड़िया**—पुकार कर। **पानेर बाटाटा**—पानदान। **बाटि**—कटोरी। **सिँदुरेर कौटो**—सिन्दूर की डिबिया।

सबचेये—सबसे (अधिक)। **व्यस्तसमस्त हइया**—व्यस्तता का भाव दिखा कर।

राखिवार चेष्टा करिलाम। किन्तु, सेटा आमार पक्षे एमन अस्वाभाविक ये ताहातेइ आरओ बेशि धरा पड़िबार कारण हइल। किन्तु, दादा बेशि दिन थाकिते पारिलेन ना, आमार स्वामी एमनि अस्थिरता प्रकाश करिते लागिलेन ये, ताहा प्रकाश्य रूढ़तार आकार धारण करिल। दादा चलिया गेलेन। विदाय लइबार पूर्बे परिपूर्ण स्नेहेर सहित आमार माथार उपर अनेकक्षण कम्पित हस्त राखिलेन; मने-मने एकाग्रचित्ते की आशीर्वाद करिलेन ताहा बुझिते पारिलाम; ताँहार अश्रु आमार अश्रुसिक्त कपोलेर उपर आसिया पड़िल।

मने आछे, सेदिन चैत्रमासेर सन्ध्यावेलाय हाटेर वारे लोकजन बाड़ि फिरिया याइतेछे। दूर हइते वृष्टि लइया एकटा झड़ आसितेछे, ताहारइ माटि-भेजा गन्ध एवं वातासेर आर्द्रभाव आकाशे व्याप्त हइयाछे; सङ्गच्युत साथिगण अन्धकार माठेर मध्ये परस्परके व्याकुल ऊर्ध्वकण्ठे डाकितेछे। अन्धेर शयनगृहे यत-क्षण आमि एकला थाकि ततक्षण प्रदीप ज्वालानो हय ना, पाछे शिखा लागिया कापड़ धरिया उठे वा कोनो दुर्घटना हय। आमि सेइ निर्जन अन्धकार कक्षेर मध्ये माटिते बसिया दुइ हात जुड़िया आमार अनन्त अन्धजगतेर जगदीश्वरके डाकितेछिलाम; बलितेछिलाम, "प्रभु, तोमार दया यखन अनुभव हय ना, तोमार अभिप्राय यखन बुझि ना, तखन एइ अनाथ भग्न हृदयेर हालटाके प्राणपणे दुइ हाते वक्षे चापिया धरि; बुक दिया रक्त बाहिर हइया याय तबु तुफान सामलाइते पारि ना; आमार आर कत परीक्षा करिबे, आमार कतटुकुइ-बा बल।" एइ बलिते बलिते अश्रु उच्छ्वसित हइया उठिल, खाटेर उपर माथा राखिया काँदिते लागिलाम। समस्त दिन घरेर काज करिते हय।

धरा पड़िबार—पकड़ाई दे जाने का। **रूढ़तार**—रूखेपन का।

हाटेर वारे—हाट के दिन। **झड़**—आँधी। **माटि-भेजा**—भीगी हुई मिट्टी की। **वातासेर**—वायु की। **कापड़ धरिया उठे**—कपड़े आग पकड़ ले। **हालटाके**—पतवार को। **आमार...बल**—मुझ में बल ही कितना है।

हेमाङ्गिनी छायार मतो काछे काछे थाके, वुकेर भितरे ये अश्रु भरिया उठे से आर फेलिबार अवसर पाइ ना; अनेकदिन परे आज चोखेर जल वाहिर हइल, एमनसमय देखिलाम, खाट एकटु नड़िल, मानुष-चलार उस्खुस् शब्द हइल एवं मुहूर्तपरे हेमाङ्गिनी आसिया आमार गला जड़ाइया धरिया निःशब्दे अञ्चल दिया आमार चोख मुछाइया दिते लागिल। से ये सन्ध्यार आरम्भे की भाविया कखन आसिया खाटेइ शुइयाछिल, आमि जानिते पारि नाइ। से एकटि प्रश्नओ करिल ना, आमिओ ताहाके कोनो कथाइ वलिलाम ना। से धीरे धीरे ताहार शीतल हस्त आमार ललाटे वुलाइया दिते लागिल। इतिमध्ये कखन मेघगर्जन एवं मुषलधारे वर्षणेर सङ्गे सङ्गे एकटा झड़ हइया गेल वुझितेइ पारिलाम ना; वहुकाल परे एकटि सुस्निग्ध शान्ति आसिया आमार ज्वरदाहदग्ध हृदयके जुड़ाइया दिल।

परदिन हेमाङ्गिनी कहिल, "काकि, तुमि यदि वाड़ि ना याओ आमि आमार कैवर्तदादार सङ्गे चलिलाम, ताहा वलिया राखितेछि।" पिसिमा कहिलेन, "ताहाते काज की, आमिओ काल याइतेछि; एकसङ्गेइ याओया हइवे। एइ देख् हिमु, आमार अविनाश तोर जन्ये केमन एकटि मुक्ता-देओया आङटि किनिया दियाछे।" वलिया सगर्वे पिसिमा आङटि हेमाङ्गिनीर हाते दिलेन। हेमाङ्गिनी कहिल, "एइ देखो काकि, आमि केमन सुन्दर लक्ष्य करिते पारि।" वलिया जानला हइते ताक करिया आङटि खिड़की-पुकुरेर माझखाने फेलिया दिल। पिसिमा रागे दुःखे विस्मये कण्टकित हइया उठिलेन। आमाके वारम्वार करिया हाते धरिया वलिया दिलेन, "वउमा, एइ छेलेमानुषिर

अवसर—फुर्सत। **एकटु नड़िल**—जरा-सी हिली। **मुछाइया दिते लागिल**—पोंछने लगी। **वुलाइया दिते लागिल**—फेरने लगी।

मुक्ता-देओया आङटि—मोती-जड़ी अँगूठी। **जानला हइते**—जंगले में से। **लक्ष्य**—निशाना। **ताक करिया**—ताक कर। **खिड़कि-पुकुरेर**—घर के पिछवाड़े के पोखरे के। **रागे**—क्रोध से।

कथा अविनाशके खबरदार बलियो ना; छेले आमार ताहा हइले मने दुःख पाइबे। माथा खाओ, बउमा!" आमि कहिलाम, "आर बलिते हइबे ना पिसिमा, आमि कोनो कथाइ बलिब ना।"

परदिने यात्रार पूर्वे हेमाङ्गिनी आमाके जड़ाइया धरिया कहिल, "दिदि, आमाके मने राखिस।" आमि दुइ हात वारम्वार ताहार मुखे वुलाइया कहिलाम, "अन्ध किछु भोले ना, बोन; आमार तो जगत् नाइ, आमि केवल मन लइयाइ आछि।" बलिया ताहार माथाटा लइया एकबार आघ्राण करिया चुम्बन करिलाम। झर्झर् करिया ताहार केशराशिर मध्ये आमार अश्रु झरिया पड़िल।

हेमाङ्गिनी विदाय लइले आमार पृथिवीटा शुष्क हइया गेल—से आमार प्राणेर मध्ये ये सौगन्ध्य सौन्दर्य संगीत, ये उज्ज्वल आलो एवं ये कोमल तरुणता आनियाछिल ताहा चलिया गेले एकबार आमार समस्त संसार, आमार चारि दिके, दुइ हात बाड़ाइया देखिलाम, कोथाय आमार की आछे! आमार स्वामी आसिया विशेष प्रफुल्लता देखाइया कहिलेन, "इँहारा गेलेन, एखन बाँचा गेल, एकटु काजकर्म करिबार अवसर पाओया याइबे।" धिक्, धिक् आमाके। आमार जन्य केन एत चातुरी। आमि कि सत्यके डराइ। आमि कि आघातके कखनओ भय करियाछि। आमार स्वामी कि जानेन ना? यखन आमि दुइ चक्षु दियाछिलाम तखन आमि कि शान्तमने आमार चिरान्धकार ग्रहण करि नाइ।

एतदिन आमार एवं आमार स्वामीर मध्ये केवल अन्धतार अन्तराल छिल, आज हइते आर-एकटा व्यवधान सृजन हइल। आमार स्वामी भुलियाओ कखनओ हेमाङ्गिनीर नाम आमार काछे उच्चारण करितेन ना, येन ताँहार सम्पर्कीय संसार हइते

माथा खाओ—सौगन्ध है।

हात बाड़ाइया—हाथ बढ़ा कर। **बाँचा गेल**—जान बची।

हेमाङ्गिनी एकेवारे लुप्त हइया गेछे, येन सेखाने से कोनोकाले लेशमात्र रेखापात करे नाइ। अथच पत्रद्वारा तिनि ये सर्वदाइ ताहार खवर पाइतेछेन, ताहा आमि अनायासे अनुभव करिते पारिताम; येमन पुकुरेर मध्ये वन्यार जल येदिन एकटु प्रवेश करे सेइदिनइ पद्मेर डाँटाय टान पड़े, तेमनि ताँहार भितरे एकटुओ येदिन स्फीतिर सञ्चार हय सेदिन आमार हृदयेर मूलेर मध्य हइते आमि आपनि अनुभव करिते पारि। कवे तिनि खवर पाइतेन एवं कवे पाइतेन ना ताहा आमार काछे किछु अगोचर छिल ना। किन्तु, आमिओ ताँहाके ताहार कथा शुधाइते पारिताम ना। आमार अन्धकार हृदये सेइ-ये उन्मत्त उद्दाम उज्ज्वल सुन्दर ताराटि क्षणकालेर जन्य उदय हइयाछिल ताहार एकटु खबर पाइबार एवं ताहार कथा आलोचना करिबार जन्य आमार प्राण तृषित हइया थाकित, किन्तु आमार स्वामीर काछे मुहूर्तेर जन्य ताहार नाम करिबार अधिकार छिल ना। आमादेर दुजनार माझखाने वाक्ये एवं वेदनाय परिपूर्ण एइ एकटा नीरवता अटलभावे विराज करित।

वैशाख मासेर माझामाझि एकदिन झि आसिया आमाके जिज्ञासा करिल, "माठाकरुन, घाटे ये अनेक आयोजने नौका प्रस्तुत हइतेछे, वाबामशाय कोथाय याइतेछेन।" आमि जानिताम, एकटा की उद्योग हइतेछे; आमार अदृष्टाकाशे प्रथम किछुदिन झड़ेर पूर्वकार निस्तब्धता एवं ताहार परे प्रलयेर छिन्नविच्छिन्न मेघ आसिया जमितेछिल; संहारकारी शंकर नीरव अंगुलिर इङ्गिते ताँहार समस्त प्रलयशक्तिके आमार माथार

पुकुरेर मध्ये—पोखर में। **वन्यार जल**—वाढ़ का पानी। **पद्मेर डाँटाय टान पड़े**—कमल के डण्ठल पर खिंचाव पड़ता है। **शुधाइते पारिताम ना**—पूछ नहीं पाती थी।

झि—महरी, दासी। **माठाकरुन**—(मालकिन के लिए आदरसूचक सम्बोधन।) **बाबामशाय**—बाबा महाशय (मालिक के लिए आदरसूचक सम्बोधन)। **मेघ आसिया जमितेछिल**—बादल आ कर इकट्ठे हो रहे थे। **माथार...**

उपरे जड़ो करितेछेन, ताहा आमि बुझिते पारितेछिलाम। झिके वलिलाम, "कइ, आमि तो एखनओ कोनो खवर पाइ नाइ।" झि आर-कोनो प्रश्न जिज्ञासा करिते साहस ना करिया निश्वास फेलिया चलिया गेल।

अनेक रात्रे आमार स्वामी आसिया कहिलेन, "दूरे एक जायगाय आमार डाक पड़ियाछे, काल भोरेइ आमाके रओना हइते हइवे। वोध करि फिरिते दिन-दुइतिन विलम्व हइते पारे।"

आमि शय्या हइते उठिया दाँड़ाइया कहिलाम, "केन आमाके मिथ्या वलितेछ।"

आमार स्वामी कम्पित अस्फुट कण्ठे कहिलेन, "मिथ्या की वलिलाम।"

आमि कहिलाम, "तुमि विवाह करिते याइतेछ!"

तिनि चुप करिया रहिलेन। आमिओ स्थिर हइया दाँड़ाइया रहिलाम। अनेकक्षण घरे कोनो शब्द रहिल ना। शेषे आमि वलिलाम, "एकटा उत्तर दाओ। वलो, हाँ, आमि विवाह करिते याइतेछि।"

तिनि प्रतिध्वनिर न्याय उत्तर दिलेन, "हाँ, आमि विवाह करिते याइतेछि।"

आमि कहिलाम, "ना, तुमि याइते पारिवे ना। तोमाके आमि एइ महाविपद महापाप हइते रक्षा करिव। ए यदि ना पारि तवे आमि तोमार किसेर स्त्री; की जन्य आमि शिव-पूजा करियाछिलाम।"

आवार अनेकक्षण गृह निःशब्द हइया रहिल। आमि माटिते पड़िया स्वामीर पा जड़ाइया धरिया कहिलाम, "आमि

करितेछेन—सिर पर एकत्रित कर रहे हैं।
डाक पड़ियाछे—बुलावा आया है।
यदि ना पारि—यदि (रक्षा) न कर सकूँ।

तोमार की अपराध करियाछि, किसे आमार त्रुटि हइयाछे, अन्य स्त्रीते तोमार किसेर प्रयोजन। माथा खाओ, सत्य करिया बलो।"

तखन आमार स्वामी धीरे धीरे कहिलेन, "सत्यइ बलितेछि; आमि तोमाके भय करि। तोमार अन्धता तोमाके एक अनन्त आवरणे आवृत करिया राखियाछे, सेखाने आमार प्रवेश करिबार जो नाइ। तुमि आमार देवता, तुमि आमार देवतार न्याय भयानक, तोमाके लइया प्रतिदिन गृहकार्य करिते पारि ना। याहाके बकिब झकिब, राग करिब, सोहाग करिब, गहना गड़ाइया दिब, एमन एकटि सामान्य रमणी आमि चाइ।"

"आमार बुकेर भितरे चिरिया देखो! आमि सामान्य रमणी, आमि मनेर मध्ये सेइ नवविवाहेर बालिका बइ किछु नइ; आमि विश्वास करिते चाइ, निर्भर करिते चाइ, पूजा करिते चाइ; तुमि निजेके अपमान करिया आमाके दुःसह दुःख दिया तोमार चेये आमाके बड़ो करिया तुलियो ना—आमाके सर्वविषये तोमार पायेर नीचे राखिया दाओ।"

आमि की की कथा बलियाछिलाम से कि आमार मने आछे। क्षुब्ध समुद्र कि निजेर गर्जन निजे शुनिते पाय। केवल मने पड़े, बलियाछिलाम, "यदि आमि सती हइ तबे भगवान् साक्षी रहिलेन, तुमि कोनोमतेइ तोमार धर्म-शपथ लंघन करिते पारिबे ना। से महापापेर पूर्वे हय आमि विधवा हइब, नय हेमाङ्गिनी बाँचिया थाकिबे ना।" एइ बलिया आमि मूर्छित हइया पड़िया गेलाम।

यखन आमार मूर्छा भङ्ग हइया गेल तखनओ रात्रिशेषेर पाखि डाकिते आरम्भ करे नाइ एवं आमार स्वामी चलिया गेछेन।

माथा खाओ—सौगन्ध है।
जो नाइ—(कोई) उपाय नहीं है।
बुकेर...देखो—छाती के भीतर (हृदय) चीर कर देखो। बालिका बइ किछु नइ—बालिका के सिवा और कुछ नहीं हूँ।
पाखि डाकिते—पक्षियों ने चहचहाना।

आमि ठाकुरघरे द्वार रुद्ध करिया पूजाय वसिलाम। समस्त दिन आमि घरेर वाहिर हइलाम ना। संध्यार समये कालवैशाखी झड़े दालान काँपिते लागिल। आमि वलिलाम ना ये, 'हे ठाकुर, आमार स्वामी एखन नदीते आछेन, ताँहाके रक्षा करो'। आमि केवल एकान्तमने वलिते लागिलाम, 'ठाकुर, आमार अदृष्टे याहा हइवार ता हउक, किन्तु आमार स्वामीके महापातक हइते निवृत्त करो।' समस्त रात्रि काटिया गेल। ताहार परदिनओ आसन परित्याग करि नाइ। एइ अनिद्राय अनाहारे के आमाके वल दियाछिल जानि ना, आमि पाषाणमूर्तिर सम्मुखे पाषाण-मूर्तिर मतोइ वसिया छिलाम।

सन्ध्यार समय वाहिर हइते द्वार-ठेलाठेलि आरम्भ हइल। द्वार भाङिया यखन घरे लोक प्रवेश करिल तखन आमि मूर्छित हइया पड़िया आछि।

मूर्छाभङ्गे शुनिलाम, "दिदि!" देखिलाम, हेमाङ्गिनीर कोले शुइया आछि। माथा नाड़ितेइ ताहार नूतन चेलि खस्खस् करिया उठिल। हा ठाकुर, आमार प्रार्थना शुनिले ना। आमार स्वामीर पतन हइल।

हेमाङ्गिनी माथा निचु करिया धीरे धीरे कहिल, "दिदि, तोमार आशीर्वाद लइते आसियाछि।"

प्रथम एकमुहूर्त काठेर मतो हइया परक्षणेइ उठिया वसिलाम, कहिलाम, "केन आशीर्वाद करिव ना, वोन! तोमार की अपराध!"

हेमाङ्गिनी ताहार सुमिष्ट उच्चकण्ठे हासिया उठिल; कहिल, "अपराध! तुमि विवाह करिले अपराध हय ना आर आमि करिलेइ अपराध?"

कालवैशाखी झड़े—चैत-वैसाख में गरम हवा के साथ उठने वाली आँधी से। **वलिलाम ना ये**—(ऐसा) नहीं कहा कि।

कोले—गोद में। **चेलि**—विवाह के समय पहनी जाने वाली लाल साड़ी विशेष। **वोन**—वहन।

हेमाङ्गिनीके जड़ाइया धरिया आमिओ हासिलाम। मने-मने कहिलाम, जगते आमार प्रार्थनाइ कि चूड़ान्त। ताँहार इच्छाइ कि शेष नहे। ये आघात पड़ियाछे से आमार माथार उपरेइ पड़ुक, किन्तु हृदयेर मध्ये येखाने आमार धर्म, आमार विश्वास आछे, सेखाने पड़िते दिव ना। आमि येमन छिलाम तेमनि थाकिव। हेमाङ्गिनी आमार पायेर काछे पड़िया आमार पायेर धुला लइल। आमि कहिलाम, "तुमि चिरसौभाग्यवती, चिरसुखिनी हओ।"

हेमाङ्गिनी कहिल, "केवल आशीर्वाद नय, तोमार सतीर हस्ते आमाके एवं तोमार भग्निपतिके वरण करिया लइते हइवे। तुमि ताँहाके लज्जा करिले चलिवे ना। यदि अनुमति कर ताँहाके अन्तःपुरे लइया आसि।"

आमि कहिलाम, "आनो।"

किछुक्षण परे आमार घरे नूतन पदशब्द प्रवेश करिल। सस्नेह प्रश्न शुनिलाम, "भालो आछिस, कुमु?"

आमि त्रस्त विछाना छाड़िया उठिया पायेर काछे प्रणाम करिया कहिलाम, "दादा!"

हेमाङ्गिनी कहिल, "दादा किसेर। कान मलिया दाओ, ओ तोमार छोटो भग्नीपति।"

तखन समस्त बुझिलाम। आमि जानिताम, दादार प्रतिज्ञा छिल विवाह करिवेन ना; मा नाइ, ताँहाके अनुनय करिया विवाह कराइवार केह छिल ना। एवार आमिइ ताँहार विवाह दिलाम। दुइ चक्षु वाहिया हुहु करिया जल झरिया पड़िते लागिल, किछुतेइ थामाइते पारि ना। दादा धीरे धीरे आमार चुलेर मध्ये हात बुलाइया दिते लागिलेन; हेमाङ्गिनी आमाके जड़ाइया धरिया केवल हासिते लागिल।

पड़ुक—पड़े (गिरे)।
आनो—लाओ।
चुलेर मध्ये—केशों में।

रात्रे घुम हइतेछिल ना; आमि उत्कण्ठित चित्ते स्वामीर प्रत्यागमन प्रत्याशा करितेछिलाम। लज्जा एवं नैराश्य तिनि किरूपभावे सम्वरण करिबेन, ताहा आमि स्थिर करिते पारितेछिलाम ना।

अनेक रात्रे अति धीरे द्वार खुलिल। आमि चमकिया उठिया बसिलाम। आमार स्वामीर पदशब्द। वक्षेर मध्ये हृत्पिण्ड आछाड़ खाइते लागिल।

तिनि बिछानार मध्ये आसिया आमार हात धरिया कहिलेन, "तोमार दादा आमाके रक्षा करियाछेन। आमि क्षणकालेर मोहे पड़िया मरिते याइतेछिलाम। सेदिन आमि यखन नौकाय उठियाछिलाम, आमार बुकेर मध्ये ये की पाथर चापियाछिल ताहा अन्तर्यामी जानेन; यखन नदीर मध्ये झड़े पड़ियाछिलाम तखन प्राणेर भयओ हइतेछिल, सेइसङ्गे भावितेछिलाम, यदि डुबिया याइ ताहा हइलेइ आमार उद्धार हय। मथुरगञ्जे पौंछिया शुनिलाम, ताहार पूर्वदिनेइ तोमार दादार सङ्गे हेमाङ्गिनीर विवाह हइया गेछे। की लज्जाय एवं की आनन्दे नौकाय फिरियाछिलाम ताहा बलिते पारि ना। एइ कयदिने आमि निश्चय करिया बुझियाछि, तोमाके छाड़िया आमार कोनो सुख नाइ। तुमी आमार देवी।"

आमि हासिया कहिलाम, "ना, आमार देवी हइया काज नाइ, आमि तोमार घरेर गृहिणी, आमि सामान्य नारीमात्र।"

स्वामी कहिलेन, "आमारओ एकटा अनुरोध तोमाके राखिते हइबे। आमाके आर देवता बलिया कखनओ अप्रतिभ करियो ना"

परदिन हुलुरव ओ शङ्खध्वनिते पाड़ा मातिया उठिल।

चमकिया—चौंक कर। **आछाड़ खाइते लागिल**—पछाड़ खाने लगा। **आमार...काज नाइ**—मुझे देवी बनने की ज़रूरत नहीं है।

हुलुरव—(बंगाल में शुभकार्यों के समय स्त्रियों द्वारा मुख में उँगली डाल कर की जाने वाली ऊ-लू-लू ध्वनि)। **पाड़ा मातिया उठिल**—मुहल्ला पगला हो उठा।

हेमाङ्गिनी आमार स्वामीके आहारे उपवेशने, प्रभाते रात्रे, नाना-प्रकारे परिहास करिते लागिल, निर्यातनेर आर सीमा रहिल ना ; किन्तु तिनि कोथाय गियाछिलेन, की घटियाछिल, केह ताहार लेशमात्र उल्लेख करिल ना।

दिसम्बर १८९८--जनवरी १८९९

उपवेशने—उठते-बैठते। निर्यातनेर—चिढ़ाने की।

नष्टनीड़

प्रथम परिच्छेद

भूपतिर काज करिबार कोनो दरकार छिल ना। ताँहार टाका यथेष्ट छिल, एवं देशटाओ गरम। किन्तु ग्रहवशत तिनि काजेर लोक हइया जन्मग्रहण करियाछिलेन। एइजन्य ताँहाके एकटा इंराजि खबरेर कागज बाहिर करिते हइल। इहार परे समयेर दीर्घतार जन्य ताँहाके आर विलाप करिते हय नाइ।

छेलेवेला हइते ताँर इंराजि लिखिबार एवं वक्तृता दिबार शख छिल। कोनोप्रकार प्रयोजन ना थाकिलेओ इंराजि खबरेर कागजे तिनि चिठि लिखितेन, एवं वक्तव्य ना थाकिलेओ सभास्थले दु कथा ना बलिया छाड़ितेन ना।

ताँहार मतो धनी लोकके दले पाइबार जन्य राष्ट्रनैतिक दलपतिरा अजस्र स्तुतिवाद कराते निजेर इंराजि रचनाशक्ति सम्बन्धे ताँहार धारणा यथेष्ट परिपुष्ट हइया उठियाछिल।

अवशेषे ताँहार उकिल श्यालक उमापति ओकालति-व्यवसाये हतोद्यम हइया भगिनीपतिके कहिल, "भूपति, तुमि एकटा इंराजि खबरेर कागज बाहिर करो। तोमार येरकम असाधारण" इत्यादि।

भूपति उत्साहित हइया उठिल। परेर कागजे पत्र प्रकाश

गरम—उत्तेजित। काजेर लोक—कामकाजी आदमी। खबरेर कागज—अखबार। समयेर दीर्घतार जन्य—समय न कटने का।

छेलेवेला—बचपन। शख—शौक़। वक्तव्य ना थाकिलेओ—कुछ कहने को न होने पर भी।

राष्ट्रनैतिक—राजनैतिक।

ओकालति—वकालत के।

करिया गौरव नाइ, निजेर कागजे स्वाधीन कलमटाके पुरादमे छुटाइते पारिबे। श्यालकके सहकारी करिया नितान्त अल्प-वयसेइ भूपति सम्पादकेर गदिते आरोहण करिल।

अल्पवयसे सम्पादकि नेशा एवं राजनैतिक नेशा अत्यन्त जोर करिया धरे। भूपतिके माताइया तुलिबार लोकओ छिल अनेक।

एइरूपे से यतदिन कागज लइया भोर हइया छिल ततदिने ताहार बालिका वधू चारुलता धीरे धीरे यौवने पदार्पण करिल। खबरेर कागजेर सम्पादक एइ मस्त खबरटि भालो करिया टेर पाइल ना। भारत-गवर्मेण्टेर सीमान्त नीति क्रमशइ स्फीत हइया संयमेर बन्धन विदीर्ण करिबार दिके याइतेछे, इहाइ ताहार प्रधान लक्ष्येर विषय छिल।

धनीगृहे चारुलतार कोनो कर्म छिल ना। फलपरिणामहीन फुलेर मतो परिपूर्ण अनावश्यकतार मध्ये परिस्फुट हइया उठाइ ताहार चेष्टाशून्य दीर्घ दिन-रात्रिर एकमात्र काज छिल। ताहार कोनो अभाव छिल ना।

एमन अवस्थाय सुयोग पाइले वधू स्वामीके लइया अत्यन्त बाड़ाबाड़ि करिया थाके, दाम्पत्यलीलार सीमान्तनीति संसारेर समस्त सीमा लङ्घन करिया समय हइते असमये एवं विहित हइते अविहिते गिया उत्तीर्ण हय। चारुलतार से सुयोग छिल ना। कागजेर आवरण भेद करिया स्वामीके अधिकार करा ताहार पक्षे दुरूह हइयाछिल।

युवती स्त्रीर प्रति मनोयोग आकर्षण करिया कोनो आत्मीया ताहाके भर्त्सना करिले भूपति एकबार सचेतन हइया कहिल,

---

पुरादमे—पूरे वेग से। छुटाइते पारिबे—दौड़ा सकेगा। गदिते—गद्दी, आसन पर।

जोर करिया धरे—जोर से चढ़ता है। माताइया तुलिबार—उकसाने, उभाड़ने वाले।

भोर हइया छिल—तन्मय, विभोर था। टेर पाइल ना—पता न चला।

बाड़ाबाड़ि—ज्यादती, मनमानी।

करिले—करने पर।

"ताइ तो, चारुर एकजन केउ सङ्गिनी थाका उचित, ओ बेचारार किछुइ करिबार नाइ।"

श्यालक उमापतिके कहिल, "तोमार स्त्रीके आमादेर एखाने आनिया राखो-ना—समवयसि स्त्रीलोक केह काछे नाइ, चारुर निश्चयइ भारि फाँका ठेके।"

स्त्रीसङ्गेर अभावइ चारुर पक्षे अत्यन्त शोकावह, सम्पादक एइरूप बुझिल एवं श्यालकजाया मन्दाकिनीके बाड़िते आनिया से निश्चिन्त हइल।

ये समये स्वामी स्त्री प्रेमोन्मेषेर प्रथम अरुणालोके परस्परेर काछे अपरूप महिमाय चिरनूतन बलिया प्रतिभात हय, दाम्पत्येर सेइ स्वर्णप्रभामण्डित प्रत्युषकाल अचेतन अवस्थाय कखन अतीत हइया गेल केह जानिते पारिल ना। नूतनत्वेर स्वाद ना पाइयाइ उभये उभयेर काछे पुरातन परिचित अभ्यस्त हइया गेल।

लेखापड़ार दिके चारुलतार एकटा स्वाभाविक झोंक छिल बलिया ताहार दिनगुला अत्यन्त बोझा हइया उठे नाइ। से निजेर चेष्टाय नाना कौशले पड़िबार बन्दोबस्त करिया लइयाछिल। भूपतिर पिस्तुत भाइ अमल थार्ड् इयारे पड़ितेछिल, चारुलता ताहाके धरिया पड़ा करिया लइत; एइ कर्मटुकु आदाय करिया लइबार जन्य अमलेर अनेक आबदार ताहाके सह्य करिते हइत। ताहाके प्रायइ होटेले खाइबार खोराकि एवं इंराजि साहित्यग्रन्थ किनिबार खरचा जोगाइते हइत। अमल माझे माझे बन्धुदेर निमन्त्रण करिया खाओयाइत, सेइ यज्ञ-समाधार भार गुरुदक्षिणार स्वरूप चारुलता निजे ग्रहण करित। भूपति चारुलतार प्रति कोनो दाबि करित ना, किन्तु सामान्य एकटु पड़ाइया पिस्तुत भाइ अमलेर दाबिर अन्त छिल ना। ताहा लइया

फाँका ठेके—सूना लगता है।
झोंक छिल—रुझान थी। बोझा—भार। पिस्तुत भाइ—फुफेरा भाई। पड़ा—पढ़ाई-लिखाई। आदाय......जन्य—(वसूल) करा लेने के लिए। आबदार—फरमाइश, तकाजे। दाबि—अधिकार।

चारुलता प्राय माझे माझे कृत्रिम कोप एवं विद्रोह प्रकाश करित ; किन्तु कोनो-एकटा लोकेर कोनो काजे आसा एवं स्नेहेर उपद्रव सह्य करा ताहार पक्षे अत्यावश्यक हइया उठियाछिल।

अमल कहिल, "बोठान, आमादेर कालेजेर राजबाड़िर जामाइ-बाबु राजअन्तःपुरेर खास हातेर बुननि कार्पेटेर जुतो परे आसे, आमार तो सह्य हय ना—एकजोड़ा कार्पेटेर जुतो चाइ, नइले कोनोमतेइ पदमर्यादा रक्षा करते पारछि ना।"

चारु। हाँ, ताइ बइकि। आमि बसे बसे तोमार जुतो सेलाइ करे मरि। दाम दिच्छि, बाजार थेके किने आनो गे याओ।

अमल बलिल, "सेटि हच्छे ना।"

चारु जुता सेलाइ करिते जाने ना, एवं अमलेर काछे से कथा स्वीकार करितेओ चाहे ना। किन्तु ताहार काछे केह किछु चाय ना, अमल चाय—संसारे सेइ एकमात्र प्रार्थीर प्रार्थना रक्षा ना करिया से थाकिते पारे ना। अमल ये समय कालेजे याइत सेइ समय से लुकाइया बहु यत्ने कार्पेटेर सेलाइ शिखिते लागिल। एवं अमल निजे यखन ताहार जुतार दरबार सम्पूर्ण भुलिया बसियाछे एमनसमय एकदिन सन्ध्यावेलाय चारु ताहाके निमन्त्रण करिल।

ग्रीष्मेर समय छादेर उपर आसन करिया अमलेर आहारेर जायगा करा हइयाछे। बालि उड़िया पड़िबार भये पितलेर ढाकनाय थाला ढाका रहियाछे। अमल कालेजेर वेश परित्याग करिया मुख धुइया फिट्फाट् हइया आसिया उपस्थित हइल।

अमल आसने बसिया ढाका खुलिल ; देखिल, थालाय एक-

बोठान—भाभी। राजबाड़िर—राजघराने का। कार्पेटेर जुतो—कार्पेट की बुनाई के घर में पहने जाने वाले ऊनी जूते।

ताइ बइकि—सो तो है ही।

चाय ना—नहीं चाहता। दरबार—माँग।

छादेर उपर—छत पर। थाला—थाली।

जोड़ा नूतन-बाँधानो पशमेर जुता साजानो रहियाछे। चारुलता उच्चैःस्वरे हासिया उठिल।

जुता पाइया अमलेर आशा आरओ बाड़िया उठिल। एखन गलाबन्ध चाइ, रेशमेर रुमाले फुलकाटा पाड़ सेलाइ करिया दिते हइबे, ताहार बाहिरेर घरे वसिवार वड़ो केदाराय तेलेर दाग निवारणेर जन्य एकटा काज-करा आवरण आवश्यक।

प्रत्येक बारेइ चारुलता आपत्ति प्रकाश करिया कलह करे एवं प्रत्येक बारेइ बहु यत्ने ओ स्नेहे शौखिन अमलेर शख मिटाइया देय। अमल माझे माझे जिज्ञासा करे, "वउठान, कतदूर हइल।"

चारुलता मिथ्या करिया वले, "किछुइ हय नि।" कखनओ वले, "से आमार मनेइ छिल ना।"

किन्तु अमल छाड़िबार पात्र नय। प्रतिदिन स्मरण कराइया देय एवं आवदार करे। नाछोड़बान्दा अमलेर सेइ-सकल उपद्रव उद्रेक कराइया दिवार जन्यइ चारु औदासीन्य प्रकाश करिया विरोधेर सृष्टि करे एवं हठात् एकदिन ताहार प्रार्थना पूरण करिया दिया कौतुक देखे।

धनीर संसारे चारुके आर काहारओ जन्य किछुइ करिते हय ना, केवल अमल ताहाके काज ना कराइया छाड़े ना। एइ-सकल छोटोखाटो शखेर खाटुनितेइ ताहार हृदयवृत्तिर चर्चा एवं चरितार्थता हइत।

भूपतिर अन्तःपुरे ये एकखण्ड जमि पड़िया छिल ताहाके बागान वलिले अनेकटा अत्युक्ति करा हय। सेइ वागानेर प्रधान वनस्पति छिल एकटा विलाति आमड़ागाछ।

बाँधानो पशमेर जुता—बुना हुआ ऊनी जूता।

फुलकाटा पाड़—फूलदार किनारी। घरे—कमरे में। वड़ो केदाराय—वड़ी कुर्सी के। काज-करा—कढ़ा हुआ।

पात्र—व्यक्ति, आदमी। आबदार—ज़िद। नाछोड़बान्दा—पीछा न छोड़ने वाले, ज़िद्दी।

खाटुनितेइ—परिश्रम से। चर्चा—अनुशीलन।

आमड़ागाछ—आमड़े का वृक्ष।

एइ भूखण्डेर उन्नतिसाधनेर जन्य चारु एवं अमलेर मध्ये एकटा कमिटि वसियाछे। उभये मिलिया किछुदिन हइते छवि आँकिया, प्ल्यान करिया, महा उत्साहे एइ जमिटार उपरे एकटा वागानेर कल्पना फलाओ करिया तुलियाछे।

अमल वलिल, "वउठान, आमादेर एइ वागाने सेकालेर राजकन्यार मतो तोमाके निजेर हाते गाछे जल दिते हवे।"

चारु कहिल, "आर ऐ पश्चिमेर कोणटाते एकटा कुँड़े तैरि करे निते हवे, हरिणेर वाच्छा थाकवे।"

अमल कहिल, "आर एकटि छोटोखाटो झिलेर मतो करते हवे, ताते हाँस चरवे।"

चारु से प्रस्तावे उत्साहित हइया कहिल, "आर ताते नीलपद्म देव, आमार अनेक दिन थेके नीलपद्म देखवार साध आछे।"

अमल कहिल, "सेइ झिलेर उपर एकटि साँको वेंधे देओया यावे, आर घाटे एकटि वेश छोटो डिङि थाकवे।"

चारु कहिल, "घाट अवश्य सादा मार्वलेर हवे।"

अमल पेनसिल कागज लइया, रुल काटिया, कम्पास धरिया, महा आड़म्वरे वागानेर एकटा म्याप आँकिल।

उभये मिलिया दिने दिने कल्पनार संशोधन परिवर्तन करिते करिते विश-पंचिशखाना नूतन म्याप आँका हइल।

म्याप खाड़ा हइले कत खरच हइते पारे ताहार एकटा एस्टिमेट तैरि हइते लागिल। प्रथमे संकल्प छिल—चारु निजेर वराद्द मासहारा हइते क्रमे क्रमे वागान तैरि करिया तुलिवे; भूपति तो वाड़ीते कोथाय की हइतेछे ताहा चाहिया देखे ना; वागान

फलाओ—विस्तृत।
सेकालेर—पुराने जमाने की।
कुँड़े—झोंपड़ी।
छोटोखाटो—छोटी-मोटी। हाँस—हंस, वत्तख।
साँको—पुल। डिङि—डोंगी। रुल काटिया—लाइन खींचकर।
वराद्द मासहारा—निर्धारित मासिक खर्च। चाहिया—नजर उठाकर।

तँरि हइले ताहाके सेखाने निमन्त्रण क़रिया आश्चर्य करिया दिबे ; से मने करिबे, आलादिनेर प्रदीपेर साहाय्ये जापान देश हइते एकटा आस्त बागान तुलिया आना हइयाछे ।

किन्तु एस्टिमेट यथेष्ट कम करिया धरिलेओ चारुर संगतिते कुलाय ना। अमल तखन पुनराय म्याप परिवर्तन करिते बसिल। कहिल, "ता हले बउठान, ऐ झिलटा बाद देओया याक ।"

चारु कहिल, "ना ना, झिल बाद दिले किछुतेइ चलबे ना, ओते आमार नीलपद्म थाकबे ।"

अमल कहिल, "तोमार हरिणेर घरे टालिर छाद ना'इ दिले। ओटा अमनि एकटा सादासिधे खोड़ो चाल करलेइ हबे ।"

चारु अत्यन्त राग करिया कहिल, "ता हले आमार ओ घरे दरकार नेइ—ओ थाक् ।"

मरिशस हइते लवङ्ग, कर्नाट हइते चन्दन, एवं सिंहल हइते दारचिनिर चारा आनाइबार प्रस्ताव छिल, अमल ताहार परिवर्ते मानिकतला हइते साधारण दिशि ओ विलाति गाछेर नाम करितेइ चारु मुख भार करिया बसिल ; कहिल, "ता हले आमार बागाने काज नेइ ।"

एस्टिमेट कमाइबार एरूप प्रथा नय। एस्टिमेटेर सङ्गे सङ्गे कल्पनाके खर्व करा चारुर पक्षे असाध्य, एवं अमल मुखे याहाइ बलुक, मने मने ताहारओ सेटा रुचिकर नय ।

अमल कहिल, "तबे बउठान, तुमि दादार काछे बागानेर कथाटा पाड़ो ; तिनि निश्चय टाका देबेन ।"

आलादिनेर—अलादीन के। आस्त—पूरा, संपूर्ण।
संगतिते कुलाय ना—सामर्थ्य से बाहर है। बाद देओया याक—छोड़ दिया जाय।
टालिर छाद—टाइल की छत। खोड़ो चाल—धान के पुआल से छाई हुई झोंपड़ी।
चारा—पौध, पौद। काज नेइ—ज़रूरत नहीं।
कथाटा पाड़ो—बात चलाओ।

चारु कहिल, "ना, ताँके बलले मजा की हल। आमरा दुजने बागान तैरि क'रे तुलब। तिनि तो साहेब-बाड़िते फरमास दिये इडेन गार्डेन बानिये दिते पारेन—ता हले आमादेर प्ल्यानेर की हबे।"

आमड़ागाछेर छायाय बसिया चारु एवं अमल असाध्य संकल्पेर कल्पनासुख विस्तार करितेछिल। चारुर भाज मन्दा दोतला हइते डाकिया कहिल, "एत वेलाय बागाने तोरा की करछिस।"

चारु कहिल, "पाका आमड़ा खुँजछि।"

लुब्धा मन्दा कहिल, "पास यदि आमार जन्ये आनिस।"

चारु हासिल, अमल हासिल। ताहादेर समस्त संकल्पगुलिर प्रधान सुख एवं गौरव एइ छिल ये, सेगुलि ताहादेर दुजनेर मध्येइ आबद्ध। मन्दार आर या-किछु गुण थाक्, कल्पना छिल ना; से ए-सकल प्रस्तावेर रस ग्रहण करिबे की करिया। से एइ दुइ सभ्येर सकलप्रकार कमिटि हइते एकेबारे वर्जित।

असाध्य बागानेर एस्टिमेटओ कमिल ना, कल्पनाओ कोनो अंशे हार मानिते चाहिल ना। सुतरां आमड़ातलार कमिटि एइभावेइ किछुदिन चलिल। बागानेर येखाने झिल हइबे, येखाने हरिणेर घर हइबे, येखाने पाथरेर वेदि हइबे, अमल सेखाने चिन्ह काटिया राखिल।

ताहादेर संकल्पित बागाने एइ आमड़ातलार चार दिक कीभावे बाँधाइते हइबे, अमल एकटि छोटो कोदाल लइया ताहारइ दाग काटितेछिल—एमनसमय चारु गाछेर छायाय बसिया बलिल, "अमल, तुमि यदि लिखते पारते ता हले बेश हत।"

अमल जिज्ञासा करिल, "केन बेश हत।"

साहेब......दिये—साहबों के यहाँ फरमाइश करके।
भाज—भावज, भाभी।
पास यदि—यदि पाए।
की करिया—क्यों कर। चिह्न काटिया राखिल—निशान लगा रखे।
बाँधाइते हइबे—घेरना होगा।

चारु। ता हले आमादेर एइ बागानेर वर्णना करे तोमाके दिये एकटा गल्प लेखातुम। एइ झिल, एइ हरिणेर घर, एइ आमड़ातला, समस्तइ ताते थाकत—आमरा दुजने छाड़ा केउ बुझते पारत ना, बेश मजा हत। अमल, तुमि एकबार लेखबार चेष्टा करे देखो-ना, निश्चय तुमि पारबे।

अमल कहिल, "आच्छा, यदि लिखते पारि तो आमाके की देबे।"

चारु कहिल, "तुमि की चाओ।"

अमल कहिल, "आमार मशारिर चाले आमि निजे लता एँके देब, सेइटे तोमाके आगागोड़ा रेशम दिये काज करे दिते हवे।"

चारु कहिल, "तोमार समस्त बाड़ाबाड़ि। मशारिर चाले आबार काज!"

मशारि जिनिसटाके एकटा श्रीहीन कारागारेर मतो करिया राखार विरुद्धे अमल अनेक कथा बलिल। से कहिल, संसारेर पनेरो आना लोकेर ये सौन्दर्यबोध नाइ एवं कुश्रीता ताहादेर काछे किछुमात्र पीड़ाकर नहे, इहाइ ताहार प्रमाण।

चारु से-कथा तत्क्षणात् मने मने मानिया लइल एवं 'आमादेर एइ दुटि लोकेर निभृत कमिटि ये सेइ पनेरो आनार अन्तर्गत नहे' इहा मने करिया से खुशि हइल।

कहिल, "आच्छा बेश, आमि मशारिर चाल तैरि करे देब, तुमि लेखो।"

अमल रहस्यपूर्णभावे कहिल, "तुमि मने कर, आमि लिखते पारि ने?"

छाड़ा—अतिरिक्त। तुमि पारबे—तुम (लिख) सकोगे।

मशारिर चाले—मसहरी की छत पर। आगागोड़ा—शुरू से आखिर तक।

बाड़ाबाड़ि—ज्यादती। पनेरो—पन्द्रह।

चारु अत्यन्त उत्तेजित हइया कहिल, "तबे निश्चय तुमि किछु लिखेछ, आमाके देखाओ।"

अमल। आज थाक्, बउठान।

चारु। ना, आजइ देखाते हबे—माथा खाओ, तोमार लेखा निये एसोगे।

चारुके ताहार लेखा शोनाइबार अतिव्यग्रतातेइ अमलके एतदिन बाधा दितेछिल। पाछे चारु ना बोझे, पाछे ताहार भालो ना लागे, ए संकोच से ताड़ाइते पारितेछिल ना।

आज खाता आनिया एकटुखानि लाल हइया, एकटुखानि काशिया, पड़िते आरम्भ करिल। चारु गाछेर गुँड़िते हेलान दिया घासेर उपरे पा छड़ाइया शुनिते लागिल।

प्रबन्धेर विषयटा छिल 'आमार खाता'। अमल लिखियाछिल—'हे आमार शुभ्र खाता, आमार कल्पना एखनओ तोमाके स्पर्श करे नाइ। सूतिकागृहे भाग्यपुरुष प्रवेश करिबार पूर्वे शिशुर ललाटपट्टेर न्याय तुमि निर्मल, तुमि रहस्यमय। येदिन तोमार शेष पृष्ठार शेष छत्रे उपसंहार लिखिया दिब सेदिन आज कोथाय! तोमार एइ शुभ्र शिशुपत्रगुलि सेइ चिरदिनेर जन्य मसीचिह्नित समाप्तिर कथा आज स्वप्नेओ कल्पना करितेछे ना।'—इत्यादि अनेकखानि लिखियाछिल।

चारु तरुच्छायाय वसिया स्तब्ध हइया शुनिते लागिल। पड़ा शेष हइले क्षणकाल चुप करिया थाकिया कहिल, "तुमि आबार लिखते पार ना!"

सेदिन सेइ गाछेर तलाय अमल साहित्येर मादकरस प्रथम पान करिल; साकी छिल नवीना, रसनाओ छिल नवीन एवं

आज थाक—आज रहने दो। माथा खाओ—सौगन्ध है।
ताड़ाइते पारितेछिल ना—दूर नहीं कर पा रहा था।
खाता—कॉपी। काशिया—खाँसकर। गाछेर गुँड़िते हेलान दिया—पेड़ के तने के सहारे टिककर। पा छड़ाइया—पैर फैला कर।
शेष छत्रे—अन्तिम पंक्ति पर।

अपराह्णेर आलोक दीर्घ छायापाते रहस्यमय हइया आसियाछिल।

चारु बलिल, "अमल, गोटाकतक आमड़ा पेड़े निये येते हबे, नइले मन्दाके की हिसेब देब।"

मूढ़ मन्दाके ताहादेर पड़ाशुना एवं आलोचनार कथा बलिते प्रवृत्तिइ हय ना, सुतरां आमड़ा पाड़िया लइया याइते हइल।

द्वितीय परिच्छेद

बागानेर संकल्प ताहादेर अन्यान्य अनेक संकल्पेर न्याय सीमाहीन कल्पनाक्षेत्रेर मध्ये कखन हाराइया गेल ताहा अमल एवं चारु लक्ष्यओ करिते पारिल ना।

एखन अमलेर लेखाइ ताहादेर आलोचना ओ परामर्शेर प्रधान विषय हइया उठिल। अमल आसिया बले, "बोठान, एकटा बेश चमत्कार भाव माथाय एसेछे।"

चारु उत्साहित हइया उठे; बले, "चलो, आमादेर दक्षिणेर बारान्दाय—एखाने एखनइ मन्दा पान साजते आसबे।"

चारु काश्मीरि बारान्दाय एकटि जीर्ण बेतेर केदाराय आसिया बसे एवं अमल रेलिङेर निचेकार उच्च अंशेर उपर बसिया पा छड़ाइया देय।

अमलेर लिखिबार विषयगुलि प्रायइ सुनिर्दिष्ट नहे; ताहा परिष्कार करिया बला शक्त। गोलमाल करिया से याहा बलित ताहा स्पष्ट बुझा काहारओ साध्य नहे। अमल निजेइ बार बार बलित, "बोठान, तोमाके भालो बोझाते पारछि ने।"

गोटाकतक—कुछ-एक। पेड़े निये येते हबे—तोड़ ले जाने होंगे।
नइले—अन्यथा।
हाराइया गेल—खो गया।
माथाय एसेछे—दिमाग में आया है।
पान साजते—पान लगाने।
केदाराय—कुर्सी पर। पा छड़ाइया देय—पैर फैला देता।
बुझा—समझना।

चारु वलित, "ना, आमि अनेकटा वुझते पेरेछि ; तुमि एइटे लिखे फेलो, देरि कोरो ना।"

से खानिकटा वुझिया, खानिकटा ना वुझिया, अनेकटा कल्पना करिया, अनेकटा अमलेर व्यक्त करिवार आवेगेर द्वारा उत्तेजित हइया, मनेर मध्ये की-एकटा खाड़ा करिया तुलित, ताहातेइ से सुख पाइत एवं आग्रहे अधीर हइया उठित।

चारु सेइदिन विकालेइ जिज्ञासा करित, "कतटा लिखले।"

अमल वलित, "एरइ मध्ये कि लेखा याय।"

चारु परदिन सकाले ईषत् कलहेर स्वरे जिज्ञासा करित, "कइ, तुमि सेटा लिखले ना?"

अमल वलित, "रोसो, आर-एकटु भावि।"

चारु राग करिया वलित, "तवे याओ।"

विकाले सेइ राग घनीभूत हइया चारु यखन कथा वन्ध करिवार जो करित तखन अमल लेखा कागजेर एकटा अंश रुमाल वाहिर करिवार छले पकेट हइते एकटुखानि वाहिर करित।

मुहूर्ते चारुर मौन भाङिया गिया से वलिया उठित, "ऐ ये तुमि लिखेछ! आमाके फाँकि! देखाओ।"

अमल वलित, "एखनओ शेष हय नि, आर-एकटु लिखे शोनाव।"

चारु। ना, एखनइ शोनाते हवे।

अमल एखनइ शोनाइवार जन्यइ व्यस्त ; किन्तु चारुके किछुक्षण काड़ाकाड़ि ना कराइया से शोनाइत ना। तार परे अमल कागजखानि हाते करिया वसिया प्रथमटा एकटुखानि पाता

खानिकटा—कुछ।
विकालेइ—अपराह्न में ही।
एरइ मध्ये—इसी बीच। कइ—कहाँ।
रोसो—सबर करो। भावि—सोचूं।
कथा वन्ध करिवार जो करित—वातचीत वन्द कर देने का उपक्रम (तैयारी) करती। फाँकि—झाँसा, चकमा। व्यस्त—अधीर।
काड़ाकाड़ि—छीना-झपटी। पाता—पृष्ठ।

ठिक करिया लइत, पेनसिल लइया दुइ-एक जायगाय दुटो-एकटा संशोधन करिते थाकित, ततक्षण चारुर चित्त पुलकित कौतूहले जलभारनत मेघेर मतो सेइ कागज कयखानिर दिके झुँकिया रहित।

अमल दुइ-चारि प्याराग्राफ यखन याहा लेखे ताहा यतटुकुइ होक चारुके सद्य-सद्य शोनाइते हय। बाकि अलिखित अंशटुकु आलोचना एवं कल्पनाय उभयेर मध्ये मथित हइते थाके।

एतदिन दुजने आकाशकुसुमेर चयने नियुक्त छिल, एखन काव्यकुसुमेर चाष आरम्भ हइया उभये आर समस्तइ भुलिया गेल।

एकदिन अपराह्णे अमल कालेज हइते फिरिले ताहार पकेटटा किछु अतिरिक्त भरा बलिया वोध हइल। अमल यखन वाड़िते प्रवेश करिल, तखनइ चारु अन्तःपुरेर गवाक्ष हइते ताहार पकेटेर पूर्णतार प्रति लक्ष्य करियाछिल।

अमल अन्यदिन कालेज हइते फिरिया बाड़िर भितर आसिते देरि करित ना ; आज से ताहार भरा पकेट लइया वाहिरेर घरे प्रवेश करिल, शीघ्र आसिवार नाम करिल ना।

चारु अन्तःपुरेर सीमान्तदेशे आसिया अनेकबार तालि दिल, केह शुनिल ना। चारु किछु राग करिया ताहार बारान्दाय मन्मथ दत्तर एक बइ हाते करिया पड़िवार चेष्टा करिते लागिल।

मन्मथ दत्त नूतन ग्रंथकार। ताहार लेखार धरन अनेकटा अमलेरइ मतो, एइजन्य अमल ताहाके कखनओ प्रशंसा करित ना ; माझे माझे चारुर काछे ताहार लेखा विकृत उच्चारणे पड़िया विद्रूप करित। चारु अमलेर निकट हइते से वइ काड़िया लइया अवज्ञाभरे दूरे फेलिया दित।

कागज कयखानिर दिके—कुछ-एक कागजों की ओर।
यतटुकुइ—जितना भी।
चाष—खेती।
नाम करिल ना—नाम (ही) नहीं लिया।
धरन—शैली। वइ काड़िया लइया—पुस्तक छीनकर।

आज यखन अमलेर पदशब्द शुनिते पाइल तखन सेइ मन्मथ दत्तर 'कलकण्ठ' नामक वइ मुखेर काछे तुलिया धरिया चारु अत्यन्त एकाग्रभावे पड़िते आरम्भ करिल।

अमल वारान्दाय प्रवेश करिल, चारु लक्ष्यओ करिल ना। अमल कहिल, "की वोठान, की पड़ा हच्छे।"

चारुके निरुत्तर देखिया अमल चौकिर पिछने आसिया वइटा देखिल। कहिल, "मन्मथ दत्तर गलगण्ड।"

चारु कहिल, "आः, विरक्त कोरो ना, आमाके पड़ते दाओ।" पिठेर काछे दाँड़ाइया अमल व्यङ्गस्वरे पड़िते लागिल, "आमि तृण, क्षुद्र तृण, भाइ रक्ताम्वर राजवेशधारी अशोक, आमि तृणमात्र! आमार फुल नाइ, आमार छाया नाइ, आमार मस्तक आमि आकाशे तुलिते पारि ना, वसन्तेर कोकिल आमाके आश्रय करिया कुहुस्वरे जगत् माताय ना—तवु भाइ अशोक, तोमार ऐ पुष्पित उच्च शाखा हइते तुमि आमाके उपेक्षा करियो ना; तोमार पाये पड़िया आछि आमि तृण, तवु आमाके तुच्छ करियो ना।"

अमल एइटुकु वइ हइते पड़िया तार परे विद्रूप करिया वानाइया वलिते लागिल, "आमि कलार काँदि, काँचकलार काँदि, भाइ कुष्माण्ड, भाइ गृहचालविहारी कुष्माण्ड, आमि नितान्तइ काँचकलार काँदि।"

चारु कौतूहलेर ताड़नाय राग राखिते पारिल ना; हासिया उठिया वइ फेलिया दिया कहिल, "तुमि भारि हिंसुटे, निजेर

गलगण्ड—कण्ठमाला (रोग विशेष) अर्थात् वकवास। विरक्त—परेशान। जगत् माताय ना—जगत को उन्मत्त नहीं वनाती।

कलार काँदि—केले की घौद, गुच्छा। काँचकला—(तरकारी के रूप में व्यवहार्य) कच्चा केला। कुष्माण्ड—कुम्हड़ा। गृहचालविहारी—घर (झोंपड़ी) के छप्पर पर विहार करने वाले।

ताड़नाय—आवेग में। हिंसुटे—ईर्ष्यालु।

लेखा छाड़ा किछु पछन्द हय ना।"

अमल कहिल, "तोमार भारि उदारता, तृणटि पेलेओ गिले खेते चाओ।"

चारु। आच्छा मशाय, ठाट्टा करते हबे ना—पकेटे की आछे बेर करे फेलो।

अमल। की आछे आन्दाज करो।

अनेकक्षण चारुके विरक्त करिया अमल पकेट हइते 'सरोरुह' नामक विख्यात मासिक पत्र बाहिर करिल।

चारु देखिल, कागजे अमलेर सेइ 'खाता' नामक प्रबन्धटि बाहिर हइयाछे।

चारु देखिया चुप करिया रहिल। अमल मने करियाछिल, ताहार बोठान खुब खुशि हइबे। किन्तु खुशिर विशेष कोनो लक्षण ना देखिया बलिल, "सरोरुह पत्रे ये-से लेखा बेर हय ना।"

अमल एटा किछु बेशि बलिल। ये-कोनोप्रकार चलनसइ लेखा पाइले सम्पादक छाड़ेन ना। किन्तु अमल चारुके बुझाइया दिल, सम्पादक बड़ोइ कड़ा लोक, एक शो प्रबन्धेर मध्ये एकटा बाछिया लन।

शुनिया चारु खुशि हइबार चेष्टा करिते लागिल किन्तु खुशि हइते पारिल ना। किसे ये से मनेर मध्ये आघात पाइल ताहा बुझिया देखिबार चेष्टा करिल; कोनो संगत कारण बाहिर हइल ना।

अमलेर लेखा अमल एवं चारु दुजनेर सम्पत्ति। अमल लेखक एवं चारु पाठक। ताहार गोपनताइ ताहार प्रधान रस। सेइ लेखा सकले पड़िबे एवं अनेकेइ प्रशंसा करिबे,

---

पेलेओ—पाकर भी। गिले—निगलकर।
मशाय—महाशय। बेर करे फेलो—(जल्द) बाहर निकालो।
ये से लेखा—ऐसी-वैसी रचना।
चलनसइ—कामचलाऊ। छाड़ेन ना—छोड़ते नहीं। बाछिया लन—छाँट लेते हैं।
पड़िबे—पढ़ेंगे।

इहाते चारुके ये केन एतटा पीड़ा दितेछिल ताहा से भालो करिया वुझिल ना।

किन्तु लेखकेर आकाङ्क्षा एकटिमात्र पाठके अधिकदिन मेटे ना। अमल ताहार लेखा छापाइते आरम्भ करिल। प्रशंसाओ पाइल।

माझे माझे भक्तेर चिठिओ आसिते लागिल। अमल सेगुलि ताहार वोठानके देखाइत। चारु ताहाते खुशिओ हइल, कष्टओ पाइल। एखन अमलके लेखाय प्रवृत्त कराइबार जन्य एकमात्र ताहारइ उत्साह ओ उत्तेजनार प्रयोजन रहिल ना। अमल माझे माझे कदाचित् नामस्वाक्षरविहीन रमणीर चिठिओ पाइते लागिल। ताहा लइया चारु ताहाके ठाट्टा करित किन्तु सुख पाइत ना। हठात् ताहादेर कमिटिर रुद्ध द्वार खुलिया वाङ्लादेशेर पाठकमण्डली ताहादेर दुजनकार माझखाने आसिया दाँड़ाइल।

भूपति एकदिन अवसरकाले कहिल, "ताइ तो चारु, आमादेर अमल ये एमन भालो लिखते पारे ता तो आमि जानतुम ना।"

भूपतिर प्रशंसाय चारु खुशि हइल। अमल भूपतिर आश्रित, किन्तु अन्य आश्रितदेर सहित ताहार अनेक प्रभेद आछे, ए-कथा ताहार स्वामी बुझिते पारिले चारु येन गर्व अनुभव करे। ताहार भावटा एइ ये, 'अमलके केन ये आमि एतटा स्नेह आदर करि एतदिने तोमरा ताहा बुझिले; आमि अनेकदिन आगेइ अमलेर मर्यादा वुझियाछिलाम, अमल काहारओ अवज्ञार पात्र नहे।'

चारु जिज्ञासा करिल, "तुमि तार लेखा पड़ेछ?"

भूपति कहिल, "हाँ—ना, ठिक पड़ि नि। समय पाइ नि। किन्तु आमादेर निशिकान्त पड़े खुब प्रशंसा करछिल। से वाङ्ला लेखा वेश वोझे।"

मेटे ना—मिटती नहीं, वुझती नहीं। माझे माझे—बीच-बीच में। आदर—लाड़। मर्यादा—कीमत।
वेश वोझे—अच्छी तरह समझता है।

भूपतिर मने अमलेर प्रति एकटि सम्मानेर भाव जागिया उठे, इहा चारुर एकान्त इच्छा।

तृतीय परिच्छेद

उमापद भूपतिके ताहार कागजेर सङ्गे अन्य पाँचरकम उपहार दिबार कथा बुझाइतेछिल। उपहारे ये की करिया लोकसान काटाइया लाभ हइते पारे ताहा भूपति किछुतेइ बुझिते पारितेछिल ना।

चारु एकबार घरेर मध्ये प्रवेश करियाइ उमापदके देखिया चलिया गेल। आबार किछुक्षण घुरिया फिरिया घरे आसिया देखिल, दुइजने हिसाब लइया तर्के प्रवृत्त।

उमापद चारुर अधैर्य देखिया कोनो छुता करिया बाहिर हइया गेल। भूपति हिसाब लइया माथा घुराइते लागिल।

चारु घरे ढुकिया बलिल, "एखनओ बुझि तोमार काज शेष हल ना। दिनरात ऐ एकखाना कागज निये ये तोमार की करे काटे, आमि ताइ भाबि।"

भूपति हिसाब सराइया राखिया एकटुखानि हासिल। मने मने भाबिल, "वास्तविक, चारुर प्रति आमि मनोयोग दिबार समय पाइ ना, बड़ो अन्याय। ओ बेचारार पक्षे समय काटाइबार किछुइ नाइ।"

भूपति स्नेहपूर्णस्वरे कहिल, "आज ये तोमार पड़ा नेइ! मास्टारटि बुझि पालियेछेन? तोमार पाठशालार सब उलटो नियम—छात्रीटि पुँथिपत्र निये प्रस्तुत, मास्टार पलातक! आजकाल

छुता करिया—बहाना बना कर। माथा घुराइते लागिल—सिर मारने, खपाने लगा।

ढुकिया—घुस कर। बुझि—शायद।

हिसाब सराइया—हिसाब को अलग हटा कर।

पड़ा—पढ़ाई-लिखाई।

अमल तोमाके आगेकार मतो नियमित पड़ाय ब'ले तो बोध हय ना।"

चारु कहिल, "आमाके पड़िये अमलेर समय नष्ट करा कि उचित। अमलके तुमि बुझि एकजन सामान्य प्राइभेट टिउटार पेयेछ?"

भूपति चारुर कटिदेश धरिया काछे टानिया कहिल, "एटा कि सामान्य प्राइभेट टिउटारि हल। तोमार मतो बउठानके यदि पड़ाते पेतुम ता हले—"

चारु। इस् इस्, तुमि आर बोलो ना। स्वामी हयेइ रक्षे नेइ तो आरओ किछु!

भूपति ईषत् एकटु आहत हइया कहिल, "आच्छा, काल थेके आमि निश्चय तोमाके पड़ाब। तोमार बइगुलो आनो देखि, की तुमि पड़ एकबार देखे निइ।"

चारु। ढेर हयेछे, तोमार आर पड़ाते हबे ना। एखनकार मतो तोमार खबरेर कागजेर हिसेबटा एकटु राखबे? एखन आर-कोनो दिके मन दिते पारबे कि ना बलो।

भूपति कहिल, "निश्चय पारब। एखन तुमि आमार मनके ये दिके फेराते चाओ सेइ दिकेइ फिरबे।"

चारु। आच्छा बेश, ताहले अमलेर एइ लेखाटा एकबार पड़े देखो केमन चमत्कार हयेछे। सम्पादक अमलके लिखेछे एइ लेखा पड़े नवगोपालबाबु ताके बाङलार रास्किन नाम दियेछेन।

शुनिया भूपति किछु संकुचितभावे कागजखाना हाते करिया लइल। खुलिया देखिल, लेखाटिर नाम 'आषाढ़ेर चाँद'। गत दुइ सप्ताह धरिया भूपति भारत-गवर्मेण्टेर बजेट-समालोचना

पड़ाय—पढ़ाता है। पेयेछ—समझा है। स्वामी......किछु—पति हो इसी में भर पाया कुछ और भी होते तो न जाने क्या होता।

ढेर हयेछे—बस, बहुत हुआ। एखनकार मतो—फिलहाल। राखबे—अलग हटाओगे।

लइया बड़ो-बड़ो अङ्कपात करितेछिल ; सेइ-सकल अङ्क बहुपद कीटेर मतो ताहार मस्तिष्केर नाना विवरेर मध्ये सञ्चरण करिया फिरितेछिल—एमनसमये हठात् बाङला भाषाय 'आषाढ़ेर चाँद' प्रबन्ध आगागोड़ा पड़िबार जन्य ताहार मन प्रस्तुत छिल ना। प्रबन्धटिओ नितान्त छोटो नहे।

लेखाटा एइरूपे शुरू हइयाछे—'आज केन आषाढ़ेर चाँद साराराात मेघेर मध्ये एमन करिया लुकाइया बेड़ाइतेछे। येन स्वर्गलोक हइते से की चुरि करिया आनियाछे, येन ताहार कलङ्क ढाकिबार स्थान नाइ। फाल्गुन मासे यखन आकाशेर एकटि कोणेओ मुष्टिपरिमाण मेघ छिल ना तखन तो जगतेर चक्षेर सम्मुखे से निर्लज्जेर मतो उन्मुक्त आकाशे आपनाके प्रकाश करियाछिल—आर आज ताहार सेइ ढलढल हासिखानि—शिशुर स्वप्नेर मतो, प्रियार स्मृतिर मतो, सुरेश्वरी शचीर अलकविलम्बित मुक्तार मालार मतो—'

भूपति माथा चुलकाइया कहिल, "बेश लिखेछे। किन्तु आमाके केन। ए-सब कवित्व कि आमि बुझि।"

चारु संकुचित हइया भूपतिर हात हइते कागजखाना काड़िया कहिल, "तुमि तबे की बोझ।"

भूपति कहिल, "आमि संसारेर लोक, आमि मानुष बुझि।"

चारु कहिल, "मानुषेर कथा बुझि साहित्येर मध्ये लेखे ना?"

भूपति। भुल लेखे। ता छाड़ा मानुष यखन सशरीरे वर्तमान तखन बानानो कथार मध्ये ताके खुँजे बेड़ाबार दरकार?

बलिया चारुलतार चिबुक धरिया कहिल, "एइ येमन आमि

अंकपात करिते छिल—संख्याएँ लिख रहा था। आगागोड़ा—आदि से अन्त तक।

कोणेओ—कोने में भी। ढलढल हासिखानि—तरल हँसी।

माथा चुलकाइया—सिर खुजाकर।

काड़िया—छीनकर।

बानानो कथार—गढ़ी हुई कथा में। खुँजे बेड़ाबार दरकार—खोजते फिरने की (क्या) आवश्यकता।

तोमाके वुझि, किन्तु सेजन्य कि 'मेघनादवध' 'कविकङ्कणचण्डी' आगागोड़ा पड़ार दरकार आछे।"

भूपति काव्य वोझे ना वलिया अहंकार करित। तवु अमलेर लेखा भालो करिया ना पड़ियाओ ताहार प्रति मने मने भूपतिर एकटा श्रद्धा छिल। भूपति भावित, "वलिवार कथा किछुइ नाइ अथच एत कथा अनर्गल वानाइया वला से तो आमि माथा कुटिया मरिलेओ पारिताम ना। अमलेर पेटे ये एत क्षमता छिल ताहा के जानित।"

भूपति निजेर रसज्ञता अस्वीकार करित किन्तु साहित्येर प्रति ताहार कृपणता छिल ना। दरिद्र लेखक ताहाके धरिया पड़िले वइ छापिवार खरच भूपति दित, केवल विशेष करिया वलिया दित, "आमाके येन उत्सर्ग करा ना हय।" वाङ्ला छोटो वड़ो समस्त साप्ताहिक एवं मासिक पत्र, ख्यात अख्यात पाठ्य अपाठ्य समस्त वइ से किनित। वलित, "एके पड़ि ना, तार परे यदि ना किनि तवे पापओ करिव प्रायश्चित्तओ हइवे ना।" पड़ित ना वलियाइ मन्द वइयेर प्रति ताहार लेशमात्र विद्वेष छिल ना, सेइजन्य ताहार वाङ्ला लाइव्रेरी ग्रन्थे परिपूर्ण छिल।

अमल भूपतिर इङ्राजि प्रुफ-संशोधनकार्ये साहाय्य करित; कोनो एकटा कापिर दुर्वोध्य हस्ताक्षर देखाइया लइवार जन्य से एकताड़ा कागजपत्र लइया घरे ढुकिल।

भूपति हासिया कहिल, "अमल, तुमि आषाढ़ेर चाँद आर भाद्र मासेर पाका तालेर उपर यत खुशि लेखो, आमि ताते कोनो आपत्ति करि ने—आमि कारओ स्वाधीनताय हात दिते चाइ ने—किन्तु आमार स्वाधीनताय केन हस्तक्षेप। सेगुलो आमाके ना पड़िये छाड़वेन ना, तोमार वोठानेर ए की अत्याचार।"

माथा कुटिया मरिलेओ—मगज मारने पर भी।
किनित—खरीदता। एके पड़ि ना—एक तो पढ़ता नहीं।
एकताड़ा—एक वण्डल।
पाका तालेर उपर—पके हुए ताड़ के फलों पर।

अमल हासिया कहिल, "ताइ तो बोठान, आमार लेखागुलो निये तुमि ये दादाके जुलुम करबार उपाय बेर करबे, एमन जानले आमि लिखतुम ना।"

साहित्यरसे विमुख भूपतिर काछे आनिया ताहार अत्यन्त दरदेर लेखागुलिके अपदस्थ कराते अमल मने मने चारुर उपर राग करिल एवं चारु तत्क्षणात् ताहा बुझिते पारिया वेदना पाइल। कथाटाके अन्य दिके लइया याइबार जन्य भूपतिके कहिल, "तोमार भाइटिर एकटि बिये दिये दाओ देखि, ता हले आर लेखार उपद्रव सह्य करते हबे ना।"

भूपति कहिल, "एखनकार छेलेरा आमादेर मतो निर्बोध नय। तादेर यत कवित्व लेखाय, काजेर बेलाय सेयाना। कइ, तोमार देओरके तो बिये करते राजि कराते पारले ना।"

चारु चलिया गेले भूपति अमलके कहिल, "अमल, आमाके एइ कागजेर हाङ्गामे थाकते हय, चारु बेचारा बड़ो एकला पड़ेछे। कोनो काजकर्म नेइ, माझे माझे आमार एइ लेखबार घरे उँकि मेरे चले याय। की करब बलो। तुमि, अमल, ओके एकटु पड़ाशुनोय नियुक्त राखते पारले भालो हय। माझे माझे चारुके यदि इङ्राजि काव्य थेके तर्जमा करे शोनाओ ता हले ओर उपकारओ हय, भालोओ लागे। चारुर साहित्ये बेश रुचि आछे।"

अमल कहिल, "ता आछे। बोठान यदि आरओ एकटु पड़ाशुनो करेन ता हले आमार विश्वास उनि निजे बेश भालो लिखते पारबेन।"

भूपति हासिया कहिल, "ततटा आशा करि ने, किन्तु चारु बाङ्ला लेखार भालोमन्द आमार चेये ढेर बुझते पारे।"

उपाय बेर करबे—उपाय खोज लोगी।

दरदेर—मार्मिक। बिये दिये दाओ—विवाह कर दो। सेयाना—स्याना।

उँकि मेरे—झाँक कर।

भालोमन्द—भला-बुरा।

अमल। ओर कल्पनाशक्ति वेश आछे, स्त्रीलोकेर मध्ये एमन देखा याय ना।

भूपति। पुरुषेर मध्येओ कम देखा याय, तार साक्षी आमि। आच्छा तुमि तोमार बउठाकरुनके यदि गड़े तुलते पार आमि तोमाके पारितोषिक देब।

अमल। की देबे शुनि।

भूपति। तोमार बउठाकरुनेर जुड़ि एकटि खुँजे पेते एने देब।

अमल। आवार ताके निये पड़ते हबे! चिरजीवन कि गड़े तुलतेइ काटाब।

दुटि भाइ आजकालकार छेले, कोनो कथा ताहादेर मुखे बाधे ना।

चतुर्थ परिच्छेद

पाठकसमाजे प्रतिपत्ति लाभ करिया अमल एखन माथा तुलिया उठियाछे। आगे से स्कुलेर छात्रटिर मतो थाकित, एखन से येन समाजेर गण्यमान्य मानुषेर मतो हइया उठियाछे। माझे माझे सभाय साहित्यप्रबन्ध पाठ करे—सम्पादक ओ सम्पादकेर दूत ताहार घरे आसिया वसिया थाके, ताहाके निमन्त्रण करिया खाओयाय, नाना सभार सभ्य ओ सभापति हइबार जन्य ताहार निकट अनुरोध आसे, भूपतिर घरे दासदासी-आत्मीयस्वजनेर चक्षे ताहार प्रतिष्ठास्थान अनेकटा उपरे उठिया गेछे।

मन्दाकिनी एतदिन ताहाके विशेष एकटा केह बलिया मने करे नाइ। अमल ओ चारुर हास्यालाप-आलोचनाके से छेले-

---

गड़े तुलते पार—गढ़ सको।

जुड़ि—जोड़ी (दार)। **खुंजे पेते**—खोज-खाजकर। **निये पड़ते हबे**—ले कर भुगतना पड़ेगा।

मुखे बाधे ना—(जो बात) मुंह में आती है कह डालते हैं।

प्रतिपत्ति—प्रतिष्ठा। **सभ्य**—सभासद।

छेलेमानुषि—लड़कपन।

मानुषि वलिया उपेक्षा करिया पान साजित ओ घरेर काजकर्म करित ; निजेके से उहादेर चेये श्रेष्ठ एवं संसारेर पक्षे आवश्यक बलियाइ जानित।

अमलेर पान खाओया अपरिमित छिल। मन्दार उपर पान साजिबार भार थाकाते से पानेर अयथा अपव्यये विरक्त हइत। अमले चारुते षड़यन्त्र करिया मन्दार पानेर भाण्डार प्रायइ लुठ करिया आना ताहादेर एकटा आमोदेर मध्ये छिल। किन्तु एइ शौखिन चोरदुटिर चौर्यपरिहास मन्दार काछे आमोद-जनक बोध हइत ना।

आसल कथा, एकजन आश्रित अन्य आश्रितके प्रसन्नचक्षे देखे ना। अमलेर जन्य मन्दाके येटुकु गृहकर्म अतिरिक्त करिते हइत सेटुकुते से येन किछु अपमान बोध करित। चारु अमलेर पक्षपाती छिल बलिया मुख फुटिया किछु बलिते पारित ना, किन्तु अमलके अवहेला करिबार चेष्टा ताहार सर्वदाइ छिल। सुयोग पाइलेइ दासदासिदेर काछेओ गोपने अमलेर नामे खोंचा दिते से छाड़ित ना। ताहाराओ योग दित।

किन्तु अमलेर यखन अभ्युत्थान आरम्भ हइल तखन मन्दार एकटु चमक लागिल। से अमल एखन आर नाइ। एखन तार संकुचित नम्रता एकेबारे घुचिया गेछे, अपरके अवज्ञा करिबार अधिकार एखन येन ताहारइ हाते। संसारे प्रतिष्ठा प्राप्त हइया ये पुरुष असंशये अकुण्ठितभावे निजेके प्रचार करिते पारे, ये लोक एकटा निश्चित अधिकार लाभ करियाछे, सेइ समर्थ पुरुष सहजेइ नारीर दृष्टि आकर्षित करिते पारे। मन्दा यखन देखिल अमल चारिदिक हइतेइ श्रद्धा पाइतेछे तखन सेओ अमलेर

पान साजित—पान लगाती।

पान साजिबार भार थाकाते—पान लगाने का भार होने से। **लुठ**—लूट। **शौखिन**—शौकिया। **चोरदुटिर**—दोनों चोरों का।

खोंचा दिते से छाड़ित ना—उकसाये बिना न रहती।

चमक लागिल—चौंकी। **घुचिया गेछे**—विलुप्त हो गई है।

उच्च मस्तकेर दिके मुख तुलिया चाहिल। अमलेर तरुण मुखे नवगौरवेर गर्वोज्ज्वल दीप्ति मन्दार चक्षे मोह आनिल; से येन अमलके नूतन करिया देखिल।

एखन आर पान चुरि करिवार प्रयोजन रहिल ना। अमलेर ख्यातिलाभे चारुर एइ आर-एकटा लोकसान; ताहादेर षड़यन्त्रेर कौतुकबन्धनटुकु विच्छिन्न हइया गेल; पान एखन अमलेर काछे आपनि आसिया पड़े, कोनो अभाव हय ना।

ताहा छाड़ा, ताहादेर दुइ जने गठित दल हइते मन्दाकिनीके नाना कौशले दूरे राखिया ताहारा ये आमोद बोध करित ताहाओ नष्ट हइवार उपक्रम हइयाछे। मन्दाके तफाते राखा कठिन हइल। अमल ये मने करिबे चारुइ ताहार एकमात्र बन्धु ओ समजदार, इहा मन्दार भालो लागित ना। पूर्वकृत अवहेला से सुदे आसले शोध दिते उद्यत। सुतरां अमले चारुते मुखोमुखि हइलेइ मन्दा कोनो छले माझखाने आसिया छाया फेलिया ग्रहण लागाइया दित। हठात् मन्दार एइ परिवर्तन लइया चारु ताहार असाक्षाते ये परिहास करिबे से अवसरटुकु पाओया शक्त हइल।

मन्दार एइ अनाहूत प्रवेश चारुर काछे यत विरक्तिकर बोध हइत अमलेर काछे ततटा बोध हय नाइ, एकथा बला बाहुल्य। विमुख रमणीर मन क्रमश ताहार दिके ये फिरितेछे, इहाते भितरे-भितरे से एकटा आग्रह अनुभव करितेछिल।

किन्तु चारु यखन दूर हइते मन्दाके देखिया तीव्र मृदु स्वरे बलित, "ऐ आसछेन" तखन अमलओ बलित, "ताइ तो, ज्वालाले देखछि।" पृथिवीर अन्य सकल सङ्गेर प्रति असहिष्णुता प्रकाश करा ताहादेर एकटा दस्तुर छिल; अमल सेटा हठात् की बलिया छाड़े। अवशेषे मन्दाकिनी निकटवर्तिनी हइले अमल येन बल-

---

तफाते राखा—दूर रखना। बन्धु—मित्र। सुदे आसले—ब्याज सहित। मुखोमुखि—साक्षात्कार।
आग्रह—व्यग्रता। ज्वालाले देखछि—इसने परेशान किया।

पूर्वक सौजन्य करिया बलित, "तार परे, मन्दा बउठान, आज तोमार पानेर बाटाय बाटपाड़िर लक्षण किछु देखले!"

मन्दा। यखन चाइलेइ पाओ, भाइ, तखन चुरि करिबार दरकार!

अमल। चेये पाओयार चेये ताते सुख बेशि।

मन्दा। तोमरा की पड़छिले पड़ो-ना, भाइ। थामले केन। पड़ा शुनते आमार बेश लागे।

इतिपूर्वे पाठानुरागेर जन्य ख्याति अर्जन करिते मन्दार किछु-मात्र चेष्टा देखा याय नाइ, किन्तु 'कालोहि बलवत्तरः'।

चारुर इच्छा नहे, अरसिका मन्दार काछे अमल पड़े, अमलेर इच्छा मन्दाओ ताहार लेखा शोने।

चारु। अमल कमलाकान्तेर दप्तरेर समालोचना लिखे एनेछे, से कि तोमार—

मन्दा। हलेमइ बा मुर्खु, तबु शुनले कि एकेबारेइ बुझते पारि ने।

एखन आर-एकदिनेर कथा अमलेर मने पड़िल। चारुते मन्दाते बिन्ति खेलितेछे, से ताहार लेखा हाते करिया खेलासभाय प्रवेश करिल। चारुके शुनाइबार जन्य से अधीर, खेला भाङितेछे ना देखिया से विरक्त। अवशेषे बलिया उठिल, "तोमरा तबे खेलो बउठान, आमि अखिलबाबुके लेखाटा शुनिये आसि गे।"

चारु अमलेर चादर चापिया कहिल, "आः, बोसो-ना, याओ कोथाय।" बलिया ताड़ाताड़ि हारिया खेला शेष करिया दिल।

मन्दा बलिल, "तोमादेर पड़ा आरम्भ होबे बुझि? तबे आमि उठि।"

पानेर बाटाय बाटपाड़िर लक्षण—पानदान म बटमारी के लक्षण।

चेये पाबार चेये—माँग कर पाने की अपेक्षा। कमलाकान्तेर दप्तर—बंकिम बाबू की एक पुस्तक।

हलेमइ वा मुर्खु—मूर्ख ही सही।

बिन्ति खेलितेछे—ताश का एक विशेष खेल खेल रहे थे। खेला भाङितेछे ना—खेल खत्म नहीं हो रहा।

चारु नम्रता करिया कहिल, "केन, तुमिओ शोनो-ना, भाइ।"

मन्दा। ना भाइ, आमि तोमादेर ओ-सब छाइपाँश किछुइ बुझि ने ; आमार केवल घुम पाय !—बलिया से अकाले खेलाभङ्गे उभयेर प्रति अत्यन्त विरक्त हइया चलिया गेल।

सेइ मन्दा आज कमलाकान्तेर समालोचना शुनिवार जन्य उत्सुक। अमल कहिल, "ता बेश तो, मन्दा बउठान, तुमि शुनबे से तो आमार सौभाग्य।" बलिया पात उल्टाइया आबार गोड़ा हइते पड़िबार उपक्रम करिल ; लेखार आरम्भे से अनेकटा परिमाण रस छड़ाइयाछिल, सेटुकु बाद दिया पड़िते ताहार प्रवृत्ति हइल ना।

चारु ताड़ाताड़ि बलिल, "ठाकुरपो, तुमि ये बलेछिले जाह्नवी लाइब्रेरि थेके पुरोनो मासिक पत्र कतकगुलो एने देबे।"

अमल। से तो आज नय।

चारु। आजइ तो। बेश। भुले गेछ बुझि।

अमल। भुलब केन। तुमि ये बलेछिले—

चारु। आच्छा बेश, एनो ना। तोमरा पड़ो। आमि याइ, परेशके लाइब्रेरिते पाठिये दिइ गे।—बलिया चारु उठिया पड़िल।

अमल विपद आशङ्का करिल। मन्दा मने-मने बुझिल एवं मुहूर्तेर मध्येइ चारुर प्रति ताहार मन विषाक्त हइया उठिल। चारु चलिया गेले अमल यखन उठिबे कि ना भाविया इतस्तत करितेछिल मन्दा ईषत् हासिया कहिल, "याओ भाइ, मान भाङाओ गे ; चारु राग करेछे। आमाके लेखा शोनाले मुशकिले पड़बे।"

इहार परे अमलेर पक्षे ओठा अत्यन्त कठिन। अमल चारुर

छाइपाँश—खाक-धूल। घुम पाय—नींद आती है।
छड़ाइयाछिल—बखेरा था, उँडेला था।
ठाकुरपो—देवर।
मान भाङाओ—(जा कर) मान भंजन करो।
ओठा—उठना।

प्रति किछु रुष्ट हइया कहिल, "केन, मुशकिल किसेर।" बलिया लेखा विस्तृत करिया धरिया पड़िबार उपक्रम करिल।

मन्दा दुइ हाते ताहार लेखा आच्छादन करिया बलिल, "काज नेइ, भाइ, पोड़ो ना।"—बलिया, येन अश्रु सम्वरण करिया अन्यत्र चलिया गेल।

पञ्चम परिच्छेद

चारु निमन्त्रणे गियाछिल। मन्दा घरे बसिया चुलेर दड़ि बिनाइतेछिल। "बउठान" बलिया अमल घरेर मध्ये प्रवेश करिल। मन्दा निश्चय जानित ये, चारुर निमन्त्रणे याओयार सम्वाद अमलेर अगोचर छिल ना; हासिया कहिल, "आहा अमलबाबु, काके खुँजते एसे कार देखा पेले। एमनि तोमार अदृष्ट।" अमल कहिल, "बाँ-दिकेर बिचालिओ येमन डान-दिकेर बिचालिओ ठिक तेमनि, गर्दभेर पक्षे दुइइ समान आदरेर।" बलिया सेइखाने बसिया गेल।

अमल। मन्दा बोठान, तोमादेर देशेर गल्प वलो, आमि शुनि।

लेखार विषय संग्रह करिबार जन्य अमल सकलेर सब कथा कौतूहलेर सहित शुनित। सेइ कारणे मन्दाके एखन से आर पूर्वेर न्याय सम्पूर्ण उपेक्षा करित ना। मन्दार मनस्तत्त्व, मन्दार इतिहास, एखन ताहार काछे औत्सुक्यजनक। कोथाय ताहार जन्मभूमि, ताहादेर ग्रामटि किरूप, छेलेवेला केमन करिया काटित, विवाह हइल कबे, इत्यादि सकल कथाइ से खुँटिया खुँटिया जिज्ञासा करिते लागिल। मन्दार क्षुद्र जीवनवृत्तान्त सम्बन्धे एत कौतूहल केह कखनओ प्रकाश करे नाइ। मन्दा आनन्दे निजेर कथा

पोड़ो ना—पढ़ो मत।

चुलेर दड़ि बिनाइतेछिल—केशों की डोरी गुह रही थी। **बिचालि**—धान का पुआल।

खुँटिया खुँटिया—कुरेद-कुरेद कर। **केह**—कोई, किसी ने।

बकिया याइते लागिल ; माझे माझे कहिल, "की बकछि तार ठिक नाइ।"

अमल उत्साह दिया कहिल, "ना, आमार बेश लागछे, बले याओ।" मन्दार बापेर एक काना गोमस्ता छिल, से ताहार द्वितीय पक्षेर स्त्रीर सङ्गे झगड़ा करिया एक-एकदिन अभिमाने अनशनव्रत ग्रहण करित, अवशेषे क्षुधार ज्वालाय मन्दादेर बाड़िते किरूपे गोपने आहार करिते आसित एवं दैवात् एकदिन स्त्रीर काछे किरूपे धरा पड़ियाछिल, सेइ गल्प यखन हइतेछे एवं अमल मनोयोगेर सहित शुनिते शुनिते सकौतुके हासितेछे एमन समय चारु घरेर मध्ये आसिया प्रवेश करिल।

गल्पेर सूत्र छिन्न हइया गेल। ताहार आगमने हठात् एकटा जमाट सभा भाङिया गेल, चारु ताहा स्पष्टइ बुझिते पारिल।

अमल जिज्ञासा करिल, "बउठान, एत सकाल सकाल फिरे एले ये।"

चारु कहिल, "ताइ तो देखछि। बेशि सकाल सकालइ फिरेछि।" बलिया चलिया याइबार उपक्रम करिल।

अमल कहिल, "भालोइ करेछ, बाँचियेछ आमाके। आमि भावछिलुम, कखन ना जानि फिरबे। मन्मथ दत्तर 'सन्ध्यार पाखि' बले नूतन बइटा तोमाके पड़े शोनाब बले एनेछि।"

चारु। एखन थाक्, आमार काज आछे।

अमल। काज थाके तो आमाके हुकुम करो, आमि करे दिच्छि।

चारु जानित अमल आज बइ किनिया आनिया ताहाके

बेश लागछे—अच्छा लग रहा है। द्वितीय पक्षेर स्त्री—दूसरी पत्नी।
जमाट......भाङिया गेल—जमी हुई सभा उखड़ गई।
सकाल सकाल—जल्दी।
बाँचियेछ आमाके—मेरी जान बचा दी।
किनिया—खरीदकर।

शुनाइते आसिबे; चारु ईर्षा जन्माइबार जन्य, मन्मथर् लेखार प्रचुर प्रशंसा करिबे एवं अमल सेइ बइटाके विकृत करिया पड़िया विद्रूप करिते थाकिबे। एइ-सकल कल्पना करियाइ अधैर्यवशत से अकाले निमन्त्रणगृहेर समस्त अनुनयविनय लङ्घन करिया असुखेर छुताय गृहे चलिया आसितेछे। एखन बारबार मने करितेछे, "सेखाने छिलाम भालो, चलिया आसा अन्याय हइयाछे।"

मन्दाओ तो कम बेहाया नय। एकला अमलेर सहित एकघरे बसिया दाँत बाहिर करिया हासितेछे। लोके देखिले की बलिबे। किन्तु मन्दाके ए कथा लइया भर्त्सना करा चारुर पक्षे बड़ो कठिन। कारण, मन्दा यदि ताहारइ दृष्टान्तेर उल्लेख करिया जबाब देय। किन्तु से हइल एक, आर ए हइल एक। से अमलके रचनाय उत्साह देय, अमलेर सङ्गे साहित्यालोचना करे, किन्तु मन्दार तो से उद्देश्य आदबेइ नय। मन्दा निःसन्देहइ सरल युवकके मुग्ध करिबार जन्य जाल विस्तार करितेछे। एइ भयंकर विपद हइते बेचारा अमलके रक्षा करा ताहारइ कर्तव्य। अमलके एइ मायाविनीर मतलब केमन करिया बुझाइबे। बुझाइले ताहार प्रलोभनेर निवृत्ति ना हइया यदि उलटा हय।

बेचारा दादा। तिनि ताँहार स्वामीर कागज लइया दिन रात खाटिया मरितेछेन, आर मन्दा किना कोणटिते बसिया अमलके भुलाइबार जन्य आयोजन करितेछे। दादा बेश निश्चिन्त आछेन। मन्दार उपरे तार अगाध विश्वास। ए-सकल व्यापार चारु की करिया स्वचक्षे देखिया स्थिर थाकिबे। भारि अन्याय।

किन्तु आगे अमल बेश छिल, येदिन हइते लिखिते आरम्भ करिया नाम करियाछे सेइदिन हइतेइ यत अनर्थ देखा याइतेछे।

असुखेर छुताय—अस्वस्थता का बहाना कर।

किन्तु से......एक—किन्तु वह बात अलग है और यह अलग। **आदबेइ**—बिल्कुल ही। **बुझाइबे**—समझाएगी।

खाटिया मरितेछेन—काम करते-करते मरे जा रहे हैं। **कोणटिते**—कोने में। **यत**—सब।

चारुइ तो ताहार लेखार गोड़ा। कुक्षणे से अमलके रचनाय उत्साह दियाछिल। एखन कि आर अमलेर 'परे ताहार पूर्वेर मतो जोर खाटिवे। एखन अमल पाँचजनेर आदरेर स्वाद पाइयाछे, अतएव एकजनके बाद दिले ताहार आसे याय ना।

चारु स्पष्टइ बुझिल, ताहार हात हइते गिया पाँचजनेर हाते पड़िया अमलेर समूह विपद। चारुके अमल एखन निजेर ठिक समकक्ष बलिया जाने ना; चारुके से छाड़ाइया गेछे। एखन से लेखक, चारु पाठक। इहार प्रतिकार करितेइ हइबे।

आहा, सरल अमल, मयाविनी मन्दा, बेचारा दादा।

षष्ठ परिच्छेद

सेदिन आषाढ़ेर नवीन मेघे आकाश आच्छन्न। घरेर मध्ये अन्धकार घनीभूत हइयाछे बलिया चारु ताहार खोला जानालार काछे एकान्त झुँकिया पड़िया की एकटा लिखितेछे।

अमल कखन निःशब्दपदे पश्चाते आसिया दाँड़ाइल ताहा से जानिते पारिल ना। बादलार स्निग्ध आलोके चारु लिखिया गेल, अमल पड़िते लागिल। पाशे अमलेरइ दुइ-एकटा छापानो लेखा खोला पड़िया आछे; चारुर काछे सेइगुलिइ रचनार एकमात्र आदर्श।

"तबे ये बल, तुमि लिखते पार ना!" हठात् अमलेर कण्ठ शुनिया चारु अत्यन्त चमकिया उठिल; ताड़ाताड़ि खाता लुकाइया फेलिल; कहिल, "तोमार भारि अन्याय।"

अमल। की अन्याय करेछि।

गोड़ा—आरम्भ। जोर खाटिबे—जोर, वश चलेगा। बाद दिले—छोड़ देने से।

समूह—अत्यधिक, चरम। छाड़ाइया गेछे—पीछे छोड़ गया है।

एकान्त......पड़िया—बिल्कुल झुक कर।

छापानो—छपे हुए, प्रकाशित।

खाता—कॉपी,। अन्याय—ज्यादती, अनुचित कार्य।

चारु। नुकिये नुकिये देखछिले केन।

अमल। प्रकाश्ये देखते पाइ ने ब'ले।

चारु ताहार लेखा छिँड़िया फेलिबार उपक्रम करिल। अमल फस् करिया ताहार हात हइते खाता काड़िया लइल। चारु कहिल, "तुमि यदि पड़ तोमार सङ्गे जन्मेर मतो आड़ि।"

अमल। यदि पड़ते बारण कर ता हले तोमार सङ्गे जन्मेर मतो आड़ि।

चारु। आमार माथा खाओ, ठाकुरपो, पोड़ो ना।

अवशेषे चारुकेइ हार मानिते हइल। कारण, अमलके ताहार लेखा देखाइबार जन्य मन छट्फट् करितेछिल, अथच देखाइबार वेलाय ये ताहार एत लज्जा करिबे ताहा से भाबे नाइ। अमल यखन अनेक अनुनय करिया पड़िते आरम्भ करिल तखन लज्जाय चारुर हात-पा बरफेर मतो हिम हइया गेल। कहिल, "आमि पान निये आसि गे।" बलिया ताड़ाताड़ि पाशेर घरे पान साजिबार उपलक्ष करिया चलिया गेल।

अमल पड़ा साङ्ग करिया चारुके गिया कहिल, "चमत्कार हयेछे।"

चारु पाने खयेर दिते भुलिया कहिल, "याओ! आर ठाट्टा करते हबे ना। दाओ, आमार खाता दाओ।"

अमल कहिल, "खाता एखन देब ना, लेखाटा कपि करे निये कागजे पाठाब।"

चारु। हाँ, कागजे पाठावे बइ की! से हबे ना।

चारु भारि गोलमाल करिते लागिल। अमलओ किछुते

नुकिये नुकिये—लुक-छिपकर।

छिँड़िया फेलिबार—फाड़कर फेंक देने का। काड़िया लइल—छीन लिया। जन्मेर मतो आड़ि—जन्म-भर के लिए खुट्टी, अनवन।

माथा खाओ—सौगन्ध है। ठाकुरपो—देवर।

भावे नाइ—सोचा नहीं था। उपलक्ष—बहाना।

खयेर—कत्था। बइकि—क्यो नही (अस्वीकृति सूचक)।

गोलमाल—झमेला।

छाड़िल ना। से यखन वारवार शपथ करिया कहिल "कागजे दिवार उपयुक्त हइयाछे" तखन चारु येन नितान्त हताश हइया कहिल, "तोमार सङ्गे तो पेरे ओठवार जो नेइ! येटा धरवे से आर किछुतेइ छाड़वे ना!"

अमल कहिल, "दादाके एकवार देखाते हवे।"

शुनिया चारु पान साजा फेलिया आसन हइते वेगे उठिया पड़िल; खाता काड़िबार चेष्टा करिया कहिल, "ना, ताँके शोनाते पावे ना। ताँके यदि आमार लेखार कथा वल ता हले आमि आर एक अक्षर लिखव ना!"

अमल। वउठान, तुमि भारि भुल वुझछ। दादा मुखे याइ वलुन, तोमार लेखा देखले खुव खुशि हवेन।

चारु। ता होक, आमार खुशिते काज नेइ।

चारु प्रतिज्ञा करिया वसियाछिल से लिखिवे—अमलके आश्चर्य करिया दिवे; मन्दार सहित ताहार ये अनेक प्रभेद ए-कथा प्रमाण ना करिया से छाड़िवे ना। ए कयदिन विस्तर लिखिया से छिँड़िया फेलियाछे। याहा लिखिते याय ताहा नितान्त अमलेर लेखार मतो हइया उठे; मिलाइते गिया देखे एक-एकटा अंश अमलेर रचना हइते प्राय अविकल उद्‌धृत हइया आसियाछे। सेइगुलिइ भालो, वाकिगुला काँचा। देखिले अमल निश्चयइ मने मने हासिवे, इहाइ कल्पना करिया चारु से-सकल लेखा कुटि-कुटि करिया छिँड़िया पुकुरेर मध्ये फेलिया दियाछे, पाछे ताहार एकटा खण्डओ दैवात् अमलेर हाते आसिया पड़े।

तोमार सङ्गे......जो नाइ—तुमसे पार पाने का कोई उपाय नहीं। धरवे—(जिद) पकड़ोगे।

फेलिया—छोड़कर।

काज नेइ—(कोई) जरूरत नहीं।

विस्तर—बहुत कुछ। छिँड़िया फेलियाछे—फाड़कर फेंक दिया है।

काँचा—कच्चा। कुटि-कुटि करिया—चिन्दी-चिन्दी कर। पुकुरेर मध्ये—पोखर में। पाछे—ऐसा न हो कि।

प्रथमे से लिखियाछिल, 'श्रावणेर मेघ'। मने करियाछिल, "भावाश्रुजले अभिषिक्त खुब एकटा नूतन लेखा लिखियाछि।" हठात् चेतना पाइया देखिल जिनिसटा अमलेर 'आषाढ़ेर-चाँद'-एर एपिठ ओपिठ मात्र। अमल लिखियाछे, 'भाइ चाँद, तुमि मेघेर मध्ये चोरेर मतो लुकाइया बेड़ाइतेछ केन।' चारु लिखियाछिल, 'सखी कादम्बिनी, हठात् कोथा हइते आसिया तोमार नीलाञ्चलेर तले चाँदके चुरि करिया पलायन करितेछ' इत्यादि।

कोनोमतेइ अमलेर गण्डि एड़ाइते ना पारिया अवशेषे चारु रचनार विषय परिवर्तन करिल। चाँद, मेघ, शेफालि, बउ-कथा-कओ, ए-समस्त छाड़िया से 'कालीतला' बलिया एकटा लेखा लिखिल। ताहादेर ग्रामे छायाय-अन्धकार पुकुरटिर धारे कालीर मन्दिर छिल, सेइ मन्दिरटि लइया ताहार बाल्यकालेर कल्पना भय औत्सुक्य, सेइ सम्बन्धे ताहार विचित्र स्मृति, सेइ जाग्रत ठाकुरानीर माहात्म्य सम्बन्धे ग्रामे चिरप्रचलित प्राचीन गल्प—एइ-समस्त लइया से एकटि लेखा लिखिल। ताहार आरम्भ-भाग अमलेर लेखार छाँदे काव्याड़म्बरपूर्ण हइयाछिल, किन्तु खानिकटा अग्रसर हइतेइ ताहार लेखा सहजेइ सरल एवं पल्ली-ग्रामेर भाषा-भङ्गी-आभासे परिपूर्ण हइया उठियाछिल।

एइ लेखाटा अमल काड़िया लइया पड़िल। ताहार मने हइल, गोड़ार दिकटा बेश सरस हइयाछे, किन्तु कवित्व शेष पर्यन्त रक्षित हय नाइ। याहा हउक, प्रथम रचनार पक्षे लेखिकार उद्यम प्रशंसनीय।

एपिठ ओपिठ मात्र—सामान्य अन्तर, काफ़ी मिलता-जुलता। बेड़ाइतेछ केन—क्यों घूम रहे हो।

कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। गण्डि एड़ाइते ना पारिया—सीमा को न लाँघ पाने पर। बउ-कथा-कओ—कोयल की तरह का पक्षी विशेष।

ठाकुरानीर—देवी के। छाँदे—शैली। खानिकटा—कुछ। पल्ली-ग्रामेर—गँवई-गाँव की। आभासे—संकेत से।

गोड़ार दिकटा—आरम्भिक अंश।

चारु कहिल, "ठाकुरपो, ऐसो आमरा एकटा मासिक कागज बेर करि। की वल।"

अमल। अनेकगुलि रौप्यचक्र ना हले से कागज चलवे की करे।

चारु। आमादेर ए कागजे कोनो खरच नेइ। छापा हवे ना तो—हातेर अक्षरे लिखव। ताते तोमार आमार छाड़ा आर कारओ लेखा वेरवे ना, काउके पड़ते देओया हवे ना। केवल दु कपि क'रे वेर हवे; एकटि तोमार जन्ये, एकटि आमार जन्ये।

किछुदिन पूर्वे हइले अमल ए प्रस्तावे मातिया उठित; एखन गोपनतार उत्साह ताहार चलिया गेछे। एखन दशजनके उद्देश ना करिया कोनो रचनाय से सुख पाय ना। तवु सावेक कालेर ठाट वजाय राखिवार जन्य उत्साह प्रकाश करिल। कहिल, "से वेश मजा हवे।"

चारु कहिल, "किन्तु प्रतिज्ञा करते हवे, आमादेर कागज छाड़ा आर कोथाओ तुमि लेखा वेर करते पारवे ना।"

अमल। ता हले सम्पादकेरा ये मेरेइ फेलवे।

चारु। आर आमार हाते वुझि मारेर अस्त्र नेइ?

सेइरूप कथा हइल। दुइ सम्पादक, दुइ लेखक एवं दुइ पाठके मिलिया कमिटि वसिल। अमल कहिल, "कागजेर नाम देओया याक चारुपाठ।" चारु कहिल, "ना, एर नाम अमला।"

एइ नूतन वन्दोवस्ते चारु माझेर कयदिनेर दुःखविरक्ति भूलिया गेल। ताहादेर मासिक पत्रटिते तो मन्दार प्रवेश करिवार कोनो पथ नाइ एवं वाहिरेर लोकेरओ प्रवेशेर द्वार रुद्ध।

वेर करि—निकालें। मातिया उठित—उन्मत्त हो उठता।
सावेक कालेर—वीते हुए समय (दिनों) का। वजाय राखिवार जन्य—कायम रखने के लिए।
माझेर—वीच के।

सप्तम परिच्छेद

भूपति एकदिन आसिया कहिल, "चारु, तुमि ये लेखिका हये उठवे, पूर्वे एमन तो कोनो कथा छिल ना।"

चारु चमकिया लाल हइया उठिया कहिल, "आमि लेखिका! के बलले तोमाके। कख्खनो ना।"

भूपति। बामालसुद्ध ग्रेफ्तार। प्रमाण हाते-हाते।—वलिया भूपति एकखण्ड सरोरुह बाहिर करिल! चारु देखिल, ये-सकल लेखा से ताहादेर गुप्त सम्पत्ति मने करिया निजेदेर हस्तलिखित मासिक पत्रे सञ्चय करिया राखितेछिल ताहाइ लेखक-लेखिकार नामसुद्ध सरोरुहे प्रकाश हइयाछे।

के येन ताहार खाँचार बड़ो साधेर पोषा पाखिगुलिके द्वार खुलिया उड़ाइया दियाछे, एमनि ताहार मने हइल। भूपतिर निकटे धरा पड़िबार लज्जा भुलिया गिया विश्वासघाती अमलेर उपर ताहार मने मने अत्यन्त राग हइते लागिल।

"आर एइटे देखो देखि।" वलिया विश्वबन्धु खबरेर कागज खुलिया भूपति चारुर सम्मुखे धरिल। ताहाते 'हाल बाङ्ला लेखार ढङ' वलिया एकटा प्रबन्ध वाहिर हइयाछे।

चारु हात दिया ठेलिया दिया कहिल, "ए पड़े आमि की करब।" तखन अमलेर उपर अभिमाने आर कोनो दिके से मन दिते पारितेछिल ना। भूपति जोर करिया कहिल, "एकवार पड़े देखोइ-ना।"

चारु अगत्या चोख बुलाइया गेल। आधुनिक कोनो कोनो

बामालसुद्ध ग्रेफ्तार—चोरी के माल समेत गिरफ्तार। **सरोरुह**—पत्रिका का नाम। **नामसुद्ध**—नाम सहित।

खाँचार—पिंजरे के। **साधेर पोषा**—साध से पाले हुए।

हाल बाङ्ला—आजकल के बँगला। **ढङ**—शैली, चाल।

हात दिया ठेलिया—हाथ से हटाते हुए।

चोख बुलाइया गेल—एक नज़र डाल गई।

लेखक श्रेणीर भावाडम्बरपूर्ण गद्य लेखाके गालि दिया लेखक खुब कड़ा प्रबन्ध लिखियाछे। ताहार मध्ये अमल एवं मन्मथ दत्तर लेखार धाराके समालोचक तीव्र उपहास करियाछे, एवं ताहारइ सङ्गे तुलना करिया नवीना लेखिका श्रीमती चारुबालार भाषार अकृत्रिम सरलता, अनायास सरसता एवं चित्ररचनानैपुण्येर बहुल प्रशंसा करियाछे। लिखियाछे, एइरूप रचनाप्रणालीर अनुकरण करिया सफलता लाभ करिले तबेइ अमल कोम्पानिर निस्तार, नचेत् ताहारा सम्पूर्ण फेल करिबे इहाते कोनो सन्देह नाइ।

भूपति हासिया कहिल, "एकेइ बले गुरुमारा विद्ये।"

चारु ताहार लेखार एइ प्रथम प्रशंसाय एक-एकबार खुशि हइते गिया तत्क्षणात् पीड़ित हइते लागिल। ताहार मन येन कोनोमतेइ खुशि हइते चाहिल ना। प्रशंसार लोभनीय सुधापात्र मुखेर काछ पर्यन्त आसितेइ ठेलिया फेलिया दिते लागिल।

से बुझिते पारिल, ताहार लेखा कागजे छापाइया अमल हठात् ताहाके विस्मित करिया दिबार संकल्प करियाछिल। अवशेषे छापा हइले पर स्थिर करियाछिल कोनो एकटा कागजे प्रशंसापूर्ण समालोचना बाहिर हइले दुइटा एकसङ्गे देखाइया चारुर रोष-शान्ति ओ उत्साहविधान करिबे। यखन प्रशंसा बाहिर हइल तखन अमल केन आग्रहेर सहित ताहाके देखाइते आसिल ना। ए समालोचनाय अमल आघात पाइयाछे एवं चारुके देखाइते चाहे ना बलियाइ ए कागजगुलि से एकेबारे गोपन करिया गेछे। चारु आरामेर जन्य अतिनिभृते ये एकटि क्षुद्र साहित्यनीड़ रचना करितेछिल हठात् प्रशंसा-शिलावृष्टिर एकटा बड़ो रकमेर शिला आसिया सेटाके एकेबारे स्खलित करिबार जो करिल। चारुर इहा एकेबारेइ भालो लागिल ना।

फेल करिबे—फेल होंगे।

गुरुमारा विद्ये—गुरु से प्राप्त विद्या जो गुरु को पराजित करने के लिए प्रयुक्त होती है। **एकेबारे**—बिल्कुल। **बड़ो रकमेर**—बड़े आकार की।

भूपति चलिया गेले चारु ताहार शोबार घरेर खाटे चुप करिया बसिया रहिल, सम्मुखे सरोरुह एवं विश्वबन्धु खोला पड़िया आछे।

खाता-हाते अमल चारुके सहसा चकित करिया दिवार जन्य पश्चात् हइते निःशब्दपदे प्रवेश करिल। काछे असिया देखिल, विश्वबन्धुर समालोचना खुलिया चारु निमग्नचित्ते वसिया आछे।

पुनराय निःशब्दपदे अमल बाहिर हइया गेल। 'आमाके गालि दिया चारुर लेखाके प्रशंसा करियाछे बलिया आनन्दे चारुर आर चैतन्य नाइ।' मुहूर्तेर मध्ये ताहार समस्त चित्त येन तिक्त-स्वाद हइया उठिल। चारु ये मूर्खेर समालोचना पड़िया निजेके आपन गुरुर चेये मस्त मने करियाछे, इहा निश्चय स्थिर करिया अमल चारुर उपर भारि राग करिल। चारुर उचित छिल कागजखाना टुकरा टुकरा करिया छिँड़िया आगुने छाइ करिया पुड़ाइया फेला।

चारुर उपर राग करिया अमल मन्दार घरेर द्वारे दाँड़ाइया सशब्दे डाकिल, "मन्दा-बउठान।"

मन्दा। एसो भाइ, एसो। ना चाइतेइ ये देखा पेलुम। आज आमार की भाग्यि।

अमल। आमार नूतन लेखा दु-एकटा शुनबे?

मन्दा। कत दिन थेके 'शोनाब शोनाब' करे आशा दिये रेखेछ किन्तु शोनाओ ना तो। काज नेइ, भाइ—आबार के कोन् दिक थेके राग करे बसले तुमिइ विपदे पड़बे—आमार की।

अमल किछु तीव्रस्वरे कहिल, "राग करबेन के। केनइ बा राग करबेन। आच्छा से देखा याबे, तुमि एखन शोनोइ तो।"

शोबार घरेर—सोने के कमरे में।

मस्त—बढ़ कर। राग—क्रोध। आगुने.....पुड़ाइया फेला—आग में जला कर राख (भस्म) कर देना।

ना चाइतेइ—अयाचित।

मन्दा येन अत्यन्त आग्रहे ताड़ाताड़ि संयत हइया बसिल। अमल सुर करिया समारोहेर सहित पड़िते आरम्भ करिल।

अमलेर लेखा मन्दार पक्षे नितान्तइ विदेशी, ताहार मध्ये कोथाओ से कोनो किनारा देखिते पाय ना। सेइजन्यइ समस्त मुखे आनन्देर हासि आनिया अतिरिक्त व्यग्रतार भावे से शुनिते लागिल। उत्साहे अमलेर कण्ठ उत्तरोत्तर उच्च हइया उठिल।

से पड़ितेछिल—'अभिमन्यु येमन गर्भवासकाले केवल व्यूह-प्रवेश करिते शिखियाछिल, व्यूह हइते निर्गमन शेखे नाइ—नदीर स्रोत सेइरूप गिरिदरीर पाषाण-जठरेर मध्ये थाकिया केवल सम्मुखेइ चलिते शिखियाछिल, पश्चाते फिरिते शेखे नाइ। हाय नदीर स्रोत, हाय यौवन, हाय काल, हाय संसार, तोमरा केवल सम्मुखेइ चलिते पार—ये पथे स्मृतिर स्वर्णमण्डित उपलखण्ड छड़ाइया आस से पथे आर कोनो दिन फिरिया याओ ना। मानुषेर मनइ केवल पश्चातेर दिके चाय, अनन्त जगत् संसार से दिके फिरियाओ ताकाय ना।'

एमन समय मन्दार द्वारेर काछे एकटि छाया पड़िल, से छाया मन्दा देखिते पाइल। किन्तु येन देखे नाइ एइरूप भान करिया अनिमेषदृष्टिते अमलेर मुखेर दिके चाहिया निविड़ मनोयोगेर सहित पड़ा शुनिते लागिल।'

छाया तत्क्षणात् सरिया गेल।

चारु अपेक्षा करियाछिल, अमल आसिलेइ ताहार सम्मुखे विश्वबन्धु कागजटिके यथोचित लाञ्छित करिबे, एवं प्रतिज्ञा भङ्ग करिया ताहादेर लेखा मासिक पत्रे बाहिर करियाछे बलिया अमलकेओ भर्त्सना करिबे।

ताड़ाताड़ि—जल्दी से।

विदेशी—अपरिचित, समझ के परे। किनारा देखिते पाय ना—ओर-छोर नहीं पाती।

छड़ाइया आस—बिखरा आते हो। चाय—ताकता है।

सरिया गेल—हट गई। बलिया—इस कारण।

अमलेर आसिवार समय उत्तीर्ण हइया गेल तवु ताहार देखा नाइ। चारु एकटा लेखा ठिक करिया राखियाछे; अमलके शुनाइवार इच्छा; ताहाओ पड़िया आछे।

एमन समय कोथा हइते अमलेर कण्ठस्वर शुना याय। ए येन मन्दार घरे। शरविद्धेर मतो से उठिया पड़िल। पायेर शब्द ना करिया से द्वारेर काछे आसिया दाँड़ाइल। अमल ये लेखा मन्दाके शुनाइतेछे एखनओ चारु ताहा शोने नाइ। अमल पड़ितेछिल—'मानुषेर मनइ केवल पश्चातेर दिके चाय—अनन्त जगत्संसार से दिके फिरियाओ ताकाय ना।'

चारु येमन निःशब्दे आसियाछिल तेमन निःशब्दे आर फिरिया याइते पारिल ना। आज परे परे दुइ-तिनटा आघाते ताहाके एकेवारे धैर्यच्युत करिया दिल। मन्दा ये एकवर्णओ वुझितेछे ना एवं अमल ये नितान्त निर्वोध मूढ़ेर मतो ताहाके पड़िया शुनाइया तृप्तिलाभ करितेछे, ए कथा ताहार चीत्कार करिया वलिया आसिते इच्छा करिल। किन्तु ना वलिया सक्रोधे पदशब्दे ताहा प्रचार करिया आसिल। शयनगृहे प्रवेश करिया चारु द्वार सशब्दे वन्ध करिल।

अमल क्षणकालेर जन्य पड़ाय क्षान्त दिल। मन्दा हासिया चारुर उद्देशे इङ्गित करिल। अमल मने-मने कहिल, "बउठानेर ए की दौरात्म्य। तिनि कि ठिक करिया राखियाछेन, आमि ताँहारइ क्रीतदास। ताँहाके छाड़ा आर काहाकेओ पड़ा शुनाइते पारिब ना। ए ये भयानक जुलुम।" एइ भाविया से आरओ उच्चैःस्वरे मन्दाके पड़िया शुनाइते लागिल।

पड़ा हइया गेले चारुर घरेर सम्मुख दिया से वाहिरे चलिया गेल। एकवार चाहिया देखिल, घरेर द्वार रुद्ध।

कोथा हइते—कहीं से।
परे परे—एक के वाद एक।
क्षान्त दिल—वन्द रखा। वउठानेर—वहू ठाकुरानी, भाभी की। दौरात्म्य—उपद्रव। पड़ा—लेख, रचना।

चारु पदशब्दे बुझिल, अमल ताहार घरेर सम्मुख दिया चलिया गेल—एकबारओ थामिल ना। रागे क्षोभे ताहार कान्ना आसिल ना। निजेर नूतन-लेखा खाताखानि बाहिर करिया ताहार प्रत्येक पाता बसिया बसिया टुकरा टुकरा करिया छिँड़िया स्तूपाकार करिल। हाय, की कुक्षणेइ एइ-समस्त लेखालेखि आरम्भ हइयाछिल।

अष्टम परिच्छेद

सन्ध्यार समय वारान्दार टब हइते जुंइफुलेर गन्ध आसितेछिल। छिन्न मेघेर भितर दिया स्निग्ध आकाशे तारा देखा याइतेछिल। आज चारु चुल बाँधे नाइ, कापड़ छाड़े नाइ। जानलार काछे अन्धकारे बसिया आछे, मृदु वातासे आस्ते आस्ते ताहार खोला चुल उड़ाइतेछे, एवं ताहार चोख दिया एमन झर्-झर् करिया केन जल वहिया याइतेछे ताहा से निजेइ बुझिते पारितेछे ना।

एमन समय भूपति घरे प्रवेश करिल। ताहार मुख अत्यन्त म्लान, हृदय भाराक्रान्त। भूपतिर आसिबार समय एखन नहे। कागजेर जन्य लिखिया, प्रुफ देखिया अन्तःपुरे आसिते प्रायइ ताहार विलम्ब हय। आज सन्ध्यार परेइ येन कोन् सन्त्वना-प्रत्याशाय चारुर निकट आसिया उपस्थित हइल।

घरे प्रदीप ज्वलितेछिल ना। खोला जानलार क्षीण आलोके भूपति चारुके वातायनेर काछे अस्पष्ट देखिते पाइल; धीरे धीरे पश्चाते आसिया दाँड़ाइल। पदशब्द शुनिते पाइयाओ चारु मुख फिराइल ना—मूर्तिटिर मतो स्थिर हइया कठिन हइया वसिया रहिल।

कान्ना आसिल ना—रुलाई नहीं आई। की कुक्षणेइ—किस बुरी सायत में।

टब—गमले। जुंइफुलेर—जूही के फूलों की। चुल—केश। कापड़ छाड़े नाइ—साड़ी नहीं बदली। परेइ—बाद ही।

भूपति किछु आश्चर्य हइया डाकिल, "चारु।"

भूपतिर कण्ठस्वरे सचकित हइया ताड़ाताड़ि उठिया पड़िल। भूपति आसियाछे से ताहा मने करे नाइ। भूपति चारुर माथार चुलेर मध्ये आङ्‌ुल बुलाइते बुलाइते स्नेहार्द्रकण्ठे जिज्ञासा करिल, "अन्धकारे तुमि ये एकलाटि ब'से आछ, चारु? मन्दा कोथाय गेल।"

चारु येमनटि आशा करियाछिल आज समस्त दिन ताहार किछुइ हइल ना। से निश्चय स्थिर करियाछिल अमल आसिया क्षमा चाहिबे—सेजन्य प्रस्तुत हइया से प्रतीक्षा करितेछिल, एमन समय भूपतिर अप्रत्याशित कण्ठस्वरे से येन आर आत्म-सम्वरण करिते पारिल ना, एकेबारे काँदिया फेलिल।

भूपति व्यस्त हइया व्यथित हइया जिज्ञासा करिल, "चारु, की हयेछे, चारु।"

की हइयाछे ताहा बला शक्त। एमनइ की हयेछे। विशेष तो किछुइ हय नाइ। अमल निजेर नूतन लेखा प्रथमे ताहाके ना शुनाइया मन्दाके शुनाइयाछे, ए कथा लइया भूपतिर काछे की नालिश करिबे। शुनिले कि भूपति हासिबे ना। एइ तुच्छ व्यापारेर मध्ये गुरुतर नालिशेर विषय ये कोन्‌खाने लुकाइया आछे ताहा खुँजिया बाहिर करा चारुर पक्षे असाध्य। अकारण से ये केन एत अधिक कष्ट पाइतेछे, इहाइ सम्पूर्ण बुझिते ना पारिया ताहार कष्टेर वेदना आरओ बाड़िया उठितेछे।

भूपति। बलो-ना चारु, तोमार की हयेछे। आमि कि तोमार उपर कोनो अन्याय करेछि। तुमि तो जानइ, कागजेर

डाकिल—पुकारा।
आङ्‌ुल बुलाइते बुलाइते—अँगुलियाँ फेरते-फेरते।
काँदिया फेलिल—रो पड़ी।
व्यस्त हइया—व्याकुल हो कर।
नालिश करिबे—शिकायत करेगी। **कोन्‌खाने**—कहाँ। **बुझिते ना पारिया**—समझ न पाने से।

झञ्झाट नियें आमि की-रकम व्यतिव्यस्त हये आछि, यदि तोमार मनें कोनो आघात दियें थाकि से आमि इच्छे करे दिइ नि।

भूपति एमन विषये प्रश्न करितेछे याहार एकटिओ जवाव दिवार नाइ, सेइजन्य चारु भितरे भितरे अधीर हइया उठिल; मने हइते लागिल, भूपति एखन ताहाके निष्कृति दिया छाड़िया गेले से बाँचे।

भूपति द्वितीयवार कोनो उत्तर ना पाइया पुनर्बार स्नेहसिक्त स्वरे कहिल, "आमि सर्वदा तोमार काछे आसते पारि ने चारु, सेजन्य आमि अपराधी, किन्तु आर हवे ना। एखन थेके दिनरात कागज नियें थाकव ना। आमाके तुमि यतटा चाओ ततटाइ पावे।"

चारु अधीर हइया बलिल, "सेजन्ये नय।"

भूपति कहिल, "तबे की जन्ये।" बलिया खाटेर उपर वसिल।

चारु विरक्तिर स्वर गोपन करिते ना पारिया कहिल, "से एखन थाक्, रात्रे बलब।"

भूपति मुहूर्तकाल स्तब्ध थाकिया कहिल, "आच्छा, एखन थाक्।" बलिया आस्ते आस्ते उठिया बाहिरे चलिया गेल। ताहार निजेर एकटा-की कथा वलिवार छिल, से आर बला हइल ना।

भूपति ये एकटा क्षोभ पाइया गेल, चारुर काछे ताहा अगोचर रहिल ना। मनें हइल, "फिरिया डाकि।" किन्तु डाकिया की कथा बलिबे। अनुतापे ताहाके विद्ध करिल, किन्तु कोनो प्रतिकार से खुँजिया पाइल ना।

व्यतिव्यस्त—अत्यन्त व्यस्त। इच्छे करे दिइ नि—जान-बूझ कर नहीं किया।
निष्कृति दिया—छोड़ कर। छाड़िया......बाँचे—चला जाए तो वह त्राण पाए।
काछे—पास। आर हवे ना—अब (ऐसा) नहीं होगा।
से एखन थाक्—वह (बात) इस समय रहने दो।

रात्रि हइल। चारु आज सविशेषे यत्न करिया भूपतिर रात्रेर आहार साजाइल एवं निजे पाखा हाते करिया बसिया रहिल।

एमन समय शुनिते पाइल मन्दा उच्चैःस्वरे डाकितेछे, "ब्रज, ब्रज।" ब्रज चाकर साड़ा दिले जिज्ञासा करिल, "अमलबाबुर खाओया हयेछे कि।" ब्रज उत्तर करिल, "हयेछे।" मन्दा कहिल, "खाओया हये गेछे अथच पान निये गेलि ने ये।" मन्दा ब्रजके अत्यन्त तिरस्कार करिते लागिल।

एमन समये भूपति अन्तःपुरे आसिया आहारे बसिल, चारु पाखा करिते लागिल।

चारु आज प्रतिज्ञा करियाछिल, भूपतिर सङ्गे प्रफुल्ल स्निग्ध-भावे नाना कथा कहिबे। कथावार्ता आगे हइते भाबिया प्रस्तुत हइया बसिया छिल। किन्तु मन्दार कण्ठस्वरे ताहार विस्तृत आयोजन समस्त भाङिया दिल, आहारकाले भूपतिके से एकटि कथाओ बलिते पारिल ना। भूपतिओ अत्यन्त विमर्ष अन्यमनस्क हइया छिल। से भालो करिया खाइल ना, चारु एकबार केवल जिज्ञासा करिल, "किछु खाच्छ ना ये।"

भूपति प्रतिवाद करिया कहिल, "केन। कम खाइ नि तो।"

शयनघरे उभये एकत्र हइले भूपति कहिल, "आज रात्रे तुमि कि बलबे बलेछिले।"

चारु कहिल, "देखो, किछुदिन थेके मन्दार व्यवहार आमार भालो बोध हच्छे ना। ओके एखाने राखते आमार आर साहस हय ना।"

भूपति। केन, की करेछे।

चारु। अमलेर सङ्गे ओ एमनि भाबे चले ये, से देखले लज्जा हय।

हाते करिया—हाथ में ले कर।
साड़ा दिले—प्रत्युत्तर देने पर।
आगे हइते भाबिया—पहले से सोच कर।

भूपति हासिया उठिया कहिल, "हाँ:, तुमि पागल हयेछ ! अमल छेलेमानुष । सेदिनकार छेले—"

चारु । तुमि तो घरेर खबर किछुइ राख ना, केवल वाइरेर खबर कुड़िये वेड़ाओ । याइ होक, वेचारा दादार जन्ये आमि भावि । तिनि कखन खेलेन, ना खेलेन, मन्दा तार खोँजओ राखे ना, अथच अमलेर पान थेके चुन खसे गेलेइ चाकरवाकरदेर सङ्गे वकावकि करे अनर्थ करे ।

भूपति । तोमरा मेयेरा किन्तु भारि सन्दिग्ध ता वलते हय ।

चारु रागिया वलिल, "आच्छा वेश, आमरा सन्दिग्ध, किन्तु वाड़िते आमि ए-समस्त वेहायापना हते देव ना ता वले राखछि ।"

चारुर एइ-समस्त अमूलक आशङ्काय भूपति मने-मने हासिल, खुशिओ हइल । गृह याहाते पवित्र थाके, दाम्पत्यधर्म आनुमानिक काल्पनिक कलंकओ लेशमात्र स्पर्श ना करे, एजन्य साध्वी स्त्रीदेर ये अतिरिक्त सतर्कता, ये सन्देहाकुल दृष्टिक्षेप, ताहार मध्ये एकटि माधुर्य एवं महत्व आछे ।

भूपति श्रद्धाय एवं स्नेहे चारुर ललाट चुम्बन करिया कहिल, "ए निये आर कोनो गोल करवार दरकार हवे ना । उमापद मयमनसिंहे प्रचाक्टिस करते याच्छे, मन्दाकेओ सङ्गे निये यावे ।"

अवशेषे निजेर दुश्चिन्ता एवं एइ-सकल अप्रीतिकर आलोचना दूर करिया दिवार जन्य भूपति टेविल हइते एकटा खाता तुलिया लइया कहिल, "तोमार लेखा आमाके शोनाओ-ना, चारु ।"

चारु खाता काड़िया लइया कहिल, "ए तोमार भालो लागवे ना, तुमि ठाट्टा करवे ।"

छेलेमानुष—वच्चा, लड़का । सेदिनकार छेले—कल का लड़का ।
कुड़िये वेड़ाओ—वटोरते फिरते हो । पान थेके चुन खसे गेलेइ—पान से चुना छूट जाने पर ही (अर्थात् सामान्य-सी वात के लिए) ।
वकावकि—भर्त्सना ।
मेयेरा—स्त्रियाँ ।
गोल करवार—झमेला करने (वढ़ाने) ।
काड़िया लइया—छीन कर ।

भूपति एइ कथाय किछु व्यथा पाइल, किन्तु ताहा गोपन करिया हासिया कहिल, "आच्छा, आमि ठाट्टा करव ना, एमनि स्थिर हये शुनब ये तोमार भ्रम हवे, आमि घुमिये पड़ेछि।"

किन्तु भूपति आमल पाइल ना।—देखिते देखिते खातापत्र नाना आवरण-आच्छादनेर मध्ये अन्तर्हित हइया गेल।

नवम परिच्छेद

सकल कथा भूपति चारुके वलिते पारे नाइ। उमापद भूपतिर कागजखानिर कर्माध्यक्ष छिल। चाँदा-आदाय, छापाखाना ओ बाजारेर देना शोध, चाकरदेर वेतन देओया, ए-समस्तइ उमापदर उपर भार छिल।

इतिमध्ये हठात् एकदिन कागजओयालार निकट हइते उकिलेर चिठि पाइया भूपति आश्चर्य हइया गेल। भूपतिर निकट हइते ताहादेर २७०० टाका पाओना जानाइयाछे। भूपति उमापदके डाकिया कहिल, "ए की व्यापार! ए टाका तो आमि तोमाके दिये दियेछि। कागजेर देना चार-पाँचशोर वेशि तो हवार कथा नय।"

उमापद कहिल, "निश्चय एरा भुल करेछे।"

किन्तु, आर चापा रहिल ना। किछुकाल हइते उमापद एइरूप फाँकि दिया आसितेछे। केवल कागज सम्बन्धे नहे, भूपतिर नामे उमापद बाजारे अनेक देना करियाछे। ग्रामे से ये एकटि पाका बाड़ि निर्माण करितेछे ताहार मालमसलार कतक भूपतिर नामे लिखाइयाछे, अधिकांशइ कागजेर टाका हइते शोध करियाछे।

घुमिये पड़ेछि—सो गया हूँ।
आमल—प्रोत्साहन, बढ़ाव।
कागजखानिर—अखबार का। **डाकिया**—बुला कर। **हवार कथा नय**—होने की बात नहीं है।
चापा रहिल ना—दबी न रही। **फाँकि दिया**—झाँसा देता। **कतक**—कुछ अंश।

यखन नितान्तइ धरा पड़िल तखन से रुक्ष स्वरे कहिल, "आमि तो आर निरुद्देश हच्छि ने। काज करे आमि क्रमे क्रमे शोध देव—तोमार सिकि-पयसार देना यदि बाकि थाके तवे आमार नाम उमापद नय।"

ताहार नामेर व्यत्यये भूपतिर कोनो सान्त्वना छिल ना। अर्थेर क्षतिते भूपति तत क्षुण्ण हय नाइ, किन्तु अकस्मात् एइ विश्वासघातकताय से येन घर हइते शून्येर मध्ये पा फेलिल।

सेइदिन से अकाले अन्तःपुरे गियाछिल। पृथिवीते एकटा ये निश्चय विश्वासेर स्थान आछे सेइटे क्षणकालेर जन्य अनुभव करिया आसिते ताहार हृदय व्याकुल हइयाछिल। चारु तखन निजेर दुःखे सन्ध्यादीप निवाइया जानलार काछे अन्धकारे वसिया छिल।

उमापद परदिनेइ मयमनसिंहे याइते प्रस्तुत। बाजारेर पाओनादारर खबर पाइवार पूर्वेइ से सरिया पड़िते चाय। भूपति घृणापूर्वक उमापदर सहित कथा कहिल ना—भूपतिर सेइ मौनावस्था उमापद सौभाग्य वलिया ज्ञान करिल।

अमल आसिया जिज्ञासा करिल, "मन्दा-बोठान, ए की व्यापार। जिनिसपत्र गोछावार धुम ये?"

मन्दा। आर भाइ, येते तो हवेइ। चिरकाल की थाकव।

अमल। याच्छ कोथाय।

मन्दा। देशे।

अमल। केन। एखाने असुविधाटा की हल।

मन्दा। असुविधे आमार की वल। तोमादेर पाँच जनेर

धरा पड़िल—पकड़ा गया। निरुद्देश—लापता। सिकि-पयसार—कानी कौड़ी का।

व्यत्यय—व्यतिक्रम, उलट-फेर। पा फेलिल—पैर वढ़ाया।

अकाले—असमय। निवाइया—बुझा कर।

सरिया पड़िते चाय—खिसक जाना चाहता है।

जिनिसपत्र गोछावार धुम ये—चीज-वस्तु समेटने की धूमधाम क्यों।

सङ्गे छिलुम, सुखेइ छिलुम। किन्तु अन्येर असुविधे हते लागल ये।—बलिया चारुर घरेर दिके कटाक्ष करिल।

अमल गम्भीर हइया चुप करिया रहिल। मन्दा कहिल, "छि छि, की लज्जा। बाबु की मने करलेन।"

अमल ए कथा लइया आर अधिक आलोचना करिल ना। एटुकु स्थिर करिल, चारु ताहादेर सम्बन्धे दादार काछे एमन कथा बलियाछे याहा बलिबार नहे।

अमल बाड़ि हइते बाहिर हइया रास्ताय बेड़ाइते लागिल। ताहार इच्छा हइल ए बाड़िते आर फिरिया ना आसे। दादा यदि बोठानेर कथाय विश्वास करिया ताहाके अपराधी मने करिया थाकेन तबे मन्दा ये पथे गियाछे ताहाकेओ सेइ पथे याइते हय। मन्दाके विदाय एक हिसाबे अमलेर प्रतिओ निर्वासन आदेश—सेटा केवल मुख फुटिया बला हय नाइ मात्र। इहार परे कर्तव्य खुब सुस्पष्ट—आर एकदण्डओ एखाने थाका नय। किन्तु दादा ये ताहार सम्बन्धे कोनोप्रकार अन्याय धारणा मने-मने पोषण करिया राखिबेन से हइतेइ पारे ना। एतदिन तिनि अक्षुण्ण विश्वासे ताहाके घरे स्थान दिया पालन करिया आसितेछेन, से विश्वासे ये अमल कोनो अंशे आघात देय नाइ से कथा दादाके ना बुझाइया से केमन करिया याइबे।

भूपति तखन आत्मीयेर कृतघ्नता, पाओनादारेर ताड़ना, उच्छृङ्खल हिसाबपत्र एवं शून्य तहबिल लइया माथाय हात दिया भावितेछिल। ताहार एइ शुष्क मनोदुःखेर केह दोसर छिल ना—चित्तवेदना एवं ऋणेर सङ्गे एकला दाँड़ाइया युद्ध करिबार जन्य भूपति प्रस्तुत हइतेछिल।

मने करलेन—सोचा होगा।

एटुकु—इतना भर।

एक हिसाबे—एक प्रकार से। ना बुझाइया—बिना समझाए।

तहबिल—कोष, तिजोरी। दोसर—साथी।

एमन समय अमल झड़ेर मतो घरेर मध्ये प्रवेश करिल। भूपति निजेर अगाध चिन्तार मध्य हइते हठात् चमकिया उठिया चाहिल। कहिल, "खबर की अमल।"

अकस्मात् मने हइल, अमल बुझि आर-एकटा की गुरुतर दुःसम्वाद लइया आसिल।

अमल कहिल, "दादा, आमार उपरे तोमार कि कोनोरकम सन्देहेर कारण हयेछे।"

भूपति आश्चर्य हइया कहिल, "तोमार उपरे सन्देह!" मने मने भाबिल, "संसार येरूप देखितेछि ताहाते कोनदिन अमलकेओ सन्देह करिब आश्चर्य नाइ।"

अमल। बोठान कि आमार चरित्र सम्बन्धे तोमार काछे कोनोरकम दोषारोप करेछेन।

भूपति भाबिल, ओः एइ व्यापार। बाँचा गेल। स्नेहेर अभिमान। से मने करियाछिल, सर्वनाशेर उपर बुझि आर-एकटा किछु सर्वनाश घटियाछे। किन्तु गुरुतर संकटेर समयेओ एइ-सकल तुच्छ विषये कर्णपात करिते हय। संसार ए दिके साँकोओ नाड़ाइबे अथच सेइ साँकोर उपर दिया ताहार शाकेर आँटिगुलो पार करिबार जन्य तागिद करतेओ छाड़िबे ना।

अन्य समय हइले भूपति अमलके परिहास करित, किन्तु आज ताहार से प्रफुल्लता छिल ना। से बलिल, "पागल हयेछ नाकि।"

अमल आबार जिज्ञासा करिल, "बोठान किछु बलेन नि?"

भूपति। तोमाके भालोबासेन बले यदि किछु बले थाकेन ताते राग करबार कोनो कारण नेइ।

झड़ेर मतो—आँधी के समान। **चाहिल**—ताका।
भाबिल—सोचा।
साँकोओ नाड़ाइबे—पुल भी हिलाएगी। **शाकेर आँटिगुलो**—साग की गड्डियाँ। **तागिद**—ताकीद (अर्थात् यह दुनिया एक ओर तो पुल को हिलाएगी किन्तु उसी पुल पर से अपनी साग की गड्डियाँ को पार उतार देने के लिए ताकीद भी देती रहेगी)।

अमल। काजकर्मेर चेष्टाय एखन आमार अन्यत्र याओआ उचित।

भूपति धमक दिया कहिल, "अमल, तुमि की छेलेमानुषि करछ तार ठिक नेइ। एखन पड़ाशुनो करो, काजकर्म परे हबे।"

अमल विमर्षमुखे चलिया आसिल, भूपति ताहार कागजेर ग्राहकदेर मूल्यप्राप्तिर तालिकार सहित तिन वत्सरेर जमाखरचेर हिसाब मिलाइते बसिया गेल।

दशम परिच्छेद

अमल स्थिर करिल, बउठानेर सङ्गे मोकाबिला करिते हइबे, ए कथाटार शेष ना करिया छाड़ा हइबे ना। बोठानके ये-सकल शक्त शक्त कथा शुनाइबे मने मने ताहा आवृत्ति करिते लागिल।

मन्दा चलिया गेले चारु संकल्प करिल, अमलके से निजे हइते डाकिया पाठाइया ताहार रोषशान्ति करिबे। किन्तु एकटा लेखार उपलक्ष करिया डाकिते हइबे। अमलेरइ एकटा लेखार अनुकरण करिया 'अमावस्यार आलो' नामे से एकटा प्रबन्ध फाँदियाछे। चारु एटुकु बुझियाछे ये, ताहार स्वाधीन छाँदेर लेखा अमल पछन्द करे ना।

पूर्णिमा ताहार समस्त आलोक प्रकाश करिया फेले बलिया चारु ताहार नूतन रचनाय पूर्णिमाके अत्यन्त भर्त्सना करिया लज्जा दितेछे। लिखितेछे—अमावस्यार अतलस्पर्श अन्धकारेर मध्ये षोलोकला चाँदेर समस्त आलोक स्तरे स्तरे आबद्ध हइया आछे, ताहार एक रश्मिओ हाराइया याय नाइ; ताइ पूर्णिमार उज्ज्वलता अपेक्षा अमावस्यार कालिमा परिपूर्णतर—इत्यादि।

छाड़ा हइबे ना—छुटकारा नहीं होगा। **आवृत्ति**—दुहराने।
प्रबन्ध फाँदियाछे—निबन्ध विस्तृत रूप से लिखा है। **छाँदेर**—शैली, ढंग के।
हाराइया याय नाइ—बिलुप्त नहीं हुई।

अमल निजेर सकल लेखाइ सकलेर काछे प्रकाश करे एवं चारु ताहा करे ना—पूर्णिमा-अमावस्यार तुलनार मध्ये कि सेइ कथाटार आभास आछे।

ए दिके एइ परिवारेर तृतीय व्यक्ति भूपति कोनो आसन्न ऋणेर तागिद हइते मुक्तिलाभेर जन्य ताहार परम बन्धु मतिलालेर काछे गियाछिल।

मतिलालके संकटेर समय भूपति कयेक हाजार टाका धार दियाछिल—सेदिन अत्यन्त विव्रत हइया सेइ टाकाटा चाहिते गियाछिल। मतिलाल स्नानेर पर गा खुलिया पाखार हाओया लागाइतेछिल एवं एकटा काठेर वाक्सर उपर कागज मेलिया अति छोटो अक्षरे सहस्र दुर्गानाम लिखितेछिल। भूपतिके देखिया अत्यन्त हृद्यतार स्वरे कहिल, "एसो एसो—आजकाल तो तोमार देखाइ पावार जो नेइ।"

मतिलाल टाकार कथा शुनिया आकाशपाताल चिन्ता करिया कहिल, "कोन् टाकार कथा बलछ। एर मध्ये तोमार काछ थेके किछु नियेछि नाकि।"

भूपति साल-तारिख स्मरण कराइया दिले मतिलाल कहिल, "ओः, सेटा तो अनेकदिन हल तामादि हये गेछे।"

भूपतिर चक्षे ताहार चतुर्दिकेर चेहारा समस्त येन बदल हइया गेल। संसारेर ये अंश हइते मुखोष खसिया पड़िल से दिकटा देखिया आतङ्के भूपतिर शरीर कण्टकित हइया उठिल। हठात् वन्या आसिया पड़िले भीत व्यक्ति येखाने सकलेर चेये उच्च चूड़ा देखे सेइखाने येमन छुटिया याय, संशयाक्रान्त बहिःसंसार

तागिद—तकाजा। धार—उधार। विव्रत हइया—परेशानी, मुसीबत में पड़ कर। चाहिते—माँगने। मेलिया—फैला कर, बिछा कर। हृद्यतार स्वरे—सौहार्दपूर्ण स्वर में। जो नाइ—उपाय नहीं।

तामादि हये गेछे—(तमादी) अवधि बीत गई है।

मुखोष खसिया पड़िल—नक़ाब हट गया। वन्या आसिया पड़िले—बाढ़ आ जाने पर। छुटिया याय—दौड़ा चला जाता है।

हइते भूपति तेमनि वेगे अन्तःपुरे प्रवेश करिल; मने मने कहिल, "आर याइ होक चारु तो आमाके वञ्चना करिबे ना।"

चारु तखन खाटे बसिया कोलेर उपर बालिश एवं बालिशेर उपर खाता राखिया झुंकिया पड़िया एकमने लिखितेछिल। भूपति यखन नितान्त ताहार पाशे आसिया दाँड़ाइल तखनइ ताहार चेतना हइल, ताड़ाताड़ि ताहार खाताटा पायेर निचे चापिया बसिल।

मने यखन वेदना थाके तखन अल्प आघातेइ गुरुतर व्यथा बोध हय। चारु एमन अनावश्यक सत्वरतार सहित ताहार लेखा गोपन करिल देखिया भूपतिर मने बाजिल।

भूपति धीरे धीरे खाटेर उपर चारुर पाशे बसिल। चारु ताहार रचनास्रोते अनपेक्षित बाधा पाइया एवं भूपतिर काछे हठात् खाता लुकाइबार व्यस्तताय अप्रतिभ हइया कोनो कथाइ जोगाइया उठिते पारिल ना।

सेदिन भूपतिर निजेर किछु दिबार बा कहिबार छिल ना। से रिक्तहस्ते चारुर निकटे प्रार्थी हइया आसियाछिल। चारुर काछ हइते आशङ्काधर्मी भालोबासार एकटा-कोनो प्रश्न, एकटा-किछु आदर पाइलेइ ताहार क्षत-यन्त्रणाय औषध पड़ित। किन्तु 'ह्यादे लक्ष्मी हैल लक्ष्मीछाड़ा', एक मुहूर्तेर प्रयोजने प्रीतिभाण्डारेर चाबि चारु येन कोनोखाने खुँजिया पाइल ना। उभयेर सुकठिन मौने घरेर नीरवता अत्यन्त निबिड़ हइया आसिल।

खानिकक्षण नितान्त चुपचाप थाकिया भूपति निश्वास फेलिया खाट छाड़िया उठिल एवं धीरे धीरे बाहिरे चलिया आसिल।

सेइ समय अमल बिस्तर शक्त शक्त कथा मनेर मध्ये

कोलेर ऊपर—गोद में। बालिश—तकिया। खाताटा—काँपी। चापिया वसिल—दबा ली। मने बाजिल—(बात) मन में चुभी।

जोगाइया....पारिल ना—सोच न सकी, न सूझी।

आशंकाधर्मी भालोबासार—चिन्ताकुल प्रेम का।

ह्यादे....लक्ष्मीछाड़ा—अरी, लक्ष्मी दीन (कृपण) हो गई।

बोझाइ करिया लइया चारुर घरे द्रुतपदे आसितेछिल, पथेर मध्ये अमल भूपतिर अत्यन्त शुष्क विवर्ण मुख देखिया उद्विग्न हइया थामिल, जिज्ञासा करिल, "दादा, तोमार असुख करेछे ?"

अमलेर स्निग्ध स्वर शुनिवामात्र हठात् भूपतिर समस्त हृदय ताहार अश्रुराशि लइया बुकेर मध्ये येन फुलिया उठिल। किछुक्षण कोनो कथा बाहिर हइल ना। सबले आत्मसम्वरण करिया भूपति आर्द्रस्वरे कहिल, "किछु हय नि, अमल। एबारे कागजे तोमार कोनो लेखा बेरच्छे कि।"

अमल शक्त शक्त कथा याहा सञ्चय करियाछिल ताहा कोथाय गेल। ताड़ाताड़ि चारुर घरे आसिया जिज्ञासा करिल, "बउठान, दादार की हयेछे बलो देखि।"

चारु कहिल, "कइ, ता तो किछु बुझते पारलुम ना। अन्य कागजे बोध हय ओँर कागजके गाल दिये थाकबे।"

अमल माथा नाड़िल।

ना डाकितेइ अमल आसिल एवं सहजभावे कथावार्ता आरम्भ करिया दिल देखिया चारु अत्यन्त आराम पाइल। एकेवारेइ लेखार कथा पाड़िल—कहिल, "आज आमि 'अमावस्यार आलो' बले एकटा लेखा लिखछिलुम; आर-एकटु हलेइ तिनि सेटा देखे फेलेछिलेन।"

चारु निश्चय स्थिर करियाछिल, ताहार नूतन लेखाटा देखिबार जन्य अमल पीड़ापीड़ि करिबे। सेइ अभिप्राये खाता-खाना एकटु नाड़ाचाड़ाओ करिल। किन्तु, अमल एकवार तीव्रदृष्टिते किछुक्षण चारुर मुखेर दिके चाहिल—की बुझिल,

---

बोझाइ....लइया—भरसक, संग्रह करके।
असुख करेछे—तबीयत खराब है क्या। फुलिया उठिल—उमड़ आया।
बेरच्छे कि—निकल रहा है क्या।
गाल दिये थाकबे—गाली दी होंगी, बुरा-भला कहा होगा।
माथा नाड़िल—सिर हिलाया।
आर-एकटु हलेइ—जरा-सी चूक होते ही।
पीड़ापीड़ि—परेशान। नाड़ाचाड़ाओ करिल—हिलाई-डुलाई भी।

की भाविल, जानि ना। चकित हइया उठिया पड़िल। पर्वत-पथे चलिते चलिते हठात् एक समये मेघेर कुयाशा काटिबामात्र पथिक येन चमकिया देखिल, से सहस्र हस्त गभीर गह्वरेर मध्ये पा बाड़ाइते याइतेछिल। अमल कोनो कथा ना बलिया एकेबारे घर हइते बाहिर हइया गेल।

चारु अमलेर एइ अभूतपूर्व व्यवहारेर कोनो तात्पर्य बुझिते पारिल ना।

एकादश परिच्छेद

परदिन भूपति आबार असमये शयनघरे आसिया चारुके डाकाइया आनाइल। कहिल, "चारु, अमलेर बेश एकटि भालो विवाहेर प्रस्ताव एसेछे।"

चारु अन्यमनस्क छिल। कहिल, "भालो की एसेछे।"

भूपति। बियेर सम्बन्ध।

चारु। केन, आमाके कि पछन्द हल ना।

भूपति उच्चैःस्वरे हासिया उठिल। कहिल, "तोमाके पछन्द हल की ना से कथा एखनओ अमलके जिज्ञासा करा हय नि। यदिइ वा हये थाके, आमार तो एकटा छोटोखाटो दाबि आछे, से आमि फस् करे छाड़छि ने।"

चारु। आः; की बकछ तार ठिक नेइ। तुमि ये बलले, तोमार बियेर सम्बन्ध एसेछे।—चारुर मुख लाल हइया उठिल।

भूपति। ता हले कि छुटे तोमाके खबर दिते आसतुम? बकशिश पाबार तो आशा छिल ना।

चाहिल—ताका। भाविल—सोचा। चकित हइया—चौंक कर। कुयासा—कुहासा।
डाकाइया आनाइल—बुला भेजा।
बियेर सम्बन्ध—विवाह-सम्बन्ध। आमाके....हल ना—क्या मैं पसन्द नहीं आई।
छोटोखाटो दाबि—थोड़ा-बहुत अधिकार। फस् करे—चट से।
बकछ—बक रहे हो।
छुटे—दौड़ा-दौड़ा।

चारु। अमलेर सम्बन्ध एसेछे ? वेश तो। ताहले आर देरी केन।

भूपति। वर्धमानेर उकिल रघुनाथवाबु ताँर मेयेर सङ्गे विवाह दिये अमलके विलेत पाठाते चान।

चारु विस्मित हइया जिज्ञासा करिल, "विलेत ?"

भूपति। हाँ, विलेत।

चारु। अमल विलेत यावे ? वेश मजा तो। वेश हयेछे, भालोइ हयेछे। ता तुमि ताके एकवार वले देखो।

भूपति। आमि वोलवार आगे तुमि ताके डेके वुझिये वलले भालो हय ना ?

चारु। आमि तो तिन हाजार वार बलेछि। से आमार कथा राखे ना। आमि ताके वलते पारव ना।

भूपति। तोमार कि मने हय, से करवे ना ?

चारु। आरओ तो अनेकवार चेष्टा देखा गेछे, कोनोमते तो राजि हय नि।

भूपति। किन्तु एवारकार ए प्रस्तावटा तार पक्षे छाड़ा उचित हवे ना। आमार अनेक देना हये गेछे, अमलके आमि तो आर सेरकम करे आश्रय दिते पारव ना।

भूपति अमलके डाकिया पाठाइल। अमल आसिले ताहाके वलिल, "वर्धमानेर उकिल रघुनाथवावुर मेयेर सङ्गे तोमार वियेर प्रस्ताव एसेछे। ताँर इच्छे, विवाह दिये तोमाके विलेत पाठिये देवेन। तोमार की मत।"

अमल कहिल, "तोमार यदि अनुमति थाके, आमार एते कोनो अमत नेइ।"

विलेत पाठाते चान—विलायत भेजना चाहते हैं।
कथा राखे ना—वात नहीं मानता।
मने हय—लगता है।
तार पक्षे—उसके लिए। छाड़ा—छोड़ना।
तोमार की मत—तुम्हारी क्या राय है।
अमत—असम्मति।

अमलेर कथा शुनिया उभये आश्चर्य हइया गेल। से ये बलिबामात्रइ राजि हइबे, ए केह मने करे नाइ।

चारु तीव्रस्वरे ठाट्टा करिया कहिल, "दादार अनुमति थाकिलेइ उनि मत देबेन! की आमार कथार वाध्य छोटो भाइ! दादार 'परे भक्ति एतदिन कोथाय छिल ठाकुरपो।"

अमल उत्तर ना दिया एकटुखानि हासिबार चेष्टा करिल।

अमलेर निरुत्तरे चारु येन ताहाके चेताइया तुलिवार जन्य द्विगुणतर झाँजेर सङ्गे बलिल, "तार चेये बलो-ना केन, निजेर इच्छे गेछे। एतदिन भान करे थाकबार की दरकार छिल ये बिये करते चाओ ना। पेटे खिदे मुखे लाज!"

भूपति उपहास करिया कहिल, "अमल तोमार खातिरेइ एतदिन खिदे चेपे रेखेछिल, पाछे भाजेर कथा शुने तोमार हिंसे हय।"

चारु एइ कथाय लाल हइया उठिया कोलाहल करिया बलिते लागिल, "हिंसे! ता वइकि! कक्खनो आमार हिंसे हय ना। ओरकम क'रे बला तोमार भारि अन्याय।"

भूपति। ऐ देखो। निजेर स्त्रीके ठाट्टाओ करते पारब ना।

चारु। ना, ओरकम ठाट्टा आमार भालो लागे ना।

भूपति। आच्छा, गुरुतर अपराध करेछि। माप करो। या होक, बियेर प्रस्तावटा ता हले स्थिर?

अमल कहिल, "हाँ।"

चारु। मेयेटि भालो कि मन्द ताओ बुझि एकबार देखते

झाँजेर सङ्गे—तीखेपन से। चेये—से, अपेक्षा। निजेर इच्छे गेछे—(मेरी) अपनी ही इच्छा है। खिदे—भूख।

चेपे रेखेछिल—दबा रखा था। भाजेर—देवरानी की। हिंसे हय—ईर्ष्या हो। स्त्रीके—स्त्री के साथ।

या होक—खैर। ता हले—तो फिर।

मेयेटि—लड़की। मन्द—बुरी।

यावारओ तर सइल ना। तोमार ये एमन दशा हये एसेछे ता तो एकटु आभासेओ प्रकाश कर नि।

भूपति। अमल, मेये देखते चाओ तो तार बन्दोबस्त करि। खबर नियेछि, मेयेटि सुन्दरी।

अमल। ना, देखबार दरकार देखि ने।

चारु। ओर कथा शोन केन। से कि हय। कने ना देखे बिये हबे? ओ ना देखते चाय आमरा तो देखे नेब।

अमल। ना दादा, ऐ निये मिथ्ये देरि करबार दरकार देखि ने।

चारु। काज नेइ, बापु—देरि हले बुक फेटे याबे। तुमि टोपर माथाय दिये एखनि बेरिये पड़ो। की जानि, तोमार सात राजार धन मानिकटिके यदि आर केउ केड़े निये याय!

अमलके चारु कोनो ठाट्टातेइ किछुमात्र विचलित करिते पारिल ना।

चारु। बिलेत पालाबार जन्ये तोमार मनटा बुझि दौड़च्छे? केन, एखाने आमरा तोमाके मारछिलुम ना धरछिलुम? ह्याट कोट प'रे साहेब ना साजले एखनकार छेलेदेर मन ओठे ना। ठाकुरपो, बिलेत थेके फिरे एसे आमादेर मतो कालोआदमिदेर चिनते पारबे तो?

अमल कहिल, "ता हले आर बिलेत याओया की करते।"

भूपति हासिया कहिल, "कालो रूप भोलबार जन्यइ तो सात समुद्र पेरोनो। ता भय की चारु, आमरा रइलुम, कालोर भक्तेर अभाव हबे ना।"

तर सइल ना—देर (भी) बर्दाश्त नहीं कर सके। आभास—इशारा।
चाओ—चाहते हो।
कने—कन्या।
टोपर—मौर। बेरिये पड़ो—निकल पड़ो, रवाना हो जाओ।
सात....मानिकटिके—दुर्लभ धन को। केड़े निये याय—छीन ले जाए।
कोनो ठाट्टातेइ—किसी भी परिहास से।
पालाबार—भाग जाने के। साहेब ना साजले—साहबी ठाठ बनाए बिना। मन ओठे ना—मन नहीं भरता।
पेरोनो—पार होना। आमरा रइलुम—हम तो हैं।

भूपति खुशि हइया तखनइ वर्धमाने चिठि लिखिया पाठाइल। विवाहेर दिन स्थिर हइया गेल।

द्वादश परिच्छेद

इतिमध्ये कागजखाना तुलिया दिते हइल। भूपति खरच आर जोगाइया उठिते पारिल ना। लोकसाधारण-नामक एकटा विपुल निर्मम पदार्थेर ये साधनाय भूपति दीर्घकाल दिनरात्रि एकान्तमने नियुक्त छिल सेटा एकमुहूर्ते विसर्जन दिते हइल। भूपतिर जीवनेर समस्त चेष्टा ये अभ्यस्त पथे गत बारो वत्सर अविच्छेदे चलिया आसितेछे सेटा हठात् एक जायगाय येन जलेर माझखाने आसिया पड़िल। इहार जन्य भूपति किछुमात्र प्रस्तुत छिल ना। अकस्मात्-बाधाप्राप्त ताहार एतदिनकार समस्त उद्यमके से कोथाय फिराइया लइया याइवे। ताहारा येन उपवासी अनाथ शिशुसन्तानदेर मतो भूपतिर मुखेर दिके चाहिल, भूपति ताहादिगके आपन अन्तःपुरे करुणामयी शुश्रुपापरायणा नारीर काछे आनिया दाँड़ कराइल।

नारी तखन की भावितेछिल। से मने-मने वलितेछिल, "ए की आश्चर्य, अमलेर विवाह हइवे से तो खुव भालोइ। किन्तु एतकाल परे आमादेर छाड़िया परेर घरे विवाह करिया विलात चलिया याइवे, इहाते ताहार मने एकवारओ एकटुखानिर जन्य द्विधाओ जन्मिल ना? एतदिन धरिया ताहाके ये आमरा एत यत्न करिया राखिलाम, आर येमनि विदाय लइवार एकटुखानि फाँक पाइल अमनि कोमर वाँधिया प्रस्तुत हइल, येन एतदिन

तुलिया दिते हइल--उठा, वन्द कर देना पड़ा। लोकसाधारण--जन-सामान्य, साधारण जन। दिते हइल--कर देना पड़ा। बारो--बारह। जलेर माझखाने--मँझधार में। आसिया दाँड़ कराइल--ला खड़ा किया।

परेर--दूसरे के। फाँक पाइल--मौका मिला। कोमर--कमर।

सुयोगेर अपेक्षा करितेछिल। अथच मुखे कत मिष्ट, कतइ भालोवासा। मानुषके चिनिवार जो नाइ। के जानित, ये लोक एत लिखिते पारे ताहार हृदय किछुमात्र नाइ।"

निजेर हृदयप्राचुर्येर सहित तुलना करिया चारु अमलेर शून्य हृदयके अत्यन्त अवज्ञा करिते अनेक चेष्टा करिल, किन्तु पारिल ना। भितरे भितरे नियत एकटा वेदनार उद्वेग तप्त शूलेर मतो ताहार अभिमानके ठेलिया ठेलिया तुलिते लागिल, "अमल आज वादे काल चलिया याइवे, तवु ए कयदिन ताहार देखा नाइ। आमादेर मध्ये ये परस्पर एकटा मनान्तर हइयाछे सेटा मिटाइया लइवार आर अवसरओ हइल ना।" चारु प्रतिक्षणे मने करे, अमल आपनि आसिवे—ताहादेर एतदिनकार खेलाधुला एमन करिया भाङिवे ना, किन्तु अमल आर आसेइ ना। अवशेषे यखन यात्रार दिन अत्यन्त निकटवर्ती हइया आसिल तखन चारु निजेइ अमलके डाकिया पाठाइल।

अमल वलिल, "आर-एकटु परे याच्छि।" चारु ताहादेर सेइ वारान्दार चौकिटाते गिया वसिल। सकालवेला हइते घन मेघ करिया गुमट हइया आछे—चारु ताहार खोला चुल एलो करिया माथाय जड़ाइया एकटा हातपाखा लइया क्लान्त देहे अल्प अल्प वातास करिते लागिल।

अत्यन्त देरि हइल। क्रमे ताहार हातपाखा आर चलिल ना। राग दुःख अधैर्य ताहार वुकेर भितरे फुटिया उठिल। मने मने वलिल, नाइ आसिल अमल, तातेइ वा की। किन्तु तवु पदशब्द मात्रेइ ताहार मन द्वारेर दिके छुटिया याइते लागिल।

दूर गिर्जाय एगारोटा वाजिया गेल। स्नानान्ते एखनि

चिनिवार जो नाइ—पहचानने का (कोई) उपाय नहीं है।
पारिल ना—कर न सकी। ठेलिया....लागिल—ठेलने (खींचने) लगा।
आज....काल—आज नहीं तो कल।
गुमट—उमस। चुल एलो करिया—केशों को फैला कर (खोल कर)।
राग—क्रोध। फुटिया उठिल—फैलने (उमड़ने) लगे।

भूपति खाइते आसिबे। एखनओ आध घण्टा समय आछे, एखनओ अमल यदि आसे। येमन करिया होक, ताहादेर कय-दिनकार नीरव झगड़ा आज मिटाइया फेलितेइ हइबे—अमलके एमनभावे विदाय देओया याइते पारे ना। एइ समवयसि देओर-भाजेर मध्ये ये चिरन्तन मधुर सम्बन्धटुकु आछे—अनेक भाव, आड़ि, अनेक स्नेहेर दौरात्म्य, अनेक विश्रब्ध सुखालोचनाय विजड़ित एकटि चिरच्छायामय लतावितान—अमल से कि आज धुलाय लुटाइया दिया बहुदिनेर जन्य बहुदूरे चलिया याइबे। एकटु परिताप हइबे ना? ताहार तले कि शेष जलओ सिञ्चन करिया याइबे ना—ताहादेर अनेकदिनेर देओर-भाज-सम्बन्धेर शेष अश्रुजल।

आध घण्टा प्राय अतीत हय। एलो खोँपा खुलिया खानि-कटा चुलेर गुच्छ चारु द्रुतवेगे आङुले जड़ाइते एवं खुलिते लागिल। अश्रु सम्वरण करा आर याय ना। चाकर आसिया कहिल, "माठाकरुन, बाबुर जन्ये डाब बेर करे दिते हबे।"

चारु आँचल हइते भाँड़ारेर चाबि खुलिया झन करिया चाकरेर पायेर काछे फेलिया दिल—से आश्चर्य हइया चाबि लइया चलिया गेल।

चारुर बुकेर काछ हइते की-एकटा ठेलिया कण्ठेर काछे उठिया आसिते लागिल।

यथासमये भूपति सहास्यमुखे खाइते आसिल। चारु पाखा-हाते आहारस्थाने उपस्थित हइया देखिल, अमल भूपतिर सङ्गे आसियाछे। चारु ताहार मुखेर दिके चाहिल ना।

एगारोटा—ग्यारह। देओर-भाजेर—देवर-भाभी। भाव—स्नेह, प्रीति। आड़ि—खुट्टी, अनबन। दौरात्म्य—नटखटी। विश्रब्ध—विश्वस्त।

एलो खोँपा—ढीले जूड़े को। चुलेर—केशों के। जड़ाइते—लपेटने। डाब—हरा नारियल।

भाँड़ारेर—भण्डार की।

बुकेर—छाती के।

अमल जिज्ञासा करिल, "वोठान, आमाके डाकछ ?"

चारु कहिल, "ना, एखन आर दरकार नेइ।"

अमल। ता हले आमि याइ, आमार आवार अनेक गोछा-वार आछे।

चारु तखन दीप्तचक्षे एकवार अमलेर मुखेर दिके चाहिल, कहिल, "याओ।"

अमल चारुर मुखेर दिके एकवार चाहिया चलिया गेल।

आहारान्ते भूपति किछुक्षण चारुर काछे वसिया थाके। आज देनापाओना-हिसावपत्रेर हाङ्गामे भूपति अत्यन्त व्यस्त, ताइ आज अन्तःपुरे वेशिक्षण थाकिते पारिवे ना वलिया किछु क्षुण्ण हइया कहिल, "आज आर आमि वेशिक्षण वसते पारछि ने—आज अनेक झञ्झाट।"

चारु वलिल, "ता याओ-ना।"

भूपति भाविल, चारु अभिमान करिल। वलिल, "ताइ व'ले ये एखनइ येते हवे ता नय; एकटु जिरिये येते हवे।" वलिया वसिल। देखिल चारु विमर्ष हइया आछे। भूपति अनुतप्त चित्ते अनेकक्षण वसिया रहिल, किन्तु कोनोमतेइ कथा जमाइते पारिल ना। अनेकक्षण कथोपकथनेर वृथा चेष्टा करिया भूपति कहिल, "अमल तो काल चले याच्छे, किछुदिन तोमार वोध हय खुव एकला वोध हवे।"

चारु ताहार कोनो उत्तर ना दिया येन की-एकटा आनिते चट् करिया अन्य घरे चलिया गेल। भूपति कियत्क्षण अपेक्षा करिया वाहिरे प्रस्थान करिल।

चारु आज अमलेर मुखेर दिके चाहिया लक्ष्य करियाछिल, अमल एइ कयदिनेइ अत्यन्त रोगा हइया गेछे—ताहार मुखे

गोछावार आछे—सहेजने-समेटने को है।
हाङ्गामे—गोलमाल, झंझट।
जिरिये—विश्राम करके।
चाहिया—देख कर। रोगा—दुर्वल।

तरुणतार सेइ स्फूर्ति एकेबारेइ नाइ। इहाते चारु सुखओ पाइल वेदनाओ बोध करिल। आसन्न विच्छेदइ ये अमलके क्लिष्ट करितेछे, चारुर ताहाते सन्देह रहिल ना; किन्तु तबु अमलेर एमन व्यवहार केन। केन से दूरे दूरे पालाइया बेड़ाइतेछे। विदायकालके केन से इच्छापूर्वक एमन विरोधतिक्त करिया तुलितेछे।

बिछानाय शुइया भाबिते भाबिते से हठात् चमकिया उठिया बसिल। हठात् मन्दार कथा मने पड़िल। यदि एमन हय, अमल मन्दाके भालोबासे। मन्दा चलिया गेछे बलियाइ यदि अमल एमन करिया—छि! अमलेर मन कि एमन हइबे। एत क्षुद्र? एमन कलुषित? विवाहित रमणीर प्रति ताहार मन याइबे? असम्भव। सन्देहके एकान्त चेष्टाय दूर करिया दिते चाहिल किन्तु संदेह ताहाके सबले दंशन करिया रहिल।

एमन करिया विदायकाल आसिल। मेघ परिष्कार हइल ना। अमल आसिया कम्पितकण्ठे कहिल, "बोठान, आमार याबार समय हयेछे। तुमि एखन थेके दादाके देखो। ताँर बड़ो संकटेर अवस्था—तुमि छाड़ा ताँर आर सान्त्वनार कोनो पथ नेइ।"

अमल भूपतिर विषण्ण म्लान भाव देखिया सन्धान द्वारा ताहार दुर्गतिर कथा जानिते पारियाछिल। भूपति ये किरूप निःशब्दे आपन दुःखदुर्दशार सहित एकला लड़ाइ करितेछे काहारओ काछे साहाय्य वा सन्त्वना पाय नाइ, अथच आपन आश्रित पालित आत्मीयस्वजनदिगके एइ प्रलयसंकटे विचलित हइते देय नाइ, इहा से चिन्ता करिया चुप करिया रहिल। तार परे से चारुर कथा भाबिल, निजेर कथा भाबिल, कर्णमूल लोहित हइया उठिल,

---

एकेबारेइ—बिल्कुल भी। **बेड़ाइतेछे**—फिर रहा है।

भाबिते-भाबिते—सोचते-सोचते। **चमकिया**—चौंक कर। **भालोबासे**—प्रेम करता है। **बलियाइ**—इसीलिए। **चाहिल**—चाहा।

तुमि छाड़ा—तुम्हारे अतिरिक्त।

सवेगे बलिल, "चुलोय याक आषाढ़ेर चाँद आर अमावस्यार आलो। आमि व्यारिस्टार हये एसे दादाके यदि साहाय्य करते पारि तबेइ आमि पुरुषमानुष।"

गत रात्रि समस्त रात जागिया चारु भाबिया राखियाछिल, अमलके विदायकाले की कथा बलिबे—सहास्य अभिमान एवं प्रफुल्ल औदासीन्येर द्वारा माजिया माजिया सेइ कथागुलिके से मने मने उज्ज्वल ओ शानित करिया तुलियाछिल। किन्तु विदाय दिबार समय चारुर मुखे कोनो कथाइ बाहिर हइल ना। से केवल बलिल, "चिठि लिखबे तो, अमल?"

अमल भूमिते माथा राखिया प्रणाम करिल, चारु छुटिया शयनघरे गिया द्वार बन्ध करिया दिल।

त्रयोदश परिच्छेद

भूपति वर्धमाने गिया अमलेर विवाह-अन्ते ताहाके बिलाते रओना करिया घरे फिरिया आसिल।

नाना दिक हइते घा खाइया विश्वासपरायण भूपतिर मने बहिःसंसारेर प्रति एकटा वैराग्येर भाव आसियाछिल। सभा-समिति मेलामेशा किछुइ ताहार भालो लागिल ना। मने हइल, "एइ-सब लइया आमि एतदिन केवल निजेकेइ फाँकि दिलाम—जीवनेर सुखेर दिन वृथा बहिया गेल एवं सारभाग आवर्जनाकुण्डे फेलिलाम।"

भूपति मने मने कहिल, "याक, कागजटा गेल, भालोइ हइल। मुक्तिलाभ करिलाम।" सन्ध्यार समय आँधारेर सूत्रपात देखिलेइ पाखि येमन करिया नीड़े फिरिया आसे, भूपति सेइरूप

चुलोय याक—चूल्हे में जाए।
माजिया—माज कर। शानित—पैना।
रओना—रवाना।
मेलामेशा—मिलना-जुलना। फाँकि—धोखा। आवर्जनाकुण्डे—कूड़े के गर्त में।
पाखि—पक्षी। सेइरूप—उसी प्रकार।

ताहार दीर्घदिनेर सञ्चरणक्षेत्र परित्याग करिया अन्तःपुरे चारुर काछे चलिया आसिल। मने मने स्थिर करिल, "बास्, एखन आर कोथाओ नय; एइखानेइ आमार स्थिति। ये कागजेर जाहाजटा लइया समस्त दिन खेला करिताम सेटा डुबिल, एखन घरे चलि।"

बोध करि भूपतिर एकटा साधारण संस्कार छिल—स्त्रीर उपर अधिकार काहाकेओ अर्जन करिते हय ना, स्त्री ध्रुवतारार मतो निजेर आलो निजेइ ज्वालाइया राखे—हाओयाय नेबे ना, तेलेर अपेक्षा राखे ना। बाहिरे यखन भाङ्चुर आरम्भ हइल तखन अन्तःपुरे कोनो खिलाने फाटल धरियाछे कि ना ताहा एकबार परख करिया देखार कथाओ भूपतिर मने स्थान पाय नाइ।

भूपति सन्ध्यार समय वर्धमान हइते बाड़ि फिरिया आसिल। ताड़ाताड़ि मुखहात धुइया सकाल-सकाल खाइल। अमलेर विवाह ओ बिलातयात्रार आद्योपान्त विवरण शुनिबार जन्य स्वभावतइ चारु एकान्त उत्सुक हइया आछे स्थिर करिया भूपति आज किछुमात्र विलम्ब करिल ना। भूपति शोबार घरे बिछानाय गिया शुइया गुड़गुड़िर सुदीर्घ नल टानिते लागिल। चारु एखनओ अनुपस्थित, बोध करि गृहकार्य करितेछे। तामाक पुड़िया श्रान्त भूपतिर घुम आसिते लागिल। क्षणे क्षणे घुमेर घोर भाङिया चमकिया जागिया उठिया से भाबिते लागिल, एखनओ चारु आसितेछे ना केन। अवशेषे भूपति थाकिते ना पारिया चारुके डाकिया पाठाइल। भूपति जिज्ञासा करिल, "चारु, आज ये एत देरि करले ?"

नेबे ना—बुझता नहीं। **भाङ्चुर**—तोड़-फोड़। **खिलाने फाटल धरियाछे**—मेहराब में दरार पड़ी है।

गुड़गुड़िर—हुक्के की। **नल**—सटक। **टानिते लागिल**—दम लगाने लगा। **तामाक पुड़िया**—तमाखू फूंक कर। **घुम**—नींद। **घोर**—तन्द्रा। **थाकिते ना पारिया**—रह न पा कर।

चारु ताहार जवावदिहि ना करिया कहिल, "हाँ, आज देरि हये गेल।"

चारुर आग्रहपूर्ण प्रश्नेर जन्य भूपति अपेक्षा करिया रहिल; चारु कोनो प्रश्न करिल ना। इहाते भूपति किछु क्षुण्ण हइल। तवे कि चारु अमलके भालोवासे ना। अमल यतदिन उपस्थित छिल ततदिन चारु ताहाके लइया आमोद-आह्लाद करिल, आर येइ चलिया गेल अमनि ताहार सम्बन्धे उदासीन! एइरूप विसदृश व्यवहारे भूपतिर मने खटका लागिल; से भाविते लागिल तवे की चारुर हृदयेर गभीरता नाइ। केवल से आमोद करितेइ जाने, भालोवासिते पारे ना? मेयेमानुषेर पक्षे एरूप निरासक्त भाव तो भालो नय।

चारु ओ अमलेर सखित्वे भूपति आनन्द वोध करित। एइ दुइजनेर छेलेमानुषि आड़ि ओ भाव, खेला ओ मन्त्रणा ताहार काछे सुमिष्ट कौतुकावह छिल; अमलके चारु सर्वदा ये यत्न-आदर करित ताहाते चारुर सुकोमल हृदयालुतार परिचय पाइया भूपति मने मने खुशि हइत। आज आश्चर्य हइया भाविते लागिल, से समस्तइ कि भासा-भासा, हृदयेर मध्ये ताहार कोनो भित्ति छिल ना? भूपति भाविल चारुर हृदय यदि ना थाके तबे कोथाय भूपति आश्रय पाइवे।

अल्पे अल्पे परीक्षा करिवार जन्य भूपति कथा पाड़िल; "चारु तुमि भालो छिले तो? तोमार शरीर खाराप नेइ?"

चारु संक्षेपे उत्तर करिल, "भालोइ आछि।"

भूपति। अमलेर तो बिये चुके गेल।

एइ वलिया भूपति चुप करिल। चारु तत्कालोचित एकटा-

येइ—जैसे ही। मेयेमानुषेर—स्त्रियों के।

छेलेमानुषि—वचपना, लड़कपन। आड़ि ओ भाव—खुट्टी, अनवन और स्नेह। आदर—स्नेह। भासा-भासा—ऊपरी।

कथा पाड़िल—वात उठाई।

बिये चुके गेल—विवाह तो हो गया।

कोनो संगत कथा बलिते अनेक चेष्टा करिल, कोनो कथाइ बाहिर हइल ना; से आड़ष्ट हइया रहिल।

नृपति स्वभावतइ कखनओ किछु लक्ष्य करिया देखे ना, किन्तु अनलेर विदायशोक ताहार निजेर मने लागिया आछे बलियाइ चारुर औदासीन्य ताहाके आघात करिल। ताहार इच्छा छिल, समवेदनाय व्यथित चारुर सङ्गे अनलेर कथा आलोचना करिया से हृदयभार लाघव करिबे।

नृपति। मेयेटिके देखते बेश।—चारु, घुमोच्छ?

चारु कहिल, "ना।"

नृपति। बेचारा अमल एकला चले गेल। यखन ताके गाड़िते चड़िये दिलुम, से छेलेमानुषेर मतो काँदते लागल—देखे एइ बुड़ोवयसे आमि आर चोखेर जल राखते पारलुम ना। गाड़िते दुजन साहेब छिल, पुरुषमानुषेर कान्ना देखे तादेर भारि आमोद बोध हल।

निर्वाणदीप शयनघरे विछानार अन्धकारेर मध्ये चारु प्रथमे पाश फिरिया शुइल, ताहार पर हठात् ताड़ाताड़ि विछाना छाड़िया चलिया गेल। नृपति चकित हइया जिज्ञासा करिल, "चारु, असुख करेछे?"

कोनो उत्तर ना पाइया सेओ उठिल। पाशेर बारान्दा हइते चापा कान्नार शब्द शुनिते पाइया त्रस्तपदे गिया देखिल, चारु माटिते पड़िया उपुड़ हइया कान्ना रोध करिबार चेष्टा करितेछे।

एमन दुरन्त शोकोच्छ्वास देखिया नृपति आश्चर्य हइया

आड़ष्ट—गुमसुम।

मने लागिया आछे—मन पर छाया हुआ है।

मेयेटिके देखते बेश—लड़की देखने में अच्छी है। घुमोच्छ—सो रही हो।

चड़िये दिलुम—बैठा दिया। छेलेमानुषेर मतो—बच्चों की तरह। काँदते लागल—रोने लगा। बुड़ोवयसे—बुढ़ापे में। चोखेर...पारलुम ना—आँसू न रोक सका। कान्ना—रुदन।

चापा कान्नार शब्द—दबी हुई रुलाई का शब्द। उपुड़ हइया—औंधी हो कर।

गेल। भाविल, चारुके की भुल बुझियाछिलाम। चारुर स्वभाव एलइ चापा ये, आमार काछेओ हृदयेर कोनो वेदना प्रकाश करिते चाहे ना। याहादेर प्रकृति एइरूप ताहादेर भालोबासा सुगभीर एवं ताहादेर वेदनाओ अत्यन्त वेशि। चारुर प्रेम साधारण स्त्रीलोकदेर न्याय बाहिर हइते तेमन परिदृश्यमान नहे, भूपति ताहा मने मने ठाहर करिया देखिल। भूपति चारुर भालोबासार उच्छ्वास कखनओ देखे नाइ; आज विशेष करिया बुझिल, ताहार कारण अन्तरेर दिकेइ चारुर भालोबासार गोपन प्रसार। भूपति निजेओ बाहिरे प्रकाश करिते अपटु; चारुर प्रकृतितेओ हृदयावेगेर सुगभीर अन्तःशीलतार परिचय पाइया से एकटा तृप्ति अनुभव करिल।

भूपति तखन चारुर पाशे वसिया कोनो कथा ना वलिया धीरे धीरे ताहार गाये हात वुलाइया दिते लागिल। की करिया सान्त्वना करिते हय भूपतिर ताहा जाना छिल ना—इहा से बुझिल ना, शोकके यखन केह अन्धकारे कण्ठ चापिया हत्या करिते चाहे तखन साक्षी वसिया थाकिले भालो लागे ना।

चतुर्दश परिच्छेद

भूपति यखन ताहार खवरेर कागज हइते अवसर लइल तखन निजेर भविष्यतेर एकटा छवि निजेर मनेर मध्ये आँकिया लइयाछिल। प्रतिज्ञा करियाछिल, कोनोप्रकार दुराशा-दुश्चेष्टाय याइबे ना, चारुके लइया पड़ाशुना भालोबासा एवं प्रतिदिनेर छोटोखाटो गार्हस्थ्य कर्तव्य पालन करिया चलिबे। मने करियाछिल ये-सकल घोरो सुख सवचेये सुलभ अथच सुन्दर, सर्वदाइ

चापा—दमनशील। ठाहर—निश्चय।

गाये...लागिल—शरीर पर हाथ फेरने लगा। कण्ठ चापिया—गला घोट कर।

याइबे ना—नहीं पड़ेगा। पड़ाशुना—लिखना-पढ़ना। भालोबासा—प्रेम। घोरो—घरेलू।

नाड़ाचाड़ार योग्य अथच पवित्र निर्मल, सेइ सहजलभ्य सुखगुलिर द्वारा ताहार जीवनेर गृहकोणटिते सन्ध्याप्रदीप ज्वालाइया निभृत शान्तिर अवतारणा करिबे। हासि गल्प परिहास, परस्परेर-मनोरञ्जनेर जन्य प्रत्यह छोटोखाटो आयोजन, इहाते अधिक चेष्टा आवश्यक हय ना अथच सुख अपर्याप्त हइया उठे।

कार्यकाले देखिल, सहज सुख सहज नहे। याहा मूल्य दिया किनिते हय ना ताहा यदि आपनि हातेर काछे ना पाओया याय तबे आर कोनोमतेइ कोथाओ खुंजिया पाइबार उपाय थाके ना।

भूपति कोनोमतेइ चारुर सङ्गे बेश करिया जमाइया लइते पारिल ना। इहाते से निजेकेइ दोष दिल। भाबिल, "बारो वत्सर केवल खबरेर कागज लिखिया, स्त्रीर सङ्गे की करिया गल्प करिते हय से विद्या एकेबारे खोयाइयाछि।" सन्ध्यादीप ज्वालितेइ भूपति आग्रहेर सहित घरे याय—से दुइ-एकटा कथा बले, चारु दुइ-एकटा कथा बले, तार परे की बलिबे भूपति कोनोमतेइ भाबिया पाय ना। निजेर एइ अक्षमताय स्त्रीर काछे से लज्जा बोध करिते थाके। स्त्रीके लइया गल्प करा से एतइ सहज मने करियाछिल अथच मूढ़ेर निकट इहा एतइ शक्त। सभास्थले वक्तृता करा इहार चेये सहज।

ये सन्ध्यावेलाके भूपति हास्ये कौतुके प्रणये आदरे रमणीय करिया तुलिबे कल्पना करियाछिल सेइ सन्ध्यावेला काटानो ताहादेर पक्षे समस्यार स्वरूप हइया उठिल। किछुक्षण चेष्टापूर्ण मौनेर पर भूपति मने करे "उठिया याइ"—किन्तु उठिया गेले चारु की मने करिबे एइ भाबिया उठितेओ पारे ना। बले,

---

नाड़ाचाड़ार—हिलाने-डलाने, आलोड़न के। अपर्याप्त—बहुत पर्याप्त।
किनिते—खरीदना। काछे—निकट। कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी।
बेश करिया—भली-भाँति। भाबिल—सोचा। खोयाइयाछि—भूल गया हूँ। भाबिया पाय ना—सोच नहीं पाता। इहार चेये—इसकी अपेक्षा। आदरे—स्नेह से।
काटानो—काटना, बिताना।

"चारु, तास खेलबे?" चारु अन्य कोनो गति ना देखिया बले, "आच्छा।" बलिया अनिच्छाक्रमे तास पाड़िया आने, नितान्त भुल करिया अनायासेइ हारिया याय—से खेलाय कोनो सुख थाके ना।

भूपति अनेक भाविया एकदिन चारुके जिज्ञासा करिल, "चारु, मन्दाके आनिये निले हय ना? तुमि नितान्त एकला पड़ेछ।"

चारु मन्दार नाम शुनियाइ ज्वलिया उठिल। बलिल, "ना, मन्दाके आमार दरकार नेइ।"

भूपति हासिल। मने मने खुशि हइल। साध्वीरा येखाने सतीधर्मेर किछुमात्र व्यतिक्रम देखे सेखाने धैर्य राखिते पारे ना।

विद्वेषेर प्रथम धाक्का सामलाइया चारु भाबिल, मन्दा थाकिले से हयतो भूपतिके अनेकटा आमोदे राखिते पारिबे। भूपति ताहार निकट हइते ये मनेर सुख चाय से ताहा कोनोमते दिते पारितेछे ना, इहा चारु अनुभव करिया पीड़ा बोध करितेछिल। भूपति जगत्संसारेर आर-समस्त छाड़िया एकमात्र चारुर निकट हइतेइ ताहार जीवनेर समस्त आनन्द आकर्षण करिया लइते चेष्टा करितेछे, एइ एकाग्र चेष्टा देखिया ओ निजेर अन्तरेर दैन्य उपलब्धि करिया चारु भीत हइया पड़ियाछिल। एमन करिया कतदिन किरूपे चलिबे। भूपति आर-किछु अवलम्बन करे ना केन। आर-एकटा खबरेर कागज चालाय ना केन। भूपतिर चित्तरञ्जन करिबार अभ्यास ए पर्यन्त चारुके कखनओ करिते हय नाइ; भूपति ताहार काछे कोनो सेवा दाबि करे नाइ, कोनो सुख प्रार्थना करे नाइ, चारुके से सर्वतोभाबे निजेर प्रयोजनीय करिया तोले नाइ; आज हठात् ताहार जीवनेर

पाड़िया आने—उठा लाती।
दरकार—आवश्यकता।
चाय—चाहता है। **छाड़िया**—छोड़ कर।

समस्त प्रयोजन चारुर निकट चाहिया बसाते से कोथाओ किछु येन खुँजिया पाइतेछे ना। भूपतिर की चाइ, की हइले से तृप्त हय, ताहा चारु ठिकमत जाने ना एवं जानिलेओ ताहा चारुर पक्षे सहजे आयत्तगम्य नहे।

भूपति यदि अल्पे-अल्पे अग्रसर हइत तबे चारुर पक्षे हयतो एत कठिन हइत ना; किन्तु हठात् एक रात्रे देउलिया हइया रिक्त भिक्षापात्र पातिया बसाते से येन विव्रत हइयाछे।

चारु कहिल, "आच्छा, मन्दाके आनिये नाओ, से थाकले तोमार देखाशुनोर अनेक सुविधे हते पारबे।"

भूपति हासिया कहिल, "आमार देखाशुनो! किछु दरकार नेइ।"

भूपति क्षुण्ण हइया भाबिल, "आमि बड़ो नीरस लोक, चारुके किछुतेइ आमि सुखी करिते पारितेछि ना।"

एइ भाबिया से साहित्य लइया पड़िल। बन्धुरा कखनओ बाड़ि आसिले विस्मित हइया देखित, भूपति टेनिसन, बाइरन, बङ्किमेर गल्प, एइ-समस्त लइया आछे। भूपतिर एइ अकाल-काव्यानुराग देखिया बन्धुबान्धवेरा अत्यन्त ठाट्टा-विद्रुप करिते लागिल। भूपति हासिया कहिल, "भाइ, बाँशेर फुलओ धरे, किन्तु कखन धरे तार ठिक नेइ।"

एकदिन सन्ध्यावेलाय शोबार घरे बड़ो बाति ज्वालाइया भूपति प्रथमे लज्जाय एकटु इतस्तत करिल; परे कहिल, "एकटा-किछु प'ड़े शोनाब?"

चाहिया बसाते—माँग बैठने से। **चाइ**—चाहिए। **आयत्तगम्य**—लभ्य, पहुँच के भीतर।

देउलिया—दिवालिया। **पातिया बसाते**—फैला देने से। **विव्रत**—परेशान, घबरा जाना।

देखाशुनो—देख-भाल की। **लइया पड़िल**—ले बैठा। **विद्रुप**—उपहास। **बाँशेर...ठिक नेइ**—बाँस में भी फूल आते हैं किन्तु कब आते हैं इसका कोई ठीक नहीं।

शोबार घरे—सोने के कमरे में।

चारु। कहिल, "शोनाओ-ना।"

भूपति। की शोनाव।

चारु। तोमार या इच्छे।

भूपति चारुर अधिक आग्रह ना देखिया एकटु दमिल। तबु साहस करिया कहिल, "टेनिसन थेके एकटा-किछु तर्जमा करे तोमाके शोनाइ।"

चारु कहिल, "शोनाओ।"

समस्तइ माटि हइल। संकोच ओ निरुत्साहे भूपतिर पड़ा बाधिया याइते लागिल, ठिकमतो बांला प्रतिशब्द जोगाइल ना। चारुर शून्य दृष्टि देखिया बोझा गेल, से मन दितेछे ना। सेइ दीपालोकित छोटो घरटि, सेइ सन्ध्यावेलाकार निभृत अवकाशटुकु तेमन करिया भरिया उठिल ना।

भूपति आरओ दुइ-एकबार एइ भ्रम करिया अवशेषे स्त्रीर सहित साहित्यचर्चार चेष्टा परित्याग करिल।

पञ्चदश परिच्छेद

येमन गुरुतर आघाते स्नायु अवश हइया याय एवं प्रथमटा वेदना टेर पाओया याय ना, सेइरूप विच्छेदेर आरम्भकाले अमलेर अभाव चारु भालो करिया येन उपलब्धि करिते पारे नाइ।

अवशेषे यतइ दिन याइते लागिल ततइ अमलेर अभावे सांसारिक शून्यतार परिमाप क्रमागतइ येन बाड़िते लागिल। एइ भीषण आविष्कारे चारु हतबुद्धि हइया गेछे। निकुञ्ज वन हइते बाहिर हइया से हठात् ए कोन् मरुभूमिर मध्ये आसिया

दमिल—हताश हुआ।

माटि हइल—चौपट हो गया। **पड़ा...लागिल**—पढ़ने में बाधा पड़ने लगी। **जोगाइल ना**—न सूझा। **बोझा गेल**—समझ में आ गया। **मन दितेछे ना**—(मन) ध्यान नहीं दे रही।

टेर पाओया याय ना—महसूस नहीं होता, पता नहीं चलता। **उपलब्धि**—अनुभव।

पड़ियाछे—दिनेर पर दिन याइतेछे, मरुप्रान्तर क्रमागतइ बाड़िया चलियाछे। ए मरुभूमिर कथा से किछुइ जानित ना।

घुम थेके उठियाइ हठात् बुकेर मध्ये धक् करिया उठे—मने पड़े, अमल नाइ। सकाले यखन से बारान्दाय पान साजिते बसे क्षणे क्षणे केवलइ मने हय, अमल पश्चात् हइते आसिबे ना। एक-एक समय अन्यमनस्क हइया बेशि पान साजिया फेले, सहसा मने पड़े, बेशि पान खाइबार लोक नाइ। यखनइ भाँड़ारघरे पदार्पण करे मने उदय हय, अमलेर जन्य जलखाबार दिते हइबे ना। मनेर अधैर्य अन्तःपुरेर सीमान्ते आसिया ताहाके स्मरण कराइया देय, अमल कलेज हइते आसिबे ना। कोनो-एकटा नूतन बइ, नूतन लेखा, नूतन खबर, नूतन कौतुक प्रत्याशा करिबार नाइ; काहारओ जन्य कोनो सेलाइ करिबार, कोनो लेखा लिखिबार, कोनो शौखिन जिनिस किनिया राखिबार नाइ।

निजेर असह्य कष्टे ओ चाञ्चल्ये चारु निजे विस्मित। मनोवेदनार अविश्राम पीड़ने ताहार भय हइल। निजे केवलइ प्रश्न करिते लागिल, "केन। एत कष्ट केन हइतेछे। अमल आमार एतइ की ये ताहार जन्य एत दुःख भोग करिब। आमार की हइल, एतदिन परे आमार ए की हइल। दासी चाकर रास्तार मुटे-मजुरगुलाओ निश्चिन्त हइया फिरितेछे, आमार एमन हइल केन। भगवान हरि, आमाके एमन विपदे केन फेलिले।"

केवलइ प्रश्न करे एवं आश्चर्य हय, किन्तु दुःखेर कोनो उपशम हय ना। अमलेर स्मृतिते ताहार अन्तर-बाहिर एमनि परिव्याप्त ये, कोथाओ से पालाइबार स्थान पाय ना।

भूपति कोथाय अमलेर स्मृतिर आक्रमण हइते ताहाके रक्षा

घुम थेके—नींद से। **बुकेर मध्ये**—हृदय में। **पान साजिते**—पान लगाने या बनाने। **भाँड़ारघरे**—भण्डार (घर) में। **जलखाबार**—नाश्ता। **बइ**—पुस्तक। **किनिया राखिबार**—खरीद रखने को।

मुटे—मोटिया।

उपशम—शान्ति। **पालाइबार**—भाग जाने लायक। **कोथाय**—कहाँ तो।

करिबे, ताहा ना करिया सेइ विच्छेदव्यथित स्नेहशील मूढ़ केवलइ अमलेर कथाइ मने कराइया देय ।

अवशेषे चारु एकेबारे हाल छाड़िया दिल, निजेर सङ्गे युद्ध कराय क्षान्त हइल; हार मानिया निजेर अवस्थाके अविरोधे ग्रहण करिल । अमलेर स्मृतिके यत्नपूर्वक हृदयेर मध्ये प्रतिष्ठित करिया लइल ।

क्रमे एमनि हइया उठिल, एकाग्रचित्ते अमलेर ध्यान ताहार गोपन गर्वेर विषय हइल—सेइ स्मृतिइ येन ताहार जीवनेर श्रेष्ठ गौरव ।

गृहकार्येर अवकाशे एकटा समय से निर्दिष्ट करिया लइल । सेइ समय निर्जने गृहद्वार रुद्ध करिया तन्न तन्न करिया अमलेर सहित ताहार निज जीवनेर प्रत्येक घटना चिन्ता करित । उपुड़ हइया पड़िया बालिशेर उपर मुख राखिया बारबार करिया बलित, "अमल, अमल, अमल !" समुद्र पार हइया येन शब्द आसित, "बोठान, की बोठान ।" चारु सिक्त चक्षु मुद्रित करिया बलित, "अमल, तुमि राग करिया चलिया गेले केन । आमि तो कोनो दोष करि नाइ । तुमि यदि भालोमुखे विदाय लइया याइते ताहा हइले बोध हय आमि एत दुःख पाइताम ना ।" अमल सम्मुखे थाकिले येमन कथा हइत चारु ठिक तेमनि करिया कथागुलि उच्चारण करिया बलित, "अमल तोमाके आमि एकदिन-ओ भुलि नाइ । एकदिनओ ना, एकदण्डओ ना । आमार जीवनेर श्रेष्ठ पदार्थ समस्त तुमिइ फुटाइयाछ, आमार जीवनेर सारभाग दिया प्रतिदिन तोमार पूजा करिब ।"

एइरूपे चारु ताहार समस्त घरकन्ना, ताहार समस्त कर्तव्येर अन्तःस्तरेर तलदेशे सुड़ङ्ग खनन करिया सेइ निरालोक निस्तब्ध

हाल छाड़िया दिल—पतवार छोड़ दी । क्षान्त—विरत ।
तन्न तन्न करिया—सूक्ष्म रूप से, एक-एक बात को ले कर । उपुड़ हइया—औंधी हो कर । बालिशेर—तकिये पर । बोठान—भाभी । राग करिया—नाराज़ हो कर । फुटाइयाछ—विकसित किया है ।
घरकन्ना—घर-गृहस्थी । सुड़ङ्ग—सुरंग ।

अन्धकारेर मध्ये अश्रुमालासज्जित एकटि गोपन शोकेर मन्दिर निर्माण करिया राखिल। सेखाने ताहार स्वामी वा पृथिवीर आर-काहारओ कोनो अधिकार रहिल ना। सेइ स्थानटुकु येमन गोपनतम, तेमनि गभीरतम, तेमनि प्रियतम। ताहारइ द्वारे से संसारेर समस्त छद्मवेश परित्याग करिया निजेर अनावृत आत्मस्वरूपे प्रवेश करे एवं सेखान हइते बाहिर हइया मुखोषखाना आबार मुखे दिया पृथिवीर हास्यालाप ओ क्रियाकर्मेर रङ्गभूमिर मध्ये आसिया उपस्थित हय।

षोड़श परिच्छेद

एइरूपे मनेर सहित द्वन्द्वविवाद त्याग करिया चारु ताहार बृहद् विषादेर मध्ये एकप्रकार शान्तिलाभ करिल एवं एकनिष्ठ हइया स्वामीके भक्ति ओ यत्न करिते लागिल। भूपति यखन निद्रित थाकित चारु तखन धीरे धीरे ताहार पायेर काछे माथा राखिया पायेर धुला सीमान्ते तुलिया लइत। सेवाशुश्रुषाय गृहकर्मे स्वामीर लेशमात्र इच्छा से असम्पूर्ण राखित ना। आश्रित प्रतिपालित व्यक्तिदेर प्रति कोनोप्रकार अयत्ने भूपति दुःखित हइत जानिया चारु ताहादेर प्रति आतिथ्ये तिलमात्र त्रुटि घटिते दित ना। एइरूपे समस्त काजकर्म सारिया भूपतिर उच्छिष्ट प्रसाद खाइया चारुर दिन शेष हइया याइत।

एइ सेवा ओ यत्ने भग्नश्री भूपति येन नवयौवन फिरिया पाइल। स्त्रीर सहित पूर्वे येन ताहार नवविवाह हय नाइ, एतदिन परे येन हइल। साजसज्जाय हास्ये परिहासे विकशित हइया संसारेर समस्त दुर्भावनाके भूपति मनेर एक पाशे ठेलिया राखिया दिल। रोग-आरामेर पर येमन क्षुधा बाड़िया उठे, शरीरे भोगशक्तिर विकाशके सचेतनभावे अनुभव करा याय,

---

मुखोषखाना—नकाब।
सीमान्ते—माँग में। तुलिया लइत—लगा लेती।
सारिया—समाप्त कर।

भूपतिर मने एतकाल परे सेइरूप एकटा अपूर्व एवं प्रबल भावावेशेर सञ्चार हइल। वन्धुदिगके, एमन-कि, चारुके लुकाइया भूपति केवल कविता पड़िते लागिल। मने-मने कहिल, "कागज-खाना गिया एवं अनेक दुःख पाइया एतदिन परे आमि आमार स्त्रीके आविष्कार करिते पारियाछि।"

भूपति चारुके वलिल, "चारु, तुमि आजकाल लेखा एकेवारेइ छेड़े दियेछ केन।"

चारु वलिल, "भारि तो आमार लेखा!"

भूपति। सत्यि कथा वलछि, तोमार मतो एमन वांला एखनकार लेखकदेर मध्ये आमि तो आर कारओ देखि नि। 'विश्ववन्धु'ते या लिखेछिल आमारओ ठिक ताइ मत।

चारु। आः, थामो।

भूपति "एइ देखो-ना" वलिया एकखण्ड 'सरोरुह' बाहिर करिया चारु ओ अमलेर भाषार तुलना करिते आरम्भ करिल। चारु आरक्तमुखे भूपतिर हात हइते कागज काड़िया लइया अञ्चलेर मध्ये आच्छादन करिया राखिल।

भूपति मने-मने भाविल, "लेखार सङ्गी एकजन ना थाकिले लेखा वाहिर हय ना; रोसो, आमाके लेखाटा अभ्यास करिते हइबे, ताहा हइले क्रमे चारुरओ लेखार उत्साह सञ्चार करिते पारिब।"

भूपति अत्यन्त गोपने खाता लइया लेखा अभ्यास करिते आरम्भ करिल। अभिधान देखिया पुनःपुनः काटिया, बारबार कापि करिया भूपतिर वेकार अवस्थार दिनगुलि काटिते लागिल। एत कष्टे, एत चेष्टाय ताहाके लिखिते हइतेछे ये, सेइ बहुदुःखेर रचनागुलिर प्रति क्रमे ताहार विश्वास ओ ममता जन्मिल।

अवशेषे एकदिन ताहार लेखा आर-एकजनके दिया नकल

एमन-कि—यहाँ तक कि।
काड़िया लइया—झपट कर।
रोसो—ठहरो।

कराइया भूपति स्त्रीके लइया दिल। कहिल, "आमार एक वन्धु नतुन लिखिते आरम्भ करेछे। आमि तो किछु बुझि ने, तुमि एकबार पड़े देखो देखि तोमार केमन लागे।"

खाताखाना चारुर हाते दिया साध्वसे भूपति बाहिरे चलिया गेल। सरल भूपतिर एइ छलनाटुकु चारुर बुझिते बाकि रहिल ना।

पड़िल; लेखार छाँद एवं विषय देखिया एकटुखानि हासिल। हाय! चारु ताहार स्वामीके भक्ति करिबार जन्य एत आयोजन करितेछे, से केन एमन छेलेमानुषि करिया पूजार अर्घ्य छड़ाइया फेलितेछे। चारुर काछे वाहवा आदाय करिबार जन्य ताहार एत चेष्टा केन। से यदि किछुइ ना करित, चारुर मनोयोग आकर्षणेर जन्य सर्वदाइ ताहार यदि प्रयास ना थाकित, तबे स्वामीर पूजा चारुर पक्षे सहजसाध्य हइत। चारुर एकान्त इच्छा, भूपति कोनो अंशेइ निजेके चारुर अपेक्षा छोटो ना करिया फेले।

चारु खाताखाना मुड़िया बालिशे हेलान दिया दूरेर दिके चाहिया अनेकक्षण धरिया भाविते लागिल। अमलओ ताहाके नूतन लेखा पड़िबार जन्य आनिया दित।

सन्ध्यावेलाय उत्सुक भूपति शयनगृहेर सन्मुखवर्ती वारान्दाय फुलेर टव-पर्यवेक्षणे नियुक्त हइल, कोनो कथा जिज्ञासा करिते साहस करिल ना।

चारु आपनि वलिल, "ए कि तोमार वन्धुर प्रथम लेखा।"

भूपति कहिल, "हाँ।"

चारु। एत चमत्कार हयेछे—प्रथम लेखा व'ले मनेइ हय ना।

साध्वसे—सम्भ्रम से।

पड़िल—पढ़ा। छाँद—शैली। एकटुखानि—तनिक-सी। छेलेमानुषि—बचपना।

छड़ाइया फेलितेछे—बखेरे दे रहा है। आदाय करिबार जन्य—पाने के लिए। हेलान दिया—टेक लगा कर। टव—(अं०) गमला।

भूपति अत्यन्त खुशि हइया भाबिते लागिल, बेनामि लेखाटाय निजेर नामजारि करा याय की उपाये।

भूपतिर खाता भयंकर द्रुतगतिते पूर्ण हइया उठिते लागिल। नाम प्रकाश हइतेओ विलम्ब हइल ना।

सप्तदश परिच्छेद

बिलात हइते चिठि आसिबार दिन कबे, ए खबर चारु सर्वदाइ राखित। प्रथमे एडेन हइते भूपतिर नामे एकखाना चिठि आसिल, ताहाते अमल बउठानके प्रणाम निवेदन करियाछे; सुयेज हइतेओ भूपतिर चिठि आसिल, बउठान ताहार मध्येओ प्रणाम पाइल। माल्टा हइते चिठि पाओया गेल, ताहातेओ पुनश्च-निवेदने बउठानेर प्रणाम आसिल।

चारु अमलेर एकखाना चिठिओ पाइल ना। भूपतिर चिठिगुलि चाहिया लइया उलटिया पालटिया बारबार करिया पड़िया देखिल—प्रणामज्ञापन छाड़ा आर कोथाओ ताहार सम्बन्धे आभासमात्रओ नाइ।

चारु एइ कयदिन ये-एकटि शान्त विषादेर चन्द्रातपच्छायार आश्रय लइयाछिल अमलेर एइ उपेक्षाय ताहा छिन्न हइया गेल। अन्तरेर मध्ये ताहार हृत्पिण्डटा लइया आबार येन छेँड़ाछेँड़ि आरम्भ हइल। ताहार संसारेर कर्तव्यस्थितिर मध्ये आबार भूमिकम्पेर आन्दोलन जागिया उठिल।

एखन भूपति एक-एकदिन अर्धरात्रे उठिया देखे, चारु बिछानाय नाइ। खुँजिया खुँजिया देखे, चारु दक्षिणेर घरेर जानलाय बसिया आछे। ताहाके देखिया चारु ताड़ाताड़ि उठिया बले, "घरे आज ये गरम, ताइ एकटु वातासे एसेछि।"

एडेन—अदन। सुयेज—स्वेज।
चाहिया लइया—माँग कर।
छेँड़ाछेँड़ि—काट-फाँस।
वातासे—हवा में।

भूपति उद्विग्न हइया बिछानाय पाखा टानार बन्दोबस्त करिया दिल, एवं चारुर स्वास्थ्य भङ्ग आशङ्का करिया सर्वदाइ ताहार प्रति दृष्टि राखिल। चारु हासिया बलित, "आमि बेश आछि, तुमि केन मिछामिछि व्यस्त हओ।" एइ हासिटुकु फुटाइया तुलिते ताहार वक्षेर समस्त शक्ति प्रयोग करिते हइत।

अमल बिलाते पौँछिल। चारु स्थिर करियाछिल, पथे ताहाके स्वतन्त्र चिठि लिखिबार यथेष्ट सुयोग हयतो छिल ना, बिलाते पौँछिया अमल लम्बा चिठि लिखिबे। किन्तु से लम्बा चिठि आसिल ना।

प्रत्येक मेल आसिबार दिने चारु ताहार समस्त काजकर्म-कथावार्तार मध्ये भितरे भितरे छटफट करिते थाकित। पाछे भूपति बले, "तोमार नामे चिठि नाइ" एइजन्य साहस करिया भूपतिके प्रश्न जिज्ञासा करिते पारित ना।

एमन अवस्थाय एकदिन चिठि आसिबार दिने भूपति मन्दगमने आसिया मृदुहास्ये कहिल, "एकटा जिनिस आछे, देखबे?"

चारु व्यस्तसमस्त चमकित हइया कहिल, "कइ, देखाओ।"

भूपति परिहासपूर्वक देखाइते चाहिल ना।

चारु अधीर हइया उठिया भूपतिर चादरेर मध्य हइते वाञ्छित पदार्थ काड़िया लइबार चेष्टा करिल। से मने मने भाविल, "सकाल हइतेइ आमार मन बलितेछे, आज आमार चिठि आसिबेइ—ए कखनओ व्यर्थ हइते पारे ना।"

भूपतिर परिहासस्पृहा बाड़िया उठिल; से चारुके एड़ाइया खाटेर चारि दिके फिरिते लागिल।

पाखा टानार—पंखा खींचने का। मिछामिछि—निरर्थक, मुफ्त। व्यस्त—परेशान।

हयतो—शायद। मेल—(अं०) डाक।

जिनिस—चीज।

व्यस्तसमस्त—अस्थिर।

काड़िया लइबार—छीन लेने को।

एड़ाइया—बचा कर अथवा बच कर।

तखन चारु एकान्त विरक्तिर सहित खाटेर उपर वसिया चोख छल्छल् करिया तुलिल ।

चारुर एकान्त आग्रहे भूपति अत्यन्त खुशि हइया चादरेर भितर हइते निजेर रचनार खाताखाना बाहिर करिया ताड़ाताड़ि चारुर कोले दिया कहिल, "राग कोरो ना । एइ नाओ ।"

अष्टदश परिच्छेद

अमल यदिओ भूपतिके जानाइयाछिल ये, पड़ाशुनार ताड़ाय से दीर्घकाल पत्र लिखिते समय पाइबे ना, तबु दुइ-एक मेल ताहार पत्र ना आसाते समस्त संसार चारुर पक्षे कण्टकशय्या हइया उठिल ।

सन्ध्यावेलाय पाँच कथार मध्ये चारु अत्यन्त उदासीनभावे शान्तस्वरे ताहार स्वामीके कहिल, "आच्छा देखो, विलाते एकटा टेलिग्राफ क'रे जानले हय ना, अमल केमन आछे ?"

भूपति कहिल, "दुइ हप्ता आगे तार चिठि पाओया गेछे, से एखन पड़ाय व्यस्त ।"

चारु । ओः, तबे काज नेइ । आमि भावछिलुम, विदेशे आछे, यदि व्यामोस्यामो हय—बला तो याय ना ।

भूपति । नाः, तेमन कोनो व्यामो हले खबर पाओया येत । टेलिग्राफ कराओ तो कम खरचा नय ।

चारु । ताइ नाकि । आमि भेवेछिलुम, बड़ो जोर एक टाका कि दु टाका लागबे ।

भूपति । बल की, प्राय एकशो टाकार धाक्का ।

चारु । ता हले तो कथाइ नेइ ।

दिन-दुयेक परे चारु भूपतिके बलिल, "आमार बोन एखन

कोले—गोद में ।
ताड़ाय—व्यस्तता (के कारण) ।
व्यामोस्यामो—हारी-बीमारी ।

चुंचड़ोय आछे, आज एकबार तार खबर निये आसते पार?"

भूपति। केन। कोनो असुख करेछे नाकि।

चारु। ना, असुख ना, जानइ तो तुमि गेले तारा कत खुशि हय।

भूपति चारुर अनुरोधे गाड़ि चड़िया हाओड़ा-स्टेशन-अभिमुखे छुटिल। पथे एक सार गोरुर गाड़ि आसिया ताहार गाड़ि आटक करिल।

एमन समय परिचित टेलिग्राफेर हरकरा भूपतिके देखिया ताहार हाते एकखाना टेलिग्राफ लइया दिल। बिलातेर टेलिग्राम देखिया भूपति भारि भय पाइल। भाबिल, अमलेर हय तो असुख करियाछे। भये भये खुलिया देखिल टेलीग्रामे लेखा आछे, "आमि भालो आछि।"

इहार अर्थ की। परीक्षा करिया देखिल, इहा प्री-पेड टेलिग्रामेर उत्तर।

हाओड़ा याओया हइल ना। गाड़ि फिराइया भूपति बाड़ि आसिया स्त्रीर हाते टेलिग्राम दिल। भूपतिर हाते टेलिग्राम देखिया चारुर मुख पांशुवर्ण हइया गेल।

भूपति कहिल, "आमि एर माने किछुइ बुझते पारछि ने।" अनुसन्धाने भूपति माने बुझिल। चारु निजेर गहना बन्धक राखिया टाका धार करिया टेलिग्राम पाठाइयाछिल।

भूपति भाबिल, एत करिबार तो दरकार छिल ना। आमाके एकटु अनुरोध करिया धरिलेइ तो आमि टेलिग्राफ करिया दिताम, चाकरके दिया गोपने बाजारे गहना बन्धक दिते पाठानो—ए तो भालो हय नाइ।

थाकिया थाकिया भूपतिर मने केवलइ एइ प्रश्न हइते लागिल,

बोन—बहन। **चुंचड़ोय**—(स्थान का नाम)
एक सार...गाड़ि—बैलगाड़ियों की एक लाइन। **आटक करिल**—रोक दिया।
धार—उधार।
थाकिया थाकिया—रह-रह कर।

चारु केन एत बाड़ाबाड़ि करिल। एकटा अस्पष्ट सन्देह अलक्ष्य-भावे ताहाके विद्ध करिते लागिल। से सन्देहटाके भूपति प्रत्यक्ष-भावे देखिते चाहिल ना, भुलिया थाकिते चेष्टा करिल, किन्तु वेदना कोनोमते छाड़िल ना।

ऊनविंशति परिच्छेद

अमलेर शरीर भालो आछे, तबु से चिठि लेखे ना। एकेबारे एमन निदारुण छाड़ाछाड़ि हइल की करिया। एकबार मुखोमुखि एइ प्रश्नटार जवाब लइया आसिते इच्छा हय, किन्तु मध्ये समुद्र—पार हइबार कोनो पथ नाइ। निष्ठुर विच्छेद, निरुपाय विच्छेद, सकल प्रश्न सकल प्रतीकारेर अतीत विच्छेद।

चारु आपनाके आर खाड़ा राखिते पारे ना। काज-कर्म पड़िया थाके, सकल विषयेइ भुल हय, चाकरबाकर चुरि करे; लोके ताहार दीनभाव लक्ष्य करिया नानाप्रकार कानाकानि करिते थाके, किछुतेइ तार चेतनामात्र नाइ।

एमनि हइल, हठात् चारु चमकिया उठित, कथा कहिते कहिते ताहाके काँदिबार जन्य उठिया याइते हइत, अमलेर नाम शुनिबामात्र ताहार मुख विवर्ण हइया याइत।

अवशेषे भूपतिओ समस्त देखिल, एवं याहा मुहूर्तेर जन्य भाबे नाइ ताहाओ भाबिल—संसार एकेबारे ताहार काछे वृद्ध शुष्क जीर्ण हइया गेल।

माझे ये-कयदिन आनन्देर उन्मेषे भूपति अन्ध हइयाछिल

बाड़ाबाड़ि—ज्यादती। कोनोमते—किसी प्रकार।

छाड़ाछाड़ि—विच्छेद। मुखोमुखि—आमने-सामने। प्रतीकारेर अतीत—प्रतिकार परे।

खाड़ा—खड़ा, तत्पर। कानाकानि—कानाफूसी। किछुतेइ—किसी वस्तु में भी।

चमकिया उठित—चौंक पड़ती। काँदिबार जन्य—रोने के लिए। शुनिबामात्र—सुनते ही।

अवशेषे—आखिर। भाबे—सोचा।

सेइ कयदिनेर स्मृति ताहाके लज्जा दिते लागिल। ये अनभिज्ञ वानर जहर चेने ना ताहाके झुंटा पाथर दिया कि एमनि करियाइ ठकाइते हय।

चारुर ये-सकल कथाय आदरे व्यवहारे भूपति भुलियाछिल सेगुला मने आसिया ताहाके 'मूढ़, मूढ़, मूढ़' बलिया वेत मारिते लागिल।

अवशेषे ताहार वहु कष्टेर, वहु यत्नेर रचनागुलिर कथा यखन मने उदय हइल तखन भूपति धरणीके द्विधा हइते वलिल। अङ्कुशताड़ितेर मतो चारुर काछे द्रुतपदे गिया भूपति कहिल, "आमार सेइ लेखागुलो कोथाय।"

चारु कहिल, "आमार काछेइ आछे।"

भूपति कहिल, "सेगुलो दाओ।"

चारु तखन भूपतिर जन्य डिमेर कचुरि भाजितेछिल; कहिल "तोमार कि एखनइ चाइ।"

भूपति कहिल, "हाँ, एखनइ चाइ।"

चारु कड़ा नामाइया राखिया आलमारि हइते खाता ओ कागजगुलि बाहिर करिया आनिल।

भूपति अधीरभावे ताहार हात हइते समस्त टानिया लइया खातापत्र एकेवारे उनानेर मध्ये फेलिया दिल।

चारु व्यस्त हइया सेगुला बाहिर करिवार चेष्टा करिया कहिल, "ए की करले।"

भूपति ताहार हात चापिया धरिया गर्जन करिया वलिल, "थाक्।"

जहर—मणि, जवाहर। चेने ना—नहीं पहचानता। ठकाइते हय—ठगा जाता है।
सेगुला—वे (सव)। द्विधा हइते—फट जाने को।
डिमेर...भाजितेछिल—अण्डे की कचौड़ियाँ सेक रही थी। एखनइ—अभी।
कड़ा नामाइया—कड़ाही उतार कर।
टानिया—खींच, छीन कर। उनानेर—चूल्हे, अँगीठी में।
चापिया धरिया—ज़ोर से पकड़ कर। थाक्—रहने दो।

चारु विस्मित हइया दाँड़ाइया रहिल। समस्त लेखा निःशेषे पुड़िया भस्म हइया गेल।

चारु बुझिल। दीर्घनिश्वास फेलिल। कचुरिभाजा असमाप्त राखिया धीरे धीरे अन्यत्र चलिया गेल।

चारुर सम्मुखे खाता नष्ट करिबार संकल्प भूपतिर छिल ना। किन्तु ठिक सामनेइ आगुनटा ज्वलितेछिल, देखिया केमन येन ताहार खुन चापिया उठिल। भूपति आत्मसम्वरण करिते ना पारिया प्रवञ्चित निर्बोधेर समस्त चेष्टा वञ्चनाकारिणीर सम्मुखेइ आगुने फेलिया दिल।

समस्त छाइ हइया गेले भूपतिर आकस्मिक उद्दामता यखन शान्त हइया आसिल तखन चारु आपन अपराधेर बोझा वहन करिया येरूप गभीर विषादे नीरव नतमुखे चलिया गेल ताहा भूपतिर मने जागिया उठिल—सम्मुखे चाहिया देखिल, भूपति विशेष करिया भालोबासे बलियाइ चारु स्वहस्ते यत्न करिया खाबार तैरि करितेछिल।

भूपति बारान्दार रेलिङेर उपर भर दिया दाँड़ाइल। मने मने भाबिते लागिल—ताहार जन्य चारुर एइ ये-सकल अश्रान्त चेष्टा, एइ ये-समस्त प्राणपण वञ्चना, इहा अपेक्षा सकरुण व्यापार जगत्संसारे आर की आछे। एइ-समस्त वञ्चना, ए तो छलनाकारिणीर हेय छलनामात्र नहे; एइ छलनागुलिर जन्य क्षतहृदयेर क्षतयन्त्रणा चतुर्गुण बाड़ाइया अभागिनीके प्रतिदिन प्रतिमुहूर्ते हृत्पिण्ड हइते रक्त निष्पेषण करिया बाहिर करिते हइयाछे। भूपति मने मने कहिल, "हाय अबला, हाय दुःखिनी! दरकार छिल ना, आमार ए-सब किछुइ दरकार छिल ना। एतकाल

पुड़िया—जल कर।
कचुरिभाजा—कचौड़ियाँ सेकना।
खुन चापिया उठिल—ज़िद चढ़ गई।
छाइ—राख। चाहिया देखिल—ताका। बलियाई—इसीलिए। खाबार—खाद्य। तैरि—तैयार। उपर भर दिया—सहारे। भाबिते—सोचने। निष्पेषण करिया—पीस कर, दाब कर। दरकार—आवश्यकता।

आमि तो भालोबासा ना पाइयालो 'पाइ नाइ' वलिया जानितेओ पारि नाइ—आमार तो केवल प्रुफ देखिया, कागज लिखियाइ चलिया गियाछिल; आमार जन्य एत करिबार कोनो दरकार छिल ना।"

तखन आपनार जीवनके चारुर जीवन हइते दूरे सराइया लइया—डाक्तार येमन सांघातिक व्याधिग्रस्त रोगीके देखे, भूपति तेमनि करिया निःसम्पर्क लोकेर मतो चारुके दूर हइते देखिल। ऐ एकटि क्षीणशक्ति नारीर हृदय की प्रबल संसारेर द्वारा चारि दिके आक्रान्त हइयाछे। एमन लोक नाइ याहार काछे सकल कथा व्यक्त करिते पारे, एमन कथा नहे याहा व्यक्त करा याय, एमन स्थान नाइ येखाने समस्त हृदय उद्घाटित करिया दिया से हाहाकार करिया उठिते पारे—अथच एइ अप्रकाश्य, अपरिहार्य अप्रतिविधेय प्रत्यहपुञ्जीभूत दुःखभार वहन करिया नितान्त सहज लोकेर मतो, ताहार सुस्थचित्त प्रतिवेशिनीदेर मतो, ताहाके प्रतिदिनेर गृहकर्म सम्पन्न करिते हइतेछे।

भूपति ताहार शयनगृहे गिया देखिल, जानालार गरादे धरिया अश्रुहीन अनिमेष दृष्टिते चारु बाहिरेर दिके चाहिया आछे। भूपति आस्ते आस्ते ताहार काछे आसिया दाँड़ाइल—किछु बलिल ना, ताहार माथार उपरे हात राखिल।

विंश परिच्छेद

बन्धुरा भूपतिके जिज्ञासा करिल, "व्यापारखाना की। एत व्यस्त केन।"

भूपति कहिल, "खबरेर कागज—"

सराइया लइया—हटा कर, सरका कर। प्रतिवेशिनीदेर मतो—पड़ोसिनों की भाँति।
गरादे धरिया—छड़ पकड़ कर।
व्यापारखाना—मामला।

बन्धु। आबार खबरेर कागज? भिटेमाटि खबरेर कागजे मुड़े गङ्गार जले फेलते हबे नाकि।

भूपति। ना, आर निजेर कागज करछि ने।

बन्धु। तबे?

भूपति। मैशुरे एकटा कागज बेर हबे, आमाके तार सम्पादक करेछे।

बन्धु। बाड़िघर छेड़े एकेबारे मैशुरे याबे? चारुके सङ्गे नियें याच्छ?

भूपति। ना, मामारा एखाने एसे थाकबेन।

बन्धु। सम्पादकि नेशा तोमार आर किछुतेइ छुटल ना।

भूपति। मानुषेर या होक एकटा-किछु नेशा चाइ।

विदायकाले चारु जिज्ञासा करिल, "कबे आसबे।"

भूपति कहिल, "तोमार यदि एकला बोध हय, आमाके लिखो, आमि चले आसब।"

बलिया विदाय लइया भूपति यखन द्वारेर काछ पर्यन्त आसिया पौँछिल तखन हठात् चारु छुटिया आसिया ताहार हात चापिया धरिल, कहिल, "आमाके सङ्गे निये याओ। आमाके एखाने फेले रेखे येयो ना।"

भूपति थमकिया दाँड़ाइया चारुर मुखेर दिके चाहिया रहिल। मुष्टि शिथिल हइया भूपतिर हात हइते चारुर हात खुलिया आसिल। भूपति चारुर निकट हइते सरिया बारान्दाय आसिया दाँड़ाइल।

भूपति बुझिल, अमलेर विच्छेदस्मृति ये बाड़िके वेष्टन करिया ज्वलितेछे, चारु दावानलग्रस्त हरिणीर मतो से बाड़ि परित्याग करिया पालाइते चाय।—"किन्तु, आमार कथा से एकबार भाबिया

भिटेमाटि—(पुश्तैनी) घर-द्वार। **मुड़े**—लपेट कर।
चापिया धरिल—कस कर पकड़ लिया।
थमकिया—ठिठक कर, रुक कर। **मुष्टि**—मुट्ठी। **सरिया**—हट कर।
भाबिया—सोच कर।

देखिल ना ? आमि कोथाय पालाइब। ये स्त्री हृदयेर मध्ये नियत अन्यके ध्यान करितेछे, विदेशे गियाओ ताहाके भुलिते समय पाइब ना ? निर्जन बन्धुहीन प्रवासे प्रत्यह ताहाके सङ्गदान करिते हइबे ? समस्त दिन परिश्रम करिया सन्ध्याय यखन घरे फिरिब तखन निस्तब्ध शोकपरायणा नारीके लइया सेइ सन्ध्या की भयानक हइया उठिबे। याहार अन्तरेर मध्ये मृतभार, ताहाके वक्षेर काछे धरिया राखा, से आमि कतदिन पारिब। आरओ कत वत्सर प्रत्यह आमाके एमनि करिया बाँचिते हइबे! ये आश्रय चूर्ण हइया भाङिया गेछे ताहार भाङा इँटकाठगुला फेलिया याइते पारिब ना, काँधे करिया बहिया बेड़ाइते हइबे ?"

भूपति चारुके आसिया कहिल, "ना, से आमि पारिब ना।"

मुहूर्तेर मध्ये समस्त रक्त नामिया गिया चारुर मुख कागजेर मतो शुष्क सादा हइया गेल, चारु मुठा करिया खाट चापिया धरिल।

तत्क्षणात् भूपति कहिल, "चलो, चारु, आमार सङ्गेइ चलो।"

चारु बलिल, "ना, थाक्।"

अप्रैल-दिसम्बर, १९०१ ई०

पालाइब—भागूंगा। **नियत**—सतत, सदैव। **काँधे...हइबे**—कंधे पर लादे भटकना होगा।

मुठ करिया...धरिल—खाट को ज़ोर से (मुट्ठी में) पकड़ लिया।

मास्टारमशाय

भूमिका

रात्रि तखन प्राय दुटा। कलिकातार निस्तब्ध शब्दसमुद्रे एकटु-खानि ढेउ तुलिया एकटा बड़ो जुड़िगाड़ि भवानीपुरेर दिक हइते आसिया बिर्जितलाओयेर मोड़ेर काछे थामिल। सेखाने एकटा ठिकागाड़ि देखिया आरोही बाबु ताहाके डाकिया आनाइलेन। ताँहार पाशे एकटि कोट-ह्याट-परा बाङालि बिलात-फेर्ता युवा सम्मुखेर आसने दुइ पा तुलिया दिया एकटु मदमत्त अवस्थाय घाड़ नामाइया घुमाइतेछिल। एइ युवकटि नूतन बिलात हइते आसियाछे। इहारइ अभ्यर्थना-उपलक्षे बन्धुमहले एकटा खाना हइया गेछे। सेइ खाना हइते फिरिबार पथे एकजन बन्धु ताहाके किछुदूर अग्रसर करिबार जन्य निजेर गाड़िते तुलिया लइयाछेन। तिनि इहाके दु-तिनबार ठेला दिया जागाइया कहिलेन, "मजुमदार, गाड़ि पाओया गेछे, बाड़ि याओ।"

मजुमदार सचकित हइया एकटा बिलाति दिव्य गालिया भाड़ाटे गाड़िते उठिया पड़िल। ताहार गाड़ोयानके भालो करिया ठिकाना बात्लाइया दिया ब्रुहाम गाड़िर आरोही निजेर गम्य पथे चलिया गेलेन।

ठिकागाड़ि किछुदूर सिधा गिया पार्क स्ट्रीटेर सम्मुखे मयदानेर रास्ताय मोड़ लइल। मजुमदार आर-एकबार इङरेजि शपथ उच्चारण करिया आपन मने कहिल, 'ए की! ए तो आमार

मशाय—महाशय। ढेउ तुलिया—लहरें उठाती हुई। जुड़िगाड़ि—दो घोड़ों की बग्घी। ठिकागाड़ि—किराये की गाड़ी।

फेर्ता—लौटा हुआ। घाड़ नामाइया—गर्दन झुकाए। बन्धुमहले—मित्रमण्डली में। ठेला दिया—हिला कर।

दिव्य—शपथ (गाली)। गालिया—गाली दे कर। भाड़ाटे—किराये की। ब्रुहाम—बग्घी।

पथ नय !' तार परे निद्राजड़ अवस्थाय भाबिल, 'हवेओ वा, एइटिइ हयतो सोजा रास्ता ।'

मयदाने प्रवेश करितेइ मजुमदारेर गा केमन करिया उठिल । हठात् ताहार मने हइल—कोनो लोक नाइ तबु ताहार पाशेर जायगाटा येन भर्ति हइया उठितेछे; येन ताहार आसनेर शून्य अंशेर आकाशटा निरेट हइया ताहाके ठासिया धरितेछे । मजुम-दार भाबिल, 'ए की व्यापार । गाड़िटा आमार सङ्गे ए किरकम व्यवहार शुरू करिल ।'

"एइ गाड़ोयान, गाड़ोयान !"

गाड़ोयान कोनो जबाब दिल ना । पिछनेर खड़खड़ि खुलिया फेलिया सहिसटार हात चापिया धरिल; कहिल, "तुम् भितर आके बैठो ।"

सहिस भीतकण्ठे कहिल, "नेहि, सा'ब, भितर नेहि जायेगा !"

शुनिया मजुमदारेर गाये काँटा दिया उठिल; से जोर करिया सहिसेर हात चापिया कहिल, "जल्दि भितर आओ ।"

सहिस सबले हात छिनाइया लइया नामिया दौड़ दिल । तखन मजुमदार पाशेर दिके भये भये ताकाइया देखिते लागिल; किछुइ देखिते पाइल ना, तबु मने हइल, पाशे एकटा अटल पदार्थ एकेबारे चापिया बसिया आछे । कोनोमते गलाय आओयाज आनिया मजुमदार कहिल, "गाड़ोयान, गाड़ि रोखो ।" बोध हइल, गाड़ोयान येन दाँड़ाइया उठिया दुइ हाते राश टानिया घोड़ा थामाइते चेष्टा करिल—घोड़ा कोनोमतेइ थामिल ना ।

हवेओ वा—शायद हो भी । हयतो—शायद । सोजा—सीधा ।

गा—शरीर । भर्ति—भरी । निरेट—ठोस । ठासिया धरितेछे—दबाए दे रहा है ।

खड़खड़ि—खिड़की । सहिसटार...धरिल—सईस का हाथ कस कर पकड़ लिया ।

गाये....उठिल—शरीर रोमांचित हो उठा

नामिया...दिल—उतर कर भाग गया । चापिया-सिया आछे—सट कर बैठा हुआ है । दाँड़ाइया उठिल—खड़े हो कर ।

ना थामिया घोड़ा दुटा रेड रोडेर रास्ता धरिया पुनर्बार दक्षिणेर दिके मोड़ लइल। मजुमदार व्यस्त हइया कहिल, "आरे, काँहा याता।" कोनो उत्तर पाइल ना। पाशेर शून्यतार दिके रहिया रहिया कटाक्ष करिते करिते मजुमदारेर सर्वाङ्ग दिया घाम छुटिते लागिल। कोनोमते आड़ष्ट हइया निजेर शरीरटाके यतदूर संकीर्ण करिते हय, ताहा से करिल, किन्तु से यतटुकु जायगा छाड़िया दिल ततटुकु जायगा भरिया उठिल। मजुमदार मने मने तर्क करिते लागिल ये, 'कोन् प्राचीन युरोपीय ज्ञानी बलियाछेन, Nature abhors vacuum—ताइ तो देखितेछि। किन्तु एटा की रे! एटा कि Nature? यदि आमाके किछु ना बले तबे आमि एखनइ इहाके समस्त जायगाटा छाड़िया दिया लाफाइया पड़ि।' लाफ दिते साहस हइल ना—पाछे पिछनेर दिक हइते अभावितपूर्व एकटा-किछु घटे। 'पाहारा-ओयाला' बलिया डाक दिबार चेष्टा करिल—किन्तु बहुकष्टे एमनि एकटुखानि अद्भुत क्षीण आओयाज बाहिर हइल ये, अत्यन्त भयेर मध्येओ ताहार हासि पाइल। अन्धकारे मयदानेर गाछगुलो भूतेर निस्तब्ध पार्लामेण्टेर मतो परस्पर मुखामुखि करिया दाँड़ाइया रहिल, एवं ग्यासेर खुँटिगुलो समस्तइ येन जाने अथच किछुइ येन बलिबे ना, एमनिभाबे खाड़ा हइया मिट्‌मिटे आलोकशिखाय चोख टिपिते लागिल। मजुमदार मने करिल, चट् करिया एक लम्फे सामनेर आसने गिया बसिबे। येमनि मने करा अमनि अनुभव करिल सामनेर आसन हइते केवलमात्र एकटा चाहनि ताहार मुखेर दिके ताकाइया आछे। चक्षु नाइ, किछुइ नाइ, अथच एकटा चाहनि। से चाहनि ये काहार ताहा

व्यस्त—व्यग्र। घाम—पसीना। आड़ष्ट हइया—सिकुड़ कर। लाफाइया पड़ि—कूद पड़ूँ। पाछे—ऐसा न हो कि। अभाबितपूर्व—पहले से न सोचा हुआ। गाछगुलो—वृक्ष (बहुव०)। मुखामुखि—आमने-सामने। खुँटिगुलो—खम्बे। मिटमिटे—टिमटिमाते हुए। चोख टिपिते लागिल—(शरारतसे) आँखें मिचकाने लगे। लम्फे—छलाँग में। चाहनि—स्थिर दृष्टि।

येन मने पड़ितेछे अथच कोनोमतेइ येन मने आनिते पारितेछे ना। मजुमदार दुइ चक्षु जोर करिया बुजिबार चेष्टा करिल—किन्तु भये वुजिते पारिल ना—सेइ अनिर्देश्य चाहनिर दिके दुइ चोख एमन शक्त करिया मेलिया रहिल ये, निमेप फेलिते समय पाइल ना।

ए दिके गाड़िटा केवलइ मयदानेर रास्तार उत्तर हइते दक्षिणे ओ दक्षिण हइते उत्तरे चक्रपथे घुरिते लागिल। घोड़ा दुटो क्रमेइ येन उन्मत्त हइया उठिल—ताहादेर वेग केवलइ बाड़िया चलिल—गाड़िर खड़्खड़ेगुलो थर्थर् करिया काँपिया झर्झर् शब्द करिते लागिल।

एमन समय गाड़िटा येन किसेर उपर खुब एकटा धाक्का खाइया हठात् थामिया गेल। मजुमदार चकित हइया देखिल, ताहादेरइ रास्ताय गाड़ि दाँड़ाइयाछे ओ गाड़ोयान ताहाके नाड़ा दिया जिज्ञासा करितेछे, "साहेब, कोथाय याइते हइबे बलो।"

मजुमदार रागिया जिज्ञासा करिल, "एतक्षण धरिया आमाके मयदानेर मध्ये घुराइलि केन।

गाड़ोयान आश्चर्य हइया कहिल, "कइ, मयदानेर मध्ये तो घुराइ नाइ!"

मजमुदार विश्वास ना करिया कहिल, "तबे ए कि शुधु स्वप्न।"

गाड़ोयान एकटु भाबिया भीत हइया कहिल, "बाबुसाहेब, बुझि शुधु स्वप्न नहे। आमार एइ गाड़ितेइ आज तिन बछर हइल एकटा घटना घटियाछिल।"

बुजिबार—(आँख) बंद कर लेने की। मेलिया रहिल—खोले रहा।
खड़्खड़ेगुलो—खिड़कियाँ, झिलमिली।
नाड़ा दिया—हिला कर।
रागिया—क्रुद्ध हो कर। घुराइलि केन—क्यों घुमाता रहा।
कइ—कहाँ।
शुधु—केवल।
एकटु भाबिया—कुछ सोच कर। बुझि—लगता है।

मजुमदारेर तखन नेशा ओ घुमेर घोर सम्पूर्ण छाड़िया याओयाते गाड़ोयानेर गल्पे कर्णपात ना करिया भाड़ा चुकाइया दिया चलिया गेल।

किन्तु, रात्रे ताहार भालो करिया घुम हइल ना—केवलइ भाविते लागिल, सेइ चाहनिटा कार।

१

अधर मजुमदारेर बाप सामान्य शिप-सरकारि हइते आरम्भ करिया एकटा बड़ो हौसेर मुच्छुद्दिगिरि पर्यन्त उठियाछिलेन। अधरबाबु बापेर उपार्जित नगद टाका सुदे खाटाइतेछेन, ताँहाके आर निजे खाटिते हय ना। बाप माथाय सादा फेटा बाँधिया पाल्किते करिया आपिसे याइतेन, ए दिके ताँहार क्रियाकर्म दान-ध्यान यथेष्ट छिल। विपदे-आपदे अभावे-अनटने सकल श्रेणीर लोकेइ ये ताँहाके आसिया धरिया पड़ित, इहाइ तिनि गर्वेर विषय मने करितेन।

अधरबाबु बड़ो बाड़ि ओ गाड़ि-जुड़ि करियाछेन, किन्तु लोकेर सङ्गे आर ताँहार सम्पर्क नाइ; केवल टाका धारेर दालाल आसिया ताँहार बाँधानो हुँकाय तामाक टानिया याय एवं अयार्टनि आपिसेर बाबुदेर सङ्गे स्टाम्प-देओया दलिलेर शर्त सम्बन्धे आलोचना हइया थाके। ताँहार संसारे खरचपत्र सम्बन्धे हिसावेर एमनि कषाकषि ये, पाड़ार फुटबाल क्लावेर

घुमेर घोर—नींद का वेग।

चाहनिटा—स्थिर दृष्टि।

शिप-सरकारी—गुमाश्तागीरी। हौसेर मुच्छुद्दिगिरि—कोठी (Firm) के मुनीम का पद। खाटाइतेछेन—(उधार) देते हैं। खाटिते हय ना—परिश्रम नहीं करना पड़ता। सादा—सफेद। अनटने—तंगी में।

बाड़ि—घर। बाँधानो...याय—(कपड़े, जरी आदि से) मँढ़े हुए हुक्के में (तम्बाकू के) दम लगा जाते हैं। स्टाम्प-देओया दलिलेर—स्टैम्प लगे हुए दस्तावेजों की। कषाकषि—खींच-तान (कंजूसी)। पाड़ार—मुहल्ले के।

नाछोड़वान्दा छेलेराओ वहुचेष्टाय ताँहार तहविले दन्तस्फुट करिते पारे नाइ।

एमन समय ताँहार घरकन्नार मध्ये एकटि अतिथिर आगमन हइल। छेले हल ना, हल ना, करिते करिते अनेकदिन परे ताँहार एकटि छेले जन्मिल। छेलेटिर चेहारा ताहार मार धरनेर। वड़ो वड़ो चोख, टिकलो नाक, रङ्ग रजनीगन्धार पापड़िर मतो—ये देखिल सेइ वलिल, "आहा छेले तो नय, येन कार्तिक।" अधरवावुर अनुगत अनुचर रतिकान्त वलिल, "वड़ो घरेर छेलेर येमनटि हओया उचित तेमनइ हइयाछे।"

छेलेटिर नाम हइल वेणुगोपाल। इतिपूर्व अधरवावुर स्त्री ननीवाला संसार-खरच लइया स्वामीर विरुद्धे निजेर मत तेमन जोर करिया कोनोदिन खाटान नाइ। दुटो-एकटा शखेर व्यापार अथवा लौकिकतार अत्यावश्यक आयोजन लइया माझे माझे वचसा हइयाछे वटे, किन्तु शेषकाले स्वामीर कृपणतार प्रति अवज्ञा करिया निःशब्दे हार मानियाछेन।

एवारे ननीवालाके अधरलाल आँटिया उठिते पारिलेन ना, वेणुगोपाल सम्वन्धे ताँहार हिसाव एक-एक पा करिया हठिते लागिल। ताहार पायेर मल, हातेर वाला, गलार हार, माथार टुपि, ताहार दिशि विलाति नाना रकमेर नाना रङ्गेर साजसज्जा सम्वन्धे ननीवाला याहा-किछु दावि उत्थापित करिलेन, सव-कटाइ तिनि कखनो नीरव अश्रुपाते कखनो सरव वाक्यवर्षणे जितिया लइलेन। वेणुगोपालेर जन्य याहा दरकार एवं याहा दरकार

नाछोड़वान्दा छेलेराओ—गले पड़ जाने वाले लड़के भी। तहविले—नक़द जमा।
घरकन्नार मध्ये—गृहस्थी में। मार धरनेर—मा की तरह (आकृति)।
टिकलो—नुकीली। पापड़िर मतो—पँखुड़ी की तरह।
खाटान नाइ—चलाया नहीं। शखेर व्यापार—शौक की चीज़ें।
लौकिकता—शिष्टाचार। वचसा...वटे—कहा-सुनी जरूर हुई है।
आँटिया...ना—दवा नही पाए। हठिते लागिल—खिसकने लगा।
मल—पैजनी। वाला—कड़ा (हाथ का)। दावि—माँग।
सरव—उच्चस्वर से।

नय ताहा चाइ'इ चाइ—सेखाने शून्य तहबिलेर ओजर वा भविष्य-तेर फाँका आश्वास एकदिनओ खाटिल ना।

२

वेणुगोपाल बाड़िया उठिते लागिल। वेणुर जन्य खरच कराटा अधरलालेर अभ्यास हइया आसिल। ताहार जन्य वेशि माहिना दिया अनेक-पास-करा एक बुड़ो मास्टार राखिलेन। एइ मास्टार वेणुके मिष्टभाषाय ओ शिष्टाचारे वश करिबार अनेक चेष्टा करिलेन—किन्तु तिनि नाकि बराबर छात्रदिगके कड़ा शासने चालाइया आज पर्यन्त मास्टारि मर्यादा अक्षुण्ण राखिया आसियाछेन, सेइजन्य ताँहार भाषार मिष्टता ओ आचारेर शिष्टताय केवलइ बेसुर लागिल—सेइ शुष्क साधनाय छेले भुलिल ना।

ननीबाला अधरलालके कहिलेन; "ओ तोमार केमन मास्टार। ओके देखिलेइ ये छेले अस्थिर हइया उठे। ओके छाड़ाइया दाओ।"

बुड़ो मास्टार विदाय हइल। सेकाले मेये येमन स्वयम्वरा हइत तेमनि ननीबालार छेले स्वयम्मास्टार हइते बसिल—से याहाके ना बरिया लइबे ताहार सकल पास ओ सकल सार्टिफिकेट वृथा।

एमनि समयटिते गाये एकखानि मयला चादर ओ पाये छेँड़ा क्याम्बिसेर जुता परिया मास्टारिर उमेदारिते हरलाल

चाइ'इ चाइ—चाहिए ही चाहिए। तहबिलेर ओजर—कोष का उज्र। फाँका—खाली, छूँछा। खाटिल ना—न चला।

बाड़िया उठिते—बढ़ने, बड़ा होने। बेशि...करा—अधिक वेतन दे कर बहुत-सी (परीक्षाएँ) पास किए हुए। नाकि—सम्भवतः। छात्रदिगके—विद्यार्थियों को। भुलिल ना—बहलाया न जा सका।

छाड़ाइया दाओ—छुड़ा दो।

सेकाले—उन दिनों। मेये—लड़की। बरिया लइबे—वरण कर लेगा। छेँड़ा—फटे हुए। उमेदारि—उम्मेदवारी।

आसिया जुटिल। ताहार विधवा मा परेर बाड़िते राँधिया ओ धान भानिया ताहाके मफस्वलेर एन्ट्रेन्स् स्कुले कोनोमते एन्ट्रेन्स् पास कराइयाछे। एखन हरलाल कलिकाताय कलेजे पड़िवे बलिया प्राणपण प्रतिज्ञा करिया बाहिर हइयाछे। अनाहारे ताहार मुखेर निम्न अंश शुकाइया भारतवर्षेर कन्याकुमारीर मतो सरु हइया आसियाछे, केवल मस्त कपालटा हिमालयेर मतो प्रशस्त हइया अत्यन्त चोखे पड़ितेछे। मरुभूमिर बालु हइते सूर्येर आलो येमन ठिकरिया पड़े तेमनि ताहार दुइ चक्षु हइते दैन्येर एकटा अस्वाभाविक दीप्ति बाहिर हइतेछे।

दरोयान जिज्ञासा करिल, "तुमि की चाओ। काहाके चाओ।" हरलाल भये भये बलिल, "बाड़िर बाबुर सङ्गे देखा करिते चाइ।" दरोयान कहिल, "देखा हइबे ना।" ताहार उत्तरे हरलाल की बलिवे भाविया ना पाइया इतस्तत करितेछिल, एमन समय सात बछरेर छेले वेणुगोपाल बागाने खेला सारिया देउड़िते आसिया उपस्थित हइल। दरोयान हरलालके द्विधा करिते देखिया आबार कहिल, "बाबु, चलाया ओ।"

वेणुर हठात् जिद् चड़िल—से कहिल, "नेहि जायगा।" बलिया से हरलालेर हात धरिया ताहाके दोतलार बारान्दाय ताहार बापेर काछे लइया हाजिर करिल।

बाबु तखन दिवानिद्रा सारिया जड़ालसभावे बारान्दाय वेतेर केदाराय चुपचाप बसिया पा दोलाइतेछिलेन ओ वृद्ध रतिकान्त एकटा काठेर चौकिते आसन हइया बसिया धीरे धीरे तामाक

परेर—दूसरे के। राँधिया—खाना बना कर। धान भानिया—धान कूट कर। मफस्वलेर—मुफस्सिल के। सरु—पतला। चोखे—आँखों में। ठिकरिया पड़े—छिटकता है।

दरोयान—दरवान। चाओ—चाहते हो। बाड़िर—घर के। खेला... देउड़िते—खेल (समाप्त) कर ड्योढ़ी में।

केदाराय—कुर्सी पर। दोलाइतेछिलेन—हिला रहे थे। आसन... बसिया—पालथी मार कर। तामाक टानितेछिल—तंबाकू पी रहा था।

टानितेछिल। सेदिन एइ समये एइ अवस्थाय दैवक्रमे हरलालेर मास्टारि वाहाल हइया गेल।

रतिकान्त जिज्ञासा करिल, "आपनार पड़ा की पर्यन्त।"

हरलाल एकटुखानि मुख नीचु करिया कहिल, "एन्ट्रेन्स् पास करियाछि।"

रतिकान्त भ्रू तुलिया कहिल, "शुधु एन्ट्रेन्स् पास? आमि वलि कलेजे पड़ियाछेन। आपनार वयसओ तो नेहात कम देखि ना।"

हरलाल चुप करिया रहिल। आश्रित ओ आश्रयप्रत्याशी-दिगके सकल रकमे पीड़न कराइ रतिकान्तेर प्रधान आनन्द छिल।

रतिकान्त आदर करिया वेणुके कोलेर काछे टानिया लइवार चेष्टा करिया कहिल, "कत एम.-ए. वि.-ए. आसिल ओ गेल, काहाकेओ पछन्द हइल ना—आर शेषकाले कि सोनावावु एन्ट्रेन्स्-पास-करा मास्टरेर काछे पड़िवेन!"

वेणु रतिकान्तेर आदरेर आकर्षण जोर करिया छाड़ाइया लइया कहिल, "याओ!" रतिकान्तके वेणु कोनोमतेइ सह्य करिते पारित ना, किन्तु रतिओ वेणुर एइ असहिष्णुताके ताहार वाल्यमाधुर्येर एकटा लक्षण वलिया इहाते खुव आमोद पाइवार चेष्टा करित, एवं ताहाके सोनावावु चाँदवावु वलिया खेपाइया आगुन करिया तुलित।

हरलालेर उमेदारि सफल हओया शक्त हइया उठियाछिल; से मने मने भावितेछिल, एइवार कोनो सुयोगे चौकि हइते उठिया वाहिर हइते पारिले वाँचा याय। एमन समये अधरलालेर सहसा मने हइल, एइ छोकराटिके नितान्त सामान्य माहिना दिलेओ पाओया याइवे। शेषकाले स्थिर हइल, हरलाल वाड़िते

नेहात—निहायत।

कोलेर काछे—गोद में। पड़िवेन—पढ़ेंगे।

आदरेर—स्नेहका। खेपाइया...तुलित—चिढ़ा-चिढ़ा कर आग-बबूला कर देता।

वाहिर....याय—बाहर निकल सकूँ तो जान बचे। माहिना—वेतन।

थाकिबे, खाइबे ओ पाँच टाका करिया वेतन पाइबे। बाड़िते राखिया येटुकु अतिरिक्त दाक्षिण्य प्रकाश करा हइबे ताहार बदले अतिरिक्त काज आदाय करिया लइलेइ एटुकु दया सार्थक हइते पारिबे।

३

एबारे मास्टार टिँकिया गेल। प्रथम हइतेइ हरलालेर सङ्गे वेणुर एमनि जमिया गेल येन ताहारा दुइ भाइ। कलिकाताय हरलालेर आत्मीयबन्धु केहइ छिल ना—एइ सुन्दर छोटो छेलेटि ताहार समस्त हृदय जुड़िया बसिल। अभागा हरलालेर एमन करिया कोनो मानुषके भालोबासिबार सुयोग इतिपूर्वे कखनओ घटे नाइ। की करिले ताहार अवस्था भालो हइबे, एइ आशाय से बहु कष्टे बइ जोगाड़ करिया केवलमात्र निजेर चेष्टाय दिनरात शुधु पड़ा करियाछे। माके पराधीन थाकिते हइयाछिल बलिया छेलेर शिशुवयस केवल संकोचेइ काटियाछे—निषेधेर गण्डि पार हइया दुष्टामिर द्वारा निजेर बाल्यप्रतापके जयशाली करिबार सुख से कोनोदिन पाय नाइ। से काहारओ दले छिल ना, से आपनार छेँड़ा बइ ओ भाङा स्लेटेर माझखाने एकलाइ छिल। जगते जन्मिया ये छेलेके शिशुकालेइ निस्तब्ध भालोमानुष हइते हय, तखन हइतेइ मातार दुःख ओ निजेर अवस्था याहाके सावधाने बुझिया चलिते हय, सम्पूर्ण अविवेचक हइबार स्वाधीनता याहार भाग्ये कोनोदिन जोटे ना, आमोद करिया चञ्चलता करा बा दुःख पाइया काँदा, ए दुटोइ याहाके

थाकिबे—रहना। येटुकु—जितनी-भर। एटुकु—इतनी-सी।

हृदय जुड़िया बसिल—हृदय में घर कर लिया। भालोबासिबार—प्रेम करने का। बइ—किताब। गण्डि—सीमा। दुष्टामिर—उपद्रव, ऊधम के। काहारओ—किसी के भी। छेँड़ा बइ—फटी पुस्तकें। भाङा—टूटी हुई। माझखाने—बीच मे। छेलेके—लड़के को। बुझिया—समझ-बूझ कर। काँदा—रोना।

बसियाछेन।" अधरलालेरओ माझे माझे मने हइते लागिल, मास्टरेर सङ्गे छात्रेर सम्बन्धटि ठिक येन यथोचित हइतेछे ना। किन्तु हरलालके वेणुर काछ हइते तफात करे एमन साध्य एखन काहार आछे।

४

वेणुर वयस एखन एगारो। हरलाल एफ.-ए. पास करिया जलपानि पाइया तृतीय वार्षिके पड़ितेछे। इतिमध्ये कलेजे ताहार दुटि-एकटि बन्धु ये जोटे नाइ ताहा नहे, किन्तु ओइ एगारो बछरेर छेलेटिइ ताहार सकल बन्धुर सेरा। कलेज हइते फिरिया वेणुके लइया से गोलदिघि एवं कोनो-कोनोदिन इडेन गार्डने बेड़ाइते याइत। ताहाके ग्रीक इतिहासेर वीरपुरुषदेर काहिनी बलित, ताहाके स्कट ओ भिक्टर ह्युगोर गल्प एकटु-एकटु करिया बांलाय शुनाइत—उच्चैःस्वरे ताहार काछे इङरेजि विताक आवृत्ति करिया ताहा तर्जमा करिया व्याख्या करित, ताहार काछे शेक्सपीयारेर 'जुलियस् सीजार' माने करिया पड़िया ताहा हइते अयाण्टनिर वक्तृता मुखस्थ कराइबार चेष्टा करित। ए एकटुखानि बालक हरलालेर हृदय-उद्बोधनेर पक्षे येन सोनार काठिर मतो हइया उठिल। एकला बसिया यखन पड़ा मुखस्थ करित तखन इङरेजि साहित्य से एमन करिया मनेर मध्ये ग्रहण करे नाइ, एखन से इतिहास विज्ञान साहित्य याहा-किछु पड़े ताहार मध्ये किछु रस पाइलेइ सेटा आगे वेणुके दिबार जन्य आग्रह बोध करे एवं वेणुर मने सेइ आनन्द सञ्चार करिबार चेष्टातेइ ताहार

माझे माझे—बीच-बीच में। **तफात**—अलग।

एगारो—ग्यारह। **जलपानि**—छात्रवृत्ति। **सेरा**—श्रेष्ठ। **गोलदिघि**—(कलकत्ते के एक स्थान का नाम।) **बेड़ाइते**—घूमने। **आवृत्ति करिया**—पाठ करके (सुनाना)। **एकटुखानि**—तनिक-सा, जरा-सा। **सोनार काठिर मतो**—सोने की तीली (जादू की छड़ी) के समान।

निजेर बुझिवार शक्ति ओ आनन्देर अधिकार येन दुइगुण वाड़िया याय।

वेणु इस्कुल हइते आसियाइ कोनोमते ताड़ाताड़ि जलपान सारियाइ हरलालेर काछे याइवार जन्य एकेबारे व्यस्त हइया उठित, ताहार मा ताहाके कोनो छुताय कोनो प्रलोभने अन्तःपुरे धरिया राखिते पारित ना। ननीवालार इहा भालो लागे नाइ। ताहार मने हइत, हरलाल निजेर चाकरि वजाय राखिवार जन्यइ छेलेके एत करिया वश करिवार चेष्टा करितेछे। से एकदिन हरलालके डाकिया पर्दार आड़ाल हइते वलिल, "तुमि मास्टार, छेलेके केवल सकाले एक घण्टा, विकाले एक घण्टा पड़ाइवे—दिनरात्रि उहार सङ्गे लागिया थाक केन। आजकाल ओ ये मा वाप कहाकेओ माने ना। ओ केमन शिक्षा पाइतेछे। आगे य छेले मा वलिते एकेवारे नाचिया उठित आज ये ताहाके डाकिया पाओया याय ना। वेणु आमार बड़ो घरेर छेले, उहार सङ्गे तोमार अत माखामाखि किसेर जन्य।"

सेदिन रतिकान्त अधरवावुर काछे गल्प करितेछिल ये, ताहार जाना तिन-चार जन लोक, वड़ोमानुषेर छेलेर मास्टारि करिते आसिया छेलेर मन एमन करिया वश करिया लइयाछे ये, छेले विषयेर अधिकारी हइले ताहाराइ सर्वेसर्वा हइया छेलेके स्वेच्छामत चालाइयाछे। हरलालेर प्रतिइ इशारा करिया ये ए-सकल कथा वला हइतेछिल ताहा हरलालेर वुझिते वाकि छिल ना। तवु से चुप करिया समस्त सह्य करिया गियाछिल। किन्तु, आज वेणुर मार कथा शुनिया ताहार वुक भाङिया गेल।

कोनोमते ताड़ाताड़ि—किसी प्रकार जल्दी-जल्दी। सारियाइ—समाप्त करते ही। व्यस्त—बेचैन। छुताय—बहाने से। वजाय—बरकरार। आड़ाल—ओट, आड़। विकाले—अपराह्न में। माखामाखि—घुलना-मिलना।

वाकि—बाकी। वुक भाङिया गेल—छाती फट गई, हृदय विदीर्ण हो गया।

से वुझिते पारिल, वड़ोमानुषेर घरे मास्टारेर पदवीटा की। गोयालघरे छेलेके दुध जोगाइवार येमन गोरु आछे तेमनि ताहाके विद्या जोगाइवार एकटा मास्टारओ राखा हइयाछे—छात्रेर सङ्गे स्नेहपूर्ण आत्मीयतार सम्वन्ध स्थापन एतवड़ो एकटा स्पर्धा ये वाड़िर चाकर हइते गृहिणी पर्यन्त केहइ ताहा सह्य करिते पारे ना, एवं सकलेइ सेटाके स्वार्थसाधनेर एकटा चातुरी वलियाइ जाने।

हरलाल कम्पितकण्ठे वलिल, "मा, वेणुके आमि केवल पड़ाइव, ताहार सङ्गे आमार आर-कोनो सम्पर्क थाकिवे ना।"

सेदिन विकाले वेणुर सङ्गे ताहार खेलिवार समये हरलाल कलेज हइते फिरिलइ ना। केमन करिया रास्ताय रास्ताय घुरिया से समय काटाइल ताहा सेइ जाने। सन्ध्या हइले यखन से पड़ाइते आसिल तखन वेणु मुख भार करिया रहिल। हरलाल ताहार अनुपस्थितिर कोनो जवावदिहि ना करिया पड़ाइय गेल—सेदिन पड़ा सुविधामतो हइलइ ना।

हरलाल प्रतिदिन रात्रि थाकिते उठिया ताहार घरे वसिया पड़ा करित। वेणु सकाले उठियाइ मुख धुइया ताहार काछे छुटिया याइत। वागाने वाँधानो चौवाच्चाय माछ छिल। ताहादिगके मुड़ि खाओयानो इहादेर एक काज छिल। वागानेर एक कोणे कतकगुला पाथर साजाइया, छोटो छोटो रास्ता ओ छोटो गेट ओ वेड़ा तैरि करिया वेणु वालखिल्य ऋषिर आश्रमेर उपयुक्त एकटि अति छोटो वागान वसाइयाछिल। से वागाने मालिर कोनो अधिकार छिल ना। सकाले एइ वागानेर चर्या करा ताहादेर द्वितीय काज। ताहार परे रौद्र वेशि हइले

गोयालघरे—गोठ में। जोगाइवार—जुटाने को। घुरिया—भटक कर।

चौवाच्चाय—चहवच्चे में। ताहादिगके मुड़ि—उन्हें मुरमुरे। वेड़ा—घेरा, वाड़। वालखिल्य—पुराणों के अनुसार डील-डौल में अँगूठे के वरावर ऋषियों का एक वर्ग। वसाइयाछिल—वैठाया, लगाया था। चर्या—देख-भाल। रौद्र—धूप।

बाड़ि फिरिया वेणु हरलालेर काछे पड़िते बसित। काल सायाह्ने ये गल्पेर अंश शोना हय नाइ सेइटे शुनिबार जन्य आज वेणु यथासाध्य भोरे उठिया बाहिरे छुटिया असियाछिल। से मने करियाछिल, सकाले ओठाय से आज मास्टारमशायके बुझि जिति-याछे। घरे आसिया देखिल, मास्टारमशाय नाइ। दरोयानके जिज्ञासा करिया जानिल, मास्टारमशाय बाहिर हइया गियाछेन।

सेदिनओ सकाले पड़ार समय वेणु क्षुद्र हृदयटुकुर वेदना लइया मुख गम्भीर करिया रहिल। सकालवेलाय हरलाल केन ये बाहिर हइया गियाछिल ताहा जिज्ञासाओ करिल ना। हरलाल वेणुर मुखेर दिके ना चाहिया बइयेर पातार उपर चोख राखिया पड़ाइया गेल। वेणु बाड़िर भितरे ताहार मार काछे यखन खाइते बसिल तखन ताहार मा जिज्ञासा करिलेन, "काल बिकाल हइते तोर की हइयाछे बल् देखि। मुख हाँड़ि करिया अछिस केन—भालो करिया खाइतेछिस ना—व्यापारखाना की।"

वेणु कोनो उत्तर करिल ना। आहारेर पर मा ताहाके काछे टानिया आनिया ताहार गाये हात बुलाइया अनेक आदर करिया यखन ताहाके बारबार प्रश्न करिते लागिलेन, तखन से आर थाकिते पारिल ना, फुँपाइया काँदिया उठिल। बलिल, "मास्टारमशाय—"

मा कहिलेन, "मास्टारमशाय की।"

वेणु बलिते पारिल ना मास्टारमशाय की करियाछेन। की ये अभियोग ताहा भाषाय व्यक्त करा कठिन।

सायाह्ने—साँझ को। बुझि—शायद। ना चाहिया—विना ताके।

बइयेर....राखिया—पुस्तक के पन्ने पर दृष्टि जमाए हुए। बल् देखि—बता तो ज़रा। मुख......केन—मुँह क्यों फुला रखा है। व्यापारखाना की—मामला क्या है।

टानिया आनिया—खीच कर। गाये हात बुलाइया—शरीर पर हाथ फिरा कर। आदर—लाड़। फुँपाइया काँदिया उठिल—फफक कर रो पड़ा।

ननीबाला कहिलेन, "मास्टारमशाय बुझि तोर मार नामे तोर काछे लागाइयाछेन !"

से कथार कोनो अर्थ बुझिते ना पारिया वेणु उत्तर ना करिया चलिया गेल।

५

इतिमध्ये बाड़िते अधरबाबुर कतकगुला कापड़चोपड़ चुरि हइया गेल। पुलिसके खबर देओया हइल। पुलिस खाना-तल्लासिते हरलालेरओ बाक्स सन्धान करिते छाड़िल ना। रतिकान्त नितान्तइ निरीहभावे बलिल, "ये लोक लइयाछे से कि आर माल बाक्सर मध्ये राखियाछे।"

मालेर कोनो किनारा हइल ना। एरूप लोकसान अधर-लालेर पक्षे असह्य। तिनि पृथिवीसुद्ध लोकेर उपर चटिया उठिलेन। रतिकान्त कहिल, "बाड़िते अनेक लोक रहियाछे, काहाकेइ बा दोष दिबेन, काहाकेइ बा सन्देह करिबेन। याहार यखन खुशि आसितेछे याइतेछे।"

अधरलाल मास्टारके डाकाइया बलिलेन, "देखो हरलाल, तोमादेर काहाकेओ बाड़िते राखा आमार पक्षे सुविधा हइबे ना। एखन हइते तुमि आलादा बासाय थाकिया वेणुके ठिक समयमतो पड़ाइया याइबे, एइ हइलेइ भालो हय—नाहय आमि तोमार दुइ टाका माइने वृद्धि करिया दिते राजि आछि।"

रतिकान्त तामाक टानिते टानिते बलिल, "ए तो अति भालो कथा—उभय पक्षेइ भालो।"

बुझि मार......लागाइयाछेन—शायद तेरी माँ के खिलाफ तुझसे (कुछ) कहासुना है, कान भरे हैं।

कापड़चोपड़—कपड़े-लत्ते। बाक्स—बक्स।

किनारा हइल ना—पता न चला। पृथिवीसुद्ध—दुनिया भर के। चटिया उठिलेन—बिगड़ उठे।

डाकाइया—बुला कर। नाहय—न हो तो। माइने—वेतन।

हरलाल मुख निचु करिया शुनिल। तखन किछु वलिते पारिल ना। घरे आसिया अधरवावुके चिठि लिखिया पाठाइल, नाना कारणे वेणुके पड़ानो ताहार पक्षे सुविधा हइवे ना--अतएव आजइ से विदाय ग्रहण करिवार जन्य प्रस्तुत हइयाछे।

सेदिन वेणु इस्कुल हइते फिरिया आसिया देखिल; मास्टार-मशायेर घर शून्य। ताँहार सेइ भग्नप्राय टिनेर पेँटराटिओ नाइ। दड़िर उपर ताँहार चादर ओ गामछा झुलित, से दड़िटा आछे किन्तु चादर ओ गामछा नाइ। टेविलेर उपर खातापत्र ओ वइ एलोमेलो छड़ानो थाकित, ताहार वदले सेखाने एकटा वड़ो वोतलेर मध्ये सोनालि माछ झक्झक् करिते करिते ओठानामा करितेछे। वोतलेर गायेर उपर मास्टारमशायेर हस्ताक्षरे वेणुर नाम-लेखा एकटा कागज आँटा। आर-एकटि नूतन भालो वाँधाइ करा इङरेजि छविर वइ, ताहार भितरकार पाताय एक प्रान्ते वेणुर नाम ओ ताहार नीचे आजकेर तारिख मास ओ सन देओया आछे।

वेणु छुटिया ताहार वापेर काछे गिया कहिल, "वावा, मास्टार-मशाय कोथाय गेछेन?"

वाप ताहाके काछे टानिया लइया कहिलेन, "तिनि काज छाड़िया दिया चलिया गेछेन।"

वेणु वापेर हात छाड़ाइया लइया पाशेर घरे विछानार उपरे उपुड़ हइया पड़िया काँदिते लागिल। अधरवावु व्याकुल हइया की करिवेन किछुइ भाविते पारिलेन ना।

परदिन वेला साड़े दशटार समय हरलाल एकटा मेसेर घरे

पेँटराटिओ—पिटारी वक्स भी। दड़िर उपर—रस्सी पर। खातापत्र.... थाकित—पुस्तकें, कापियाँ गड्डमड्ड विखरी पड़ी रहती थीं। सोनालि माछ—सुनहरी मछलियाँ। ओठानामा—चढ़ा-उतरी। आँटा—लगा हुआ है। वाँधाइ करा—सजिल्द।

छुटिया—दौड़ा-दौड़ा।

पाशेर घरे—निकट के कमरे में। उपुड़ हइया पड़िया—औंधे पड़ कर। भाविया पाइलेन ना—सोच न सके।

तक्तपोशेर उपर उन्मना हइया बसिया कलेजे याइबे कि ना भाबितेछे, एमन समय हठात् देखिल, प्रथमे अधरबाबुदेर दरोयान घरे प्रवेश करिल एवं ताहार पिछने वेणु घरे ढुकियाइ हरलालेर गला जड़ाइया धरिल। हरलालेर गलार स्वर आटकाइया गेल; कथा कहिते गेलेइ ताहार दुइ चोख दिया जल झरिया पड़िबे, एइ भये से कोनो कथाइ कहिते पारिल ना।

वेणु कहिल, "मास्टारमशाय आमादेर बाड़ि चलो।"

वेणु ताहादेर वृद्ध दरोयान चन्द्रभानके धरिया पड़ियाछिल, येमन करिया हउक, मास्टारमशायेर बाड़िते ताहाके लइया याइते हइबे। पाड़ार ये मुटे हरलालेर पेँटरा बहिया आनियाछिल ताहार काछ हइते सन्धान लइया आज इस्कुले याइबार गाड़िते चन्द्रभान वेणुके हरलालेर मेसे आनिया उपस्थित करियाछे।

केन ये हरलालेर पक्षे वेणुदेर बाड़ि याओया एकेबारेइ असम्भव, ताहा से बलितेओ पारिल ना अथच ताहादेर बाड़ितेओ याइते पारिल ना। वेणु ये ताहार गला जड़ाइया धरिया ताहाके बलियाछिल, 'आमादेर बाड़ि चलो', एइ स्पर्श ओ एइ कथाटार स्मृति कत दिने कत रात्रे ताहार कण्ठ चापिया धरिया येन ताहार निश्वास रोध करियाछे। किन्तु, क्रमे एमनओ दिन आसिल यखन दुइ पक्षेइ समस्त चुकिया गेल, वक्षेर शिरा आँकड़ाइया धरिया वेदना-निशाचर बादुड़ेर मतो आर झुलिया रहिल ना।

६

हरलाल अनेक चेष्टा करियाओ पड़ाते आर तेमन करिया

तक्तपोशेर उपर—तख्त पर। भाबितेछे—सोच रहा है। जड़ाइया धरिल—लिपट गया।

धरिया पड़ियाछिल—पीछे पड़ गया था। मुटे—मोटिया, कुली। बहिया—ढो कर। मेसे—मैस मे।

चापिया धरिया—दबा कर। आँकड़ाइया धरिया—जकड़े हुए। बादुड़ेर मतो—चमगादड़ की तरह।

पड़ाते—पढ़ने में।

मनोयोग करिते पारिल ना। से कोनोमतेइ स्थिर हइया पड़िते बसिते पारिल ना। खानिकटा पड़िवार चेष्टा करियाइ घाँ करिया वइ बन्ध करिया फेलित एवं अकारणे द्रुतपदे रास्ताय घुरिया आसित। कलेजे लेक्चारेर नोटेर माझे माझे खुब बड़ो बड़ो फाँक पड़ित एवं माझे माझे ये-समस्त आँकजोक पड़ित ताहार सङ्गे प्राचीन ईजिप्टेर चित्रलिपि छाड़ा आर कोनो वर्णमालार सादृश्य छिल ना।

हरलाल बुझिल, ए-समस्त भालो लक्षण नय। परीक्षाय से यदि-वा पास हय, वृत्ति पाइबार कोनो सम्भावना नाइ। वृत्ति ना पाइले कलिकाताय ताहार एकदिनओ चलिवे ना। ओ दिके देशे माकेओ दु-चार टाका पाठानो चाइ। नाना चिन्ता करिया चाकरिर चेष्टाय वाहिर हइल। चाकरि पाओया कठिन, किन्तु ना-पाओया ताहार पक्षे आरओ कठिन; एइजन्य आशा छाड़ियाओ आशा छाड़िते पारिल ना।

हरलालेर सौभाग्यक्रमे एकटि बड़ो इङरेज सदागरेर आपिसे उमेदारि करिते गिया हठात् से बड़ो साहेवेर नजरे पड़िल। साहेवेर विश्वास छिल, तिनि मुख देखिया लोक चिनिते पारेन। हरलालके डाकिया ताहार सङ्गे दु-चार कथा कहियाइ तिनि मने मने बलिलेन, 'ए लोकटा चलिवे।' जिज्ञासा करिलेन, "काज जाना आछे?" हरलाल कहिल, "ना।" "जामिन दिते पारिवे?" ताहार उत्तरेओ "ना"। "कोनो बड़ोलोकेर काछ हइते सार्टिफिकेट आनिते पार?" कोनो बड़ोलोककेइ से जाने ना।

शुनिया साहेब आरओ येन खुशि हइया कहिलेन, "आच्छा बेश, पँचिश टाका वेतने काज आरम्भ करो, काज शिखिले उन्नति

घाँ करिया—फट्ट से, हठात्, चटपट। फाँक—व्यवधान। आँकजोक—गोदा-गादी, निरर्थक कीला-काँटी। छाड़ा—अतिरिक्त।
बेश—ठीक है।

हइबे।" तार परे साहेब ताहार वेशभूषार प्रति दृष्टि करिया कहिलेन, "पनेरो टाका आगाम दितेछि, आपिसेर उपयुक्त कापड़ तैरि कराइया लइबे।"

कापड़ तैरि हइल, हरलाल आपिसेओ बाहिर हइते आरम्भ करिल। बड़ो साहेब ताहाके भूतेर मतो खाटाइते लागिलेन। अन्य केरानिरा बाड़ि गेलेओ हरलालेर छुटि छिल ना। एक-एकदिन साहेबेर बाड़ि गियाओ ताँहाके काज बुझाइया दिया आसिते हइत।

एमनि करिया काज शिखिया लइते हरलालेर विलम्ब हइल ना। ताहार सहयोगी केरानिरा ताहाके ठकाइबार अनेक चेष्टा करिल, ताहार विरुद्धे उपरओयालादेर काछे लागालागिओ करिल, किन्तु एइ निःशब्द निरीह सामान्य हरलालेर कोनो अपकार करिते पारिल ना।

यखन ताहार चल्लिश टाका माहिना हइल, तखन हरलाल देश हइते माके आनिया एकटि छोटोखाटो गलिर मध्ये छोटोखाटो बाड़िते बासा करिल। एत दिन परे ताहार मार दुःख घुचिल। मा बलिलेन, "बाबा, एइबार बउ घरे आनिब।"

हरलाल मातार पायेर धुला लइया बलिल, "मा, एटे माप करिते हइबे।"

मातार आर-एकटि अनुरोध छिल। तिनि बलितेन, "तुइ ये दिनरात तोर छात्र वेणुगोपालेर गल्प करिस, ताहाके एकबार निमन्त्रण करिया खाओया। ताहाके आमार देखिते इच्छा करे।"

हरलाल कहिल, "मा, ए बासाय ताहाके कोथाय बसाइबे।

तार परे—तत्पश्चात्। पनेरो—पन्द्रह।
खाटाइते लागिलेन—काम लेने लगे। केरानिरा—क्लर्क (बहु०)।
ठकाइबार—बहकाने की। लागालागिओ करिल—कान भी भरे।
माहिना—वेतन। गलिर मध्ये—गली में। बासा करिल—घर जमाया। घुचिल—कटा।
माप—माफ़। गल्प—चर्चा। खाओया—खिला।

रोसो, एकटा बड़ो बासा करि, ताहार परे ताहाके निमन्त्रण करिब।"

७

हरलालेर वेतनवृद्धिर सङ्गे छोटो गलि हइते बड़ो गलि ओ छोटो बाड़ि हइते बड़ो बाड़िते ताहार वास-परिवर्तन हइल। तबु से की जानि की मने करिया, अधरलालेर बाड़ि याइते वा वेणुके निजेर वासाय डाकिया आनिते कोनोमतेइ मन स्थिर करिते पारिल ना।

हयतो कोनोदिनइ ताहार संकोच घुचित ना। एमन समय हठात् खबर पाओया गेल, वेणुर मा मारा गियाछेन। शुनिया मुहूर्त विलम्ब ना करिया से अधरलालेर बाड़ि गिया उपस्थित हइल।

एइ दुइ असमवयसी बन्धुते अनेक दिन परे आबार एकबार मिलन हइल। वेणुर अशौचेर समय पार हइया गेल, तबु ए बाड़िते हरलालेर यातायात चलिते लागिल। किन्तु, ठिक तेमनटि आर किछुइ नाइ। वेणु एखन बड़ो हइया उठिया अङ्गुष्ठ ओ तर्जनी योगे ताहार नूतन गोँफेर रेखार साध्यसाधना करितेछे। चाल-चलने बाबुयाना फुटिया उठियाछे। एखन ताहार उपयुक्त बन्धुवान्धवेरओ अभाव नाइ। फोनोग्राफे थियेटारेर नटीदेर इतर गान बाजाइया से बन्धुमहलके आमोदे राखे। पड़िबार घरे सेइ सावेक भाङा चौकि ओ दागि टेबिल कोथाय गेल। आयनाते, छविते, आसबाबे घर येन छाति फुलाइया रहियाछे। वेणु एखन कलेजे याय किन्तु द्वितीय वार्षिकेर सीमाना पार हइवार जन्य ताहार कोनो तागिद देखा याय ना। बाप स्थिर

रोसो—ठहरो।
कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी।
घुचित ना—न जाता, कटता।
गोँफेर—मूँछों की। बाबुयाना—बाबूपना। फुटिया उठियाछे—स्पष्ट हो उठा है। इतर—सस्ते। बन्धुमहलके—मित्र-मण्डली को। सावेक भाङा—पुरानी टूटी हुई। सीमाना—चौहद्दी। तागिद—आवश्यक कारण, आग्रह।

करिया आछेन, दुइ-एकटा पास कराइया लइया विवाहेर हाटे छेलेर बाजारदर वाड़ाइया तुलिवेन। किन्तु, छेलेर मा जानितेन ओ स्पष्ट करिया बलितेन, "आमार वेणुके सामान्य लोकेर छेलेर मतो गौरव प्रमाण करिबार जन्य पासेर हिसाव दिते हइवे ना— लोहार सिन्दुके कोम्पानिर कागज अक्षय हइया थाक्।" छेलेओ मातार ए कथाटा वेश करिया मने-मने वुझिया लइयाछिल।

याहा हउक, वेणुर पक्षे से ये आज नितान्तइ अनावश्यक ताहा हरलाल स्पष्टइ वुझिते पारिल एवं केवलइ थाकिया थाकिया सेइ दिनेर कथा मने पड़िल येदिन वेणु हठात् सकालवेलाय ताहार सेइ मेसेर वासाय गिया ताहार गला जड़ाइया धरिया वलियाछिल 'मास्टारमशाय, आमादेर वाड़ि चलो'। से वेणु नाइ, से वाड़ि नाइ, एखन मास्टारमशायके केइ-वा डाकिवे।

हरलाल मने करियाछिल, एइवार वेणुके ताहादेर वासाय माझे माझे निमन्त्रण करिवे। किन्तु ताहाके आह्वान करिवार जोर पाइल ना। एकवार भाविल, 'उहाके आसिते बलिव', ताहार परे भाविल, 'बलिया लाभ की—वेणु हयतो निमन्त्रण रक्षा करिवे, किन्तु, थाक्'।

हरलालेर मा छाड़िलेन ना। तिनि वार वार बलिते लागिलेन, तिनि निजेर हाते राँधिया ताहाके खाओयाइवेन—"आहा, वाछार मा मारा गेछे!"

अवशेषे हरलाल एकदिन ताहाके निमन्त्रण करिते गेल। कहिल, "अधरवावुर काछ हइते अनुमति लइया आसि।"

पासेर—सफलता का, पास होने का। कोम्पानिर कागज—सरकारी वॉण्ड। वेश करिया—अच्छी तरह से। वुझिया लइयाछिल—समझ लिया था।

याहा हउक—जो हो। थाकिया-थाकिया—रह-रह कर।

गला जड़ाइया धरिया—गले से लिपट कर। केइ वा डाकिवे—भला बुलाएगा भी कौन।

भाविल—सोचा। वलिया—कहने से। थाक्—रहने दो।

वाछार—बच्चे की।

काछ हइते—(पास) से।

वेणु कहिल, "अनुमति लइते हइबे ना, आपनि कि मने करेन आमि एखनओ सेइ खोकाबाबु आछि।"

हरलालेर वासाय वेणु खाइते आसिल। मा एइ कार्तिकेर मतो छेलेटिके ताँहार दुइ स्निग्ध चक्षुर आशीर्वादे अभिषिक्त करिया यत्न करिया खाओयाइलेन। ताँहार केवलइ मने हइते लागिल, 'आहा, एइ वयसेर एमन छेलेके फेलिया इहार मा यखन मरिल तखन ताहार प्राण ना जानि केमन करितेछिल।'

आहार सारियाइ वेणु कहिल, "मास्टारमशाय; आमाके आज एकटु सकाल-सकाल याइते हइबे। आमार दुइ-एकजन वन्धुर आसिबार कथा आछे।"

वलिया पकेट हइते सोनार घड़ि खुलिया एकवार समय देखिया लइल; ताहार परे संक्षेपे विदाय लइया जुड़िगाड़िते चड़िया वसिल। हरलाल ताहार वासार दरजार काछे दाँड़ाइया रहिल। गाड़ि समस्त गलिके काँपाइया दिया मुहूर्तेर मध्येइ चोखेर वाहिर हइया गेल।

मा कहिलेन, "हरलाल, उहाके माझे माझे डाकिया आनिस। एइ वयसे उहार मा मारा गेछे मने करिले आमार प्राणटा केमन करिया उठे।"

हरलाल चुप करिया रहिल। एइ मातृहीन छेलेटिके सान्त्वना दिवार जन्य से कोनो प्रयोजन वोध करिल ना। दीर्घ-निश्वास फेलिया मने मने कहिल, 'वास्, एइ पर्यन्त। आर कखनओ डाकिव ना। एकदिन पाँच टाका माइनेर मास्टारि करियाछिलाम वटे—किन्तु, आमि सामान्य हरलाल मात्र।'

८

एकदिन सन्ध्यार पर हरलाल आपिस हइते फिरिया आसिया

खोकाबाबु—नन्हा-मुन्ना।
सारियाइ—समाप्त करते ही। सकाल सकाल—जल्दी।
करियाछिलाम वटे—की जरूर थी।

देखिल, ताहार एकतलार घरे अन्धकारे के एकजन वसिया आछे। सेखाने ये कोनो लोक आछे ताहा लक्ष्य ना करियाइ से बोध हय उपरे उठिया याइत, किन्तु दरजाय ढुकियाइ देखिल, एसेन्सेर गन्धे आकाश पूर्ण। घरे प्रवेश करिया हरलाल जिज्ञासा करिल, "के, मशाय।"

वेणु बलिया उठिल, "मास्टारमशाय, आमि।"

हरलाल कहिल, "ए की व्यापार। कखन आसियाछ।"

वेणु कहिल, "अनेकक्षण आसियाछि। आपनि ये एत देरि करिया आपिस हइते फेरेन, ताहा तो आमि जानिताम ना।"

बहुकाल हइल सेइ-ये निमन्त्रण खाइया गेछे ताहार परे आर एकबारओ वेणु ए बासाय आसे नाइ। बला नाइ, कहा नाइ, आज हठात् एमन करिया से ये सन्ध्यार समय एइ अन्धकार घरेर मध्ये अपेक्षा करिया वसिया आछे इहाते हरलालेर मन उद्विग्न हइया उठिल।

उपरेर घरे गिया बाति ज्वालिया दुइजने बसिल। हरलाल जिज्ञासा करिल, "सब भालो तो? किछु विशेष खबर आछे?"

वेणु कहिल, पड़ाशुना क्रमे ताहार पक्षे बड़ोइ एकघेये हइया आसियाछे। काँहातक से वत्सरेर पर वत्सर ए सेकेण्ड् इयारेइ आटका पड़िया थाके। ताहार चेये अनेक वयसे छोटो छेलेर सङ्गे ताहाके एकसङ्गे पड़िते हय, ताहार बड़ो लज्जा करे। किन्तु बाबा किछुतेइ वोझेन ना।

हरलाल जिज्ञासा करिल, "तोमार की इच्छा?"

वेणु कहिल, ताहार इच्छा से बिलात याय, वारिस्टर हइया आसे। ताहारइ सङ्गे एकसङ्गे पड़ित, एमनकि, ताहार चेये

एकतलार—पहली मंजिल के। उठिया याइत—चढ़ जाता। ढुकियाइ—घुसते ही।
मशाय—महाशय।
बला नाइ, कहा नाइ—विना कहे-सुने, बिना खबर दिये।
एकघेये—उबाने वाला, अरुचिकर। काँहातक—कहाँ तक। ताहार चेये—उसकी अपेक्षा, उससे। छेलेर—लड़कों के। बोझेन ना—नहीं समझते।
ताहारइ—उसी के। एमनकि—यहाँ तक कि।

पड़ाशुनाय अनेक काँचा, एकटि छेले विलाते याइवे स्थिर हइया गेछे।

हरलाल कहिल, "तोमार वावाके तोमार इच्छा जानाइयाछ?"

वेणु कहिल, "जानाइयाछि। वावा वलेन, पास ना करिले विलाते याइवार प्रस्ताव तिनि काने आनिवेन ना। किन्तु आमार मन खाराप हइया गेछे—एखाने थाकिले आमि किछुतेइ पास करिते पारिव ना।"

हरलाल चुप करिया वसिया भाविते लागिल। वेणु कहिल, "आज एइ कथा लइया वावा आमाके याहा मुखे आसियाछे ताहाइ वलियाछेन। ताइ आमि वाड़ि छाड़िया चलिया आसियाछि। मा थाकिले एमन कखनोइ हइते पारित ना।" वलिते वलिते से अभिमाने काँदिते लागिल।

हरलाल कहिल, "चलो आमि-सुद्ध तोमार वावार काछे याइ, परामर्श करिया याहा भालो हय स्थिर करा याइवे।"

वेणु कहिल, "ना, आमि सेखाने याइव ना।"

वापेर सङ्गे रागारागि करिया हरलालेर वाड़िते आसिया वेणु थाकिवे, ए कथाटा हरलालेर मोटेइ भालो लागिल ना। अथच 'आमार वाड़ि थाकिते पारिवे ना' ए कथा वलाओ वड़ो शक्त।

हरलाल भाविल, 'आर-एकटु वादे मनटा एकटु ठाण्डा हइलेइ इहाके भुलाइया वाड़ि लइया याइव।' जिज्ञासा करिल, "तुमि खाइया आसियाछ?"

वेणु कहिल, "ना, आमार क्षुवा नाइ, आमि आज खाइव ना।"

हरलाल कहिल, "से कि हय।" ताड़ाताड़ि माके गिया

काँचा—कच्चा।
काने आनिवेन ना—कान नहीं देंगे।
छाड़िया—छोड़ कर। अभिमाने—मान करके, रूठ कर। काँदिते—रोने।
आमि-सुद्ध—हम दोनों।
रागारागि करिया—झगड़ा कर। मोटेइ—बिल्कुल, तनिक भी।
से कि हय—यह कैसे हो सकता है।

कहिल, "मा, वेणु आसियाछे, ताहार जन्य किछु खाबार चाइ।"

शुनिया मा भारि खुशि हइया खाबार तैरि करिते गेलेन। हरलाल आपिसेर कापड़ छाड़िया मुख हात धुइया वेणुर काछे आसिया बसिल। एकटुखानि काशिया, एकटुखानि इतस्तत करिया, से वेणुर काँधेर उपर हात राखिया कहिल, "वेणु, काजटा भालो हइतेछे ना। बाबार सङ्गे झगड़ा करिया बाड़ि हइते चलिया आसा, एटा तोमार उपयुक्त नय।"

शुनिया तखनइ बिछाना छाड़िया उठिया वेणु कहिल, "आपनार एखाने यदि सुविधा ना हय, आमि सतीशेर बाड़ि याइब।"

बलिया से चलिया याइबार उपक्रम करिल। हरलाल ताहार हात धरिया कहिल, "रोसो, किछु खाइया याओ।"

वेणु राग करिया कहिल, "ना, आमि खाइते पारिब ना।" बलिया हात छाड़ाइया घर हइते बाहिर हइया आसिल।

एमन समय, हरलालेर जन्य ये जलखाबार प्रस्तुत छिल ताहाइ वेणुर जन्य थालाय गुछाइया मा ताहादेर सम्मुखे आसिया उपस्थित हइलेन। कहिलेन, "कोथाय याओ, बाछा!"

वेणु कहिल, "आमार काज आछे, आमि चलिलाम।"

मा कहिलेन, "से कि हय बाछा, किछु ना खाइया याइते पारिबे ना।" एइ बलिया सेइ बारान्दाय पात पाड़िया ताहाके हाते धरिया खाइते बसाइलेन।

वेणु राग करिया किछु खाइतेछे ना, खाबार लइया एकटु नाड़ाचाड़ा करितेछे मात्र, एमन समय दरजार काछे एकटा गाड़ि आसिया थामिल। प्रथमे एकटा दरोयान ओ ताहार पश्चाते

तैरि—तैयार। कापड़ छाड़िया—कपड़े बदल कर। एकटुखानि—ज़रा-सा, कुछ। काशिया—खाँस कर।

हात धरिया—हाथ पकड़ कर। रोसो—ठहरो।

जलखाबार—नाश्ता। थालाय गुछाइया—थाली में सजा कर।

पात पाड़िया—खाने की जगह करके। हाते धरिया—हाथ पकड़ कर।

खाबार......नाड़ाचाड़ा—खाने का बहाना। दरजार—दरवाजे के।

स्वयं अधरबाबु मच् मच् शब्दे सिँड़ि बाहिया उपरे आसिया उपस्थित। वेणुर मुख विवर्ण हइया गेल।

मा घरेर मध्ये सरिया गेलेन। अधर छेलेर सम्मुखे आसिया क्रोधे कम्पित कण्ठे हरलालेर दिके चाहिया कहिलेन, "एइ बुझि! रतिकान्त आमाके तखनइ बलियाछिल, किन्तु तोमार पेटे ये एत मतलब छिल ताहा आमि विश्वास करि नाइ। तुमि मने करियाछ, वेणुके वश करिया उहार घाड़ भाङिया खाइबे। किन्तु, से हइते दिव ना। छेले चुरि करिबे! तोमार नामे पुलिस-केस करिब, तोमाके जेले ठेलिब तबे छाड़िब।"

एइ बलिया वेणुर दिके चाहिया कहिलेन, "चल्। ओठ्।" वेणु कोनो कथाटि ना कहिया ताहार बापेर पिछने पिछने चलिया गेल।

सेदिन केवल हरलालेर मुखेइ खावार उठिल ना।

९

एबारे हरलालेर सदागर-आपिस की जानि की कारणे मफस्वल हइते प्रचुर परिमाणे चाल डाल खरिद करिते प्रवृत्त हइयाछे। एइ उपलक्षे हरलालके प्रति सप्ताहे शनिवार भोरेर गाड़िते सात-आट हाजार टाका लइया मफस्वले याइते हइत। पाइकेरदिगके हाते हाते दाम चुकाइया दिबार जन्य मफस्वलेर एकटा विशेष केन्द्रे ताहादेर ये आपिस आछे सेइखाने दश ओ पाँच टाकार नोट ओ नगद टाका लइया से याइत, सेखाने रसिद ओ खाता देखिया गत सप्ताहेर मोटा हिसाब मिलाइया, वर्तमान सप्ताहेर काज

सिँड़ि वाहिया—सीढ़ियाँ चढ़ कर।

सरिया गेलेन—हट गई। चाहिया—ताक कर। उहार घाड़ भाङिया खाइबे—उसके माल पर ऐश करोगे।

खावार उठिल ना—अन्न का दाना नहीं पड़ा।

मफस्वल—मुफस्सल। चाल डाल—चावल, दाल। पाइकेरदिगके—खुदरा विक्रेताओं को।

चालाइबार जन्य टाका राखिया आसित। सङ्गे आपिसेर दुइ-जन दारोयान याइत। हरलालेर जामिन नाइ बलिया आपिसे एकटा कथा उठियाछिल, किन्तु बड़ोसाहेब निजेर उपर समस्त झुँकि लइया बलियाछिलेन—हरलालेर जामिनेर प्रयोजन नाइ।

माघ मास हइते एइभावे काज चलितेछे, चैत्र पर्यन्त चलिबे एमन सम्भावना आछे। एइ व्यापार लइया हरलाल विशेष व्यस्त छिल। प्रायइ ताहाके अनेक रात्रे आपिस हइते फिरिते हइत।

एकदिन एइरूप रात्रे फिरिया शुनिल, वेणु आसियाछिल, मा ताहाके खाओयाइयां यत्न करिया बसाइयाछिलेन। सेदिन ताहार सङ्गे कथावार्ता गल्प करिया ताहार प्रति ताँहार मन आरओ स्नेहे आकृष्ट हइयाछे।

एमन आरओ दुइ-एकदिन हइते लागिल। मा बलिलेन, "बाड़िते मा नाइ नाकि, सेइजन्य सेखाने ताहार मन टेँके ना। आमि वेणुके तोर छोटो भाइयेर मतो, आपन छेलेर मतोइ देखि। सेइ स्नेह पाइया आमाके केवल मा बलिया डाकिबार जन्य एखाने आसे।" एइ बलिया आँचलेर प्रान्त दिया तिनि चोख मुछिलेन।

हरलालेर एकदिन वेणुर सङ्गे देखा हइल। सेदिन से अपेक्षा करिया बसिया छिल। अनेक रात पर्यन्त कथावार्ता हइल। वेणु बलिल, "बाबा आजकाल एमन हइया उठियाछेन ये आमि किछुतेइ बाड़िते टिँकिते पारितेछि ना। विशेषत शुनिते पाइतेछि तिनि विवाह करिबार जन्य प्रस्तुत हइतेछेन। रतिबाबु सम्बन्ध लइया आसितेछेन—ताँहार सङ्गे केवलइ परामर्श चलितेछे। पूर्वे आमि कोथाओ गिया देरि करिले बाबा अस्थिर हइया उठितेन, एखन यदि आमि दुइ-चारिदिन बाड़िते ना फिरि

झुँकि—भार, दायित्व।

मन टेँके ना—मन नही लगता। मतो—समान। चोख मुछिलेन—आँखें पोंछी।

अपेक्षा करिया—प्रतीक्षा करता हुआ।

ताहा हइले तिनि आराम बोध करेन। आमि बाड़ि थाकिले विवाहेर आलोचना सावधाने करिते हय बलिया आमि ना थाकिले तिनि हाँफ छाड़िया बाँचेन। ए विवाह यदि हय तबे आमि बाड़िते थाकिते पारिब ना। आमाके आपनि उद्धारेर एकटा पथ देखाइया दिन—आमि स्वतन्त्र हइते चाइ।"

स्नेहे ओ वेदनाय हरलालेर हृदय परिपूर्ण हइया उठिल। संकटेर समय आर सकलके फेलिया वेणु ये ताहार सेइ मास्टारमशायेर काछे आसियाछे, इहाते कष्टेर सङ्गे सङ्गे ताहार आनन्द हइल। किन्तु मास्टारमशायेर कतटुकुइ वा साध्य आछे!

वेणु कहिल, "येमन करिया होक, विलाते गिया बारिस्टार हइया आसिले एइ विपद हइते परित्राण पाइ।"

हरलाल कहिल, "अधरबाबु कि याइते दिबेन।"

वेणु कहिल, "आमि चलिया गेले तिनि बाँचेन। किन्तु टाकार उपरे ये रकम माया, विलातेर खरच ताँहार काछ हइते सहजे आदाय हइबे ना। एकटु कौशल करिते हइबे।"

हरलाल वेणुर विज्ञता देखिया हासिया कहिल, "की कौशल।"

वेणु कहिल, "आमि ह्याण्ड्‌नोटे टाका धार करिब। पाओनादार आमार नामे नालिश करिले बाबा तखन दाये पड़िया शोध करिबेन। सेइ टाकाय पालाइया विलात याइब। सेखाने गेले तिनि खरच ना दिया थाकिते पारिबेन ना।"

हरलाल कहिल, "तोमाके टाका धार दिबे के।"

वेणु कहिल, "आपनि पारेन ना?"

आलोचना—चर्चा। हाँफ छाड़िया बाँचेन—चैन की साँस लेते हैं।

फेलिया—छोड़ कर। कतटुकुइ......आछे—बिसात ही कितनी है। हइते—से।

तिनि बाँचेन—उनकी जान छूटे। टाकार......माया—रुपये-पैसे के प्रति उनका जैसा मोह है। आदाय—वसूल।

धार करिब—उधार लूँगा। दाये पड़िया—मुश्किल में पड़ जानेपर, विवश हो कर। पालाइया—भाग कर। थाकिते पारिबेन ना—रह न सकेंगे।

पारेन ना—नहीं (दे) सकेंगे।

हरलाल आश्चर्य हइया कहिल, "आमि !" ताहार मुखे आर कोनो कथा बाहिर हइल ना।

वेणु कहिल, "केन, आपनार दारोयान तो तोड़ाय करिया अनेक टाका घरे आनिल।"

हरलाल हासिया कहिल, "से दरोयानओ येमन आमार, टाकाओ तेमनि।"

बलिया एइ आपिसेर टाकार व्यवहारटा की ताहा वेणुके बुझाइया दिल। एइ टाका केवल एकटि रात्रेर जन्यइ दरिद्रेर घरे आश्रय लय, प्रभात हइले दश दिकेते गमन करे।

वेणु कहिल, "आपनादेर साहेब आमाके धार दिते पारेन ना? नाहय आमि सुद वेशि करिया दिब।"

हरलाल कहिल, "तोमार बाप यदि सिकिउरिटि देन ताहा हइले आमार अनुरोधे हयतो दितेओ पारेन।"

वेणु कहिल, "बाबा यदि सिकिउरिटि दिबेन तो टाका दिबेन ना केन।"

तर्कटा एइखानेइ मिटिया गेल। हरलाल मने मने भाबिते लागिल, 'आमार यदि किछु थाकित, तबे बाड़िघर जमिजमा समस्त वेचिया-किनिया टाका दिताम।' किन्तु एकटिमात्र असुविधा एइ ये, बाड़िघर जमिजमा किछुइ नाइ।

१०

एकदिन शुक्रवार रात्रे हरलालेर बासार सम्मुखे जुड़िगाड़ि दाँड़ाइल। वेणु गाड़ि हइते नामिबामात्र हरलालेर आपिसेर दरोयान ताहाके मस्त एकटा सेलाम करिया उपरे बाबुके शशव्यस्त हइया संवाद दिते गेल। हरलाल तखन ताहार शोबार घरे

तोड़ाय करिया—रुपयों से भरी हुई थैली।
बुझाइया दिल—समझा दिया।
मिटिया गेल—समाप्त हो गया। थाकित—रहता, होता। बाड़िघर—घर-द्वार। जमिजमा—ज़मीन-जायदाद। वेचिया-किनिया—खरीद-फ़रोख्त करके।
नामिबामात्र—उतरते ही। मस्त......करिया—एक लम्बा सलाम झुका कर। शशव्यस्त हइया—घबरा कर। शोबार घरे—सोने के कमरे में।

मेजेर उपर वसिया टाका मिलाइया लइतेछिल। वेणु सेइ घरेइ प्रवेश करिल। आज ताहार वेश किछु नूतन धरणेर। शौखिन धुतिचादरेर वदले नवर शरीरे पार्शि कोट ओ प्याण्टलुन आँटिया माथाय क्याप परिया आसियाछे। ताहार दुइ हातेर आङुले मणिमुक्तार आंटि झक्मक् करितेछे। गला हइते लम्वित मोटा सोनार चेने आवद्ध घड़ि वुकेर पकेटे निविष्ट। कोटेर आस्तिनेर भितर हइते जामार हाताय हीरार वोताम देखा याइतेछे।

हरलाल टाका गोना वन्ध करिया आश्चर्य हइया कहिल, "ए की व्यापार। एत रात्रे ए वेशे ये?"

वेणु कहिल, "परशु वावार विवाह। तिनि आमार काछे ताहा गोपन करिया राखियाछेन, किन्तु आमि खवर पाइयाछि। वावाके वलिलाम, आमि किछु दिनेर जन्य आमादेर वाराकपुरेर वागाने याइव। शुनिया तिनि भारि खुशि हइया राजि हइयाछेन। ताइ वागाने चलियाछि। इच्छा हइतेछे, आर फिरिव ना। यदि साहस थाकित तवे गङ्गार जले डुविया मरिताम।"

वलिते वलिते वेणु काँदिया फेलिल। हरलालेर वुके येन छुरि विँधिते लागिल। एकजन अपरिचित स्त्रीलोक आसिया वेणुर मार घर, मार खाट, मार स्थान अधिकार करिया लइले, वेणुर स्नेहस्मृतिजड़ित वाड़ि ये वेणुर पक्षे किरकम कण्टकमय हइया उठिवे ताहा हरलाल समस्त हृदय दिया वुझिते पारिल। मने मने भाविल, पृथिवीते गरिव हइया ना जन्मिलेओ दुःखेर एवं अपमानेर अन्त नाइ। वेणुके की वलिया ये सान्त्वना दिवे ताहा किछुइ भाविया ना पाइया वेणुर हातखाना निजेर हाते

मेजेर····वसिया—फ़र्श (मीनन) पर वैठ कर। धरणेर—ढंग का। नवर—स्वस्थ। पार्शि—पारसी। आँटिया—चढ़ाए, डाटे हुए। वुकेर पकेटे—ऊपर की जेब में। जामार हाताय—कमीज के कफ़ों में। वोताम—वटन।

गोना—गिनना। वन्ध—वन्द।

काँदिया फेलिल—रो पड़ा। वुके—छाती में। मार—माँ का। किरकम—किस प्रकार, कैसा। हृदय दिया—हृदय से।

लइल। लइबामात्र एकटा तर्क ताहार मने उदय हइल। से भाविल, एमन एकटा वेदनार समय वेणु की करिया एत साज करिते पारिल।

हरलाल ताहार आंटिर दिके चोख राखियाछे देखिया वेणु येन ताहार मनेर प्रश्नटा आँचिया लइल। से बलिल, "एइ आंटिगुलि आमार मायेर।"

शुनिया हरलाल बहु कष्टे चोखेर जल सामलाइया लइल। किछुक्षण परे कहिल, "वेणु, खाइया आसियाछ?"

वेणु कहिल, "हाँ—आपनार खाओया हय नाइ?"

हरलाल कहिल, "टाकागुलि गनिया आयरन-चेस्टे ना तुलिया घर हइते बाहिर हइते पारिब ना।"

वेणु कहिल, "आपनि खाइया आसुन, आपनार सङ्गे अनेक कथा आछे। आमि घरे रहिलाम; मा आपनार खाबार लइया बसिया आछेन।"

हरलाल एकटु इतस्तत करिया कहिल, "आमि चट् करिया खाइया आसितेछि।"

हरलाल ताड़ाताड़ि खाओया सारिया माके लइया घरे प्रवेश करिल। वेणु ताँहाके प्रणाम करिल, तिनि वेणुर चिबुकेर स्पर्श लइया चुम्बन करिलेन। हरलालेर काछे समस्त खबर पाइया ताँहार बुक येन फाटिया याइतेछिल। निजेर समस्त स्नेह दियाओ वेणुर अभाव तिनि पूरण करिते पारिबेन ना, एइ ताँहार दुःख।

चारि दिके छड़ानो टाकार मध्ये तिनजने बसिया वेणुर छेलेवेलाकार गल्प हइते लागिल। मास्टरमशायेर सङ्गे जड़ित

आँचिया लइल—ताड़ गया।
आयरन चेस्टे—लोहे की तिजोरी में।
अनेक कथा आछे—बहुत-सी बातें (करनी) है।
ताड़ाताड़ि—जल्दी से। **सारिया**—समाप्त कर। **ताँहाके**—उन्हें।
चारि दिके छड़ानो—चारों ओर फैले हुए। **छेलेवेलाकार**—बचपन की।
जड़ित—जुड़ी हुई।

ताहार कत दिनेर कत घटना। ताहार माझे माझे सेइ असंयत-स्नेहशालिनी मार कथाओ आसिया पड़िते लागिल।

एमनि करिया रात अनेक हइया गेल। हठात् एकसमय घड़ि खुलिया वेणु कहिल, "आर नय, देरि करिले गाड़ि फेल करिव।"

हरलालेर मा कहिलेन, "वावा, आज रात्रे एइखानेइ थाको-ना, काल सकाले हरलालेर सङ्गे एकसङ्गेइ वाहिर हइवे।"

वेणु मिनति करिया कहिल, "ना मा, ए अनुरोध करिवेन ना, आज रात्रे ये करिया हउक आमाके याइतेइ हइवे।"

हरलालके कहिल, "मास्टारमशाय, एइ आंटिघड़िगुला वागाने लइया याओया निरापद नय। आपनार काछेइ राखिया याइ, फिरिया आसिया लइया याइव। आपनार दरोयानके वलिया दिन, आमार गाड़ि हइते चामड़ार ह्याण्डव्यागटा आनिया दिक। सेइटेर मध्ये एगुला राखिया दिइ।"

आपिसेर दरोयान गाड़ि हइते व्याग लइया आसिल। वेणु ताहार चेन घड़ि आंटि वोताम समस्त खुलिया व्यागेर मध्ये पूरिया दिल। सतर्क हरलाल सेइ व्यागटि लइया तखनइ आयरन-सेफेर मध्ये राखिल।

वेणु हरलालेर मार पायेर धुला लइल। तिनि रुद्धकण्ठे आशीर्वाद करिलेन, "मा जगदम्वा तोमार मा हइया तोमाके रक्षा करुन।"

ताहार परे वेणु हरलालेर पादस्पर्श करिया प्रणाम करिल। आर-कोनोदिन से हरलालके एमन करिया प्रणाम करे नाइ। हरलाल कोनो कथा ना वलिया ताहार पिठे हात दिया ताहार सङ्गे सङ्गे नीचे नामिया आसिल। गाड़िर लण्ठने आलो ज्वलिल,

---

थाको—रहो।
मिनति करिया—विनीत भाव से। **ये करिया हउक**—जैसे भी हो।
ताहार—अपने। **पूरिया दिल**—भर दिये।
एमन करिया—इस प्रकार। **नामिया आसिल**—उतर आया।
लण्ठने—लालटेन (में)

घोड़ा दुटा अधीर हइया उठिल। कलिकातार ग्यासालोक-खचित निशीथेर मध्ये वेणुके लइया गाड़ि अदृश्य हइया गेल।

हरलाल ताहार घरे आसिया अनेकक्षण धरिया चुप करिया बसिया रहिल। ताहार पर एकटा दीर्घनिश्वास फेलिया टाका गनिते गनिते भाग करिया एक-एकटा थलिते भरति करिते लागिल। नोटगुला पूर्वेइ गना हइया थलिबन्दि हइया लोहार सिन्दुके उठिया-छिल।

११

लोहार सिन्दुकेर चाबि माथार बालिशेर निचे राखिया सेइ टाकार घरेइ हरलाल अनेक रात्रे शयन करिल। भालो घुम हइल ना। स्वप्ने देखिल—वेणुर मा पर्दार आड़ाल हइते ताहाके उच्चस्वरे तिरस्कार करितेछेन; कथा किछुइ स्पष्ट शुना याइतेछे ना, केवल सेइ अनिर्दिष्ट कण्ठस्वरेर सङ्गे सङ्गे वेणुर मार चुनि-पान्ना-हीरार अलंकार हइते लाल सबुज शुभ्र रश्मिर सूचिगुलि कालो पर्दाटाके फुंड़िया बाहिर हइया आन्दोलित हइतेछे। हरलाल प्राणपणे वेणुके डाकिबार चेष्टा करितेछे, किन्तु ताहार गला दिया किछुतेइ स्वर बाहिर हइतेछे ना। एमन समय प्रचण्ड शब्दे की एकटा भाङिया पर्दा छिँड़िया पड़िया गेल—चमकिया चोख मेलिया हरलाल देखिल एकटा स्तूपाकार अन्धकार। हठात् एकटा दमका हाओया उठिया सशब्दे जानलाय ठेला दिया आलो निबाइया दियाछे। हरलालेर समस्त शरीर

ताहार पर—उसके बाद।

माथार बालिशेर—सिर के तकिये के। **घुम**—नींद। **आड़ाल**—आड़। **कथा**—बात। **चुनि**—मानिक। **सबुज**—हरो। **सूचिगुलि**—सुइयाँ। **फुंड़िया**—भेदकर। **डाकिबार**—पुकारने की। **की एकटा**—न जाने क्या। **भाङिया**—टूट कर। **छिँड़िया**—फाड़ कर। **चमकिया चोख मेलिया**—चौंक कर आँखें खोल (कर)। **दमका हाओया**—तेज़ हवा। **जानलाय**—जंगले को। **निबाइया**—बुझा।

घामे भिजिया गेछे। से ताड़ाताड़ि उठिया देशालाइ दिया आलो ज्वालिल। घड़िते देखिल, चारटे बाजियाछे। आर घुमाइबार समय नाइ—टाका लइया मफस्वले याइबार जन्य प्रस्तुत हइते हइबे।

हरलाल मुख धुइया फिरिबार समय मा ताँहार घर हइते कहिलेन, "की बाबा, उठियाछिस?"

हरलाल प्रभाते प्रथमे मातार मङ्गलमुख देखिबार जन्य घरे प्रवेश करिल। मा ताहार प्रणाम लइया मने मने ताहाके आशीर्वाद करिया कहिलेन, "बाबा, आमि एइमात्र स्वप्न देखितेछिलाम, तुइ येन बउ आनिते चलियाछिस। भोरेर स्वप्न कि मिथ्या हइबे।"

हरलाल हासिया घरे प्रवेश करिल। टाका ओ नोटेर थलेगुलो लोहार सिन्दुक हइते बाहिर करिया प्याकबाक्सय बन्ध करिबार जन्य उद्योग करिते लागिल। हठात् ताहार बुकेर भितर धड़ास करिया उठिल—दुइ-तिनटा नोटेर थलि शून्य। मने हइल स्वप्न देखितेछे। थलेगुला लइया सिन्दुकेर गाये जोरे आछाड़ दिल—ताहाते शून्य थलेर शून्यता अप्रमाण हइल ना। तबु वृथा आशाय थलेर बन्धनगुला खुलिया खुब करिया झाड़ा दिल, एकटि थलेर भितर हइते दुइखानि चिठि बाहिर हइया पड़िल। वेणुर हातेर लेखा—एकटि चिठि ताहार बापेर नामे, आर-एकटि हरलालेर।

ताड़ाताड़ि खुलिया पड़िते गेल। चोखे येन देखिते पाइल ना। मने हइल, येन आलो यथेष्ट नाइ। केवलइ बाति उसकाइया दिते लागिल। याहा पड़े ताहा भालो बोझे ना, बांला भाषा येन भुलिया गेछे।

घामे—पसीने से। देशालाइ—दियासलाई। घुमाइबार—सोने का।

एइमात्र—अभी-अभी।

बुकेर......उठिल—उसकी छाती धक से रह गई। गाये—(शरीर) पर। आछाड़ दिल—झटकाया।

केवलइ......लागिल—बार-बार बत्ती उकसाने लगा। पड़े—पढ़ता है।

कथाटा एइ ये, वेणु तिन हाजार टाकार परिमाण दशटाका-ओयाला नोट लइया विलाते यात्रा करियाछे, आज भोरेइ जाहाज छाड़िवार कथा। हरलाल ये-समय खाइते गियाछिल सेइ समय वेणु एइ काण्ड करियाछे। लिखियाछे ये, "वावाके चिठि दिलाम, तिनि आमार एइ ऋणशोध करिया दिवेन। ता छाड़ा व्याग खुलिया देखिवेन ताहार मध्ये मायेर ये गहना आछे ताहार दाम, कत ठिक जानि ना, वोध हय तिन हाजार टाकार वेशि हइवे। मा यदि वाँचिया थाकितेन तवे वावा आमाके विलाते याइवार टाका ना दिलेओ एइ गहना दियाइ निश्चय मा आमाके खरच जोगाड़ करिया दितेन। आमार मायेर गहना वावा ये आर-काहाकेओ दिवेन ताहा आमि सह्य करिते पारि नाइ। सेइजन्य येमन करिया पारि आमिइ ताहा लइयाछि। वावा यदि टाका दिते देरिं करेन तवे आपनि अनायासे एइ गहना वेचिया वा वन्धक दिया टाका लइते पारिवेन। ए आमार मायेर जिनिस—ए आमारइ जिनिस।" ए छाड़ा आरओ अनेक कथा—से कोनो काजेर कथा नहे।

हरलाल घरे ताला दिया ताड़ाताड़ि एकखाना गाड़ि लइया गङ्गार घाटे छुटिल। कोन् जाहाजे वेणु यात्रा करियाछे ताहार नामओ से जाने ना। मेटियावुरुज पर्यन्त छुटिया हरलाल खवर पाइल दुइखाना जाहाज भोरे रओना हइया गेछे। दुखानाइ इंलण्डे याइवे। कोन् जाहाजे वेणु आछे ताहाओ ताहार अनुमानेर अतीत एवं से जाहाज धरिवार ये की उपाय ताहाओ से भाविया पाइल ना।

मेटियावुरुज हइते ताहार वासार दिके यखन गाड़ि फिरिल

ता छाड़ा—इसके अतिरिक्त। एइ गहना दियाइ—इन्हीं गहनों से। जोगाड़—व्यवस्था। आर काहाकेओ—अन्य किसी को भी। पारि—(ले) सकूं। जिनिस—चीज। ए छाड़ा—इसके अतिरिक्त।

छुटिल—दौड़ा। भाविया पाइल ना—सोच न सका।

तखन सकालेर रौद्रे कलिकाता शहर जागिया उठियाछे। हर-लालेर चोखे किछुइ पड़िल ना। ताहार समस्त हतवुद्धि अन्तः-करण एकटा कलेवरहीन निदारुण प्रतिकूलताके येन केवलइ प्राणपणे ठेला मारितेछिल—किन्तु कोथाओ एक तिलओ ताहाके टलाइते पारितेछिल ना। ये वासाय ताहार मा थाकेन, एतदिन ये वासाय पा दिवामात्र कर्मक्षेत्रेर समस्त क्लान्ति ओ संघातेर वेदना मुहूर्तेर मध्येइ ताहार दूर हइया गियाछे, सेइ वासार सम्मुखे गाड़ि आसिया दाँड़ाइल—गाड़ोयानेर भाड़ा चुकाइया दिया सेइ वासार मध्ये से अपरिमेय नैराश्य ओ भय लइया प्रवेश करिल।

मा उद्विग्न हइया वारान्दाय दाँड़ाइया छिलेन। जिज्ञासा करिलेन, "वावा, कोथाय गियाछिले।"

हरलाल वलिया उठिल, "मा, तोमार जन्य वउ आनिते गियाछिलाम।" वलिया शुष्ककण्ठे हासिते हासिते सेखानेइ मूर्छित हइया पड़िया गेल।

"ओ मा, की हइल गो" वलिया मा ताड़ाताड़ि जल आनिया ताहार मुखे जलेर झापटा दिते लागिलेन।

किछुक्षण परे हरलाल चोख खुलिया, शून्यदृष्टिते चारिदिके चाहिया, उठिया वसिल। हरलाल कहिल, "मा, तोमरा व्यस्त हइओ ना। आमाके एकटु एकला थाकिते दाओ।" वलिया से ताड़ाताड़ि घरेर मध्ये प्रवेश करियाइ भितर हइते दरजा वन्ध करिया दिल। मा दरजार वाहिरे माटिर उपर वसिया पड़िलेन—फाल्गुनेर रौद्र ताँहार सर्वाङ्गे आसिया पड़िल। तिनि रुद्ध

रौद्रे—धूप, प्रकाश में। चोखे किछुइ पड़िल ना—कुछ भी नजर न आया। ठेला—धक्का।

टलाइते पारितेछिल ना—हटा नहीं पा रहा था। पा दिवामात्र—पैर रखते ही। दाँड़ाइल—खड़ी हुई। गाड़ोयानेर—गाड़ीवान का।

झापटा—छींटे।

चाहिया—ताक कर। व्यस्त—परेशान। थाकिते दाओ—रहने दो।

दरजार उपर माथा राखिया, थाकिया थाकिया केवल डाकिते लागिलेन, "हरलाल, बाबा हरलाल।"

हरलाल कहिल, "मा, एकटु परेइ आमि बाहिर हइव, एखन तुमि याओ।"

मा रौद्रे सेइखानेइ बसिया जप करिते लागिलेन।

आपिसेर दरोयान आसिया दरजाय घा दिया कहिल, "बाबु, एखनइ ना बाहिर हइले आर गाड़ि पाओया याइबे ना।"

हरलाल भितर हइते कहिल, "आज सातटार गाड़िते याओया हइबे ना।"

दरोयान कहिल, "तबे कखन याइबेन।"

हरलाल कहिल, "से आमि तोमाके परे बलिब।"

दरोयान माथा नाड़िया हात उल्टाइया नीचे चलिया गेल।

हरलाल भाबिते लागिल, 'ए कथा बलि काहाके। ए ये चुरि। वेणुके कि जेले दिब।'

हठात् सेइ गहनार कथा मने पड़िल। से कथाटा एकेबारेइ भुलिया गियाछिल। मने हइल, येन किनारा पाओया गेल। ब्याग खुलिया देखे ताहार मध्ये शुधु आंटि, घड़ि, बोताम, हार नहे—ब्रेस्लेट, चिक, सिंथि, मुक्तार माला प्रभृति आरओ अनेक दामि गहना आछे। ताहार दाम तिन हाजार टाकार अनेक बेशि। किन्तु एओ तो चुरि। एओ तो वेणुर नय। ए ब्याग यतक्षण ताहार घरे थाके ततक्षण ताहार विपद।

तखन आर देरि ना करिया अधरलालेर सेइ चिठि ओ ब्याग लइया हरलाल घर हइते बाहिर हइल।

---

१ थाकिया थाकिया—रह-रह कर। केवल—निरन्तर। बाबा—बेटा।
 एकटु परेइ—ज़रा-सी देर बाद ही।
 घा दिया—खटखटा कर।
 परे बलिब—बाद में बताऊँगा।
 माथा नाड़िया—सिर हिला कर।
 से कथाटा—उस बात को। एकेबारेइ—बिल्कुल ही। शुधु—केवल। आंटि—अँगूठी। चिक—(गले का आभूषण विशेष)। सिंथि—शीश फूल। एओ तो—यह भी तो।

मा जिज्ञासा करिलेन, "कोथाय याओ, बाबा।"

हरलाल कहिल, "अधरबाबुर बाड़िते।"

मार वुक हइते हठात् अनिर्दिष्ट भयेर एकटा मस्त बोझा नामिया गेल। तिनि स्थिर करिलेन, ऐ-ये हरलाल काल शुनियाछे वेणुर बापेर विये, ताइ शुनिया अवधि बाछार मने शान्ति नाइ। आहा, वेणुके कत भालोइ बासे!

मा जिज्ञासा करिलेन, "आज तबे तोमार आर मफस्वले याओया हइवे ना?"

हरलाल कहिल, "ना।" बलियाइ ताड़ाताड़ि बाहिर हइया पड़िल।

अधरवाबुर वाड़ि पौँछिवार पूर्वेइ दूर हइते शोना गेल रसन-चौकि आलेया रागिनीते करुणस्वरे आलाप जुड़िया दियाछे, किन्तु हरलाल दरजाय ढुकियाइ देखिल, विवाहबाड़िर उत्सवेर सङ्गे एकटा येन अशान्तिर लक्षण मिशियाछे। दरोयानेर पाहारा कड़ाक्कड़, वाड़ि हइते चाकरबाकर केह बाहिर हइते पारितेछे ना—सकलेरइ मुखे भय ओ चिन्तार भाव। हरलाल खबर पाइल, काल रात्रे वाड़िते अनेक टाकार गहना चुरि हइया गेछे। दुइ-तिनजन चाकरके विशेषभावे सन्देह करिया पुलिसेर हाते समर्पण करिवार उद्योग हइतेछे।

हरलाल दोतलाय बारान्दाय गिया देखिल, अधरबाबु आगुन हइया बसिया आछेन ओ रतिकान्त तामाक खाइतेछे। हरलाल कहिल, "आपनार सङ्गे गोपने आमार एकटु कथा आछे।"

अधरवाबु चटिया उठिया कहिलेन, "तोमार सङ्गे गोपने

मस्त—बड़ा भारी। **नामिया गेल**—उतर गया। **बिये**—विवाह। **शुनिया अवधि**—सुनने के बाद से। **भालोइ बासे**—प्यार करता है।

रसनचौकि—शहनाई। शहनाई, ढोल और झांझ का समवेत स्वर अथवा (इनके) वादकों का दल। **जुड़िया दियाछे**—ले रही है। **ढुकियाइ**—घुसते ही। **मिशियाछे**—मिला हुआ है। **कड़ाक्कड़**—कड़ा।

दोतलाय—दूसरी मंजिल पर। **आगुन हइया**—क्रोध में जले-भुने। **चटिया उठिया**—चिढ़ कर।

आलाप करिवार एखन आमार समय नय—याहा कथा थाके एइखानेइ वलिया फेलो।"

तिनि भाविलेन, हरलाल वुझि एइ समये ताँहार काछे साहाय्य वा धार चाहिते आसियाछे। रतिकान्त कहिल, "आमार सामने वावुके किछु जानाइते यदि लज्जा करेन, आमि नाहय उठि।"

अधर विरक्त हइया कहिलेन, "आः, वोसो-ना।"

हरलाल कहिल, "काल रात्रे वेणु आमार वाड़िते एइ व्याग राखिया गेछे।"

अधर। व्यागे की आछे।

हरलाल व्याग खुलिया अधरवावुर हाते दिल।

अधर। मास्टारे छात्रे मिलिया वेश कारवार खुलियाछ तो! जानिते, ए चोराइ माल विक्रि करिले धरा पड़िवे, ताइ आनिया दियाछ—मने करितेछ, साधुतार जन्य वकशिश पाइवे?

तखन हरलाल अधरेर पत्रखाना ताँहार हाते दिल। पड़िया तिनि आगुन हइया उठिलेन। वलिलेन, "आमि पुलिसे खवर दिव। आमार छेले एखनो सावालक हय नाइ—तुमि ताहाके चुरि करिया विलाते पाठाइयाछ। हयतो पाँचसो टाका धार दिया तिन हाजार टाका लिखाइया लइयाछ। ए धार आमि शुधिव ना।"

हरलाल कहिल, "आमि धार दिइ नाइ।"

अधर कहिलेन, "तवे से टाका पाइल कोथा हइते। तोमार वाक्स भाङिया चुरि करियाछे?"

हरलाल से प्रश्नेर कोनो उत्तर दिल ना। रतिकान्त टिपिया टिपिया कहिल, "ओँके जिज्ञासा करुन-ना, तिन हाजार

धार—उधार। नाहय—न हो तो।
विरक्त हइया—खीझ कर। वोसो-ना—बैठो न।
वेश—अच्छा-खासा। धरा पड़िवे—पकड़े जाओगे।
सावालक—वालिग। शुधिव ना—नहीं चुकाऊँगा।
कोथा हइते—कहाँ से।
टिपिया टिपिया—चवा-चवा कर, अर्थपूर्ण ढंग से।

टाका केन, पाँचशो टाकाओ उनि कि कखनो चले देखियाछेन।"

याहा हउक, गहना चुरिर मीमांसा हओयार परेइ वेणुर विलात-पालानो लइया वाड़िते एकटा हुलस्थुल पड़िया गेल। हरलाल समस्त अपराधेर भार माथाय करिया लइया वाड़ि हइते वाहिर हइया आसिल।

रास्ताय यखन वाहिर हइल तखन ताहार मन येन असाड़ हइया गेछे। भय करिवार एवं भावना करिवारओ शक्ति तखन छिल ना। एइ व्यापारेर परिणाम ये की हइते पारे मन ताहा चिन्ता करितेओ चाहिल ना।

गलिते प्रवेश करिया देखिल ताहार वाड़िर समुखे एकटा गाड़ि दाँड़ाइया आछे। चमकिया उठिल। हठात् आशा हइल, वेणु फिरिया आसियाछे। निश्चयइ वेणु! ताहार विपद ये सम्पूर्ण निरुपायरूपे चूड़ान्त हइया उठिवे, ए कथा से कोनोमतेइ विश्वास करिते पारिल ना।

ताड़ाताड़ि गाड़िर काछे आसिया देखिल, गाड़िर भितरे ताहादेर आपिसेर एकजन साहेव वसिया आछे। साहेव हरलालके देखियाइ गाड़ि हइते नामिया ताहार हात धरिया वाड़िते प्रवेश करिल। जिज्ञासा करिल, "आज मफस्वले गेले ना केन।"

आपिसेर दरोयान सन्देह करिया वड़ोसाहेवके गिया जानाइयाछे—तिनि इहाके पाठाइयाछेन।

हरलाल वलिल, "तिन हाजार टाकार नोट पाओया याइतेछे ना।"

साहेव जिज्ञासा करिल, "कोथाय गेल?"

याहा हउक—जो हो। पालानो—भाग जाने को। हुलस्थुल—चयल-पुयल।
असाड़—बोध-शक्ति-हीन। भावना—सोच-विचार।
चमकिया उठिल—चौंक उठा। कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी।
ताड़ाताड़ि—जल्दी से। नामिया—उतर कर।
तिनि—उन्होंने।

हरलाल 'जानि ना' एमन उत्तरओ दिते पारिल ना, चुप करिया रहिल।

साहेब कहिल, "टाका कोथाय आछे देखिब चलो।"

हरलाल ताहाके उपरेर घरे लइया गेल। साहेब समस्त गनिया चारि दिक खुंजिया-पातिया देखिल। बाड़िर समस्त घर तन्न तन्न करिया अनुसन्धान करिते लागिल। एइ-समस्त व्यापार देखिया मा आर थाकिते पारिलेन ना—तिनि साहेबेर सामनेइ बाहिर हइया व्याकुल हइया जिज्ञासा करिलेन, "ओरे हरलाल, की हइल रे।"

हरलाल कहिल, "मा, टाका चुरि गेछे।"

मा कहिलेन, "चुरि केमन करिया याइबे। हरलाल, एमन सर्वनाश के करिल!"

हरलाल कहिल, "मा, चुप करो।"

सन्धान शेष करिया साहेब जिज्ञासा करिल, "ए घरे रात्रे के छिल।"

हरलाल कहिल, "द्वार बन्ध करिया आमि एकला शुइया-छिलाम—आर-केह छिल ना।"

साहेब टाकागुला गाड़िते तुलिया हरलालके कहिल, "आच्छा, बड़ोसाहेबेर काछे चलो।"

हरलालके साहेबेर सङ्गे चलिया याइते देखिया मा ताहादेर पथ रोध करिया कहिल, "साहेब, आमार छेलेके कोथाय लइया याइबे। आमि ना खाइया ए छेले मानुष करियाछि—आमार छेले कखनोइ परेर टाकाय हात दिबे ना।"

साहेब बांला कथा किछु ना बुझिया कहिल, "आच्छा, आच्छा।"

गनिया—गिन कर। **खुंजिया-पातिया**—खूब खोज कर। **तन्न तन्न करिया**—बारीकी से। **थाकिते पारिलेन ना**—रह न सकीं।

तुलिया—रख कर। **मानुष करियाछि**—समर्थ बनाया है। **परेर....दिबे ना**—दूसरे का पैसा नहीं छुएगा।

हरलाल कहिल, "मा तुमि केन व्यस्त हइतेछ। वड़ोसाहेवेर सङ्गे देखा करिया आमि एखनइ आसितेछि।"

मा उद्विग्न हइया कहिलेन, "तुइ ये सकाल थेके किछुइ खास नाइ।"

से कथार कोनो उत्तर ना दिया हरलाल गाड़िते उठिया चलिया गेल। मा मेजेर उपरे लुटाइया पड़िया रहिलेन।

वड़ोसाहेव हरलालके कहिलेन, "सत्य करिया वलो व्यापारखाना की।"

हरलाल कहिल, "आमि टाका लइ नाइ।"

वड़ोसाहेव। से कथा आमि सम्पूर्ण विश्वास करि। किन्तु तुमि निश्चय जान के लइयाछे?

हरलाल कोनो उत्तर ना दिया मुख निचु करिया वसिया रहिल।

साहेव। तोमार ज्ञातसारे ए टाका केह लइयाछे?

हरलाल कहिल, "आमार प्राण थाकिते आमार ज्ञातसारे ए टाका केह लइते पारित ना।"

वड़ोसाहेव कहिलेन, "देखो हरलाल, आमि तोमाके विश्वास करिया कोनो जामिन ना लइया एइ दायित्वेर काज दियाछिलाम। आपिसेर सकलेइ विरोधी छिल। तिन हाजार टाका किछुइ वेशि नय। किन्तु तुमि आमाके वड़ो लज्जातेइ फेलिवे। आज समस्त दिन तोमाके समय दिलाम—येमन करिया पार टाका संग्रह करिया आनो—ताहा हइले ए लइया कोनो कथा तुलिव ना, तुमि येमन काज करितेछ तेमनि करिवे।"

एइ वलिया साहेव उठिया गेलेन। तखन वेला एगारोटा

व्यस्त—परेसान। एखनइ—अभी।
मेजेर उपरे—फ़र्श पर।
ज्ञातसारे—जानते हुए।
येमन करिया पार—जैसे भी हो। कथा तुलिव ना—वात नहीं उठाऊँगा।
एगारोटा—ग्यारह।

हइया गेछे। हरलाल यखन माथा निचु करिया बाहिर हइया गेल तखन आपिसेर बाबुरा अत्यन्त खुशि हइया हरलालेर पतन लइया आलोचना करिते लागिल।

हरलाल एकदिन समय पाइल। आरओ एकटा दीर्घ दिन नैराश्येर शेषतलेर पङ्क आलोड़न करिया तुलिबार मेयाद बाड़िल।

उपाय की, उपाय की, उपाय की—एइ भाबिते भाबिते सेइ रौद्रे हरलाल रास्ताय बेड़ाइते लागिल। शेषे उपाय आछे कि ना से भाबना बन्ध हइया गेल, किन्तु बिना कारणे पथे घुरिया बेड़ानो थामिल ना। ये कलिकाता हाजार हाजार लोकेर आश्रय-स्थान ताहाइ एक मुहूर्ते हरलालेर पक्षे एकटा प्रकाण्ड फाँसकलेर मतो हइया उठिल। इहार कोनो दिके बाहिर हइबार कोनो पथ नाइ। समस्त जनसमाज एइ अतिक्षुद्र हरलालके चारि दिके आटक करिया दाँड़ाइयाछे। केह ताहाके जानेओ ना, एवं ताहार प्रति काहारओ मने कोनो विद्वेषओ नाइ, किन्तु प्रत्येक लोकेइ ताहार शत्रु। अथच रास्तार लोक ताहार गा घेँषिया ताहार पाश दिया चलियाछे; आपिसेर बाबुरा बाहिरे आसिया ठोङाय करिया जल खाइतेछेन, ताहार दिके केह ताकाइतेछेन ना; मयदानेर धारे अलस पथिक माथार निचे हात राखिया एकटा पायेर उपर आर-एकटा पा तुलिया गाछेर तलाय पड़िया आछे; स्याकरागाड़ि भरति करिया हिन्दुस्थानी मेयेरा कालीघाटे चलियाछे; एकजन चापरासि एकखाना चिठि लइया हरलालेर सम्मुखे धरिया कहिल, "बाबु, ठिकाना पड़िया दाओ"—येन ताहार सङ्गे अन्य पथिकेर कोनो प्रभेद नाइ; सेओ ठिकाना पड़िया ताहाके बुझाइया दिल। क्रमे आपिस बन्ध हइबार समय आसिल।

बेड़ाइते लागिल—भटकने लगा। **शेषे**—आखिर। **घुरिया बेड़ानो**—भटकते फिरना। **फाँसकलेर मतो**—फांसी के यन्त्र की तरह। **आटक करिया**—रोके हुए। **गा घेँषिया**—टकराते हुए। **पाश दिया**—अगल-बगल से। **ठोङाय.....खाइतेछेन**—दोने अथवा लिफाफे में रख कर नाश्ता कर रहे हैं। **स्याकरा गाड़ि**—शकट, किराये की गाड़ी। **हिन्दुस्तानी। मेयेरा**—हिन्दी प्रदेश की स्त्रियां।

एइ भये से बासाय याइते पारितेछिल ना। शरीरेर भार यखन आर बहिते पारे ना एमन समय हरलाल एकटा भाड़ाटे गाड़ि देखिया ताहाके डाकिल। गाड़ोयान जिज्ञासा करिल, "कोथाय याइबे।"

हरलाल कहिल, "कोथाओ ना। एइ मयदानेर रास्ताय खानिकक्षण हओया खाइया बेड़ाइब।"

गाड़ोयान सन्देह करिया चलिया याइबार उपक्रम करितेइ हरलाल ताहार हाते आगाम भाड़ा एकटा टाका दिल। से गाड़ि तखन हरलालके लइया मयदानेर रास्ताय घुरिया घुरिया बेड़ाइते लागिल।

तखन श्रान्त हरलाल ताहार तप्त माथा खोला जानलार उपर राखिया चोख बुजिल। एकटु एकटु करिया ताहार समस्त वेदना येन दूर हइया आसिल। शरीर शीतल हइल। मनेर मध्ये एकटि सुगभीर सुनिविड़ आनन्दपूर्ण शान्ति घनाइया आसिते लागिल। एकटा येन परम परित्राण ताहाके चारि दिक हइते आलिङ्गन करिया धरिल। से ये समस्त दिन मने करियाछिल, कोथाओ ताहार कोनो पथ नाइ, सहाय नाइ, निष्कृति नाइ, ताहार अपमानेर शेष नाइ, दुःखेर अवधि नाइ, से कथाटा येन एक मुहूर्तेइ मिथ्या हइया गेल। एखन मने हइल, से तो एकटा भय मात्र, से तो सत्य नय। याहा ताहार जीवनके लोहार मुठिते आँटिया पिषिया धरियाछिल, हरलाल ताहाके आर किछुमात्र स्वीकार करिल ना—मुक्ति अनन्त आकाश पूर्ण करिया आछे, शान्तिर कोथाओ सीमा नाइ। एइ अति सामान्य हरलालके वेदनार मध्ये, अपमानेर मध्ये, अन्यायेर मध्ये, बन्दी करिया राखिते पारे एमन शक्ति विश्वब्रह्माण्डेर कोनो राजा-महाराजारओ नाइ।

बहिते पारे ना—नहीं ढो पा रहा था। **भाड़ाटे**—किराये की। **डाकिल**—बुलाया।

आगाम—पेशगी। **टाका**—रुपया।

जानलार उपर—खिड़की पर। **चोख बुजिल**—आँखें मूंद लीं। **घनाइया आसिते लागिल**—सघन होने लगी। **निष्कृति**—निस्तार। **लोहार......धरियाछिल**—लोहे की मुट्ठी में भींच कर पीसे दे रहा था।

ये आतङ्के से आपनाके आपनि बाँधियाछिल ताहा समस्त खुलिया गेल। तखन हरलाल आपनार बन्धनमुक्त हृदयेर चारि दिके अनन्त आकाशेर मध्ये अनुभव करिते लागिल, येन ताहार सेइ दरिद्र मा देखिते देखिते बाड़िते बाड़िते विराटरूपे समस्त अन्धकार जुड़िया बसितेछेन। ताँहाके कोथाओ धरितेछे ना। कलिकातार रास्ताघाट बाड़िघर दोकानबाजार एकटु एकटु करिया ताँहार मध्ये आच्छन्न हइया याइतेछे—बातास भरिया गेल, आकाश भरिया उठिल, एकटि एकटि करिया नक्षत्र ताँहार मध्ये मिलाइया गेल—हरलालेर शरीर-मनेर समस्त वेदना, समस्त भावना, समस्त चेतना ताँहार मध्ये अल्प अल्प करिया निःशेष हइया गेल—ऐ गेल, तप्त बाष्पेर बुद्बुद् एकेबारे फाटिया गेल—एखन आर अन्धकारओ नाइ, आलोकओ नाइ, रहिल केवल एकटि प्रगाढ़ परिपूर्णता।

गिर्जार घड़िते एकटा बाजिल। गाड़ोयान अन्धकार मयदानेर मध्ये गाड़ि लइया घुरिते घुरिते अवशेषे विरक्त हइया कहिल, "बाबु, घोड़ा तो आर चलिते पारे ना—कोथाय याइते हइबे बलो।"

कोनो उत्तर पाइल ना। कोचबाक्स हइते नामिया हरलालके नाड़ा दिया आबार जिज्ञासा करिल। उत्तर नाइ। तखन भय पाइया गाड़ोयान परीक्षा करिया देखिल, हरलालेर शरीर आड़ष्ट, ताहार निश्वास बहितेछे ना।

'कोथाय याइते हइबे' हरलालेर काछ हइते एइ प्रश्नेर आर उत्तर पाओया गेल ना।

जून-अगस्त, १९०७ ई०।

बाड़िते—बढ़ते। जुड़िया बसितेछेन—आच्छादित किए ले रही है। ताँहाके......धरितेछे ना—वे कहीं भेंट नहीं पा रहीं। मिलाइया गेल—विलीन हो गये। भावना—चिन्ता।

घुरिते घुरिते—घूमते-घूमते।

नामिया—उतर कर। नाड़ा दिया—हिला कर। आड़ष्ट—जड़। बहितेछे ना—चल नहीं रहा था।

गुप्तधन

अमावस्यार निशीथरात्रि। मत्युञ्जय तान्त्रिक मते ताहादेर बहुकालेर गृहदेवता जयकालीर पूजाय बसियाछे। पूजा समाधा करिया यखन उठिल, तखन निकटस्थ आमबागान हइते प्रत्यूषेर प्रथम काक डाकिल।

मृत्युञ्जय पश्चाते फिरिया चाहिया देखिल, मन्दिरेर द्वार रुद्ध रहियाछे। तखन से एकबार देवीर चरणतले मस्तक ठेकाइया ताँहार आसन सराइया दिल। सेइ आसनेर निचे हइते एकटि काँठाल-काठेर बाक्स वाहिर हइल। पैताय चाबि बाँधा छिल। सेइ चाबि लागाइया मृत्युञ्जय बाक्सटि खुलिल। खुलिबामात्रइ चमकिया उठिया माथाय कराघात करिल।

मृत्युञ्जयेर अन्दरेर बागान प्राचीर दिया घेरा। सेइ बागानेर एक प्रान्ते बड़ो बड़ो गाछेर छायार अन्धकारे एइ छोटो मन्दिरटि। मन्दिरे जयकालीर मूर्ति छाड़ा आर-किछुइ नाइ; ताहार प्रवेशद्वार एकटिमात्र। मृत्युञ्जय बाक्सटि लइया अनेक-क्षण नाड़ाचाड़ा करिया देखिल। मृत्युञ्जय बाक्सटि खुलिबार पूर्वे ताहा बन्धइ छिल—केह ताहा भाङे नाइ। मृत्युञ्जय दशबार करिया प्रतिमार चारि दिके घुरिया हातड़ाइया देखिल—किछुइ पाइल ना। पागलेर मतो हइया मन्दिरेर द्वार खुलिया फेलिल—तखन भोरेर आलो फुटितेछे। मन्दिरेर चारि दिके मृत्युञ्जय घुरिया घुरिया वृथा आश्वासे खुँजिया बेड़ाइते लागिल।

मते—विधि के अनुसार। **बसियाछे**—बैठा है। **समाधा करिया**—समाप्त करके। **हइते**—से। **डाकिल**—बोला। **ठेकाइया ताँहार**—टिका कर उनका। **सराइया दिल**—सरका दिया। **काँठाल**—कटहल। **पैताय**—यज्ञोपवीत में। **खुलिबामात्रइ.....उठिया**—खोलते ही चौक कर।

दिया घेरा—से घिरा हुआ। **गाछेर**—वृक्षों के। **छाड़ा**—अतिरिक्त। **नाड़ाचाड़ा करिया**—हिला-डुला कर। **भाङे**—तोड़ा। **घुरिया हातड़ाइया देखिल**—घूम कर और हाथों से टटोल कर देखा। **बेड़ाइते लागिल**—भटकने लगा।

सकालबेलाकार आलोक यखन परिस्फुट हइया उठिल, तखन से वाहिरेर चण्डीमण्डपे आसिया माथाय हात दिया वसिया भाविते लागिल। समस्त रात्रि अनिद्रार पर क्लांतशरीरे एकटु तन्द्रा आसियाछे, एमन समये हठात् चमकिया उठिया शुनिल, "जय होक, वावा।"

सम्मुखे प्राङ्गणे एक जटाजूटधारी सन्न्यासी। मृत्युञ्जय भक्तिभरे ताँहाके प्रणाम करिल। सन्न्यासी ताहार माथाय हात दिया आशीर्वाद करिया कहिलेन, "वावा, तुमि मनेर मध्ये वृथा शोक करितेछ।"

शुनिया मृत्युञ्जय आश्चर्य हइया उठिल; कहिल, "आपनि अन्तर्यामी, नहिले आमार शोक कैमन करिया वुझिलेन। आमि तो काहाकेओ किछु वलि नाइ।"

सन्न्यासी कहिलेन, "वत्स, आमि वलितेछि, तोमार याहा हाराइयाछे सेजन्य तुमि आनन्द करो, शोक करियो ना।"

मृत्युञ्जय ताँहार दुइ पा जड़ाइया धरिया कहिल, "आपनि तवे तो समस्तइ जानियाछेन—केमन करिया हाराइयाछे, कोथाय गेले फिरिया पाइव, ताहा ना वलिले आमि आपनार चरण छाड़िव ना।"

सन्न्यासी कहिलेन, "आमि यदि तोमार अमङ्गल कामना करिताम तवे वलिताम। किन्तु, भगवती दया करिया याहा हरण करियाछेन सेजन्य शोक करियो ना।"

मृत्युञ्जय सन्न्यासीके प्रसन्न करिवार जन्य समस्त दिन विविध उपचारे ताँहार सेवा करिल। परदिन प्रत्युषे निजेर

माथाय हात दिया—सिर पर हाथ रख कर।
नहिले—अन्यथा। केमन करिया—क्यों कर।
हाराइयाछे—खो गया है।
जड़ाइया धरिया—पकड़ कर।
कोथाय गेले......पाइव—कहाँ जाने पर वापिस पाऊँगा।
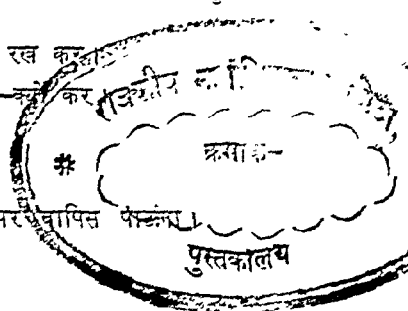
गोहाल हइते लोटा भरिया सफेन दुग्ध दुहिया लइया आसिया देखिल, सन्न्यासी नाइ।

२

मृत्युञ्जय यखन शिशु छिल, यखन ताहार पितामह हरिहर एकदिन एइ चण्डीमण्डपे वसिया तामाक खाइतेछिल, तखन एमनि करियाइ एकटि सन्न्यासी 'जय होक वावा' वलिया एइ प्राङ्गणे आसिया दाँड़ाइयाछिलेन। हरिहर सेइ सन्न्यासीके कयेकदिन वाड़िते राखिया विधिमतो सेवार द्वारा सन्तुष्ट करिल।

विदायकाले सन्न्यासी यखन जिज्ञासा करिलेन, "वत्स, तुमि की चाओ", हरिहर कहिल, "वावा, यदि सन्तुष्ट हइया थाकेन तवे आमार अवस्थाटा एकवार शुनुन। एक काले एइ ग्रामे आमरा सकलेर चेये वर्धिष्णु छिलाम। आमार प्रपितामह दूर हइते कुलीन आनाइया ताँहार एक कन्यार विवाह दियाछिलेन। ताँहार सेइ दौहित्रवंश आमादिगकेइ फाँकि दिया आजकाल एइ ग्रामे वड़ोलोक हइया उठियाछे। आमादेर एखन अवस्था भालो नय, काजेइ इहादेर अहंकार सह्य करिया थाकि। किन्तु, आर सह्य हय ना। की करिले आवार आमादेर वंश वड़ो हइया उठिवे सेइ उपाय वलिया दिन, सेइ आशीर्वाद करुन।"

सन्न्यासी ईषत् हासिया कहिलेन, "वावा, छोटो हइया सुखे थाको। वड़ो हइवार चेष्टाय श्रेय देखि ना।"

किन्तु, हरिहर तवु छाड़िल ना, वंशके वड़ो करिवार जन्य से समस्त स्वीकार करिते राजि आछे।

गोहाल हइते—गोठ से।

एमनि करियाइ—इसी प्रकार। आसिया दाँड़ाइयाछिलेन—आ खड़े हुए थे। वाड़िते—घर पर।

की चाओ—क्या चाहते हो। शुनुन—सुनिए। चेये—अपेक्षा आनाइया—उच्च वंश में उत्पन्न व्यक्ति को ला कर। आमादिगकेइ—हमही लोगों को। फाँकि दिया—धोखा दे कर। काजेइ—अतएव।

तखन सन्न्यासी ताँहार झुलि हइते कापड़े-मोड़ा एकटि तुलट कागजेर लिखन वाहिर करिलेन। कागजखानि दीर्घ, कोष्ठिपत्रेर मतो गुटानो। सन्न्यासी सेटि मेजेर उपरे खुलिया धरिलेन। हरिहर देखिल, ताहाते नानाप्रकार चक्रे नाना सांकेतिक चिह्न आँका, आर, सकलेर निम्ने एकटि प्रकाण्ड छड़ा लेखा आछे ताहार आरम्भटा एइरूप—

पाये धरे साधा।
रा नाहि देय राधा॥
शेषे दिल रा,
पागोल छाड़ो पा॥
तेँतुल वटेर कोले
दक्षिणे याओ चले॥
ईशानकोणे ईशानी,
कहे दिलाम निशानी। इत्यादि।

हरिहर कहिल, "वावा, किछुइ तो वुझिलाम ना।"

सन्न्यासी कहिलेन, "काछे राखिया दाओ, देवीर पूजा करो। ताँहार प्रसादे तोमार वंशे केह ना केह एइ लिखन वुझिते पारिवे। तखन से एमन ऐश्वर्य पाइवे जगते याहार तुलना नाइ।"

हरिहर मिनति करिया कहिल, "वावा कि वुझाइया दिवेन ना।"

सन्न्यासी कहिलेन, "ना। साधना द्वारा वुझिते हइवे।"

एमन समय हरिहरेर छोटो भाइ शंकर आसिया उपस्थित हइल। ताहाके देखिया हरिहर ताड़ाताड़ि लिखनटि लुकाइवार

कापड़े मोड़ा—कपड़े में लिपटा हुआ। तुलट—रूई से वना हुआ। लिखन—लेख। कोष्ठिपत्रेर मतो गुटानो—जन्मपत्री की भाँति लिपटा हुआ। मेजेर उपरे—फर्श पर। छड़ा—ग्रामीण पद्य (कविता) विशेष।
तेँतुल—इमली। कोले—गोद में।
वुझिलाम ना—नहीं समझा।
काछे—(अपने) पास।
मिनति—विनती। वुझाइया दिवेन ना—समझा नहीं देंगे।
ताड़ाताड़ि—जल्दी से। लुकाइवार—छिपाने की।

चेष्टा करिल। सन्न्यासी हासिया कहिलेन, "बड़ो हइबार पथेर दुःख एखन हइतेइ शुरू हइल। किन्तु गोपन करिबार दरकार नाइ। कारण, इहार रहस्य केवल एकजनमात्रइ भेद करिते पारिबे, हाजार चेष्टा करिलेओ आर-केह ताहा पारिबे ना। तोमादेर मध्ये सेइ लोकटि ये के, ताहा केह जाने ना। अतएव इहा सकलेर सम्मुखेइ निर्भये खुलिया राखिते पार।"

सन्न्यासी चलिया गेलेन। किन्तु, हरिहर ए कागजटि लुकाइया ना राखिया थाकिते पारिल ना। पाछे आर-केह इहा हइते लाभवान हय, पाछे ताहार छोटो भाइ शंकर इहार फलभोग करिते पारे, एइ आशङ्काय हरिहर एइ कागजटि एकटि काँठालकाठेर बाक्से बन्ध करिया ताहादेर गृहदेवता जयकालीर आसनतले लुकाइया राखिल। प्रत्येक अमावस्यार निशीथरात्रे देवीर पूजा सारिया से एकबार करिया सेइ कागजटि खुलिया देखित, यदि देवी प्रसन्न हइया ताहाके अर्थ बुझिबार शक्ति देन।

शंकर किछुदिन हइते हरिहरके मिनति करिते लागिल, "दादा, आमाके सेइ कागजटा एकबार भालो करिया देखिते दाओ-ना।"

हरिहर कहिल, "दुर पागल! से कागज कि आछे। बेटा भण्ड सन्न्यासी कागजे कतकगुला हिजिबिजि काटिया आमाके फाँकि दिया गेल—आमि से पुड़ाइया फेलियाछि।"

शंकर चुप करिया रहिल। हठात् एकदिन शंकरके घरे देखिते पाओया गेल ना। ताहार पर हइते से निरुद्देश।

हरिहरेर अन्य समस्त काजकर्म नष्ट हइल—गुप्त ऐश्वर्येर ध्यान एकमुहूर्त से छाड़िते पारिल ना।

भेद करिते पारिबे—उद्घाटित कर सकेगा।

थाकिते पारिल ना—रह न सका। **पाछे**—ऐसा न हो कि। **काँठालकाठेर**—कटहल की लकड़ी के। **सारिया**—समाप्त करके।

भण्ड—धूर्त। **हिजिबिजि काटिया**—कील-काँटे (निरर्थक) बना कर। **पुड़ाइया फेलियाछि**—जला दिया है।

निरुद्देश—लापता।

मृत्युकाल उपस्थित हइले से ताहार वड़ो छेले श्यामापदके एइ सन्न्यासीदत्त कागजखानि दिया गेल।

एइ कागज पाइया श्यामापद चाकरि छाड़िया दिल। जय-कालीर पूजाय आर एकान्तमने एइ लिखनपाठेर चर्चाय ताहार जीवनटा ये कोन् दिक दिया काटिया गेल ताहा वुझिते पारिल ना।

मृत्युञ्जय श्यामापदर वड़ो छेले। पितार मृत्युर परे से एइ सन्न्यासीदत्त गुप्तलिखनेर अधिकारी हइयाछे। ताहार अवस्था उत्तरोत्तर यतइ हीन हइया आसिते लागिल, ततइ अधिकतर आग्रहेर सहित ऐ कागजखानिर प्रति ताहार समस्त चित्त निविष्ट हइल। एमन समय गत अमावस्यारात्रे पूजार पर लिखनखानि आर देखिते पाइल ना। सन्न्यासीओ कोथाय अन्तर्धान करिल।

मृत्युञ्जय कहिल, 'एइ सन्न्यासीके छाड़ा हइवे ना। समस्त सन्धान इहार काछ हइतेइ मिलिवे।'

एइ वलिया से घर छाड़िया सन्न्यासीके खुँजिते वाहिर हइल। एक वत्सर पथे पथे काटिया गेल।

३

ग्रामेर नाम धारागोल। सेखाने मृत्युञ्जय मुदिर दोकाने वसिया तामाक खाइतेछिल आर अन्यमनस्क हइया नाना कथा भावितेछिल। किछु दूरे माठेर धार दिया एकजन सन्न्यासी चलिया गेल। प्रथमटा मृत्युञ्जयेर मनोयोग आकृष्ट हइल ना। एकटु परे हठात् ताहार मने हइल, ये लोकटा चलिया गेल एइ तो सेइ सन्न्यासी! ताड़ाताड़ि हुँकाटा राखिया मुदिके सचकित

वुझिते पारिल ना—समझ नहीं सका।

छेले—लड़का। यतइ—जितनी ही। ततइ—उतना ही।

छाड़ा हइवे ना—छोड़ना नहीं होगा। इहार काछ हइतेइ—इसी (के पास) से।

मुदिर दोकाने—मोदी, परचूनिया की दूकान पर। **भावितेछिल**—सोच रहा था। **माठेर धार दिया**—मैदान के किनारे से। **मनोयोग**—ध्यान। **ताड़ाताड़ि हुँकाटा**—जल्दी से हुक्का।

करिया एक दौड़े से दोकान हइते बाहिर हइया गेल। किन्तु, से सन्न्यासीके देखा गेल ना।

तखन सन्ध्या अन्धकार हइया आसियाछे। अपरिचित स्थाने कोथाय ये सन्न्यासीर सन्धान करिते याइबे; ताहा से ठिक करिते पारिल ना। दोकाने फिरिया आसिया मुदिके जिज्ञासा करिल, "ए-ये मस्त वन देखा याइतेछे ओखाने की आछे।"

मुदि कहिल, "एककाले ए वन शहर छिलो, किन्तु अगस्त्य मुनिर शापे ओखानकार राजा प्रजा समस्तइ मड़के मरियाछे। लोके बले, ओखाने अनेक धनरत्न आजओ खुँजिले पाओया याय, किन्तु दिनदुपुरेओ ए वने साहस करिया केह याइते पारे ना। ये गेछे से आर फेरे नाइ।"

मृत्युन्जयेर मन चन्चल हइया उठिल। समस्त रात्रि मुदिर दोकाने मादुरेर उपर पड़िया मशार ज्वालाय सर्वाङ्ग चापड़ाइते लागिल आर ए वनेर कथा, सन्न्यासीर कथा, सेइ हारानो लिखनेर कथा भाबिते थाकिल। बार बार पड़िया सेइ लिखनटि मृत्युन्जयेर प्राय कण्ठस्थ हइया गियाछिल, ताइ एइ अनिद्रावस्थाय केवलइ ताहार माथाय घुरिते लागिल—

पाये धरे साधा।
रा नाहि देय राधा॥
शेषे दिल रा,
पागोल छाड़ो पा॥

माथा गरम हइया उठिल—कोनोमतेइ एइ कटा छत्र

मस्त—प्रकाण्ड, बहुत बड़ा। **ओखाने**—वहाँ।

ओखानकार—वहाँ के। **मड़के**—महामारी में। **दिनदुपुरेओ**—दिन-(दोपहर) दहाड़े भी।

मादुरेर उपर—चटाई पर। **मशार**—मच्छरों के। **ज्वालाय**—उत्पात से। **चापड़ाइते लागिल**—बार-बार चपेटाघात करने लगा। **हारानो**—खोई हुई। **पड़िया**—पढ़ने से। **माथाय घुरिते लागिल**—दिमाग़ में चक्कर काटने लगा।

कोनोमतेइ......छत्र—किसी प्रकार भी ये कतिपय पंक्तियाँ।

से मन हइते दूर करिते पारिल ना। अवशेषे भोरेर वेलाय यखन ताहार तन्द्रा आसिल तखन स्वप्ने एइ चारि छत्रेर अर्थ अति सहजे ताहार निकट प्रकाश हइल। 'रा नाहि देय राधा' अतएव 'राधा'र 'रा' ना थाकिले 'धा' रहिल—'शेषे दिल रा' अतएव हइल 'धारा'—'पागोल छाड़ो पा' 'पागोल'-एर 'पा' छाड़िले 'गोल' बाकि रहिल—अतएव समस्तटा मिलिया हइल 'धारागोल'—ए जायगाटार नाम तो 'धारागोल'इ वटे।

स्वप्न भाङिया मृत्युञ्जय लाफाइया उठिल।

४

समस्त दिन वनेर मध्ये फिरिया सन्ध्यावेलाय बहु कष्टे पथ खुँजिया अनाहारे मृतप्राय अवस्थाय मृत्युञ्जय ग्रामे फिरिल।

परदिन चादरे चिँड़ा बाँधिया पुनर्वार से वनेर मध्ये यात्रा करिल। अपराह्णे एकटा दिघिर धारे आसिया उपस्थित हइल। दिघिर माझखानटा परिष्कार जल, आर पाड़ेर गाये गाये चारि दिके पद्म आर कुमुदेर वन। पाथरे बाँधानो घाट भाङिया-चुरिया पड़ियाछे, सेइखाने जले चिँड़ा भिजाइया खाइया दिघिर चारि दिक प्रदक्षिण करिया देखिते लागिल।

दिघिर पश्चिम पाड़िर प्रान्ते हठात् मृत्युञ्जय थमकिया दाँड़ाइल। देखिल, एकटा तेँतुलगाछके वेष्टन करिया प्रकाण्ड वटगाछ उठियाछे। तत्क्षणात् ताहार मने पड़िल—

तेँतुल वटेर कोले
दक्षिणे याओ चले॥

वटे—है।

भाङिया—टूट जाने पर। लाफाइया उठिल—उछल पड़ा।

चिँड़ा—चिउड़ा या चिड़वा। दिघिर धारे—बड़े तालाव के किनारे। माझखानटा—बीच में। पाड़ेर गाये गाये—किनारे से लगे हुए। बाँधानो—निर्मित। भाङिया-चुरिया—टूटा-फूटा।

थमकिया दाँड़ाइल—हठात् चौंक कर खड़ा हो गया। तेँतुलगाछके—इमली के वृक्ष को।

कोले—गोद में।

दक्षिणे किछु दूर याइतेइ घन जङ्गलेर मध्ये आसिया पड़िल। सेखाने से बेतझाड़ भेद करिया चला एकेबारे असाध्य। याहा-हउक, मृत्युञ्जय ठिक करिल, एइ गाछटाके कोनोमते हाराइले चलिबे ना।

एइ गाछेर काछे फिरिया आसिबार समय गाछेर अन्तराल दिया अनतिदूरे एकटा मन्दिरेर चूड़ा देखा गेल। सेइ दिकेर प्रति लक्ष करिया मृत्युञ्जय एक भाङा मन्दिरेर काछे आसिया उपस्थित हइल। देखिल, निकटे एकटा चुलि, पोड़ा काठ आर छाइ पड़िया आछे। अति सावधाने मृत्युञ्जय भग्नद्वार मन्दिरेर मध्ये उँकि मारिल। सेखाने कोनो लोक नाइ, प्रतिमा नाइ, केवल एकटि कम्बल कमण्डलु आर गेरुया उत्तरीय पड़िया आछे।

तखन सन्ध्या आसन्न हइया आसियाछे; ग्राम बहु दूरे, अन्धकारे वनेर मध्ये पथ सन्धान करिया याइते पारिबे कि ना, ताइ एइ मन्दिरे मनुष्यबसतिर लक्षण देखिया मृत्युञ्जय खुशि हइल। मन्दिर हइते एकटि बृहत् प्रस्तरखण्ड भाङिया द्वारेर काछे पड़िया छिल; सेइ पाथरेर उपरे बसिया नतशिरे भाबिते भाबिते मृत्युञ्जय हठात् पाथरेर गाये कीयेन लेखा देखिते पाइल। झुंकिया पड़िया देखिल एकटि चक्र आँका, ताहार मध्ये कतक स्पष्ट कतक लुप्तप्राय-भावे निम्नलिखित सांकेतिक अक्षर लेखा आछे—

बेतझाड़—बेत की झाड़ियाँ। याहाहउक—जो हो। हाराइले—खो देने, भूल जाने से।

दिया—से। चुलि—चूल्हा। पोड़ा काठ—जली हुई लकड़ियाँ। छाइ—राख। उँकि मारिल—झाँक कर देखा।

भाबिते भाबिते—सोचते-सोचते। पाथरेर गाये—पत्थर (के शरीर) पर।

एइ चक्रटि मृत्युञ्जयेर सुपरिचित। कत अमावस्याराते पूजागृहे सुगन्ध धूपेर धूमे घृतदीपालोके तुलट कागजे अङ्कित एइ चक्रचिह्नेर उपरे झुँकिया पड़िया रहस्य भेद करिबार जन्य एकाग्रमने से देवीर प्रसाद याच्ञा करियाछे। आज अभीष्ट-सिद्धिर अत्यन्त सन्निकटे आसिया ताहार सर्वाङ्ग येन काँपिते लागिल। पाछे तीरे आसिया तरी डोबे, पाछे सामान्य एकटा भुले ताहार समस्त नष्ट हइया याय, पाछे सेइ सन्न्यासी पूर्वे आसिया समस्त उद्धार करिया लइया गिया थाके, एइ आशङ्काय ताहार बुकेर मध्ये तोलपाड़ करिते लागिल। एखन ये ताहार की कर्तव्य ताहा से भाविया पाइल ना। ताहार मने हइल, से हयतो ताहार ऐश्वर्यभाण्डारेर ठिक उपरेइ बसिया आछे, अथच किछुइ जानिते पारितेछे ना।

बसिया बसिया से कालीनाम जप करिते लागिल; सन्ध्यार अन्धकार निविड़ हइया आसिल; झिल्लिर ध्वनिते वनभूमि मुखर हइया उठिल।

५

एमन समय किछुदूरे घन वनेर मध्ये अग्निर दीप्ति देखा गेल। मृत्युञ्जय ताहार प्रस्तरासन छाड़िया उठिया पड़िल, आर सेइ शिखा लक्ष्य करिया चलिते लागिल।

बहु कष्टे किछुदूर गिया एकटा अश्वत्थ गाछेर गुँड़िर अन्तराल हइते स्पष्ट देखिते पाइल, ताहार सेइ परिचित सन्न्यासी अग्निर आलोके सेइ तुलटेर लिखन मेलिया एकटा काठि दिया छाइयेर उपरे एकमने अङ्क कषितेछे।

तुलट—रुई से बने हुए। याच्ञा—याचना। पाछे—ऐसा न हो कि। तरी डोबे—नौका डूबे। बुकेर मध्ये......लागिल—मन में धुकड़-पुकड़ होने लगी।

अश्वत्थ गाछेर गुँड़िर—पीपल के वृक्ष के तने के। मेलिया—फैला कर, खोल कर। काठि दिया—तीली या सींक से। छाइयेर उपरे—राख पर। अङ्क कषितेछे—गणना कर रहा है।

मृत्युञ्जयेर घरेर से पैतृक तुलटेर लिखन! आरे भण्ड, चोर! एइजन्यइ से मृत्युञ्जयके शोक करिते निषेध करियाछिल बटे!

सन्न्यासी एकबार करिया अंक कपितेछे, आर, एकटा माप-काठि लइया जमि मापितेछे—कियद्दूर मापिया हताश हइया घाड़ नाड़िया पुनर्बार आसिया अङ्क कषिते प्रवृत्त हइतेछे।

एमनि करिया रात्रि यखन अवसानप्राय, यखन निशान्तेर शीतवायुते वनस्पतिर अग्रशाखार पल्लवगुलि मर्मरित हइया उठिल, तखन सन्न्यासी सेइ लिखनपत्र गुटाइया लइया चलिया गेल।

मृत्युञ्जय की करिबे भाबिया पाइल ना। इहा से निश्चय बुझिते पारिल ये, सन्न्यासीर साहाय्य व्यतीत एइ लिखनेर रहस्य भेद करा ताहार साध्य हइबे ना। लुब्ध सन्न्यासी ये मृत्युञ्जयके साहाय्य करिबे ना, ताहाओ निश्चित। अतएव गोपेने सन्न्यासीर प्रति दृष्टि राखा छाड़ा अन्य उपाय नाइ। किन्तु, दिनेर वेलाय ग्रामे ना गेले ताहार आहार मिलिबे ना, अतएव अन्तत काल सकाले एकबार ग्रामे याओया आवश्यक।

भोरेर दिके अन्धकार एकटु फिका हइबामात्र से गाछ हइते नामिया पड़िल। येखाने सन्न्यासी छाइयेर मध्ये आँक कषितेछिल सेखाने भालो करिया देखिल, किछुइ बुझिल ना। चतुर्दिक घुरिया देखिल, अन्य वनखण्डेर सङ्गे कोनो प्रभेद नाइ।

वनतलेर अन्धकार क्रमे यखन क्षीण हइया आसिल तखन मृत्युञ्जय अति सावधाने चारि दिक देखिते देखिते ग्रामेर उद्देशे चलिल। ताहार भय छिल पाछे सन्न्यासी ताहाके देखिते पाय।

भण्ड—धूर्त।
मापकाठि—पैमाना।
गुटाइया लइया—लपेट कर।
भाबिया पाइल ना—सोच न सका। **बुझिते पारिल**—समझ गया। **व्यतीत**—के बिना। **अन्तत**—कम से कम। **हइबामात्र......पड़िल**—होते ही वह वृक्ष से उतर पड़ा। **छाइयेर मध्ये**—राख में। **घुरिया**—घूम कर।
उद्देशे—की ओर।

ये दोकाने मृत्युञ्जय आश्रय ग्रहण करियाछिल ताहार निकटे एकटि कायस्थगृहिणी व्रत-उद्यापन करिया सेदिन ब्राह्मणभोजन कराइते प्रवृत्त छिल। सेइखाने आज मृत्युञ्जयेर आहार जुटिया गेल। कयदिन आहारेर कष्टेर पर आज ताहार भोजनटि गुरुतर हइया उठिल। सेइ गुरुभोजनेर पर येमन तामाकटि खाइया दोकानेर मादुरटिते एकवार गड़ाइया लइवार इच्छा करिल अमनि गत रात्रिर अनिद्राकातर मृत्युञ्जय घुमे आच्छन्न हइया पड़िल।

मृत्युञ्जय स्थिर करियाछिल, आज सकाल-सकाल आहारादि करिया यथेष्ट वेला थाकिते वाहिर हइवे। ठिक ताहार उल्टा हइल। यखन ताहार निद्राभङ्ग हइल तखन सूर्य अस्त गियाछे। तवु मृत्युञ्जय दमिल ना। अन्धकारेइ वनेर मध्ये से प्रवेश करिल।

देखिते देखिते रात्रि घनीभूत हइया आसिल। गाछेर छायार मध्ये दृष्टि आर चले ना, जङ्गलेर मध्ये पथ अवरुद्ध हइया याय। मृत्युञ्जय ये कोन् दिके कोथाय याइतेछे ताहा किछुइ ठाहर पाइल ना। रात्रि यखन अवसान हइल तखन देखिल समस्त रात्रि से वनेर प्रान्ते एकइ जायगाय घुरिया घुरिया वेड़ाइयाछे।

काकेर दल का-का शव्दे ग्रामेर दिके उड़िल। एइ शव्द मृत्युञ्जयेर काने व्यङ्गपूर्ण धिक्कारवाक्येर मतो शुनाइल।

६

गणनाय वारम्वार भुल आर सेइ भुल संशोधन करिते करिते

व्रत-उद्यापन—व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य। मादुरटिते—चटाई पर। गड़ाइया लइवार—लेट लेने की। घुमे—नींद से। सकाल सकाल—अविलम्ब। दमिल ना—निरुत्साहित नहीं हुआ।

ठाहर पाइल ना—निर्णय न कर सका। घुरिया......वेड़ाइयाछे—चक्कर काटता रहा है।

दिके—की ओर।

अवशेषे सन्न्यासी सुरङ्गेर पथ आविष्कार करियाछेन। सुरङ्गेर मध्ये मशाल लइया तिनि प्रवेश करिलेन। बाँधानो भित्तिर गाये स्याँत्ला पड़ियाछे—माझे-माझे एक-एक जायगाय जल चुँइया पड़ितेछे। स्थाने स्थाने कतकगुला भेक गाये गाये स्तूपाकार हइया निद्रा दितेछे। एइ पिछल पथ दिया किछुदूर याइतेइ सन्न्यासी देखिलेन, सम्मुखे देयाल उठियाछे, पथ अवरुद्ध। किछुइ बुझिते पारिलेन ना। देयालेर सर्वत्र लौहदण्ड दिया सबले आघात करिया देखिलेन, कोथाओ फाँका आओयाज दितेछे ना, कोथाओ रन्ध्र नाइ, एइ पथटार ये एइखानेइ शेष ताहा निःसन्देह।

आबार सेइ कागज खुलिया, माथाय हात दिया बसिया भाबिते लागिलेन। से रात्रि एमनि करिया काटिया गेल।

परदिन पुनर्बार गणना सारिया सुरङ्गे प्रवेश करिलेन। सेदिन गुप्तसङ्केत अनुसरणपूर्वक एकटि विशेष स्थान हइते पाथर खसाइया एक शाखापथ आविष्कार करिलेन। सेइ पथे चलिते चलिते आबार एक जायगाय पथ अवरुद्ध हइया गेल।

अवशेषे पञ्चम रात्रे सुरङ्गेर मध्ये प्रवेश करिया सन्न्यासी बलिया उठिलेन, "आज आमि पथ पाइयाछि, आज आर आमार कोनोमतेइ भुल हइबे ना।"

पथ अत्यन्त जटिल; ताहार शाखाप्रशाखार अन्त नाइ—कोथाओ एत संकीर्ण ये गुँड़ि मारिया याइते हय। बहुयत्ने मशाल धरिया चलिते चलिते सन्न्यासी एकटा गोलाकार घरेर मतो जायगाय आसिया पौँछिलेन। सेइ घरेर माझखाने एकटा

बाँधानो......पड़ियाछे—पक्की दीवार पर सीलन पड़ गई है। **भेक...... गाये**—मेंढ़क एक दूसरे के ऊपर। **पिछल**—रपटीले। **देयाल**—दीवार। **फाँका**—पोलेपन की।

सारिया—समाप्त कर। **हइते**—से।

गुँड़ि मारिया—कुण्डली मार कर, देह को सिकोड़ कर। **मतो**—समान। **आसिया पौँछिलेन**—आ पहुँचे। **माझखाने**—बीच में।

वृहत् इँदारा। मशालेर आलोके सन्न्यासी ताहार तल देखिते पाइलेन ना। घरेर छाद हइते एकटा मोटा प्रकाण्ड लौहशृङ्खल इँदारार मध्ये नामिया गेछे। सन्न्यासी प्राणपण वले ठेलिया एइ शृंङ्खलटाके अल्प एकटुखानि नाड़ाइबामात्र ठं करिया एकटा शव्द इँदारार गह्वर हइते उत्थित हइया घरमय प्रतिध्वनित हइते लागिल। सन्न्यासी उच्चैःस्वरे वलिया उठिलेन "पाइयाछि।"

येमन वला अमनि सेइ घरेर भाङा भित्ति हइते एकटा पाथर गड़ाइया पड़िल, आर सेइ सङ्गे आर-एकटि की सचेतन पदार्थ धप करिया पड़िया चीत्कार करिया उठिल। सन्न्यासी एइ अकस्मात् शव्दे चमकिया उठितेइ ताँहार हात हइते मशाल पड़िया निविया गेल।

७

सन्न्यासी जिज्ञासा करिलेन, "तुमि के।" कोनो उत्तर पाइलेन ना। तखन अन्धकारे हातड़ाइते गिया ताँहार हाते एकटि मानुषेर देह ठेकिल। ताहाके नाड़ा दिया जिज्ञासा करिलेन, "के तुमि।"

कोनो उत्तर पाइलेन ना। लोकटा अचेतन हइया गेछे।

तखन चकमकि ठुकिया ठुकिया सन्न्यासी अनेक कष्टे मशाल धराइलेन। इतिमध्ये सेइ लोकटाओ संज्ञाप्राप्त हइल, आर उठिवार चेष्टा करिया वेदनाय आर्तनाद करिया उठिल।

सन्न्यासी कहिलेन, "ए की, मृत्युञ्जय ये! तोमार ए मति हइल केन।"

इँदारा—कुआँ, वावड़ी। छाद—छत। नामिया गेछे—झूल गई है। नाड़ाइवामात्र—हिलाते ही। ठं—टन। घरमय—घर-भर में।

येमन—जैसे ही। अमनि—ऐसे ही। गड़ाइया पड़िल—लुढ़क कर गिरा। चमकिया उठितेइ—चौंकते ही। निविया गेल—बुझ गई।

हातड़ाइते गिया—टटोलने पर। ठेकिल—लगी। नाड़ा दिया—हिला कर।

धराइलेन—जलाई।

मृत्युञ्जय कहिल,- "बाबा; माप करो। भगवान आमाके शास्ति दियाछेन। तोमाके पाथर छुंड़िया मारिते गिया सामलाइते पारि नाइ—पिछले पाथरसुद्ध आमि पड़िया गेछि। पा'टा निश्चय भाङिया गेछे।"

सन्न्यासी कहिलेन, "आमाके मारिया तोमाके की लाभ हइत।"

मृत्युञ्जय कहिल, "लाभेर कथा तुमि जिज्ञासा करितेछ! तुमि किसेर लोभे आमार पूजाघर हइते लिखनखानि चुरि करिया एइ सुरङ्गेर मध्ये घुरिया बेड़ाइतेछ। तुमि चोर, तुमि भण्ड! आमार पितामहके ये सन्न्यासी एइ लिखनखानि दियाछिलेन तिनि बलियाछिलेन, आमादेरइ वंशेर केह एइ लिखनेर संकेत बुझिते पारिबे। एइ गुप्त ऐश्वर्य आमादेरइ वंशेर प्राप्य। ताइ आमि ए कयदिन ना-खाइया ना-घुमाइया छायार मतो तोमार पश्चाते फिरियाछि। आज यखन तुमि बलिया उठिले 'पाइयाछि' तखन आमि आर थाकिते पारिलाम ना। आमि तोमार पश्चाते आसिया ऐ गर्तटार भितरे लुकाइया बसिया छिलाम। ओखान हइते एकटा पाथर खसाइया तोमाके मारिते गेलाम किन्तु शरीर दुर्बल, जायगाटाओ अत्यन्त पिछल—ताइ पड़िया गेछि—एखन तुमि आमाके मारिया फेलो सेओ भालो—आमि यक्ष हइया एइ धन आगलाइब—किन्तु तुमि इहा लइते पारिबे ना—कोनोमतेइ ना। यदि लइते चेष्टा कर, आमि ब्राह्मण, तोमाके अभिशाप दिया एइ कूपेर मध्ये झाँप दिया पड़िया आत्महत्या करिब। ए धन तोमार ब्रह्मरक्त गोरक्त-तुल्य हइबे—ए धन तुमि कोनोदिन सुखे भोग करिते पारिबे ना।

छुंड़िया मारिते गिया—फेंक कर मारते हुए। **सामलाइते**—सँभल। **पिछले**—फिसल कर। **पाथरसुद्ध**—पत्थर समेत। **पा'टा**—पाँव।

घुरिया बेड़ाइतेछ—भटकते फिर रहे हो। **केह**—कोई। **ताइ**—इसीसे। **ना घुमाइया**—बिना सोये। **थाकिते पारिलाम ना**—रह न सका। **ओखान हइते**—वहाँ से। **आगलाइब**—रक्षा करूँगा। **कोनोमतेइ**—किसी तरह भी। **झाँप दिया**—छलाँग मार कर।

आमादेर पिता-पितामह एइ धनेर उपरे समस्त मन राखिया मरियाछेन—एइ धनेर ध्यान करिते करिते आमरा दरिद्र हइयाछि—एइ धनेर सन्धाने आमि बाड़िते अनाथा स्त्री ओ शिशुसन्तान फेलिया आहारनिद्रा छाड़िया लक्ष्मीछाड़ा पागलेर मतो माठे घाटे घुरिया बेड़ाइतेछि—ए धन तुमि आमार चोखेर सम्मुखे कखनो लइते पारिबे ना।"

८

सन्न्यासी कहिलेन, "मृत्युञ्जय तबे शोनो। समस्त कथा तोमाके बलि।—तुमि जान, तोमार पितामहेर एक कनिष्ठ सहोदर छिल, तार नाम छिल शंकर।"

मृत्युञ्जय कहिल, "हाँ तिनि निरुद्देश हइया बाहिर हइया गियाछेन।"

सन्न्यासी कहिलेन, "आमि सेइ शंकर।"

मृत्युञ्जय हताश हइया दीर्घनिश्वास फेलिल। एतक्षण एइ गुप्त धनेर उपर ताहार ये एकमात्र दावि से साव्यस्त करिया बसियाछिल, ताहारइ वंशेर आत्मीय आसिया से दावि नष्ट करियादिल।

शंकर कहिलेन, "दादा सन्न्यासीर निकट हइते लिखन पाइया अवधि आमार काछे ताहा विधिमते लुकाइबार चेष्टा करितेछिलेन। किन्तु तिनि यतइ गोपन करिते लागिलेन आमार औत्सुक्य ततइ बाड़िया उठिल। तिनि देवीर आसनेर नीचे बाक्सेर मध्ये ऐ लिखनखानि लुकाइया राखियाछिलेन, आमि ताहार सन्धान पाइलाम, आर द्वितीय चावि बानाइया प्रतिदिन

फेलिया—छोड़ कर। लक्ष्मीछाड़ा—अभागे। माठे—मैदान में।

निरुद्देश—लापता।

दावि—दावा। साव्यस्त—निर्णीत।

लिखन पाइया अवधि—लेख पाते ही, पाने (के क्षण) से ही। यतइ—जितना ही। ततइ—उतना ही।

अल्प अल्प करिया समस्त कागजखाना नकल करिते लागिलाम। ये दिन नकल शेष हइल सेइदिनइ आमि एइ धनेर सन्धाने घर छाड़िया बाहिर हइलाम। आमारओ घरे अनाथा स्त्री एवं एकटि शिशुसन्तान छिल। आज ताहारा केह बाँचिया नाइ।

"कत देश-दशान्तरे भ्रमण करियाछि ताहा विस्तारित वर्णनार प्रयोजन नाइ। सन्न्यासीदत्त एइ लिखन निश्चय कोनो सन्न्यासी आमाके बुझाइया दिते पारिबेन, एइ मने करिया अनेक सन्न्यासीर आमि सेवा करियाछि। अनेक भण्ड सन्न्यासी आमार ऐ कागजेर सन्धान पाइया ताहा हरण करिबारओ चेष्टा करियाछे। एइरूपे कत वत्सरेर पर वत्सर काटियाछे, आमार मने एक मुहूर्तेर जन्यओ सुख छिल ना, शान्ति छिल ना।

"अवशेषे पूर्वजन्मार्जित पुण्येर बले कुमायुन पर्वते बाबा स्वरूपानन्द स्वामीर सङ्ग पाइलाम। तिनि आमाके कहिलेन, 'बाबा, तृष्णा दूर करो, ताहा हइलेइ विश्वव्यापी अक्षय सम्पद आपनि तोमाके धरा दिबे।'

"तिनि आमार मनेर दाह जुड़ाइया दिलेन। ताँहार प्रसादे आकाशेर आलोक आर धरणीर श्यामलता आमार काछे राज-सम्पद हइया उठिल। एकदिन पर्वतेर शिलातले शीतेर सायाह्ने परमहंस-बाबार धुनिते आगुन ज्वलितेछिल—सेइ आगुने आमार कागजखाना समर्पण करिलाम। बाबा ईषत् एकटु हासिलेन। से हासिर अर्थ तखन बुझि नाइ, आज बुझियाछि। तिनि निश्चय मने मने बलियाछिलेन, कागजखाना छाइ करिया फेला सहज, किन्तु वासना एत सहजे भस्मसात् हय ना।

"कागजखानार यखन कोनो चिह्न रहिल ना तखन आमार

बाहिर हइलाम—निकल पड़ा। **केह बाँचिया नाइ**—कोई बचा नहीं।

वर्णनार—वर्णन करने का। **बुझाइया दिते पारिबेन**—समझा देंगे। **भण्ड**—धूर्त।

धरा दिबे—मिल जाएगी।

जुड़ाइया दिलेन—शान्त कर दिया। **सायाह्ने**—साँझ को। **आगुन**—अग्नि। **एकटु**—जरा-सा। **बुझि नाइ**—समझा नहीं। **छाइ**—राख, भस्म।

मनेर चारि दिक हइते एकटा नागपाश-बन्धन येन सम्पूर्णरूपे खुलिया गेल। मुक्तिर अपूर्व आनन्दे आमार चित्त परिपूर्ण हइया उठिल। आमि मने करिलाम, एखन हइते आमार आर-कोनो भय नाइ—आमि जगते किछुइ चाहि ना।

"इहार अनतिकाल परे परमहंस-बाबार सङ्ग हइते च्युत हइलाम। ताँहाके अनेक खुँजिलाम, कोथाओ ताँहार देखा पाइलाम ना।

"आमि तखन सन्न्यासी हइया निरासक्तचित्ते घुरिया वेड़ाइते लागिलाम। अनेक वत्सर काटिया गेल—सेइ लिखनेर कथा प्राय भुलियाइ गेलाम।

"एमन समय एकदिन एइ धारागोलेर वनेर मध्ये प्रवेश करिया एकटि भाङा मन्दिरेर मध्ये आश्रय लइलाम। दुइ-एकदिन थाकिते थाकिते देखिलाम, मंदिरेर भिते स्थाने स्थाने नानाप्रकार चिह्न आँका आछे। एइ चिह्नगुलि आमार पूर्वपरिचित।

"एक काले वहुदिन याहार सन्धाने फिरियाछिलाम ताहार ये नागाल पाओया याइतेछे ताहाते आमार सन्देह रहिल ना। आमि कहिलाम, 'एखाने आर थाका हइवे ना, ए वन छाड़िया चलिलाम।'

"किन्तु छाड़िया याओया घटिल ना। मने हइल, देखाइ याक-ना, की आछे—कौतूहल एकेवारे निवृत्त करिया याओयाइ भालो। चिह्नगुला लइया अनेक आलोचना करिलाम; कोनो फल हइल ना। वारवार मने हइते लागिल, केन से कागजखाना पुड़ाइया फेलिलाम—सेखाना राखिलेइ वा क्षति की छिल।

एखन हइते—अव से।
घुरिया वेड़ाइते लागिलाम—घूमता फिरने लगा।
भाङा—टूटे हुए। थाकिते थाकिते—रहते-रहते। भिते—दीवार पर। आँका आछे—अंकित हैं, वने हुए हैं।
याहार— जिसके। नागाल—सामीप्य, पहुँच। थाका—रहना।
घटिल ना—हुआ नहीं। देखाइ याक ना—देखा ही जाए न। पुड़ाइया फेलिलाम—जला डाला।

"तखन आवार आमार सेइ जन्मग्रामे गेलाम। आमादेर पैतृक भिटार नितान्त दुरवस्था देखिया मने करिलाम, आमि सन्यासी, आमार धनरत्ने कोनो प्रयोजन नाइ, किन्तु एइ गरिबरा तो गृही, सेइ गुप्त सम्पद इहादेर जन्य उद्धार करिया दिले ताहाते दोष नाइ।

"सेइ लिखन कोथाय आछे जानिताम, ताहा संग्रह करा आमार पक्षे किछुमात्र कठिन हइल ना।

"ताहार परे एकटि वत्सर धरिया एइ कागजखाना लइया एइ निर्जन वनेर मध्ये गणना करियाछि आर सन्धान करियाछि। मने आर-कोनो चिन्ता छिल ना। यत वारम्वार बाधा पाइते लागिलाम ततइ उत्तरोत्तर आग्रह आरओ बाड़िया चलिल—उन्मत्तेर मतो अहोरात्र एइ एक अध्यवसाये निविष्ट रहिलाम।

"इतिमध्ये कखन तुमि आमार अनुसरण करितेछ ताहा जानिते पारि नाइ। आमि सहज अवस्थाय थाकिले तुमि कखनोइ निजेके आमार काछे गोपन राखिते पारिते ना; किन्तु आमि तन्मय हइया छिलाम, बाहिरेर घटना आमार दृष्टि आकर्षण करित ना।

"ताहार परे, याहा खुंजितेछिलाम आज एइमात्र ताहा आविष्कार करियाछि। एखाने याहा आछे पृथिवीते कोनो राजराजेश्वरेर भाण्डारेओ एत धन नाइ। आर एकटिमात्र संकेत भेद करिलेइ सेइ धन पाओया याइबे।

"एइ संकेतटिइ सर्वापेक्षा दुरूह। किन्तु एइ संकेतओ

आवार—पुनः। **भिटार**—वास-गृह की। **एइ**—ये। **इहादेर जन्य**—इनके लिए।

संग्रह करा—पाना। **आमार पक्षे**—मेरे लिए।

ताहार परे—उसके बाद। **धरिया**—से। **यत**—जितनी। **ततइ**—उतना ही। **मतो**—समान।

ताहा जानिते पारि नाइ—यह नहीं जान सका। **थाकिले**—रहने या होने पर। **कखनोइ**—कभी भी। **काछे**—निकट, से।

एइमात्र—अभी-अभी।

आमि मने मने भेद करियाछि। सेइजन्यइ 'पाइयाछि' बलिया मनेर उल्लासे चीत्कार करिया उठियाछिलाम। यदि इच्छा करि तबे आर एक दण्डेर मध्ये सेइ स्वर्णमाणिक्येर भाण्डारेर माझखाने गिया दाँड़ाइते पारि।"

मृत्युञ्जय शंकरेर पा जड़ाइया धरिया कहिल, "तुमि सन्न्यासी, तोमार तो धनेर कोनो प्रयोजन नाइ—आमाके सेइ भाण्डारेर मध्ये लइया याओ। आमाके वञ्चित करियो ना।"

शंकर कहिलेन, "आज आमार शेष बन्धन मुक्त हइयाछे। तुमि ऐ ये पाथर फेलिया आमाके मारिबार जन्य उद्यत हइयाछिले ताहार आघात आमार शरीरे लागे नाइ, किन्तु ताहा आमार मोहावरणके भेद करियाछे। तृष्णार करालमूर्ति आज आमि देखिलाम। आमार गुरु परमहंसदेवेर निगूढ़ प्रशान्त हास्य एत दिन परे आमार अन्तरेर कल्याणदीपे अनिर्वाण आलोकशिखा ज्वालाइया तुलिल।"

मृत्युञ्जय शंकरेर पा धरिया पुनराय कातर स्वरे कहिल, "तुमि मुक्त पुरुष, आमि मुक्त नहि, आमि मुक्ति चाहि ना, आमाके एइ ऐश्वर्य हइते वञ्चित करिते पारिबे ना।"

सन्न्यासी कहिलेन, "वत्स, तबे तुमि तोमार एइ लिखनटि लओ। यदि धन खुँजिया लइते पार तबे लइयो।"

एइ बलिया ताँहार यष्टि ओ लिखनपत्र मृत्युञ्जयेर काछे राखिया सन्न्यासी चलिया गेलेन। मृत्युञ्जय कहिल, "आमाके दया करो, आमाके फेलिया याइयो ना—आमाके देखाइया दाओ।"

कोनो उत्तर पाइल ना।

तखन मृत्युञ्जय यष्टिर उपर भर करिया हातड़ाइया सुरङ्ग

सेइजन्यइ—इसीलिए। माझखाने...पारि—(बीच) में पहुँच सकता हूँ।
पा जड़ाइया धरिया—पैर पकड़ कर।
ऐ—वह। अनिर्वाण—न बुझने वाली। ज्वालाइया तुलिल—जला दी।
यष्टि—लाठी। काछे—पास। फेलिया याइयो ना—छोड़ मत जाना।
देखाइया दाओ—दिखा दो।
भर करिया—सहारे। हातड़ाइया—टटोलते हुए।

हइते बाहिर हइबार चेष्टा करिल। किन्तु, पथ अत्यन्त जटिल, गोलकधांधार मतो, बार बार बाधा पाइते लागिल। अवशेषे घुरिया घुरिया क्लान्त हइया एक जायगाय शुइया पड़िल एवं निद्रा आसिते विलम्ब हइल ना।

घुम हइते यखन जागिल तखन रात्रि कि दिन कि कत बेला ताहा जानिबार कोनो उपाय छिल ना। अत्यन्त क्षुधा बोध हइले मृत्युञ्जय चादरेर प्रान्त हइते चिँड़ा खुलिया लइया खाइल। ताहार पर आर-एकबार हातड़ाइया सुरङ्ग हइते बाहिर हइबार पथ खुँजिते लागिल। नाना स्थाने बाधा पाइया बसिया पड़िल। तखन चीत्कार करिया डाकिल, "ओगो सन्न्यासी, तुमि कोथाय।"

ताहार सेइ डाक सुरङ्गेर समस्त शाखा प्रशाखा हइते बारम्बार प्रतिध्वनित हइते लागिल। अनति दूर हइते उत्तर आसिल, "आमि तोमार निकटेइ आछि—की चाओ बलो।"

मृत्युञ्जय कातर स्वरे कहिल, "कोथाय धन आछे आमाके दया करिया देखाइया दाओ।"

तखन आर-कोनो साड़ा पाओया गेल ना। मृत्युञ्जय बारम्बार डाकिल, कोनो साड़ा पाइल ना।

दण्ड प्रहरेर द्वारा अविभक्त एइ भूतलगत निरवच्छिन्न रात्रे मृत्युञ्जय आर-एकबार घुमाइया लइल। घुम हइते आबार सेइ अन्धकारेर मध्ये जागिया उठिल। चीत्कार करिया डाकिल, "ओगो, आछ कि।"

निकट हइतेइ उत्तर पाइल, "एइखानेइ आछि। की चाओ।"

गोलकधांधार मतो—भूलभुलैयां की तरह। घुरिया घुरिया—घूम-घूम कर। शुइया पड़िल—सो गया।

घुम हइते—नींद से। ताहा—यह। डाकिल—पुकारा। ओगो—(सम्बोधनसूचक ध्वनि) हे या अरे।

डाक—पुकार। की चाओ—क्या चाहते हो।

साड़ा—प्रत्युत्तर।

मृत्युञ्जय कहिल, "आमि आर-किछु चाइ ना—आमाके एइ सुरङ्ग हइते उद्धार करिया लइया याओ।"

सन्न्यासी जिज्ञासा करिलेन, "तुमि धन चाओ ना?"

मृत्युञ्जय कहिल, "ना, चाहि ना।"

तखन चक्‌मकि ठोकार शब्द उठिल एवं किछुक्षण परे आलो ज्वलिल।

सन्न्यासी कहिलेन, "तबे एसो मृत्युञ्जय, एइ सुरङ्ग हइते वाहिरे याइ।"

मृत्युञ्जय कातर स्वरे कहिल, "वावा, नितान्तइ कि समस्त व्यर्थ हइवे। एत कष्टेर परेओ धन कि पाइव ना।"

तत्क्षणात् मशाल निविया गेल। मृत्युञ्जय कहिल, "की निष्ठुर!" वलिया सेइखाने वसिया पड़िया भाविते लागिल। समयेर कोनो परिमाण नाइ, अन्धकारेर कोनो अन्त नाइ। मृत्युञ्जयेर इच्छा करिते लागिल, ताहार समस्त शरीर-मनेर वले एइ अन्धकारटाके भाङिया चूर्ण करिया फेले। आलोक आकाश आर विश्वच्छविर वैचित्र्येर जन्य ताहार प्राण व्याकुल हइया उठिल; कहिल, "ओगो सन्न्यासी, ओगो निष्ठुर सन्न्यासी, आमि धन चाइ ना, आमाके उद्धार करो।"

सन्न्यासी कहिलेन, "धन चाओ ना? तबे आमार हात धरो। आमार सङ्गे चलो।"

एवारे आर आलो ज्वलिल ना। एक हाते यष्टि ओ एक हाते सन्न्यासीर उत्तरीय धरिया मृत्युञ्जय धीरे धीरे चलिते लागिल। वहुक्षण धरिया अनेक आँकाबाँका पथ दिया अनेक

एइखानेइ—यहीं।

चकमकि ठोकार—चकमक रगड़ने का।

तबे एसो—तो आओ।

निविया गेल—बुझ गई। सेइखाने—वहीं। भाविते लागिल—सोचने लगा। भाङिया—तोड़ कर।

धरो—पकड़ो।

एवारे—इस वार। आँकावाँका....दिया—टेढ़े-मेढ़े रास्तों से।

घुरिया फिरिया एक जायगाय आसिया सन्न्यासी कहिलेन, "दाँड़ाओ।"

मृत्युञ्जय दाँड़ाइल। ताहार परे एकटा मरिचापड़ा लोहार द्वार खोलार उत्कट शब्द शोना गेल। सन्न्यासी मृत्युञ्जयेर हात धरिया कहिलेन, "एसो।"

मृत्युञ्जय अग्रसर हइया येन एकटा घरे प्रवेश करिल। तखन आबार चक्‌मकि ठोकार शब्द शोना गेल। किछुक्षण परे यखन मशाल ज्वलिया उठिल तखन, ए की आश्चर्य दृश्य! चारि दिके देयालेर गाये मोटा मोटा सोनार पात भूगर्भरुद्ध कठिन सूर्यालोकपुञ्जेर मतो स्तरे स्तरे सज्जित। मृत्युञ्जयेर चोख दुटा ज्वलिते लागिल। से पागलेर मतो बलिया उठिल, "ए सोना आमार—ए आमि कोनोमतेइ फेलिया याइते पारिब ना।"

सन्न्यासी कहिलेन, "आच्छा, फेलिया याइयो ना; एइ मशाल रहिल—आर एइ छातु, चिँड़ा आर बड़ो एक-घटि जल राखिया गेलाम।"

देखिते देखिते सन्न्यासी बाहिर हइया आसिलेन, आर एइ स्वर्णभाण्डारेर लोहद्वारे कपाट पड़िल।

मृत्युञ्जय बारबार करिया एइ स्वर्णपुञ्ज स्पर्श करिया घरमय घुरिया घुरिया बेड़ाइते लागिल। छोटो छोटो स्वर्णखण्ड टानिया मेजेर उपरे फेलिते लागिल, कोलेर उपर तुलिते लागिल, एकटार उपरे आर-एकटा आघात करिया शब्द करिते लागिल, सर्वाङ्गेर उपर बुलाइया ताहार स्पर्श लइते लागिल। अवशेषे श्रान्त हइया सोनार पात बिछाइया ताहार उपर शयन करिया घुमाइया पड़िल।

दाँड़ाओ—ठहरो।

मरिचापड़ा—मोरचा या जंग लगे हुए। **एसो**—आओ।

देयालेर गाये—दीवार से लगे हुए। **कोनोमतेई**—किसी प्रकार भी। **फेलिया**—छोड़ कर।

छातु—सत्तू। **चिँड़ा**—चिउड़ा। **घटि**—लोटा।

घरमय—सारे कमरे में। **टानिया**—निकाल कर। **मेजेर उपरे**—फर्श पर। **कोलेर उपर**—गोद में। **बुलाइया**—फेर कर।

जागिया उठिया देखिल, चारि दिके सोना झक्‌झक् करितेछे। सोना छाड़ा आर-किछुइ नाइ। मृत्युञ्जय भाविते लागिल, पृथिवीर उपरे हयतो एतक्षणे प्रभात हइयाछे, समस्त जीवजन्तु आनन्दे जागिया उठियाछे।—ताहादेर वाड़िते पुकुरेर धारेर वागान हइते प्रभाते ये एकटि स्निग्ध गन्ध उठित ताहाइ कल्पनाय ताहार नासिकाय येन प्रवेश करिते लागिल। से येन स्पष्ट चोखे देखिते पाइल, पातिहाँसगुलि दुलिते दुलिते कलरव करिते करिते सकालवेलाय पुकुरेर जलेर मध्ये आसिया पड़ितेछे, आर वाड़िर झि वामा कोमरे कापड़ जड़ाइया ऊर्ध्वोत्थित दक्षिण हस्तेर उपर एकराशि पितल-काँसार थाला वाटि लइया घाटे आनिया उपस्थित करितेछे।

मृत्युञ्जय द्वारे आघात करिया डाकिते लागिल, "ओगो सन्न्यासीठाकुर, आछ कि।"

द्वार खुलिया गेल। सन्न्यासी कहिलेन, "की चाओ।"

मृत्युञ्जय कहिल, "आमि वाहिरे याइते चाइ—किन्तु सङ्गे एइ सोनार दुटो-एकटा पातओ कि लइया याइते पारिव ना?"

सन्न्यासी ताहार कोनो उत्तर ना दिया नूतन मशाल ज्वालाइलेन—पूर्ण कमण्डलु एकटि राखिलेन, आर उत्तरीय हइते कयेक मुष्टि चिँड़ा मेजेर उपर राखिया वाहिर हइया गेलेन। द्वार वन्ध हइया गेल।

मृत्युञ्जय पातला एकटा सोनार पात लइया ताहा दोमड़ाइया खण्ड खण्ड करिया भाङिया फेलिल। सेइ खण्ड सोना-गुलाके

झक्‌झक्—चमचम। छाड़ा—अतिरिक्त। पुकुरेर धारेर—पोखर के किनारे के। ताहाइ—वही। पाँतिहाँसगुलि—निम्नश्रेणी में गिना जाने वाला हंस (वतख)। दुलिते दुलिते—झूमते-झामते। वाड़िर ... जड़ाइया—घर की महरी (दासी) वामा कमर में कपड़ा (आँचल) खोंस कर। थाला वाटि—थाली, कटोरी।

पातओ—पत्तर भी।

कयेक—कुछ-एक। मेजेर उपर—फर्श पर।

पातला—पतला। दोमड़ाइया—मोड़ कर।

लइया घरेर चारि दिके लोष्ट्रखण्डेर मतो छड़ाइते लागिल। कखनो वा दाँत दिया दंशन करिया सोनार पातेर उपर दाग करिया दिल। कखनो वा एकटा सोनार पात माटिते फेलिया ताहार उपरे वारम्वार पदाघात करिते लागिल। मने मने वलिते लागिल, पृथिवीते एमन सम्राट् कयजन आछे याहारा सोना लइया एमन करिया फेलाछड़ा करिते पारे। मृत्युञ्जयेर येन एकटा प्रलयेर रोख चापिया गेल। ताहार इच्छा करिते लागिल, एइ राशीकृत सोनाके चूर्ण करिया धूलिर मतो से झाँटा दिया झाँट दिया उड़ाइया फेले—आर एइरूपे पृथिवीर समस्त सुवर्णलुब्ध राजा-महाराजाके से अवज्ञा करिते पारे।

एमनि करिया यतक्षण पारिल मृत्युञ्जय सोनागुलाके लइया टानाटानि करिया श्रान्तदेहे घुमाइया पड़िल। घुम हइते उठिया से आवार ताहार चारि दिके सेइ सोनार स्तूप देखिते लागिल। से तखन द्वारे आघात करिया चीत्कार करिया वलिया उठिल, "ओगो सन्न्यासी, आमि ए सोना चाइ ना—सोना चाइ ना!"

किन्तु, द्वार खुलिल ना। डाकिते डाकिते मृत्युञ्जयेर गला भाङिया गेल, किन्तु द्वार खुलिल ना। एक-एकटा सोनार पिण्ड लइया द्वारेर उपर छुँड़िया मारिते लागिल, कोनो फल हइल ना! मृत्युञ्जयेर वुक दमिया गेल—तवे आर कि सन्न्यासी आसिवे ना! एइ स्वर्णकारागारेर मध्ये तिले तिले पले पले शुकाइया मरिते हइवे!

तखन सोनागुलाके देखिया ताहार आतङ्क हइते लागिल। विभीषिकार निःशब्द कठिन हास्येर मतो ए सोनार स्तूप चारि दिके

लोष्ट्रखण्डेर...लागिल—ढेलों की तरह बिखेरने लगा। दिया—से। फेलाछड़ा—फेंकना-बिखेरना। रोख चापिया गेल—ज़िद चढ़ गई। झाँटा दिया—झाड़ू से। झाँट दिया—झाड़ कर।

पारिल—कर सका। टानाटानि—खींच-तान, फेंक-फाँक। आवार—फिर। गला भाङिया गेल—गला बैठ गया। छुँड़िया—फेंक कर। वुक दमिया गेल—छाती धड़कने लगी। शुकाइया—सूख कर।

मतो—समान।

स्थिर हइया रहियाछे—ताहार मध्ये स्पन्दन नाइ, परिवर्तन नाइ—मृत्युन्जयेर ये हृदय एखन काँपितेछे, व्याकुल हइतेछे, ताहार सङ्गे उहादेर कोनो सम्पर्क नाइ, वेदनार कोनो सम्बन्ध नाइ। एइ सोनार पिण्डगुला आलोक चाय ना, आकाश चाय ना, वातास चाय ना, प्राण चाय ना, मुक्ति चाय ना। इहारा एइ चिर-अन्धकारेर मध्ये चिरदिन उज्ज्वल हइया, कठिन हइया, स्थिर हइया रहियाछे।

पृथिवीते एखन कि गोधूलि आसियाछे। आहा, सेइ गोधूलिर स्वर्ण! ये स्वर्ण केवल क्षणकालेर जन्य चोख जुड़ाइया अन्धकारेर प्रान्ते काँदिया विदाय लइया याय। ताहार परे कुटिरेर प्राङ्गणतले सन्ध्यातारा एकदृष्टे चाहिया थाके। गोष्ठे प्रदीप ज्वालाइया वधू घरेर कोणे सन्ध्यादीप स्थापन करे। मन्दिरे आरतिर घण्टा वाजिया उठे।

ग्रामेर घरेर अति क्षुद्रतम तुच्छतम व्यापार आज मृत्युन्जयेर कल्पनादृष्टिर काछे उज्ज्वल हइया उठिल। ताहादेर सेइ ये भोला कुकुरटा लेजे माथाय एक हइया उठानेर प्रान्ते सन्ध्यार पर घुमाइते थाकित, से कल्पनाओ ताहाके येन व्यथित करिते लागिल। धारागोल ग्रामे कयदिन से ये मुदिर दोकाने आश्रय लइयाछिल सेइ मुदि एतक्षण रात्रे प्रदीप निवाइया, दोकाने झाँप वन्ध करिया, धीरे धीरे ग्रामे वाड़िमुखे आहार करिते चलियाछे, एइ कथा स्मरण करिया ताहार मने हइते लागिल, मुदि की सुखेइ आछे। आज की वार के जाने। यदि रविवार हय तवे एतक्षणे हाटेर लोक ये यार आपन आपन वाड़ि फिरितेछे,

---

उहादेर—उनका। चाय ना—नहीं चाहते। वातास—हवा। इहारा—ये।

चोख जुड़ाइया—आँखों को तृप्त कर। काँदिया—रोते हुए। चाहिया थाके—ताकता रहता है। कोणे—कोने में।

लेजे माथाय एक हइया—मुँह और पूँछ एकाकार करके, मुँह और पूँ (पैरों के वीच) सटाए हुए। उठानेर—आँगन के। सन्ध्यार पर—शाम के वाद। मुदिर—परचूनिया की। निवाइया—बुझा कर। झाँप—टट्टर, टटिया। वाड़िमुखे—घर की ओर।

सङ्गच्युत साथिके ऊर्ध्वस्वरे डाक पाड़ितेछे, दल बाँधिया खेया-नौकाय पार हइतेछे; मेठो रास्ता धरिया, शस्यक्षेत्रेर आल बाहिया, पल्लीर शुष्कवंशपत्रखचित अङ्गनपार्श्व दिया चाषि लोक हाते दुटो-एकटा, माछ झुलाइया माथाय एकटा चुपड़ि लइया अन्धकारे आकाशभरा तारार क्षीणालोके ग्रामे ग्रामान्तरे चलियाछे।

धरणीर उपरितले एइ विचित्र बृहत् चिरचञ्चल जीवनयात्रार मध्ये तुच्छतम दीनतम हइया निजेर जीवन मिशाइबार जन्य शतस्तर मृत्तिका भेद करिया ताहार काछे लोकालयेर आह्वान आसिया पौँछिते लागिल। सेइ जीवन, सेइ आकाश, सेइ आलोक, पृथिवीर समस्त मणिमाणिक्येर चेये ताहार काछे दुर्मूल्य बोध हइते लागिल। ताहार मने हइते लागिल, 'केवल क्षणकालेर जन्य एकबार यदि आमार सेइ श्यामा जननी धरित्रीर धूलिक्रोड़े, सेइ उन्मुक्त आलोकित नीलाम्बरेर तले, सेइ तृणपत्रेर गन्ध-वासित वातास वुक भरिया एकटिमात्र शेष निश्वासे ग्रहण करिया मरिते पारि ताहा हइलेओ जीवन सार्थक हय।'

एमन समय द्वार खुलिया गेल। सन्न्यासी घरे प्रवेश करिया कहिलेन, "मृत्युञ्जय, की चाओ।"

से बलिया उठिल, "आमि आर किछुइ चाइ ना—आमि एइ सुरङ्ग हइते, अन्धकार हइते, गोलकधाँधा हइते, एइ सोनार गारद हइते, बाहिर हइते चाइ। आमि आलोक चाइ, आकाश चाइ, मुक्ति चाइ।"

सन्न्यासी कहिलेन, "एइ सोनार भाण्डारेर चेये मूल्यवान रत्नभाण्डार एखाने आछे। एकबार याइबे ना ?"

मृत्युञ्जय कहिल, "ना, याइब ना।"

डाक पाड़ितेछे—पुकार रहे हैं। खेयानौकाय—खेई जानेवाली नाव में। मेठो—मैदानी। आल बाहिया—मेंड़ से हो कर। पल्लीर—गाँव के। चाषि लोक—किसान। चुपड़ि—छोटी टोकरी।

मिशाइबार—घुला-मिला देने के। सेइ—वही। चेये—अपेक्षा। बुक भरिया—वक्ष भर कर।

गोलकधाँधा—भूलभुलैया। गारद हइते—क़ैदख़ाने से।

सन्न्यासी कहिलेन, "एकबार देखिया आसिबार कौतूहलओ नाइ ?"

मृत्युञ्जय कहिल, "ना, आमि देखितेओ चाइ ना। आमाके यदि कौपीन परिया भिक्षा करिया बेड़ाइते हय तबु आमि एखाने एक मुहूर्तओ काटाइते इच्छा करि ना।"

सन्न्यासी कहिलेन, "आच्छा, तवे एसो।"

मृत्युञ्जयेर हात धरिया सन्न्यासी ताहाके सेइ गभीर कूपेर सम्मुखे लइया गेलेन। ताहार हाते सेइ लिखनपत्र दिया कहिलेन, "एखानि लइया तुमि की करिबे।"

मृत्युञ्जय से पत्रखानि टुकरा टुकरा करिया छिँड़िया कूपेर मध्ये निक्षेप करिल।

अक्तूबर-नवम्बर, १९०७ ई०।

परिया—पहन कर। बेड़ाइते हय—घूमना पड़े।
हात धरिया—हाथ पकड़ कर। एखानि—इसे।
छिँड़िया—फाड़ कर।

रासमणिर छेले

कालीपदर मा छिलेन रासमणि—किन्तु ताँहाके दाये पड़िया वापेर पद ग्रहण करिते हइयाछिल। कारण, वाप मा उभयेइ मा हइया उठिले छेलेर पक्षे सुविधा हय ना। ताँहार स्वामी भवानीचरण छेलेके एकेवारेइ शासन करिते पारेन ना।

तिनि केन एत वेशि आदर देन ताहा जिज्ञासा करिले तिनि ये उत्तर दिया थाकेन ताहा वुझिते हइले पूर्व-इतिहास जाना चाइ।

व्यापारखाना एइ—शानियाड़िर विख्यात वनियादी धनीर वंशे भवानीचरणेर जन्म। भवानीचरणेर पिता अभयाचरणेर प्रथम पक्षेर पुत्र श्यामाचरण। अधिक वयसे स्त्रीवियोगेर पर द्वितीयवार यखन अभयाचरण विवाह करेन तखन ताँहार श्वसुर आलन्दि तालुकटि विशेष करिया ताँहार कन्यार नामे लिखाइया लइयाछिलेन। जामातार वयस हिसाव करिया तिनि मने मने भावियाछिलेन ये, कन्यार वैवव्य यदि घटे तवे खाओयापरार जन्य येन सपत्नीपुत्रेर अधीन ताँहाके ना हइते हय।

तिनि याहा कल्पना करिया छिलेन ताहार प्रथम अंश फलिते विलम्व हइल ना। ताँहार दौहित्र भवानीचरणेर जन्मेर अनति-काल परेइ ताँहार जामातार मृत्यु हइल। ताँहार कन्या निजेर विशेष सम्पत्तिटिर अधिकार लाभ करिलेन इहा स्वचक्षे देखिया तिनिओ परलोकयात्रार समय कन्यार इहलोक सम्वन्धे अनेकटा निश्चिन्त हइया गेलेन।

छेले—लड़का। दाये पड़िया—वाध्य हो कर। पक्षे—लिए। सुविधा—भला, उचित। शासन—डाँट-डपट।

आदर—स्नेह। वुझिते हइले—समझने के लिए।

व्यापारखाना—मामला। वनियादी—प्राचीन और सम्भ्रान्त। प्रथम पक्षेर—पहली पत्नी के। आलन्दि—(तालुके का नाम)। भावियाछिलेन—सोचा था।

तिनि—उन्होंने। परेइ—वाद ही। इहा—यह।

श्यामाचरण तखन वयःप्राप्त। एमन-कि, ताँहार बड़ो छेलेटि तखनइ भवानीर चेये एक बछरेर बड़ो। श्यामाचरण निजेर छेलेदेर सङ्गे एकत्रेइ भवानीके मानुष करिते लागिलेन। भवानीचरणेर मातार सम्पत्ति हइते कखनो तिनि निजे एक पयसा लन नाइ एवं वत्सरे वत्सरे ताहार परिष्कार हिसाबटि तिनि विमातार निकट दाखिल करिया ताहार रसिद लइयाछेन, इहा देखिया सकलेइ ताँहार साधुताय मुग्ध हइयाछे।

वस्तुत प्राय सकलेइ मने करियाछिल, एतटा साधुटा अनावश्यक, एमन-कि इहा निर्बुद्धितारइ नामान्तर। अखण्ड पैतृक सम्पत्तिर एकटा अंश द्वितीय पक्षेर स्त्रीर हाते पड़े, इहा ग्रामेर लोकेर काहारओ भालो लागे नाइ। यदि श्यामाचरण छल करिया एइ दलिलटि कोनो कौशले बातिल करिया दितेन तबे प्रतिवेशीरा ताँहार पौरुषेर प्रशंसाइ करित, एवं ये उपाये ताहा सुचारुरूपे साधित हइते पारे ताहार परामर्शदाता प्रवीण व्यक्तिरओ अभाव छिल ना। किन्तु, श्यामाचरण ताँहादेर चिरकालीन पारिवारिक स्वत्वके अङ्गहीन करियाओ ताँहार विमातार सम्पत्तिटिके सम्पूर्ण स्वतन्त्र करिया राखिलेन।

एइ कारणे एवं स्वभावसिद्ध स्नेहशीलतावशत विमाता व्रजसुन्दरी श्यामाचरणके आपनार पुत्रेर मतोइ स्नेह एवं विश्वास करितेन। एवं ताँहार सम्पत्तिटिके श्यामाचरण अत्यन्त पृथक करिया देखितेन बलिया तिनि अनेकबार ताँहाके भर्त्सना करियाछेन; बलियाछेन, "बाबा, ए तो समस्तइ तोमादेर, ए सम्पत्ति सङ्गे लइया आमि तो स्वर्गे याइब ना, ए तोमादेरइ थाकिबे; आमार एत हिसाबपत्र देखिबार दरकार की।"

बछर—बरस। मानुष....लागिलेन—पालन-पोषण कर समर्थ बनाने लगे। कखनो—कभी।

एमन-कि—यहाँ तक कि। भालो—अच्छा। दलिलटि—दस्तावेज। बातिल—रद्द। हइते पारे—हो सकता है। ताँहादेर—उनके।

मतोइ—तरह ही। बलिया—इसलिए।

श्यामाचरण से कथाय कर्णपात करितेन ना।

श्यामाचरण निजेर छेलेदेर कठोर शासने राखितेन। किन्तु भवानीचरणेर 'परे ताँहार कोनो शासनइ छिल ना। इहा देखिया सकलेइ एकवाक्ये बलित, निजेर छेलेदेर चेये भवानीर प्रतिइ ताँहार बेशि स्नेह। एमनि करिया भवानीर पड़ाशुना किछुइ हइल ना। एवं विषयबुद्धि सम्बन्धे चिरदिन शिशुर मतो थाकिया दादार उपर सम्पूर्ण निर्भर करिया तिनि वयस काटाइते लागिलेन। विषयकर्मे ताँहाके कोनोदिन चिन्ता करिते हइत ना—केवल माझे माझे एक-एकदिन सइ करिते हइत। केन सइ करितेछेन ताहा बुझिबार चेष्टा करितेन ना; कारण, चेष्टा करिले कृतकार्य हइते पारितेन ना।

ए दिके श्यामाचरणेर बड़ो छेले तारापद सकल काजे पितार सहकारीरूपे थाकिया काजे कर्मे पाका हइया उठिल। श्यामाचरणेर मृत्यु हइले पर तारापद भवानीचरणके कहिल, "खुड़ामहाशय, आमादेर आर एकत्र थाका चलिबे ना। की जानि कोन्‌दिन सामान्य कारणे मनान्तर घटिते पारे, तखन संसार छारखार हइया याइबे।"

पृथक हइया कोनोदिन निजेर विषय निजेके देखिते हइबे, ए कथा भवानी स्वप्नेओ कल्पना करेन नाइ। ये संसारे शिशुकाल हइते तिनि मानुष हइयाछेन सेटाके तिनि सम्पूर्ण अखण्ड बलियाइ जानितेन—ताहार ये कोनो-एकटा जायगाय जोड़ आछे एवं सेइ जोड़ेर मुखे ताहाके दुइखाना करा याय, सहसा से संवाद पाइया तिनि व्याकुल हइया पड़िलेन।

से कथाय—उस बात पर। 'परे—(उपरे) ऊपर। चेये—अपेक्षा। पड़ाशुना—लिखना-पढ़ना। थाकिया—रह कर। विषयकर्मे—विषय-संपत्ति से सम्बन्धित कार्यों की। माझे माझे—बीच-बीच में। सइ—सही, हस्ताक्षर। बुझिबार—समझने की। हइते पारितेन ना—न हो पाते।

खुड़ामहाशय—काका। घटिते पारे—हो सकता है। छारखार—नष्ट-भ्रष्ट। मानुष हइयाछेन—समर्थ हुए हैं। जोड़ेर मुखे—जोड़ की जगह से।

वंशेर सम्मानहानि एवं आत्मीयदेर मनोवेदनाय तारापदके यखन किछुमात्र विचलित करिते पारिल ना, तखन केमन करिया विषय विभाग हइते पारे सेइ असाध्य चिन्ताय भवानीके प्रवृत्त हइते हइल। तारापद ताँहार चिन्ता देखिया अत्यन्त विस्मित हइया कहिलेन, "खुड़ामहाशय, काण्ड की। आपनि एत भाबितेछेन केन। विषय भाग तो हइयाइ आछे। ठाकुरदादा बाँचिया थाकितेइ तो भाग करिया दिया गेछेन।"

भवानी हतबुद्धि हइया कहिलेन, "सत्य नाकि! आमि तो ताहार किछुइ जानि ना।"

तारापद कहिलेन, "विलक्षण! जानेन ना तो की! देशसुद्ध लोक जाने, पाछे आपनादेर सङ्गे आमादेर कोनो विवाद घटे एइजन्य आलन्दि तालुक आपनादेर अंशे लिखिया दिया ठाकुरदादा प्रथम हइतेइ आपनादिगके पृथक करिया दियाछेन—सेइ भावेइ तो ए-पर्यन्त चलिया आसितेछे।"

भवानीचरण भाविलेन, सकलइ सम्भव। जिज्ञासा करिलेन, "एइ बाड़ि?"

तारापद कहिलेन, "इच्छा करेन तो बाड़ि आपनाराइ राखिते पारेन। सदर महकुमाय ये कुठि आछे सेइटे पाइलेइ आमादेर कोनोरकम करिया चलिया याइबे।"

तारापद एत अनायासे पैतृक बाड़ि छाड़िते प्रस्तुत हइलेन देखिया, ताँहार औदार्ये तिनि विस्मित हइया गेलेन। ताँहादेर सदर महकुमार बाड़ि तिनि कोनोदिन देखेन नाइ एवं ताहार प्रति ताँहार किछुमात्र ममता छिल ना।

केमन करिया—किस प्रकार। हइते हइल—होना पड़ा। काण्ड की—मामला क्या है। भाबितेछेन केन—सोच-विचार क्यों करते हैं।

तो की—तो क्या। देशसुद्ध—देश-भर के, सभी। सेइ भावेइ—इसी प्रकार ही। बाड़ि—मकान।

आपनाराइ—आप लोग ही। सदर महकुमाय—(जिले का प्रधान स्थान) सेइटे—उसे। कोनोरकम करिया—किसी प्रकार।

एत—इतने। तिनि—वे।

भवानी यखन ताँहार माता व्रजसुन्दरीके सकल वृत्तान्त जानाइलेन तिनि कपाले कराघात करिया बलिलेन, "ओमा, से की कथा! आलन्दि तालुक तो आमार खोरपोषेर जन्य आमि स्त्री धनस्वरूपे पाइयाछिलाम—ताहार आयओ तो तेमन बेशि नय। पैतृक सम्पत्तिते तोमार ये अंश से तुमि पाइबे ना केन।"

भवानी कहिलेन, "तारापद बले, पिता आमादिगके ए तालुक छाड़ा आर-किछु देन नाइ।"

व्रजसुन्दरी कहिलेन, "से कथा बलिले आमि शुनिब केन। कर्ता निजेर हाते ताँहार उइल दुइ प्रस्थ लिखियाछिलेन—ताहार एक प्रस्थ आमार काछे राखियाछेन; से आमार सिन्दुकेइ आछे।"

सिन्दुक खोला हइल। सेखाने आलन्दि तालुकेर दानपत्र आछे, किन्तु उइल नाइ। उइल चुरि गियाछे।

परामर्शदाताके डाका हइल। लोकटि ताँहादेर गुरुठाकुरेर छेले, नाम बगलाचरण। सकलेइ बले, ताहार भारि पाका बुद्धि। ताहार बाप ग्रामेर मन्त्रदाता, आर छेलेटि मन्त्रणादाता। पितापुत्रे ग्रामेर परकाल इहकाल भागाभागि करिया लइयाछे। अन्येर पक्षे ताहार फलाफल येमनइ हउक ताहादेर निजेदेर पक्षे कोनो असुविधा घटे नाइ।

बगलाचरण कहिल, "उइल ना-इ पाओया गेल। पितार सम्पत्तिते दुइ भायेर तो समान अंश थाकिबेइ।"

एमन समय अपर पक्ष हइते एकटा उइल बाहिर हइल। ताहाते भवानीचरणेर अंशे किछुइ लेखे ना। समस्त सम्पत्ति पौत्रदिगके देओया हइयाछे। तखन अभयाचरणेर पुत्र जन्मे नाइ।

ओमा—(विस्मयादि बोधक शब्द) अरी मा। **कथा**—बात। **खोरपोषेर**—भरण-पोषण के (खर्चे के)। **तेमन**—उतनी।

कर्ता—गृह-स्वामी, पति। **उइल दुइ प्रस्थ**—विल की दो प्रतियाँ।

डाका हइल—बुलाया गया। **गुरुठाकुरेर छेले**—पारिवारिक पुरोहित का पुत्र। **छेलेटि**—लड़का। **पितापुत्रे...लइयाछे**—पिता-पुत्र ने गाँव के परलोक इहलोक को आपस में बाँट लिया है। **येमनइ हउक**—जैसा भी हो।

बगलाके काण्डारी करिया भवानी मकद्दमार महासमुद्रे पाड़ि दिलेन। बन्दरे आसिया लोहार सिन्दुकटि यखन परीक्षा करिया देखिलेन तखन देखिते पाइलेन, लक्ष्मीपेँचार बासाटि एकेबारे शून्य—सामान्य दुटो-एकटा सोनार पालक खसिया पड़िया आछे। पैतृक सम्पत्ति अपर पक्षेर हाते गेल। आर, आलन्दि तालुकेर ये डाङाटुकु मकद्दमा-खरचार विनाशतल हइते जागिया रहिल, कोनोमते ताहाके आश्रय करिया थाका चले मात्र, किन्तु वंशमर्यादा रक्षा करा चले ना। पुरातन बाड़िटा भवानीचरण पाइया मने करिलेन, भारि जितियाछि। तारापदर दल सदरे चलिया गेल। उभय पक्षेर मध्ये आर देखासाक्षात् रहिल ना।

२

श्यामाचरणेर विश्वासघातकता ब्रजसुन्दरीके शेलेर मतो बाजिल। श्यामाचरण अन्याय करिया कर्तार उइल चुरि करिया भाइके वञ्चित करिल एवं पितार विश्वास भङ्ग करिल, इहा तिनि कोनोमतेइ भुलिते पारिलेन ना। तिनि यतदिन बाँचिया छिलेन प्रतिदिनइ दीर्घनिश्वास फेलिया बारबार करिया बलितेन, "धर्मे इहा कखनोइ सहिबे ना।" भवानीचरणके प्रायइ प्रतिदिन तिनि एइ बलिया आश्वास दियाछेन ये, "आमि आइन-आदालत किछुइ बुझि ना, आमि तोमाके बलितेछि, कर्तार से उइल कखनोइ चिरदिन चापा थाकिबे ना। से तुमि निश्चयइ फिरिया पाइबे।"

बराबर मातार काछे एइ कथा शुनिया भवानीचरण मने

काण्डारी—खेवैया, माँझी। पाड़ि दिलेन—(पार जाने के लिए) उतर पड़े। बन्दरे आसिया—बन्दरगाह पर आ कर। लक्ष्मीपेँचार बासाटि—लक्ष्मी के (वाहन) उल्लू का निवास-स्थान। पालक....आछे—पंख झड़ पड़े हैं। डाङाटुकु—ज़मीन-भर। कोनोमते—किसी प्रकार। भारि जितियाछि—खूब जीता है।

बाजिल—चुभा। कर्तार उइल—गृहस्वामी की विल। कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। बुझि ना—नहीं समझती। चापा थाकिबे ना—दबी नहीं रहेगी।

अत्यन्त एकटा भरसा पाइलेन। तिनि निजे अक्षम बलिया एइरूप आश्वासवाक्य ताँहार पक्षे अत्यन्त सान्त्वनार जिनिस। सतीसाध्वीर वाक्य फलिबेइ, याहा ताँहारइ ताहा आपनिइ ताँहार काछे फिरिया आसिबे, ए कथा तिनि निश्चय स्थिर करिया बसिया रहिलेन। मातार मृत्युर परे ए विश्वास ताँहार आरओ दृढ़ हइया उठिल—कारण मृत्युर विच्छेदेर मध्य दिया मातार पुण्य तेज ताँहार काछे आरओ अनेक बड़ो करिया प्रतिभात हइल। दारिद्र्येर समस्त अभाव पीड़न येन ताँहार गायेइ बाजित ना। मने हइत, एइ-ये अन्नवस्त्रेर कष्ट, एइ-ये पूर्वकार चालचलनेर व्यत्यय, ए येन दु दिनेर एकटा अभिनयमात्र—ए किछुइ सत्य नहे। एइजन्य सावेक ढाकाइ धुति छिँड़िया गेले यखन कम दामेर मोटा धुति ताँहाके किनिया परिते हइल तखन ताँहार हासि पाइल। पूजार समय सावेक कालेर धुमधाम चलिल ना, नमोनम करिया काज सारिते हइल; अभ्यागतजन एइ दरिद्र आयोजन देखिया दीर्घनिश्वास फेलिया सावेक कालेर कथा पाड़िल। भवानीचरण मने मने हासिलेन; तिनि भाविलेन, 'इहारा जाने ना, ए-समस्तइ केवल किछुदिनेर जन्य—ताहार पर एमन धुम करिया एकदिन पूजा हइबे ये, इहादेर चक्षु स्थिर हइया याइबे।' सेइ भविष्यतेर निश्चित समारोह तिनि एमनि प्रत्यक्षेर मतो देखिते पाइतेन ये, वर्तमान दैन्य ताँहार चोखेइ पड़ित ना।

ए सम्बन्धे ताँहार आलोचना करिबार प्रधान मानुषटि

भरसा—भरोसा, आश्वास। याहा...काछे—जो उन्हीं का है वह अपने आप ही उनके पास। गायेइ बाजिल ना—अखरता ही नहीं था। व्यत्यय—व्यतिक्रम। सावेक—पुरानी। ढाकाइ...गेले—ढाके की बनी हुई धोती फट जाने पर। किनिया....हइल—खरीद कर पहननी पड़ी। हासि पाइल—हँसी आई। पूजा—दुर्गा-पूजा। सावेक कालेर—पुराने जमाने की। सारिते हइल—समाप्त करना पड़ा। कथा पाड़िल—बात उठाई। इहारा—ये लोग। धुम करिया—धूमधाम से। चोखेइ पड़ित ना—नजर ही नहीं आता था।

छिल नोटो चाकर। कतवार पूजोत्सवेर दारिद्र्येर माझखाने वसिया प्रभु-भृत्य भावी सुदिने किरूप आयोजन करिते हइवे ताहारइ विस्तारित आलोचनाय प्रवृत्त हइयाछेन। एमन-कि, काहाके निमन्त्रण करिते हइवे ना-हइवे एवं कलिकाता हइते यात्रार दल आनिवार प्रयोजन आछे कि ना, ताहा लइया उभय पक्षे घोरतर मतान्तर ओ तर्कवितर्क हइया गियाछे। स्वभाव-सिद्ध अनौदार्यवशत नटविहारी सेइ भावीकालेर फर्द-रचनाय कृपणता प्रकाश कराय भवानीचरणेर निकट हइते तीव्र भर्त्सना लाभ करियाछे। एरूप घटना प्रायइ घटित।

मोटेर उपर विषयसम्पत्ति सम्बन्धे भवानीचरणेर मने कोनो-प्रकार दुश्चिन्ता छिल ना। केवल ताँहार एकटिमात्र उद्वेगेर कारण छिल, के ताँहार विषय भोग करिबे। आज पर्यन्त ताँहार सन्तान हइल ना। कन्यादायग्रस्त हितैषीरा यखन ताँहाके आर-एकटि विवाह करिते अनुरोध करित तखन ताँहार मन एक-एकवार चञ्चल हइत; ताहार कारण ए नय ये, नववधू सम्बन्धे ताँहार विशेष शख छिल—बरञ्च सेवक ओ अन्नेर न्याय स्त्रीकेओ पुरातनभावेइ तिनि प्रशस्त बलिया गण्य करितेन—किन्तु याहार ऐश्वर्यसम्भावना आछे ताहार सन्तानसम्भावना ना थाका विषम विडम्बना बलियाइ तिनि जानितेन।

एमन समय यखन ताँहार पुत्र जन्मिल तखन सकलेइ बलिल, एइवार एइ घरेर भाग्य फिरिबे, ताहार सूत्रपात हइयाछे—स्वयं स्वर्गीय कर्ता अभयाचरण आवार ए घरे जन्मियाछेन, ठिक सेइ रकमेरइ टाना चोख। छेलेर कोष्ठीतेओ देखा गेल, ग्रहे नक्षत्रे

नोटो—(नटविहारी नाम का संक्षिप्त रूप)। यात्रा दल—(रासजातीय अभिनय करने वाला दल) रास-मंडली। मतान्तर—मतभेद। फर्द—तालिका।

मोटेर उपर—मोटे तौर पर। कन्यादायग्रस्त—कन्या को व्याह देने के दायित्व में ग्रसित। शख—शौक। प्रशस्त—उपयुक्त।

एइवार—इस बार। आवार—पुनः। टाना चोख—बड़ी-बड़ी आँखें। कोष्ठीतेओ—जन्मपत्री में भी।

एमनिभावे योगायोग घटियाछे ये हृतसम्पत्ति उद्धार ना हइया याय ना।

छेले हओयार पर हइते भवानीचरणेर व्यवहारे किछु परिवर्तन लक्ष्य करा गेल। एतदिन पर्यन्त दारिद्र्यके तिनि नितान्तइ एकटा खेलार मतो सकौतुके अति अनायासेइ वहन करियाछिलेन, किन्तु छेलेर सम्बन्धे से भावटि तिनि रक्षा करिते पारिलेन ना। शानियाड़िर विख्यात चौधुरीदेर घरे निर्वाणप्राय कुलप्रदीपके उज्ज्वल करिवार जन्य समस्त ग्रहनक्षत्रेर आकाशव्यापी आनुकूल्येर फले ये शिशु धराधामे अवतीर्ण हइयाछे ताहार प्रति तो एकटा कर्तव्य आछे। आज पर्यन्त धारावाहिक काल धरिया एइ परिवारेर पुत्रसन्तानमात्रइ आजन्मकाल ये समादर लाभ करियाछे भवानीचरणेर ज्येष्ठ पुत्रइ प्रथम ताहा हइते वञ्चित हइल, ए वेदना तिनि भुलिते पारिलेन ना। 'ए वंशेर चिरप्राप्य आमि याहा पाइयाछि आमार पुत्रके ताहा दिते पारिलाम ना' इहा स्मरण करिया ताँहार मने हइते लागिल, 'आमिइ इहाके ठकाइलाम।' ताइ कालीपदर जन्य अर्थव्यय याहा करितेपारिलेन ना, प्रचुर आदर दिया ताहा पूरण करिवार चेष्टा करिलेन।

भवानीर स्त्री रासमणि छिलेन अन्य धरनेर मानुष। तिनि शानियाड़िर चौधरीदेर वंशगौरव सम्वन्धे कोनोदिन उद्वेग अनुभव करेन नाइ। भवानी ताहा जानितेन एवं इहा लइया मने मने तिनि हासितेन; भावितेन, येरूप सामान्य दरिद्र वैष्णव-वंशे ताँहार स्त्रीर जन्म ताहाते ताँहार ए त्रुटि क्षमा कराइ उचित—चौधुरीदेर मानमर्यादा सम्वन्धे ठिकमतो धारणा कराइ ताँहार पक्षे असम्भव।

रासमणि निजेइ ताहा स्वीकार करितेन—वलितेन, "आमि

पर हइते—बाद से। ठकाइलाम—प्रताड़ित किया है। याहा—जो। आदर—स्नेह। ताहा—उसे, वह।

अन्य धरनेर—दूसरी तरहकी। इहा लइया—इसको लेकर। भावितेन—सोचते।

गरिबेर मेये, मानसम्भ्रमेर धार धारि ना; कालीपद आमार बाँचिया थाक्, सेइ आमार सकलेर चेये बड़ो ऐश्वर्य।" उइल आबार पाओया याइबे एवं कालीपदर कल्याणे ए वंशे लुप्त सम्पदेर शून्य नदीपथे आबार बान डाकिबे, ए-सब कथाय तिनि एकेबारे कानइ दितेन ना। एमन मानुषइ छिल ना याहार सङ्गे ताँहार स्वामी हारानो उइल लइया आलोचना ना करितेन। केवल, एइ सकलेर चेये बड़ो मनेर कथाटि ताँहार स्त्रीर सङ्गे हइत ना। दुइ-एकबार ताँहार सङ्गे आलोचनार चेष्टा करियाछिलेन, किन्तु कोनो रस पाइलेन ना। अतीत महिमा एवं भावी महिमा, एइ दुइयेर प्रतिइ ताँहार स्त्री मनोयोगमात्र करितेन ना; उपस्थित प्रयोजनइ ताँहार समस्त चित्तके आकर्षण करिया राखियाछिल।

से प्रयोजनओ बड़ो अल्प छिल ना। अनेक चेष्टाय संसार चालाइते हइत। केनना, लक्ष्मी चलिया गेलेओ ताँहार बोझा किछु किछु पश्चाते फेलिया यान, तखन उपाय थाके ना बटे किन्तु अपाय थाकिया याय। ए परिवारे आश्रय प्राय भाङिया गियाछे; किन्तु आश्रित दल एखनओ ताँहादिगके छुटि दिते चाय ना। भवानीचरणओ तेमन लोक नहेन ये, अभावेर भये काहाकेओ विदाय करिया दिबेन।

एइ भारग्रस्त भाङा संसारटिके चालाइबार भार रासमणिर उपरे। काहारओ काछे तिनि विशेष किछु साहाय्यओ पान ना। कारण, ए संसारेर सच्छल अवस्थार दिने आश्रितेरा सकलेइ

मेये—लड़की। मानसम्भ्रमेर....ना—मान-संभ्रम से (जिसका) कोई सम्बन्ध नहीं। चेये—अपेक्षा। आबार....डाकिबे—फिर बाढ़ आएगी। कानइ दितेन ना—सुनती ही नहीं थीं। आलोचना—चर्चा। हारानो—खोई हुई।

संसार—घर-गृहस्थी। केनना—क्योंकि। ताँहार—अपना। उपाय... बटे—सचमुच तब कोई उपाय नहीं रह जाता। अपाय—विनाश, ध्वंस। ताँहादिगके—उन लोगों को। नहेन—नहीं हैं।

पान ना—नहीं पातीं। सच्छल—अभावशून्य।

आरामे ओ आलस्येइ दिन काटाइयाछे। चौधुरीवंशेर महावृक्षेर तले इहादेर सुखशय्यार उपरे छाया आपनिइ आसिया विस्तीर्ण हइयाछे एवं इहादेर मुखेर काछे पाका फल आपनिइ आसिया पड़ियाछे—सेजन्य इहादेर काहाकेओ किछुमात्र चेष्टा करिते हय नाइ। आज इहादिगके कोनोप्रकार काज करिते बलिले, इहारा भारि अपमान बोध करे—एवं रान्नाघरेर धोँया लागिलेइ इहादेर माथा धरे; आर हाँटाहाटि करिते गेलेइ कोथा हइते एमन पोड़ा वातेर व्यामो आसिया अभिभूत करिया तोले ये, कविराजेर बहुमूल्य तैलेओ रोग उपशम हइते चाय ना। ता छाड़ा, भवानीचरण बलिया थाकेन, आश्रयेर परिवर्ते यदि आश्रितेर काछ हइते काज आदाय करा हय तबे से तो चाकरि कराइया लओया—ताहाते आश्रयदानेर मूल्यइ चलिया याय—चौधुरीदेर घरे एमन नियमइ नहे।

अतएव समस्त दाय रासमणिरइ उपर। दिनरात्रि नाना कौशले ओ परिश्रमे एइ परिवारेर समस्त अभाव ताँहाके गोपने मिटाइया चलिते हय। एमन करिया दिनरात्रि दैन्येर सङ्गे संग्राम करिया, टानाटानि करिया, दरदस्तुर करिया चलिते थाकिले मानुषके बड़ो कठिन करिया तुले—ताहार कमनीयता चलिया याय। याहादेर जन्य से पदे पदे खाटिया मरे ताहाराइ ताहाके सह्य करिते पारे ना। रासमणि ये केवल पाकशालाय अन्न पाक करेन ताहा नहे, अन्नेर संस्थानभारओ अनेकटा ताँहार उपर—अथच सेइ अन्न सेवन करिया मध्याह्ने याँहारा निद्रा देन ताँहारा प्रतिदिन सेइ अन्नेरओ निन्दा करेन, अन्नदातारओ सुख्याति करेन ना।

काछे—निकट। **सेजन्य**—इसलिए। **इहादेर**—इन लोगों में से। **रान्नाघरेर धोँया**—रसोईघर का धुआँ। **माथा धरे**—सिरदर्द करने लगता है। **हाँटाहाँटि**—चलने-फिरने से। **पोड़ा**—जली (गाली के अर्थ में, यथा: मुँहजली)। **वातेर व्यामो**—वात-व्याधि। **ता छाड़ा**—उसके अतिरिक्त। **परिवर्ते**—बदले में।

दाय—भार। **ताँहाके**—उन्हे। **टानाटानि**—खीचतान। **दरदस्तुर**—मोल-भाव। **करिया तुले**—बना देता है। **खाटिया मरे**—परिश्रम करते-करते मरी जाती है। **अन्नेर संस्थानभार**—अन्न-व्यवस्था।

केवल घरेर काज नहे, तालुक ब्रह्मत्र अल्पस्वल्प या-किछु एखनओ वाकि आछे ताहार हिसावपत्र देखा, खाजना-आदायेर व्यवस्था करा, समस्त रासमणिके करिते हय। तहशिल प्रभृति सम्वन्धे पूर्वे एत कपाकषि कोनोदिन छिल ना—भवानीचरणेर टाका अभिमन्युर ठिक उलटा, से वाहिर हइतेइ जाने, प्रवेश करि-वार विद्या ताहार जाना नाइ। कोनोदिन टाकार जन्य काहाकेओ तागिद करिते तिनि एकेवारेइ अक्षम। रासमणि निजेर प्राप्य सम्वन्धे काहाकेओ सिकि पयसा रेयात करेन ना। इहाते प्रजारा ताँहाके निन्दा करे, गोमस्तागुलो पर्यन्त ताँहार सतर्कतार ज्वालाय अस्थिर हइया ताँहार वंशोचित क्षुद्राशयतार उल्लेख करिया ताँहाके गालि दिते छाड़े ना। एमन-कि, ताँहार स्वामीओ ताँहार कृपणता ओ ताँहार कर्कशताके ताँहादेर विश्वविख्यात परिवारेर पक्षे मानहानिजनक वलिया कखनो कखनो मृदुस्वरे आपत्ति करिया थाकेन। ए-समस्त निन्दा ओ भर्त्सना तिनि सम्पूर्ण उपेक्षा करिया निजेर नियमे काज करिया चलेन, दोष समस्तइ निजेर घाड़े लन; तिनि गरिवेर घरेर मेये, तिनि वड़ोमानुषियानार किछुइ वोझेन ना, एइ कथा वारवार स्वीकार करिया, घरे वाहिरे सकल लोकेर काछे अप्रिय हइया, आँचलेर प्रान्तटा कषिया कोमरे जड़ाइया, झड़ेर वेगे काज करिते थाकेन; केह ताँहाके वाधा दिते साहस करे ना।

स्वामीके कोनोदिन तिनि कोनो काजे डाका दूरे थाक, ताँहार मने मने एइ भय सर्वदा छिल पाछे भवानीचरण सहसा कर्तृत्व

ब्रह्मत्र—ब्राह्मण को दी गई भूमि। खाजना—लगान। तहशिल—लगान-वसूली। कपाकषि—खींचतान। टाका—रुपया। तागिद—तकाजा। सिकि पयसा—कानी कौड़ी। रेयात—रियायत। प्रजारा—प्रजागण। गोमस्तागुलो—गुमाश्ते। एमन-कि—यहाँ तक कि। वलिया... कखनो—मान कर कभी-कभी। तिनि—वे। घाड़े लन—सिर पर ले लेती हैं। मेये—लड़की। वड़ोमानुषियाना—वड़े घर का गौरव। आँचलेर...जड़ाइया—आँचल की खूंट कमर में खोंस कर। झड़ेर वेगे— आँधी के वेग से। डाका दूरे थाक—बुलाना तो दूर रहा। पाछे—ऐसा न हो कि।

करिया कोनो काजे हस्तक्षेप करिया बसेन। 'तोमाके किछुइ भाबिते हइबे ना, ए-सब किछुते तोमार थाकार प्रयोजन नाइ' एइ बलिया सकल विषयेइ स्वामीके निरुद्यम करिया राखाइ ताँहार एकटा प्रधान चेष्टा छिल। स्वामीरओ आजन्मकाल सेटा सुन्दररूपे अभ्यस्त थाकाते, से विषये स्त्रीके अधिक दुःख पाइते हय नाइ। रासमणिर अनेक वयस पर्यन्त सन्तान हय नाइ—एइ ताँहार अकर्मण्य सरलप्रकृति परमुखापेक्षी स्वामीटिके लइया ताँहार पत्नीप्रेम ओ मातृस्नेह दुइ मिटियाछिल। भवानीके तिनि वयःप्राप्त बालक बलियाइ देखितेन। काजेइ शाशुड़िर मृत्युर पर हइते बाड़िर कर्ता एवं गृहिणी उभयेरइ काज ताँहाके एकलाइ सम्पन्न करिते हइत। गुरुठाकुरेर छेले एवं अन्यान्य विपद हइते स्वामीके रक्षा करिबार जन्य तिनि एमनि कठोरभावे चलितेन ये, ताँहार स्वामीर सङ्गीरा ताँहाके भारि भय करित। प्रखरता गोपन करिया राखिबेन, स्पष्ट कथागुलार धारटुकु एकटु नरम करिया दिबेन, एवं पुरुषमण्डलीर सङ्गे यथोचित संकोच रक्षा करिया चलिबेन, सेइ नारीजनोचित सुयोग ताँहार घटिल ना।

ए-पर्यन्त भवानीचरण ताँहार बाध्यभावेइ चलितेछिलेन। किन्तु, कालीपदर सम्बन्धे रासमणिके मानिया चला ताँहार पक्षे कठिन हइया उठिल।

ताहार कारण एइ, रासमणि भवानीर पुत्रटिके भवानीचरणेर नजरे देखितेन ना। ताँहार स्वामीर सम्बन्धे तिनि भाबितेन, "बेचारा करिबे की, उहार दोष की, ओ बड़ोमानुषेर

भाबिते—सोचना, चिन्ता करना। **एइ बलिया**—यह कह कर। **लइया**—ले कर। **मिटियाछिल**—पूर्ण हो गए थे। **बलियाइ**—मान कर ही। **काजेइ...हइते**—इसीलिए सास की मृत्यु के बाद से। **कर्ता**—(गृह)स्वामी। **गुरुठाकुरेर छेले**—पारिवारिक पुरोहित के पुत्र। **एमनि**—ऐसी, इतनी। **धारटुकु**—पैनापन, तीखापन। **घटिल ना**—नहीं घटा (मिला)।

बाध्यभावेइ—वशवर्ती हो कर। **रासमणिके....चला**—रासमणि से निभा कर चलना।

भाबितेन—सोचते। **उहार**—उसका।

घरे जन्मियाछे—ओर तो उपाय नाइ।' एइजन्य, ताँहार स्वामी ये कोनोरूप कष्ट स्वीकार करिवेन, इहा तिनि आशाइ करिते पारितेन ना। ताइ सहस्र अभावसत्त्वेओ प्राणपण शक्तिते तिनि स्वामीर समस्त अभ्यस्त प्रयोजन यथासम्भव जोगाइया दितेन। ताँहार घरे वाहिरेर लोकेर सम्बन्धे हिसाव खुवइ कषा छिल, किन्तु भवानीचरणेर आहारे व्यवहारे पारतपक्षे सावेक नियमेर किछुमात्र व्यत्यय हइते पारित ना। नितान्त टानाटानिर दिने यदि कोनो विषये किछु त्रुटि घटित तवे सेटा ये अभाववशत घटियाछे से कथा तिनि कोनोमतेइ स्वामीके जानिते दितेन ना—हयतो वलितेन, "ए रे, हतभागा कुकुर खावारे मुख दिया समस्त नष्ट करिया दियाछे!" वलिया निजेर कल्पित असतर्कताके धिक्कार दितेन। नयतो लक्ष्मीछाड़ा नोटोर दोषेइ नूतन-केना कापड़टा खोओया गियाछे वलिया ताहार वुद्धिर प्रति प्रचुर अश्रद्धा प्रकाश करितेन—भवानीचरण तखन ताँहार प्रिय भृत्यटिर पक्षावलम्वन करिया गृहिणीर क्रोध हइते ताहाके वाँचाइवार जन्य व्यस्त हइया उठितेन। एमन-कि, कखनओ एमनओ घटियाछे, ये कापड़ गृहिणी केनेन नाइ, एवं भवानीचरण चक्षेओ देखेन नाइ एवं ये काल्पनिक कापड़खाना हाराइया फेलियाछे वलिया नटविहारी अभियुक्त—भवानीचरण अम्लानमुखे स्वीकार करियाछेन ये, सेइ कापड़ नोटो ताँहाके कोँचाइया दियाछे, तिनि ताहा परियाछेन एवं ताहार पर—ताहार पर की हइल सेटा

ओर—उसके (लिए)। **अभावसत्त्वेओ**—अभावों के वावजूद। **जोगाइया दितेन**—व्यवस्था कर देतीं। **कषा छिल**—कसा (हुआ) था। **पारतपक्षे**—जहाँ तक सम्भव होता। **सावेक नियमेर**—पुराने नियमों में। **व्यत्यय**—व्यतिक्रम। **टानाटानिर दिने**—अभावपूर्ण दिनों में। **खावारे**—भोजन में। **लक्ष्मीछाड़ा**—अभागे। **केना**—खरीदा हुआ। **वाँचाइवार जन्य**—वचाने के लिए। **व्यस्त**—अधीर। **एमन-कि**—यहाँ तक कि। **एमनओ**—ऐसा भी। **कापड़**—धोती। **केनेन नाइ**—खरीदा नहीं। **हाराइया फेलियाछे**—खो दिया है। **कोँचाइया**—उमेठ कर (चुन्नट डाल कर)। **परियाछेन**—पहनी है। **ताहार पर**—उसके वाद।

हठात् ताँहार कल्पनाशक्तिते जोगाइया उठे नाइ—रासमणि निजेइ सेटुकु पूरण करिया बलियाछेन—"निश्चयइ तुमि तोमार बाहिरेर बैठकखानार घरे छाड़िया राखियाछिले, सेखाने ये खुशि आसे याय, के चुरि करिया लइयाछे।"

भवानीचरणेर सम्बन्धे एइरूप व्यवस्था। किन्तु, निजेर छेलेके तिनि कोनो अंशेइ स्वामीर समकक्ष वलिया गण्य करितेन ना। से तो ताँहारइ गर्भेर सन्तान—ताहार आवार किसेर वावुयाना! से हइवे शक्तसमर्थ काजेर लोक—अनायासे दुःख सहिबे ओ खाटिया खाइवे। ताहार एटा नहिले चले ना, ओटा नहिले अपमान बोध हय, एमन कथा कोनोमतेइ शोभा पाइबे ना। कालीपद सम्बन्धे रासमणि खाओयापराय खुब मोटारकमइ वराद्द करिया दिलेन। मुड़िगुड़ दियाइ ताहार जलखावार सारिलेन एवं माथा-कान ढाकिया दोलाइ पराइया ताहार शीतनिवारणेर व्यवस्था करिलेन। गुरुमशायके स्वयं डाकिया वलिया दिलेन, छेले येन पड़ाशुनाय किछुमात्र शैथिल्य करिते ना पारे, ताहाके येन विशेषरूपे शासने संयत राखिया शिक्षा देओया हय।

एइखाने बड़ो मुशकिल बाधिल। निरीहस्वभाव भवानीचरण माझे माझे विद्रोहेर लक्षण प्रकाश करिते लागिलेन, किन्तु रासमणि येन ताहा देखियाओ देखिते पाइलेन ना। भवानी प्रबल पक्षेर काछे चिरदिनइ हार मानियाछेन, एवारेओ ताँहाके अगत्या हार मानिते हइल, किन्तु मन हइते ताँहार विरुद्धता घुचिल ना।

जोगाइया...नाइ—(सूझ में) न आ सका। **घरे छाड़िया**—कमरे में उतार कर।

वावुयाना—बाबूपन। **शक्तसमर्थ काजेर**—दृढ़, समर्थ, कर्मठ। **खाटिया खाइवे**—मेहनत करके खाएगा। **एटा नहिले**—यह न होने से। **ओटा**—वह। **वराद्द**—निर्धारित। **मुड़िगुड़ दियाइ**—मुरमुरे और गुड़ से ही। **जलखावार सारिलेन**—नाश्ता निवटा दिया। **माथा**—सिर। **दोलाइ**—दुलाई, दोहर। **डाकिया**—बुला कर। **पड़ाशुनाय**—लिखने-पढ़ने में। **शासने**—अनुशासन में।

बाधिल—उठ खड़ी हुई। **अगत्या**—बाध्य हो कर। **घुचिल ना**—लुप्त नहीं हुआ, गया नहीं।

ए घरेर छेले दोलाइ मुड़ि दिया गुड़मुड़ि खाय, एमन विसदृश दृश्य दिनेर पर दिन कि देखा याय।

पूजार समय ताँहार मने पड़े, कर्तादेर आमले नूतन साजसज्जा परिया ताँहारा किरूप उत्साह बोध करियाछेन। पूजार दिने रासमणि कालीपदर जन्य ये सस्ता कापड़-जामार व्यवस्था करियाछेन सावेक काले ताँहादेर वाड़िर भृत्यराओ ताहाते आपत्ति करित। रासमणि स्वामीके अनेक करिया वुझाइवार चेष्टा करियाछेन ये, "कालीपदके याहा देओया याय ताहातेइ से खुशि हय, से तो सावेक दस्तुरेर कथा किछु जाने ना—तुमि केन मिछामिछि मन भार करिया थाक।" किन्तु, भवानीचरण किछुतेइ भुलिते पारेन ना ये, वेचारा कालीपद आपन वंशेर गौरव जाने ना बलिया ताहाके ठकानो हइतेछे। वस्तुत सामान्य उपहार पाइया से यखन गर्वे ओ आनन्दे नृत्य करिते करिते ताँहाके छुटिया देखाइते आसे तखन ताहातेइ भवानीचरणके येन आरओ आघात करिते थाके। तिनि से किछुतेइ देखिते पारेन ना। ताँहाके मुख फिराइया चलिया याइते हय।

भवानीचरणेर मकद्दमा चालाइवार पर हइते ताँहादेर गुरुठाकुरेर घरे वेश किञ्चित् अर्थसमागम हइयाछे। ताहातेइ सन्तुष्ट ना थाकिया गुरुपुत्रटि प्रति वत्सर पूजार किछु पूर्वे कलिकाता हइते नानाप्रकार चोख-भोलानो सस्ता शौखिन जिनिस आनाइया कयेक मासेर जन्य व्यवसाय चालाइया थाकेन। अदृश्य

मुड़ि दिया—सिर पर ओढ़ कर।

पूजार समय—दशहरे का अवसर। **कर्तादेर आमले**—गृहपति के राज में। **कापड़-जामार**—कपड़े-लत्तों की। **सावेक काले**—पुराने जमाने में। **अनेक....वुझाइवार**—वहुत तरह से समझाने की। **याहा**—जो। **ताहातेइ**—उसी से। **सावेक दस्तुरेर**—पुराने रिवाज, चाल-चलन की। **मिछामिछि**—झूठमूठ। **वलिया**—इस कारण। **ठकानो हइतेछे**—धोखा दिया जा रहा है। **छुटिया**—दौड़ते हुए।

पर हइते—वाद से। **गुरुठाकुरेर घरे**—पारिवारिक पुरोहित के घर में। **चोख-भोलानो**—नेत्राकर्षक। **शौखिन जिनिस**—फैंसी वस्तुएँ। **अदृश्य कालि**—दिखाई न पड़ने वाली स्याही।

कालि, छिप-छड़ि-छातार एकत्र समवाय, छवि-आँका चिठिर कागज, निलामे-केना नाना रङेर पचा रेशम ओ साटिनेर थान, कविता-लेखा पाड़ओयाला शाड़ि प्रभृति लइया तिनि ग्रामेर नरनारीर मन उतला करिया देन। कलिकातार बाबुमहले आजकाल एइ-समस्त उपकरण ना लइले भद्रता रक्षा हय ना शुनिया ग्रामेर उच्चाभिलाषी व्यक्तिमात्रइ आपनार ग्राम्यता घुचाइबार जन्य साध्यातिरिक्त व्यय करिते छाड़ेन ना।

एकबार बगलाचरण एकटा अत्याश्चर्य मेमेर मूर्ति आनियाछिलेन। तार कोन्-एक जायगाय दम दिले मेम चौकि छाड़िया उठिया दाँड़ाइया प्रबल वेगे निजेके पाखा करिते थाके।

एइ वीजनपरायण ग्रीष्मकातर मेममूर्तिटिर प्रति कालीपदर अत्यन्त लोभ जन्मिल। कालीपद ताहार माके बेश चेने, एइजन्य मार काछे किछु ना बलिया भवानीचरणेर काछे करुणकण्ठे आवेदन उपस्थित करिल। भवानीचरण तखनइ उदारभावे ताहाके आश्वस्त करिलेन, किन्तु ताहार दाम शुनिया ताँहार मुख शुकाइया गेल।

टाकाकड़ि आदायओ करेन रासमणि, तहबिलओ ताँहार काछे, खरचओ ताँहार हात दियाइ हय। भवानीचरण भिखारिर मतो ताँहार अन्नपूर्णार द्वारे गिया उपस्थित हइलेन। प्रथमे विस्तर अप्रासङ्गिक कथा आलोचना करिया अवशेषे एक समये धाँ करिया आपनार मनेर इच्छाटा बलिया फेलिलेन।

छिप-छड़ि. . . .समवाय—पतली छड़ी और छाते का सम्मिलित रूप। **पचा**—सड़े-गले। **साटिनेर**—साटन का। **पाड़-ओयाला**—किनारीदार। **उतला**—चंचल। **बाबुमहले**—बाबुओं की दुनिया में। **घुचाइबार जन्य**—मिटाने के लिए। **करिते छाड़ेन ना**—किए बिना न रहते।

मेमेर—मेम की। **दम दिले**—चाबी देने पर। **चौकि**—चौकी, कुर्सी। **पाखा**—पंखा।

बेश चेने—भली-भाँति जानता है। **मार काछे**—मा से।

टाकाकड़ि—रुपया-पैसा। **तहबिलओ**—नकद रुपया-पैसा भी। **धाँ करिया**—हठात्, चट से।

रासमणि अत्यन्त संक्षेपे वलिलेन, "पागल हइयाछ !"

भवानीचरण चुप करिया खानिकक्षण भाविते लागिलेन। ताहार परे हठात् वलिया उठिलेन, "आच्छा देखो, भातेर सङ्गे तुमि ये रोज आमाके घि आर पायस दाओ, सेटार तो प्रयोजन नाइ !"

रासमणि वलिलेन, "प्रयोजन नाइ तो की।"

भवानीचरण कहिलेन, "कविराज वले, उहाते पित्तवृद्धि हय।"

रासमणि तीक्ष्णभावे माथा नाड़िया कहिलेन, "तोमार कविराज तो सव जाने !"

भवानीचरण कहिलेन, "आमि तो वलि, रात्रे आमार लुचि वन्ध करिया भातेर व्यवस्था करिया दिले भालो हय। उहाते पेट भार करे।"

रासमणि कहिलेन, "पेट भार करिया आज पर्यन्त तोमार तो कोनो अनिष्ट हइते देखिलाम ना। जन्मकाल हइते लुचि खाइयाइ तो तुमि मानुष।"

भवानीचरण सर्वप्रकार त्यागस्वीकार करितेइ प्रस्तुत—किन्तु, से दिके भारि कड़ाक्कड़। घियेर दर वाड़ितेछे तवु लुचिर संख्या ठिक समानइ आछे। मध्याह्नभोजने पायसटा यखन आछेइ तखन दइटा ना दिले कोनो क्षतिइ हय ना—किन्तु, वाहुल्य हइलेओ ए वाड़िते वावुरा वरावर दइ पायस खाइया आसियाछेन। कोनोदिन भवानीचरणेर भोगे सेइ चिरन्तन दधिर अनटन देखिले रासमणि किछुतेइ ताहा सह्य करिते पारेन ना। अतएव गाये-हओया-लागानो सेइ मेममूर्तिटि भवानीचरणेर दइ पायस घि

पायस—खीर।
माथा नाड़िया—सिर हिलाते हुए।
लुचि—पूरी।
मानुष—वड़े हुए हो।
कड़ाक्कड़—कठोरता। घियेर—घी की। दइटा—दही। अनटन—अभाव। गाये-हओया-लागानो—खुद (शरीर) को पंखा झलने वाली।

लुचिर कोनो छिद्रपथ दिया ये प्रवेश करिवे एमन उपाय देखा गेल ना।

भवानीचरण ताँहार गुरुपुत्रेर बासाय एकदिन येन नितान्त अकारणेइ गेलेन एवं विस्तर अप्रासङ्गिक कथार पर सेइ मेमेर खबरटा जिज्ञासा करिलेन। ताँहार वर्तमान आर्थिक दुर्गतिर कथा बगलाचरणेर काछे गोपन थाकिबार कोनो कारण नाइ ताहा तिनि जानेन; तबु आज ताँहार टाका नाइ बलिया ए एकटा सामान्य खेलना तिनि ताँहार छेलेर जन्य किनिते पारितेछेन ना, ए कथार आभास दितेओ ताँहार येन माथा छिँड़िया पड़िते लागिल। तबु दुःसह संकोचकेओ अधःकृत करिया तिनि ताँहार चादरेर भितर हइते कापड़े-मोड़ा एकटि दामि पुरातन जामियार बाहिर करिलेन। रुद्धप्राय कण्ठे कहिलेन, "समयटा किछु खाराप पड़ियाछे, नगद टाका हाते बेशि नाइ—ताइ मने करियाछि, एइ जामियारटि तोमार काछे बन्धक राखिया सेइ पुतुलटा कालीपदर जन्य लइया याइब।"

जामियारेर चेये अल्प दामेर कोनो जिनिस यदि हइत तबे बगलाचरणेर बाधित ना—किन्तु से जानित, एटा हजम करिया उठिते पारिबे ना—ग्रामेर लोकेरा तो निन्दा करिबेइ, ताहार उपरे रासमणिर रसना हइते याहा बाहिर हइबे ताहा सरस हइबे ना। जामियारटाके पुनराय चादरेर मध्ये गोपन करिया हताश हइया भवानीचरणके फिरिते हइल।

कालीपद पिताके रोज जिज्ञासा करे, "बाबा, आमार सेइ मेमेर की हइल।"

टाका—रुपये। **खेलना**—खिलौना। **किनिते पारितेछेन ना**—खरीद नहीं पा रहे। **छिँड़िया**—फटने। **अधःकृत करिया**—दबा कर। **दामि**—कीमती। **जामियार**—(जिस शाल की सारी जमीन कढ़ी हुई है) **पुतुलटा**—गुड़िया।

चेये—अपेक्षा। **जिनिस**—वस्तु। **बाधित ना**—बाधा, आपत्ति न होती।

भवानीचरण रोजइ हासिमुखे बलेन, "रोस—एखनइ की। सप्तमी पूजार दिन आगे आसुक।"

प्रतिदिनइ मुखे हासि टानिया आना दुःसाध्यकर हइते लागिल। आज चतुर्थी। भवानीचरण असमये अन्तःपुरे की-एकटा छुता करिया गेलेन। येन हठात् कथाप्रसङ्गे रासमणिके वलिया उठिलेन, "देखो, आमि कयदिन हइते लक्ष्य करिया देखियाछि, कालीपदर शरीरटा येन दिने-दिने खाराप हइया याइतेछे।"

रासमणि कहिलेन, "वालाइ! खाराप हइते याइबे केन। ओर तो आमि कोनो असुख देखि ना।"

भवानीचरण कहिलेन, "देख नाइ! ओ चुप करिया वसिया थाके। की येन भावे।"

रासमणि कहिलेन, "ओ एकदण्ड चुप करिया वसिया थाकिले आमि तो बाँचिताम। ओर आवार भावना! कोथाय की दुष्टामि करिते हइबे, ओ सेइ कथाइ भावे।"

दुर्गप्राचीरेर ए दिकटातेओ कोनो दुर्बलता देखा गेल ना—पाथरेर उपरे गोलार दागओ वसिल ना। निश्वास फेलिया माथाय हात बुलाइते बुलाइते भवानीचरण बाहिरे चलिया आसिलेन। एकला घरेर दाओयाय वसिया खुव कषिया तामाक खाइते लागिलेन।

पञ्चमीर दिने ताँहार पाते दइ पायस अमनि पड़िया रहिल।

रोस्—सब्र कर। आगे आसुक—(तो) पहले आए।
हासि टानिया आना—जबरदस्ती हँसी झलकाना।
छुता—बहाना।
वालाइ—(अशुभ उक्ति के खण्डन के लिए प्रयुक्त शब्द)।
की येन भावे—न जाने क्या सोचता रहता है।
एकदण्ड—कुछ देर। आमि तो बाँचिताम—तो मेरी जान बचती।
दुष्टामि—शरारत।
बुलाइते-बुलाइते—फिराते-फिराते। दाओयाय—बरामदे में। खुब कषिया—ज़ोर-ज़ोर से (कश लगाने लगे)।
पाते—पत्तल में।

सन्ध्यावेलाय शुधु एकटा सन्देश खाइयाइ जल खाइलेन, लुचि छुँइते पारिलेन ना। बलिलेन, क्षुधा एकेबारेइ नाइ।

एबार दुर्गप्राचीरेर मस्त एकटा छिद्र देखा दिल। पष्ठीर दिने रासमणि स्वयं कालीपदके निभृते डाकिया लइया ताहार आदरेर डाक-नाम धरिया बलिलेन, "भेँटु, तोमार एत वयस हइयाछे, तबु तोमार अन्याय आबदार घुचिल ना! छि छि! येटा पाइबार उपाय नाइ सेटाके लोभ करिले अर्धेक चुरि करा हय, ता जान!"

कालीपद नाकी सुरे कहिल, "आमि की जानि। बाबा ये बलियाछेन, ओटा आमाके देबेन।"

तखन बाबार बलार अर्थ की रासमणि ताहा कालीपदके बुझाइते बसिलेन। पितार एइ बलार मध्ये ये कत स्नेह, कत वेदना, अथच एइ जिनिसटा दिते हइले ताँहादेर दरिद्रघरेर कत क्षति, कत दुःख, ताहा अनेक करिया बलिलेन। रासमणि एमन करिया कोनोदिन कालीपदके किछु बुझान नाइ—तिनि याहा करितेन, खुब संक्षेपे एवं जोरेर सङ्गेइ करितेन—कोनो आदेशके नरम करिया तुलिबार आवश्यकइ ताँर छिल ना। सेइजन्य कालीपदके तिनि ये आज एमनि मिनति करिया, एत विस्तारित करिया कथा बलितेछेन ताहाते से आश्चर्य हइया गेल, एवं मातार मनेर एक जायगाय ये कतटा दरद आछे बालक हइयाओ एकरकम करिया से ताहा बुझिते पारिल। किन्तु मेमेर दिक हइते मन एक मुहूर्ते फिराइया आना कत कठिन, ताहा वयस्क

सन्देश—(छेने से बनी हुई एक प्रकार की बंगाली मिठाई)।
आदरेर...धरिया—प्यार से पुकारने का नाम ले कर। **आबदार....ना**—हठ गया नहीं।

नाकी सुरे—नकियाते हुए। **ओटा**—वह।

बलार—कहने का। **बुझाइते बसिलेन**—समझाने बैठीं। **जिनिसटा**—वस्तु। **एमन करिया**—इस प्रकार से। **बुझान नाइ**—समझाया नहीं। **मिनति**—विनति। **दरद**—ममता। **एकरकम करिया**—एक प्रकार से। **फिराइया आना**—लौटा या हटा लेना।

पाठकदेर बुझिते कष्ट हइबे ना। ताइ कालीपद मुख अत्यन्त गम्भीर करिया एकटा काठि लइया माटिते आँचड़ काटिते लागिल।

तखन रासमणि आवार कठिन हइया उठिलेन; कठोर स्वरे कहिलेन, "तुमि रागइ कर आर कान्नाकाटिइ कर, याहा पाइवार नय ताहा कोनोमतेइ पाइवे ना।"

एइ वलिया आर वृथा समय नष्ट ना करिया द्रुतपदे गृहकर्मे चलिया गेलेन।

कालीपद वाहिरे गेल। तखन भवानीचरण एकला वसिया तामाक खाइतेछिलेन। दूर हइते कालीपदके देखियाइ तिनि ताड़ाताड़ि उठिया येन एकटा विशेष काज आछे, एमनि भावे कोथाय चलिलेन। कालीपद छुटिया आसिया कहिल, "वावा, आमार सेइ मेम—"

आज आर भवानीचरणेर मुखे हासि वाहिर हइल ना; कालीपदर गला जड़ाइया धरिया कहिलेन, "रोस्, वावा, आमार एकटा काज आछे—सेरे आसि, तार परे सव कथा हबे।"—वलिया तिनि वाड़िर वाहिर हइया पड़िलेन। कालीपदर मने हइल, तिनि येन ताड़ाताड़ि चोख हइते जल मुछिया फेलिलेन।

तखन पाड़ार एक वाड़िते परीक्षा करिया उत्सवेर वाँशिर वायना करा हइतेछिल। सेइ रसनचौकिते सकालवेलाकार करुण सुरे शरतेर नवीन रौद्र येन प्रच्छन्न अश्रुभारे व्यथित हइया उठितेछिल। कालीपद ताहादेर वाड़िर दरजार काछे

काठि—तीली, सींक। आँचड़....लागिल—लकीरें खींचने लगा।

रागइ कर....कर—चाहे गुस्सा करो या रोओ-पीटो। कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी।

ताड़ाताड़ि—जल्दी से।

छुटिया आसिया—दौड़ते हुए आ कर।

रोस्—सब्र करो। सेरे आसि—निवटा आऊँ। तार परे—उसके वाद।

वायना—वयाना। रसनचौकिते—शहनाई से। रौद्र—धूप। दरजार....वाँड़ाइया—दरवाजे के निकट खड़े-खड़े।

दाँड़ाइया चुप करिया पथेर दिके चाहिया रहिल। ताहार पिता ये कोनो काजेइ कोथाओ याइतेछेन ना, ताहा ताँहार गति देखियाइ बुझा याय—प्रति पदक्षेपेइ तिनि ये एकटा नैराश्येर बोझा टानिया टानिया चलियाछेन एवं ताहा कोथाओ फेलिवार स्थान नाइ, ताहा ताँहार पश्चात् हइतेओ स्पष्ट देखा याइतेछिल।

कालीपद अन्तःपुरे फिरिया आसिया कहिल, "मा, आमार सेइ पाखा-करा मेम चाइ ना।"

मा तखन जाँति लइया क्षिप्रहस्ते सुपारिकाटितेछिलेन। ताँहार मुख उज्ज्वल हइया उठिल। छेलेते मायेते सेइखाने वसिया की एकटा परामर्श हइया गेल ताहा केहइ जानिते पारिल ना। जाँति धरिया धामा-भरा काटा ओ आकाटा सुपुरि फेलिया रासमणि तखनइ वगलाचरणेर वाड़ि चलिया गेलेन।

आज भवानीचरणेर बाड़ि फिरिते अनेक वेला हइल। स्नान सारिया यखन तिनि खाइते वसिलेन तखन ताँहार मुख देखिया वोध हइल, आजओ दधि-पायसेर सद्गति हइवे ना, एमन-कि माछेर मुड़ाटा आज सम्पूर्णइ विड़ालेर भोगे लागिवे।

तखन दड़ि दिया मोड़ा कागजेर एक वाक्स लइया रासमणि ताँहार स्वामीर सम्मुखे आनिया उपस्थित करिलेन। आहारेर परे यखन भवानीचरण विश्राम करिते याइवेन तखनइ एइ रहस्यटा तिनि आविष्कार करिवेन, इहाइ रासमणिर इच्छा छिल, किन्तु दधि-पायस ओ माछेर मुड़ार अनादर दूर करिवार जन्य एखनइ

चाहिया रहिल—ताकता रहा। बुझा याय—समझ में आ जाता है। टानिया टानिया—खींचते हुए।

पाखा करा—पंखा झलने वाली।

जाँति लइया—सरौता ले कर। छेलेते मायेते—माँ-बेटे में। धामा—(बेंत से वनी हुई टोकरी)। आकाटा सुपुरि—विना कटी सुपारियाँ। फेलिया—छोड़ कर।

सारिया—निवटा कर। मुड़ाटा—सिर।
दड़ि दिया—सुतली या धागे से।

एटा बाहिर करिते हइल। बाक्सेर भितर हइते सेइ मेम-मूर्ति बाहिर हइया बिना विलम्बे, प्रबल उत्साहे आपन ग्रीष्मताप-निवारणे लागिया गेल। बिड़ालके आज हताश हइया फिरिते हइल। भवानीचरण गृहिणीके बलिलेन, "आज रान्नाटा बड़ो उत्तम हइयाछे। अनेकदिन एमन माछेर झोल खाइ नाइ। आर, दइटा ये की चमत्कार जमियाछे से आर की बलिब।"

सप्तमीर दिन कालीपद ताहार अनेक दिनेर आकाङ्क्षर धन पाइल। सेदिन समस्त दिन से मेमेर पाखा-खाओया देखिल, ताहार समवयसी बन्धुबान्धवदिगके देखाइया ताहादेर ईर्षार उद्रेक करिल। अन्य कोनो अवस्थाय हइले समस्तक्षण एइ पुतुलेर एकघेये पाखा-नाड़ाय से निश्चयइ एक दिनेइ विरक्त हइया याइत—किन्तु अष्टमीर दिनेइ प्रतिमा विसर्जन दिते हइबे जानिया ताहार अनुराग अटल हइया रहिल। रासमणि ताँहार गुरुपुत्रके दुइ टाका नगद दिया केवल एक दिनेर जन्य एइ पुतुलटि भाड़ा करिया आनियाछिलेन। अष्टमीर दिने कालीपद दीर्घ निश्वास फेलिया स्वहस्ते बाक्स समेत पुतुलटि बगलाचरणेर काछे फिराइया दिया आसिल। एइ एक दिनेर मिलनेर सुखस्मृति अनेकदिन ताहार मने जागरूक हइया रहिल, ताहार कल्पनालोके पाखा चलार आर विराम रहिल ना।

एखन हइते कालीपद मातार मन्त्रणार सङ्गी हइया उठिल एवं एखन हइते भवानीचरण प्रतिवत्सरइ एत सहजे एमन मूल्यवान पूजार उपहार कालीपदके दिते पारितेन ये, तिनि निजेइ आश्चर्य हइया याइतेन।

रान्नाटा—भोजन। झोल—रसा। से....बलिब—उसके बारे में क्या कहना।

पुतुलेर....पाखा-नाड़ाय—गुड़िया के उवा देने वाले (कार्य) पंखा झलने से। भाड़ा करिया—किराये पर।

एखन हइते—अब से।

पृथिवीते मूल्य ना दिया ये किछुइ पाओया याय ना एवं से मूल्य ये दुःखेर मूल्य, मातार अन्तरङ्ग हइया से कथा कालीपद प्रतिदिन यतइ बुझिते पारिल ततइ देखिते देखिते से येन भितरेर दिक हइते बड़ो हइया उठिते लागिल। सकल काजेइ एखन से तार मातार दक्षिणपार्श्वे आसिया दाँड़ाइल। संसारेर भार बहिते हइबे, संसारेर भार बाड़ाइते हइबे ना, ए कथा विना उपदेशवाक्येइ ताहार रक्तेर सङ्गेइ मिशिया गेल।

जीवनेर दायित्व ग्रहण करिबार जन्य ताहाके प्रस्तुत हइते हइबे, एइ कथा स्मरण राखिया कालीपद प्राणपणे पड़िते लागिल। छात्रवृत्ति परीक्षाय उत्तीर्ण हइया यखन से छात्रवृत्ति पाइल तखन भवानीचरण मने करिलेन, आर बेशि पड़ाशुनार दरकार नाइ। एखन कालीपद ताँहादेर विषयकर्म देखाय प्रवृत्त हउक।

कालीपद माके आसिया कहिल, "कलिकाताय गिया पड़ाशुना ना करिते पारिले आमि तो मानुष हइते पारिब ना।"

मा बलिलेन, "से तो ठिक कथा, बाबा। कलिकाताय तो याइतेइ हइबे।"

कालीपद कहिल, "आमार जन्य कोनो खरच करिते हइबे ना। ए वृत्ति हइतेइ चालाइया दिब—एवं किछु काजकर्मेरओ जोगाड़ करिया लइब।"

भवानीचरणके राजि कराइते अनेक कष्ट पाइते हइल। देखिबार मतो विषयसम्पत्ति ये किछुइ नाइ, से कथा बलिले भवानीचरण अत्यन्त दुःखबोध करेन, ताइ रासमणिके से युक्तिटा

यतइ बुझिते पारिल—जितना ही (अधिक) समझ सका। आसिया दाँड़ाइल—आ खड़ा हुआ। बहिते हइबे—वहन करना होगा। बाड़ाइते—बढ़ाना। मिशिया गेल—घुल-मिल गई।

पड़िते लागिल—पढ़ने लगा। पड़ाशुनार—लिखने-पढ़ने की। दरकार—आवश्यकता।

मानुष......ना—अपने पैरों पर खड़ा न हो सकूंगा।
चालाइया दिब—(काम) चला लूंगा। जोगाड़—व्यवस्था।

चापिया याइते हइल। तिनि वलिलेन, "कालीपदके तो मानुष हइते हइवे।" किन्तु, पुरुषानुक्रमे कोनोदिन शानियाड़िर वाहिरे ना गियाइ तो चौवुरीरा एतकाल मानुष हइयाछे। विदेशके ताँहारा यमपुरीर मतो भय करेन। कालीपदर मतो वालकके एकला कलिकाताय पाठाइवार प्रस्तावमात्र की करिया काहारओ माथाय आसिते पारे, तिनि भाविया पाइलेन ना। अवशेषे ग्रामेर सर्वप्रधान वुद्धिमान व्यक्ति वगलाचरण पर्यन्त रासमणिर मते मत दिल। से वलिल, "कालीपद एकदिन उकिल हइया सेइ उइल-चुरि फाँकिर शोध दिवे, निश्चयइ ए ताहार भाग्येर लिखन—अतएव कलिकाताय याओया हइते केहइ ताहाके निवारण करिते पारिवे ना।"

ए कथा शुनिया भवानीचरण अनेकटा सान्त्वना पाइलेन। गामछाय वाँधा पुरानो समस्त नथि वाहिर करिया उइल-चुरि लइया कालीपदर सङ्गे वारवार आलोचना करिते लागिलेन। सम्प्रति मातार मन्त्रीर काजटा कालीपद वेश विचक्षणतार सङ्गेइ चालाइतेछिल, किन्तु पितार मन्त्रणासभाय से जोर पाइल ना। केनना, ताहादेर परिवारेर एइ प्राचीन अन्यायटा सम्वन्धे ताहार मने यथेष्ट उत्तेजना छिल ना। तवु से पितार कथाय साय दिया गेल। सीताके उद्धार करिवार जन्य वीरश्रेष्ठ राम येमन लङ्काय यात्रा करियाछिलेन, कालीपदर कलिकाताय यात्राकेओ भवानीचरण तेमनि खुव वड़ो करिया देखिलेन—से केवल सामान्य पास करार व्यापार नय—घरेर लक्ष्मीके घरे फिराइया आनिवार आयोजन।

चापिया याइते हइल—दवा जाना पड़ा। माथाय आसिते पारे—सूझ सकता है। मते मत दिल—वात का समर्थन किया। उकिल—वकील। फाँकिर—धोखे का। लिखन—लेख।

गामछाय—अँगोछे में। नथि—नत्थी कागज-पत्र। आलोचना—चर्चा। केनना—क्योंकि। साय दिया गेल—समर्थन करता गया। पास करार—(परीक्षा भर) पास कर लेने का। फिराइया आनिवार—लौटा लाने का।

कलिकाताय याइवार आगेर दिन रासमणि कालीपदर गलाय एकटि रक्षाकवच झुलाइया दिलेन; एवं ताहार हाते एकटि पञ्चाश टाकार नोट दिया वलिया दिलेन, "एइ नोटटि राखियो, आपदे-विपदे प्रयोजनेर समय काजे लागिवे।" संसार-खरच हइते अनेक कष्टे जमानो एइ नोटटिकेइ कालीपद यथार्थ पवित्र कवचेर न्याय ज्ञान करिया ग्रहण करिल—एइ नोटटिके मातार आशीर्वादेर मतो से चिरदिन रक्षा करिवे, कोनोदिन खरच करिवे ना, एइ से मने मने संकल्प करिल।

३

भवानीचरणेर मुखे उइल-चुरिर कथाटा एखन आर तेमन शोना याय ना। एखन ताँहार एकमात्र आलोचनार विषय कालीपद। ताहारइ कथा वलिवार जन्य तिनि एखन समस्त पाड़ा घुरिया वेड़ान। ताहार चिठि पाइले घरे घरे ताहा पड़िया शुनाइवार उपलक्षे नाक हइते चशमा आर नामिते चाय ना। कोनोदिन एवं कोनो पुरुषे कलिकाताय यान नाइ वलियाइ कलि-कातार गौरवबोधे ताँहार कल्पना अत्यन्त उत्तेजित हइया उठिल। आमादेर कालीपद कलिकाताय पड़े एवं कलिकातार कोनो संवादइ ताहार अगोचर नाइ—एमन-कि, हुगलिर काछे गङ्गार उपर द्वितीय आर-एकटा पुल वाँधा हइतेछे, ए-समस्त वड़ो वड़ो खवर ताहार काछे नितान्त घरेर कथा मात्र। "शुनेछ, भाया? गङ्गार उपर आर-एकटा ये पुल वाँधा हच्छे—आजइ कालीपदर चिठि पेयेछि, ताते समस्त खवर लिखेछे।"—वलिया चशमा

आगेर दिन—पहले दिन। झुलाइया दिलेन—डाल दिया। हइते—से। एइ—यही।

तेमन—उस तरह। पाड़ा घुरिया वेड़ान—मुहल्ले में चक्कर लगाते फिरते हैं। नामिते चाय ना—उतरना नहीं चाहता। पुरुषे—पीढ़ी में (कोई)। यान नाइ—गए नहीं। पड़े—पढ़ता है। एमन-कि—यहाँ तक कि। काछे—निकट। शुनेछ भाया—सुना भाई।

खुलिया ताहार काँच भालो करिया मुछिया चिठिखानि अति धीरे धीरे आद्योपान्त प्रतिवेशीके पड़िया शुनाइलेन। "देखछ भाया! काले काले कतइ ये की हवे तार ठिकाना नेइ। शेषकाले धुलोपाये गङ्गार उपर दिये कुकुर-शेयालगुलोओ पार हये यावे, कलिते एओ घटल हे!" गङ्गार एइरूप माहात्म्यखर्व निःसन्देहइ शोचनीय व्यापार, किन्तु कालीपद ये कलिकालेर एतबड़ो एकटा जयवार्ता ताँहाके लिपिवद्ध करिया पाठाइयाछे एवं ग्रामेर नितान्त अज्ञ लोकेरा ए खबरटा ताहारइ कल्याणे जानिते पारियाछे, सेइ आनन्दे तिनि वर्तमान युगे जीवेर असीम दुर्गतिर दुश्चिन्ताओ अनायासे भुलिते पारिलेन। याहार देखा पाइलेन ताहारइ काछे माथा नाड़िया कहिलेन, "आमि वले दिच्छि, गङ्गा आर वेशि दिन नाइ।" मने मने एइ आशा करिया रहिलेन, गङ्गा यखनइ याइवार उपक्रम करिवेन तखनइ से खबरटा सर्वप्रथमे कालीपदर चिठि हइतेइ पाओया याइवे।

ए दिके कलिकाताय कालीपद बहु कष्टे परेर बासाय थाकिया छेले पड़ाइया, रात्रे हिसावेर खाता नकल करिया, पड़ाशुना चालाइते लागिल। कोनोमते एन्ट्रेन्स परीक्षा पार हइया पुनराय से वृत्ति पाइल। एइ आश्चर्य घटना-उपलक्षे समस्त ग्रामेर लोकके प्रकाण्ड एकटा भोज दिवार जन्य भवानीचरण व्यस्त हइया पड़िलेन। तिनि भाविलेन, तरी तो प्राय कूले आसिया भिड़िल—सेइ साहसे एखन हइते मन खुलिया खरच करा याइते पारे। रासमणिर काछे कोनो उत्साह ना पाओयाते भोजटा बन्ध रहिल।

मुछिया—पोंछ कर। **प्रतिवेशीके**—पड़ोसी को। **शेषकाले**—अन्त में। **धुलोपाये**—धूलिधूसरित पैरों से। **शेयालगुलोओ**—सियार (बहुवचन) भी। **कलिते**—कलियुग में। **एओ**—यह भी। **कल्याणे**—वदौलत। **माथा नाड़िया**—सिर हिला कर। **वले दिच्छि**—कहे देता हूँ।

परेर....पड़ाइया—दूसरे के घर पर रह कर, लड़कों को पढ़ा कर। **व्यस्त**—अधीर। **आसिया भिड़िल**—आ लगी।

कालीपद एबार कलेजेर काछे एकटि मेसे आश्रय पाइल। मेसेर यिनि अधिकारी तिनि ताहाके नीचेर तलार एकटि अव्यवहार्य घरे थाकिते अनुमति दियाछेन। कालीपद बाड़िते ताँहार छेलेके पड़ाइया दुइवेला खाइते पाय एवं मेसेर सेइ स्याँत्सेँते अन्धकार घरे ताहार बासा। घरटार एकटा मस्त सुविधा एइ ये, सेखाने कालीपदर भागी केह छिल ना। सुतरां, यदिच सेखाने बातास चलित ना तबु पड़ाशुना अबाधे चलित। येमनइ हउक, सुविधा-असुविधा विचार करिबार अवस्था कालीपदर नहे।

ए मेसे याहारा भाड़ा दिया वास करे, विशेषत याहारा द्वितीय तलेर उच्चलोके थाके, ताहादेर सङ्गे कालीपदर कोनो सम्पर्क नाइ। किन्तु, सम्पर्क ना थाकिलेओ संघात हइते रक्षा पाओया याय ना। उच्चेर वज्राघात निम्नेर पक्षे कतदूर प्राणान्तिक, कालीपदर ताहा बुझिते विलम्ब हइल ना।

एइ मेसेर उच्चलोके इन्द्रेर सिंहासन याहार, ताहार परिचय आवश्यक। ताहार नाम शैलेन्द्र। से बड़ोमानुषेर छेले; कलेजे पड़िबार समय मेसे थाका ताहार पक्षे अनावश्यक—तबु से मेसे थाकितेइ भालोबासित।

ताहादेर बृहत् परिवार हइते कयेकजन स्त्री ओ पुरुष-जातीय आत्मीयके आनाइया कलिकाताय एकटि बासा भाड़ा करिया थाकिबार जन्य बाड़ि हइते अनुरोध आसियाछिल—से ताहाते कोनोमतेइ राजि हय नाइ।

मेसे—मेस में। **यिनि**—जो। **तिनि**—वे। **नीचेर तलार**—नीचे की मंज़िल का। **थाकिते**—रहने की। **छेलेके**—लड़के को। **दुइवेला**—दोनों समय। **स्याँत्सेँते**—सील भरे। **येमनइ हउक**—जैसे भी हो।

संघात—आघात। **बुझिते**—समझने में।

भालोबासित—पसन्द करता था।

कयेकजन—कुछ-एक लोगों। **आनाइया**—ला कर। **थाकिबार**—रहने के। **बाड़ि हइते**—घर से।

से कारण देखाइयाछिल ये, वाड़िर लोकजनेर सङ्गे थाकिले ताहार पड़ाशुना किछुइ हइवे ना। किन्तु, आसल कारणटा ताहा नहे। शैलेन्द्र लोकजनेर सङ्ग खुवइ भालोवासे; किन्तु आत्मीयदेर मुशकिल एइ ये, केवलमात्र ताहादेर सङ्गटि लइया खालास पाओया याय ना, ताहादेर नाना दाय स्वीकार करिते हय—काहारओ सम्बन्धे एटा करिते नाइ, काहारओ सम्बन्धे ओटा ना करिले अत्यन्त निन्दार कथा। एइजन्य शैलेन्द्रेर पक्षे सकलेर चेये सुविधार जायगा मेस। सेखाने लोक यथेष्ट आछे, अथच ताहार उपर ताहादेर कोनो भार नाइ। ताहारा आसे याय, हासे, कथा कय; ताहारा नदीर जलेर मतो, केवलइ वहिया चलिया याय अथच कोथाओ लेशमात्र छिद्र राखे ना।

शैलेन्द्रेर धारणा छिल, से लोक भालो, याहाके वले सहृदय। सकलेइ जानेन, एइ धारणाटिर मस्त सुविधा एइ ये, निजेर काछे इहाके वजाय राखिवार जन्य भालो-लोक हइवार कोनो दरकार करे ना। अहंकार जिनिसटा हाति-घोड़ार मतो नय; ताहाके नितान्तइ अल्प खरचे ओ विना खोराके देश मोटा करिया राखा याय।

किन्तु, शैलेन्द्रेर व्यय करिवार सामर्थ्य ओ प्रवृत्ति छिल—एइजन्य आपनार अहंकारटाके से सम्पूर्ण विना खरचे चरिया खाइते दित ना; दामि खोराक दिया ताहाके सुन्दर सुसज्जित करिया राखियाछिल।

वस्तुत, शैलेन्द्रेर मने दया यथेष्ट छिल। लोकेर दुःख दूर करिते से सत्यइ भालोवासित। किन्तु, एत भालोवासित ये,

---

खालास......ना—मुक्ति नहीं मिलती। दाय—दायित्व। एटा—यह। ओटा—वह। वहिया....याय—वहते चले जाते हैं।

भालो—अच्छा। वजाय—सुरक्षित। जिनिसटा—वस्तु।

एइजन्य—इसीलिए। चरिया......दित ना—चरने नहीं देता था। दामि—महँगी।

सत्यइ भालोवासित—सचमुच (ही) प्रिय, पसन्द था।

यदि केह दुःख दूर करिबार जन्य ताहार शरणापन्न ना हइत ताहाके से विधिमते दुःख ना दिया छाड़ित ना। ताहार दया यखन निर्दय हइया उठित तखन बड़ो भीषण आकार धारण करित।

मेसेर लोकदिगके थियेटार-देखानो, पाँठा-खाओयानो, टाका धार दिया से कथाटाके सर्वदा मने करिया ना राखा—ताहार द्वारा प्रायइ घटित। नवपरिणीत मुग्ध युवक पूजार छुटिते बाड़ि याइबार समय कलिकातार बासाखरच समस्त शोध करिया यखन निःस्व हइया पड़ित तखन वधूर मनोहरणेर उपयोगी शौखिन साबान एवं एसेन्स, आर तारइ सङ्गे एक-आधखानि हालेर आमदानि बिलाति छिटेर ज्याकेट संग्रह करिबार जन्य ताहाके अत्यन्त वेशि दुश्चिन्ताय पड़िते हइत ना। शैलेनेर सुरुचिर उपर सम्पूर्ण निर्भर करिया से बलित, "तोमाकेइ किन्तु भाइ, पछन्द करिया दिते हइबे।" दोकाने ताहाके सङ्गे करिया लइया निजे नितान्त सस्ता एवं बाजे जिनिस बाछिया तुलित ; तखन शैलेन ताहाके भर्त्सना करिया बलित, "आरे छि छि, तोमार किरकम पछन्द।" बलिया सव-चेये शौखिन जिनिसटि टानिया तुलित। दोकानदार आसिया बलित, "हाँ, इनि जिनिस चेनेन बटे।" खरिद्दार दामेर कथा आलोचना करिया मुख विमर्ष करितेइ शैलेन दाम चुकाइबार अकिञ्चित्कर भारटा निजेइ लइत—अपर पक्षेर भूयोभूयः आपत्तितेओ कर्णपात करित ना।

विधिमते—बाक़ायदा।

पाँठा—बकरा। **धार दिया**—उधार दे कर। **बाड़ि**—घर। **शोध करिया**—अदा करके। **शौखिन**—फ़ैसी। **तारइ**—उसीके। **हालेर आमदानि**—हाल ही में (विदेश) से आई हुई। **पछन्द**—पसन्द। **बाजे. . .तुलित**—रद्दी चीज़ छाँट लेता। **सब-चेये**—सबसे। **टानिया—तुलित**—(खींच) निकाल लेता। **इनि**—ये। **चेनेन बटे**—ज़रूर पहचानते हैं। **भूयोभूयः**—बारबार।

एमनि करिया, येखाने शैलेन छिल सेखाने से चारि दिकेर सकलेरइ सकल विषये आश्रयस्वरूप हइया उठियाछिल। केह ताहार आश्रय स्वीकार ना करिले ताहार सेइ औद्धत्य से कोनो-मतेइ सह्य करिते पारित ना। लोकेर हित करिवार शख ताहार एतइ प्रवल।

वेचारा कालीपद नीचेर स्याँत्सेँते घरे मयला मादुरेर उपर वसिया, एकखाना छेँड़ा गेञ्जि परिया, वइयेर पाताय चोख गुँजिया दुलिते दुलिते पड़ा मुखस्थ करित। येमन करिया हउक ताहाके स्कलारशिप पाइतेइ हइवे।

मा ताहाके कलिकाताय आसिवार पूर्वे माथार दिव्य दिया वलिया दियाछिलेन, वड़ोमानुषेर छेलेर सङ्गे मेशामेशि करिया से येन आमोदप्रमोदे मातिया ना ओठे। केवल मातार आदेश वलिया नहे, कालीपदके ये दैन्य स्वीकार करिते हइयाछिल ताहा रक्षा करिया वड़ोमानुषेर छेलेर सङ्गे मेला ताहार पक्षे असम्भव छिल। से कोनोदिन शैलेनेर काछे घेँषे नाइ—एवं यदिओ से जानित, शैलेनेर मन पाइले ताहार प्रतिदिनेर अनेक दुरूह समस्या एक मुहूर्तेइ सहज हइया याइते पारे, तवु कोनो कठिन संकटेओ ताहार प्रसादलाभेर प्रति कालीपदर लोभ आकृष्ट हय नाइ। से आपनार अभाव लइया आपनार दारिद्र्येर निभृत अन्वकारेर मध्ये प्रच्छन्न हइया वास करित।

येखाने—जहाँ। सेखाने—वहाँ। कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। करिते पारित ना—नहीं कर पाता था। शख—शौक।

स्याँत्सेँते.....उपर—सीले हुए कमरे में चटाई पर। छेँड़ा गेञ्जि—फटी हुई वनियान। वइयेर....गुँजिया—पुस्तक के पन्नों पर आँखें गड़ाए। दुलिते-दुलिते—हिल-हिल कर। पड़ा मुखस्थ करित—पाठ याद करता। येमन करिया हउक—जैसे भी हो।

मायार. . . .दिया—सिर की सौगन्ध दिला कर। मेशामेशि करिया—घुल-मिल कर। मातिया ना ओठे—उन्मत्त न हो जाए। वलिया नहे—कारण ही नहीं। काछे. . . .नाइ—पास नहीं फटका। मन पाइले—मन जीत लेने पर।

गरिब हइया तबु दूरे थाकिबे, शैलेन एइ अहंकारटा कोनो-मतेइ सहिते पारिल ना। ताहा छाड़ा, अशने वसने कालीपदर दारिद्र्यटा एतइ प्रकाश्य ये ताहा नितान्त दृष्टिकटु। ताहार अत्यन्त दीनहीन कापड़-चोपड़ एवं मशारि-बिछाना यखनइ दोलतार सिँड़ि उठिते चोखे पड़ित तखनइ सेटा येन एकटा अपराध बलिया मने बाजित। इहार परे, ताहार गलाय ताबिज झुलानो, एवं से दुइसंध्या यथाविधि आह्निक करित। ताहार एइ-सकल अद्भुत ग्राम्यता उपरेर दलेर पक्षे विषम हास्यकर छिल। शैलेनेर पक्षेर दुइ-एकटि लोक एइ निभृतवासी निरीह लोकटिर रहस्य उद्घाटन करिबार जन्य दुइ-चारिदिन ताहार घरे आनागोना करिल। किन्तु, एइ मुखचोरा मानुषेर मुख खुलिते पारिल ना। ताहार घरे बेशिक्षण वसिया थाका सुखकर नहे, स्वास्थ्यकर तो नयइ, काजेइ भङ्ग दिते हइल।

ताहादेर पाँठार मांसेर भोजे एइ अकिञ्चनके एकदिन आह्वान करिले से निश्चय कृतार्थ हइबे, एइ कथा मने करिया अनुग्रह करिया एकदा निमन्त्रणपत्र पाठानो हइल। कालीपद जानाइल, भोजेर भोज्य सह्य करा ताहार साध्य नहे, ताहार अभ्यास अन्यरूप। एइ प्रत्याख्याने दलबल-समेत शैलेन अत्यन्त क्रुद्ध हइया उठिल।

किछुदिन ताहार ठिक उपरेर घरटाते एमनि धुप्धाप शब्द ओ सवेगे गानबाजना चलिते लागिल ये, कालीपदर पक्षे

तबु—फिर भी। थाकिबे—रहेगा। सहिते पारिल ना—सहन न कर सका। ताहा छाड़ा—इसके अतिरिक्त। अशने वसने—आहार और वेशभूषा से, रहन-सहन से। ताहा—वह। कापड़-चोपड़—कपड़े-लत्ते। मशारि—मसहरी। सिँड़ि......पड़ित—सीढ़ियाँ चढ़ते हुए नज़र पड़ता। मने बाजित—खलता। ग्राम्यता—ग्रामीणता, गँवारपन। आनागोना करिल—आते-जाते रहे। वसिया थाका—बैठे रहना। नयइ—नहीं ही है। काजेइ....हइल—इसलिए (आना-जाना) बन्द कर देना पड़ा।

पाँठार—बकरे का। मने करिया—सोच कर। जानाइल—(ने) बताया। प्रत्याख्याने—अस्वीकृति से। धुप्धाप—धमधम।

पड़ाय मन देओया असम्भव हइया उठिल। दिनेर वेलाय से यथासम्भव गोलदिघिते एक गाछेर तले वइ लइया पड़ा करित एवं रात्रि थाकिते उठिया खुव भोरेर दिके एकटा प्रदीप ज्वालिया अध्ययने मन दित।

कलिकाताय आहार ओ वासस्थानेर कष्टे एवं अतिपरिश्रमे कालीपदर एकटा माथा धरार व्यामो उपसर्ग जुटिल। कखनो कखनो एमन हइत, तिन-चारि दिन ताहाके पड़िया थाकिते हइत। से निश्चय जानित, ए सम्वाद पाइले ताहार पिता ताहाके कखनोइ कलिकाताय थाकिते दिवेन ना एवं तिनि व्याकुल हइया हयतो वा कलिकाता पर्यन्त छुटिया आसिवेन। भवानीचरण जानितेन, कलिकाताय कालीपद एमन सुखे आछे याहा ग्रामेर लोकेर पक्षे कल्पना कराओ असम्भव। पाड़ागाँये येमन गाछपाला झोपझाड़ आपनिइ जन्मे कलिकातार हाओयाय सर्वप्रकार आरामेर उपकरण येन सेइरूप आपनिइ उत्पन्न हय एवं सकलेइ ताहार फलभोग करिते पारे, एइ रूप ताँहार एकटा धारणा छिल। कालीपद कोनोमतेइ ताँहार से भुल भाङे नाइ। असुखेर अत्यन्त कष्टेर समयओ से एकदिनओ पिताके पत्र लिखिते छाड़े नाइ। किन्तु, एइरूप पीड़ार दिने शैलेनेर दल यखन गोलमाल करिया भूतेर काण्ड करिते थाकित तखन कालीपदर कष्टेर सीमा थाकित ना। से केवल एपाश-ओपाश करित एवं जन्यशून्य घरे पड़िया माताके डाकित ओ पिताके स्मरण करित। दारिद्र्येर अपमान ओ दुःख

पड़ाय मन देओया—पढ़ने में मन लगाना। **गोलदिघि**—(कलकत्ते का एक स्थान)। **गाछेर......लइया**—वृक्ष के नीचे पुस्तक ले कर। **रात्रि थाकिते**—रात रहते।

माथा धरार व्यामो—सिर-दर्द की व्याधि। **उपसर्ग**—विघ्न, उत्पात। **कखनो**—कभी। **पड़िया...हइत**—पड़े रहना पड़ता। **छुटिया आसिवेन**—दौड़े आएंगे। **पाड़ागाँये**—गँवई-गाँव में। **गाछपाला**—पेड़-पौधे। **झोपझाड़**—झाड़-झंखाड़। **सेइरूप**—उसी प्रकार। **एइरूप**—इसी प्रकार। **भुल भाङे नाइ**—भ्रम नहीं तोड़ा, दूर नहीं किया। **एपाश....करित**—इधर-उधर करवटें वदलता रहता। **डाकित**—टेरता।

एइरूपे यतइ से भोग करित ततइ इहार बन्धन हइते ताहार पितामाताके मुक्त करिबेइ एइ प्रतिज्ञा ताहार मने केवलइ दृढ़ हइया उठित।

कालीपद निजेके अत्यन्त संकुचित करिया सकलेर लक्ष्य हइते सराइया राखिते चेष्टा करिल, किन्तु ताहाते उत्पात किछुमात्र कमिल ना। कोनोदिन वा से देखिल, ताहार चिनाबाजारेर पुरातन सस्ता जुतार एक पाटिर परिवर्ते एकटि अति उत्तम बिलाति जुतार पाटि। एरूप विसदृश जुता परिया कलेजे याओयाइ असम्भव। से ए सम्बन्धे कोनो नालिश ना करिया परेर जुतार पाटि घरेर बाहिरे राखिया दिल एवं जुता-मेरामत-ओयाला मुचिर निकट हइते अल्प दामेर पुरातन जुता किनिया काज चालाइते लागिल। एकदिन उपर हइते एकजन छेले हठात् कालीपदर घरे आसिया जिज्ञासा करिल, "आपनि कि भुलिया आमार घर हइते आमार सिगारेटेर केसटा लइया आसियाछेन। आमि कोथाओ खुँजिया पाइतेछि ना।" कालीपद विरक्त हइया बलिल, "आमि आपनादेर घरे याइ नाइ।" "एइ-ये, एइखानेइ आछे" बलिया सेइ लोकटि घरेर एक कोण हइते मूल्यवान एकटि सिगारेटेर केस् तुलिया लइया आर किछु ना बलिया उपरे चलिया गेल।

कालीपद मने मने स्थिर करिल, 'एफ० ए० परीक्षाय यदि भालोरकम वृत्ति पाइ तबे एइ मेस छाड़िया चलिया याइबे।'

मेसेर छेलेरा मिलिया प्रतिवत्सर धुम करिया सरस्वतीपूजा

यतइ—जितना ही। **ततइ**—उतना ही। **करिबेइ**—करेगा ही।

सराइया—हटा कर। **कमिल ना**—कम न हुआ। **एक पाटिर परिवर्ते**—जोड़ी (जूतों) में से एक की जगह। **नालिश**—शिकायत। **परेर**—दूसरे के। **मेरामतओयाला**—मरम्मत करने वाला। **किनिया**—खरीद कर। **छेले**—लड़का। **घर हइते**—कमरे से। **कोथाओ**—कहीं। **विरक्त हइया**—परेशान हो कर। **कोण हइते**—कोने से। **तुलिया लइया**—उठा कर।

धुम करिया—धूमधाम से।

करे। ताहार व्ययेर प्रधान अंश शैलेन वहन करे, किन्तु सकल छेलेइ चाँदा दिया थाके। गत वत्सर नितान्तइ अवज्ञा करिया कालीपदर काछे केह चाँदा चाहितेओ आसे नाइ। ए वत्सर केवल ताहाके विरक्त करिवार जन्यइ ताहार निकट चाँदार खाता आनिया धरिल। ये दलेर निकट हइते कोनोदिन कालीपद किछुमात्र साहाय्य लय नाइ, याहादेर प्राय नित्य-अनुष्ठित आमोदप्रमोदे योग दिवार सौभाग्य से एकेवारे अस्वीकार करियाछे, ताहारा यखन कालीपदर काछे चाँदार साहाय्य चाहिते आसिल तखन जानि ना से की मने करिया पाँचटा टाका दिया फेलिल। पाँच टाका शैलेन ताहार दलेर लोक काहारओ निकट हइते पाय नाइ।

कालीपदर दारिद्र्येर कृपणताय ए-पर्यन्त सकलेइ ताहाके अवज्ञा करिया आसियाछे, किन्तु आज ताहार एइ पाँच टाका दान ताहादेर एकेवारे असह्य हइल। 'उहार अवस्था ये किरूप ताहा तो आमादेर अगोचर नाइ, तवे उहार एत वड़ाइ किसेर। ओ ये देखि सकलके टेक्का दिते चाय।'

सरस्वतीपूजा धुम करिया हइल—कालीपद ये पाँचटा टाका दियाछिल ताहा ना दिलेओ कोनो इतरविशेष हइत ना। किन्तु, कालीपदर पक्षे से कथा वला चले ना। परेर वाड़िते ताहाके खाइते हइत—सकल दिन समयमतो आहार जुटित ना। ता छाड़ा, पाकशालार भृत्यराइ ताहार भाग्यविधाता, सुतरां भालोमन्द कमिवेशि सम्वन्धे कोनो अप्रिय समालोचना ना करिया जलखावारेर जन्य किछु सम्वल ताहाके हाते राखितेइ हइत। सेइ संगतिटुकु

चाँदा—चन्दा। काछे—पास। चाहितेओ—माँगने भी। खाता—बही। हइते—से। एकेवारे—विल्कुल।

ए पर्यन्त—अव तक। अगोचर—छिपा हुआ। वड़ाइ—गर्व। टेक्का....चाय—मात देना चाहता है।

कोनो इतरविशेष—कुछ विशेष अन्तर, घट-बढ़। समयमतो—यथा-समय। ता छाड़ा—इसके अतिरिक्त। भालोमन्द—अच्छे-बुरे। कमि-वेशि—कम-ज्यादा। जलखावारेर जन्य—नाश्ते के लिए। संगतिटुकु—थोड़ी-सी जमा पूंजी।

गाँदाफुलेर शुष्क स्तूपेर सङ्गे विसर्जित देवीप्रतिमार पश्चाते अन्तर्धान करिल।

कालीपदर माथा धरार उत्पात बाड़िया उठिल। एबार परीक्षाय से फेल करिल ना बटे, किन्तु वृत्ति पाइल ना। काजेइ पड़िबार समय संकोच करिया ताहाके आरओ एकटि टुइशनिर जोगाड़ करिया लइते हइल। एवं विस्तर उपद्रव सत्त्वेओ, बिना भाड़ार बासाटुकु छाड़िते पारिल ना।

उपरितलवासीरा आशा करियाछिल, एबार छुटिर परे निश्चयइ कालीपद ए मेसे आर आसिबे ना। किन्तु, यथासमयेइ ताहार सेइ नीचेर घरटार ताला खुलिया गेल। धुतिर उपर सेइ ताहार चिरकेले चेक-काटा चायना-कोट परिया कालीपद कोटरेर मध्ये प्रवेश करिल, एवं एकटा मयला-कापड़े-बाँधा मस्त पुँटुलि-समेत टिनेर बाक्स नामाइया राखिया शेयालदहेर मुटे ताहार घरेर सम्मुखे उबु हइया बसिया अनेक वाद-प्रतिवाद करिया भाड़ा चुकाइया लइल। ए पुँटुलिटार गर्भे नाना हाँड़ि खुरि भाण्डेर मध्ये कालीपदर मा काँचा-आम कुल चालता प्रभृति उपकरणे नानाप्रकार मुखरोचक पदार्थ तैरि करिया निजे साजाइया दियाछेन। कालीपद जानित, ताहार अवर्तमाने कौतुकपरायण उपरतलार दल ताहार घरे प्रवेश करिया थाके। ताहार आर-कोनो भावना छिल ना, केवल ताहार बड़ो संकोच छिल पाछे ताहार पिता-

---

गाँदा फुलेर—गेंदे के फूलों के।

माथा धरार—सिर-दर्द का। **काजेइ**—इसीलिए। **टुइशनिर जोगाड़**—ट्यूशन की व्यवस्था। **विस्तर**—बहुत अधिक। **सत्त्वेओ**—के बावजूद।

परे—बाद। **चिरकेले चेक-काटा**—सदा का, पुराना चारखाने (चैक) का। **मयला**—मैले। **मस्त**—भारी-भरकम। **नामाइया राखिया**—उतार कर। **शेयालदह**—(कलकत्ते के मुख्य स्टेशन का नाम)। **मुटे**—मजदूर। **उबु हइया बसिया**—उकडूँ बैठ कर। **हाँड़ि खुरि भाण्डेर मध्ये**—हड़ियों, कसोरों और कुल्हड़ों में। **कुल**—बेर। **चालता**—खट्टा और कसैला फल विशेष। **तैरि करिया**—तैयार करके। **साजाइया**—सजा, रख। **भावना**—चिन्ता।

मातार कोनो स्नेहेर निदर्शन एइ विद्रूपकारीदेर हाते पड़े। ताहार मा ताहाके ये खावार जिनिसगुलि दियाछेन ए ताहार पक्षे अमृत—किन्तु ए-समस्तइ ताहार दरिद्र ग्राम्यघरेर आदरेर धन; ये आधारे सेगुलि रक्षित सेइ मयदा दिया आँटा सरा-ढाका हाँड़ि, ताहार मध्येओ शहरेर ऐश्वर्यसज्जार कोनो लक्षण नाइ; ताहा काचेर पात्र नय, ताहा चिनामाटिर भाण्डओ नहे—किन्तु एइ-गुलिके कोनो शहरेर छेले ये अवज्ञा करिया देखिबे, इहा ताहार पक्षे एकेवारेइ असह्य। आगेर वारे ताहार एइ-समस्त विशेष जिनिसगुलिके तक्तापोशेर नीचे पुरानो खबरेर कागज प्रभृति चापा दिया प्रच्छन्न करिया राखित। एबारे तालाचाबिर आश्रय लइल। यखन से पाँच मिनिटेर जन्यओ घरेर बाहिरे याइत घरे ताला वन्ध करिया याइत।

एटा सकलेरइ चोखे लागिल। शैलेन वलिल, "धनरत्न तो विस्तर! घरे ढुकिले चोरेर चक्षे जल आसे—सेइ घरे घन घन ताला पड़ितेछे—एकेवारे द्वितीय 'व्याङ्क अव वेङ्गल' हइया उठिल देखितेछि। आमादेर काहाकेओ विश्वास नाइ—पाछे ऐ पावनार छिटेर चायना कोटटार लोभ सामलाइते ना पारि। ओहे रावु, ओके एकटा भद्रगोछेर नूतन कोट किनिया ना दिले तो किछुतेइ चलितेछे ना। चिरकाल ओर ऐ एकमात्र कोट देखिते देखिते आमार विरक्त धरिया गेछे।"

निदर्शन—प्रमाण, चिह्न। जिनिसगुलि—वस्तुएँ। सेगुलि—वे। मयदा दिया आँटा—मैदे से वन्द की हुई। सरा-ढाका—कसोरे से ढकी हुई। एकेवारेइ—विल्कुल (ही)। आगेर वारे—गत वार। तक्तापोशेर—तख्त के। खबरेर कागज—अखवार। चापा दिया—दवा कर। एबारे—इस वार। वन्ध—वन्द।

चोखे लागिल—आँखों में खटका। ढुकिले—घुसने पर। घन-घन—थोड़ी-थोड़ी देर वाद। काहाकेओ—किसी का भी। पाछे—ऐसा न हो कि। पावना—(वंगाल का स्थान-विशेष)। कोटटार—कोट का। भद्र-गोछेर—भले आदमी के लायक। किनिया ना दिले—खरीद कर दिए विना। विरक्त धरिया गेछे—ऊब होने लगी है।

शैलेन कोनोदिन कालीपदर ऐ लोनाधरा चुनबालि-खसा अन्धकार घरटार मध्ये प्रवेश करे नाइ। सिँड़ि दिया उपरे उठिबार समय बाहिर हइते देखिलेइ ताहार सर्वशरीर संकुचित हइया उठित। विशेषत सन्ध्यार समय यखन देखित एकटा टिम्टिमे प्रदीप लइया एकला सेइ वायुशून्य बद्ध घरे कालीपद गा खुलिया बसिया बइयेर उपर झुँकिया पड़िया पड़ा करितेछे, तखन ताहार प्राण हाँपाइया उठित। दलेर लोकके शैलेन बलिल, "एबारे कालीपद कोन् सात राजार धन मानिक आहरण करिया आनियाछे, सेटा तोमरा खुँजिया बाहिर करो।"

एइ कौतुके सकलेइ उत्साह प्रकाश करिल।

कालीपदर घरेर तालाटि नितान्तइ अल्प दामेर ताला; ताहार निषेध खुब प्रबल निषेध नहे; प्रायः सकल चाबितेइ ए ताला खोले। एकदिन सन्ध्यार समय कालीपद यखन छेले पड़ाइते गियाछे, सेइ अवकाशे जन दुइ-तिन अत्यन्त आमुदे छेले हासिते हासिते ताला खुलिया एकटा लण्ठन हाते ताहार घरे प्रवेश करिल। तक्तापोशेर नीचे हइते आचार चाटनि आमसत्त्व प्रभृतिर भाण्डगुलिके आविष्कार करिल। किन्तु, सेगुलि ये बहुमूल्य गोपनीय सामग्री ताहा ताहादेर मने हइल ना।

खुँजिते खुँजिते बालिशेर नीचे हइते रिं-समेत एक चाबि बाहिर हइल। सेइ चाबि दिया टिनेर बाक्सटा खुलितेइ कयेकटा मयला-कापड़ बइ खाता काँचि छुरि कलम इत्यादि चोखे पड़िल। बाक्स बन्ध करिया ताहारा चलिया याइबार उपक्रम करितेछे,

---

लोनाधरा—नोनी लगे। **चुनबालि खसा**—गिरे हुए पलस्तर वाले। **सिँड़ि. . .उठिबार**—सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते। **गा खुलिया. . .बइयेर**—खुले बदन बैठ कर पुस्तक के। **हाँपाइया उठित**—छटपटाने लगते।

छेले पड़ाते—लड़कों को पढ़ाने। **आमुदे**—आमोदप्रिय। **लण्ठन**—लालटैन। **आमसत्त्व**—अमावट। **भाण्डगुलिके**—पात्रों का। **सेगुलि**—वे।

बालिशेर—तकिये के। **मयला**—मैले। **बइ**—पुस्तक। **खाता**—कॉपी। **काँचि**—कैंची। **चोखे पड़िल**—नज़र पड़ी।

एमन समये समस्त कापड़-चोपड़ेर नीचे रुमाले मोड़ा एकटा की पदार्थ बाहिर हइल। रुमाल खुलितेइ छेँड़ा कापड़ेर मोड़क देखा दिल। सेइ मोड़कटि खोला हइले एकटिर पर आर-एकटि प्राय तिन-चारखाना कागजेर आवरण छाड़ाइया फेलिया एकखानि पञ्चाश टाकार नोट बाहिर हइया पड़िल।

एइ नोटखाना देखिया आर केह हासि राखिते पारिल ना। हो-हो करिया उच्चस्वरे हासिया उठिल। सकलेइ स्थिर करिल, एइ नोटखानारइ जन्य कालीपद घन घन घरे चावि लागाइतेछे, पृथिवीर कोनो लोककेइ विश्वास करिते पारितेछे ना। लोकटार कृपणता एवं सन्दिग्ध प्रकृतिते शैलेनेर प्रसादप्रत्याशी सहचरगुलि विस्मित हइया उठिल।

एमन समय हठात् मने हइल, रास्ताय कालीपदर मतो येन काहार काशि शोना गेल। तत्क्षणात् बाक्सटार डाला बन्ध करिया, नोटखाना हाते लइयाइ ताहारा उपरे छुटिल। एकजन ताड़ाताड़ि दरजाय ताला लागाइया दिल।

शैलेन सेइ नोटखाना देखिया अत्यन्त हासिल। पञ्चाश टाका शैलेनेर काछे किछुइ नय, तवु एत टाकाओ ये कालीपदर बाक्से छिल ताहा ताहार व्यवहार देखिया केह अनुमान करिते पारित ना। ताहार परे आवार एइ नोटटुकुर जन्य एत सावधान! सकलेइ स्थिर करिल, देखा याक एइ टाकाटा खोया गिया एइ अद्भुत लोकटि किरकम काण्डटा करे।

कापड़-चोपड़ेर—कपड़े-लत्तों के। **मोड़ा**—बँधे हुए। **छेँड़ा कापड़ेर मोड़क**—(फटे) चिथड़े की गाँठ। **एकटिर पर आर एकटि**—एक के बाद एक। **छाड़ाइया फेलिया**—खोल डालने पर।

हासि राखिते पारिल ना—हँसी न रोक सका। **घन-घन**—थोड़ी-थोड़ी देर बाद, बार-बार।

मने हइल—लगा, जान पड़ा। **मतो**—समान। **काशि**—खाँसी। **डाला**—ढकना। **ताहारा**—वे लोग। **ताड़ाताड़ि**—जल्दी से।

काछे—निकट। **केह**—कोई। **ताहार परे**—तिस पर। **देखा याक**—देखा जाए।

रात्रि नटार पर छेले पड़ाइया श्रान्तदेहे कालीपद घरेर अवस्था किछुइ लक्ष्य करे नाइ। विशेषत, माथा ताहार येन छिँड़िया पड़ितेछिल। बुझियाछिल, एखन किछुदिन ताहार एइ माथार यन्त्रणा चलिबे।

परदिन से कापड़ बाहिर करिबार जन्य तक्तापोशेर नीचे हइते टिनेर बाक्सटा टानिया देखिल बाक्सटा खोला। यदिच कालीपद स्वभावत असावधान नय तबु ताहार मने हइल, हयतो से चाबि बन्ध करिते भुलिया गियाछिल। कारण, घरे यदि चोर आसित तबे बाहिरेर दरजाय ताला बन्ध थाकित ना।

बाक्स खुलिया देखे, ताहार कापड़-चोपड़ समस्त उलट-पालट। ताहार बुक दमिया गेल। ताड़ाताड़ि समस्त जिनिसपत्र बाहिर करिया देखिल, ताहार सेइ मातृदत्त नोटखानि नाइ। कागज ओ कापड़ेर मोड़कगुला आछे। बार बार करिया कालीपद समस्त कापड़ सबले झाड़ा दिते लागिल, नोट बाहिर हइल ना। ए दिके उपरेर तलार दुइ-एकटि करिया लोक येन आपनार काजे सिँड़ि दिया नामिया सेइ घरटार दिके कटाक्षपात करिया बारबार उठानामा करिते लागिल। उपरे अट्टहास्येर फोयारा खुलिया गेल।

यखन नोटेर कोनो आशाइ रहिल ना एवं माथार कष्टे यखन जिनिसपत्र नाड़ानाड़ि करा ताहार पक्षे आर सम्भवपर हइल ना तखन से बिछानार उपर उपुड़ हइया मृतदेहेर मतो पड़िया रहिल।

नटार पर—नौ (बजे) के बाद। **येन छिँड़िया पड़ितेछिल**—मानो फटा जा रहा था। **बुझियाछिल**—समझ गया।

परदिन—अगले दिन। **कापड़**—कपड़े। **तक्तापोशेर**—तख्त के। **टानिया**—खींच कर। **तबु**—फिर भी। **मने हइल**—लगा। **हयतो**—शायद। **दरजाय**—दरवाजे में।

बुक दमिया गेल—कलेजा बैठ गया। **जिनिसपत्र**—चीज-बस्त। **मोड़कगुला**—पुड़ियाँ, पोटलियाँ। **झाड़ा...लागिल**—झाड़ने लगा। **ए दिके**—इधर। **तलार**—मंजिल के। **सिँड़ि....नामिया**—सीढ़ियों से उतर कर। **कटाक्षपात करिया**—तिरछी नजर फेंकते हुए। **उठानामा**—चढ़ना-उतरना।

नाड़ानाड़ि—उलट-पलट। **उपुड़ हइया**—औंधे हो कर।

एइ ताहार मातार अनेक दुःखेर नोटखानि—जीवनेर कत मुहूर्तके कठिन यन्त्रे पेषण करिया दिने दिने एकटु एकटु करिया एइ नोटखानि सञ्चित हइयाछे। एकदा एइ दुःखेर इतिहास से किछुइ जानित ना, सेदिन से ताहार मातार भारेर उपर भार केवल बाड़ाइयाछे, अवशेषे ये दिन मा ताहाके ताँहार प्रतिदिनेर नियत-आवर्तमान दुःखेर सङ्गी करिया लइलेन से-दिनकार मतो एमन गौरव से ताहार वयसे आर-कखनो भोग करे नाइ। कालीपद आपनार जीवने सब-चेये ये बड़ो वाणी, ये महत्तम आशीर्वाद पाइयाछे, एइ नोटखानिर मध्ये ताहाइ पूर्ण हइया छिल। सेइ ताहार मातार अतलस्पर्श स्नेहसमुद्र-मन्थन-करा अमूल्य दुःखेर उपहारटुकु चुरि याओयाके से एकटा पैशाचिक अभिशापेर मतो मने करिल। पाशेर सिँड़िर उपर दिया पायेर शब्द आज बारबार शोना याइते लागिल। अकारण ओठा एवं नामार आज आर विराम नाइ। ग्रामे आगुन लागिया पुड़िया छाइ हइया याइतेछे, आर ठिक ताहार पाश दियाइ कौतुकेर कलशब्दे नदी अविरत छुटिया चलियाछे—एओ सेइरकम।

उपरेर तलार अट्टहास्य शुनिया एक समये कलीपदर हठात् मने हइल, ए चोरेर काज नय। एक मुहूर्ते से बुझिते पारिल, शैलेन्द्रेर दल कौतुक करिया ताहार एइ नोट लइया गियाछे। चोरे चुरि करिलेओ ताहार मने एत बाजित ना। ताहार मने हइते लागिल, येन धनमदगर्वित युवकेरा ताहार मायेर गाये हात तुलियाछे। एतदिन कालीपद एइ मेसे आछे, एइ सिँड़िटुकु बाहिया

एकटु-एकटु—थोड़ा-थोड़ा। **एकदा**—कभी। **सब-चेये**—सबसे। **वाणी**—आशीर्वचन। **ताहाइ**—वही। **पाशेर**—बगल की। **आगुन**—आग। **पुड़िया...याइतेछे**—जल कर खाक हुआ ज रहा है। **पाश दियाइ**—बगल से।

बुझिते पारिल—समझ गया। **बाजित ना**—(बात) चुभती, अखरती नहीं। **गाये...तुलियाछे**—शरीर पर हाथ उठाया है। **सिँड़िटुकु-बाहिया**—चन्द सीढ़ियाँ चढ़ कर।

एकदिनओ से उपरेर तलाय पदार्पणओ करे नाइ। आज—ताहार गाये सेइ छेंड़ा गेञ्जि, पाये जुता नाइ, मनेर आवेगे एवं माथा धरार उत्तेजनाय ताहार मुख लाल हइया उठियाछे—सवेगे से उपरे उठिया पड़िल।

आज रविवार—कलेजे याइबार उपसर्ग छिल ना, काठेर छाद-ओयाला बारान्दाय बन्धुगण केह वा चौकिते, केह वा वेतेर मोड़ाय बसिया, हास्यालाप करितेछिल। कालीपद ताहादेर माझखाने छुटिया पड़िया क्रोधगद्गदस्वरे बलिया उठिल, "दिन आमार नोट-दिन।"

यदि से मिनतिर सुरे बलित तबे फल पाइत सन्देह नाइ। किन्तु, उन्मत्तवत् क्रुद्धमूर्ति देखिया छेलेरा अत्यन्त खापा हइया उठिल। यदि ताहार बाड़िर दरोयान थाकित तबे ताहाके दिया एइ असभ्यके कान धरिया दूर करिया दित, सन्देह नाइ। सकलेइ दाँड़ाइया उठिया एकत्रे गर्जन करिया उठिल, "की बलेन, मशाय! किसेर नोट!"

कालीपद कहिल, "आमार बाक्स थेके आपनारा नोट निये एसेछेन।"

"एत बड़ो कथा! आमादेर चोर बलते चान।"

कालीपदर हाते यदि किछु थाकित तबे सेइ मुहूर्तेइ से खुनोखुनि करिया फेलित। ताहार रकम देखिया चार-पाँच जने मिलिया ताहार हात चापिया धरिल। से जालबद्ध बाघेर मतो गुम्‌राइते लागिल।

छेंड़ा गेञ्जि—फटी बनियान। **माथा धरार**—सिर-दर्द की।

उपसर्ग—झमेला। **केह वा**—कोई तो। **मोड़ाय**—मूढ़े पर। **छुटिया पड़िया**—दौड़ते हुए पहुँच कर। **दिन**—दीजिए।

मिनतिर—विनय के। **खापा**—बावला, क्रोधित। **दरोयान थाकित**—दरबान होता। **धरिया**—पकड़ कर। **मशाय**—महाशय। **किसेर**—कैसा।

आपनारा—आपलोग। **चान**—चाहते हैं।

खुनोखुनि—खूनखराबी, मार-काट। **रकम**—मर्ज़ी, रंग-ढंग। **चापिया धरिल**—कस कर पकड़ लिया। **गुम्‌राइते लागिल**—गुर्राने लगा।

एइ अन्यायेर प्रतिकार करिवार ताहार कोनो शक्ति नाइ, कोनो प्रमाण नाइ—सकलेइ ताहार सन्देहके उन्मत्तता वलिया उड़ाइया दिवे। याहारा ताहाके मृत्युवाण मारियाछे ताहारा ताहार औद्धत्यके असह्य वलिया विषम आस्फालन करिते लागिल।

से रात्रि ये कालीपदर केमन करिया काटिल ताहा केह जानिते पारिल ना। शैलेन एकखाना एक-शो टाकार नोट वाहिर करिया वलिल, "दाओ, वाङालटाके दिये एसो गे याओ।"

सहचररा कहिल, "पागल हयेछ! तेजटुकु आगे मरुक—आमादेर सकलेर काछे एकटा रिट्न् अचापलजि आगे दिक, तार परे विवेचना करे देखा यावे।"

यथासमये सकले शुइते गेल एवं घुमाइया पड़ितेओ काहारओ विलम्ब हइल ना। सकाले कालीपदर कथा प्राय सकले भुलियाइ गियाछिल। सकाले केह केह सिँड़ि दिया नीचे नामिवार समय ताहार घर हइते कथा शुनिते पाइल। भाविल, हयतो उकिल डाकिया परामर्श करितेछे। दरजा भितर हइते खिल-लागानो। वाहिरे कान पातिया याहा शुनिल ताहार मध्ये आइनेर कोनो संस्रव नाइ, समस्त असम्वद्ध प्रलाप।

उपरे गिया शैलेनके खवर दिल। शैलेन नामिया आसिया दरजार वाहिरे आसिया दाँड़ाइल। कालीपद की-ये वकितेछे भालो वोझा याइतेछे ना, केवल क्षणे क्षणे 'वावा' 'वावा' करिया चीत्कार करिया उठितेछे।

याहारा—जो लोग। **आस्फालन...लागिल**—डींग हाँकने लगे। **केमन करिया**—क्योंकर। **वाङालटाके**—पूर्व बंगाल के निवासी को (व्यंग्य में)।

तेजटुकु...**मरुक**—पहले तेज तो मरे। **आगे दिक**—पहले दे। **विवेचना करे**—विचार करके।

घुमाइया पड़ितेओ—सो जाने में भी। **केह**—कोई। **नामिवार**—उतरते। **भाविल**—सोचा। **हयतो...डाकिया**—शायद वकील को बुलाकर। **दरजा**—दरवाजा। **खिल-लागानो**—कुंडी लगी हुई है। **कान पातिया**—कान लगा कर। **संस्रव**—सम्वन्ध।

दाँड़ाइल—खड़ा हुआ। **भालो...याइतेछे ना**—ठीक (तरह) से समझ में नहीं आ रहा। **वावा**—पिता।

भय हइल, हयतो से नोटेर शोके पागल हइया गियाछे। बाहिर हइते दुइ-तिनबार डाकिल, "कालीपदबाबु!" केह कोनो साड़ा दिल ना। केवल सेइ विड़् विड़् बकुनि चलिते लागिल। शैलेन पुनश्च उच्चस्वरे कहिल, "कालीपदबाबु, दरजा खुलुन, आपनार सेइ नोट पाओया गेछे।" दरजा खुलिल ना, केवल बकुनिर गुञ्जनध्वनि शोना गेल।

व्यापारटा ये एतदूर गड़ाइबे ताहा शैलेन कल्पनाओ करे नाइ। से मुखे ताहार अनुचरदेर काछे अनुतापवाक्य प्रकाश करिल ना। किन्तु, ताहार मनेर मध्ये बिँधिते लागिल। से बलिल, "दरजा भाङिया फेला याक।"

केह केह परामर्श दिल, "पुलिस डाकिया आनो—की जानि पागल हइया यदि हठात् किछु करिया बसे—काल ये-रकम काण्ड देखियाछि—साहस हय ना।"

शैलेन कहिल, "ना—शीघ्र एकजन गिया अनादि डाक्तारके डाकिया आनो।"

अनादि डाक्तार बाड़िर काछे थाकेन। तिनि आसिया दरजाय कान दिया बललेन, "ए तो विकार बलियाइ बोध हय।"

दरजा भाङिया भितरे गिया देखा गेल—तक्तापोशेर उपर एलोमेलो बिछाना खानिकटा भ्रष्ट हइया माटिते लुटाइतेछे। कालीपद मेजेर उपर पड़िया—ताहार चेतना नाइ। से गड़ाइतेछे, क्षणे क्षणे हात-पा छुँड़ितेछे एवं प्रलाप बकितेछे; ताहार रक्तवर्ण चोखदुटा खोला एवं ताहार मुखे येन रक्त फाटिया पड़ितेछे।

साड़ा—प्रत्युत्तर। **बिड़् बिड़्**—बड़बड़। **बकुनि**—प्रलाप।

एतदूर गड़ाइबे—इतनी दूर तक पहुँचेगा। **बिँधिते लागिल**—(बात) बिंधने लगी। **भाङिया....याक**—तोड़ डाला जाए।

डाकिया आनो—बुला लाओ। **काछेइ थाकेन**—पास ही रहते हैं। **तिनि**—उन्होंने। **कान दिया**—कान लगा कर। **बोध हय**—लगता है।

एलोमेलो—अस्त-व्यस्त। **मेजेर उपर**—फ़र्श पर। **गड़ाइतेछे**—लोट-पोट रहा है। **छुँड़ितेछे**—पटक रहा है। **फाटिया पड़ितेछे**—फूटा पड़ रहा है।

डाक्तार ताहार पाशे बसिया अनेकक्षण परीक्षा करिया शैलेनके जिज्ञासा करिलेन, "इहार आत्मीय केह आछे?"

शैलेनेर मुख विवर्ण हइया गेल। से भीत हइया जिज्ञासा करिल, "कैन बलुन देखि।"

डाक्तार गम्भीर हइया कहिलेन, "खबर देओया भालो, लक्षण भालो नय।"

शैलेन कहिल, "इँहादेर सङ्गे आमादेर भालो आलाप नाइ—आत्मीयेर खबर किछुइ जानि ना। सन्धान करिब। किन्तु, इतिमध्ये की करा कर्तव्य।"

डाक्तार कहिलेन, "ए घर हइते रोगीके एखनइ दोतलार कोनो भालो घरे लइया याओया उचित। दिनरात शुश्रूषार व्यवस्था कराओ चाइ।"

शैलेन रोगीके ताहार निजेर घरे लइया गेल। ताहार सहचरदेर सकलके भिड़ करिते निषेध करिया घर हइते विदाय करिया दिल। कालीपदर माथाय बरफेर पुंटुलि लागाइया निजेर हाते बातास करिते लागिल।

पूर्वेइ बलियाछि, एइ बाड़िर उपरतलार दले पाछे कोनोप्रकार अवज्ञा वा परिहास करे एइजन्य निजेर पितामातार सकल परिचय कालीपद इहादेर निकट हइते गोपन करिया चलियाछे। निजे ताँहादेर नामे ये चिठि लिखित ताहा सावधाने डाकघरे दिया आसित एवं डाकघरेर ठिकानातेइ ताहार नामे चिठि आसित—प्रत्यह से निजे गिया ताहा संग्रह करिया आनित।

कालीपदर बाड़िर परिचय लइबार जन्य आर-एकबार ताहार बाक्स खुलिते हइल। ताहार बाक्सेर मध्ये दुइ ताड़ा चिठि छिल। प्रत्येक ताड़ाटि अति यत्ने फिता दिया बाँधा। एकटि

कैन....देखि—क्यों, बताइए तो। इँहादेर—इनके। घर हइते—कमरे से। एखनइ—अभी। बातास—हवा। पाछे—ऐसा न हो कि। इहादेर....हइते—इन लोगों से। प्रत्यह—प्रतिदिन।

दुइ ताड़ा—दो पुलिन्दे।

ताड़ाते ताहार मातार चिठि, आर-एकटिते ताहार पितार। मायेर चिठि संख्याय अल्पइ, पितार चिठिइ वेशि।

चिठिगुलि हाते करिया आनिया शैलेन दरजा वन्ध करिया दिल, एवं रोगीर विछानार पार्श्वे वसिया पड़िते आरम्भ करिल। चिठिते ठिकाना पड़ियाइ एकेवारे चमकिया उठिल। शानियाहि, चौधुरीवाड़ि, छय-आनि! नीचे नाम देखिल, भवानीचरण देवशर्मा। भवानीचरण चौधुरी!

चिठि राखिया स्तब्ध हइया वसिया से कालीपदर मुखेर दिके चाहिया रहिल। किछुदिन पूर्वे एकवार ताहार सहचरदेर मध्ये के एकजन वलियाछिल, ताहार मुखेर सङ्गे कालीपदर मुखेर अनेकटा आदल आसे। से कथाटा ताहार शुनिते भालो लागे नाइ एवं अन्य सकले ताहा एकेवारे उड़ाइया दियाछिल। आज वुझिते पारिल, से कथाटा अमूलक नहे। ताहार पितामहरा दुइ भाइ छिलेन—श्यामाचरण एवं भवानीचरण, ए कथा से जानित। ताहार परवर्तीकालेर इतिहास ताहादेर वाड़िते कखनो आलोचित हय नाइ। भवानीचरणेर ये पुत्र आछे एवं ताहार नाम कालीपद, ताहा से जानितइ ना। एइ कालीपद! एइ ताहार खुड़ा!

शैलेनेर तखन मने पड़िते लागिल, शैलेनेर पितामही, श्यामाचरणेर स्त्री यतदिन बाँचिया छिलेन, शेष पर्यन्त परम स्नेहे तिनि भवानीचरणेर कथा वलितेन। भवानीचरणेर नाम करिते ताँहार दुइ चक्षे जल भरिया उठित। भवानीचरण ताँहार देवर वटे, किन्तु ताँहार पुत्रेर चेये वयसे छोटो—ताहाके तिनि

वेशि—अधिक।

चिठिगुलि—चिट्ठियाँ। चमकिया उठिल—चौंक पड़ा। छय-आनि—छह आने (के हिस्सेदार)।

चाहिया रहिल—ताकता रहा। आदल—समानता। वुझिते पारिल—समझ सका। अमूलक—निराधार, काल्पनिक। खुड़ा—काका।

बाँचिया छिलेन—जीवित रही थीं। चेये—अपेक्षा।

आपन छेलेर मतोइ मानुष करियाछेन। वैषयिक विप्लवे यखन ताँहारा स्वतन्त्र हइया गेलेन तखन भवानीचरणेर एकटु खवर पाइवार जन्य ताँहार वक्ष तृषित हइया थाकित। तिनि वारवार ताँहार छेलेदेर वलियाछेन, "भवानीचरण नितान्त अवुझ भालो-मानुष वलिया निश्चयइ तोरा ताहाके फाँकि दियाछिस—आमार श्वसुर ताहाके एत भालोवासितेन, तिनि ये ताहाके विषय हइते वञ्चित करिया याइवेन, ए कथा आमि विश्वास करिते पारि ना।" ताँहार छेलेरा ए-सव कथाय अत्यन्त विरक्त हइत एवं शैलेनेर मने पड़िल, सेओ ताहार पितामहीर उपर अत्यन्त राग करित। एमन-कि, पितामही ताँहार पक्ष अवलम्वन करितेन वलिया भवानीचरणेर उपरेओ ताहार भारि राग हइत। वर्तमाने भवानीचरणेर ये एमन दरिद्र अवस्था ताहाओ से जानित ना—कालीपदर अवस्था देखिया सकल कथा से वुझिते पारिल एवं एतदिन सहस्र प्रलोभन-सत्त्वेओ कालीपद ये ताहार अनुचरश्रेणीते भर्ति हय नाइ इहाते से भारि गौरव अनुभव करिल। यदि दैवात् कालीपद ताहार अनुवर्ती हइत तवे आज ये ताहार लज्जार सीमा थाकित ना।

४

शैलेनेर दलेर लोकेरा एतदिन प्रत्यहइ कालीपदके पीड़न ओ अपमान करियाछे। एइ वासाते ताहादेर माझखाने काकाके

छेलेर....करियाछेन—पुत्र की तरह ही पाला-पोसा है। **वैषयिक**—धन-सम्पत्ति के। **ताँहारा**—वे (लोग)। **अवुझ**—भोला। **तोरा**—तुम लोगों ने। **फाँकि दियाछिस**—धोखा दिया है। **भालोवासितेन**—स्नेह करते थे। **राग करित**—क्रोध करता। **एमन कि**—यहाँ तक कि। **वलिया**—इस-लिए। **सत्त्वेओ**—के वावजूद। **थाकित ना**—न रहती।

एतदिन—इतने दिन। **प्रत्यहइ**—प्रतिदिन ही। **वासाते**—घर, वासस्थान में। **माझखाने**—वीच में।

शैलेन राखिते पारिल ना। डाक्तारेर परामर्श लइया अतियत्ने ताहाके एकटा भालो बाड़िते स्थानान्तरित करिल।

भवानीचरण शैलेनेर चिठि पाइया एकटि सङ्गी आश्रय करिया ताड़ाताड़ि कलिकाताय छुटिया आसिलेन। आसिबार समय व्याकुल हइया रासमणि ताँहार कष्टसञ्चित अर्थेर अधिकांशइ ताँहार स्वामीर हाते दिया बलिलेन, "देखो येन अयत्न ना हय। यदि तेमन बोझ आमाके खबर दिलेइ आमि याब।" चौधुरी-बाड़िर वधूर पक्षे हट् हट् करिया कलिकाताय याओयार प्रस्ताव एतइ असंगत ये, प्रथम संवादेइ ताँहार याओया घटिल ना। तिनि रक्षाकालीर निकट मानत करिलेन एवं ग्रहाचार्यके डाकिया स्वस्त्यन कराइबार व्यवस्था करिया दिलेन।

भवानीचरण कालीपदर अवस्था देखिया हतबुद्धि हइया गेलेन। कालीपदर तखन भालो करिया ज्ञान हय नाइ; से ताँहाके मास्टारमशाय बलिया डाकिल—इहाते ताँहार बुक फाटिया गेल। कालीपद प्राय माझे माझे प्रलापे 'बाबा' 'बाबा' बलिया डाकिया उठितेछिल—तिनि ताहार हात धरिया ताहार मुखेर काछे मुख लइया गिया उच्चस्वरे बलितेछिलेन, "एइ-ये बाबा, एइ-ये आमि एसेछि।" किन्तु से ये ताँके चिनियाछे एमन भाव प्रकाश करिल ना।

डाक्तार आसिया बलिलेन, "ज्वर पूर्वेर चेये किछु कमियाछे, हयतो एबार भालोर दिके याइबे।" कालीपद भालोर दिके

भालो बाड़िते—अच्छे मकान में।

ताड़ाताड़ि—झटपट। **छुटिया आसिलेन**—दौड़े चले आए। **अयत्न**—लापरवाही। **बोझ**—समझो। **याब**—चली आऊँगी। **हट् हट् करिया**—तत्काल बिना विचारे। **एतइ**—इतना ही। **मानत**—मानता।

भालो करिया—अच्छी तरह से। **मास्टारमशाय...डाकिल**—मास्टर महाशय कह कर पुकारा। **ताँहार...गेल**—उनकी छाती फट गई। **माझे माझे**—बीच-बीच में। **बाबा**—पिता। **बाबा**—बेटा।

चिनियाछे—पहचाना है। **चेये**—अपेक्षा। **भालोर दिके**—अच्छे (होने) की तरफ।

याइबे ना, ए कथा भवानीचरण मनेइ करिते पारेन ना। विशेषत, ताहार शिशुकाल हइते सकलेइ वलिया आसितेछे, कालीपद बड़ो हइया एकटा असाध्य साधन करिबे—सेटाके भवानीचरण केवलमात्र लोकमुखेर कथा वलिया ग्रहण करेन नाइ—से विश्वास एकेवारे ताँहार संस्कारगत हइया गियाछिल। कालीपदके बाँचितेइ हइबे, ए ताहार भाग्येर लिखन।

एइ कारणे, डाक्तार यतटुकु भालो वले तिनि ताहार चेये अनेक वेशि भालो शुनिया वसेन एवं रासमणिके ये पत्र लेखेन ताहाते आशङ्कार कोनो कथाइ थाके ना।

शैलन्द्रेर व्यवहारे भवानीचरण एकेवारे आश्चर्य हइया गेलेन। से ये ताँहार परमात्मीय नहे, ए कथा के वलिबे। विशेषत, कलिकातार सुशिक्षित सुसभ्य छेले हइयाओ से ताँहाके ये-रकम भक्तिश्रद्धा करे एमन तो देखा याय ना। तिनि भाविलेन, कलिकातार छेलेदेर बुझि एइ प्रकारइ स्वभाव। मने मने भाविलेन, 'से तो हबारइ कथा, आमादेर पाड़ागेँये छेलेदेर शिक्षाइ वा की आर सहवतइ वा की।'

ज्वर किछु किछु कमिते लागिल एवं कालीपद क्रमे चैतन्य लाभ करिल। पिताके शय्यार पाशे देखिया से चमकिया उठिल; भाविल, ताहार कलिकातार अवस्थार कथा एइवार ताहार पितार काछे धरा पड़िबे। ताहार चेये भावना एइ ये, ताहार ग्राम्य पिता शहरेर छेलेदेर परिहासेर पात्र हइया उठिबेन। चारि दिके चाहिया देखिया से भाविया पाइल ना, ए कोन् घर। मने हइल, 'ए कि स्वप्न देखितेछि!'

मनेइ....पारेन ना—मन में भी नहीं ला पाते। सेटाके—उसको। बाँचितेइ हइबे—बचना (जीवित रहना) ही होगा। लिखन—लेख।

यतटुकु—जो थोड़ा-बहुत। बले—कहता। कथाइ—बात ही।

छेले—लड़का। ये-रकम—जिस प्रकार। एमन—ऐसा। छेलेदेर—लड़कों की। बुझि—शायद। पाड़ागेँये—गँवई-गाँव के। सहवतइ—सोहवत ही।

चमकिया उठिल—चौंक पड़ा। भाविल—सोचा।

धरा पड़िबे—पकड़ी जाएगी। चेये—अपेक्षा। भावना—चिन्ता। चाहिया देखिया—ताक कर। भाविया....ना—सोच न सका।

तखन ताहार बेशि-किछु चिन्ता करिवार शक्ति छिल ना। ताहार मने हइल, असुखेर खबर पाइया ताहार पिता आसिया एकटा भालो वासाय आनिया राखियाछेन। की करिया आनिलेन, ताहार खरच कोथा हइते जोगाइतेछेन, एत खरच करिते थाकिले परे किरूप संकट उपस्थित हइवे, से-सव कथा भाविवार ताहार समय नाइ। एखन ताहाके बाँचिया उठिते हइबे, सेजन्य समस्त पृथिवीर उपर ताहार येन दाबि आछे।

एक समये यखन ताहार पिता घरे छिलेन ना एमनसमय शैलेन एकटि पात्रे किछु फल लइया ताहार काछे आसिया उपस्थित हइल। कालीपद अवाक हइया ताहार मुखेर दिके चाहिया रहिल—भाविते लागिल, इहार मध्ये किछु परिहास आछे नाकि। प्रथम कथा ताहार मने हइल एइ ये, पिताके तो इहार हात हइते रक्षा करिते हइबे।

शैलेन फलेर पात्र टेबिलेर उपर राखिया पाये धरिया कालीपदके प्रणाम करिल एवं कहिल, "आमि गुरुतर अपराध करियाछि, आमाके माप करुन।"

कालीपद शशव्यस्त हइया उठिल। शैलेनेर मुख देखियाइ से बुझिते पारिल, ताहार मने कोनो कपटता नाइ। प्रथम यखन कालीपद मेसे आसियाछिल, एइ यौवनेर दीप्तिते उज्ज्वल सुन्दर मुखश्री देखिया कतबार ताहार मन अत्यन्त आकृष्ट हइयाछे, किन्तु से आपनार दारिद्र्येर संकोचे कोनोदिन इहार निकटेओ आसे नाइ। यदि से समकक्ष लोक हइत, यदि बन्धुर मतो इहार

बेशि—अधिक। **असुखेर**—बीमारी की। **बासाय**—घर में। **जोगाइतेछेन**—जुटा रहे हैं। **करिते....परे**—करते रहने पर बाद में। **येन**—मानो। **दाबि**—दावा, अधिकार।

काछे—निकट। **एइ ये**—वह यह। **पाये धरिया**—पैर पकड़ कर। **माप करुन**—माफ कीजिए।

शशव्यस्त....उठिल—घबरा उठा। **बुझिते पारिल**—समझ गया। **कतबार**—कितनी बार। **बन्धुर मतो**—मित्र की तरह।

काछे आसिबार अधिकार ताहार पक्षे स्वाभाविक हइत, तबे से कत खुशिइ हइत—किन्तु परस्पर अत्यन्त काछे थाकिलेओ माझ-खाने अपार व्यवधान लङ्घन करिबार उपाय छिल ना। सिँड़ि दिया यखन शैलेन उठित वा नामित तखन ताहार शौखिन चादरेर सुगन्ध कालीपदर अन्धकार घरेर मध्ये प्रवेश करित—तखन से पड़ा छाड़िया एकबार एइ हास्यप्रफुल्ल चिन्तारेखाहीन तरुण मुखेर दिके ना ताकाइया थाकिते पारित ना। सेइ मुहूर्त केवल क्षणकालेर जन्य ताहार सेइ स्याँत्सेँते कोणेर घरे दूर सौन्दर्यलोकेर ऐश्वर्यविच्छुरित रश्मिच्छटा आसिया पड़ित। ताहार परे सेइ शैलेनेर निर्दय तारुण्य ताहार काछे किरूप सांघातिक हइया उठियाछिल ताहा सकलेरइ जाना आछे। आज शैलेन यखन फलेर पात्र बिछानाय ताहार सम्मुखे आनिया उपस्थित करिल तखन दीर्घनिश्वास फेलिया ऐ सुन्दर मुखेर दिके कालीपद आर-एकबार ताकाइया देखिल। क्षमार कथा से मुखे किछुइ उच्चारण करिल ना—आस्ते आस्ते फल तुलिया खाइते लागिल—इहातेइ याहा बलिबार ताहा बला हइया गेल।

कालीपद प्रत्यह आश्चर्य हइया देखिते लागिल, ताहार ग्राम्य पिता भवानीचरणेर सङ्गे शैलेनेर खुब भाव जमिया उठिल। शैलेन ताँहाके ठाकुरदा बले, एवं परस्परेर मध्ये अबाधे ठाट्टा-तामाशा चले। ताहादेर उभय पक्षेर हास्यकौतुकेर प्रधान लक्ष्य छिलेन अनुपस्थित ठाकरुनदिदि। एतकाल परे एइ परिहासेर दक्षिणवायुर हिल्लोले भवानीचरणेर मने येन यौवनस्मृतिर पुलक

खुशिइ—खुश ही। थाकिलेओ—रहने पर भी। सिँड़ि दिया—सीढ़ियों से। उठित वा नामित—चढ़ता या उतरता। शौखिन—फैंसी। पड़ा छाड़िया—पढ़ना छोड़ कर। थाकिते पारित ना—न रह पाता। स्याँत्सेँते...घरे—सील भरे कोने के कमरे में। ताहार परे—उसके बाद। सकलेरइ—सभी का। तुलिया—उठा कर। बलिबार—कहने को (था)।

खुब...उठिल—प्रीति खूब घनी हो उठी है। ठाकुरदा बले—बाबा, पितामह कहता है। ठाट्टातामाशा—हास्य-परिहास, (बंगाल में पितामह के साथ हँसी-मजाक करने की प्रथा है)। ठाकरुनदिदि—दादी। एतकाल परे—

सञ्चार करिते लागिल। ठाकरुनदिदिर स्वहस्तरचित आचार आमसत्त्व प्रभृति समस्तइ शैलेन रोगीर अनवधानतार अवकाशे चुरि करिया निःशेषे खाइया फेलियाछे, ए कथा आज से निर्लज्ज-भावे स्वीकार करिल। एइ चुरिर खबरे कालीपदर मने बड़ो एकटि गभीर आनन्द हइल। ताहार मायेर हातेर सामग्री से विश्वेर लोकके डाकिया खाओयाइते चाय, यदि ताहारा इहार आदर बोझे। कालीपदर काछे आज निजेर रोगेर शय्या आनन्द-सभा हइया उठिल—एमन सुख ताहार जीवने से अल्पइ पाइयाछे। केवल क्षणे क्षणे ताहार मने हइते लागिल, आहा, मा यदि थाकितेन! ताहार मा थाकिले एइ कौतुकपरायण सुन्दर युवकटिके ये कत स्नेह करितेन, सेइ कथा से कल्पना करिते लागिल।

ताहादेर रुग्णकक्षसभाय केवल एकटा आलोचनार विषय छिल येटाते आनन्दप्रवाहे माझे माझे बड़ो बाधा दित। काली-पदर मने येन दारिद्र्येर एकटा अभिमान छिल—कोनो-एक समये ताहादेर प्रचुर ऐश्वर्य छिल ए कथा लइया वृथा गर्व करिते ताहार भारि लज्जा बोध हइत। 'आमरा गरिब' ए कथाटाके कोनो 'किन्तु' दिया चापा दिते से मोटेइ राजि छिल ना। भवानी-चरणओ ये ताँहादेर ऐश्वर्येर दिनेर कथा गर्व करिया पाड़ितेन ताहा नहे। किन्तु, से ये ताँहार सुखेर दिन छिल, तखन ताँहार यौवनेर दिन छिल। विश्वासघातक संसारेर बीभत्समूर्ति तखनओ धरा पड़े नाइ। विशेषत, श्यामाचरणेर स्त्री, ताँहार परमस्नेह-शालिनी भ्रातृजाया रमासुन्दरी, यखन ताँहादेर संसारेर गृहिणी

इतने समय बाद। **येन**—मानो। **आमसत्त्व**—अमावट। **अनवधानतार**—असावधानी के। **मायेर**—माँ के। **चाय**—चाहता है। **ताहारा**—वे लोग। **आदर बोझे**—क़द्र समझें। **काछे**—निकट। **एमन**—ऐसा। **थाकितेन**—रहतीं, होतीं। **कत**—कितना।

ताहादेर—उन लोगों की। **कोनो**—कोई। **दिया चापा...छिल ना**—के द्वारा दवा देने को वह बिल्कुल तैयार नहीं था। **कथा**—बात। **पाड़ितेन**—उठाते। **ताहा नहे**—ऐसा नहीं। **तखनओ...नाइ**—तब (तक) भी पकड़ में नहीं आई थी। **गृहिणी**—गृह-स्वामिनी।

छिलेन तखन सेइ लक्ष्मीर भरा भाण्डारेर द्वारे दाँड़ाइया की अजस्र आदरइ ताँहारा लुठियाछिलेन—सेइ अस्तमित सुखेर दिनेर स्मृतिर छटातेइ तो भवानीचरणेर जीवनेर सन्ध्या सोनाय मण्डित हइया आछे। किन्तु, एइ-समस्त सुखस्मृति-आलोचनार माझखाने घुरिया फिरिया केवलइ सेइ उइल-चुरिर कथाटा आसिया पड़े। भवानीचरण एइ प्रसङ्गे भारि उत्तेजित हइया पड़ेन। एखनो से उइल पाओया याइबे, ए सम्बन्धे ताँहार मने लेशमात्र सन्देह नाइ—ताँहार सतीसाध्वी मार कथा कखनोइ व्यर्थ हइबे ना। एइ कथा उठिया पड़िलेइ कालीपद मने मने अस्थिर हइया उठित। से जानित, एटा ताहार पितार एकटा पागलामि मात्र। ताहारा माये छेलेय एइ पागलामिके आपोसे प्रश्रयओ दियाछे. किन्तु शैलेनेर काछे ताहार पितार एइ दुर्बलता प्रकाश पाय ए ताहार किछुतेइ भालो लागे ना। कतवार से पिताके वलियाछे, "ना बाबा, ओटा तोमार एकटा मिथ्या सन्देह।" किन्तु एरूप तर्के उलटा फल हइत। ताँहार सन्देह ये अमूलक नहे ताहा प्रमाण करिबार जन्य समस्त घटना तिनि तन्न तन्न करिया विवृत करिते थाकितेन। तखन कालीपद नाना चेष्टा करियाओ किछुतेइ ताँहाके थामाइते पारित ना।

विशेषत, कालीपद इहा स्पष्ट लक्ष्य करिया देखियाछे ये, एइ प्रसङ्गटा किछुतेइ शैलेनेर भालो लागे ना। एमन-कि, सेओ विशेष एकटु येन उत्तेजित हइया भवानीचरणेर युक्ति

दाँड़ाइया—खड़े हुए। आदरइ—स्नेह ही। लुठियाछिलेन—लूटा था। छटातेइ—छटा से ही। सोनाय—सोने से। आलोचनार. . .फिरिया—चर्चा के बीच घूम-फिर कर। उइल—विल। मार. . .कखनोइ—माँ की बात कभी भी। पागलामि—पागलपन। माये छेलेय—माँ-बेटे में। आपोसे—आपस में। भालो—अच्छा। बाबा—पिता। ओटा—वह। अमूलक—निराधार। तन्न तन्न करिया—एक के बाद एक, निरन्तर। विवृत—वर्णन, व्याख्या। थामाइते पारित ना—रोक न पाता।

किछुतेइ—किसी तरह भी। एमन कि—यहाँ तक कि। एकटु—ज़रा।

खण्डन करिते चेष्टा करित। अन्य-सकल विषयेइ भवानीचरण आर-सकलेर मत मानिया लइते प्रस्तुत आछेन, किन्तु एइ विषय-टाते तिनि काहारओ काछे हार मानिते पारेन ना। ताँहार मा लिखिते पड़िते जानितेन—तिनि निजेर हाते ताँहार पितार उइल एवं अन्य दलिलटा बाक्से बन्ध करिया लोहार सिन्दुके तुलियाछेन; अथच ताँहार सामनेइ मा यखन बाक्स खुलिलेन तखन देखा गेल, अन्य दलिलटा येमन छिल तेमनि आछे अथच उइलटा नाइ, इहाके चुरि बला हइबे ना तो की। कालीपद ताँहाके ठाण्डा करिबार जन्य बलित, "ता, बेश तो बाबा, यारा तोमार विषय भोग करितेछे तारा तो तोमार छेलेरइ मतो, तारा तो तोमारइ भाइपो। से सम्पत्ति तोमार पितार वंशेइ रहियाछे—इहाइ कि कम सुखेर कथा।" शैलेन ए-सब कथा बेशिक्षण सहिते पारित ना, से घर छाड़िया उठिया चलिया याइत। कालीपद मने मने पीड़ित हइया भाबित, शैलेन हयतो ताहार पिताके अर्थलोलुप विषयी बलिया मने करितेछे। अथच, ताहार पितार मध्ये वैषयिकतार नामगन्ध नाइ, ए कथा कोनोमते शैलेनके बुझाइते पारिले कालीपद बड़ोइ आराम पाइत।

एतदिने कालीपद ओ भवानीचरणेर काछे शैलेन आपनार परिचय निश्चय प्रकाश करित। किन्तु, एइ उइल-चुरिर आलोचनातेइ ताहाके बाधा दिल। ताहार पिता पितामह ये उइल चुरि करियाछेन ए कथा से कोनोमतेइ विश्वास करिते चाहिल ना; अथच भवानीचरणेर पक्षे पैतृक विषयेर न्याय्य

येन—मानो। पड़िते—पढ़ना। दलिलटा—दस्तावेज। बन्ध—बन्द। तुलियाछेन—(उठा कर) रखी थीं। बेश तो—अच्छा तो है। यारा—जो। तारा—वे लोग। छेलेरइ मतो—लड़के के ही समान (हैं)। भाइपो—भतीजे। सहिते...ना—सहन नहीं कर पाता था। घर छाड़िया–कमरा छोड़ कर। भाबित—सोचता। बुझाइते पारिले—समझा पाने पर।

कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। चाहिल ना—नहीं चाहा।

अंश हइते वञ्चित हओयार मध्ये ये एकटा निष्ठुर अन्याय आछे, से कथाओ से कोनोमते अस्वीकार करिते पारिल ना। एखन हइते एइ प्रसङ्गे कोनोप्रकार तर्क करा से वन्ध करियादिल—एकेवारे से चुप करिया थाकित—एवं यदि कोनो सुयोग पाइत तवे उठिया चलिया याइत।

एखनो विकाले एकटु अल्प ज्वर आसिया कालीपदर माथा धरित किन्तु सेटाके से रोग वलिया गण्यइ करित ना। पड़ार जन्य ताहार मन उद्विग्न हइया उठिल। एकवार ताहार स्कलार्शिप फस्‌काइया गियाछे, आर तो सेरूप हइले चलिवे ना। शैलेनके लुकाइया आवार से पड़िते आरम्भ करिल; ए सम्वन्धे डाक्तारेर कठोर निषेध आछे जानियाओ से ताहा अग्राह्य करिल।

भवानीचरणके कालीपद कहिल, "वावा, तुमि वाड़ि फिरिया याओ—सेखाने मा एकला आछेन। आमि तो वेश सारिया उठियाछि।"

शैलेनओ वलिल, "एखन आपनि गेले कोनो क्षति नाइ। आर तो भावनार कारण किछु देखि ना। एखन येटुकु आछे से दुदिनेइ सारिया याइवे। आर, आमरा तो आछि।"

भवानीचरण कहिलेन, "से आमि वेश जानि; कालीपदर जन्य भावना करिवार किछुइ नाइ। आमार कलिकाताय आसिवार कोनो प्रयोजनइ छिल ना, तवु मन माने कइ, भाइ। विशेषत तोमार ठाकरुनदिदि यखन येटि धरेन से तो आर छाड़ाइवार जो नाइ।"

एकेवारे—विल्कुल।

विकाले—अपराह्ण में। माथा धरित—सिर-दर्द होता। सेटाके—उसे। पड़ार जन्य—पढ़ने के लिए। फस्‌काइया गियाछे—हाथ से निकल चुकी है। आवार—फिर।

वाड़ि—घर। सारिया उठियाछि—ठीक हो चुका हूँ।

गेले—जाने से। भावनार—चिन्ता का। येटुकु—जो थोड़ा-वहुत।

माने कइ—मानता कहाँ है। यखन येटि...जो नाइ—जव जिस (वात) को पकड़ लेती हैं फिर उनसे (जान) छुड़ाने का कोई चारा नहीं रहता।

शैलेन हासिया कहिल, "ठाकुरदा, तुमिइ तो आदर दिया ठाकरुनदिदिके एकेबारे माटि करियाछ।"

भवानीचरण हासिया कहिलेन, "आच्छा भाइ, आच्छा, घरे यखन नातबउ आसिबे तखन तोमार शासनप्रणालीटा किरकम कठोर आकार धारण करे देखा याइबे।"

भवानीचरण एकान्तभावे रासमणिर सेवाय पालित जीव। कलिकातार नानाप्रकार आराम-आयोजनओ रासमणिर आदरयत्नेर अभाव किछुतेइ पूरण करिते पारितेछिल ना। एइ कारणे घरे याइबार जन्य ताँहाके बड़ो बेशि अनुरोध करिते हइल ना।

सकालवेलाय जिनिसपत्र बाँधिया प्रस्तुत हइयाछेन, एमनसमय कालीपदर घरे गिया देखिलेन ताहार मुखचोख अत्यन्त लाल हइया उठियाछे—ताहार गा येन आगुनेर मतो गरम। काल अर्धेक रात्रि से लजिक मुखस्थ करियाछे, बाकि रात्रि एक निमेषेर जन्यओ घुमाइते पारे नाइ।

कालीपदर दुर्बलता तो सारिया उठे नाइ, ताहार उपरे आबार रोगेर प्रबल आक्रमण देखिया डाक्तार विशेष चिन्तित हइलेन। शैलेनके आड़ाले डाकिया लइया गिया बलिलेन, "एबार तो गतिक भालो बोध करितेछि ना।"

शैलेन भवानीचरणके कहिल, "देखो ठाकुरदा, तोमारओ कष्ट हइतेछे, रोगीरओ बोध हय ठिक तेमन सेवा हइतेछे ना,

---

आदर दिया—स्नेह से। **माटि करियाछ**—बिगाड़ दिया है।
नातबउ—पौत्र-वधू।
एकान्तभावे—बिल्कुल। **किछुतेइ**—किसी प्रकार भी।
जिनिसपत्र—चीज-वस्त। **एमनसमय**—इसी समय। **घरे**—कमरे में। **मुखचोख**—मुँह-आँख। **गा**—शरीर। **आगुनेर मतो**—आग की तरह। **लजिक**—(अं०) लॉजिक, तर्कशास्त्र। **मुखस्थ**—कण्ठस्थ। **घुमाइते.... नाइ**—सो नहीं सका।
सारिया....नाइ—ठीक नहीं हुई थी। **आड़ाले**—आड़ में। **एबार**—इस बार। **गतिक**—अवस्था, लक्षण।
बोध हय—लगता है। **तेमन**—(जैसी होनी चाहिए) वैसी।

ताइ आमि वलि, आर देरि ना करिया ठाकरुनदिदिके आनानो याक।"

शैलेन यतइ ढाकिया वलुक, एकटा प्रकाण्ड भय आसिया भवानीचरणेर मनके अभिभूत करिया फेलिल। ताँहार हात-पा थर्थर् करिया काँपिते लागिल। तिनि वलिलेन, "तोमरा येमन भालो वोझ ताइ करो।"

रासमणिर काछे चिठि गेल ; तिनि ताड़ाताड़ि वगलाचरणके सङ्गे करिया कलिकाता आसिलेन। सन्ध्यार समय कलिकाताय पौंछिया तिनि केवल कयेक घण्टामात्र कालीपदके जीवित देखियाछिलेन। विकारेर अवस्थाय से रहिया रहिया माके डाकियाछिल—सेइ ध्वनिगुलि ताँहार वुके विँधिया रहिल।

भवानीचरण एइ आघात सहिया ये केमन करिया बाँचिया थाकिवेन सेइ भये रासमणि निजेर शोकके भालो करिया प्रकाश करिवार आर अवसर पाइलेन ना—ताँहार पुत्र आवार ताँहार स्वामीर मध्ये गिया विलीन हइल—स्वामीर मध्ये आबार दुइजनेरइ भार ताँहार व्यथित हृदयेर उपर तिनि तुलिया लइलेन। ताँहार प्राण वलिल, 'आर आमार सय ना।' तवु ताँहाके सहितेइ हइल।

५

रात्रि तखन अनेक। गभीर शोकेर एकान्त क्लान्तिते केवल क्षणकालेर जन्य रासमणि अचेतन हइया घुमाइया पड़ियाछिलेन।

ताइ—इसी से। आनानो याक—वुलवा लिया जाए। ढाकिया वलुक—छिपा कर कहे। येमन....वोझो—जैसा अच्छा समझो।

ताड़ाताड़ि—झटपट। पौंछिया—पहुँच कर। वुके....रहिल—हृदय में चुभी रह गई।

केमन करिया—क्यों कर। आवार—पुनः। तिनि तुलिया लइलेन—उन्होंने उठा लिया।

सय ना—वरदाश्त नहीं होता। सहितेइ हइल—सहना ही पड़ा। एकान्त—अत्यन्त, वहुत। घुमाइया पड़ियाछिलेन—सो गई थीं।

किन्तु, भवानीचरणेर घुम हइतेछिल ना। किछुक्षण बिछानाय एपाश-ओपाश करिया अवशेषे दीर्घनिश्वास-सहकारे 'दयामय हरि' बलिया उठिया पड़ियाछेन। कालीपद यखन ग्रामेर विद्यालयेइ पड़ित, यखन से कलिकाताय याय नाइ, तखन से ये-एकटि कोणेर घरे बसिया पड़ाशुना करित भवानीचरण कम्पित हस्ते एकटि प्रदीप धरिया सेइ शून्यघरे प्रवेश करिलेन। रासमणिर हाते चित्र करा छिन्न काँथाटि एखनो तक्तापोशेर उपर पाता आछे, ताहार नाना स्थाने एखनो सेइ कालिर दाग रहियाछे; मलिन देयालेर गाये कयलाय आँका सेइ ज्यामितिर रेखागुलि देखा याइतेछे; तक्तापोशेर एक कोणे कतकगुलि हाते-बाँधा मयला कागजेर खातार सङ्गे तृतीय खण्ड रयाल-रीडारेर छिन्नावशेष आजिओ पड़िया आछे। आर—हाय हाय—तार छेलेवयसेर छोटो पायेर एकपाटि चटि ये घरेर कोणे पड़िया छिल, ताहा एतदिन केह देखियाओ देखे नाइ, आज ताहा सकलेर चेये बड़ो हइया चोखे देखा दिल—जगते एमन कोनो महत् सामग्री नाइ याहा आज ऐ छोटो जुताटिके आड़ाल करिया राखिते पारे।

कुलुङ्गिते प्रदीपटि राखिया भवानीचरण सेइ तक्तापोशेर उपर आसिया बसिलेन। ताँहार शुष्क चोखे जल आसिल ना, किन्तु ताँहार बुकेर मध्ये केमन करिते लागिल—यथेष्ट परिमाणे निश्वास लइते ताँहार पाँजर येन फाटिया याइते चाहिल। घरेर

घुम—नींद। एपाश...करिया—इधर-उधर करवटें बदल कर। यखन—जब। पड़ित—पढ़ता था। कोणेर घरे—कोने के कमरे में। धरिया—थाम कर। चित्र करा—चित्रित, कढ़ा हुआ। काँथाटि—कँथली। तक्तापोशेर...आछे—तख्त पर बिछी हुई है। एखनो—अब भी। कालिर—स्याही के। देयालेर गाये—दीवार (के शरीर) पर। कयलाय आँका—कोयले से अंकित। कतकगुलि—कुछ थोड़ी-सी। हाते बाँधा—हाथ से बाँधी हुई। रयाल-रीडारेर—(अं०) रॉयल रीडर का। आजिओ—आज भी। एकपाटि चटि—(एक जोड़ी) चप्पलों में से एक। चेये—अपेक्षा। चोखे—आँखों में। आड़ाल—आड़, ओझल।

कुलुङ्गिते—ताक़, आले में। बुकेर मध्ये—हृदय में। पाँजर—पंजर।

पूर्वदिकेर दरजा खुलिया दिया गरादे धरिया तिनि वाहिरेर दिके चाहिलेन।

अन्धकार रात्रि, टिप् टिप् करिया वृष्टि पड़ितेछे। सम्मुखे प्राचीरवेष्टित घन जङ्गल। ताहार मध्ये ठिक पड़िवार घरेर सामने एकटुखानि जमिते कालीपद वागान करिया तुलिवार चेष्टा करियाछिल। एखनो ताहार स्वहस्ते रोपित झुमका-लता कञ्चिर वेड़ार उपर प्रचुर पल्लव विस्तार करिया सजीव आछे—ताहा फुले फुले भरिया गियाछे।

आज सेइ वालकेर यत्नपालित वागानेर दिके चाहिया ताँहार प्राण येन कण्ठेर काछे उठिया आसिल। आर किछु आशा करिवार नाइ; ग्रीष्मेर समय—पूजार समय—कलेजेर छुटि हय, किन्तु याहार जन्य ताँहार दरिद्र घर शून्य हइया आछे से आर कोनोदिन कोनो छुटितेइ घरे फिरिया आसिवे ना। "ओरे वाप आमार!" वलिया भवानीचरण सेइखानेइ माटिते वसिया पड़िलेन। कालीपद ताहार वापेर दारिद्र्य घुचाइवे वलियाइ कलिकाताय गियाछिल, किन्तु जगत्‌संसारे से एइ वृद्धके की एकान्त निःसम्वल करियाइ चलिया गेल।—वाहिरे वृष्टि आरओ चापिया आसिल।

एमन समय अन्धकारे घासपातार मध्ये पायेर शब्द शोना गेल। भवानीचरणेर वुकेर मध्ये वड़ास करिया उठिल। याहा कोनोमतेइ आशा करिवार नहे, ताहाओ येन तिनि आशा करिया वसिलेन। ताँहार मने हइल, कालीपद येन वागान देखिते

दरजा—दरवाजा। गरादे धरिया—छड़ पकड़ कर। चाहिलेन—ताका।

पड़िवार घरेर—पढ़ने के कमरे के। जमिते—जमीन में। वागान... तुलिवार—वगिया लगाने की। झुमका लता—कृष्ण कमल। कञ्चिर... उपर—बाँस की खपच्चियों की बाड़ पर।

कोनोदिन—किसी दिन। घुचाइवे—मिटा देगा। वलियाइ—इसीलिए। एकान्त—विल्कुल। चापिया आसिल—घनी, गहरी हो आई।

पायेर—पैरों का। वड़ास...उठिल—धक से हुई। कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी।

आसियाछे। किन्तु, वृष्टि ये मुषलधाराय पड़ितेछे—ओ ये भिजिबे, एइ असम्भव उद्वेगे यखन ताँहार मनेर भितरटा चञ्चल हइया उठियाछे एमन समये के गरादेर बाहिरे ताँहार घरेर सामने आसिया मुहूर्तकालेर जन्य दाँड़ाइल। चादर दिया से माथा मुड़ि दियाछे—ताहार मुख चिनिबार जो नाइ। किन्तु से येन माथाय कालीपदरइ मतो हइबे। "एसेछिस बाप!" बलिया भवानीचरण ताड़ाताड़ि उठिया बाहिरेर दरजा खुलिते गेलेन। द्वार खुलिया बागाने आसिया सेइ घरेर सम्मुखे उपस्थित हइलेन। सेखाने केहइ नाइ। सेइ वृष्टिते बागानमय घुरिया बेड़ाइलेन, काहाकेओ देखिते पाइलेन ना। सेइ निशीथरात्रे अन्धकारेर मध्ये दाँड़ाइया भाङा गलाय एकबार 'कालीपद' बलिया चीत्कार करिया डाकिलेन—काहारओ साड़ा पाइलेन ना। सेइ डाके नटु चाकरटा गोहालघर हइते बाहिर हइया आसिया अनेक करिया वृद्धके घरे लइया आसिल।

परदिन सकाले नटु घर झाँट दिते गिया देखिल, गरादेर सामनेइ घरेर भितरे पुँटुलिते बाँधा एकटा की पड़िया आछे। सेटा से भवनीचरणेर हाते आनिया दिल। भवानीचरण खुलिया देखिलेन, एकटा पुरातन दलिलेर मतो। चशमा बाहिर करिया चोखे लागाइया एकटु पड़ियाइ तिनि ताड़ाताड़ि छुटिया रासमणिर

भिजिबे—भीग जाएगा। **के....बाहिरे**—कोई छड़ों (जंगले) के बाहर। **घरेर**—कमरे के। **दाँड़ाइल**—खड़ा हुआ, रुका। **माथा...दियाछे**—सिर (छिपाए) लपेटे है। **चिनिबार....नाइ**—पहचानने का (कोई) उपाय नहीं। **माथाय**—सिर की आकृति से। **मतो**—समान। **एसेछिस बाप**—(तू) आया है बेटे। **दरजा**—दरवाजा। **केहइ**—कोई भी। **बागानमय...बेड़ाइलेन**—बगिया भर में भटकते फिरे। **भाङा गलाय**—फटे स्वर से। **डाकिलेन**—पुकारा। **साड़ा**—प्रत्युत्तर। **गोहालघर हइते**—गोठ से। **अनेक करिया**—जैसे-तैसे।

झाँट दिते—झाड़ू लगाने। **पुँटुलिते**—पोटली में। **एकटा की**—क्या कुछ। **दलिलेर मतो**—दस्तावेज की तरह (है)। **ताड़ाताड़ि छुटिया**—झटपट दौड़े हुए।

सम्मुखे गिया उपस्थित हइलेन एवं कागजखाना ताँहार निकट मेलिया धरिलेन।

रासमणि जिज्ञासा करिलेन, "ओ की ओ।"

भवानीचरण कहिलेन, "सेइ उइल।"

रासमणि कहिलेन, "के दिल।"

भवानीचरण कहिलेन, "काल रात्रे से आसियाछिल—से दिया गेछे।"

रासमणि जिज्ञासा करिलेन, "ए की हइबे।"

भवानीचरण कहिलेन, "आर आमार कोनो दरकार नाइ।"

बलिया सेइ दलिल छिन्न छिन्न करिया फेलिलेन।

ए संवादटा पाड़ाय यखन रटिया गेल तखन बगलाचरण माथा नड़िया सगर्व बलिल, "आमि बलि नाइ कालीपदके दियाइ उइल उद्धार हइबे?"

रामचरण मुदि कहिल, "किन्तु दादाठाकुर, काल यखन रात दशटार गाड़ि एस्टेशने एसे पौँछिल तखन एकटि सुन्दर-देखिते बाबु आमार दोकाने आसिया चौधुरीदेर बाड़िर पथ जिज्ञासा करिल—आमि ताहाके पथ देखाइया दिलाम। तार हाते येन की-एकटा देखियाछिलाम।"

"आरे दूर" बलिया ए कथाटाके बगलाचरण एकेबारेइ उड़ाइया दिल।

सितम्बर-अक्तूबर, १९११

मेलिया धरिलेन—खोल कर रखा।

ओ की ओ—वह क्या है, वह। **ए की हइबे**—इसका क्या होगा।

पाड़ाय—मुहल्ले में। **रटिया गेल**—फैल गया। **माथा नाड़िया**—सिर हिला कर। **दियाइ**—द्वारा ही। **मुदि**—परचूनिया। **एसे पौँछिल**—आ पहुँची।

आरे दूर—चल। **कथाटाके**—बात को। **एकेबारेइ**—बिल्कुल ही।

हालदारगोष्ठी

एइ परिवारटिर मध्ये कोनोरकमेर गोल वाधिवार कोनो संगत कारण छिल ना। अवस्थाओ सच्छल, मानुषगुलिओ केहइ मन्द नहे। किन्तु तवुओ गोल वाधिल।

केनना, संगत कारणेइ यदि मानुषेर सब-किछु घटित तवे तो लोकालयटा एकटा अङ्केर खातार मतो हइत, एकटु सावधाने चलिलेइ हिसावे कोथाओ कोनो भुल घटित ना; यदि वा घटित सेटाके रवार दिया मुछिया संशोधन करिलेइ चलिया याइत।

किन्तु, मानुषेर भाग्यदेवतार रसवोध आछे; गणितशास्त्रे ताँहार पाण्डित्य आछे कि ना जानि ना, किन्तु अनुराग नाइ; मानवजीवनेर योगवियोगेर विशुद्ध अङ्कफलटि उद्धार करिते तिनि मनोयोग करेन ना। एइजन्य ताँहार व्यवस्थार मध्ये एकटा पदार्थ तिनि संयोग करियाछेन, सेटा असंगति। याहा हइते पारित सेटाके से हठात् आसिया लण्डभण्ड करिया देय। इहातेइ नाट्यलीला जमिया उठे, संसारेर दुइ कूल छापाइया हासिकान्नार तुफान चलिते थाके।

ए क्षेत्रेओ ताहाइ घटिल—येखाने पद्मवन सेखाने मत्तहस्ती आसिया उपस्थित। पङ्केर सङ्गे पङ्कजेर एकटा विपरीत रकमेर माखामाखि हइया गेल। ता ना हइले ए गल्पटिर सृष्टि हइते पारित ना।

हालदारगोष्ठी—हालदार-वंश, परिवार। कोनोरकमेर...वाधिवार—किसी प्रकार की गड़बड़ी मचने का। सच्छल—सम्पन्न। केहइ मन्द—कोई भी बुरा। तवुओ—फिर भी।

केनना—क्योंकि। लोकालयटा—संसार। अंकेर....मतो—हिसाव की कॉपी की तरह। एकटु—तनिक-सा। रवार....मुछिया—रवर से मिटा कर।

ताँहार—उन(भाग्यदेवता)का। तिनि—वे। हइते पारित—हो सकता था। लण्डभण्ड—अस्त-व्यस्त। इहातेइ—इसीसे। कूल...तुफान—कगारों को प्लावित कर हास्य-रुदन का तूफ़ान।

रकमेर—प्रकार की। माखामाखि—मिलावट, घपला।

ये परिवारेर कथा उपस्थित करियाछि ताहार मध्ये सब चेये योग्य मानुष ये बनोयारिलाल, ताहाते सन्देह नाइ। से निजेओ ताहा विलक्षण जाने एवं सेइटेतेइ ताहाके अस्थिर करिया तुलियाछे। योग्यता एञ्जिनेर स्टीमेर मतो ताहाके भितर हइते ठेले ; सामने यदि से रास्ता पाय तो भालोइ, यदि ना पाय तबे याहा पाय ताहाके धाक्का मारे।

ताहार बाप मनोहरलालेर छिल सावेककेले बड़ोमानुषि चाल। ये समाज ताँहार, सेइ समाजेर माथाटिकेइ आश्रय करिया तिनि ताहार शिरोभूषण हइया थाकिबेन, एइ ताँहार इच्छा। सुतरां समाजेर हात-पायेर सङ्गे तिनि कोनो संस्रव राखेन ना। साधारण लोके काजकर्म करे, चले फेरे ; तिनि काज ना-करिबार ओ ना-चलिबार विपुल आयोजनटिर केन्द्रस्थले ध्रुव हइया विराज करेन।

प्राय देखा याय, एइप्रकार लोकेरा बिना चेष्टाय आपनार काछे अन्तत दुटि-एकटि शक्त एवं खाँटि लोकके येन चुम्बकेर मतो टानिया आनेन। ताहार कारण आर किछु नय, पृथिवीते एकदल लोक जन्माय सेवा कराइ ताहादेर धर्म। ताहारा आपन प्रकृतिर चरितार्थतार जन्यइ एमन अक्षम मानुषके चाय ये लोक निजेर भार पोलो-आनाइ ताहादेर उपर छाड़िया दिते पारे। एइ सहज सेवकेरा निजेर काजे कोनो सुख पाय ना ; किन्तु आर-एकजनके निश्चिन्त करा, ताहाके सम्पूर्ण आरामे राखा, ताहाके

ताहार मध्ये—उसमे। चेये—से। ताहाते—इसमें। विलक्षण जाने—अच्छी तरह से जानता है। सेइटेतेइ—इसी (जानकारी) ने। करिया तुलियाछे—बना दिया है। मतो—समान। हइते ठेले—से धकेलती है। भालोइ—अच्छा ही (है)।

सावेककेले—पुराने जमाने की। बड़ोमानुषि चाल—रईसी चाल-चलन। माथाटिकेइ...करिया—मस्तक, शीर्ष का सहारा ले कर। हइया थाकिबेन—बने रहेंगे। संस्रव—सम्पर्क।

अन्तत—कम से कम। खाँटि लोकके—खरे आदमियों को। टानिया आनेन—खींच लाते हैं। कराइ—करना ही। जन्यइ—के लिए ही। चाय—चाहते हैं। पोलो-आनाइ—सोलहों आने।

सकलप्रकार संकट हइते बाँचाइया चला, लोकसमाजे ताहार सम्मानवृद्धि करा, इहातेइ ताहादेर परम उत्साह। इहारा येन एकप्रकारेर पुरुष मा; ताहाओ निजेर छेलेर नहे, परेर छेलेर।

मनोहरलालेर ये चाकरटि आछे, रामचरण, ताहार शरीररक्षा ओ शरीरपातेर एकमात्र लक्ष्य बाबुर देह रक्षा करा। यदि से निश्वास लइले बाबुर निश्वास लइबार प्रयोजनटुकु बाँचिया याय ताहा हइले से अहोरात्र कामारेर हापरेर मतो हाँपाइते राजि आछे। बाहिरेर लोके अनेक समय भावे, मनोहरलाल बुझि ताँहार सेवकके अनावश्यक खाटाइया अन्याय पीड़न करितेछेन। केनना, हात हइते गुड़गुड़िर नलटा हयतो माटिते पड़ियाछे, सेटाके तोला कठिन काज नहे, अथच सेजन्य डाक दिया अन्य घर हइते रामचरणके दौड़ करानो नितान्त विसदृश बलियाइ बोध हय; किन्तु, एइ-सकल भूरि भूरि अनावश्यक व्यापारे निजेके अत्यावश्यक करिया तोलातेइ रामचरणेर प्रभूत आनन्द।

येमन ताँहार रामचरण, तेमनि ताँहार आर एकटि अनुचर नीलकण्ठ। विषयरक्षार भार एइ नीलकण्ठेर उपर। बाबुर प्रसादपरिपुष्ट रामचरणटि दिव्य सुचिक्कण, किन्तु नीलकण्ठेर देहे ताहार अस्थिकङ्कालेर उपर कोनोप्रकार आब्रु नाइ बलिलेइ हय। बाबुर ऐश्वर्यभाण्डारेर द्वारे से मूर्तिमान दुर्भिक्षेर मतो पाहारा देय। विषयटा मनोहरलालेर, किन्तु ताहार ममताटा सम्पूर्ण नीलकण्ठेर।

इहारा—ये (लोग)। येन—मानो। निजेर छेलेर—अपने बच्चे की। परेर—पराये।

प्रयोजनटुकु—जरूरत-भर। कामारेर....मतो—लुहार की धौंकनी की तरह। भावे—सोचते हैं। बुझि—शायद। खाटाइया—मेहनत करा कर। केनना—क्योंकि। नलटा—सटक। तोला—उठाना। डाक दिया—पुकार कर। करिया तोलातेइ—बना लेने से ही।

विषयरक्षार—धन-सम्पत्ति की हिफाजत का। आब्रु—आवरण, पर्दा। नाइ बलिलेइ हय—नहीं है कहना ही ठीक होगा। पाहारा—पहरा।

नीलकण्ठेर सङ्गे वनोयारिलालेर खिटमिटि अनेक दिन हइते बाधियाछे। मने करो, वापेर काछे दरवार करिया वनोयारि वड़ोवउयेर जन्य एकटा नूतन गहना गड़ाइवार हुकुम आदाय करियाछे। ताहार इच्छा, टाकाटा बाहिर करिया लइया निजेर मनोमत करिया जिनिशटा फरमाश करे। किन्तु, से हइवार जो नाइ। खरचपत्रेर समस्त काजइ नीलकण्ठेर हात दियाइ हओया चाइ। ताहार फल हइल एइ, गहना हइल वटे, किन्तु काहारओ मनेर मतो हइल ना। वनोयारिर निश्चय विश्वास हइल, स्याकरार सङ्गे नीलकण्ठेर भागवटोयारा चले। कड़ा लोकेर शत्रुर अभाव नाइ। ढेर लोकेर काछे वनोयारि ए कथाइ शुनिया आसियाछे ये, नीलकण्ठ अन्यके ये परिमाणे वञ्चित करितेछे निजेर घरे ताहार ततोधिक परिमाणे सञ्चित हइया उठितेछे।

अथच दुइपक्षे एइ-ये सब विरोध जमा हइया उठियाछे ताहा सामान्य पाँच-दश टाका लइया। नीलकण्ठेर विषयवुद्धिर अभाव नाइ—ए कथा ताहार पक्षे वुझा कठिन नहे ये, वनोयारिर सङ्गे वनाइया चलिते ना पारिले कोनो-ना-कोनो दिन ताहार विपद घटिवार सम्भावना। किन्तु, मनिवेर धन सम्वन्धे नीलकण्ठेर एकटा कृपणतार वायु आछे। से येटाके अन्याय्य मने करे मनिवेर हुकुम पाइलेओ किछुतेइ ताहा से खरच करिते पारे ना।

ए दिके वनोयारिर प्रायइ अन्याय्य खरचेर प्रयोजन घटितेछे। पुरुषेर अनेक अन्याय्य व्यापारेर मूले ये कारण थाके सेइ कारणटि

खिटमिटि—खटपट। हइते बाधियाछे—से चल रही है। मने करो—मान लो। दरवार करिया—तदबीर भिड़ा कर। गड़ाइवार—गढ़वा लेने का। आदाय करियाछे—ज्यों-त्यों ले लिया है। जिनिशटा—चीज़। फरमाश—फरमाइश। जो नाइ—उपाय, गुंजाइश नहीं। हात दियाइ—हाथों ही। चाइ—चाहिए। मनेर मतो—मन के माफिक। स्याकरार—सुनार के। कड़ा लोकेर—सख्त (मिजाज) व्यक्ति के। कथाइ—बात (ही)।

विषयवुद्धिर—दुनियादारी का, व्यावहारिक सूझ-बूझ का। वुझा—समझना। वनाइया...पारिले—निभा कर न चलने से। मनिवेर—मालिक के। वायु—सनक, झोंक। येटाके—जिसे।

एखानेओ खुब प्रबलभावे वर्तमान। बनोयारिर स्त्री किरणलेखार सौन्दर्य सम्बन्धे नाना मत थाकिते पारे, ताहा लइया आलोचना करा निष्प्रयोजन। ताहार मध्ये ये मतटि बनोयारिर, वर्तमान प्रसङ्गे एकमात्र सेइटेइ काजेर। वस्तुत स्त्रीर प्रति बनोयारिर मने ये परिमाण टान सेटाके बाड़िर अन्यान्य मेयेरा बाड़ाबाड़ि बलियाइ मने करे। अर्थात्, ताहारा निजेर स्वामीर काछ हइते यतटा आदर चाय अथच पाय ना, इहा ततटा।

किरणलेखार वयस यतइ हउक, चेहरा देखिले मने हय छेले-मानुषटि। बाड़िर बड़ोबउयेर येमनतरो गिन्निबान्नि धरणेर आकृति-प्रकृति हओया उचित से ताहा एकेबारेइ नहे। सबसुद्ध जड़ाइया से येन बड़ो स्वल्प।

बनोयारि ताहाके आदर करिया अणु बलिया डाकित। यखन ताहातेओ कुलाइत ना तखन बलित परमाणु। रसायनशास्त्रे याँहादेर विचक्षणता आछे ताँहारा जानेन, विश्वघटनाय अणुपरमाणु-गुलिर शक्ति बड़ो कम नय।

किरण कोनोदिन स्वामीर काछे किछुर जन्य आबदार करे नाइ। ताहार एमन एकटि उदासीन भाव, येन ताहार विशेष-किछुते प्रयोजन नाइ। बाड़िते ताहार अनेक ठाकुरझि, अनेक ननद; ताहादिगके लइया सर्वदाइ ताहार समस्त मन व्यापृत—नवयौनेर नवजाग्रत प्रेमेर मध्ये ये एकटा निर्जन तपस्या आछे

एखानेओ—यहाँ भी। **थाकिते पारे**—हो सकते हैं। **टान**—खिचाव, आकर्षण। **मेयेरा**—स्त्रियाँ। **बाड़ाबाड़ि**—ज़्यादती। **चाय**—चाहती हैं। **इहा**—यह।

यतइ हउक—जितनी भी हो। **छेलेमानुषटि**—बच्ची, लड़की। **येमनतरो....धरणेर**—जैसी मालकिन के अनुरूप। **एकेबारेइ नहे**—बिल्कुल नहीं है। **सबसुद्ध जड़ाइया**—सब मिला-जुला कर।

आदर करिया—लाड़ से। **बलिया डाकित**—कह कर पुकारता। **कुलाइत ना**—न सरता, संतोष न होता। **विचक्षणता**—गति, दखल। **अणुपरमाणुगुलिर**—अणु-परमाणुओं की।

किछुर...आबदार—किसी चीज़ के लिए ज़िद, हठ। **प्रयोजन नाइ**—मतलब नहीं। **ठाकुरझि**—पति की सगी बहनें, ननदें। **ताहादिगके**—उन्हें।

ताहाते ताहार तेमन प्रयोजन-बोध नाइ। एइजन्य बनोयारिर सङ्गे व्यवहारे ताहार विशेष एकटा आग्रहेर लक्षण देखा याय ना। याहा से बनोयारिर काछ हइते पाय ताहा से शान्तभावे ग्रहण करे, अग्रसर हइया किछु चाय ना। ताहार फल हइयाछे एइ ये, स्त्रीटि केमन करिया खुशि हइबे सेइ कथा बनोयारिके निजे भाविया बाहिर करिते हय। स्त्री येखाने निजेर मुखे फरमाश करे सेखाने सेटाके तर्क करिया किछु-ना-किछु खर्च करा सम्भव हय, किन्तु निजेर सङ्गे तो दर-कपाकपि चले ना। एमन स्थले अयाचित दाने याचित दानेर चेये खरच बेशि पड़िया याय।

ताहार परे स्वामीर सोहागेर उपहार पाइया किरण ये कतखानि खुशि हइल ताहा भालो करिया बुझिबार जो नाइ। ए सम्बन्धे प्रश्न करिले से बले—बेश! भालो! किन्तु, बनोयारिर मनेर खटका किछुतेइ मेटे ना; क्षणे क्षणे ताहार मने हय, हयतो पछन्द हय नाइ। किरण स्वामीके ईषत् भर्त्सना करिया बले, "तोमार ऐ स्वभाव। केन एमन खुंत्खुंत् करछ। केन, ए तो बेश हयेछे।"

बनोयारि पाठ्यपुस्तके पड़ियाछे—सन्तोषगुणटि मानुषेर महत् गुण। किन्तु, स्त्रीर स्वभावे एइ महत् गुणटि ताहाके पीड़ा देय। ताहार स्त्री तो ताहाके केवलमात्र सन्तुष्ट करे नाइ, अभिभूत करियाछे, सेओ स्त्रीके अभिभूत करिते चाय। ताहार स्त्रीके तो विशेष कोनो चेष्टा करिते हय ना—यौवनेर लावण्य आपनि उछलिया पड़े, सेवार नैपुण्य आपनि प्रकाश हइते थाके। किन्तु पुरुषेर तो एमन सहज सुयोग नय; पौरुषेर परिचय दिते

तेमन—वैसा। काछ हइते—निकट से। चाय ना—नहीं चाहती। भाविया—सोच कर। दर-कपाकपि—मोल-तोल। चेये—अपेक्षा। बेशि—अधिक।

ताहार परे—तिस पर। सोहागेर—लाड़ का। भालो. . . .नाइ—अच्छी तरह से समझने का (कोई) साधन नहीं। बेश—बढ़िया। मेटे ना—मिटता नहीं। पछन्द—पसन्द। खुंत्खुंत्—किचकिच, झकझक।

सेवार—सेवा का।

हइले ताहाके किछु एक करिया तुलिते हय। ताहार ये विशेष एकटा शक्ति आछे इहा प्रमाण करिते ना पारिले पुरुषेर भालोवासा म्लान हइया थाके। आर-किछु ना'ओ यदि थाके, धन ये एकटा शक्तिर निदर्शन, मयूरेर पुच्छेर मतो स्त्रीर काछे सेइ धनेर समस्त वर्णच्छटा विस्तार करिते पारिले ताहाते मन सान्त्वना पाय। नीलकण्ठ वनोयारिर प्रेमनाटचलीलार एइ आयोजनटाते वारम्वार व्याघात घटाइयाछे। वनोयारि वाड़िर वड़ोवावु, तवु किछुते ताहार कर्तृत्व नाइ, कर्तार प्रश्रय पाइया भृत्य हइया नीलकण्ठ ताहार उपरे आधिपत्य करे—इहाते वनोयारिर ये असुविधा ओ अपमान सेटा आर-किछुर जन्य तत नहे यतटा पञ्चशरेर तूणे मनेर मतो शर जोगाइवार अक्षमतावश।

एकदिन एइ धनसम्पदे ताहारइ अवाध अधिकार तो जन्मिवे। किन्तु, यौवन कि चिरदिन थाकिवे? वसन्तेर रङिन पेयालाय तखन ए सुधारस एमन करिया आपनि-आपनि भरिया उठिवे ना; टाका तखन विषयीर टाका हइया खुव शक्त हइया जमिवे, गिरि-शिखरेर तुषारसंघातेर मतो—ताहाते कथाय कथाय असावधानेर अपव्ययेर ढेउ खेलिते थाकिवे ना। टाकार दरकार तो एखनइ, यखन आनन्दे ताहा नय-छय करिवार शक्ति नष्ट हय नाइ।

वनोयारिर प्रधान शख तिनटि—कुस्ति, शिकार एवं संस्कृत-चर्चा। ताहार खातार मध्ये संस्कृत उद्भटकविता एकेवारे वोझाइ करा। वादलार दिने, ज्योत्स्नारात्रे, दक्षिणा हाओयाय,

---

किछु....हय—कुछ न कुछ कर डालना पड़ता है। भालोवासा—प्रेम। निदर्शन—प्रमाण। किछुते—किसी चीज़ में। कर्तार—मालिक, गृहस्वामी का। जन्य—लिए। तत—उतना। यतटा—जितना।

थाकिवे—रहेगा। पेयालाय—प्याले में। एमन...आपनि—इस तरह स्वतः। टाका—रुपया। विषयीर—सम्पत्तिशाली का। शक्त हइया—सख्त, ठोस हो कर। कथाय कथाय—बात-बात में। ढेउ—लहरें। दरकार तो एखनइ—आवश्यकता तो अभी, आज ही है। नय-छय—तीन-तेरह।

शख—शौक। खातार मध्ये—कॉपी में। वोझाइ करा—भरी हुई हैं। वादलार—वदली के।

सेगुलि वड़ो काजे लागे। सुविधा एइ, नीलकण्ठ एइ कविता-गुलिर अलंकारवाहुल्यके खर्च करिते पारे ना। अतिशयोक्ति यतइ अतिशय हउक, कोनो खाताञ्चि-सेरेस्ताय ताहार जन्य जवावदिहि नाइ। किरणेर कानेर सोनाय कार्पण्य घटे किन्तु ताहार कानेर काछे ये मन्दाक्रान्ता गुञ्जरित हय ताहार छन्दे एकटि मात्राओ कम पड़े ना एवं ताहार भावे कोनो मात्रा थाके ना वलिलेइ हय।

लम्वाचओड़ा पालोयानेर चेहारा वनोयारिर। यखन से राग करे तखन ताहार भये लोके अस्थिर। किन्तु, एइ जोयान लोकटिर मनेर भितरटा भारि कोमल। ताहार छोटो भाइ वंशीलाल यखन छोटो छिल तखन से ताहाके मातृस्नेहे लालन करियाछे। ताहार हृदये येन एकटि लालन करिवार क्षुधा आछे।

ताहार स्त्रीके से ये भालोवासे ताहार सङ्गे एइ जिनिसटिओ जड़ित, एइ लालन करिवार इच्छा। किरणलेखा तरुच्छायार-मध्ये पथहारा रश्मिरेखाटुकुर मतोइ छोटो, छोटो वलियाइ से ताहार स्वामीर मने भारि एकटा दरद जागाइया राखियाछे; एइ स्त्रीके वसने भूषणे नानारकम करिया साजाइया देखिते ताहार वड़ो आग्रह। ताहा भोग करिवार आनन्द नहे, ताहा रचना करिवार आनन्द, ताहा एकके वहु करिवार आनन्द, किरणलेखाके नाना वर्णे नाना आवरणे नानारकम करिया देखिवार आनन्द।

किन्तु, केवलमात्र संस्कृत श्लोक आवृत्ति करिया वनोयारिर

काजे लागे—काम आती हैं। खर्व—कम। यतइ—जितनी भी। खाताञ्चि-सेरेस्ता—खजांची करने वाले को या कचहरी में। मात्रा—परिमाण-विचार। वलिलेइ हय—(ऐसा) कहा जा सकता है।

पालोयानेर—पहलवान का। राग—क्रोध। अस्थिर—आकुल। जोयान—जवान।

भालोवासे—प्रेम करता है। जड़ित—संलग्न। पथहारा—भटकी हुई। वलियाइ—कारण ही। दरद—ममता। नानारकम करिया—अनेक प्रकार से। ताहा—वह।

आवृत्ति करिया—पुनरावृत्ति करके।

एइ शख कोनोमतेइ मिटितेछे ना। ताहार निजेर मध्ये एकटि पुरुषोचित प्रभुशक्ति आछे ताहाओ प्रकाश करिते पारिल ना, आर प्रेमेर सामग्रीके नाना उपकरणे ऐश्वर्यवान करिया तुलिबार ये इच्छा ताहाओ तार पूर्ण हइतेछे ना।

एमनि करियाइ एइ धनीर संतान ताहार मानमर्यादा, ताहार सुन्दरी स्त्री, ताहार भरा यौवन—साधारणत लोके याहा कामना करे ताहार समस्त लइयाओ संसारे एकदिन एकटा उत्पातेर मतो हइया उठिल।

सुखदा मधुकैवर्तेर स्त्री, मनोहरलालेर प्रजा। से एकदिन अन्तःपुरे आसिया किरणलेखार पा जड़ाइया धरिया कान्ना जुड़िया दिल। व्यापारटा एइ—बछर कयेक पूर्वे नदीते बेड़जाल फेलिबार आयोजन-उपलक्ष्ये अन्यान्य बारेर मतो जेलेरा मिलिया एकयोगे खत लिखिया मनोहरलालेर काछारिते हाजार टाका धार लइयाछिल। भालोमतो माछ पड़िले सुदे आसले टाका शोध करिया दिबार कोनो असुविधा घटे ना; एइजन्य उच्च सुदेर हारे टाका लइते इहारा चिन्तामात्र करे ना। से वत्सर तेमन माछ पड़िल ना, एवं घटनाक्रमे उपरि उपरि तिन वत्सर नदीर बाँके माछ एत कम आसिल ये जेलेदेर खरच पोषाइल ना, अधिकन्तु ताहारा ऋणेर जाले विपरीत रकम जड़ाइया पड़िल। ये-सकल जेले भिन्न एलेकार ताहादेर आर देखा पाओया याय ना; किन्तु, मधुकैवर्त भिटाबाड़िर प्रजा, ताहार पालाइबार जो नाइ

कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। **करिया तुलिबार**—कर पाने की।

प्रजा—असामी। **पा....दिल**—पैर पकड़ कर रोना शुरू कर दिया। **बछर**—बरस। **बेड़जाल**—बड़ा जाल। **जेलेरा**—धीवरों ने। **खत**—दस्तावेज। **काछारिते**—कचहरी में। **धार**—उधार। **माछ पड़िले**—मछलियाँ फँसने पर। **सुदे आसले**—मूल और व्याज। **सुदेर हारे**—व्याज की दर से। **नदीर बाँके**—नदी के मोड़ पर। **पोषाइल ना**—पूरा न पड़ा। **जड़ाइया पड़िल**—फँस गए। **एलेकार**—इलाके के। **भिटाबाड़िर**—पुश्तैनी घर वाला। **पालाइबार....नाइ**—भाग जाने की गुंजाइश ही नहीं।

बलिया समस्त देनार दाय ताहार उपरेइ चापियाछे। सर्वनाश हइते रक्षा पाइवार अनुरोध लइया से किरणेर शरणापन्न हइयाछे। किरणेर शाशुड़िर काछे गिया कोनो फल नाइ ताहा सकलेइ जाने; केनना, नीलकण्ठेर व्यवस्थाय ये आँचड़टुकु काटिते पारे ए कथा तिनि कल्पना करितेओ पारेन ना। नीलकण्ठेर प्रति बनोयारिर खुब एकटा आक्रोश आछे जानियाइ मधुकैवर्त ताहार स्त्रीके किरणेर काछे पाठाइयाछे।

बनोयारि यतइ राग एवं यतइ आस्फालन करुक, किरण निश्चय जाने ये, नीलकण्ठेर काजेर उपर हस्तक्षेप करिबार कोनो अधिकार ताहार नाइ। एइजन्य किरण सुखदाके बार बार करिया बुझाइवार चेष्टा करिया बलिल, "बाछा, की करब बलो। जानोइ तो एते आमादेर कोनो हात नेइ। कर्ता आछेन, मधुके बलो, ताँके गिये धरुक।"

से चेष्टा तो पूर्वेइ हइयाछे। मनोहरलालेर काछे कोनो विषये नालिश उठिलेइ तिनि ताहार विचारेर भार नीलकण्ठेर 'परेइ अर्पण करेन, कखनोइ ताहार अन्यथा हय ना। इहाते विचार-प्रार्थीर विपद आरओ बाड़िया उठे। द्वितीयबार केह यदि ताँहार काछे आपील करिते चाय ताहा हइले कर्ता रागिया आगुन हइया उठेन—विषयकर्मेर विरक्तिइ यदि ताँहाके पोहाइते हइल तबे विषय भोग करिया ताँहार सुख की!

सुखदा यखन किरणेर काछे कान्नाकाटि करितेछे तखन पाशेर

बलिया—इसलिए। चापियाछे—पड़ा है। शाशुड़िर काछे—सास के पास। केनना—क्योंकि। आँचड़टुकु...पारे—जरा भी इधर-उधर कर सके।

राग—क्रोध। आस्फालन करुक—डींग हाँके। बुझाइवार—समझाने की। बाछा—बिटिया। एते—इसमें। कर्ता—मालिक। ताँके...धरुक—उन्हीं को जा कर पकड़े।

नालिश—शिकायत। कखनोइ—कभी भी। केह—कोई। रागिया.. उठेन—गुस्से से आग-बबूला हो उठते हैं। विरक्तिइ—परेशानी ही। पोहाइते हइल—भोगनी पड़ी।

कान्नाकाटि—रोना-धोना।

घरे बसिया बनोयारि ताहार बन्दुकेर चोङे तेल माखाइतेछिल। बनोयारि सब कथाइ शुनिल। किरण करुणकण्ठे ये बारबार करिया बलितेछिल ये ताहारा इहार कोनो प्रतिकार करिते अक्षम, सेटा बनोयारिर बुके शेलेर मतो बिँधिल।

सेदिन माघीपूर्णिमा फाल्गुनेर आरम्भे आसिया पड़ियाछे। दिनेर वेलाकार गुमट भाङिया सन्ध्यावेलाय हठात् एकटा पागला हाओया मातिया उठिल। कोकिल तो डाकिया डाकिया अस्थिर; बारबार एक सुरेर आघाते से कोथाकार कोन् औदासीन्यके विचलित करिबार चेष्टा करितेछे। आर, आकाशे फुलगन्धेर मेला बसियाछे, येन ठेलाठेलि भिड़; जानलार ठिक पाशेइ अन्तःपुरेर बागान हइते मुचुकुन्दफुलेर गन्ध वसन्तेर आकाशे निविड़ नेशा धराइया दिल। किरण सेदिन लट्कानेर-रङ-करा एकखानि शाड़ि एवं खोँपाय बेलफुलेर माला परियाछे। एइ दम्पतिर चिरनियम-अनुसारे सेदिन बनोयारिर जन्यओ फाल्गुन-ऋतुयापनेर उपयोगी एकखानि लट्काने-रङिन चादर ओ बेलफुलेर गोड़ेमाला प्रस्तुत। रात्रिर प्रथम प्रहर काटिया गेल तबु बनोयारिर देखा नाइ। यौवनेर भरा पेयालाटि आज ताहार काछे किछुतेइ रुचिल ना। प्रेमेर वैकुण्ठलोके एतबड़ो कुण्ठा लइया से प्रवेश करिबे केमन करिया। मधुकैवर्तेर दुःख दूर करिबार क्षमता ताहार नाइ, से क्षमता आछे नीलकण्ठेर! एमन कापुरुषेर कण्ठे पराइबार जन्य माला के गाँथियाछे!

प्रथमेइ से ताहार बाहिरेर घरे नीलकण्ठके डाकाइया आनिल

चोङे...माखाइतेछिल—नाल में तेल लगा रहा था। **बुके**—छाती में।

गुमट—उमस। **मातिया उठिल**—मतवाली हो उठी। **कोथाकार**—कहाँ के। **येन...भिड़**—मानो रेल-पेल मची हुई है। **जानलार**—जंगले के। **नेशा...दिल**—नशा चढ़ा दिया। **लट्कानेर-रङ-करा**—गेरुए-लाल रंग की। **खोँपाय बेलफुलेर**—जूड़े में बेले के फूलों की। **गोड़ेमाला**—मोटी माला। **पराइबार**—पहनाने के। **के गाँथियाछे**—किसने गूँथी है।

डाकाइया आनिल—बुलवा भेजा।

एवं देनार दाये मधुकैवर्तके नष्ट करिते निषेध करिल। नील-कण्ठ कहिल, मधुके यदि प्रश्रय देओया हय ताहा हइले एइ तामादिर मुखे विस्तर टाका बाकि पड़िबे; सकलेइ ओजर करिते आरम्भ करिबे। बनोयारि तर्के यखन पारिल ना तखन याहा मुखे आसिल गाल दिते लागिल। बलिल, छोटोलोक। नील-कण्ठ कहिल, "छोटोलोक ना हइले बड़ोलोकेर शरणापन्न हइब केन।" बलिल, चोर। नीलकण्ठ बलिल, "से तो बटेइ, भगवान् याहाके निजेर किछुइ देन नाइ, परेर धनेइ तो से प्राण बाँचाय।" सकल गालिइ से माथाय करिया लइल; शेषकाले बलिल, "उकिलबाबु बसिया आछेन, ताँहार सङ्गे काजेर कथाटा सारिया लइ। यदि दरकार बोध करेन तो आबार आसिब।"

बनोयारि छोटो भाइ वंशीके निजेर दले टानिया तखनइ बापेर काछे याओया स्थिर करिल। से जानित, एकला गेले कोनो फल हइबे ना, केनना, एइ नीलकण्ठके लइयाइ ताहार बापेर सङ्गे पूर्वेइ ताहार खिटिमिटि हइयाछे। बाप ताहार उपर विरक्त हइयाइ आछेन। एकदिन छिल यखन सकलेइ मने करित, मनोहर-लाल ताँहार बड़ो छेलेकेइ सब चेये भालोबासेन। किन्तु, एखन मने हय, वंशीर उपरइ ताँहार पक्षपात। एइजन्यइ बनोयारि वंशीकेओ ताहार नालिशेर पक्षभुक्त करिते चाहिल।

वंशी, याहाके बले, अत्यन्त भालो छेले। एइ परिवारेर मध्ये सेइ केवल दुटो एक्‌जामिन पास करियाछे। एबार से

देनार दाये—कर्ज से दबे (हुए)। **तामादिर मुखे**—मियाद चुकने के समय। **विस्तर**—बहुत। **ओजर**—उज्र, आनाकानी। **गाल**—गाली। **पारिल ना**—पार न पा सका। **बटेइ**—है ही। **परेर**—पराये। **माथाय...लइल**—सिर-माथे ले लीं। **सारिया लइ**—निवटा लूं। **दरकार**—आवश्यकता।

टानिया—खींच कर, मिला कर। **केनना**—क्योंकि। **खिटिमिटि**—खटपट। **विरक्त**—चिढ़े। **छेलेकेइ**—लड़के को ही। **चेये**—से। **भालोबासेन**—चाहते हैं। **एइजन्यइ**—इसीलिए।

याहाके बले—जिसे कहते हैं। **एक्‌जामिन**—(अं०) परीक्षा।

आइनेर परीक्षा दिवार जन्य प्रस्तुत हइतेछे। दिनरात जागिया पड़ा करिया करिया ताहार अन्तरेर दिके किछु जमा हइतेछे कि ना अन्तर्यामी जानेन, किन्तु शरीरेर दिके खरच छाड़ा आर किछुइ नाइ।

एइ फाल्गुनेर सन्ध्याय ताहार घरे जानला बन्ध। ऋतुपरिवर्तनेर समयटाके ताहार भारि भय। हाओयार प्रति ताहार श्रद्धामात्र नाइ। टेबिलेर उपर एकटा केरोसिनेर ल्याम्प ज्वलितेछे; कतक वइ मेजेर उपरे चौकिर पाशे राशीकृत, कतक टेबिलेर उपरे; देयाले कुलुङ्गिते कतकगुलि औषधेर शिशि।

बनोयारिर प्रस्तावे से कोनोमतेइ सम्मत हइल ना। बनोयारि राग करिया गर्जिया उठिल, "तुइ नीलकण्ठके भय करिस!" वंशी ताहार कोनो उत्तर ना दिया चुप करिया रहिल। वस्तुतइ नीलकण्ठके अनुकूल राखिबार जन्य ताहार सर्वदाइ चेष्टा। से प्राय समस्त वत्सर कलिकातार बासातेइ काटाय; सेखाने बराद्द टाकार चेये ताहार बेशि दरकार हइयाइ पड़े। एइ सूत्रे नीलकण्ठके प्रसन्न राखाटा ताहार अभ्यस्त।

वंशीके भीरु, कापुरुष, नीलकण्ठेर चरण-चारण-चक्रवर्ती बलिया खुब एकचोट गालि दिया बनोयारि एकलाइ बापेर काछे गिया उपस्थित। मनोहरलाल ताँहादेर बागाने दिघिर घाटे ताँहार नधर शरीरटि उद्घाटन करिया आरामे हाओया खाइतेछेन। पारिपदगण काछे बसिया कलिकातार बारिस्टारेर जेराय जेलाकोर्टे अपर

आइनेर—क़ानून की। **पड़ा...करिया**—पढ़-पढ़ कर। **छाड़ा**—सिवाय।

जानला—जंगला। **कतक...चौकिरपाशे**—कुछ पुस्तकें फर्श पर तख़्त के पास। **देयाले कुलुङ्गिते**—दीवार के आले में।

कोनोमतेइ—किसी प्रकार भी। **राग करिया**—क्रोध से। **तुइ**—तू। **करिस**—करता है। **बासातेइ काटाय**—मकान में ही काटता है। **बराद्द...चेये**—निर्धारित रुपयों से। **बेशि दरकार**—अधिक की आवश्यकता। **अभ्यस्त**—अभ्यास हो गया है।

एकचोट—यथेष्ट, जी भर कर। **दिघिर घाटे**—तलैया, बावली के किनारे। **नधर**—सुपुष्ट, गोल-मटोल। **जेराय**—जिरह में।

पल्लीर जमिदार अखिल मजुमदार ये किरूप नाकाल हइयाछिल ताहारइ काहिनी कर्ताबाबुर श्रुतिमधुर करिया रचना करितेछिल। सेदिन वसन्तसन्ध्यार सुगन्ध वायुसहयोगे सेइ वृत्तान्तटि ताँहार काछे अत्यन्त रमणीय हइया उठियाछिल।

हठात् वनोयारि ताहार माझखाने पड़िया रसभङ्ग करिया दिल। भूमिका करिया निजेर वक्तव्य कथाटा धीरे-धीरे पाड़िवार मतो अवस्था ताहार छिल ना। से एकेवारे गला चड़ाइया शुरु करिया दिल, नीलकण्ठेर द्वारा ताहादेर क्षति हइतेछे। से चोर, से मनिबेर टाका भाङिया निजेर पेट भरितेछे। कथाटार कोनो प्रमाण नाइ एवं ताहा सत्यओ नहे। नीलकण्ठेर द्वारा विषयेर उन्नति हइयाछे, एवं से चुरिओ करे ना। बनोयारि मने करियाछिल, नीलकण्ठेर सत्स्वभावेर प्रति अटल विश्वास आछे वलियाइ कर्ता सकल विषयेइ ताहार 'परे एमन चोख बुजिया निर्भर करेन। एटा ताहार भ्रम। मनोहरलालेर मने निश्चय धारणा ये, नीलकण्ठ सुयोग पाइले चुरि करिया थाके। किन्तु, सेजन्य ताहार प्रति ताँहार कोनो अश्रद्धा नाइ। कारण, आवहमान काल एमनि भावेइ संसार चलिया आसितेछे। अनुचरगणेर चुरिर उच्छिष्टेइ तो चिरकाल बड़ोघर पालित। चुरि करिबार चातुरी याहार नाइ, मनिबेर विषयरक्षा करिबार वुद्धिइ वा ताहार जोगाइवे कोथा हइते। धर्मपुत्र युधिष्ठिरके दिया तो जमिदारिर काज चले ना। मनोहर अत्यन्त विरक्त हइया उठिया कहिलेन, "आच्छा, आच्छा, नीलकण्ठ की करे ना-करे से कथा तोमाके

पल्लीर—गाँव के। नाकाल हइयाछिल—दुर्गति, छीछालेदर हुई थी। कर्ताबावुर—मालिक को।

माझखाने—बीच में। पाड़िवार मतो—उठाने लायक। गला चड़ाइया—ऊँचे स्वर में। मनिवेर—मालिक के। टाका भाङिया—रुपये उड़ा कर। विषयेर—धन-सम्पत्ति की। वलियाइ—इसी कारण। चोख बुजिया—आँख मूंद कर। आवहमान काल...भावेइ—अनादि काल से इसी प्रकार। जोगाइबे....हइते—कहाँ से लाएगा। दिया—द्वारा।

भाविते हइबे ना।" सेइ सङ्गे इहाओ वलिलेन, "देखो देखि, वंशीर तो कोनो वालाइ नाइ। से केमन पड़ाशुना करितेछे! ए छेलेटा तबु एकटु मानुषेर मतो।"

इहार परे अखिल मजुमदारेर दुर्गतिकाहिनीते आर रस जमिल ना। सुतरां, मनोहरलालेर पक्षे सेदिन वसन्तेर वातास वृथा रहिल एवं दिघिर कालो जलेर उपर चाँदेर आलोर झक्झक् करिया उठिबार कोनो उपयोगिता रहिल ना। सेदिन सन्ध्याटा केवल वृथा हय नाइ वंशी एवं नीलकण्ठेर काछे। जानला बन्ध करिया वंशी अनेक रात पर्यन्त पड़िल एवं उकिलेर सङ्गे परामर्श करिया नीलकण्ठ अर्धेक रात काटाइया दिल।

किरण घरेर प्रदीप निबाइया दिया जानलार काछे बसिया। काजकर्म आज से सकाल-सकाल सारिया लइयाछे। रात्रेर आहार बाकि, किन्तु एखनओ बनोयारि खाय नाइ, ताइ से अपेक्षा करितेछे। मधु कैवर्तेर कथा ताहार मनेओ नाइ। बनोयारि ये मधुर दुःखेर कोनो प्रतिकार करिते पारे ना, ए सम्बन्धे किरणेर मने क्षोभेर लेशमात्र छिल ना। ताहार स्वामीर काछ हइते कोनोदिन से कोनो विशेष क्षमतार परिचय पाइबार जन्य उत्सुक नहे। परिवारेर गौरवेइ ताहार स्वामीर गौरव। ताहार स्वामी ताहार श्वशुरेर बड़ो छेले, इहार चेये ताहाके ये आरओ बड़ो हइते हइबे, एमन कथा कोनोदिन ताहार मनेओ हय नाइ। इँहारा ये गोँसाइगञ्जेर सुविख्यात हालदार-वंश!

भाविते—सोचनी। देखो देखि—देखो तो भला। बालाइ—झंझट, बखेड़ा। पड़ाशुना—पढ़ाई-लिखाई। एकटु—कुछ-कुछ।

इहार परे—इसके बाद। **झक्झक् करिया**—चमचमाते हुए। **जानला**—जंगला। **बन्ध करिया**—बन्द करके।

निबाइया...काछे—बुझा कर जंगले के निकट। **सकाल...लइयाछे**—जल्दी-जल्दी निवटा लिया है। **ताइ**—इसी से। **अपेक्षा**—प्रतीक्षा। **मधुर**—मधु (केवट) के। **जन्य**—लिए। **छेले**—लड़का। **इहार चेये**—इसकी अपेक्षा। **एमन कथा**—ऐसी बात। **इँहारा**—ये लोग।

वनोयारि अनेक रात्रि पर्यन्त वाहिरेर वारान्डाय पायचारि समाधा करिया घरे आसिल। से भुलियां गियाछे ये, ताहार खाओया हय नाइ। किरण ये ताहार अपेक्षाय ना-खाइया वसिया आछे एइ घटनाटा सेदिन येन ताहाके विशेष करिया आघात करिल। किरणेर एइ कष्टस्वीकारेर सङ्गे ताहार निजेर अकर्मण्यता येन खाप खाइल ना। अन्नेर ग्रास ताहार गलाय वाधिया याइबार जो हइल। वनोयारि अत्यन्त उत्तेजनार सहित स्त्रीके वलिल, "येमन करिया पारि मधुकैवर्तके आमि रक्षा करिव।" किरण ताहार एइ अनावश्यक उग्रताय विस्मित हइया कहिल, "शोनो एकवार! तुमि ताहाके वाँचाइवे केमन करिया।"

मधुर देना वनोयारि निजे शोध करिया दिवे एइ ताहार पण, किन्तु वनोयारिर हाते कोनोदिन तो टाका जमे ना। स्थिर करिल, ताहार तिनटे भालो वन्दुकेर मध्ये एकटा वन्दुक एवं एकटा दामि हीरार आङटि विक्रय करिया से अर्थ संग्रह करिवे। किन्तु, ग्रामे ए-सव जिनिसेर उपयुक्त मूल्य जुटिवे ना एवं विक्रयेर चेष्टा करिले चारि दिके लोके कानाकानि करिवे। एइजन्य कोनो-एकटा छुता करिया वनोयारि कलिकाताय चलिया गेल। याइवार समय मधुके डाकिया आश्वास दिया गेल, ताहार कोनो भय नाइ।

ए दिके वनोयारिर शरणापन्न हइयाछे वुझिया, नीलकण्ठ मधुर उपरे रागिया आगुन हइया उठियाछे। पेयादार उत्पीड़ने कैवर्तपाड़ार आर मानसम्भ्रम थाके ना।

पायचारि...करिया—चहल-कदमी समाप्त करके। येन—मानो। खाप खाइल ना—मेल नहीं बैठा। वाधिया...हइल—अटकने की नौबत आ गई। येमन...पारि—जैसे भी हो।

पण—प्रण। तिनटे—तीन। दामि—कीमती। जिनिसेर—चीज़ों का। जुटिवे ना—नहीं मिलेगा। कानाकानि—कानाफूसी। छुता करिया—वहाना वना कर।

ए दिके—इधर। वुझिया—समझ कर। रागिया...उठियाछे—क्रोध से आग-ववूला हो उठा है। पेयादार—प्यादे के। कैवर्तपाड़ार—केवटों के मुहल्ले का।

कलिकाता हइते बनोयारि येदिन फिरिया आसिल सेइ दिनइ मधुर छेले स्वरूप हाँपाइते हाँपाइते छुटिया आसिया एकेबारे बनोयारिर पा जड़ाइया धरिया हाउमाउ करिया कान्ना जुड़िया दिल। "की रे की, व्यापारखाना की।" स्वरूप बलिल, ताहार बापके नीलकण्ठ काल रात्रि हइते काछारिते बन्ध करिया राखियाछे। बनोयारिर सर्वशरीर रागे काँपिते लागिल। कहिल, "एखनि गिया थानाय खबर दिया आय गे।"

की सर्वनाश। थानाय खबर! नीलकण्ठेर विरुद्धे! ताहार पा उठिते चाय ना। शेषकाले बनोयारिर ताड़नाय थानाय गिया से खबर दिल। पुलिस हठात् काछारिते आसिया बन्धनदशा हइते मधुके खालास करिल एवं नीलकण्ठ ओ काछारिर कयेकजन पेयादाके आसामी करिया म्याजिस्ट्रेटेर काछे चालान करिया दिल।

मनोहर विषम व्यतिव्यस्त हइया पड़िलेन। ताँहार मकद्दमार मन्त्रीरा घुषेर उपलक्ष्य करिया पुलिसेर सङ्गे भाग करिया टाका लुटिते लागिल। कलिकाता हइते एक बारिस्टार आसिल, से एकेबारे काँचा, नूतन-पास-करा। सुविधा एइ, यत फि ताहार नामे खाताय खरच पड़े तत फि ताहार पकेटे उठे ना। ओ दिके मधुकैवर्तेर पक्षे जेला-आदालतेर एकजन मातब्बर उकिल नियुक्त हइल। के ये ताहार खरच जोगाइतेछे बोझा गेल ना। नील-कण्ठेर छय मास मेयाद हइल। हाइकोर्टेर आपिलेओ ताहाइ बहाल रहिल।

हइते—से। हाँपाइते—हाँफते। छुटिया आसिया—दौड़ता हुआ आ कर। हाउमाउ करिया—बिलख-बिलख कर। कान्ना...दिल—रोना शुरु कर दिया। व्यापारखाना—मामला। काछारिते—कचहरी में। बन्ध—बन्द। रागे—क्रोध से। एखनि गिया—अभी जा कर।

पा—पाँव। चाय ना—नहीं चाहते। खालास करिल—मुक्त किया। आसामी करिया—मुलज़िम बना कर।

व्यतिव्यस्त—बेहद परेशान। घुषेर...करिया—रिश्वत के बहाने से। काँचा—कच्चा। फि—फीस। मातब्बर उकिल—सुयोग्य वकील। जोगाइतेछे...गेल ना—पूरा कर रहा है जाना नहीं जा सका। मेयाद—सज़ा।

घड़ि एवं वन्दुकटा ये उपयुक्त मूल्ये विक्रय हइयाछे ताहा व्यर्थ हइल ना—आपातत मधु बाँचिया गेल एवं नीलकण्ठेर जेल हइल। किन्तु; एइ घटनार परे मधु ताहार भिटाय टिंकिवे की करिया। वनोयारि ताहाके आश्वास दिया कहिल, "तुइ थाक्, तोर कोनो भय नाइ।" किसेर जोरे ये आश्वास दिल ताहा सेइ जाने—बोध करि, निछक निजेर पौरुषेर स्पर्धाय।

वनोयारि ये एइ व्यापारेर मूले आछे ताहा से लुकाइया राखिते विशेष चेष्टा करे नाइ। कथाटा प्रकाश हइल; एमन-कि, कर्तार कानेओ गेल। तिनि चाकरके दिया वलिया पाठाइ-लेन, "वनोयारि येन कदाच आमार सम्मुखे ना आसे।" वनोयारि पितार आदेश अमान्य करिल ना।

किरण ताहार स्वामीर व्यवहार देखिया अवाक। ए की काण्ड। वाड़िर वड़ोवावु—वापेर सङ्गे कथावार्ता वन्ध! तार उपरे निजेदेर आमलाके जेले पाठाइया विश्वेर लोकेर काछे निजेर परिवारेर माथा हेंट करिया देओया! ताओ एइ एक सामान्य मधुकैवर्तके लइया!

अद्‌भुत वटे! ए वंशे कतकाल धरिया कत वड़ोवावु जन्मि-याछे एवं कोनोदिन नीलकण्ठेरओ अभाव नाइ। नीलकण्ठेरा विषयव्यवस्थार समस्त दाय निजेरा लइयाछे आर वड़ोवावुरा सम्पूर्ण निश्चेष्टभावे वंशगौरव रक्षा करियाछे। एमन विपरीत व्यापार तो कोनोदिन घटे नाइ!

आज एइ परिवारेर वड़ोवावुर पदेर अवनति घटाते वड़ो-

आपातत—फिलहाल। भिटाय—पुश्तैनी घर में। तुइ थाक्—तू रह। तोर—तुझे। किसेर जोरे—किस वल पर। वोध करि—सम्भवतः। निछक—केवल।

एमन-कि—यहाँ तक कि। वलिया पाठाइलेन—कहला भेजा। कदाच—कभी।

कथावार्ता वन्ध—वातचीत वन्द। आमलाके—कर्मचारी को। माथा... देओया—सिर नीचा करा देना।

अद्‌भुत वटे—(यह वात) अद्‌भुत तो है ही। धरिया—से।

बउयेर सम्माने आघात लागिल। इहाते एतदिन परे आज स्वामीर प्रति किरणेर यथार्थ अश्रद्धार कारण घटिल। एतदिन परे ताहार वसन्तकालेर लट्काने रङ्गेर शाड़ि एवं खोँपार वेलफुलेर माला लज्जाय म्लान हइया गेल।

किरणेर वयस हइयाछे अथच सन्तान हय नाइ। एइ नीलकण्ठइ एकदिन कर्तार मत कराइया पात्री देखिया बनोयारिर आर-एकटि विवाह प्राय पाकापाकि स्थिर करियाछिल। बनोयारि हालदारवंशेर बड़ो छेले, सकल कथार आगे ए कथा तो मने राखिते हइबे। से अपुत्रक थाकिबे, इहा तो हइतेइ पारे ना। एइ व्यापारे किरणेर बुक दुर्दुरु करिया काँपिया उठियाछिल। किन्तु, इहा से मने मने ना स्वीकार करिया थाकिते पारे नाइ ये, कथाटा संगत। तखनो से नीलकण्ठेर उपरे किछुमात्र राग करे नाइ, से निजेर भाग्यकेइ दोष दियाछे। ताहार स्वामी यदि नीलकण्ठके रागिया मारिते ना याइत एवं विवाहसम्बन्ध भाङिया दिया पितामातार सङ्गे रागारागि ना करित तबे किरण सेटाके अन्याय मने करित ना। एमन-कि, बनोयारि ये ताहार वंशेर कथा भाबिल ना, इहाते अति गोपने किरणेर मने बनोयारिर पौरुषेर प्रति एकटु अश्रद्धाइ हइयाछिल। बड़ो घरेर दाबि कि सामान्य दाबि। ताहार ये निष्ठुर हइबार अधिकार आछे। ताहार काछे कोनो तरुणी स्त्रीर किम्वा कोनो दुःखी कैवर्तेर सुख-दुःखेर कतटुकुइ वा मूल्य।

इहाते...परे—इससे इतने दिनों बाद। **लट्काने....शाड़ि**—गेरुए-लाल रंग की साड़ी। **खोँपार...माला**—जूड़े की बेले के फूलों की माला।

वयस हइयाछे—वयस्का हो गई है। **मत कराइया**—राजी करा कर। **पात्री देखिया**—लड़की देख कर। **पाकापाकि**—पक्की तौर पर। **आगे**—पहले। **हइतेइ...ना**—हो ही नहीं सकता। **बुक दुरुदुरु**—हृदय धुकधुक। **थाकिते पारे नाइ**—न रह सकी। **राग**—क्रोध। **रागिया**—क्रोध में आ कर। **भाङिया दिया**—तोड़ कर। **रागारागि**—मनमुटाव। **एमन-कि**—यहाँ तक कि। **कथा...ना**—बात न सोची। **दाबि**—अधिकार। **कतटुकुइ वा मूल्य**—क़ीमत ही (आखिर) कितनी है।

साधारणत याहा घटिया थाके एक-एकबार ताहा ना घटिले केहइ ताहा क्षमा करिते पारे ना, ए कथा बनोयारि किछुतेइ बुझिते पारिल ना। सम्पूर्णरूपे ए बाड़िर बड़ोबाबु हओयाइ ताहार उचित छिल; अन्य कोनो प्रकारेर उचित-अनुचित चिन्ता करिया एखानकार धारावाहिकता नष्ट करा ये ताहार अकर्तव्य, ताहा से छाड़ा सकलेरइ काछे अत्यन्त सुस्पष्ट।

ए लइया किरण ताहार देवरेर काछे कत दुःखइ करियाछे। वंशी बुद्धिमान; ताहार खाओया हजम हय ना एवं एकटु हाओया लागिलेइ से हाँचिया कासिया अस्थिर हइया उठे, किन्तु से स्थिर धीर विचक्षण। से ताहार आइनेर बइयेर ये अध्यायटि पड़ितेछिल सेइटेके टेबिलेर उपर खोला अवस्थाय उपुड़ करिया राखिया किरणके बलिल, "ए पागलामि छाड़ा आर-किछुइ नहे।" किरण अत्यन्त उद्वेगेर सहित माथा नाड़िया कहिल, "जान तो ठाकुरपो, तोमार दादा यखन भालो आछेन तखन बेश आछेन, किन्तु एकबार यदि खेपेन तबे ताँहाके केह सामलाइते पारे ना। आमि की करि बलो तो।"

परिवारेर सकल प्रकृतिस्थ लोकेर सङ्गेइ यखन किरणेर मतेर सम्पूर्ण मिल हइल तखन सेइटेइ बनोयारिर बुके सकलेर चेये बाजिल। एइ एकटुखानि स्त्रीलोक, अनतिस्फुट चाँपाफुलटिर मतो पेलव, इहार हृदयटिके आपन वेदनार काछे टानिया आनिते पुरुषेर समस्त शक्ति परास्त हइल। आजकेर दिने किरण यदि

केहइ—कोई भी। बाड़िर—घर का। एखानकार—यहाँ की। से छाड़ा—इसके सिवा।

ए लइया—इसको ले कर। हाँचिया कासिया—छींक-छींक, खाँस-खाँस कर। विचक्षण—पंडित। आइनेर बइयेर—कानूनी किताब का। उपुड़ करिया—उलटा कर। पागलामि छाड़ा—पागलपन के सिवा। माथा नाड़िया—सिर हिलाते हुए। ठाकुरपो—देवर। भालो—अच्छे। बेश आछेन—भले अच्छे रहते हैं। खेपेन—बिगड़ जाएँ।

सेइटेइ—वही। बुके बाजिल—हृदय में सबसे अधिक चुभी। एकटुखानि—ज़रा-सी। पेलव—कोमल। काछे टानिया आनिते—निकट खींच लाने को।

वनोयारिर सहित सम्पूर्ण मिलिते पारित ते ताहार हृदयक्षत देखिते देखिते एमन करिया वाड़िया उठित ना।

मधुके रक्षा करिते हइबे एइ अति सहज कर्तव्येर कथाटा, चारि दिक हइते ताड़नार चोटे, वनोयारिर पक्षे सत्य-सत्यइ एकटा स्यापामिर व्यापार हइया उठिल। इहार तुलनाय अन्य समस्त कथाइ ताहार काछे तुच्छ हइया गेल। ए दिके जेल हइते नीलकण्ठ एमन सुस्थभावे फिरिया आसिल येन से जामाइपष्ठीर निमन्त्रण रक्षा करिते गियाछिल। आवार से यथारीति अम्लानवदने आपनार काजे लागिया गेल।

मधुके भिटाछाड़ा करिते ना पारिले प्रजादेर काछे नीलकण्ठेर मान रक्षा हय ना। मानेर जन्य से वेशि किछु भावे ना, किन्तु प्रजारा ताहाके ना मानिले ताहार काज चलिबे ना, एइजन्यइ ताहाके सावधान हइते हय। ताइ मधुके तृणेर मतो उत्पाटित करिबार जन्य ताहार निड़ानिते शान देओया शुरु हइल।

एवार वनोयारि आर गोपने रहिल ना। एवार से नीलकण्ठके स्पष्ट जानाइया दिल ये, येमन करिया हउक मधुके उच्छेद हइते से दिबे ना। प्रथमत, मधुर देना से निजे हइते समस्त शोध करिया दिल; ताहार परे आर-कोनो उपाय ना देखिया से निजे गिया म्याजिस्ट्रेटके जानाइया आसिल ये, नीलकण्ठ अन्याय करिया मधुके विपदे फेलिवार उद्योग करितेछे।

हितैषीरा वनोयारिके सकलेइ वुझाइल, येरूप काण्ड घटितेछे

एमन...उठित ना—इस तरह बढ़ न पाता।

ताड़नार चोटे—भर्त्सना की चोट से। स्यापामिर—विगड़ने, पागलपन का। ए दिके—इवर। जामाइषष्ठी—(ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी के दिन जामाता को वरण करने का अनुष्ठान)। आवार—पुनः।

भिटाछाड़ा—बेघर-बार। प्रजादेर—रैयत के। भावे ना—नहीं सोचता। निड़ानिते—निराने के उपकरण में। शान—सान।

एवार—इस वार। जानाइया दिल—बता दिया। येमन...हउक—जैसे भी हो। निजे हइते—अपनी ओर से। ताहार परे—तिस पर।

वुझाइल—समझाया।

ताहाते कोन्‌दिन मनोहर ताहाके त्याग करिबे। त्याग करिते गेले ये-सब उत्पात पोहाइते हय ताहा यदि ना थाकित तबे एतदिने मनोहर ताहाके विदाय करिया दित। किन्तु, बनोयारिर मा आछेन एवं आत्मीयस्वजनेर नाना लोकेर नानाप्रकार मत, एइ लइया एकटा गोलमाल बाधाइया तुलिते तिनि अत्यन्त अनिच्छुक बलियाइ एखनो मनोहर चुप करिया आछेन।

एमनि हइते हइते एकदिन सकाले हठात् देखा गेल, मधुर घरे ताला बन्ध। राताराति से ये कोथाय गियाछे ताहार खबर नाइ। व्यापारटा नितान्त अशोभन हइतेछे देखिया नीलकण्ठ जमिदार-सरकार हइते टाका दिया ताहाके सपरिवारे काशी पाठाइया दियाछे। पुलिश ताहा जाने; एजन्य कोनो गोलमाल हइल ना। अथच नीलकण्ठ कौशले गुजब रटाइया दिल ये, मधुके ताहार स्त्री-पुत्र-कन्या-समेत अमावस्या रात्रे कालीर काछे बलि दिया मृतदेहगुलि छालाय पुरिया माझगङ्गाय डुबाइया देओया हइयाछे। भये सकलेर शरीर शिहरिया उठिल एवं नीलकण्ठेर प्रति जनसाधारणेर श्रद्धा पूर्बेर चेये अनेक परिमाणे बाड़िया गेल।

बनोयारि याहा लइया मातिया छिल, उपस्थितमतो ताहार शान्ति हइल। किन्तु, संसारटि ताहार काछे आर पूर्बेर मतो रहिल ना।

वंशीके एकदिन बनोयारि अत्यन्त भालोबासित; आज देखिल, वंशी ताहार केह नहे, से हालदारगोष्ठीर। आर, ताहार किरण, याहार ध्यानरूपटि यौवनारम्भेर पूर्बे हइतेइ क्रमे

पोहाइते हय—निबटाने, सहने पड़ते हैं। एइ लइया—इसको ले कर। बाधाइया तुलिते—खड़ा करने को। बलियाइ—इसीलिए।

एमनि...हइते—ऐसा होते-होते। राताराति—रातोरात। जमिदार.... हइते—जमींदार के खजाने से। ताहा—यह। गुजब...दिल—अफवाह फैला दी। छालाय...माझगङ्गाय—बोरे में भर कर बीच गंगा मे। चेये—अपेक्षा।

मातिया छिल—बौखला उठा था। उपस्थितमतो—फिलहाल।

भालोबासित—प्यार करता था। केह नहे—कोई नहीं है। हालदार-गोष्ठीर—हालदार परिवार का। हइतेइ—से ही।

क्रमे ताहार हृदयेर लतावितानटिके जड़ाइया जड़ाइया आच्छन्न करिया रहियाछे, सेओ सम्पूर्ण ताहार नहे, सेओ हालदारगोष्ठीर। एकदिन छिल, यखन नीलकण्ठेर फरमाशे-गड़ा गहना ताहार एइ हृदयविहारिणी किरणेर गाये ठिकमतो मानाइत ना बलिया बनोयारि खुँत्खुँत् करित। आज देखिल, कालिदास हइते आरम्भ करिया अमरु ओ चौर कविर ये-समस्त कवितार सोहागे से प्रेयसीके मण्डित करिया आसियाछे आज ताहा एइ हालदारगोष्ठीर बड़ोवउके किछुतेइ मानाइतेछे ना।

हाय रे, वसन्तेर हाओया तवु वहे, रात्रे श्रावणेर वर्षण तवु मुखरित हइया उठे एवं अतृप्त प्रेमेर वेदना शून्य हृदयेर पथे पथे काँदिया काँदिया वेड़ाय।

प्रेमेर निविड़ताय सकलेर तो प्रयोजन नाइ; संसारेर छोटो कुन्केर मापेर बाँधा बराद्दे अधिकांश लोकेर बेश चलिया याय। सेइ परिमित व्यवस्थाय वृहत् संसारे कोनो उत्पात घटे ना। किन्तु, एक-एकजनेर इहाते कुलाय ना। ताहारा अजात पक्षीशावकेर मतो केवलमात्र डिमेर भितरकार संकीर्ण खाद्यरसटुकु लइया बाँचे ना, ताहारा डिम भाङिया बाहिर हइयाछे, निजेर शक्तिते खाद्य-आहरणेर वृहत् क्षेत्र ताहादेर चाइ। बनोयारि सेइ क्षुधा लइया जन्मियाछे, निजेर प्रेमके निजेर पौरुषेर द्वारा सार्थक करिबार जन्य ताहार चित्त उत्सुक, किन्तु येदिकेइ से छुटिते चाय सेइदिकेइ हालदार-गोष्ठीर पाका भित; नड़िते गेलेइ ताहार माथा ठुकिया याय।

जड़ाइया—घेर कर। **फरमाशे-गड़ा**—फरमाइश पर गढ़ा हुआ। **गाये**—शरीर पर। **मानाइतो ना**—सजता, फवता नहीं था। **खुँत्खुँत् करित**—कुढ़ता, दोष निकालता।

काँदिया...वेड़ाय—रोती-विसूरती भटका करती है। **कुन्केर**—(अनाज आदि मापने के) पात्र-विशेष का। **बाँधा बराद्दे**—निर्धारित परिमाण से। **बेश**—अच्छी तरह, मजे में। **कुलाय ना**—पूरा नहीं पड़ता। **डिमेर**—अंडे के। **भाङिया**—फोड़ कर। **आहरणेर**—जुटाने का। **चाइ**—चाहिए। **सेइ**—वही। **ये दिकेइ...चाय**—जिस ओर भी वह दौड़ना चाहता है। **पाका भित**—पक्की दीवार। **नड़िते गेलेइ**—तनिक सा हिलते ही। **माथा...याय**—सिर टकरा जाता है।

दिन आवार पूर्वेर मतो काटिते लागिल। आगेर चेये वनोयारि शिकारे वेशि मन दियाछे, इहा छाड़ा वाहिरेर दिक हइते ताहार जीवने आर विशेष किछु परिवर्तन देखा गेल ना। अन्तःपुरे से आहार करिते याय, आहारेर पर स्त्रीर सङ्गे यथापरिमाणे वाक्यालापओ हय। मधुकैवर्तके किरण आजओ क्षमा करे नाइ, केनना, एइ परिवारे ताहार स्वामी ये आपन प्रतिष्ठा हाराइयाछे ताहार मूल कारण मधु। एइजन्य क्षणे क्षणे केमन करिया सेइ मधुर कथा अत्यन्त तीव्र हइया किरणेर मुखे आसिया पड़े। मधुर ये हाड़े हाड़े वज्जाति, से ये शयतानेर अग्रगण्य, एवं मधुके दया कराटा ये नितान्तइ एकटा ठका, ए कथा वारवार विस्तारित करियाओ किछुते ताहार श्रान्ति हय ना। वनोयारि प्रथम दुइ-एकदिन प्रतिवादेर चेष्टा करिया किरणेर उत्तेजना प्रवल करिया तुलियाछिल, ताहार पर हइते से किछुमात्र प्रतिवाद करे ना। एमनि करिया वनोयारि ताहार नियमित गृहधर्म रक्षा करितेछे; किरण इहाते कोनो अभाव-असम्पूर्णता अनुभव करे ना, किन्तु भितरे भितरे वनोयारिर जीवनटा विवर्ण, विरस एवं चिर-अभुक्त।

एमन समय जाना गेल, वाड़िर छोटोवउ, वंशीर स्त्री गर्भिणी। समस्त परिवार आशाय उत्फुल्ल हइया उठिल। किरणेर द्वारा एइ महद्वंशेर प्रति ये कर्तव्येर त्रुटि हइयाछिल, एतदिन परे ताहा पूरणेर सम्भावना देखा याइतेछे; एखन षष्ठीर कृपाय कन्या ना हइया पुत्र हइले रक्षा।

मतो—तरह। आगेर चेये—पहले की अपेक्षा। इहा छाड़ा—इसके अतिरिक्त। दिक हइते—ओर से। केनना—क्योंकि। हाराइयाछे—गँवाई है। एइजन्य—इसीलिए। केमन करिया—जाने कैसे। मधुर—मधु केवट की। हाड़े...वज्जाति—नस नस में वदमाशी (भरी हुई है)। शयतानेर अग्रगण्य—शैतानों का सरदार। ठका—ठगे जाना है। पर हइते—वाद से। एमनि करिया—इसी तरह। इहाते—इससे।

वाड़िर—घर की। एतदिन परे—इतने दिनों वाद। षष्ठीर कृपाय—षष्ठी माता की कृपा से। रक्षा—उद्धार है।

पुत्रइ जन्मिल। छोटोबाबु कलेजेर परीक्षाते उत्तीर्ण, वंशेर परीक्षातेओ प्रथम मार्क् पाइल। ताहार आदर उत्तरोत्तर बाड़िया उठितेछिल, एखन ताहार आदरेर सीमा रहिल ना।

सकले मिलिया एइ छेलेटिके लइया पड़िल। किरण तो ताहाके एक मुहूर्त कोल हइते नामाइते चाय ना। ताहार एमन अवस्था ये, मधुकैवर्तेर स्वभावेर कुटिलतार कथाओ से प्राय विस्मृत हइबार जो हइल।

बनोयारिर छेले-भालोबासा अत्यन्त प्रबल। याहा किछु छोटो, अक्षम, सुकुमार, ताहार प्रति ताहार गभीर स्नेह एवं करुणा। सकल मानुषेरइ प्रकृतिर मध्ये विधाता एमन एकटा-किछु देन याहा ताहार प्रकृतिविरुद्ध, नहिले बनोयारि ये केमन करिया पाखि शिकार करिते पारे बोझा याय ना।

किरणेर कोले एकटि शिशुर उदय देखिबे, एइ इच्छा बनोयारिर मने बहुकाल हइते अतृप्त हइया आछे। एइजन्य वंशीर छेले हइले प्रथमटा ताहार मने एकटु ईर्षार वेदना जन्मियाछिल, किन्तु सेटाके दूर करिया दिते ताहार विलम्ब हय नाइ। एइ शिशुटिके वनोयारि खुबइ भालोबासिते पारित, किन्तु व्याघातेर कारण हइल एइ ये, यत दिन याइते लागिल किरण ताहाके लइया अत्यन्त बेशि व्यापृत हइया पड़िल। स्त्रीर सङ्गे बनोयारिर मिलने बिस्तर फाँक पड़िते लागिल। बनोयारि स्पष्टइ बुझिते पारिल, एतदिन परे किरण एमन एकटा-किछु पाइयाछे याहा ताहार हृदयके सत्यसत्यइ पूर्ण करिते पारे। बनोयारि येन ताहार

एइ...पड़िल—इस बच्चे को ले कर तन्मय हो गये। कोल... चाय ना—गोद से उतारना नहीं चाहती। जो हइल—संयोग, दशा हो गई।

छेले-भालोबासा—बाल-प्रेम। याहा—जो। नहिले—अन्यथा। बोझा याय ना—समझ में नहीं आता।

सेटाके—उसे। हइल एइ ये—यह हुआ कि। व्यापृत—रत, तन्मय। मिलने...फाँक—मिलन में लम्बा व्यवधान। बुझिते पारिल—समझ गया।

स्त्रीर हृदयहर्म्येर एकजन भाड़ाटे ; यतदिन बाड़िर कर्ता अनु-
पस्थित छिल ततदिन समस्त बाड़िटा से भोग करित, केह बाधा
दित ना—एखन गृहस्वामी आसियाछे ताइ भाड़ाटे सब छाड़िया
ताहार कोणेर घरटि मात्र दखल करिते अधिकारी । किरण
स्नेहे ये कतदूर तन्मय हइते पारे, ताहार आत्मविसर्जनेर शक्ति
ये कत प्रबल, ताहा बनोयारि यखन देखिल तखन ताहार मन
माथा नाड़िया बलिल, 'एइ हृदयके आमि तो जागाइते पारि नाइ,
अथच आमार याहा साध्य ताहा तो करियाछि ।'

शुधु ताइ नय, एइ छेलेटिर सूत्रे वंशीर घरइ येन किरणेर
काछे बेशि आपन हइया उठियाछे । ताहार समस्त मन्त्रणा
आलोचना वंशीर सङ्गेइ भालो करिया जमे । सेइ सूक्ष्मबुद्धि
सूक्ष्मशरीर रसरक्तहीन क्षीणजीवी भीरु मानुषटार प्रति बनोयारिर
अवज्ञा क्रमेइ गभीरतर हइतेछिल । संसारेर सकल लोकेइ ताहा-
केइ बनोयारिर चेये सकल विषये योग्य बलिया मने करे ताहा
बनोयारिर सहियाछे ; किन्तु आज से यखन बारबार देखिल,
मानुष हिसाबे ताहार स्त्रीर काछे वंशीर मूल्य बेशि, तखन निजेर
भाग्य एवं विश्वसंसारेर प्रति ताहार मन प्रसन्न हइल ना ।

एमन समये परीक्षार काछाकाछि कलिकातार बासा हइते
खबर आसिल, वंशी ज्वरे पड़ियाछे एवं डाक्तार आरोग्य असाध्य
बलिया आशङ्का करितेछे । बनोयारि कलिकाताय गिया दिनरात
जागिया वंशीर सेवा करिल, किन्तु ताहाके बाँचाइते पारिल ना ।

मृत्यु बनोयारिर स्मृति हइते समस्त काँटा उत्पाटित करिया

भाड़ाटे—किरायेदार । बाड़िर कर्ता—मकान-मालिक । छाड़िया—छोड़,
खाली करके । कोणेर घरटि—कोने के कमरे को । माथा नाड़िया—
सिर हिला कर । जागाइते....नाइ—जगा न सका ।

शुधु...नय—सिर्फ इतना ही नहीं । घरइ—कमरा ही । आलो-
चना—चर्चा, विचार । चेये—अपेक्षा । हिसाबे—तौर पर ।

काछाकाछि—आसपास । बासा हइते—घर से । बाँचाइते...ना—
बचा न सका ।

लइल। वंशी ये ताहार छोटो भाइ एवं शिशुवयसे दादार कोले ये ताहार स्नेहेर आश्रय छिल, एइ कथाइ ताहार मने अश्रुधौत हइया उज्ज्वल हइया उठिल।

एबार फिरिया आसिया ताहार समस्त प्राणेर यत्न दिया शिशुटिके मानुष करिते से कृतसंकल्प हइल। किन्तु, एइ शिशु सम्बन्धे किरण ताहार प्रति विश्वास हाराइयाछे। इहार प्रति ताहार स्वामीर विराग से-प्रथम हइतेइ लक्ष्य करियाछे। स्वामीर सम्बन्धे किरणेर मने केमन एकटा धारणा हइया गेछे ये, अपर साधारणेर पक्षे याहा स्वाभाविक ताहार स्वामीर पक्षे ठिक ताहार उल्टा। ताहादेर वंशेर एइ तो एकमात्र कुलप्रदीप, इहार मूल्य ये की ताहा आर-सकलेइ बोझे, निश्चय सेइजन्यइ ताहार स्वामी ताहा बोझे ना। किरणेर मने सर्वदाइ भय, पाछे बनोयारिर विद्वेषदृष्टि छेलेटिर अमङ्गल घटाय। ताहार देवर बाँचिया नाइ, किरणेर सन्तान-सम्भावना आछे बलिया केहइ आशा करे ना, अतएव एइ शिशुटिके कोनोमते सकल प्रकार अकल्याण हइते बाँचाइया राखिते पारिले तबे रक्षा। एइरूपे वंशीर छेलेटिके यत्न करिबार पथ बनोयारिर पक्षे बेश स्वाभाविक हइल ना।

बाड़िर सकलेर आदरे क्रमे छेलेटि बड़ो हइया उठिते लागिल। ताहार नाम हइल हरिदास। एत बेशि आदरेर आओताय से येन केमन क्षीण एवं क्षणभङ्गुर आकार धारण करिल। तागा-ताबिज-मादुलिते ताहार सर्वाङ्ग आच्छन्न, रक्षकेर दल सर्वदाइ ताहाके घिरिया।

दादार कोले—बड़े भैया की गोद में। एइ कथाइ—यही बात।

एबार—इस दफ़ा। मानुष करिते—लालन-पालन करने में। हाराइयाछे—गँवा चुकी है। इहार—इसके। अपर—अन्य। याहा—जो। बोझे—समझते हैं। सेइजन्य—इसीलिए। पाछे—ऐसा न हो कि। बलिया—ऐसी। क़ोनोमते—किसी प्रकार। रक्षा—खैरियत है। यत्न करिबार—पालन-पोषण का।

आदरे—दुलार के बीच। आओताय—छाया मे। मादुलि—(मर्दल के आकार का) ताबीज।

इहार फाँके फाँके माझे माझे बनोयारिर सङ्गे ताहार देखा हय। ज्याठामशायेर घोड़ाय चड़िवार चावुक लइया आस्फालन करिते से बड़ो भालोवासे। देखा हइलेइ वले 'चावु'। बनोयारि घर हइते चावुक वाहिर करिया आनिया वातासे साँइ साँइ शव्द करिते थाके, ताहार भारि आनन्द हय। वनोयारि एक-एकदिन ताहाके आपनार घोड़ार उपर वसाइया देय, ताहाते वाड़िसुद्ध लोक एकेवारे हाँ-हाँ करिया छुटिया आसे। वनोयारि कखनो कखनो आपनार वन्दुक लइया ताहार सङ्गे खेला करे, देखिते पाइले किरण छुटिया आसिया वालकके सराइया लइया याय। किन्तु, एइ-सकल निषिद्ध आमोदेइ हरिदासेर सकलेर चेये अनुराग। एइजन्य सकल प्रकार विघ्न-सत्त्वे ज्याठामशायेर सङ्गे ताहार खुव भाव हइल।

वहुकाल अव्याहतिर पर एक समये हठात् एइ परिवारे मृत्युर आनागोना घटिल। प्रथमे मनोहरेर स्त्रीर मृत्यु हइल। ताहार परे नीलकण्ठ यखन कर्तार जन्य विवाहेर परामर्श ओ पात्रीर संधान करितेछे एमन समय विवाहेर लग्नेर पूर्वेइ मनोहरेर मृत्यु हइल। तखन हरिदासेर वयस आट। मृत्युर पूर्वे मनोहर विशेष करिया ताँहार क्षुद्र एइ वंशधरके किरण एवं नीलकण्ठेर हाते समर्पण करिया गेलेन; वनोयारिके कोनो कथाइ वलिलेन ना।

वाक्स हइते उइल यखन वाहिर हइल तखन देखा गेल, मनोहर

फाँके...माझे—व्यवधान, वीच-वीच में। ज्याठामशायेर—ताऊ के। चड़िवार—चढ़ने का। आस्फालन करिते—जोर से फटकारना। भालोवासे—अच्छा लगता है। देखा हइलेइ—मिलते ही। वातासे...साँइ—हवा में साँय-साँय। वाड़िसुद्ध—घर-भर के। हाँ-हाँ—हँ-हँ। छुटिया आसे—दौड़े आते। कखनो—कभी। सराइया...याय—हटा ले जाती। चेये—अपेक्षा। विघ्नसत्त्वे—विघ्नों के वावजूद। भाव हइल—हिल गया।

अव्याहतिर पर—वाधाहीन क्रम के वाद। आनागोना—आना-जाना। कर्तार जन्य—मालिक के लिए। पात्रीर—लड़की का। एमन समय—उसी समय। आट—आठ। ताँहार—अपने। कथाइ—वात ही।

उइल—(अं०) विल।

ताँहार समस्त सम्पत्ति हरिदासके दिया गियाछेन। बनोयारि यावज्जीवन दुइ शत टाका करिया मासोहारा पाइबेन। नीलकण्ठ उइलेर एक्जिक्युटर; ताहार उपरे भार रहिल, से यतदिन बाँचे, हालदार-परिवारेर विषय एवं संसारेर व्यवस्था सेइ करिबे।

बनोयारि बुझिलेन, ए परिवारे केह ताँहाके छेले दियाओ भरसा पाय ना, विषय दियाओ ना। तिनि किछुइ पारेन ना, समस्तइ नष्ट करिया देन, ए सम्बन्धे ए बाड़िते काहारओ दुइ मत नाइ। अतएव तिनि बराद्दमतो आहार करिया कोणेर घरे निद्रा दिबेन, ताँहार पक्षे एइरूप विधान।

तिनि किरणके बलिलेन, "आमि नीलकण्ठेर पेन्सन खाइया बाँचिब ना। ए बाड़ि छाड़िया चलो आमार सङ्गे कलिकाताय।"

"ओमा! से की कथा! ए तो तोमारइ बापेर विषय, आर हरिदास तो तोमारइ आपन छेलेर तुल्य। ओके विषय लिखिया देओया हइयाछे बलिया तुमि राग कर केन।"

हाय हाय, ताहार स्वामीर हृदय की कठिन! एइ कचि छेलेर उपरेओ ईर्षा करिते ताहार मन ओठे! ताहार श्वसुर ये उइलटि लिखियाछे किरण मने मने ताहार सम्पूर्ण समर्थन करे। ताहार निश्चय विश्वास, बनोयारिर हाते यदि विषय पड़ित तबे राज्येर यत छोटोलोक, यत यदु मधु, यत कैवर्त एवं आगुरिर दल ताहाके ठकाइया किछु आर बाकि राखित ना एवं हालदार-वंशेर

मासोहारा—मासिक वृत्ति।

बुझिलेन—समझ लिया। छेले...पाय ना—बच्चे को सौंप कर भी निश्चिन्त नहीं हो पाता। तिनि...पारेन ना—उनके किए कुछ भी नहीं हो सकता। बराद्दमतो—निर्दिष्ट परिमाण में। कोणेर घरे—कोने के कमरे में।

से की कथा—यह कैसी बात है भला। ए तो—यह तो। आपन—अपने। बलिया—इसलिए। राग—क्रोध।

कचि...उपरेओ—अबोध बच्चे पर भी। मन ओठे—तृप्ति मिलती है। यत—जितने। आगुरि—उग्र (क्षत्रिय जाति के लोग)। ठकाइया—ठग कर।

एइ भावी आधा एकदिन अकूले भासित। श्वशुरेर कुले वाति ज्वालिवार दीपटि तो घरे आसियाछे, एखन ताहार तैलसञ्चय याहाते नष्ट ना हय नीलकण्ठइ तो ताहार उपयुक्त प्रहरी।

वनोयारि देखिल, नीलकण्ठ अन्तःपुरे आसिया घरे घरे समस्त जिनिसपत्रेर लिस्ट् करितेछे एवं येखाने यत सिन्दुक-वाक्स आछे ताहाते तालाचावि लागाइतेछे। अवशेषे किरणेर शोवार घरे आसिया से वनोयारिर नित्यव्यवहार्य समस्त द्रव्य फर्दभुक्त करिते लागिल। नीलकण्ठेर अन्तःपुरे गतिविधि आछे, सुतरां किरण ताहाके लज्जा करे ना। किरण श्वशुरेर शोके क्षणे क्षणे अश्रु मुछिवार अवकाशे वाष्परुद्धकण्ठे विशेष करिया समस्त जिनिस वुझाइया दिते लागिल।

वनोयारि सिंहगर्जने गर्जिया उठिया नीलकण्ठके वलिल, "तुमि एखनि आमार घर हइते वाहिर हइया याओ।"

नीलकण्ठ नम्र हइया कहिल, "वड़ोवावु, आमार तो कोनो दोष नाइ। कर्तार उइल-अनुसारे आमाके तो समस्त वुझिया लइते हइवे। आसवावपत्र समस्तइ तो हरिदासेर।"

किरण मने मने कहिल, 'देखो एकवार, व्यापारखाना देखो! हरिदास कि आमादेर पर। निजेर छेलेर सामग्री भोग करिते आवार लज्जा किसेर। आर, जिनिसपत्र मानुषेर सङ्गे याइवे ना कि। आज ना हय काल छेलेपुलेराइ तो भोग करिवे।'

ए वाड़िर मेझे वनोयारिर पायेर तलाय काँटार मतो विंधिते

अकूले भासित—वड़ी मुसीवत में पड़ जाती। याहाते—जिससे।

घरे घरे—कमरे कमरे की। जिनिसपत्रेर—चीज-वस्तुओं की। येखाने—जहाँ। ताहाते—उनमें। फर्दभुक्त—(की) फेहरिस्त। मुछिवार—पोंछने के। जिनिस...लागिल—चीजें समझाने लगी।

एखनि—इसी वक्त। घर हइते—कमरे से।

व्यापारखाना देखो—तमाशा तो देखो। आमादेर पर—हमारे लिए पराया है। छेलेर—लड़के की। छेलेपुलेराइ—वाल-वच्चे ही।

वाड़िर मेझे—घर के फर्श पर।

लागिल, ए बाड़िर देयाल ताहार दुइ चक्षुके येन दग्ध करिल। ताहार वेदना ये किसेर ताहा बलिबार लोकओ एइ वृहत् परिवारे केह नाइ।

एइ मुहूर्तेइ वाड़िघर समस्त फेलिया वाहिर हइया याइवार जन्य बानोयारिर मन व्याकुल हइया उठिल। किन्तु, ताहार रागेर ज्वाला ये थामिते चाय ना। से चलिया याइबे आर नीलकण्ठ आरामे एकाधिपत्य करिबे, ए कल्पना से सह्य करिते पारिल ना। एखनि कोनो-एकटा गुरुतर अनिष्ट करिते ना पारिले ताहार मन शान्त हइते पारितेछे ना। से वलिल, 'नील-कण्ठ केमन विपय रक्षा करिते पारे आमि ताहा देखिब।'

बाहिरे ताहार पितार घरे गिया देखिल, से घरे केहइ नाइ। सकलेइ अन्तःपुरेर तैजसपत्र ओ गहना प्रभृतिर खबरदारि करिते गियाछे। अत्यन्त सावधान लोकेरओ सावधानताय त्रुटि थाकिया याय। नीलकण्ठेर हुँस छिल ना ये, कर्तार बाक्स खुलिया उइल वाहिर करिबार परे बाक्सय चावि लागानो हय नाइ। सेइ बाक्सय ताड़ाबाँधा मूल्यवान समस्त दलिल छिल। सेइ दलिल-गुलिर उपरेइ एइ हालदार-वंशेर सम्पत्तिर भित्ति प्रतिष्ठित।

बनोयारि एइ दलिलगुलिर विवरण किछुइ जाने ना, किन्तु एगुलि ये अत्यन्त काजेर एवं इहादेर अभावे मामला-मकद्दमाय पदे पदे ठकिते हइबे ताहा से बोझे। कागजगुलि लइया से निजेर

देयाल—दीवार। केह नाइ—कोई नहीं है।

फेलिया...जन्य—छोड़-छाड़ कर निकल जाने के लिए। रागेर—क्रोध की। चाय ना—नहीं चाहती। कोनो एकटा—किसी तरह का कोई। करिते..पारिले—किये विना। केमन—कैसे।

केहइ नाइ—कोई नहीं है। तैजसपत्र—बर्तन-भाँड़े। हुँस—होश, ख्याल। कर्तार—मालिक का। ताड़ाबाँधा—पुलिन्दे में बँधे हुए। दलिल—दस्तावेज।

एगुलि—ये। ठकिते हइबे—प्रतारित होना, धोखा खाना पड़ेगा। से बोझे—वह समझता है।

एकटा रुमाले जड़ाइया ताहादेर बाहिरेर बागाने चाँपातलार बाँधानो चाताले बसिया अनेकक्षण धरिया भाविते लागिल।

परदिन श्राद्ध सम्बन्धे आलोचना करिबार जन्य नीलकण्ठ बनोयारिर काछे उपस्थित हइल। नीलकण्ठेर देहेर भङ्गि अत्यन्त-विनम्र, किन्तु ताहार मुखेर मध्ये एमन एकटा-किछु छिल, अथवा छिल ना, याहा देखिया अथवा कल्पना करिया बनोयारिर पित्त ज्वलिया गेल। ताहार मने हइल, नम्रतार द्वारा नीलकण्ठ ताहाके व्यङ्ग करितेछे।

नीलकण्ठ बलिल, "कर्तार श्राद्ध सम्बन्धे—"

बनोयारि ताहाके कथा शेष करिते ना दियाइ बलिया उठिल, "आमि ताहार की जानि!"

नीलकण्ठ कहिल, "से की कथा। आपनिइ तो श्राद्धाधिकारी।"

"मस्त अधिकार! श्राद्धेर अधिकार! संसारे केवल एटुकुते आमार प्रयोजन आछे—आमि आर कोनो काजेरइ ना।" बनोयारि गर्जिया उठिल, "याओ याओ! आमाके आर विरक्त करियो ना।"

नीलकण्ठ गेल किन्तु ताहार पिछन हइते बनोयारिर मने हइल, से हासिते हासिते गेल। बनोयारिर मने हइल, बाड़िर समस्त चाकर-बाकर एइ अश्रद्धित, एइ परित्यक्तके लइया आपनादेर मध्ये हासितामाशा करितेछे। ये मानुष बाड़िर अथच बाड़िर नहे, ताहार मतो भाग्यकर्तृक परिहसित आर के आछे। पथेर भिक्षुकओ नहे।

जड़ाइया—लपेट कर। चाँपातलार...चाताले—चम्पे के पेड़ के नीचे बने पक्के चबूतरे पर। धरिया—तक। भाविते लागिल—सोचता रहा।

आलोचना—सलाह-मशविरा। काछे—निकट। एमन एकटा—ऐसा कुछ। शेष—समाप्त, पूरी।

मस्त—बहुत बड़ा। एटुकुते—इतने भर के लिए। विरक्त—परेशान। मने हइल—लगा। हासितामाशा—हँसी-मजाक। बाड़िर—घर का।

बनोयारि सेइ दलिलेर ताड़ा लइया बाहिर हइल। हालदार-परिवारेर प्रतिवेशी ओ प्रतियोगी जमिदार छिल प्रतापपुरेर बाँड़ुज्ये जमिदारेरा। बनोयारि स्थिर करिल, 'एइ दलिल-दस्तावेज ताहादेर हाते दिब, विषयसम्पत्ति समस्त छारखार हइया याक।'

बाहिर हइबार समय हरिदास उपरेर तला हइते ताहार सुमधुर बालककण्ठे चीत्कार करिया उठिया कहिल, "ज्याठामशाय, तुमि बाहिरे याइतेछ, आमिओ तोमार सङ्गे बाहिरे याइब।"

बनोयारिर मने हइल, बालकेर अशुभग्रह एइ कथा ताहाके दिया बलाइया लइल। "आमि तो पथे बाहिर हइयाछि, उहाकेओ आमार सङ्गे बाहिर करिब। याबे याबे, सब छारखार हइबे।"

बाहिरेर बागान पर्यन्त याइतेइ बनोयारि एकटा विषम गोलमाल शुनिते पाइल। अदूरे हाटेर संलग्न एकटि विधवार कुटिरे आगुन लागियाछे। बनोयारिर चिराभ्यासक्रमे ए दृश्य देखिया से आर स्थिर थाकिते पारिल ना। ताहार दलिलेर ताड़ा से चाँपातलाय राखिया आगुनेर काछे छुटिल।

यखन फिरिया आसिल, देखिल, ताहार सेइ कागजेर ताड़ा नाइ। मुहूर्तेर मध्ये हृदये शेल बिँधाइया एइ कथाटा मने हइल, 'नीलकण्ठेर काछे आवार आमार हार हइल। विधवार घर ज्वलिया छाइ हइया गेले ताहाते क्षति की छिल।' ताहार मने हइल, चतुर नीलकण्ठइ ओटा पुनर्बार संग्रह करियाछे।

दलिलेर ताड़ा—दस्तावेज का पुलिन्दा। **प्रतिवेशी**—पड़ोसी। **बाँड़ुज्ये**—बनर्जी वंश के। **हाते दिब**—हाथों में सौंप दूंगा। **छारखार...याक**—धूल में मिल जाए।

उपरेर...हइते—ऊपर की मंजिल से। **ज्याठामशाय**—ताऊ जी। **एइ कथा...लइल**—(मानो) यह बात उसके मुँह से कहला ली हो। **उहाकेओ**—उसे भी। **याबे याबे**—जाएगा, सब जाएगा।

बागान—बगिया। **याइतेइ**—पहुँचते ही। **विषम**—भयंकर। **आगुन लागियाछे**—आग लग गई है। **थाकिते...ना**—न रह सका। **ताहार**—अपना। **ताड़ा**—पुलिन्दा। **चाँपातलाय**—चंपे के तले (चबूतरे पर)। **छुटिल**—दौड़ा।

यखन—जब। **कथाटा**—बात। **काछे**—पास। **आबार**—पुनः। **छाइ...गेले**—राख हो जाने से। **ओटा**—वह।

एकेवारे झड़ेर मतो से काछारिघरे आसिया उपस्थित। नीलकण्ठ ताड़ाताड़ि वाक्स वन्ध करिया ससम्भ्रमे दाँड़ाइया उठिया वनोयारिके प्रणाम करिल। वनोयारिर मने हइल, ऐ वाक्सेर मध्येइ से कागज लुकाइल। कोनोकिछु ना वलिया एकेवारे सेइ वाक्सटा खुलिया ताहार मध्ये कागज घाँटिते लागिल। ताहार मध्ये हिसावेर खाता एवं ताहारइ जोगाड़ेर समस्त नथि। वाक्स उपुड़ करिया झाड़िया किछुइ मिलिल ना।

रुद्धप्राय कण्ठे वनोयारि कहिल, "तुमि चाँपातलाय गियाछिले ?"

नीलकण्ठ वलिल, "आज्ञा हाँ, गियाछिलाम वइ-कि। देखिलाम आपनि व्यस्त हइया छुटितेछेन, की हइल ताहाइ जानिवार जन्य वाहिर हइयाछिलाम।"

वनोयारि। आमार रुमाले-वाँधा कागजगुला तुमिइ लइयाछ।

नीलकण्ठ नितान्त भालोमानुषेर मतो कहिल, "आज्ञा, ना।"

वनोयारि। मिथ्या कथा वलितेछ। तोमार भालो हइवे ना, एखनि फिराइया दाओ।

वनोयारि मिथ्या तर्जन गर्जन करिल। की जिनिस ताहार हाराइयाछे ताहाओ से वलिते पारिल ना एवं सेइ चोराइ माल सम्वन्धे ताहार कोनो जोर नाइ जानिया से मने मने असावधान मूढ़ आपनाकेइ येन छिन्न-छिन्न करिते लागिल।

काछारिते एइरूप पागलामि करिया से चाँपातलाय आवार खोँजाखुँजि करिते लागिल। मने मने मातृदिव्य करिया से प्रतिज्ञा

एकेवारे...काछारिघरे—एकदम आँधी की तरह वह कचहरी के कमरे में। ताड़ाताड़ि—जल्दी-जल्दी। दाँड़ाइया उठिया—खड़े हो कर। ऐ—उसी। कोनोकिछु—विना कुछ। एकेवारे—सीधे। घाँटिते लागिल—उलटने-पुलटने लगा। जोगाड़ेर—सम्वन्धित। नथि—(अं०) फाइल। उपुड़ करिया—उल्टा कर।

वइ-कि—(निश्चय सूचक) वेशक। की हइल—क्या हुआ। ताहाइ—वही।
तुमिइ—तुम्ही ने। भालो—अच्छा, ठीक। एखनि—अभी।
की जिनिस—कौन-सी चीज़। चोराइ—चोरी के।
आवार—पुनः। मातृदिव्य करिया—माँ की सौगन्ध खा कर।

करिल, 'ये करिया हउक ऐ कागजगुला पुनराय उद्धार करिब तबे आमि छाड़िब।' केमन करिया उद्धार करिबे ताहा चिन्ता करिबार सामर्थ्य ताहार छिल ना, केवल क्रुद्ध बालकेर मतो बारबार माटिते पदाघात करिते करिते बलिल, 'उद्धार करिबइ, करिबइ, करिबइ।'

श्रान्तदेहे से गाछतलाय बसिल। केह नाइ, ताहार केह नाइ एवं ताहार किछुइ नाइ। एखन हइते निःसम्बले आपन भाग्येर सङ्गे एवं संसारेर सङ्गे ताहाके लड़ाइ करिते हइबे। ताहार पक्षे मान-सम्भ्रम नाइ, भद्रता नाइ, प्रेम नाइ, स्नेह नाइ, किछुइ नाइ। आछे केवल मरिबार एवं मारिबार अध्यवसाय।

एइरूप मने मने छट्‌फट् करिते करिते निरतिशय क्लान्तिते चातालेर उपर पड़िया कखन से घुमाइया पड़ियाछे। यखन जागिया उठिल तखन हठात् बुझिते पारिल ना कोथाय से आछे। भालो करिया सजाग हइया उठिया बसिया देखे, ताहार शियरेर काछे हरिदास बसिया। बनोयारिके जागिते देखिया हरिदास बलिया उठिल, "ज्याठामशाय, तोमार की हाराइयाछे बलो देखि।"

बनोयारि स्तब्ध हइया गेल। हरिदासेर ए-प्रश्नेर उत्तर करिते पारिल ना।

हरिदास कहिल, "आमि यदि दिते पारि आमाके की दिबे।"

बनोयारिर मने हइल, हयतो आर-किछु। से बलिल, "आमार याहा आछे सब तोके दिब।"

ए कथा से परिहास करियाइ बलिल; से जाने, ताहार किछुइ नाइ।

कागजगुला—(वहु०) कागज-पत्र। करिबइ—करूंगा ही।

गाछतलाय—पेड़ के नीचे। केह नाइ—कोई नहीं।

चातालेर उपर—चबूतरे पर। कखन—कब। घुमाइया पड़िल—सो गया। बुझिते...ना—समझ न सका। भालो करिया—अच्छी तरह से। शियरेर काछे—सिरहाने के पास। हाराइयाछे...देखि—खोया है कहो तो भला। हयतो—शायद।

तोके—तुझे। ताहार—उसका।

तखन हरिदास आपन कापड़ेर भितर हइते वनोयारिर रुमाले-मोड़ा सेइ कागजेर ताड़ा वाहिर करिल। एइ रङिन रुमालटाते वाघेर छवि आँका छिल ; सेइ छवि ताहार ज्याठा ताहाके अनेकवार देखाइयाछे। एइ रुमालटार प्रति हरिदासेर विशेष लोभ। सेइजन्यइ अग्निदाहेर गोलमाले भृत्येरा यखन वाहिरे छुटियाछिल सेइ अवकाशे वागाने आसिया हरिदास चाँपातलाय दूर हइते एइ रुमालटा देखियाइ चिनिते पारियाछिल।

हरिदासके वनोयारि वुकेर काछे टानिया लइया चुप करिया वसिया रहिल; किछुक्षण परे ताहार चोख दिया झर् झर् करिया जल पड़िते लागिल। ताहार मने पड़िल, अनेकदिन पूर्वे से ताहार एक नूतन-केना कुकुरके शायेस्ता करिवार जन्य ताहाके वारम्वार चावुक मारिते वाध्य हइयाछिल। एकवार ताहार चावुक हाराइया गियाछिल; कोथाओ से खुँजिया पाइतेछिल ना। यखन चावुकेर आशा परित्याग करिया से वसिया आछे एमन समय देखिल, सेइ कुकुरटा कोथा हइते चावुकटा मुखे करिया मनिवेर सम्मुखे आनिया परमानन्दे लेज नाड़ितेछे। आर-कोनोदिन कुकुरके से चावुक मारिते पारे नाइ।

वनोयारि ताड़ाताड़ि चोखेर जल मुछिया फेलिया कहिल, "हरिदास, तुइ की चास आमाके वल्।"

हरिदास कहिल, "आमि तोमार ऐ रुमालटा चाइ, ज्याठा-मशाय।"

कापड़ेर हइते—कपड़ों के भीतर से। रुमाले-मोड़ा—रूमाल में बंधा हुआ। ताड़ा—पुलिन्दा। छवि...छिल—चित्र बना हुआ था। ज्याठा—ताऊ। भृत्येरा—नौकर-चाकर। छुटियाछिल—दौड़े जा रहे थे। चिनिते पारियाछिल—पहचान लिया था।

वुकेर...लइया—छाती के निकट खींच कर, छाती से लगा कर। परे—बाद। चोख दिया—आँखों से। नूतन केना—नये खरीदे हुए। शायेस्ता... जन्य—सबक सिखाने के लिए। कोथा हइते—(न जाने) कहाँ से। मनिवेर—मालिक के। लेज नाड़ितेछे—पूंछ हिलाने लगा है। कोनोदिन—किसी दिन।

मुछिया फेलिया—पोंछ कर। तुइ—तू। चास—चाहता है। ऐ—वही।

वनोयारि कहिल, "आय हरिदास, तोके काँधे चड़ाइ।"

हरिदासके काँधे तुलिया लइया वनोयारि तत्क्षणात् अन्तःपुरे चलिया गेल। शयनघरे गिया देखिल, किरण सारादिन-रौद्रे-देओया कम्बलखानि बारान्दा हइते तुलिया आनिया घरेर मेजेर उपर पातितेछे। वनोयारिर काँधेर उपर हरिदासके देखिया से उद्विग्न हइया बलिया उठिल, "नामाइया दाओ, नामाइया दाओ। उहाके तुमि फेलिया दिबे।"

वनोयारि किरणेर मुखेर दिके स्थिर दृष्टि राखिया कहिल, "आमाके आर भय करियो ना, आमि फेलिया दिब ना।"

एइ बलिया से काँध हइते नामाइया हरिदासके किरणेर कोलेर काछे अग्रसर करिया दिल। ताहार परे सेइ कागजगुलि लइया किरणेर हाते दिया कहिल, "एगुलि हरिदासेर विषयसम्पत्तिर दलिल। यत्न करिया राखियो।"

किरण आश्चर्य हइया कहिल, "तुमि कोथा हइते पाइले!"

वनोयारि कहिल, "आमि चुरि करियाछिलाम।"

ताहार पर हरिदासके बुके टानिया कहिल, "एइ ने बाबा, तोर ज्याठामशायेर ये मूल्यवान सम्पत्तिटिर प्रति तोर लोभ पड़ियाछे, एइ ने।"

बलिया रुमालटि ताहार हाते दिल।

ताहार पर आर-एकवार भालो करिया किरणेर दिके ताकाइया देखिल। देखिल, सेइ तन्वी एखन तो तन्वी नाइ, कखन

आय—आ। काँधे चड़ाइ—कन्धे पर चढ़ाऊँ।

तुलिया लइया—बैठा कर। रौद्रे-देओया—धूप दिखाया हुआ। तुलिया आनिया—उठा कर। घरेर...पातितेछे—कमरे के फ़र्श पर बिछा रही है। नामाइया दाओ—उतार दो। फेलिया दिबे—गिरा दोगे।

कोलेर काछे—गोद की ओर। ताहार पर—इसके बाद। दलिल—दस्तावेज। यत्न करिया—सँभाल कर।

कोथा हइते—कहाँ से। बुके टानिया—छाती से चिपटा कर। एइ ने बावा—यह ले बेटा। तोर—अपने, तेरे।

भालो करिया—अच्छी तरह से। एखन—अब।

मोटा हइयाछे से ताहा लक्ष्य करे नाइ। एतदिने हालदारगोष्ठीर वड़ोवउयेर उपयुक्त चेहारा ताहार भरिया उठियाछे। आर केन, एखन अमरुशतकेर कवितागुलाओ वनोयारिर अन्य समस्त सम्पत्तिर सङ्गे विसर्जन देओयाइ भालो।

सेइ रात्रेइ वनोयारिर आर देखा नाइ। केवल से एकछत्र चिठि लिखिया गेछे ये, से चाकरि खुँजिते वाहिर हइल।

वापेर श्राद्ध पर्यन्त से अपेक्षा करिल ना! देशसुद्ध लोक ताइ लइया ताहाके धिक् धिक् करिते लागिल।

अप्रैल-मई, १९१४

आर केन—अब अधिक क्यों।
एकछत्र—एक लकीर की। देशसुद्ध—दुनिया भर के।

स्त्रीर पत्र

श्रीचरणकमलेषु,

आज पनेरो बछर आमादेर विवाह हयेछे, आज पर्यन्त तोमाके चिठि लिखि नि। चिरदिन काछेइ पड़े आछि—मुखेर कथा अनेक शुनेछ, आमिओ शुनेछि, चिठि लेखबार मतो फाँकटुकु पाओया याय नि।

आज आमि एसेछि तीर्थ करते श्रीक्षेत्रे, तुमि आछ तोमार आपिसेर काजे। शामुकेर सङ्गे खोलसेर ये सम्बन्ध कलकातार सङ्गे तोमार ताइ, से तोमार देह-मनेर सङ्गे एँटे गियेछे। ताइ तुमि आपिसे छुटिर दरखास्त करले ना। विधातार ताइ अभिप्राय छिल; तिनि आमार छुटिर दरखास्त मन्जुर करेछेन।

आमि तोमादेर मेजोबउ। आज पनेरो बछरेर परे एइ समुद्रेर धारे दाँड़िये जानते पेरेछि, आमार जगत् एवं जगदीश्वरेर सङ्गे आमार अन्य सम्बन्धओ आछे। ताइ आज साहस करे एइ चिठिखानि लिखछि, ए तोमादेर मेजोबउयेर चिठि नय।

तोमादेर सङ्गे आमार सम्बन्ध कपाले यिनि लिखेछिलेन तिनि छाड़ा यखन सेइ सम्भावनार कथा आर केउ जानत ना, सेइ शिशु-वयसे आमि आर आमार भाइ एकसङ्गेइ सान्निपातिक ज्वरे पड़ि। आमार भाइटि मारा गेल, आमि बेँचे उठलुम। पाड़ार सब मेयेराइ बलते लागल, "मृणाल मेये कि ना, ताइ ओ बाँचल,

---

पनेरो बछर—पन्द्रह बरस। **काछेइ**—निकट ही। **कथा**—बात। **लेखबार...फाँकटुकु**—लिखने का अवसर तक। **आछ**—हो। **आपिसेर**—ऑफिस के। **शामुकेर**—घोंघे का। **खोलसेर**—खोल, आवरण का। **एँटे गियेछे**—जुड़ गया है। **ताइ**—इसी से। **ताइ**—वही। **तिनि**—उन्होंने।

मेजोबउ—मँझली बहू। **परे**—बाद। **धारे**—किनारे। **दाँड़िये**—खड़े हो कर। **एइ**—यह।

यिनि—जिन्होंने। **तिनि छाड़ा**—उनके अतिरिक्त। **आर केउ**—और कोई। **बेँचे उठलुम**—बच गई। **पाड़ार...मेयेराइ**—मुहल्ले की सभी स्त्रियाँ।

बेटाछेले हले कि आर रक्षा पेत।" चुरिविद्याते यम पाका, दामि जिनिसेर 'परेइ तार लोभ।

आमार मरण नेइ। सेइ कथाटाइ भालो करे बुझिये बलबार जन्ये एइ चिठिखानि लिखते बसेछि।

येदिन तोमादेर दूरसम्पर्केर मामा तोमार बन्धु नीरदके निये कने देखते एलेन तखन आमार वयस बारो। दुर्गम पाड़ा गाँये आमादेर बाड़ि, सेखाने दिनेर बेलाय शेयाल डाके। स्टेशन थेके सात क्रोश श्याक्रा गाड़िते एसे बाकि तिन माइल काँचा रास्ताय पाल्कि करे तबे आमादेर गाँये पौँछनो याय। सेदिन तोमादेर की हयरानि। तार उपरे आमादेर बाङाल देशेर रान्ना—सेइ रान्नार प्रहसन आजओ मामा भोलेन नि।

तोमादेर बड़ोबउयेर रूपेर अभाव मेजोबउके दिये पूरण करबार जन्ये तोमार मायेर एकान्त जिद छिल। नइले एत कष्ट करे आमादेर से गाँये तोमरा याबे केन। बांलादेशे पिले यकृत् अम्लशूल एवं क'नेर जन्ये तो काउके खोँज करते हय ना; तारा आपनि एसे चेपे धरे, किछुते छाड़ते चाय ना।

बाबार बुक दुर्‌दुर् करते लागल, मा दुर्गानाम जप करते लागलेन। शहरेर देवताके पाड़ागाँयेर पुजारि की दिये सन्तुष्ट करबे। मेयेर रूपेर उपर भरसा; किन्तु सेइ रूपेर गुमर तो

बेटाछेले—लड़का। रक्षा पेत—त्राण पाती। जिनिसेर 'परेइ—वस्तु पर ही। भालो...जन्ये—अच्छी तरह से समझा कर कहने को।

दूरसम्पर्केर—दूर के रिश्ते के। कने—कन्या को। बारो—बारह। पाड़ा-गाँये—गँवई-गाँव में। बाड़ि—घर। शेयाल डाके—सियार रोते हैं। थेके—से। श्याक्रा गाड़िते—छकड़े में। काँचा—कच्चे। की हयरानी—कितनी हैरानी (उठानी पड़ी थी)। बाङाल...रान्ना—पूर्वी बंगाल की रसोई। भोलेन नि—भूले नहीं है।

दिये—द्वारा। एकान्त—अत्यन्त। नइले—अन्यथा। पिले—प्लीहा। कनेर जन्ये—कन्या, लड़की के लिए। तारा...धरे—वे स्वयं आ कर धर दबाते हैं। चाय ना—नहीं चाहते।

बाबार...लागल—पिता की छाती धड़कने लगी। की दिये—किसके द्वारा। मेयेर—लड़की के। भरसा—भरोसा। गुमर—गर्व।

मेयेर मध्ये नेइ, ये व्यक्ति देखते एसेछे से ताके ये दामइ देवे सेइ तार दाम। ताइ तो हाजार रूपे गुणेओ मेयेमानुषेर संकोच किछुते घोचे ना।

समस्त बाड़िर, एमन-कि, समस्त पाड़ार एइ आतङ्क आमार बुकेर मध्ये पाथरेर मतो चेपे बसल। सेदिनकार आकाशेर यत आलो एवं जगतेर सकल शक्ति येन बारो बछरेर एकटि पाड़ागेँये मेयेके दुइजन परीक्षकेर दुइजोड़ा चोखेर सामने शक्त करे तुले धरबार जन्ये पेयादागिरि करछिल—आमार कोथाओ लुकोबार जायगा छिल ना।

समस्त आकाशके काँदिये दिये बाँशि बाजते लागल—तोमादेर बाड़िते एसे उठलुम। आमार खुँतगुलि सविस्तारे खतिये देखेओ गिन्निर दल सकले स्वीकार करलेन, मोटेर उपरे आमि सुन्दरी बटे। से कथा शुने आमार बड़ो जायेर मुख गम्भीर हये गेल। किन्तु, आमार रूपेर दरकार की छिल ताइ भावि। रूप-जिनिसटाके यदि कोनो सेकेले पण्डित गङ्गामृत्तिका दिये गड़तेन ता हले ओर आदर थाकत; किन्तु, ओटा ये केवल विधाता निजेर आनन्दे गड़ेछेन, ताइ तोमादेर धर्मेर संसारे ओर दाम नेइ।

आमार ये रूप आछे से कथा भुलते तोमार बेशिदिन लागे

ये...देबे—जो भी दाम (लगाएगा) देगा। **रूपे गुणेओ**—रूप-गुण के बावजूद। **घोचे ना**—मिटता नहीं।

बाड़िर—घर के। **एमन-कि**—यहाँ तक कि। **पाड़ार**—मुहल्ले का। **चेपे बसल**—जम गया। **आलो**—प्रकाश। **पाड़ागेँये मेयेके**—गँवई-गाँव की लड़की को। **चोखेर**—आँखों के। **शक्त...जन्ये**—दृढ़ता-पूर्वक खड़ा रखने के लिए। **लुकोबार**—छिपने की।

काँदिये दिये—रुला कर। **एसे उठलुम**—आ पहुँची। **खुँतगुलि**—त्रुटि, दोषों आदि (का)। **खतिये**—हिसाब लगा कर। **गिन्निर**—गृहिणियों के। **मोटेर उपरे**—कुल मिला कर। **बटे**—तो है। **बड़ो जायेर**—बड़ी जिठानी का। **दरकार**—आवश्यकता। **ताइ**—वही। **भावि**—सोचती हूँ। **जिनिसटाके**—वस्तु को। **सेकेले**—पुराने जमाने के। **गड़तेन**—गढ़ते। **ताहले**—तब तो। **ओर**—उसका। **ओटा**—उसे।

कथा—बात। **बेशिदिन**—अधिक दिन।

नि। किन्तु, आमार ये बुद्धि आछे सेटा तोमादेर पदे पदे स्मरण करते हयेछे। ऐ बुद्धिटा आमार एतइ स्वाभाविक ये तोमादेर घरकन्नार मध्ये एतकाल काटियेओ आजओ से टिँके आछे। मा आमार एइ बुद्धिटार जन्ये विषम उद्‌विग्न छिलेन, मेयेमानुषेर पक्षे ए एक बालाइ। याके बाधा मेने चलते हबे से यदि बुद्धिके मेने चलते चाय तबे ठोकर खेये खेये तार कपाल भाङ्वेइ। किन्तु, की करब बलो। तोमादेर घरेर बउयेर यतटा बुद्धिर दरकार विधाता असतर्क हये आमाके तार चेये अनेकटा बेशि दिये फेलेछेन, से आमि एखन फिरिये दिइ काके। तोमरा आमाके मेये-ज्याठा बले दुबेला गाल दियेछ। कटु कथाइ हच्छे अक्षमेर सान्त्वना; अतएव से आमि क्षमा करलुम।

आमार एकटा जिनिस तोमादेर घरकन्नार बाइरे छिल, सेटा केउ तोमरा जान नि। आमि लुकिये कविता लिखतुम। से छाइपाँश याइ होक-ना, सेखाने तोमादेर अन्दरमहलेर पाँचिल ओठे नि। सेइखाने आमार मुक्ति; सेइखाने आमि आमि। आमार मध्ये या-किछु तोमादेर मेजोबउके छाड़िये रयेछे से तोमरा पछन्द कर नि, चिनतेओ पार नि; आमि ये कवि से एइ पनेरो बछरेओ तोमादेर काछे धरा पड़े नि।

तोमादेर घरेर प्रथम स्मृतिर मध्ये सबचेये येटा आमार मने जागछे से तोमादेर गोयालघर। अन्दरमहलेर सिँड़िते ओठबार

ऐ—वही। घरकन्नार—घर-गृहस्थी के। टिँके आछे—बनी हुई है। मेयेमानुषेर पक्षे—नारी के लिए। बालाइ—बला। बाधा—प्रतिबन्ध। चाय—चाहे। कपाल भाङ्वेइ—माथा फूटेगा ही। तार चेये—उसकी अपेक्षा। एखन...काके—अब किसको लौटाऊँ। दुबेला—दोनों वक्त, सुबह-शाम। मेये-ज्याठा—सयानी (व्यंग्य में)। गाल दियेछ—गालियाँ दी हैं।

जिनिस—वस्तु। बाइरे—बाहर। केउ—कोई। तोमरा—तुम लोग। छाइपाँश—राख-धूल। अन्दरमहलेर पाँचिल—जनानखाने की दीवार। सेइखाने—वहीं। छाड़िये रयेछे—(पीछे) छोड़ गया है, अतिरिक्त। पछन्द—पसन्द। धरा पड़े नि—पकड़ाई नहीं दिया।

गोयालघर—गोठ। सिँड़िते—सीढ़ियों पर। ओठबार—चढ़ने के।

ठिक पाशेर घरेइ तोमादेर गोरु थाके, सामनेर उठोनटुकु छाड़ा तादेर आर नड़्बार जायगा नेइ। सेइ उठोनेर कोणे तादेर जावना देवार काठेर गामला। सकाले वेहारार नाना काज; उपवासी गोरुगुलो ततक्षण सेइ गामलार धारगुलो चेटे चेटे, चिबिये चिबिये, खाव्ला करे दित। आमार प्राण काँदत। आमि पाड़ागाँयेर मेये—तोमादेर वाड़िते येदिन नतुन एलुम सेदिन सेइ दुटि गोरु एवं तिनटि वाछुरइ समस्त शहरेर मध्ये आमार चिरपरिचित आत्मीयेर मतो आमार चोखे ठेकल। यतदिन नतुन वउ छिलुम निजे ना खेये लुकिये ओदेर खाओयातुम; यखन वड़ो हलुम तखन गोरुर प्रति आमार प्रकाश्य ममता लक्ष्य करे आमार ठाट्टार सम्पर्कीयेरा आमार गोत्र सम्बन्धे सन्देह प्रकाश करते लागलेन।

आमार मेयेटि जन्म नियेइ मारा गेल। आमाकेओ से सङ्गे यावार समय डाक दियेछिल। से यदि वेँचे थाकत ता हले सेइ आमार जीवने या-किछु वड़ो, या-किछु सत्य, समस्त एने दित; तखन मेजोवउ थेके एकेवारे मा हये वसतुम। मा ये एक संसारेर मध्ये थेकेओ विश्व-संसारेर। मा हवार दुःखटुकु पेलुम, किन्तु मा हवार मुक्तिटुकु पेलुम ना।

मने आछे, इंरेज डाक्तार एसे आमादेर अन्दर देखे आश्चर्य

पाशेर घरेइ—वगल के कमरे में ही। गोरु—गाय। उठोनटुकु छाड़ा—आँगन के सिवाय। नड़्बार—हिलने की। कोणे—कोने में। जावना... गामला—कुट्टी-सानी देने की काठ की नाँद (थी)। वेहारार—चाकर को। धारगुलो—किनारे। चिबिये—चबा कर। खाव्ला करे दित—काट देतीं। काँदत—रोते, छटपटाने लगते। नतुन—नूतन, नई-नई। तिनटि—तीन। वाछुरइ—गोवत्स ही। चोखे ठेकल—आँखों में लगे। ओदेर—उनको। ठाट्टार सम्पर्कीयेरा—जिनसे हँसी-ठट्ठे का सम्बन्ध था।

मेयेटि—लड़की। जन्म नियेइ—जन्म लेते ही। डाक दियेछिल—पुकारा था। एने दित—ला देती। मेजोवउ थेके—मँझली बहू से। थेकेओ—रहते हुए भी। हवार—होने का।

मने आछे—याद है। अन्दर—भीतर (का भाग)।

हयेछिल एवं आँतुड़घर देखे विरक्त हये वकावकि करेछिल। सदरे तोमादेर एकटुखानि बागान आछे। घरे साजसज्जा-आसबावेर अभाव नेइ। आर अन्दरटा येन पशमेर काजेर उल्टो पिठ; से दिके कोनो लज्जा नेइ, श्री नेइ, सज्जा नेइ। से दिके आलो मिट्‌मिट् करे ज्वले; हाओया चोरेर मतो प्रवेश करे; उठोनेर आवर्जना नड़ते चाय ना; देयालेर एवं मेजेर समस्त कलङ्क अक्षय हये विराज करे। किन्तु डाक्तार एकटा भुल करेछिल; से भेवेछिल, एटा बुझि आमादेर अहोरात्र दुःख देय। ठिक उल्टो; अनादर-जिनिसटाइ छाइयेर मतो, से छाइ आगुनके हयतो भितरे भितरे जमिये राखे किन्तु बाइरे थेके तार तापटाके बुझते देय ना। आत्मसम्मान यखन कमे याय तखन अनादरके तो अन्याय्य बले मने हय ना। सेइजन्ये तार वेदना नेइ। ताइ तो मेयेमानुष दुःखबोध करतेइ लज्जा पाय। आमि ताइ बलि, मेयेमानुषके दुःख पेतेइ हबे एइटे यदि तोमादेर व्यवस्था हय, ता हले यत दूर सम्भव ताके अनादरे रेखे देओयाइ भालो; आदरे दुःखेर व्यथाटा केवल बेड़े ओठे।

येमन करेइ राख, दुःख ये आछे ए कथा मने करबार कथाओ कोनोदिन मने आसे नि। आँतुड़घरे मरण माथार काछे एसे दाँड़ालो, मने भयइ हल ना। जीवन आमादेर कीइ वा ये

आँतुड़घर—सौरी, सूतिकागृह। विरक्त हये—झुंझला कर। वकावकि—बकझक। येन...काजेर—मानो ऊनी कसीदे की। मिट्‌मिट् करे—टिमटिमाते हुए। उठोनेर...चाय ना—आँगन की गन्दगी हिलना नहीं चाहती। देयालेर—दीवार का। मेजेर—फर्श का। भेवेछिल—सोचा था। एटा बुझि—यह शायद। छाइयेर मतो—राख के समान। हयतो—सम्भवतः। बुझते...ना—समझने (जानने) नहीं देती। तार—उसकी। ताइ... मेयेमानुष—इसी लिए तो स्त्रियाँ। ताइ बलि—इसीसे कहती हूँ। पेतेइ हबे—पाना ही होगा। एइटे—यह। बेड़े ओठे—बढ़ जाती है।

येमन करेइ—जैसे भी। कथा—बात। मने करबार—सोचने की। मरण...दाँड़ालो—मृत्यु सिर (के निकट) पर आ खड़ी हुई। कीइ वा—है ही क्या।

मरणके भय करते हबे ? आदरे यत्ने यादेर प्राणेर बाँधन शक्त करेछे मरते तादेरइ बाधे। सेदिन यम यदि आमाके धरे टान दित ता हले आल्गा माटि थेके येमन अति सहजे घासेर चापड़ा उठे आसे समस्त शिकड़सुद्ध आमि तेमनि करे उठे आसतुम। बाङालिर मेये तो कथाय कथाय मरते याय। किन्तु, एमन मराय बाहादुरिटा की। मरते लज्जा हय, आमादेर पक्षे ओटा एतइ सहज।

आमार मेयेटि तो सन्ध्यातारार मतो क्षणकालेर जन्ये उदय हयेइ अस्त गेल। आबार आमार नित्यकर्म एवं गोरुबाछुर निये पड़लुम। जीवन तेमनि करेइ गड़ाते गड़ाते शेष पर्यन्त केटे येत; आजके तोमाके एइ चिठि लेखबार दरकारइ हत ना। किन्तु, बातासे सामान्य एकटा बीज उड़िये निये एसे पाका दालानेर मध्ये अशथ गाछेर अंकुर बेर करे; शेषकाले सेइटुकु थेके इँट-काठेर बुकेर पाँजर विदीर्ण हये याय। आमार संसारेर पाका बन्दोबस्तेर माझखाने छोटो एकटुखानि जीवनेर कणा कोथा थेके उड़े एसे पड़ल; तार पर थेके फाटल शुरू हल।

विधवा मार मृत्युर परे आमार बड़ो जायेर बोन बिन्दु तार खुड़ततो भाइदेर अत्याचारे आमादेर बाड़िते तार दिदिर काछे एसे येदिन आश्रय निले, तोमरा सेदिन भाबले, ए आबार कोथाकार

आदरे—स्नेह से। बाधे—कष्टकर प्रतीत होता है। धरे...दित—पकड़ कर खीचता। आल्गा—शिथिल। चापड़ा—चपटा खण्ड। उठे आसे—उखड़, निकल आता है। शिकड़सुद्ध—जड़-मूल समेत। कथाय कथाय— बात बात में।

मतो—समान। आबार—पुन:। गोरुबाछुर...पड़लुम—गाय-बछड़ों में उलझ गई। गड़ाते-गड़ाते—लुढ़कते-पुढ़कते। दरकारइ—आवश्यकता ही। बातासे—हवा में। पाका—पक्के। अशथ गाछेर—पीपल वृक्ष का। सेइटुकु थेके—उस जरा से (बीज) से। बुकेर पाँजर—छाती का पंजर। माझखाने—बीच। कणा—कण। तार पर थेके—उसके बाद से। फाटल—दरार।

बड़ो...बोन—बड़ी जिठानी की बहन। खुड़ततो भाइदेर—चचेरे भाइयों के। बाड़िते—घर पर। काछे—पास। भाबले—सोचा। कोथाकार—कहाँ की।

आमादेर बड़ो जायेर बापेर वंशे कुल छाड़ा आर बड़ो किछु छिल ना, रूपओ ना, टाकाओ ना। आमार श्वशुरेर हाते पाये धरे केमन करे तोमादेर घरे ताँर विवाह हल से तो समस्तइ जान। तिनि निजेर विवाहटाके ए वंशेर प्रति विषम एकटा अपराध बलेइ चिरकाल मने जेनेछेन। सेइजन्ये सकल विषयेइ निजेके यत दूर सम्भव संकुचित करे तोमादेर घरे तिनि अति अल्प जायगा जुड़े थाकेन।

किन्तु, ताँर एइ साधु दृष्टान्ते आमादेर बड़ो मुशकिल हयेछे। आमि सकल दिके आपनाके अत असम्भव खाटो करते पारि ने। आमि येटाके भालो बले बुझि आर-कारओ खातिरे सेटाके मन्द बले मेने नेओया आमार कर्म नय—तुमिओ तार अनेक प्रमाण पेयेछ।

बिन्दुके आमि आमार घरे टेने निलुम। दिदि बललेन, "मेजोबउ गरिबेर घरेर मेयेर माथाटि खेते बसलेन।" आमि येन विषम एकटा विपद घटालुम, एमनि भावे तिनि सकलेर काछे नालिश करे बेड़ालेन। किन्तु, आमि निश्चय जानि, तिनि मने मने बेँचे गेलेन। एखन दोषेर बोझा आमार उपरेइ पड़ल। तिनि बोनके निजे ये स्नेह देखाते पारतेन ना आमाके दिये सेइ स्नेहटुकु करिये निये ताँर मनटा हालका हल। आमार बड़ो जा बिन्दुर वयस थेके दु-चारटे अङ्क बाद दिते चेष्टा करतेन। किन्तु, तार वयस ये चोद्दर चेये कम छिल ना, ए कथा लुकिये बलले, अन्याय हत ना। तुमि तो जान, से देखते एतइ मन्द

छाड़ा—अतिरिक्त। **टाकाओ**—रुपये भी। **हाते....धरे**—हाथ-पैर जोड़ कर। **बलेइ**—मान कर ही। **जायगा...थाकेन**—जगह घेरे रहतीं।

आपनाके—स्वयं को। **खाटो**—छोटा। **बुझि**—समझती हूँ। **खातिरे**—लिए। **मन्द**—बुरा।

टेने निलुम—खीच, रख लिया। **माथाटि...बसलेन**—बिगाड़ देंगी। **नालिश...बेड़ालेन**—शिकायत करती फिरी। **तिनि**—वे। **आमाके दिये**—मेरे द्वारा। **बाद दिते**—छोड़ देने की। **चोद्दर चेये**—चौदह से। **कथा**—बात। **लुकिये**—छिपा कर। **मन्द**—असुन्दर।

छिल ये, पड़े गिये से यदि माथा भाङत तबे घरेर मेजेटार जन्यइ लोके उद्‌विग्न हत। काजेइ पिता-मातार अभावे केउ ताके विये देवार छिल ना, एवं ताके विये करवार मतो मनेर जोरइ वा कजन लोकेर छिल।

विन्दु वड़ो भये भये आमार काछे एल। येन आमार गाये तार छोँयाच लागले आमि सइते पारव ना। विश्वसंसारे तार येन जन्मावार कोनो शर्त छिल ना ; ताइ से केवलइ पाश काटिये, चोख एड़िये चलत। तार वापेर वाड़िते तार खुड़ततो भाइरा ताके एमन एकटु कोणओ छेड़े दिते चाय नि ये कोणे एकटा अनावश्यक जिनिस पड़े थाकते पारे। अनावश्यक आवर्जना घरेर आशे-पाशे अनायासे स्थान पाय, केनना मानुष ताके भुले याय ; किन्तु अनावश्यक मेयेमानुष ये एके अनावश्यक आवार तार उपरे ताके भोलाओ शक्त, सेइजन्ये आँस्ताकुड़ेओ तार स्थान नेइ। अथच विन्दुर खुड़ततो भाइरा ये जगते परमावश्यक पदार्थ ता बलवार जो नेइ। किन्तु, तारा वेश आछे।

ताइ, विन्दुके यखन आमार घरे डेके आनलुम तार बुकेर मध्ये काँपते लागल। तार भय देखे आमार वड़ो दुःख हल। आमार घरे ये तार एकटुखानि जायगा आछे सेइ कथाटि आमि अनेक आदर करे ताके वुझिये दिलुम।

पड़े...जन्यइ—गिर कर यदि वह अपना सिर फोड़ लेती तो घर के फर्श के लिए ही। काजेइ—अतएव। विये देवार—विवाह कर देने वाला। मतो—लायक। कजन लोकेर—कितने लोगों में।

काछे—निकट। गाये—शरीर में। छोँयाच—छूत। सइते...ना—बरदाश्त न कर सकूंगी। पाश काटिये—बगल से बच कर। चोख... चलत—आँख चुरा कर चलती। वाड़िते—घर पर। खुड़ततो भाइरा—चचेरे भाइयों ने। जिनिस—वस्तु। आवर्जना—फालतू मैली-कुचैली चीजें, कूड़ा। केनना—क्योंकि। एके—एक तो। आवार...उपरे—और तिस पर। भोलाओ—भूलना भी। आँस्ताकुड़ेओ—घूरे पर भी। जो नेइ—चारा नहीं है। वेश आछे—अच्छे हैं (व्यंग्य में)।

घरे...आनलुम—कमरे में बुला लाई। बुकेर मध्ये—छाती में। एकटुखानि—थोड़ी-सी। आदर करे—स्नेह से। बुझिये दिलुम—समझा दी।

किन्तु, आमार घर शुधु तो आमारइ घर नय। काजेइ आमार काजटि सहज हल ना। दु-चारदिन आमार काछे थाकतेइ तार गाये लाल-लाल की उठल। हयतो से घामाचि, नय तो आर-किछु हबे, तोमरा बलले बसन्त। केनना, ओ ये बिन्दु। तोमादेर पाड़ार एक आनाड़ि डाक्तार एसे बलले, आर दुइ-एकदिन ना गेले ठिक बला याय ना। किन्तु, सेइ दुइ-एकदिनेर सबुर सइबे के। बिन्दु तो तार व्यामोर लज्जातेइ मरबार जो हल। आमि बललुम, बसन्त हय तो होक्, आमि आमादेर सेइ आँतुड़घरे ओके निये थाकब, आर-काउके किछु करते हबे ना। एइ निये आमार उपरे तोमरा यखन सकले मारमूर्ति धरेछ, एमन-कि बिन्दुर दिदिओ यखन अत्यन्त विरक्तिर भान करे पोड़ाकपालि मेयेटाके हाँसपाताले पाठाबार प्रस्ताव करछेन, एमन समय ओर गायेर समस्त लाल दाग एकदम मिलिये गेल। तोमरा देखि ताते आरओ व्यस्त हये उठले। बलले, निश्चयइ बसन्त बसे गियेछे। केनना, ओ ये बिन्दु।

अनादरे मानुष हबार एकटा मस्त गुण, शरीरटाके ताते एकेबारे अजर अमर करे तोले। व्यामो हतेइ चाय ना ; मरार सदर रास्तागुलो एकेबारेइ बन्ध। रोग ताइ ओके ठाट्टा करे गेल ; किछुइ हल ना। किन्तु, एटा बेश बोझा गेल, पृथिवीर मध्ये सब चेये अकिञ्चित्कर मानुषके आश्रय देओयाइ सब चेये

शुधु—केवल। **काजेइ**—अतएव। **गाये**—शरीर में। **घामाचि**—घमौरी। **बसन्त**—शीतला। **पाड़ार**—मुहल्ले का। **सबुर...के**—सब्र कौन करेगा। **व्यामोर**—व्याधि की। **जो**—नौबत। **आँतुड़घरे**—सौरी में। **मारमूर्ति धरेछ**—विकराल रूप धारण किया (है)। **भान करे**—दिखावा करते हुए। **पोड़ाकपालि**—(जले) मन्द भाग्य वाली, अभागी। **मिलिये गेल**—मिट गए। **ताते**—उससे। **व्यस्त**—परेशान। **बसे गियेछे**—बैठ, दब गई है।

मानुष हबार—लालित-पालित होने का। **मस्त**—महत्। **एकेबारे**—बिल्कुल। **मरार**—मरने के। **ठाट्टा**—परिहास। **बेश...गेल**—भलीभाँति समझ में आ गया। **चेये**—से।

कठिन। आश्रयेर दरकार तार यत वेशि आश्रयेर बाधाओ तार तेमनि विषम।

आमार सम्बन्धे बिन्दुर भय यखन भाङ्ल तखन ओके आर-एक गेरोय धरलो। आमाके एमनि भालोवासते शुरु करले ये आमाके भय धरिये दिले। भालोवासार एरकम मूर्ति संसारे तो कोनोदिन देखि नि। वइयेते पड़ेछि वटे, सेओ मेये-पुरुषेर मध्ये। आमार ये रूप छिल से कथा आमार मने करवार कोनो कारण बहुकाल घटे नि—एत दिन परे सेइ रूपटा निये पड़ल एइ कुश्री मेयेटि। आमार मुख देखे तार चोखेर आश आर मिटत ना। बलत, "दिदि, तोमार एइ मुखखानि आमि छाड़ा आर केउ देखते पाय नि।" येदिन आमि निजेर चुल निजे बाँधतुम सेदिन तार भारि अभिमान। आमार चुलेर बोझा दुइ हात दिये नाड़ते-चाड़ते तार भारि भालो लागत। कोथाओ निमन्त्रणे याओया छाड़ा आमार साजगोजेर तो दरकार छिल ना। किन्तु, विन्दु आमाके अस्थिर करे रोजइ किछु-ना-किछु साज करात। मेयेटा आमाके निये एकेवारे पागल हये उठल।

तोमादेर अन्दरमहले कोथाओ जमि एक छटाक नेइ। उत्तर दिकेर पाँचिलेर गाये नर्दमार धारे कोनो गतिके एकटा गावगाछ जन्मेछे। येदिन देखतुम सेइ गावेर गाछेर नतुन पातागुलि

दरकार—आवश्यकता। वेशि—अधिक।

भाङ्ल—टूटा। गेरोय धरलो—मुसीबत में फँस गई। भालोवासते—प्रेम करना। एरकम—इस तरह की। वइयेते...वटे—(हाँ,) पुस्तकों में पढ़ा अवश्य है। मेये—नारी। परे—बाद। निये पड़ल—ले कर उलझ गई। चोखेर...मिटत ना—नेत्रों की साध मिटती ही नहीं थी। आमि छाड़ा—मेरे सिवाय। चुल—केश। अभिमान—क्षोभ, मान। दुइ...चाड़ते—दोनों हाथों से हिलाना-डुलाना। साजगोजेर—बनाव-शृंगार की। साज करात—शृंगार कराती। एकेवारे—बिलकुल।

जमि—जमीन। पाँचिलेर...गतिके—प्राचीर से सटी हुई नाली के किनारे किसी तरह। गावगाछ—लोध का वृक्ष (सं० लोध्र)। नतुन पातागुलि—नये पत्ते।

राङा टक्टके हये उठेछे, सेइदिन जानतुम, धरातले वसन्त एसेछे बटे। आमार घरकन्नार मध्ये ए अनादृत मेयेटार चित्त येदिन आगागोड़ा एमन रङिन हये उठल सेदिन आमि बुझलुम, हृदयेर जगतेओ एकटा वसन्तेर हाओया आछे—से कोन् स्वर्ग थेके आसे, गलिर मोड़ थेके आसे ना।

बिन्दुर भालोबासार दुःसह वेगे आमाके अस्थिर करे तुलेछिल। एक-एकबार तार उपर राग हत से कथा स्वीकार करि, किन्तु तार एइ भालोबासार भितर दिये आमि आपनार एकटि स्वरूप देखलुम या आमि जीवने आर कोनोदिन देखि नि। सेइ आमार मुक्त स्वरूप।

ए दिके, बिन्दुर मतो मेयेके आमि ये एतटा आदरयत्न करछि ए तोमादेर अत्यन्त बाड़ाबाड़ि बले ठेकल। एर जन्ये खुँत्खुँत्-खिट्खिटेर अन्त छिल ना। येदिन आमार घर थेके बाजुबन्ध चुरि गेल सेदिन, सेइ चुरिते बिन्दुर ये कोनो रकमेर हात छिल ए कथार आभास दिते तोमादेर लज्जा हल ना। यखन स्वदेशी हाङ्गामाय लोकेर बाड़ि-तल्लासि हते लागल तखन तोमरा अनायासे सन्देह करे बसले ये, बिन्दु पुलिसेर पोषा मेये-चर। तार आर-कोनो प्रमाण छिल ना; केवल एइ प्रमाण ये, ओ बिन्दु।

तोमादेर बाड़िर दासीरा ओर कोनोरकम काज करते आपत्ति

राङा टक्टके—गहरे लाल। घरकन्नार मध्ये—घर-गृहस्थी में। आगागोड़ा—आदि से अन्त तक। बुझलुम—समझ गई। थेके—से। गलिर—गली के।

करे...छिल—कर दिया था। राग—क्रोध। दिये—से। आपनार—अपना। मतो मेयेके—जैसी लड़की को। आदरयत्न—स्नेह और देखभाल। बाड़ाबाड़ि...ठेकल—ज्यादती जान पड़ी। एर...खिट्खिटेर—इसके कारण नुक्ताचीनी और झुंझलाहट का। घर थेके—कमरे से। कोनो रकमेर—किसी तरह का। स्वदेशी हाङ्गामाय—स्वदेशी-आन्दोलन के दिनों में। बाड़ि-तल्लासि—खानातलाशी। पोषा—पोषित। मेये-चर—महिला गुप्तचर।

कोनोरकम—किसी तरह का।

करत—तादेर काउके और काज करवार फरमाश करले, ओ मेयेओ एकेवारे संकोचे येन आड़ष्ट हये उठत। एइ-सकल कारणेइ और जन्ये आमार खरच वेड़े गेल। आमि विशेष करे एकजन आलादा दासी राखलुम। सेटा तोमादेर भालो लागे नि। विन्दुके आमि ये-सव कापड़ परते दितुम ता देखे तुमि एत राग करेछिले ये, आमार हात-खरचेर टाका वन्ध करे दिले। तार परदिन थेके आमि पाँच-सिके दामेर जोड़ा मोटा कोरा कलेर धुति परते आरम्भ करे दिलुम। आर, मतिर मा यखन आमार एँटो भातेर थाला निये येते एल ताके वारण करे दिलुम। आमि निजे उठोनेर कलतलाय गिये एँटो भात वाछुरके खाइये वासन मेजेछि। एकदिन हठात् सेइ दृश्यटि देखे तुमि खुव खुशि हओ नि। आमाके खुशि ना करलेओ चले आर तोमादेर खुशि ना करलेइ नय, एइ सुवुद्धिटा आज पर्यन्त आमार घटे एल ना।

ए दिके तोमादेर रागओ येमन वेड़े उठेछे विन्दुर वयसओ तेमनि वेड़े चलेछे। सेइ स्वाभाविक व्यापारे तोमरा अस्वाभाविक रकमे विव्रत हये उठेछिले। एकटा कथा मने करे आमि आश्चर्य हइ, तोमरा जोर करे केन विन्दुके तोमादेर वाड़ि थेके विदाय करे दाओ नि। आमि वेश वुझि, तोमरा आमाके मने मने भय कर। विधाता ये आमाके वुद्धि दियेछिलेन, भितरे भितरे तार खातिर ना करे तोमरा वाँच ना।

आड़ष्ट—जड़। आलादा—अलहदा। भालो—अच्छा। कापड़—धोती, साड़ी आदि। परते—पहनने को। परदिन थेके—अगले दिन से। पाँच-सिके—सवा रुपया। कलेर धुति—मिल की वनी धोती। मतिर मा—मति नामक वच्चे की मा, नौकरानी। एँटो...थाला—भात की जूठी थाली। निये येते—ले जाने को। उठोनेर कलतलाय—आँगन में लगे नल पर। वाछुरके—वछड़े को। घटे—समझ में।

ए दिके—इधर। रागओ—क्रोध भी। येमन—जैसे। तेमनि—वैसे। रकमे—तौर पर, रूप से। विव्रत—परेशान। कथा....करे—वात को याद कर। वाड़ि थेके—घर से। वेश वुझि—अच्छी तरह समझती हूँ। खातिर—सम्मान। वाँच ना—रिहाई नहीं पाते।

अवशेषे बिन्दुके निजेर शक्तिते विदाय करते ना पेरे तोमरा प्रजापति-देवतार शरणापन्न हले। बिन्दुर वर ठिक हल। बड़ो जा बललेन, "बाँचलुम। मा काली आमादेर वंशेर मुख रक्षा करलेन।"

वर केमन ता जानि ने; तोमादेर काछे शुनलुम, सकल विषयेइ भालो। बिन्दु आमार पा जड़िये धरे काँदते लागल; बलले, "दिदि, आमार आबार बिये करा केन।"

आमि ताके अनेक बुझिये बललुम, "बिन्दु, तुइ भय करिस ने —शुनेछि तोर वर भालो।"

बिन्दु बलले, "वर यदि भालो हय, आमार की आछे ये आमाके तार पछन्द हबे।"

वरपक्षेरा बिन्दुके तो देखते आसबार नामओ करले ना। बड़ोदिदि ताते बड़ो निश्चिन्त हलेन।

किन्तु, दिनरात्रे बिन्दुर कान्ना आर थामते चाय ना। से तार की कष्ट, से आमि जानि। बिन्दुर जन्ये आमि संसारे अनेक लड़ाइ करेछि, किन्तु ओर विवाह बन्ध होक ए कथा बलवार साहस आमार हल ना। किसेर जोरेइ वा बलब। आमि यदि मारा याइ तो ओर की दशा हबे।

एके तो मेये, ताते कालो मेये; कार घरे चलल, ओर की दशा हबे, से कथा ना भाबाइ भालो। भाबते गेले प्राण केँपे ओठे।

बिन्दु बलले, "दिदि, बियेर आर पाँच दिन आछे, एर मध्ये आमार मरण हबे ना कि।"

करते...पेरे—न कर पाने पर। प्रजापति—विवाह घटित कराने वाले देवता। बड़ो जा—बड़ी जिठानी। बाँचलुम—जान बची। मुख....करलेन—लाज रख ली।

केमन—कैसा। काछे—से। पा जड़िये...लागल—पैर पकड़ कर रोने लगी। बिये—विवाह।

बुझिये—समझा कर। आमार...आछे—मुझमे क्या है। नामओ...ना—नाम भी नही लिया। ताते—इससे।

कान्ना—रुदन। जन्ये—लिए। बन्ध—बन्द। मेये—लड़की। ना...भालो—न सोचना ही अच्छा है। एर मध्ये—इस बीच।

आमि ताके खुब धमके दिलुम; किन्तु अन्तर्यामी जानेन, यदि कोनो सहजभावे विन्दुर मृत्यु हते पारत ता हले आमि आराम बोध करतुम।

विवाहेर आगेर दिन विन्दु तार दिदिके गिये बलले, "दिदि, आमि तोमादेर गोयालघरे पड़े थाकब, आमाके या बलबे ताइ करब, तोमार पाये पड़ि आमाके एमन करे फेले दियो ना।"

किछुकाल थेके लुकिये लुकिये दिदिर चोख दिये जल पड़छिल, सेदिनओ पड़ल। किन्तु, शुधु हृदय तो नय; शास्त्रओ आछे। तिनि बललेन, "जानिस तो विन्दि, पतिइ हच्छे स्त्रीलोकेर गति मुक्ति सब। कपाले यदि दुःख थाके तो केउ खण्डाते पारबे ना।"

आसल कथा हच्छे, कोनो दिके कोनो रास्ताइ नेइ—विन्दुके विवाह करतेइ हबे, तार परे या हय ता होक।

आमि चेयेछिलुम, विवाहटा याते आमादेर बाड़ितेइ हय। किन्तु, तोमरा ब'ले बसले, बरेर बाड़ितेइ हओया चाइ—सेटा तादेर कौलिक प्रथा।

आमि बुझलुम, विन्दुर विवाहेर जन्ये यदि तोमादेर खरच करते हय तबे सेटा तोमादेर गृहदेवतार किछुतेइ सइबे ना। काजेइ चुप करे येते हल। किन्तु, एकटि कथा तोमरा केउ जान ना। दिदिके जानाबार इच्छे छिल किन्तु जानाइ नि, केनना ता हले तिनि भयेइ मरे येतेन—आमार किछु किछु गयना दिये आमि लुकिये विन्दुके साजिये दियेछिलुम। बोध करि दिदिर चोखे सेटा

ता हले—ऐसा होने पर, तो। आगेर—पहले। गोयालघरे—गोठ में। चोख दिये—आँखों से। कपाले—भाग्य में। खण्डाते...ना—अतिक्रमण नहीं कर सकता।

आसल—सच। तार परे—उसके बाद। चेयेछिलुम—चाहा था। याते—जिससे। कौलिक—वंशपरम्परागत।

बुझलुम—समझ गई। सइबे ना—बरदाश्त नहीं होगा। काजेइ—इसीलिए। केनना ता हले—अन्यथा तब (तो)। बोध करि—लगता है। चोखे—आँखों में। सेटा—वे।

पड़े थाकबे, किन्तु सेटा तिनि देखेओ देखेन नि। दोहाइ धर्मेर, सेजन्ये तोमरा ताँके क्षमा कोरो।

याबार आगे बिन्दु आमाके जड़िये धरे बलले, "दिदि, आमाके तोमरा ता हले नितान्तइ त्याग करले?"

आमि बललुम, "ना बिन्दि, तोर येमन दशाइ होक-ना केन, आमि तोके शेष पर्यन्त त्याग करब ना।"

तिन दिन गेल। तोमादेर तालुकेर प्रजा खाबार जन्ये तोमाके ये भेड़ा दियेछिले ताके तोमार जठराग्नि थेके बाँचिये आमि आमादेर एकतलाय कयला राखबार घरेर एकपाशे वास करते दियेछिलुम। सकाले उठेइ आमि निजे ताके छोला खाइये आसतुम; तोमार चाकरदेर प्रति दुइ-एकदिन निर्भर करे देखेछि, ताके खाओयानोर चेये ताके खाओयार प्रतिइ तादेर बेशि झोँक।

सेदिन सकाले सेइ घरे ढुके देखि, बिन्दु एक कोणे जड़सड़ हये बसे आछे। आमाके देखेइ आमार पा जड़िये धरे लुटिये पड़े निःशब्दे काँदते लागल।

बिन्दुर स्वामी पागल।

"सत्यि बलछिस, बिन्दि?"

"एत बड़ो मिथ्या कथा तोमार काछे बलते पारि, दिदि? तिनि पागल। श्वशुरेर एइ विवाहे मत छिल ना—किन्तु, तिनि आमार शाशुड़िके यमेर मतो भय करेन। तिनि विवाहेर पूर्वेइ काशी चले गेछेन। शाशुड़ि जेद करे ताँर छेलेर बिये दियेछेन।"

आमि सेइ राश-करा कयलार उपर बसे पड़लुम। मेयेमानुषके

जड़िये धरे—लिपट कर। प्रजा—रैयत। आमादेर—अपने, हमारे। एकतलाय—पहली मंजिल के। चेये—अपेक्षा। झोँक—आकर्षण, झुकाव।
ढुके—घुस कर। जड़सड़ हये—सिकुड़ी-सिमटी। काँदते लागल—रोने लगी।
मत—सहमति। शाशुड़िके—सास से। मतो—समान। जेद—ज़िद। छेलेर...दियेछेन—लड़के का विवाह कर दिया है।
राश-करा—राशिकृत। मेयेमानुषके—स्त्रियों पर।

मेयेमानुष दया करे ना। वले, 'ओ तो मेयेमानुष वइ तो नय। छेले होक्-ना पागल, से तो पुरुष वटे।'

विन्दुर स्वामीके हठात् पागल वले बोझा याय ना, किन्तु एक-एकदिन से एमन उन्माद हये ओठे ये ताके घरे तालावन्ध करे राखते हय। विवाहेर रात्रे से भालो छिल, किन्तु रात-जागा प्रभृति उत्पाते द्वितीय दिन थेके तार माथा एकेबारे खाराप हये उठल। विन्दु दुपुरवेलाय पितलेर थालाय भात खेते वसेछिल, हठात् तार स्वामी थालासुद्ध भात टेने उठाने फेले दिले। हठात् केमन तार मने हयेछे, विन्दु स्वयं रानी रासमणि; वेहाराटा निश्चय सोनार थाला चुरि करे रानीके तार निजेर थालाय भात खेते दियेछे। एइ तार राग। विन्दु तो भये मरे गेल। तृतीय रात्रे शाशुड़ि ताके यखन स्वामीर घरे शुते वलले, विन्दुर प्राण शुकिये गेल। शाशुड़ि तार प्रचण्ड, रागले ज्ञान थाके ना। सेओ पागल, किन्तु पुरो नय वलेइ आरओ भयानक। विन्दुके घरे ढुकते हल। स्वामी से रात्रे ठाण्डा छिल। किन्तु, भये विन्दुर शरीर येन काठ हये गेल। स्वामी यखन घुमियेछे अनेक रात्रे से अनेक कौशले पालिये चले एसेछे, तार विस्तारित विवरण लेखवार दरकार नेइ।

घृणाय रागे आमार सकल शरीर ज्वलते लागल। आमि वललुम, "एमन फाँकिर विये वियेइ नय। विन्दु, तुइ येमन छिलि तेमनि आमार काछे थाक्, देखि तोके के निये येते पारे।"

वइ—सिवाय।

वोझा...ना—ऐसा नहीं लगता। थेके—से। माथा—दिमाग। दुपुरवेलाय—दोपहर के वक्त। थालासुद्ध—थाली समेत। टेने—खींच कर। उठाने...दिले—आँगन में फेंक दी। वेहाराटा—चाकर (ने)। राग—क्रोध। घरे—कमरे में। शुते—सोने को। रागले—क्रोधित हो जाने पर। वलेइ—इसीलिए। ढुकते हल—घुसना, जाना पड़ा। घुमियेछे—सो गया। पालिये—भाग कर।

फाँकिर विये—धोखे से किया गया विवाह। येमन छिलि—जैसे (रहती) थी।

तोमरा बलले, "बिन्दु मिथ्या कथा बलछे।"

आमि बललुम, "ओ कखनो मिथ्या बले नि।"

तोमरा बलले, "केमन करे जानले।"

आमि बललुम, "आमि निश्चय जानि।"

तोमरा भय देखाले, "बिन्दुर श्वशुरबाड़िर लोके पुलिस-केस करले मुशकिले पड़ते हबे।"

आमि बललुम, "फाँकि दिये पागल वरेर सङ्गे ओर बिये दियेछे ए कथा कि आदालत शुनबे ना।"

तोमरा बलले, "तबे कि एइ निये आदालत करते हबे नाकि। केन, आमादेर दाय किसेर।"

आमि बललुम, "आमि निजेर गयना बेचे या करते पारि करब।"

तोमरा बलले, "उकिलबाड़ि छुटबे नाकि।"

ए कथार जबाब नेइ। कपाले कराघात करते पारि, तार वेशि आर की करब।

ओ दिके बिन्दुर श्वशुरबाड़ि थेके ओर भासुर एसे बाइरे विषम गोल बाधियेछे। से बलछे, से थानाय खबर देबे।

आमार ये की जोर आछे जानि ने—किन्तु, कसाइयेर हात थेके ये गोरु प्राणभये पालिये एसे आमार आश्रय नियेछे ताके पुलिसेर ताड़ाय आबार सेइ कसाइयेर हाते फिरिये दितेइ हबे, ए कथा कोनोमतेइ आमार मन मानते पारल ना। आमि स्पर्धा करे बललुम, "ता, दिक् थानाय खबर।"

एइ ब'ले मने करलुम, बिन्दुके एइवेला आमार शोबार घरे एने ताके निये घरे तालाबन्ध करे बसे थाकि। खोँज करे देखि

तोमरा—तुम लोगों ने। **ओर**—उसका। **नाकि**—क्या। **दाय**—दायित्व। **छुटबे**—भागी भागी जाओगी। **कथार**—बात का। **तार वेशि**—इससे अधिक। **भासुर**—जेठ। **गोल बाधियेछे**—फसाद खड़ा कर दिया है।

थेके—से। **ताड़ाय**—भय से। **कोनोमतेइ**—किसी तरह भी। **स्पर्धा**—दुःसाहस।

एइवेला—इसी समय। **एने**—ला कर।

विन्दु नेइ। तोमादेर सङ्गे आमार वादप्रतिवाद यखन चलछिल, तखन विन्दु आपनि वाइरे गिये तार भासुरेर काछे धरा दियेछे। वुझेछे, ए वाड़िते यदि से थाके तवे आमाके से विषम विपदे फेलवे।

माझखाने पालिये एसे विन्दु आपन दुःख आरओ वाड़ाले। तार शाशुड़िर तर्क एइ ये, तार छेले तो ओके खेये फेलछिल ना। मन्द स्वामीर दृष्टान्त संसारे दुर्लभ नय, तादेर सङ्गे तुलना करले तार छेले ये सोनार चाँद।

आमार वड़ो जा वललेन, "ओर पोड़ा कपाल, ता निये दुःख करे की करव। ता पागल होक, छागल होक, स्वामी तो वटे।"

कुष्ठरोगीके कोले करे तार स्त्री वेश्यार वाड़िते निजे पौंछे दियेछे, सतीसाध्वीर सेइ दृष्टान्त तोमादेर मने जागछिल। जगतेर मध्ये अधमतम कापुरुषतार एइ गल्पटा प्रचार करे आसते तोमादेर पुरुषेर मने आज पर्यन्त एकटुओ संकोच वोध हय नि; सेइजन्यइ मानवजन्म नियेओ विन्दुर व्यवहारे तोमरा राग करते पेरेछ, तोमादेर माथा हेँट हय नि। विन्दुर जन्ये आमार वुक फेटे गेल, किन्तु तोमादेर जन्ये आमार लज्जार सीमा छिल ना। आमि तो पाड़ागेँये मेये, तार उपरे तोमादेर घरे पड़ेछि, भगवान कोन् फाँक दिये आमार मध्ये एमन वुद्धि दिलेन। तोमादेर एइ-सव धर्मेर कथा आमि ये किछुतेइ सइते पारलुम ना।

आमि निश्चय जानतुम, मरे गेलेओ विन्दु आमादेर घरे आर

आपनि—स्वयं। धरा दियेछे—पकड़ा गई। वुझेछे—समझ गई।

माझखाने—बीच में। खेये...ना—खाये नहीं जा रहा था। मन्द—खराब, बुरे। बड़ो जा—बड़ी जिठानी। पोड़ा कपाल—हतभागिनी। छागल—बकरा। वटे—है ही।

कोले करे—गोद में उठा कर। वाड़िते—घर पर। पौंछे दियेछे—पहुँचा दिया था। सेइजन्यइ—इसीलिए। राग—क्रोध। माथा...नि—सिर नीचा नहीं हुआ। जन्ये—लिए। वुक...गेल—छाती फट गई। पाड़ागेँये मेये—गँवई-गाँव की लड़की या स्त्री। कोन्...दिये—किस दरार से। सइते...ना—बरदाश्त न कर सकी।

आसबे ना। किन्तु, आमि ये ताके वियेर आगेर दिन आशा दिये-छिलुम ये ताके शेष पर्यन्त त्याग करब ना। आमार छोटो भाइ शरत् कलकाताय कलेजे पड़छिल। तोमरा जानइ तो यत रकमेर भलण्टियारि करा, प्लेगेर पाड़ार इँदुर मारा, दामोदरेर वन्याय छोटा, एतेइ तार एत उत्साह ये उपरि उपरि दुवार से एफ. ए. परीक्षाय फेल करेओ किछुमात्र दमे याय नि। ताके आमि डेके बललुम, "बिन्दुर खबर याते आमि पाइ तोके सेइ बन्दोवस्त करे दिते हबे, शरत्। बिन्दु आमाके चिठि लिखते साहस करबे ना, लिखलेओ आमि पाब ना।"

एरकम काजेर चेये यदि ताके बलतुम, बिन्दुके डाकाति करे आनते किम्वा तार पागल स्वामीर माथा भेङे दिते ता हले से वेशि खुशि हत।

शरतेर सङ्गे आलोचना करछि एमन समय तुमि घरे एसे बलले, "आवार की हाङ्गामा बाधियेछ।"

आमि बललुम, "सेइ या सब-गोड़ाय बाधियेछिलुम, तोमादेर घरे एसेछिलुम—किन्तु, से तो तोमादेरइ कीर्ति।"

तुमि जिज्ञासा करले, "बिन्दुके आबार एने कोथाओ लुकिये रेखेछ?"

आमि बललुम, "विन्दु यदि आसत ता हले निश्चय एने लुकिये राखतुम। किन्तु से आसबे ना, तोमादेर भय नेइ।"

वियेर...दिन—विवाह के पहले दिन। भलण्टियारि—(अं०) वॉलिन्टियरी, स्वयंसेवक का कार्य। पाड़ार इँदुर—मुहल्ले के चूहे। वन्याय छोटा—बाढ़ (के दिनों) में (सहायता के लिए) दौड़ पड़ना। उपरि उपरि—एक के बाद एक। दमे...नि—निरुत्साहित नहीं हुआ, माना नहीं। डेके—बुला कर। याते—जिससे।

एरकम—इस प्रकार के। चेये—बजाय, अपेक्षा। डाकाति करे—अपहरण करके। माथा...दिते—सिर फोड़ देने को। आवार—फिर। हाङ्गामा वाधियेछ—फसाद खड़ा कर दिया।

गोड़ाय—शुरू में। कीर्ति—कृतित्व। कोथाओ...रेखेछ—कहीं छिपा रखा है।

ता हले—तो।

शरत्‌के आमार काछे देखे तोमार सन्देह आरओ वेड़े उठल। आमि जानतुम, शरत् आमादेर वाड़ि यातायात करे ए तोमरा किछुतेइ पछन्द करते ना। तोमादेर भय छिल, ओर 'परे पुलिसेर दृष्टि आछे—कोन् दिन ओ कोन् राजनैतिक मामलाय पड़वे तखन तोमादेर सुद्ध जड़िये फेलवे। सेइजन्ये आमि ओके भाइफोँटा पर्यन्त लोक दिये पाठिये दितुम, घरे डाकतुम ना।

तोमार काछे शुनलुम विन्दु आवार पालियेछे, ताइ तोमादेर वाड़िते तार भासुर खोज करते एसेछे। शुने आमार वुकेर मध्ये शेल विँधल। हतभागिनीर ये की असह्य कष्ट ता वुझलुम, अथच किछुइ करवार रास्ता नेइ।

शरत् खवर निते छुटल। सन्ध्यार समय फिरे एसे आमाके वलले, "विन्दु तार खुड़ततो भाइदेर वाड़ि गियेछिल, किन्तु तारा तुमुल राग करे तखनइ आवार ताके श्वशुरवाड़ि पौँछे दियेगेछे। एर जन्ये तादेर खेसारत एवं गाड़िभाड़ा दण्ड या घटेछे तार झाँज एखनो मन थेके मरे नि।"

तोमादेर खुड़िमा श्रीक्षेत्रे तीर्थ करते यावेन वले तोमादेर वाड़िते एसे उठलेन। आमि तोमादेर वललुम, आमिओ याव।

आमार हठात् एमन धर्मे मन हयेछे देखे तोमरा एत खुशि हये उठले ये, किछुमात्र आपत्ति करले ना। ए कथाओ मने छिल ये, एखन यदि कलकाताय थाकि तवे आवार कोन्‌दिन विन्दुके निये फ्यासाद वाधिये वसव। आमाके निये विषम ल्याठा।

काछे—पास। यातायात करे—आता-जाता है। पछन्द—पसन्द। ओर 'परे—उस पर। तोमादेर...फेलवे—(अपने साथ) तुम लोगों को भी फँसा देगा। भाइफोँटा—भ्रातृद्वितीया का टीका। लोक दिये—(किसी) व्यक्ति के द्वारा। डाकतुम ना—न वुलाती।

पालियेछे—भाग गई है। भासुर—जेठ। वुकेर मध्ये—छाती में।

निते छुटल—लेने दौड़ा। खुड़ततो भाइदेर—चचेरे भाइयों के। एर जन्ये—इसके कारण। खेसारत—नुकसान, घाटा। झाँज—तीखापन।

खुड़िमा—काकी। वले—इसलिए। वाड़िते...उठलेन—घर आ कर ठहरीं। कथाओ—वात भी। मने छिल—ध्यान में थी। निये—ले कर। फ्यासाद...वसव—फसाद खड़ा कर वैठूंगी। ल्याठा—झंझट।

बुधवारे आमार याबार दिन, रविवारे समस्त ठिक हल। आमि शरत्‌के डेके बललुम, "येमन करे होक, बिन्दुके बुधवारे पुरी याबार गाड़िते तोके तुले दिते हबे।"

शरतेर मुख प्रफुल्ल हये उठल; से बलले, "भय नेइ दिदि, आमि ताके गाड़िते तुले दिये पुरी पर्यन्त चले याब—फाँकि दिये जगन्नाथ देखा हये याबे।"

सेइदिन सन्ध्यार समय शरत् आबार एल। तार मुख देखेइ आमार बुक दमे गेल। आमि बललुम, "की शरत्? सुविधा हल ना बुझि?"

से बलले, "ना।"

आमि बललुम, "राजि करते पारलि ने?"

से बलले, "आर दरकारओ नेइ। काल रात्तिरे से कापड़े आगुन धरिये आत्महत्या करे मरेछे। बाड़िर ये भाइपोटार सङ्गे भाब करे नियेछिलुम तार काछे खबर पेलुम, तोमार नामे से एकटा चिठि रेखे गियेछिल किन्तु से चिठि ओरा नष्ट करेछे।"

याक्, शान्ति हल।

देशसुद्ध लोक चटे उठल। बलते लागल, मेयेदेर कापड़े आगुन लागिये मरा एकटा फ्याशान हयेछे।

तोमरा बलले, ए-समस्त नाटक करा! ता हबे। किन्तु, नाटकेर तमाशाटा केवल बाङालि मेयेदेर शाड़िर उपर दियेइ हय केन आर बाङालि वीरपुरुषदेर कोँचार उपर दिये हय ना केन, सेटाओ तो भेबे देखा उचित।

येमन...होक—जैसे भी हो। गाड़िते...हबे—तुझे गाड़ी में चढ़ा देना होगा। फाँकि दिये—(इस) बहाने से, (धोखे-धोखे में)। बुक...गेल—कलेजा धक से रह गया। सुविधा—सुयोग। बुझि—शायद।

रात्तिरे—रात को। कापड़े...धरिये—साड़ी में आग लगा कर। भाइपोटार—भतीजे के। भाब—मित्रता। ओरा—उन लोगों ने।

देशसुद्ध—ज़माने भर के। चटे उठल—बिगड़ उठे। मेयेदेर—स्त्रियों का।

ता हबे—सो होगा। दियेइ—से ही। कोँचार—धोती के सामने की चुन्नटों, पटली। भेबे—सोच कर।

बिन्दिटार एमनि पोड़ा कपाल बटे ! यतदिन बेँचे छिल रूपे गुणे कोनो यश पाय नि—मरबार वेलाओ ये एकटु भेबे चिन्ते एमन एकटा नतुन धरने मरबे याते देशेर पुरुषरा खुशि हये हात-तालि देबे ताओ तार घटे एल ना ! मरेओ लोकदेर चटिये दिले !

दिदि घरेर मध्ये लुकिये काँदलेन। किन्तु, से कान्नार मध्ये एकटा सान्त्वना छिल। याइ होक्-ना केन, तबु रक्षा हयेछे। मरेछे बइ तो ना; बेँचे थाकले की ना हते पारत।

आमि तीर्थे एसेछि। बिन्दुर आर आसबार दरकार हल ना, किन्तु आमार दरकार छिल।

दुःख बलते लोके या बोझे तोमादेर संसारे ता आमार छिल ना। तोमादेर घरे खाओया-परा असच्छल नय; तोमार दादार चरित्र येमन होक, तोमार चरित्रे एमन कोनो दोष नेइ याते विधाताके मन्द बलते पारि। यदि वा तोमार स्वभाव तोमार दादार मतोइ हत ता हलेओ हय तो मोटेर उपर आमार एमनि भावेइ दिन चले येत एवं आमार सतीसाध्वी बड़ो जायेर मतो पतिदेवताके दोष ना दिये विश्वदेवताकेइ आमि दोष देबार चेष्टा करतुम। अतएव तोमादेर नामे आमि कोनो नालिश उत्थापन करते चाइ ने—आमार ए चिठि सेजन्ये नय।

किन्तु, आमि आर तोमादेर सेइ साताश-नम्बर माखन बड़ालेर गलिते फिरब ना। आमि बिन्दुके देखेछि। संसारेर माझखाने

पोड़ा कपाल—फूटे भाग। **भेबे चिन्ते**—सोच-विचार कर। **नतुन धरने**—नई तरह से। **हाततालि**—तालियाँ। **चटिये दिल**—रुष्ट कर दिया।

लुकिये काँदलेन—छिप कर रोईं। **कान्नार**—रुदन में। **मरेछे...ना**—मरने के सिवा तो और कुछ नहीं किया। **आर**—और। **दरकार**—आवश्यकता।

बोझे—समझते हैं। **असच्छल**—दरिद्र। **दादार**—बड़े भाई का। **मन्द**—बुरा। **मतोइ**—समान ही। **मोटेर उपर**—स्थूलतः। **एमनि भावेइ**—इसी प्रकार ही। **बड़ो जायेर**—बड़ी जिठानी की। **नालिश**—शिकायत, अभियोग। **सेजन्ये**—उसके लिए।

साताश—सत्ताईस। **गलिते**—गली में। **माझखाने**—बीच।

मेयेमानुषेर परिचयटा ये की ता आमि पेयेछि। आर आमार दरकार नेइ।

तार परे एओ देखेछि, ओ मेये बटे तवु भगवान ओके त्याग करेन नि। ओर उपरे तोमादेर यत जोरइ थाक्-ना केन, से जोरेर अन्त आछे। ओ आपनार हतभाग्य मानवजन्मेर चेये बड़ो। तोमराइ ये आपन इच्छामतो आपन दस्तुर दिये ओर जीवनटाके चिरकाल पायेर तलाय चेपे रेखे देबे, तोमादेर पा एत लम्बा नय। मृत्यु तोमादेर चेये बड़ो। सेइ मृत्युर मध्ये से महान्—सेखाने विन्दु केवल वाङालि घरेर मेये नय, केवल खुड़ततो भायेर बोन नय, केवल अपरिचित पागल स्वामीर प्रवञ्चित स्त्री नय। सेखाने से अनन्त।

सेइ मृत्युर बाँशि एइ बालिकार भाङा हृदयेर भितर दिये आमार जीवनेर यमुनापारे येदिन बाजल सेदिन प्रथमटा आमार बुकेर मध्ये येन बाण विंधल। विधाताके जिज्ञासा करलुम, जगतेर मध्ये या-किछु सब चेये तुच्छ ताइ सब चेये कठिन केन? एइ गलिर मध्यकार चारि-दिके-प्राचीर-तोला निरानन्देर अति सामान्य वुद्‌वुद्‌टा एमन भयंकर बाधा केन। तोमार विश्वजगत् तार छय ऋतुर सुधापात्र हाते क'रे येमन करेइ डाक दिक्-ना केन, एक मुहूर्तेर जन्ये केन आमि एइ अन्दरमहलटार एइटुकु मात्र चौकाठ पेरते पारि ने। तोमार एमन भुवने आमार एमन जीवन निये केन ए अति तुच्छ इँटकाठेर आड़ालटार मध्येइ आमाके तिले तिले मरते हबे। कत तुच्छ आमार एइ प्रतिदिनेर जीवनयात्रा;

मेयेमानुषेर—स्त्री का। **तार परे**—इसके बाद। **मेये बटे**—लड़की या स्त्री है। **चेये**—अपेक्षा। **आपन इच्छामतो**—अपनी इच्छानुसार। **दस्तुर दिये**—क़ायदे से। **चेपे....देबे**—दवा रखोगे। **खुड़ततो...बोन**—चचेरे भाइयों की बहन।

भाङा—टूटे हुए। **बुकेर...येन**—छाती में मानो। **ताइ**—वही। **तोला**—आवेष्टित। **डाक...केन**—क्यों न पुकारे। **अन्दरमहलटार**—जनानखाने की। **एइटुकु**—जरा-सी। **चौकाठ...पारि ने**—चौकठ को न लांघ सकी। **आड़ालटार मध्येइ**—आड़ में ही।

बलेछिल, 'छाड़ुक बाप, छाड़ुक मा, छाड़ुक ये येखाने आछे, मीरा किन्तु लेगेइ रइल, प्रभु—ताते तार या हबार ता होक।'

एइ लेगे थाकाइ तो बेँचे थाका।

आमिओ बाँचब। आमि बाँचलुम।

तोमादेर चरणतलाश्रयच्छिन्न

मृणाल

जून-जुलाई, १९१३

अपरिचिता

आज आमार वयस सातांश मात्र। ए जीवनटा ना दैर्घ्येर हिसावे वड़ो, ना गुणेर हिसावे। तवु इहार एकटु विशेप मूल्य आछे। इहा सेइ फुलेर मतो याहार वुकेर उपरे भ्रमर आसिया वसियाछिल, एवं सेइ पदक्षेपेर इतिहास ताहार जीवनेर माझखाने फलेर मतो गुटि धरिया उठियाछे।

सेइ इतिहासटुकु आकारे छोटो, ताहाके छोटो करियाइ लिखिव। छोटोके याँहारा सामान्य वलिया भुल करेन ना ताँहारा इहार रस वुझिवेन।

कलेजे यतगुला परीक्षा पास करिवार सव आमि चुकाइयाछि। छेलेवेलाय आमार सुन्दर चेहारा लइया पण्डितमशाय आमाके शिमुल फुल ओ माकाल फलेर सहित तुलना करिया विद्रूप करिवार सुयोग पाइयाछिलेन। इहाते तखन वड़ो लज्जा पाइताम; किन्तु वयस हइया ए कथा भावियाछि, यदि जन्मान्तर थाके तवे आमार मुखे सुरूप एवं पण्डितमशायदेर मुखे विद्रूप आवार येन एमनि करियाइ प्रकाश पाय।

आमार पिता एक काले गरिव छिलेन। ओकालति करिया तिनि प्रचुर टाका रोजगार करियाछेन। भोग करिवार समय

सातांश—सत्ताईस। तवु—फिर भी। इहार—इसका। याहार ...उपरे—जिसके वक्ष पर। वसियाछिल—वैठा था। माझखाने—(वीच) में। फलेर मतो—फल की तरह। गुटि—फल का आरम्भिक रूप। धरिया उठियाछे—वनने लगा है। सेइ—वह।

याँहारा—जो लोग। वलिया—मान कर। ताँहारा—वे लोग। वुझिवेन—समझ सकेंगे।

यतगुला—जितनी। छेलेवेलाय—वचपन में। पण्डितमशाय—पण्डित महाशय। शिमुल—सेमल। माकाल—(ऊपर से देखने में सुन्दर किन्तु भीतर से दुर्गन्धयुक्त एवं अखाद्य फल-विशेष, महाकाल (सं०), इन्द्रायन ? भावियाछि—सोचा है। आवार—पुनः। एमनि करियाइ—इसी प्रकार।

ओकालति—वकालत। टाका—रुपया। रोजगार करियाछेन—उपार्जन किया था।

निमेषमात्रओ पान नाइ। मृत्युते तिनि ये हाँफ छाड़िलेन सेइ ताँर प्रथम अवकाश।

आमार तखन वयस अल्प। मार हातेइ आमि मानुष। मा गरिवेर घरेर मेये; ताइ, आमरा ये धनी ए कथा तिनिओ भोलेन ना आमाकेओ भुलिते देन ना। शिशुकाले आमि कोले कोलेइ मानुष—बोध करि, सेइजन्य शेष पर्यन्त आमार पुरापुरि वयसइ हइल ना। आजओ आमाके देखिले मने हइवे, आमि अन्नपूर्णार कोले गजाननेर छोटो भाइटि।

आमार आसल अभिभावक आमार मामा। तिनि आमार चेये वड़ोजोर वछर छयेक वड़ो। किन्तु, फल्गुर वालिर मतो तिनि आमादेर समस्त संसारटाके निजेर अन्तरेर मध्ये शुषिया लइयाछेन। ताँहाके ना खुँड़िया एखानकार एक गण्डूषओ रस पाइवार जो नाइ। एइ कारणे कोनो-किछुर जन्यइ आमाके कोनो भावना भावितेइ हय ना।

कन्यार पिता मात्रेइ स्वीकार करिवेन, आमि सत्पात्र। तामाकटुकु पर्यन्त खाइ ना। भालोमानुष हओयार कोनो झञ्झाट नाइ, ताइ आमि नितान्त भालोमानुष। मातार आदेश मानिया चलिवार क्षमता आमार आछे—वस्तुत, ना मानिवार क्षमता आमार नाइ। अन्तःपुरेर शासने चलिवार मतो करियाइ आमि प्रस्तुत हइयाछि, यदि कोनो कन्या स्वयम्वरा हन तवे एइ सुलक्षणटि स्मरण राखिवेन।

हाँफ छाड़िलेन—दम तोड़ा।

मार हातेइ—माँ के (हाथों) द्वारा ही। मानुष—लायक, समर्थ। मेये—लड़की। ताइ—इसीसे। तिनिओ—वे भी। कोले-कोलेइ—गोद ही गोद में। बोध करि—लगता है। सेइजन्य—इसीलिए। पुरापुरि—पूरे तौर पर। मने हइवे—लगेगा।

चेये—से। बड़ोजोर—मुश्किल से। बछर छयेक—छः-एक बरस। फल्गुर...मतो—(अंतःसलिला) फल्गु नदी की बालू के समान। शुषिया लइयाछेन—सोख लिया है। ना खुँड़िया—बिना खोदे। गण्डूषओ—चुल्लू भी। जो नाइ—उपाय नहीं है। भावना—चिन्ता।

भालोमानुष—भला आदमी। मतो—लायक। हन—हों।

अनेक बड़ो घर हइते आमार सम्बन्ध आसियाछिल। किन्तु मामा, यिनि पृथिवीते आमार भाग्यदेवतार प्रधान एजेण्ट, विवाह सम्बन्धे ताँर एकटा विशेष मत छिल। धनीर कन्या ताँर पछन्द नय। आमादेर घरे ये मेये आसिबे से माथा हेँट करिया आसिबे, एइ तिनि चान। अथच टाकार प्रति आसक्ति ताँर अस्थिमज्जाय जड़ित। तिनि एमन बेहाइ चान याहार टाका नाइ अथच ये टाका दिते कसुर करिबे ना। याहाके शोषण करा चलिबे अथच बाड़िते आसिले गुड़गुड़िर परिवर्ते बाँधा हुँकाय तामाक दिले याहार नालिश खाटिबे ना।

आमार बन्धु हरिश कानपुरे काज करे। से छुटिते कलिकाताय आसिया आमार मन उतला करिया दिल। से बलिल, "ओहे, मेये यदि बल एकटि खासा मेये आछे।"

किछुदिन पूर्वेइ एम्० ए० पास करियाछि। सामने यत दूर पर्यन्त दृष्टि चले छुटि धू धू करितेछे; परीक्षा नाइ, उमेदारि नाइ, चाकरि नाइ; निजेर विषय देखिबार चिन्ताओ नाइ, शिक्षाओ नाइ, इच्छाओ नाइ—थाकिबार मध्ये भितरे आछेन मा एवं बाहिरे आछेन मामा।

एइ अवकाशेर मरुभूमिर मध्ये आमार हृदय तखन विश्वव्यापी नारीरूपेर मरीचिका देखितेछिल—आकाशे ताहार दृष्टि, वातासे ताहार निश्वास, तरुमर्मरे ताहार गोपन कथा।

एमन समय हरिश आसिया बलिल, "मेये यदि बल तबे—"। आमार शरीर-मन वसन्तवातासे वकुलवनेर नवपल्लवराशिर मतो

यिनि—जो। पछन्द—पसन्द। माथा...करिया—सिर झुका कर। चान—चाहते है। टाकार—रुपयों के। बेहाइ—समधी। कसुर—कमी। गुड़गुड़िर—फर्शी के। बाँधा हुँकाय—निर्दिष्ट एवं सामान्य नारियल (हुक्के) में। नालिश...ना—शिकायत नहीं चलेगी।

बन्धु—मित्र। छुटिते—छुट्टियों में। उतला—उद्विग्न, चंचल। खासा—अच्छी, सुन्दर।

छुटि...करितेछे—सूनी छुट्टियाँ (नजर आती) हैं। उमेदारि नाइ—उम्मेदवारी नहीं। थाकिबार मध्ये—यदि कुछ है। ताहार—उसकी। वातासे—वायु में। मतो—समान।

काँपिते काँपिते आलोछाया बुनिते लागिल। हरिश मानुषटा छिल रसिक, रस दिया वर्णना करिबार शक्ति ताहार छिल। आर आमार मन छिल तृषार्त।

आमि हरिशके बलिलाम, "एकबार मामार काछे कथाटा पाड़िया देखो।"

हरिश आसर जमाइते अद्वितीय। ताइ सर्वत्रइ ताहार खातिर। मामाओ ताहाके पाइले छाड़िते चान ना। कथाटा ताँर बैठके उठिल। मेयेर चेये मेयेर बापेर खबरटाइ ताँहार काछे गुरुतर। बापेर अवस्था तिनि येमनटि चान तेमनि। एक काले इँहादेर वंशे लक्ष्मीर मङ्गलघट भरा छिल। एखन ताहा शून्य बलिलेइ हय, अथच तलाय सामान्य किछु बाकि आछे। देशे वंशमर्यादा राखिया चला सहज नय बलिया इनि पश्चिमे गिया वास करितेछेन। सेखाने गरिब गृहस्थेर मतोइ थाकेन। एकटि मेये छाड़ा ताँर आर नाइ। सुतरां ताहारइ पश्चाते लक्ष्मीर घटटि एकेबारे उपुड़ करिया दिते द्विधा हइबे ना।

ए-सब भालो कथा। किन्तु, मेयेर वयस ये पनेरो, ताइ शुनिया मामार मन भार हइल। वंशे तो कोनो दोष नाइ? ना, दोष नाइ—बाप कोथाओ ताँर मेयेर योग्य वर खुँजिया पान ना। एके तो वरेर हाट महार्घ, ताहार परे धनुक-भाङा पण, काजेइ बाप केवलइ सबुर करितेछेन—किन्तु मेयेर वयस सबुर करितेछे ना।

याइ होक, हरिशेर सरस रसनार गुण आछे। मामार मन नरम हइल। विवाहेर भूमिका-अंशटा निर्विघ्ने समाधा हइया

आलोछाया—धूपछाँह। **कथाटा...देखो**—बात उठा कर देखो।

आसर—मजलिस, बैठक। छाड़िते—छोड़ना। काछे—निकट। **बलिलेइ हय**—कहा जा सकता है। तलाय—तले में। **बलिया**—इस कारण। **मतोइ**—तरह ही। छाड़ा—अतिरिक्त। उपुड़...दिते—औंधा देने में।

पनेरो—पन्द्रह। महार्घ—महँगी। **धनुक-भाङा**—धनुष-भंग। **पण**—प्रण। **काजेइ**—इसीलिए। **सबुर**—सब्र। **समाधा**—सम्पन्न।

गेल। कलिकातार बाहिरे बाकि ये पृथिवीटा आछे समस्तटाकेइ मामा आण्डामान द्वीपेर अन्तर्गत बलिया जानेन। जीवने एकबार विशेष काजे तिनि कोन्नगर पर्यन्त गियाछिलेन। मामा यदि मनु हइतेन तवे तिनि हावड़ार पुल पार हओयाटाके ताँहार संहिताय एकेबारे निषेध करिया दितेन। मनेर मध्ये इच्छा छिल, निजेर चोखे मेये देखिया आसिब। साहस करिया प्रस्ताव करिते पारिलाम ना।

कन्याके आशीर्वाद करिबार जन्य याहाके पाठानो हइल से आमादेर विनुदादा, आमार पिस्‌ततो भाइ। ताहार मत रुचि एवं दक्षतार 'परे आमि षोलो-आना निर्भर करिते पारि। विनुदा फिरिया आसिया बलिलेन, "मन्द नय हे! खाँटि सोना बटे!"

विनुदादार भाषाटा अत्यन्त आँट। येखाने आमरा बलि 'चमत्कार' सेखाने तिनि बलेन 'चलनसइ'। अतएव बुझिलाम, आमार भाग्ये प्रजापतिर सङ्गे पञ्चशरेर कोनो विरोध नाइ।

२

बला बाहुल्य, विवाह-उपलक्षे कन्यापक्षकेइ कलिकाताय आसिते हइल। कन्यार पिता शम्भुनाथबाबु हरिशके कत विश्वास करेन ताहार प्रमाण एइ ये, विवाहेर तिन दिन पूर्वे तिनि आमाके प्रथम चक्षे देखेन एवं आशीर्वाद करिया यान। वयस ताँर चल्लिशेर किछु ए पारे वा ओ पारे। चुल काँचा,

---

चोखे—आँखों से।

करिबार जन्य—करने के लिए। पिस्‌ततो भाइ—फुफेरा भाई। षोलो—सोलह। मन्द—बुरी। खाँटि—खरा, विशुद्ध।

आँट—चुस्त, कसी हुई। चमत्कार—बढ़िया। चलनसइ—कामचलाऊ, बहुत अच्छी भी नहीं बुरी भी नहीं।

बला बाहुल्य—अधिक क्या कहना। आसिते हइल—आना पड़ा। एइ ये—यह है। चल्लिशेर—चालीस के। एपारे...पारे—इस पार या उस पार। चुल काँचा—काले बाल।

गोँफे पाक धरिते आरम्भ करियाछे मात्र। सुपुरुष बटे। भिड़ेर मध्ये देखिले सकलेर आगे ताँर उपरे चोख पड़िबार मतो चेहारा।

आशा करि, आमाके देखिया तिनि खुशि हइयाछिलेन। बोझा शक्त, केनना तिनि बड़ोइ चुपचाप। ये दुटि-एकटि कथा बलेन येन ताहाते पुरा जोर दिया बलेन ना। मामार मुख तखन अनर्गल छुटितेछिल—धने माने आमादेर स्थान ये शहरेर कारओ चेये कम नय, सेइटेकेइ तिनि नाना प्रसङ्गे प्रचार करितेछिलेन। शम्भुनाथबाबु ए कथाय एकेबारे योगइ दिलेन ना—कोनो फाँके एकटा हुँ वा हाँ किछुइ शोना गेल ना। आमि हइले दमिया याइताम। किन्तु मामाके दमानो शक्त। तिनि शम्भुनाथबाबुर चुपचाप भाव देखिया भाबिलेन लोकटा नितान्त निर्जीव, एकेबारे कोनो तेज नाइ। बेहाइ-सम्प्रदायेर आर याइ थाक्, तेज थाकाटा दोषेर, अतएव मामा मने-मने खुशि हइलेन। शम्भुनाथबाबु यखन उठिलेन तखन मामा संक्षेपे उपर हइतेइ ताँके बिदाय करिलेन, गाड़िते तुलिया दिते गेलेन ना।

पण सम्बन्धे दुइ पक्षे पाकापाकि कथा ठिक हइया गियाछिल। मामा निजेके असामान्य चतुर बलियाइ अभिमान करिया थाकेन। कथावार्ताय कोथाओ तिनि किछु फाँक राखेन नाइ। टाकार अंक तो स्थिर छिलइ, तार परे गहना कत भरिर एवं सोना कत दरेर हइबे सेओ एकेबारे बाँधाबाँधि हइया गियाछिल। आमि निजे

गोँफे...करियाछे—मूछों के बाल पकने लगे हैं। भिड़ेर—भीड़ में। चोख... मतो—नजर पड़ने (दृष्टि को आकर्षित करने) लायक।

बोझा शक्त—समझना मुश्किल है। केनना—क्योंकि। कथा—बात। अनर्गल छुटितेछिल—अबाधरूप से चल रहा था। कारओ चेये—किसी की अपेक्षा। कोनो फाँके—किसी बात के बीच में। दमिया याइताम—निरुत्साहित (चुप) हो जाता। भाबिलेन—सोचा। बेहाइ—समधी। आर... थाक—और चाहे जो हो। तुलिया दिते—चढ़ाने।

पण—दहेज। पाकापाकि कथा—पक्की बात। फाँक—व्यवधान, गुंजाइश। भरिर—तोले के। कत दरेर—किस मूल्य का। बाँधाबाँधि—तय, निश्चित।

ए-समस्त कथार मध्ये छिलाम ना; जानिताम ना देना-पाओना की स्थिर हइल। मने जानिताम, एइ स्थूल अंशटाओ विवाहेर एकटा प्रधान अंश, एवं से अंशेर भार याँर उपरे तिनि एक कड़ाओ ठकिवेन ना। वस्तुत, आश्चर्य पाका लोक वलिया मामा आमादेर समस्त संसारेर प्रधान गर्वेर सामग्री। येखाने आमादेर कोनो सम्वन्ध आछे सेखाने सर्वत्रइ तिनि बुद्धिर लड़ाइये जितिवेन, ए एकेवारे धरा कथा। एइजन्य आमादेर अभाव ना थाकिलेओ एवं अन्य पक्षेर अभाव कठिन हइलेओ जितिव, आमादेर संसारेर एइ जेद—इहाते ये वाँचुक आर ये मरुक।

गाये-हलुद असम्भव रकम धुम करिया गेल। वाहक एत गेल ये ताहार आदम-सुमारि करिते हइले केरानि राखिते हय। ताहादिगके विदाय करिते अपर पक्षके ये नाकाल हइते हइवे, सेइ कथा स्मरण करिया मामार सङ्गे मा एकयोगे विस्तर हासिलेन।

व्याण्ड, वाँशि, शखेर कन्सर्ट् प्रभृति येखाने यतप्रकार उच्च शब्द आछे समस्त एक सङ्गे मिशाइया वर्वर कोलाहलेर मत्त हस्ती द्वारा संगीतसरस्वतीर पद्मवन दलित विदलित करिया आमि तो विवाह-वाड़िते गिया उठिलाम। आंटिते हारेते जरि-जहराते आमार शरीर येन गहनार दोकान निलामे चड़ियाछे वलिया वोध हइल। ताँहादेर भावी जामाइयेर मूल्य कत सेटा येन कतक परिमाणे सर्वाङ्गे स्पष्ट करिया लिखिया भावी श्वशुरेर सङ्गे मोकाविला करिते चलियाछिलाम।

देना-पाओना—लेन-देन। एक...ठकिवेन ना—(कौड़ी भर) रंच मात्र भी ठगाई में नहीं आएंगे। पाका लोक—चतुर व्यक्ति। धरा कथा—मानी हुई वात। जेद—जिद।

गाये-हलुद—हल्दी चढ़ाने की रस्म। रकम—प्रकार से। धुम...गेल—धूमधाम से निवट गई। आदम-सुमारि—मर्दुमशुमारी। केरानि—क्लर्क (अं०)। ताहादिगके—उन्हें। नाकाल—हैरान। एकयोगे—मिल कर। विस्तर—खूब।

शखेर—फैंसी, शौकिया। यतप्रकार—जितने प्रकार के। मिशाइया—मिला कर। आंटिते हारेते—अँगूठियों और हारों से। जहराते—जवाहरातों से। वलिया...हइल—ऐसा लगा। कतक—कुछ।

मामा विवाह-बाड़िते ढुकिया खुशि हइलेन ना। एके तो उठानटाते वरयात्रीदेर जायगा संकुलान हओयाइ शक्त, ताहार परे समस्त आयोजन नितान्त मध्यम रकमेर। इहार परे शम्भुनाथ-बावुर व्यवहारटाओ नेहात ठाण्डा। ताँर विनयटा अजस्र नय। मुखे तो कथाइ नाइ। कोमरे चादर बाँधा, गला भाङा, टाक-पड़ा, मिश-कालो एवं विपुल-शरीर ताँर एकटि उकिल बन्धु यदि नियत हात जोड़ करिया, माथा हेलाइया, नम्रतार स्मितहास्ये ओ गद्‌गद वचने कन्सर्ट् पार्टिर करताल-बाजिये हइते शुरु करिया वरकर्तादेर प्रत्येकके बार बार प्रचुररूपे अभिषिक्त करिया ना दितेन तबे गोड़ातेइ एकटा एस्‌पार-ओस्‌पार हइत।

आमि सभाय बसिबार किछुक्षण परेइ मामा शम्भुनाथबावुके पाशेर घरे डाकिया लइया गेलेन। की कथा हइल जानि ना, किछुक्षण परेइ शम्भुनाथबाबु आमाके आसिया बलिलेन, "बाबाजि, एकबार एइ दिके आसते हच्छे।"

व्यापारखाना एइ।—सकलेर ना हउक, किन्तु कोनो कोनो मानुषेर जीवनेर एकटा किछु लक्ष्य थाके। मामार एकमात्र लक्ष्य छिल, तिनि कोनोमतेइ कारओ काछे ठकिबेन ना। ताँर भय ताँर बेहाइ ताँके गहनाय फाँकि दिते पारेन—विवाहकार्य शेष हइया गेले से फाँकिर आर प्रतिकार चलिबे ना। बाड़िभाड़ा सओगाद लोकबिदाय प्रभृति सम्बन्धे येरकम टानाटानिर परिचय

ढुकिया—प्रविष्ट हो कर। **उठानटाते**—आँगन में। **संकुलान**—पर्याप्त। **ताहार परे**—तिस पर। **कथाइ**—बात ही। **गला भाङा**—बैठा हुआ गला। **टाक-पड़ा**—केशहीन मस्तक, चँदला। **मिश-कालो**—काले-स्याह। **उकिल**—वकील। **बन्धु**—मित्र। **माथा**—सिर। **हेलाइया**—एक ओर झुका कर। **हइते**—से। **बाजिये**—वादक। **वरकर्तादेर**—वर (पक्ष) के प्रधान व्यक्तियों को। **गोड़ातेइ**—आरम्भ में ही।

परेइ—बाद ही। **पाशेर...गेलेन**—बगल के कमरे में बुला ले गए। **बाबाजि**—बेटा।

व्यापारखाना—मामला। **कोनोमतेइ**—किसी प्रकार भी। **ठकिबेन ना**—ठगे नहीं जाएंगे। **बेहाइ**—समधी। **फाँकि**—धोखा। **सओगाद**—सौगात। **टानाटानिर**—खींचतान का।

पाओया गेछे ताहाते मामा ठिक करियाछिलेन—देओया-थोओया सम्वन्धे ए लोकटिर शुधु मुखेर कथार उपर भर करा चलिवे ना। सेइजन्य वाड़िर स्याक्‌राके सुद्ध सङ्गे आनियाछिलेन। पाशेर घरे गिया देखिलाम, मामा एक तक्तपोषे एवं स्याक्‌रा ताहार दाँड़िपाल्ला कष्टिपाथर प्रभृति लइया मेजेय वसिया आछे।

शम्भुनाथवावु आमाके वलिलेन, "तोमार मामा वलितेछेन विवाहेर काज शुरु हइवार आगेइ तिनि कनेर समस्त गहना याचाइ करिया देखिबेन, इहाते तुमि की वल।"

आमि माथा हेँट करिया चुप करिया रहिलाम।

मामा वलिलेन, "ओ आवार की वलिवे। आमि या वलिब ताइ हइबे।"

शम्भुनाथबावु आमार दिके चाहिया कहिलेन, "सेइ कथा तबे ठिक? उनि या बलिवेन ताइ हइबे? ए सम्बन्धे तोमार किछुइ बलिवार नाइ?"

आमि एकटु घाड़-नाड़ार इङ्गिते जानाइलाम, ए-सब कथाय आमार सम्पूर्ण अनधिकार।

"आच्छा तबे वोसो, मेयेर गा हइते समस्त गहना खुलिया आनितेछि।" एइ बलिया तिनि उठिलेन।

मामा वलिलेन, "अनुपम एखाने की करिबे। ओ सभाय गिया बसुक।"

शम्भुनाथ बलिलेन, "ना, सभाय नय, एखानेइ बसिते हइबे।"

किछुक्षण परे तिनि एकखाना गामछाय बाँधा गहना आनिया

शुधु—केवल। भर करा—निर्भर, विश्वास करके। स्याक्‌राके सुद्ध—सुनार तक को। तक्तपोषे—तख्त पर। दाँड़िपाल्ला—काँटा-तराजू। कष्टिपाथर—कसौटी, निकष। मेजेय—फर्श पर।

कनेर—कन्या के। याचाइ करिया—परख कर। माथा...करिया—सिर झुका कर। आवार—और। चाहिया—ताक कर।

घाड़-नाड़ार—(गर्दन) सिर हिला कर। कथाय—बातों में। तबे बोसो—फिर बैठो। मेयेर...हइते—लड़की के शरीर पर से। एखाने—यहाँ। बसुक—बैठे। गामछाय—अँगोछे में। आनिया—ला कर।

तक्तपोषेर उपर मेलिया धरिलेन। समस्तइ ताँहार पितामहीदेर आमलेर गहना—हाल फ्याशानेर सूक्ष्म काज नय—येमन मोटा तेमनि भारी।

स्याक्रा गहना हाते तुलिया लइया बलिल, "ए आर देखिब की। इहाते खाद नाइ—एमन सोना एखनकार दिने व्यवहारइ हय ना।"

एइ बलिया से मकरमुखा मोटा एकखाना बालाय एकटु चाप दिया देखाइल ताहा बाँकिया याय।

मामा तखनि ताँर नोटबइये गहनागुलिर फर्द टुकिया लइलेन, पाछे याहा देखानो हइल ताहार कोनोटा कम पड़े। हिसाब करिया देखिलेन, गहना ये परिमाण दिबार कथा एगुलि संख्याय दरे एवं भारे तार अनेक बेशि।

गहनागुलिर मध्ये एक जोड़ा एयारिं छिल। शम्भुनाथ सेइटे स्याक्रार हाते दिया बलिलेन, "एइटे एकबार परख करिया देखो।"

स्याक्रा कहिल, "इहा विलाति माल, इहाते सोनार भाग सामान्यइ आछे।"

शम्भुबाबु एयारिजोड़ा मामार हाते दिया बलिलेन, "एटा आपनाराइ राखिया दिन।"

मामा सेटा हाते लइया देखिलेन, एइ इयारिं दियाइ कन्याके ताँहारा आशीर्वाद करियाछिलेन।

मेलिया—खोल कर। **आमलेर**—ज़माने के। **हाल फ्याशानेर**—आधुनिक फैशन का।

स्याक्रा—सुनार। **तुलिया लइया**—उठा कर। **खाद**—मिलावट।

मकरमुखा—मकराकृति। **बालाय**—वलय, कंगन में। **एकटु.... दिया**—जरा-सा दबा कर। **बाँकिया याय**—टेढ़ा हो जाता है। **नोटबइये**—नोटबुक में। **फर्द**—सूची। **टुकिया लइलेन**—टाँक ली। **पाछे**—ऐसा न हो कि। **दिबार कथा**—देने की बात। **दरे**—मूल्य में। **बेशि**—अधिक। **बिलाति**—विलायती। **आपनाराइ**—आप (लोग) ही। **दियाइ**—द्वारा ही।

मामार मुख लाल हइया उठिल। दरिद्र ताँहाके ठकाइते चाहिबे किन्तु तिनि ठकिबेन ना एइ आनन्द-सम्भोग हइते वञ्चित हइलेन एवं ताहार उपरेओ किछु उपरि-पाओना जुटिल। अत्यन्त मुख भार करिया बलिलेन, "अनुपम, याओ, तुमि सभाय गिया बोसो गे।"

शम्भुनाथबाबु बलिलेन, "ना, एखन सभाय बसिते हइबे ना। चलुन, आगे आपनादेर खाओयाइया दिइ।"

मामा बलिलेन, "से की कथा। लग्न—"

शम्भुनाथबाबु बलिलेन, "सेजन्य किछु भाबिबेन ना—एखन उठुन।"

लोकटि नेहात भालोमानुष-धरणेर, किन्तु भितरे बेश एकटु जोर आछे बलिया बोध हइल। मामाके उठिते हइल। बरयात्रदेरओ आहार हइया गेल। आयोजनेर आडम्बर छिल ना। किन्तु रान्ना भालो एवं समस्त बेश परिष्कार परिच्छन्न बलिया सकलेरइ तृप्ति हइल।

बरयात्रदेर खाओया शेष हइले शम्भुनाथबाबु आमाके खाइते बलिलेन। मामा बलिलेन, "से की कथा। विवाहेर पूर्बे बर खाइबे केमन करिया।"

ए सम्बन्धे मामार कोनो मतप्रकाशके तिनि सम्पूर्ण उपेक्षा करिया आमार दिके चाहिया बलिलेन, "तुमि की बल। बसिया याइते दोष किछु आछे?"

मूर्तिमती मातृ-आज्ञा-स्वरूपे मामा उपस्थित, ताँर विरुद्धे चला आमार पक्षे असम्भव। आमि आहारे बसिते पारिलाम ना।

ठकाइते चाहिबे—ठगना चाहेगा। हइते—से। उपरि-पाओना—प्राप्य के अतिरिक्त, फाजिल। बोसो गे—जा कर बैठो।

से की कथा—यह कैसी बात। भाबिबेन ना—चिंता न करें। एखन—अब। धरणेर—ढंग का। बेश—अच्छा। रान्ना भालो—रसोई अच्छा (बनी थी)।

खाओया...हइले—भोजन समाप्त हो जाने पर। केमन करिया—क्यों कर। चाहिया—ताक कर। की बल—क्या कहते हो। बसिते...ना—न बैठ सका।

तखन शम्भुनाथबाबु मामाके बलिलेन, "आपनादिगके अनेक कष्ट दियाछि। आमरा धनी नइ, आपनादेर योग्य आयोजन करिते पारि नाइ, क्षमा करिबेन। रात हइया गेछे, आर आपनादेर कष्ट बाड़ाइते इच्छा करि ना। एखन तबे—"

मामा बलिलेन, "ता, सभाय चलुन, आमरा तो प्रस्तुत आछि।"

शम्भुनाथ बलिलेन, "तबे आपनादेर गाड़ि बलिया दिइ ?"

मामा आश्चर्य हइया बलिलेन, "ठाट्टा करितेछेन नाकि।"

शम्भुनाथ कहिलेन, "ठाट्टा तो आपनिइ करिया सारियाछेन। ठाट्टार सम्पर्कटाके स्थायी करिबार इच्छा आमार नाइ।"

मामा दुइ चोख एत बड़ो करिया मेलिया अवाक हइया रहिलेन।

शम्भुनाथ कहिलेन, "आमार कन्यार गहना आमि चुरि करिब ए कथा यारा मने करे तादेर हाते आमि कन्या दिते पारि ना।"

आमाके एकटि कथा बलाओ तिनि आवश्यक बोध करिलेन ना। कारण, प्रमाण हइया गेछे, आमि केहइ नइ।

तार परे या हइल से आमि बलिते इच्छा करि ना। झाड़-लण्ठन भाङिया-चुरिया, जिनिसपत्र लण्डभण्ड करिया, वरयात्रेर दल दक्षयज्ञेर पाला सारिया बाहिर हइया गेल।

बाड़ि फिरिबार समय व्याण्ड रसनचौकि ओ कन्सर्ट एकसङ्गे बाजिल ना एवं अभ्रेर झाड़गुलो आकाशेर तारार उपर आपनादेर कर्तव्येर बरात दिया कोथाय ये महानिर्वाण लाभ करिल सन्धान पाओया गेल ना।

आपनादिगके—आप लोगों को। **करिते...नाइ**—नहीं कर सके। **एखन तबे**—तो फिर अब। **आमरा**—हम लोग। **बलिया दिइ**—कह दूं। **ठाट्टा**—परिहास। **नाकि**—क्या। **सारियाछेन**—समाप्त कर दिया है। **चोख**—आँख। **मेलिया**—खोल कर। **ए कथा...करे**—जो लोग यह बात सोचते हों। **कथा बलाओ**—बात करना भी। **केहइ नइ**—कोई नहीं हूँ। **तार परे**—तदुपरान्त। **झाड़लण्ठन**—झाड़-फानूस। **भाङिया-चुरिया**—तोड़-फोड़ कर। **जिनिसपत्र**—चीज़वस्त। **लण्डभण्ड करिया**—उलट-पुलट कर। **पाला सारिया**—क्रम निवटा कर। **रसनचौकि**—शहनाई। **बरात दिया**—दायित्व सौंप कर।

३

बाड़िर सकले तो रागिया आगुन। कन्यार पितार एत गुमर! कलि ये चारपोया हइया आसिल! सकले बलिल, 'देखि मेयेर विये देन केमन करिया।' किन्तु, मेयेर विये हइवे ना ए भय यार मने नाइ तार शास्तिर उपाय की।

समस्त बांलादेशेर मध्ये आमिइ एकमात्र पुरुष याहाके कन्यार बाप विवाहेर आसर हइते निजे फिराइया दियाछे। एत बड़ो सत्पात्रेर कपाले एत बड़ो कलङ्केर दाग कोन् नष्टग्रह एत आलो ज्वालाइया, वाजना वाजाइया, समारोह करिया आँकिया दिल? बरयात्ररा एइ बलिया कपाल चापड़ाइते लागिल ये, 'विवाह हइल ना अथच आमादेर फाँकि दिया खाओयाइया दिल—पाक-यन्त्रटाके समस्त अन्नसुद्ध सेखाने टान मारिया फेलिया दिया आसिते पारिले तबे आफ्सोस मिटित।'

'विवाहेर चुक्तिभङ्ग ओ मानहानिर दाविते नालिश करिब' बलिया मामा अत्यन्त गोल करिया बेड़ाइते लागिलेन। हितैषीरा बुझाइया दिल, ताहा हइले तामाशार येटुकु बाकि आछे ताहा पुरा हइवे।

बला बाहुल्य, आमिओ खुब रागियाछिलाम। कोनो गतिके शम्भुनाथ विषम जब्द हइया आमादेर पाये धरिया आसिया

रागिया आगुन—क्रोध से आग-बबूला हो गए। गुमर—गर्व, दिमाग। चारपोया हइया—चारों चरण टेक कर। देखि...करिया—देखें, लड़की का विवाह कैसे करते हैं। शास्तिर—दण्ड का।

आसर हइते—महफिल (मण्डप) से। कपाले—भाग्य में। आलो—प्रकाश, रोशनी। बाजना वाजाइया—बाजे बजा कर। आँकिया दिल—अंकित कर दिया। बरयात्ररा...लागिल ये—बराती यह कह कर माथा ठोकने लगे कि। फाँकि दिया—धोखे से। अन्नसुद्ध—अन्न समेत। टान मारिया—खींच कर।

चुक्तिभङ्ग—शर्त-भंग। दाविते—अभियोग में। गोल...लागिलेन—चीख़-पुकार मचाते हुए घूमने लगे। बुझाइया दिल—समझा दिया। येटुकु—जितना-भर (अंश)।

बला बाहुल्य—अधिक क्या कहना। रागियाछिलाम—क्रोधित हुआ था। कोनो गतिके—किसी तरह से। जब्द हइया—परेशान हो कर।

पड़ेन, गोँफेर रेखाय ता दिते दिते एइटेइ केवल कामना करिते लागिलाम।

किन्तु, एइ आक्रोशेर कालो रङेर स्रोतेर पाशापाशि आर-एकटा स्रोत बहितेछिल येटार रङ एकेबारेइ कालो नय। समस्त मन ये सेइ अपरिचितार पाने छुटिया गियाछिल—एखनो ये ताहाके किछुतेइ टानिया फिराइते पारि ना। देयालटुकुर आड़ाले रहिया गेल गो। कपाले तार चन्दन आँका, गाये तार लाल शाड़ि, मुखे तार लज्जार रक्तिमा, हृदयेर भितरे की ये ता केमन करिया बलिब। आमार कल्पलोकेर कल्पलताटि वसन्तेर समस्त फुलेर भार आमाके निवेदन करिया दिबार जन्य नत हइया पड़ियाछिल। हाओया आसे, गन्ध पाइ, पातार शब्द शुनि—केवल आर एकटिमात्र पा फेलार अपेक्षा—एमन समये सेइ एक पदक्षेपेर दूरत्वटुकु एक मुहूर्ते असीम हइया उठिल।

एतदिन ये प्रति सन्ध्याय आमि बिनुदादार बाड़िते गिया ताँहाके अस्थिर करिया तुलियाछिलाम ! बिनुदार वर्णनार भाषा अत्यन्त संकीर्ण बलियाइ ताँर प्रत्येक कथाटि स्फुलिङ्गेर मतो आमार मनेर माझखाने आगुन ज्वालिया दियाछिल। बुझियाछिलाम मेयेटिर रूप बड़ो आश्चर्य; किन्तु ना देखिलाम ताहाके चोखे ना देखिलाम तार छवि, समस्तइ अस्पष्ट हइया रहिल। बाहिरे तो से धरा दिलइ ना, ताहाके मनेओ आनिते पारिलाम

गोँफेर—मूछों की। **ता...दिते**—ताव देते देते।

पाशापाशि—निकट ही। **एकेबारेइ**—बिल्कुल ही। **पाने...गियाछिल**—ओर दौड़ गया था। **टानिया**—खींच कर। **देयालटुकुर आड़ाले**—सिर्फ दीवार की ओट में। **कपाले**—माथे पर। **गाये**—शरीर पर। **भार**—समूह। **करिया...जन्य**—कर देने के लिए। **आर**—और। **पा फेलार**—कदम बढ़ाने की। **दूरत्वटुकु**—तनिक-सी दूरी।

बलियाइ—इसी कारण। **मतो**—समान। **माझखाने**—बीच। **आगुन**—अग्नि। **मेयेटिर**—लड़की का। **चोखे**—आंखों से। **छवि**—चित्र। **धरा दिलइ ना**—पकड़ाई नहीं ही आई। **मनेओ...पारिलाम ना**—मन (कल्पना) में भी न ला सका।

ना—एइजन्य मन सेदिनकार सेइ विवाहसभार देयालटार बाहिरे भूतेर मतो दीर्घनिश्वास फेलिया बेड़ाइते लागिल।

हरिशेर काछे शुनियाछि, मेयेटिके आमार फोटोग्राफ देखानो हइयाछिल। पछन्द करियाछे बइ-कि। ना करिबार तो कोनो कारण नाइ। आमार मन बले, से छवि तार कोनो-एकटि बाक्सेर मध्ये लुकानो आछे। एकला घरे दरजा बन्ध करिया एक-एकदिन निराला दुपुरबेलाय से कि सेटि खुलिया देखे ना। यखन झुँकिया पड़िया देखे तखन छविटिर उपरे कि तार मुखेर दुइ धार दिया एलोचुल आसिया पड़े ना। हठात् बाहिरे कारओ पायेर शब्द पाइले से कि ताड़ाताड़ि तार सुगन्ध आँचलेर मध्ये छविटिके लुकाइया फेले ना।

दिन याय। एकटा वत्सर गेल। मामा तो लज्जाय विवाहसम्बन्धेर कथा तुलितेइ पारेन ना। मार इच्छा छिल, आमार अपमानेर कथा यखन समाजेर लोके भुलिया याइबे तखन विवाहेर चेष्टा देखिबेन।

एदिके आमि शुनिलाम से मेयेर नाकि भालो पात्र जुटिया-छिल, किन्तु से पण करियाछे विवाह करिबे ना। शुनिया आमार मन पुलकेर आवेशे भरिया गेल। आमि कल्पनाय देखिते लागिलाम, से भालो करिया खाय ना; सन्ध्या हइया आसे, से चुल बाँधिते भुलिया याय। तार बाप तार मुखेर पाने चान आर भाबेन,

---

बेड़ाइते लागिल—भटकने लगा।

काछे—निकट। बइ-कि—(निश्चय सूचक) बेशक। लुकानो—छिपाई हुई। एकला...करिया—सूने कमरे में दरवाजा बन्द करके। निराला दुपुरबेलाय—निभृत, सुनसान दोपहर के समय। झुंकिया पड़िया—झुक कर। दुइ...चुल—दोनों ओर से खुले हुए केश। ताड़ाताड़ि—चटपट।

कथा...पारेन ना—बात उठा ही नहीं पाते। मार—माँ की। यखन—जब। लोके—लोग।

एदिके—इधर। मेयेर नाकि—लड़की को शायद। जुटियाछिल—मिल गया था। पण—प्रण। भालो करिया—अच्छी तरह से। चुल—केश। तार—उसके। मुखेर...भाबेन—मुख की ओर ताकते और सोचते।

वाहिरे रहिल समस्त पृथिवीर आर-सवाइ, आर भितरे प्रवेश करिल एकटिमात्र मानुष। तार परे? तार परे आमार कथाटि फुरालो।

४

किन्तु कथा एमन करिया फुराइल ना। येखाने आसिया ताहा अफुरान हइयाछे सेखानकार विवरण एकटुखानि वलिया आमार ए लेखा शेष करिया दिइ।

माके लइया तीर्थे चलियाछिलाम। आमार उपरेइ भार छिल। कारण, मामा एवारेओ हावड़ार पुल पार हन नाइ। रेलगाड़िते घुमाइतेछिलाम। झाँकानि खाइते खाइते माथार मध्ये नानाप्रकार एलोमेलो स्वप्नेर झुमझुमि वाजितेछिल। हठात् एकटा कोन् स्टेशने जागिया उठिलाम। आलोते अन्धकारे मेशा सेओ एक स्वप्न। केवल आकाशेर तारागुलि चिरपरिचित—आर सवइ अजाना अस्पष्ट; स्टेशनेर दीप-कयटा खाड़ा हइया दाँड़ाइया आलो धरिया एइ पृथिवीटा ये कत अचेना एवं याहा चारि दिके ताहा ये कतइ वहु दूरे ताहाइ देखाइया दितेछे। गाड़िर मध्ये मा घुमाइतेछेन; आलोर नीचे सवुज पर्दा टाना; तोरङ्ग वाक्स जिनिसपत्र समस्तइ के कार घाड़े एलोमेलो हइया रहियाछे, ताहारा

फुरालो—समाप्त हो गई।

एमन करिया—इस प्रकार। येखाने—जहाँ। अफुरान—अशेष, अनन्त। सेखानकार—वहाँ (उस स्थल) का। एकटुखानि बलिया—कुछ थोड़ा-सा कह कर। लेखा—रचना। शेष—समाप्त।

एवारेओ—इस वार भी। घुमाइतेछिलाम—सो रहा था। झाँकानि... मध्ये—हिचकोले खाते-खाते दिमाग में। एलोमेलो—मिले-जुले। झुमझुमि—झुनझुना। मेशा—मिश्रित। अजाना—अपरिचित। दीप-कयटा—कतिपय दीप। अचेना—वेपहचानी। याहा—जो। ताहा—वह। सवुज...टाना—हरा पर्दा पड़ा हुआ है। तोरङ्ग...जिनिसपत्र—टीन का वक्स एवं चीज़-वस्त। घाड़े—(गर्दन) सिर पर। एलोमेलो—अस्त-व्यस्त।

येन स्वप्नलोकेर उलट-पालट आसबाब, सबुंज प्रदोषेर मिट्मिटे आलोते थांका एवं ना-थाकार मांझखाने केमन-एक रकम हइया पड़िया आछे।

एमन समये सेइ अद्भुत पृथिवीर अद्भुत रात्रे के बलिया उठिल, "शिग्गिर चले आय, एइ गाड़िते जायगा आछे।"

मने हइल, येन गान शुनिलाम। बाङालि मेयेर गलाय बांला कथा ये की मधुर ताहा एमनि करिया असमये अजायगाय आचम्का शुनिले तबे सम्पूर्ण बुझिते पारा याय। किन्तु, एइ गलाटिके केवलमात्र मेयेर गला बलिया एकटा श्रेणीभुक्त करिया देओया चले ना, ए केवल एकटि-मानुषेर गला; शुनिलेइ मन बलिया ओठे, 'एमन तो आर शुनि नाइ।'

चिरकाल गलार स्वर आमार काछे बड़ो सत्य। रूप जिनिसटि बड़ो कम नय, किन्तु मानुषेर मध्ये याहा अन्तरतम एवं अनिर्वचनीय, आमार मने हय, कण्ठस्वर येन तारइ चेहारा। आमि ताड़ाताड़ि गाड़िर जानला खुलिया बाहिरे मुख बाड़ाइया दिलाम; किछुइ देखिलाम ना। प्ल्याट्फर्मेर अन्धकारे दाँड़ाइया गार्ड् ताहार एकचक्षु लण्ठन नाड़िया दिल, गाड़ि चलिल; आमि जानलार काछे बसिया रहिलाम। आमार चोखेर सामने कोनो मूर्ति छिल ना, किन्तु हृदयेर मध्ये आमि एकटि हृदयेर रूप देखिते लागिलाम। से येन एइ तारामयी रात्रिर मतो, आवृत करिया धरे किन्तु ताहाके धरिते पारा याय ना। ओगो सुर, अचेना

प्रदोषेर—रात्रि के। **थाका.....मांझखाने**—होने और न होने के बीच।

एमन समये—इसी समय। **गाड़िते**—डिब्बे में। **जायगा**—जगह।

मने हइल—ऐसा लगा। **येन**—मानो। **मेयेर गलाय**—लड़की के (गले) मुंह से। **बांला कथा**—बँगला बोल। **अजायगाय**—बे-ठौर। **आचम्का**—हठात्। **बुझिते...याय**—समझा जा सकता है। **बलिया**—कह कर।

जिनिसटि—वस्तु। **ताड़ाताड़ि**—जल्दी से। **जानला**—जंगला। **लण्ठन... दिल**—(लालटेन) बत्ती हिला दी। **काछे**—निकट। **चोखेर**—आंखों के। **ओगो**—(सम्बोधनसूचक शब्द)।

कण्ठेर सुर, एकनिमिषे तुमि ये आमार चिरपरिचयेर आसनटिर उपरे आसिया वसियाछ। की आश्चर्य परिपूर्ण तुमि—चञ्चल कालेर क्षुब्ध हृदयेर उपरे फुलटिर मतो फुटियाछ, अथच तार ढेउ लागिया एकटि पापड़िओ टले नाइ, अपरिमेय कोमलताय एतटुकु दाग पड़े नाइ।

गाड़ि लोहार मृदङ्गे ताल दिते दिते चलिल; आमि मनेर मध्ये गान शुनिते शुनिते चलिलाम। ताहार एकटिमात्र धुया—'गाड़िते जायगा आछे।' आछे कि, जायगा आछे कि। जायगा ये पाओया याय ना, केउ ये काकेओ चेने ना। अथच सेइ ना-चेनाटुकु ये कुयाशामात्र, से ये माया, सेटा छिन्न हइलेइ ये चेनार आर अन्त नाइ। ओगो सुधामय सुर, ये हृदयेर अपरूप रूप तुमि, से कि आमार चिरकालेर चेना नय। जायगा आछे, आछे—शीघ्र आसिते डाकियाछ, शीघ्रइ आसियाछि, एक निमेषओ देरि करि नाइ।

रात्रे भालो करिया घुम हइल ना। प्राय प्रति स्टेशनेइ एकवार करिया मुख वाड़ाइया देखिलाम, भय हइते लागिल याहाके देखा हइल ना से पाछे रात्रेइ नामिया याय।

परदिन सकाले एकटा वड़ो स्टेशने गाड़ि वदल करिते हइबे। आमादेर फार्स्ट क्लासेर टिकिट—मने आशा छिल, भिड़ हइबे ना। नामिया देखि, प्ल्याट्फर्मे साहेवदेर आर्दालि-दल आसवावपत्र लइया गाड़िर जन्य अपेक्षा करितेछे। कोन्-एक फौजेर बड़ो जेनारेल-साहेव भ्रमणे वाहिर हइयाछेन। दुइ-तिन मिनिट परेइ गाड़ि आसिल। वुझिलाम, फार्स्ट् क्लासेर आशा त्याग करिते

मतो फुटियाछ—समान खिली हो। ढेउ—लहर। पापड़िओ...नाइ—पँखुड़ी तक नहीं हिली। एतटुकु—इतना-सा।

धुया—टेक। केउ...चेने ना—कोई किसी को नहीं पहचानता। कुयाशामात्र—कुहासा मात्र। भालो...घुम—अच्छी तरह से नींद। पाछे—ऐसा न हो कि। नामिया याय—उतर जाए। परदिन—अगले दिन। जन्य—लिए। अपेक्षा—प्रतीक्षा। परेइ—वाद ही। वुझिलाम—समझ गया।

हइवे। माके लइया कोन् गाड़िते उठि से एक विषम भावनाय पड़िलाम। सब गाड़ितेइ भिड़। द्वारे द्वारे उँकि मारिया वेड़ाइते लागिलाम। एमन समय सेकेण्ड् क्लासेर गाड़ि हइते एकटि मेये आमार माके लक्ष्य करिया बलिलेन, "आपनारा आमादेर गाड़िते आसुन-ना—एखाने जायगा आछे।"

आमि तो चमकिया उठिलाम। सेइ आश्चर्यमधुर कण्ठ एवं सेइ गानेरइ घुया—'जायगा आछे'। क्षणमात्र विलम्ब ना करिया माके लइया गाड़िते उठिया पड़िलाम। जिनिसपत्र तुलिबार प्राय समय छिल ना। आमार मतो अक्षम दुनियाय नाइ। सेइ मेयेटिइ कुलिदेर हात हइते ताड़ाताड़ि चलति गाड़िते आमादेर विछानापत्र टानिया लइल। आमार एकटा फोटोग्राफ तुलिबार क्यामेरा स्टेशनेइ पड़िया रहिल—ग्राह्यइ करिलाम ना।

तार परे—की लिखिब जानि ना। आमार मनेर मध्ये एकटि अखण्ड आनन्देर छबि आछे—ताहाके कोथाय शुरू करिब, कोथाय शेष करिब? बसिया बसिया वाक्येर पर वाक्य योजना करिते इच्छा करे ना।

एबार सेइ सुरटिके चोखे देखिलाम। तखनो ताहाके सुर वलियाइ मने हइल। मायेर मुखेर दिके चाहिलाम; देखिलाम ताँर चोखे पलक पड़ितेछे ना। मेयेटिर वयस षोलो कि सतेरो हइबे, किन्तु नवयौवन इहार देहे मने कोथाओ येन

उठि—चढ़ूं। **भावनाय पड़िलाम**—चिन्ता में पड़ गया। **उँकि...लागिलाम**—उझकते हुए भटकने लगा। **गाड़ि हइते**—डिब्बे से। **आपनारा**—आपलोग। **आसुन ना**—आइये न।

चमकिया उठिलाम—चौंक पड़ा। **घुया**—टेक। **तुलिवार**—चढ़ाने का। **मतो**—समान। **हात...ताड़ाताड़ि**—हाथों से जल्दी-जल्दी। **टानिया लइल**—खींच लिया। **तुलिबार**—खींचने का। **ग्राह्यइ करिलाम ना**—परवाह ही न की।

तार परे—तत्पश्चात्। **छबि**—चित्र। **कोयाय**—कहाँ (से)। **शेष**—समाप्त।

एबार सेइ—इस वार उस। **चोखे**—आँखों से। **चाहिलाम**—ताका। **षोलो**—सोलह। **सतेरो**—सत्रह। **इहार**—इसकी।

एकटुओ भार चापाइया देय नाइ। इहार गति सहज, दीप्ति निर्मल, सौन्दर्येर शुचिता अपूर्व, इहार कोनो जायगाय किछु जड़िमा नाइ।

आमि देखितेछि, विस्तारित करिया किछु बला आमार पक्षे असम्भव। एमन-कि, से ये की रङेर कापड़ केमन करिया परियाछिल ताहाओ ठिक करिया बलिते पारिब ना। एटा खुब सत्य ये, तार वेशे भूषाय एमन किछुइ छिल ना येटा ताहाके छाड़ाइया विशेष करिया चोखे पड़िते पारे। से निजेर चारि दिकेर सकलेर चेये अधिक—रजनीगन्धार शुभ्र मञ्जरीर मतो सरल वृन्तटिर उपरे दाँड़ाइया, ये गाछे फुटियाछे गाछके से एकेबारे अतिक्रम करिया उठियाछे। सङ्गे दुटि-तिनटि छोटो छोटो मेये छिल, ताहादिगके लइया ताहार हासि एवं कथार आर अन्त छिल ना। आमि हाते एकखाना बइ लइया से दिके कान पातिया राखियाछिलाम। येटुकु काने आसितेछिल से तो समस्तइ छेले-मानुषदेर सङ्गे छेलेमानुषि कथा। ताहार विशेषत्व एइ ये, ताहार मध्ये वयसेर तफात किछुमात्र छिल ना—छोटोदेर सङ्गे से अनायासे एवं आनन्दे छोटो हइया गियाछिल। सङ्गे कतकगुलि छविओयाला छेलेदेर गल्पेर बइ—ताहारइ कोन्-एकटा विशेष गल्प शोनाइबार जन्य मेयेरा ताहाके धरिया पड़िल। ए गल्प निश्चय तारा विश-पँचिश बार शुनियाछे। मेयेदेर केन ये एत आग्रह ताहा बुझिलाम। सेइ सुधाकण्ठेर सोनार काठिते सकल कथा ये सोना

भार....देय नाइ—बोझ नहीं डाला है। जड़िमा—जड़ता।

एमन कि—यहाँ तक कि। कापड़...परियाछिल—कैसी साड़ी पहनी थी। एटा—यह। छाड़ाइया—(पीछे) छोड़ कर। चेये—अपेक्षा। दाँड़ाइया—खड़े हो कर। गाछे फुटियाछे—पौधे पर खिली है। ताहादिगके—उन्हें। कथार—बातों का। बइ—पुस्तक। कान...राखियाछिलाम—कान लगा रखे थे। येटुकु—जो कुछ। छेलेमानुषदेर—बच्चों के। छेलेमानुषि कथा—बचपने की बातें। तफात—अन्तर। कतकगुलि... बइ—कुछेक बच्चों की कहानियों की सचित्र पुस्तकें। ताहारइ—उसी की। मेयेरा—लड़कियों ने। धरिया पड़िल—पकड़ लिया। बुझिलाम—समझ गया। सोनार काठिते—सोने की तीली से।

हइया ओठे। मेयेटिर समस्त शरीर मन ये एकेबारे प्राणे भरा, तार समस्त चलाय बलाय स्पर्शे प्राण ठिकरिया ओठे। ताइ मेयेरा यखन तार मुखे गल्प शोने तखन, गल्प नय, ताहाकेइ शोने; ताहादेर हृदयेर उपर प्राणेर झर्ना झरिया पड़े। तार सेइ उच्छ्वासित प्राण आमार सेदिनकार समस्त सूर्यकिरणके सजीव करिया तुलिल; आमार मने हइल, आमाके ये प्रकृति ताहार आकाश दिया वेष्टन करियाछे से ऐ तरुणीरइ अक्लान्त अम्लान प्राणेर विश्वव्यापी विस्तार। परेर स्टेशने पौँछितेइ खाबारओयालाके डाकिया से खुब खानिकटा चाना-मुठ किनिया लइल, एवं मेयेदेर सङ्गे मिलिया नितान्त छेलेमानुषेर मतो करिया कलहास्य करिते करिते असंकोचे खाइते लागिल। आमार प्रकृति ये जाल दिया बेड़ा—आमि केन बेश सहजे हासिमुखे मेयेटिर काछे एइ चाना एकमुठा चाहिया लइते पारिलाम ना। हात बाड़ाइया दिया केन आमार लोभ स्वीकार करिलाम ना।

मा भालो-लागा एवं मन्द-लागार मध्ये दोमना हइया छिलेन। गाड़िते आमि पुरुषमानुष, तबु इहार किछुमात्र संकोच नाइ, विशेषत एमन लोभीर मतो खाइतेछे, सेटा ठिक ताँर पछन्द हइतेछिल ना; अथच इहाके बेहाया बलियाओ ताँर भ्रम हय नाइ। ताँर मने हइल; ए मेयेर वयस हइयाछे किन्तु शिक्षा हय नाइ। मा हठात् कारओ सङ्गे आलाप करिते पारेन ना। मानुषेर सङ्गे दूरे दूरे थाकाइ ताँर अभ्यास। एइ मेयेटिर परिचय लइते ताँर खुब इच्छा, किन्तु स्वाभाविक बाधा काटाइया उठिते पारितेछिलेन ना।

बलाय—बोलने में। **ठिकरिया ओठे**—छिटक उठते हैं। **ताइ**—इसीसे। **मने हइल**—लगा। **परेर**—अगले। **पौँछितेइ**—पहुँचते ही। **डाकिया**—बुला कर। **चाना...लइल**—दाल-मोठ खरीद ली। **नितान्त**—बिल्कुल। **जाल दिया बेड़ा**—जाली से घिरी हुई। **बेश सहजे**—बहुत सहज (भाव से)। **काछे**—निकट से। **चाहिया**—माँग।

भालो—अच्छी। **मन्द**—बुरी। **दोमना**—दु-मना। **तबु**—फिर भी। **पछन्द**—पसन्द। **वयस हइयाछे**—सयानी हो गई है। **थाकाइ**—रहना ही।

एमन समये गाड़ि एकटा बड़ो स्टेशने आसिया थामिल। सेइ जेनारेल-साहेबेर एकदल अनुसङ्गी एइ स्टेशन हइते उठिबार उद्योग करितेछे। गाड़िते कोथाओ जायगा नाइ। बारबार आमादेर गाड़िर सामने दिया तारा घुरिया गेल। मा तो भये आड़ष्ट, आमिओ मनेर मध्ये शान्ति पाइतेछिलाम ना।

गाड़ि छाड़िबार अल्पकाल-पूर्वे एकजन देशी रेलोये कर्मचारी नाम-लेखा दुइखाना टिकिट गाड़िर दुइ बेञ्चेर शियरेर काछे लटकाइया दिया आमाके बलिल, "ए गाड़िर एइ दुइ बेञ्च आगे हइतेइ दुइ साहेब रिजार्भ् करियाछेन; आपनादिगके अन्य गाड़िते याइते हइबे।"

आमि तो ताड़ाताड़ि व्यस्त हइया दाँड़ाइया उठिलाम। मेयेटि हिन्दीते बलिल, "ना, आमरा गाड़ि छाड़िब ना।"

से लोकटि रोख करिया बलिल, "ना छाड़िया उपाय नाइ।"

किन्तु, मेयेटिर चलिष्णुतार कोनो लक्षण ना देखिया से नामिया गिया इंगरेज स्टेशन-मास्टारके डाकिया आनिल। से आसिया आमाके बलिल, "आमि दु:खित, किन्तु—"

शुनिया आमि 'कुलि कुलि' करिया डाक छाड़िते लागिलाम। मेयेटि उठिया दुइ चक्षे अग्निवर्षण करिया बलिल, "ना, आपनि याइते पारिबेन ना, येमन आछेन बसिया थाकुन।"

बलिया से द्वारेर काछे दाँड़ाइया स्टेशन-मास्टारके इंगरेजि भाषाय बलिल, "ए गाड़ि आगे हइते रिजार्भ करा, ए कथा मिथ्या कथा।"

एमन समये—इसी समय। उठिबार—चढ़ने का। कोथाओ—कहीं। आमादेर—हमारे। दिया—से। घुरिया गेल—घूम गए। आड़ष्ट—जड़।
दुइखाना—दो। शियरेर काछे—सिरहाने के पास। आगे हइतेइ—पहले से ही। आपनादिगके—आपलोगों को। ताड़ाताड़ि...उठिलाम—परेशान हो कर जल्दी से उठ खड़ा हुआ। आमरा—हमलोग।
रोख—रोष। उपाय नाइ—चारा नहीं। चलिष्णुतार—चलने का। नामिया गिया—उतर कर। डाकिया आनिल—बुला लाया।
याइते...ना—नहीं जा सकेंगे। येमन आछेन—जैसे हैं।
बलिया—कह कर।

बलिया नाम-लेखा टिकिटटि खुलिया प्ल्याटफर्मे छुँड़िया फेलिया दिल।

इतिमध्ये आर्दालि-समेत इउनिफर्म्-परा साहेब द्वारेर काछे आसिया दाँड़ाइयाछे। गाड़िते से तार आसबाब उठाइबार जन्य आर्दालिके प्रथमे इशारा करियाछिल। ताहार परे मेयेटिर मुखे ताकाइया, तार कथा शुनिया, भाव देखिया, स्टेशन-मास्टारके एकटु स्पर्श करिल एवं ताहाके आड़ाले लइया गिया की कथा हइल जानि ना। देखा गेल, गाड़ि छाड़िबार समय अतीत हइलेओ आर एकटा गाड़ि जुड़िया तबे ट्रेन छाड़िल। मेयेटि तार दलबल लइया आबार एकपत्तन चाना-मुठ खाइते शुरु करिल, आर आमि लज्जाय जानलार बाहिरे मुख बाड़ाइया प्रकृतिर शोभा देखिते लागिलाम।

कानपुरे गाड़ि आसिया थामिल। मेयेटि जिनिसपत्र बाँधिया प्रस्तुत—स्टेशने एकटि हिन्दुस्थानि चाकर छुटिया आसिया इहा-दिगके नामाइबार उद्योग करिते लागिल।

मा तखन आर थाकिते पारिलेन ना। जिज्ञासा करिलेन, "तोमार नाम की, मा।"

मेयेटि बलिल, "आमार नाम कल्याणी।"

शुनिया मा एवं आमि दुजनेइ चमकिया उठिलाम।

"तोमार बाबा—"

"तिनि एखानकार डाक्तार, ताँर नाम शम्भुनाथ सेन।"

तार परेइ सबाइ नामिया गेल।

नाम-लेखा—नाम लिखे हुए। **छुँड़िया...दिल**—फेंक दिए। **काछे**—पास। **उठाइबार जन्य**—चढ़ाने के लिए। **ताहार परे**—उसके बाद। **भाव देखिया**—रुख देख कर। **आड़ाले...गिया**—आड़ में ले जा कर। **छाड़िबार**—छूटने का। **एकपत्तन**—दौर, सिलसिला।

जिनिसपत्र—चीज-वस्त। **हिन्दुस्थानि**—हिन्दी भाषी। **छुटिया आसिया**—दौड़ते हुए आ कर। **इहादिगके नामाइबार**—इन्हें उतारने का। **थाकिते...ना**—रह न सकीं। **एखानकार**—यहाँ के। **तार...गेल**—उसके बाद सभी उतर गये।

उपसंहार

मामार निषेध अमान्य करिया, मातृ-आज्ञा ठेलिया, तार परे आमि कानपुरे आसियाछि। कल्याणीर बाप एवं कल्याणीर सङ्गे देखा हइयाछे। हात जोड़ करियाछि, माथा हेँट करियाछि; शम्भुनाथबाबुर हृदय गलियाछे। कल्याणी बले, "आमि विवाह करिब ना।"

आमि जिज्ञासा करिलाम, "केन।"

से बलिल, "मातृ-आज्ञा।"

की सर्वनाश! ए पक्षेओ मातुल आछे नाकि।

तार परे बुझिलाम, मातृभूमि आछे। सेइ विवाह-भाङार पर हइते कल्याणी मेयेदेर शिक्षार व्रत ग्रहण करियाछे।

किन्तु, आमि आशा छाड़िते पारिलाम ना। सेइ सुरटि ये आमार हृदयेर मध्ये आजओ बाजितेछे—से येन कोन् ओपारेर बाँशि—आमार संसारेर बाहिर हइते आसिल—समस्त संसारेर बाहिरे डाक दिल। आर, सेइ-ये रात्रिर अन्धकारेर मध्ये आमार काने आसियाछिल, 'जायगा आछे', से ये आमार चिरजीवनेर गानेर धुया हइया रहिल। तखन आमार वयस छिल तेइश, एखन हइयाछे साताश। एखनो आशा छाड़ि नाइ, किन्तु मातुलके छाड़ियाछि। नितान्त एक छेले बलिया मा आमाके छाड़िते पारेन नाइ।

तोमरा मने करितेछ, आमि विवाहेर आशा करि? ना,

माथा....करियाछि—सिर झुकाया है। मातुल—मामा।

बुझिलाम—समझा। भाङार....हइते—टूट जाने के बाद से।

छाड़िते....ना—छोड़ न सका। येन—मानो। ओपारेर—उस पार की। हइते—से। डाक दिल—पुकारा। धुया—टेक। नितान्त—केवल। छेले—लड़का। बलिया—इस कारण। छाड़िते...नाइ—छोड़ नहीं सकीं।

तोमरा...करितेछ—तुमलोग सोचते हो।

कोनो कालेइ ना। आमार मने आछे, केवल सेइ एक रात्रिर अजाना कण्ठेर मधुर सुरेर आशा—जायगा आछे। निश्चयइ आछे। नइले दाँड़ाब कोथाय ? ताइ वत्सरेर पर वत्सर याय—आमि एइखानेइ आछि। देखा हय, सेइ कण्ठ शुनि, यखन सुविधा पाइ किछु तार काज करिया दिइ—आर मन बले, एइ तो जायगा पाइयाछि। ओगो अपरिचिता, तोमार परिचयेर शेष हइल ना, शेष हइबे ना; किन्तु भाग्य आमार भालो, एइ तो आमि जायगा पाइयाछि।

अक्तूबर-नवम्बर, १९१३

नइले—अन्यथा। दाँड़ाब—खड़ा होऊंगा। ताइ—इसीसे। एइखानेइ—यहीं। देखा—मिलना। ओगो—(सम्बोधनसूचक शब्द) अरी। शेष—अन्त। भालो—अच्छा।

पात्र ओ पात्री

इतिपूर्व प्रजापति कखनो आमार कपाले बसेन नि वटे, किन्तु एकवार आमार मानसपद्मे वसेछिलेन। तखन आमार वयस षोलो। तार परे, काँचा घुमे चमक लागिये दिले येमन घुम आर आसते चाय ना, आमार सेइ दशा हल। आमार वन्धु-वान्धवरा केउ केउ दारपरिग्रह-व्यापारे द्वितीय, एमन-कि, तृतीय पक्षे प्रोमोशन पेलेन; आमि कौमार्येर लास्ट् वेञ्चिते बसे शून्य संसारेर कड़िकाठ गणना करे काटिये दिलुम।

आमि चोद्द वछर वयसे एन्ट्रेन्स पास करेछिलुम। तखन विवाह किम्वा एन्ट्रेन्स परीक्षाय वयसविचार छिल ना। आमि कोनोदिन पड़ार वइ गिलि नि, सेइजन्ये शारीरिक वा मानसिक अजीर्ण रोगे आमाके भुगते हय नि। इँदुर येमन दाँत वसावार जिनिस पेलेइ सेटाके केटे-कुटे फेले, ता सेटा खाद्यइ होक आर अखाद्यइ होक, शिशुकाल थेकेइ तेमनि छापार वइ देखलेइ सेटा पड़े फेला आमार स्वभाव छिल। संसारे पड़ार वइयेर चेये ना-पड़ार वइयेर संख्या ढेर वेशि, एइजन्ये आमार पुँथिर सौरजगते

पात्र ओ पात्री—वर-कन्या। प्रजापति...नि वटे—प्रजापति मेरे भाग्य पर कभी प्रसन्न नहीं हुए, यह ठीक है; प्रजापति—विवाह के देवता; तितली। षोलो—सोलह। तार परे—उसके बाद। काँचा...लागिये दिले—कच्ची नींद में चौंका देने पर: येमन—जैसे। आर...चाय ना—फिर आना नहीं चाहती। हल—हुई। केउ केउ—कोई-कोई। दारपरिग्रह—विवाह। एमन कि—यहाँ तक कि। तृतीय पक्षे—तीसरी बार (विवाह का)। बसे—बैठे हुए। संसारेर—घर-गृहस्थी की। कड़िकाठ—कड़ियाँ।

चोद्द वछर—चौदह बरस। वयसविचार—आयु का बन्धन। पड़ार..नि—पाठ्य-पुस्तक निगली नहीं, घोट कर पी नहीं। भुगते..नि—भुगतने, (कष्ट) सहने नहीं पड़े। इँदुर...पेलेइ—जैसे चूहा काटने लायक चीज को पाते ही। होक—हो। थेकेइ—से ही। पड़ार...ना पड़ार—पाठ्य पुस्तकों की अपेक्षा पाठ्य-क्रम के अतिरिक्त। ढेर वेशि—बहुत अधिक। एइजन्ये—इसीलिए।

स्कुल-पाठ्य पृथिवीर चेये वेस्कुल-पाठ्य सूर्य चोद्द लक्षगुणे वड़ो छिल। तवु, आमार संस्कृत पण्डित-मशायेर निदारुण भविष्यद्-वाणी सत्त्वेओ, आमि परीक्षाय पास करेछिलुम।

आमार वावा छिलेन डेपुटि म्याजिस्ट्रेट। तखन आमरा छिलेम सातक्षीराय किम्वा जाहानावादे किम्वा ऐरकम कोनो-एकटा जायगाय। गोड़ातेइ व'ले राखा भालो, देश काल एवं पात्र सम्वन्वे आमार एइ इतिहासे ये-कोनो स्पष्ट उल्लेख थाकवे तार सवगुलोइ सुस्पष्ट मिथ्या; याँदेर रसवोधेर चेये कौतूहल वेशि ताँदेर ठकते हवे। वावा तखन तदन्ते वेरियेछिलेन। मायेर छिल की-एकटा व्रत; दक्षिणा एवं भोजनव्यवस्थार जन्य ब्राह्मण ताँर दरकार। एइ रकम पारमार्थिक प्रयोजने आमादेर पण्डित-मशाय छिलेन मायेर प्रधान सहाय। एइजन्य मा ताँर काछे विशेष कृतज्ञ छिलेन, यदिच वावार मनेर भाव छिल ठिक तार उल्टो।

आज आहारान्ते दानदक्षिणार ये व्यवस्था हल तार मध्ये आमिओ तालिकाभुक्त हलुम। से पक्षे ये आलोचना हयेछिल तार मर्मटा एइ।—आमार तो कलकाताय कलेजे यावार समय हल। एमन अवस्थाय पुत्रविच्छेददुःख दूर करवार जन्ये एकटा सदुपाय अवलम्वन करा कर्तव्य। यदि एकटि शिशुवधू मायेर कोलेर काछे थाके तवे ताके मानुष क'रे, यत्न क'रे, ताँर दिन

मशायेर—महाशय की। सत्त्वेओ—वावजूद।

वावा—पिता। आमरा छिलेम—हमलोग (रहते) थे। ऐरकम—उसी तरह की। गोड़ातेइ—आरम्भ में ही। भालो—अच्छा। सवगुलोइ—सभी कुछ। चेये—अपेक्षा। ठकते हवे—ठगे जाएँगे। तदन्ते वेरियेछिलेन—तहकीकात के लिए निकले थे। जन्य—लिए। दरकार—आवश्यकता (थी)। एइ रकम—इसी प्रकार। काछे—निकट, प्रति। यदिच—यद्यपि।

तार मध्ये—उसमें। पक्षे—सम्वन्ध में। आलोचना—चर्चा। मायेर...काछे—माँ की गोद के निकट। मानुष क'रे—पालन-पोषण करके। यत्न क'रे—देख-भाल करके।

काटते पारे। पण्डित-मशायेर मेये काशीश्वरी एइ काजेर पक्षे उपयुक्त—कारण, से शिशुओ वटे, सुशीलाओ वटे, आर कुलशास्त्रेर गणिते तार सङ्गे आमार अङ्के अङ्के मिल। ता छाड़ा ब्राह्मणेर कन्यादायमोचनेर पारमार्थिक फलओ लोभेर सामग्री।

मायेर मन विचलित हल। मेयेटिके एकवार देखा कर्तव्य एमन आभास देवामात्र पण्डित-मशाय वलले़न, ताँर 'परिवार' काल रात्रेइ मेयेटिके निये वासाय एसे पौँचेछेन। मायेर पछन्द हते देरि हल ना; केनना, रुचिर सङ्गे पुण्येर वाटखारार योग हओयाते सहजेइ ओजन भारि हल। मा वललेन, मेयेटि सुलक्षणा—अर्थात् यथेष्ट परिमाण सुन्दरी; ना हलेओ सान्त्वनार कारण आछे।

कथाटा परम्पराय आमार काने उठल। ये पण्डित-मशायेर धातुरूपके वरावर भय करे एसेछि ताँरइ कन्यार सङ्गे आमार विवाहेर सम्वन्ध—एरइ विसदृशता आमार मनके प्रथमेइ प्रवल वेगे आकर्षण करले। रूपकथार गल्पेर मतो हठात् सुवन्त-प्रकरण येन तार समस्त अनुस्वार-विसर्ग झेड़े फेले एकेवारे राजकन्या हये उठल।

एकदिन विकेले मा ताँर घरे आमाके डाकिये वललेन, "सनु, पण्डित-मशायेर वासा थेके आम आर मिष्टि एसेछे, खेये देख्।"

मेये—लड़की। पक्षे—लिए। वटे—है। ता छाड़ा—इसके अतिरिक्त। कन्यादायमोचनेर—कन्या को व्याह देने के दायित्व से मुक्त होने का।

देवामात्र—देते (पाते) ही। परिवार—पत्नी। मेयेटिके...पौँचेछेन—लड़की को ले कर घर आ पहुँची हैं। पछन्द—पसन्द। केनना—क्यों कि। वाटखारार—वाटों का। ओजन—वज़न।

परम्पराय—क्रमशः, होते-होते। एरइ—इसी की। रूपकथार... मतो—परियों की कहानी की तरह। झेड़े फेले—झाड़ कर। एकेवारे—विल्कुल।

विकेले—अपराह्न में। डाकिये—वुला कर। वासा थेके—घर से।

भालो लागत। आमार आविर्भाव विश्वेर कोनो-एकटा जायगाय कोनो-एकटा आकारे खुब एकटा प्रबल प्रभाव सञ्चार करे, एइ जैव-रासायनिक तथ्यटा आमार काछे बड़ो मनोरम छिल। आमाके देखेओ ये केउ भय करे वा लज्जा करे, वा कोनो एकटा-किछु करे, सेटा बड़ो अपूर्व। काशीश्वरी तार पालानोर द्वाराइ आमाके जानिये येत, जगतेर मध्ये से विशेषभावे सम्पूर्णभावे एवं निगूढ़भावे आमारइ।

एतकालेर अकिञ्चित्करता थेके हठात् एक मुहूर्ते एमन एकान्त गौरवेर पद लाभ क'रे किछुदिन आमार माथार मध्ये रक्त झाँझाँ करते लागल। बाबा येरकम माके कर्तव्येर वा रन्धनेर वा व्यवस्थार त्रुटि निये सर्वदा व्याकुल करे तुलेछेन, आमिओ मने मने तारइ छविर उपरे दागा बुलोते लागलुम। बाबार अनभिप्रेत कोनो-एकटा लक्ष्य साधन करबार समय मा येरकम सावधाने नानाप्रकार मनोहर कौशले काज उद्धार करतेन आमि कल्पनाय काशीश्वरीकेओ सेइ पथे प्रवृत्त हते देखलुम। माझे माझे मने मने ताके अकातरे एवं अकस्मात् मोटा अङ्केर व्याङ्कनोट थेके आरम्भ क'रे हीरेर गयना पर्यन्त दान करते आरम्भ करलुम। एक-एकदिन भात खेते ब'से तार खाओयाइ हल ना एवं जानलार धारे ब'से आँचलेर खुँट दिये से चोखेर जल मुचछे एइ करुण दृश्यओ आमि मनश्चक्षे देखते पेलुम, एवं एटा ये आमार काछे अत्यन्त शोचनीय बोध हल ता बलते पारि ने।

भालो—अच्छी। जैव—जीव सम्बन्धी। काछे—निकट। केउ—कोई। पालानो द्वाराइ—पलायन के द्वारा ही।

थेके—से। माथार मध्ये—सिर में। झाँझाँ..लागल—झनझनाने लगा। बाबा—पिता। येरकम—जिस प्रकार। करे तुलेछेन—कर रखा है। दागा...लागलुम—(आदर्श रेखाओं पर) कलम चला कर हाथ साधने, अनुकरण करने लगा। काज...करितेन—काम निकाल लेती थीं। माझे माझे—बीच-बीच मे। गयना—गहना। खेते ब'से—खाने बैठ कर। जानालार धारे—जंगले के किनारे। दिये—से। चोखेर...मुचछे—आँखों का पानी पोंछ रही है। ता...पारि ने—ऐसा नहीं कह सकता।

छोटो छेलेदेर आत्मनिर्भरतार सम्बन्धे बाबा अत्यन्त बेशि सतर्क छिलेन। निजेर घर ठिक करा, निजेर कापड़चोपड़ राखा, समस्तइ आमाके निजेर हाते करते हत। किन्तु आमार मनेर मध्ये गार्हस्थ्येर ये चित्रगुलि स्पष्ट रेखाय जेगे उठल, तार मध्ये एकटि नीचे लिखे राखछि। बला बाहुल्य, आमार पैतृक इतिहासे ठिक एइ रकम घटनाइ पूर्वे एकदिन घटेछिल; एइ कल्पनार मध्ये आमार ओरिजिन्यालिटि किछुइ नेइ। चित्रटि एइ—रविवारे मध्याह्न-भोजनेर पर आमि खाटेर उपर बालिशे ठेसान दिये पा छड़िये आध-शोओया अवस्थाय खबरेर कागज पड़छि। हाते गुड़गुड़िर नल। ईषत् तन्द्रावेशे नलटा नीचे पड़े गेल। बारान्दाय बसे काशीश्वरी बोबाके कापड़ दिच्छिल, आमि ताके डाक दिलुम; से ताड़ाताड़ि छुटे एसे आमार हाते नल तुले दिले। आमि ताके बललुम, 'देखो, आमार बसबार घरेर बाँ दिकेर आलमारिर तिनेर थाके एकटा नील रङेर मलाट-देओया मोटा इंराजि बइ आछे, सेइटे निये एसो तो।' काशी एकटा नील रङेर बइ एने दिले; आमि बललुम, 'आः, एटा नय; से एर चेये मोटा, आर तार पिठेर दिके सोनालि अक्षरे नाम लेखा।' एबारे से एकटा सबुज रङेर बइ आनले—सेटा आमि धपास् करे मेझेर उपर फेले दिये रेगे उठे पड़लुम। तखन काशीर मुख

छेलेदेर—लड़कों की। बेशि—अधिक। घर—कमरा। कापड़चोपड़—कपड़े-लत्ते। बला बाहुल्य—अधिक क्या कहना। एइरकम—इसी प्रकार की। पर—बाद। बालिशे...छड़िये—तकिए का सहारा लेकर पाँव फैला कर। आध-शोओया—अध-लेटी। खबरेर कागज—अखबार। गुड़गुड़िर नल—हुक्के की सटक। बोबाके—बोबी को। डाक दिलुम—पुकारा। ताड़ाताड़ि ..एसे—झटपट दौड़ती हुई आ कर। तुले दिल—पकड़ा दी। बसबार...दिकेर—बैठक (के कमरे) में बाँयीं ओर की। तिनेर थाके—तीसरे खाने में। मलाट देओया—कवर चढ़ाई हुई। बइ—पुस्तक। सेइटे...तो—वह ले आओ तो। एने दिले—ला दी। एर चेये—इसकी अपेक्षा। पिठेर दिके—पुश्त पर। सोनालि—सुनहरी। एबारे—इस बार। सबुज—हरे। बइ आनले—पुस्तक ले आई। धपास् करे—धम से। मेझेर उपर—फर्श पर। रेगे...पड़लुम—क्रुद्ध हो उठा।

एतटुकु हये गेल एवं तार चोख छल्छल् करे उठल। आमि गिये देखलुम, तिनेर शेल्फे बइटा नेइ, सेटा आछे पाँचेर शेल्फे। बइटा हाते करे निये एसे निःशब्दे बिछानाय शुलुम, किन्तु काशीके भुलेर कथा किछु बललुम ना। से माथा हेँट करे विमर्ष हये धोबाके कापड़ दिते लागल एवं निर्बुद्धितार दोषे स्वामीर विश्रामे व्याघात करेछे, एइ अपराध किछुतेइ भुलते पारले ना।

बाबा डाकाति तदन्त करछेन, आर आमार एइभाबे दिन याच्छे। ए दिके आमार सम्बन्धे पण्डित-मशायेर व्यवहार आर भाषा एक मुहूर्ते कर्तृवाच्य थेके भाववाच्ये एसे पौँछल एवं सेटा निरतिशय सद्भाववाच्य।

एमन समय डाकाति तदन्त शेष हये गेल, बाबा घरे फिरे एलेन। आमि जानि, मा आस्ते आस्ते समय निये घुरिये फिरिये बाबार विशेष प्रिय तरकारि-रान्नार सङ्गे-सङ्गे एकटु एकटु करे सइये सइये कथाटाके पाड़बेन बले प्रस्तुत हये छिलेन। बाबा पण्डित-मशायके अर्थलुब्ध ब'ले घृणा करतेन; मा निश्चयइ प्रथमे पण्डित-मशायेर मृदुरकम निन्दा अथच ताँर स्त्री ओ कन्यार प्रचुर रकमेर प्रशंसा करे कथाटार गोड़ापत्तन करतेन। किन्तु, दुर्भाग्यक्रमे पण्डित-मशायेर आनन्दित प्रगल्भताय कथाटा चारि दिके छड़िये गियेछिल। विवाह ये पाका, दिनक्षण देखा चलछे,

---

एतटुकु—इतना-सा। चोख—आँखें। गिये—जा कर। तिनेर—तीसरे। पाँचेर—पाँचवे। हाते...एसे—हाथ मे उठा ला कर। शुलुम—लेट गया। भुलेर कथा—गलती (की बात)। माथा...करे—सिर झुका कर। धोबाके—धोबी को। भुलते...ना—भूल न सकी।

बाबा—पिता। डाकाति—डकैती। तदन्त—तहकीकात। एइभाबे....याच्छे—यों ही दिन बीत रहे हैं। ए दिके—इस ओर। मशायेर—महाशय का। एसे पौँछल—आ पहुँची। सेटा—वह।

एमन—ऐसे। शेष—समाप्त। फिरे एलेन—लौट आए। घुरिये फिरिये—घुमा-फिरा कर। रान्ना—राँधने के। एकटु...करे—थोड़ा थोड़ा कर। सइये सइये—बरदाश्त कराते हुए। कथाटाके...बले—बात उठाएंगी यह मान कर। ताँर—उनकी। गोड़ापत्तन करतेन—आरम्भ करती। चारि...गियेछिल—चारों ओर फैल गई थी। पाका—पक्का।

ए कथा तिनि काउके जानाते बाकि राखेन नि। एमन-कि, विवाहकाले सेरेस्तादार बाबुर पाका दालानटि कयदिनेर जन्ये ताँर प्रयोजन हबे, यथास्थाने से आलोचनाओ तिनि सेरे रेखेछेन। शुभकर्मे सकलेइ ताँके यथासाध्य साहाय्य करते सम्मत हयेछे। बाबार आदालतेर उकिलेर दल चाँदा करे विवाहेर व्यय वहन करतेओ राजि। स्थानीय एन्ट्रेन्स स्कुलेर सेक्रेटारि वीरेश्वर-बाबुर तृतीय छेले तृतीय क्लासे पड़े, से चाँद ओ कुमुदेर रूपक अवलम्बन करे एरइ मध्ये विवाह-सम्बन्धे त्रिपदी छन्दे एकटा कविता लिखेछे। सेक्रेटारिबाबु सेइ कविताटा निये रास्ताय घाटे याके पेयेछेन ताके धरे धरे शुनियेछेन। छेलेटिर सम्बन्धे ग्रामेर लोक खुब आशान्वित हये उठेछे।

सुतरां, फिरे एसेइ बाहिरे थेकेइ बाबा शुभसंवाद शुनते पेलेन। तार परे मायेर कान्ना एवं अनाहार, बाड़िर सकलेर भीतिविह्वलता, चाकरदेर अकारण जरिमाना, एज्लासे प्रबल वेगे मामला डिस्मिस एवं प्रचण्ड तेजे शास्तिदान, पण्डित-मशायेर पदच्युति एवं राङता-जड़ानो वेणी-सह काशीश्वरीके निये ताँर अन्तर्धान—एवं छुटि फुरोबार पूर्वेइ मातृसङ्ग थेके विच्छिन्न करे आमाके सबले कलकाताय निर्वासन। आमार मनटा फाटा फुटबलेर मतो चुपसे गेल—आकाशे आकाशे, हाओयार उपरे तार लाफालाफि एकेबारे बन्ध हल।

जानाते—बताना। एमन कि—यहाँ तक कि। कयदिनेर जन्ये—कुछ दिनों के लिए। आलोचनाओ—चर्चा भी। सेरे रेखेछेन—निवटा रखी है। उकिलेर—वकीलों का। चाँदा—चन्दा। एरइ मध्ये—इसी बीच। याके पेयेछेन—जिसको पाया। धरे धरे—पकड़-पकड़ कर। फिरे एसेइ—लौट कर आते ही। थेकेइ—से ही। तार परे—उसके बाद। कान्ना—रुदन। बाड़िर—घर के। शास्तिदान—दण्ड देना। राङता-जड़ानो—पन्नी लगी हुई। छुटि फुरोबार—छुट्टियाँ समाप्त होने के। फाटा—फटी (हुई)। मतो—समान। चुपसे गेल—पिचक गया। लाफालाफि—उछल-कूद। एकेबारे...हल—बिल्कुल बन्द हो गई।

२

आमार परिणयेर पथे गोड़ातेइ एइ विघ्न—तार परे आमार प्रति वारे वारेइ प्रजापतिर व्यर्थ-पक्षपात घटेछे। तार विस्तारित विवरण दिते इच्छा करि ने—आमार एइ विफलतार इतिहासेर संक्षिप्त नोट दुटो-एकटा रेखे याव। विश बछर वयसेर पूर्वेइ आमि पुरा दमे एम्० ए० परीक्षा पास करे चोखे चशमा परे एवं गोंफेर रेखाटाके ता देवार योग्य करे वेरिये एसेछि। वावा तखन रामपुरहाट किम्वा नोयाखालि किम्वा वारासत किम्वा ऐरकम कोनो-एकटा जायगाय। एतदिन तो शब्दसागर मन्थन करे डिग्रिरत्न पाओया गेल, एवार अर्थसागर-मन्थनेर पाला। वावा ताँर बड़ो वड़ो पेट्रन साहेवदेर स्मरण करते गिये देखलेन, ताँर सब चेये वड़ो सहाय यिनि तिनि परलोके, ताँर चेये जिनि किछु कम तिनि पेन्सन निये विलेते, यिनि आरओ कमजोरी तिनि पान्जावे वदल हयेछेन, आर यिनि वांलादेशे बाकि आछेन अधिकांश उमेदारकेइ उपक्रमणिकाय आश्वास देन किन्तु उपसंहारे सेटा संहरण करेन। आमार पितामह यखन डेपुटी छिलेन तखन मुरब्बिर बाजार एमन कषा छिल ना, ताइ तखन चाकरि थेके पेन्सन् एवं पेन्सन् थेके चाकरि एकइ वंशे खेया-पारापारेर मतो चलत। एखन दिन खाराप, ताइ वावा यखन उद्विग्न हये भावछिलेन ये ताँर वंशधर गभर्मेण्ट आपिसेर

गोड़ातेइ—आरम्भ में ही। तार परे—उसके वाद। प्रजापतिर— विवाह के देवता। रेखे याव—छोड़ जाऊंगा। विश बछर—वीस वरस की। पुरा दमे—पूरी ताकत से। चोखे—आँखों पर। परे—पहन कर। गोंफेर—मूंछों की। ता—ताव। वेरिये एसेछि—निकल आया हूँ। बाबा—पिता। ऐरकम...जायगाय—उसी प्रकार की किसी (एक) जगह। एतदिन—इतने दिन। एवार—इस वार। पाला—वारी। ताँर—अपने। सव चेये—सव से। ताँर चेये—उनकी अपेक्षा। बिलेते—विलायत में। उमेदारकेइ—उम्मेदवारों की ही। संहरण—संहार। यखन—जव। तखन—तव। मुरब्बिर—सहायकों का। वाजार... कषा—वाजार इतना चढ़ा हुआ। थेके—से। खेया-पारापारेर मतो—खेई जाने वाली नौका, डोंगी के समान इस पार उस पार की तरह। खाराप—खराव। ताइ—इसी से। भावछिलेन—सोच रहे थे।

उच्च खाँचा थेके सओदागरि आपिसेर निम्न दाँड़े अवतरण करबे कि ना, एमन समय एक धनी ब्राह्मणेर एकमात्र कन्या ताँर नोटिशे एल। ब्राह्मणटि कन्ट्राक्टर, ताँर अर्थागमेर पथटि प्रकाश्य भूतलेर चेये अदृश्य रसातलेर दिक दियेइ प्रशस्त छिल। तिनि से समये बड़ोदिन उपलक्ष्ये कमलालेबु ओ अन्यान्य उपहार-सामग्री यथायोग्य पात्रे वितरण करते व्यस्त छिलेन, एमन समय ताँर पाड़ाय आमार अभ्युदय हल। बाबार बासा छिल ताँर बाड़िर सामनेइ, माझे छिल एक रास्ता। बला बाहुल्य, डेपुटिर एम्० ए० पास-करा छेले कन्यादायिकेर पक्षे खूब 'प्रांशुलभ्य फल'। एइजन्ये कन्ट्राक्टर बाबु आमार प्रति 'उद्बाहु' हये उठेछिलेन। ताँर बाहु आबूलिलम्बित छिल से परिचय पूर्वेइ दियेछि—अन्तत से बाहु डेपुटिबाबुर हृदय पर्यन्त अति अनायासे पौँछिल। किन्तु, आमार हृदयटा तखन आरओ अनेक उपरे छिल।

कारण, आमार वयस तखन कुड़ि पेरोय-पेरोय; तखन खाँटि स्त्रीरत्न छाड़ा अन्य कोनो रत्नेर प्रति आमार लोभ छिल ना। शुधु ताइ नय, तखनो भावुकतार दीप्ति आमार मने उज्ज्वल। अर्थात्, सहधर्मिणी शब्देर ये अर्थ आमार मने छिल से अर्थटा बाजारे चलित छिल ना। वर्तमान काले आमादेर देशे संसारटा चारि दिकेइ संकुचित; मननसाधनेर बेलाय मनके ज्ञान ओ भावेर उदार क्षेत्रे व्याप्त करे राखा आर व्यवहारेर बेलाय ताके सेइ संसारेर अति छोटो मापे कृश करे आना, ए आमि मने

खाँचा थेके—पिंजरे से। सओदागरि—सौदागरी। दाँड़े—(पालतू पक्षियों के बैठने का) डंडा, छतरी। दिक दियेइ—की ओर से ही। कमलालेबु—सन्तरा। पाड़ाय—मुहल्ले में। बासा—वास-स्थान। बाड़िर—घर के। माझे—बीच में। बला बाहुल्य—अधिक क्या कहना। छेले—लड़का। एइजन्ये—इसीलिए। पौँछिल—पहुँच गई। तखन—उस समय।

कुड़ि—बीस। पेरोय-पेरोय—पार होने-होने को। खाँटि—विशुद्ध। छाड़ा—अतिरिक्त। शुधु ताइ नय—केवल इतना ही नहीं। तखनो—तब भी। चलित—प्रचलित। देशे—प्रान्त में। चारि दिकेइ—चारों ओर से। बेलाय—समय पर। आर—और।

मनेओ सह्य करते पारतुम ना। ये स्त्रीके आइडियालेर पथे सङ्गिनी करते चाइ सेइ स्त्री घरकन्नार गारदे पायेर बेड़ि हये थाकबे एवं प्रत्येक चलाफेराय झङ्कार दिये पिछने टेने राखबे, एमन दुर्ग्रह आमि स्वीकार करे निते नाराज छिलुम। आसल कथा, आमादेर देशेर प्रहसने यादेर आधुनिक बले विद्रूप करे कलेज थेके टाटका बेरिये आमि सेइरकम निरवच्छिन्न आधुनिक हये उठेछिलुम। आमादेर काले सेइ आधुनिकेर दल एखनकार चेये अनेक बेशि छिल। आश्चर्य एइ ये तारा सत्यइ विश्वास करत ये, समाजके मेने चलाइ दुर्गति एवं ताके टेने चलाइ उन्नति।

ए-हेन आमि श्रीयुक्त सनत्कुमार, एकटि बलशाली कन्यादायिकेर टाकार थलिर हाँ-करा मुखेर सामने एसे पड़लुम। बाबा बललेन, शुभस्य शीघ्रम्। आमि चुप करे रइलुम; मने मने भावलुम, एकटु देखे-शुने बुझे-पड़े निइ। चोख कान खुले राखलुम—किछु परिमाण देखा एवं अनेकटा परिमाण शोना गेल। मेयेटि पुतुलेर मतो छोटो एवं सुन्दर—से ये स्वभावेर नियमे तैरि हयेछे ता ताके देखे मने हय ना—के येन तार प्रत्येक चुलटि पाट क'रे, तार भुरुटि एँके ताके हाते करे गड़े तुलेछे। से संस्कृतभाषाय गङ्गार स्तव आवृत्ति करे पड़ते पारे। तार मा

करते पारतुम ना—नहीं कर पाता था। **चाइ**—चाहता हूँ। **घरकन्नार गारदे**—घर-गृहस्थी के जेलखाने में। **थाकबे**—रहेगी। **टेने**—खींच कर। **दुर्ग्रह**—कुग्रह। **कथा**—बात। **विद्रूप**—उपहास। **थेके**—से। **टाटका बेरिये**—ताजा-ताजा, हाल में ही निकल कर। **सेइरकम**—उसी प्रकार। **निरवच्छिन्न**—परिपूर्ण। **चेये**—अपेक्षा। **बेशि**—अधिक। **मेने चलाइ**—मान कर चलना ही।

ए-हेन—ऐसा। **टाकार**—रुपयों की। **हाँ-करा मुखेर**—विस्फारित, खुले हुए मुँह वाली। **एसे पड़लुम**—आ पड़ा। **भावलुम**—सोचा। **एकटु**—तनिक। **बुझे...निइ**—समझ-बूझ लूँ। **चोख**—आँख। **शोना**—सुना। **पुतुलेर मतो**—गुड़िया की तरह। **तैरि**—तैयार। **ता**—वह। **के येन**—न जाने किसने। **चुलटि...करे**—केश को जमा-जमा कर। **भुरुटि एँके**—भौहों को आँक कर। **ताके...तुलेछे**—उसे (अपने) हाथों से गढ़ा है। **आवृत्ति...पारे**—(सस्वर) पाठ करते हुए पढ़ सकती है।

पाथुरे कयला पर्यन्त गङ्गार जले धुये तवे राँधेन; जीवधात्री वसुन्धरा नाना जातिके धारण करेन वले पृथिवीर संस्पर्श सम्बन्धे तिनि सर्वदाइ संकुचित; ताँर अधिकांश व्यवहार जलेरइ सङ्गे, कारण जलचर मत्स्यरा मुसलमान-वंशीय नय एवं जले पेँयाज उत्पन्न हय ना। ताँर जीवनेर सर्वप्रधान काज आपनार देहके गृहके कापड़चोपड़ हाँड़िकुँड़ि खाटपालङ वासनकोसनके शोधन एवं मार्जन करा। ताँर समस्त कृत्य समापन करते वेला अड़ाइटे हये याय। ताँर मेयेटिके तिनि स्वहस्ते सर्वांशे एमनि परिशुद्ध करे तुलेछेन ये तार निजेर मत वा निजेर इच्छा वले कोनो उत्पात छिल ना। कोनो व्यवस्थाय यत असुविधाइ होक, सेटा पालन करा तार पक्षे सहज हय यदि तार कोनो संगत कारण ताके वुझिये ना देओया याय। से खावार समय भालो कापड़ परे ना पाछे सक्ड़ि हय; से छाया सम्वन्धेओ विचार करते शिखेछे। से येमन पाल्किर भितरे वसेइ गङ्गा-स्नान करे, तेमनि अष्टादश पुराणेर मध्ये आवृत थेके संसारे चले फेरे। विधि-विधानेर 'परे आमारओ मायेर यथेष्ट श्रद्धा छिल, किन्तु ताँर चेये आरओ वेशि श्रद्धा ये आर-कारओ थाकवे एवं ताइ निये से मने मने गुमर करवे एटा तिनि सइते पारतेन ना। एइजन्ये आमि यखन ताँके वललुम, "मा, ए मेयेर योग्य पात्र आमि नइ", तिनि हेसे वललेन, "ना, कलियुगे तेमन पात्र मेला भार!"

पाथुरे कयला—पत्थर के कोयले। धुये—धो कर। वले—इस कारण। कापड़चोपड़—कपड़े-लत्ते। हाँड़िकुँड़ि—हाँड़ी और घड़े आदि। वासन-कोसन—बरतन-भाँड़े। वेला अड़ाइटे—ढाई का समय। मेयेटिके—लड़की को। करे तुलेछेन—बना दिया है। वले—नामक। वुझिये... याय—समझा न दिया जाय। खावार समय—(खाना) खाते समय। भालो...परे ना—अच्छी साड़ी नहीं पहनती। पाछे—ऐसा न हो कि। सक्ड़ि हय—सखरी हो (जाए)। येमन—जिस प्रकार। वसेइ—बैठ कर ही। तेमनि—उसी प्रकार। थेके—रह कर, हो कर। चले फेरे—चलती-फिरती है। वेशि—अधिक। ताइ निये—इसको ले कर। गुमर करवे—गर्व करेगी। एटा—यह। सइते...ना—बरदाश्त नहीं कर पाती थीं। हेसे—हँस कर। मेला भार—मिलना कठिन है।

आमि बललुम, "ता हले आमि बिदाय निइ।"

मा बललेन, "से की, सुनु, तोर पछन्द हल ना? केन, मेयेटिके तो देखते भालो।"

आमि बललुम, "मा, स्त्री तो केवल चेये चेये देखवार जन्ये नय, तार बुद्धि थाकाओ चाइ?"

मा बललेन, "शोनो एकवार! एरइ मध्ये तुइ तार कम बुद्धिर परिचय की पेलि।"

आमि वललुम, "बुद्धि थाकले मानुष दिनरात एइ-सब अनर्थक अकाजेर मध्ये बाँचतेइ पारे ना। हाँपिये मरे याय।"

मायेर मुख शुकिये गेल। तिनि जानेन, एइ विवाह सम्बन्धे बावा अपर पक्षे प्राय पाका कथा दियेछेन। तिनि आरओ जानेन ये, बाबा एटा प्राय भुले यान ये, अन्य मानुषेरओ इच्छे बले एकटा बालाइ थाकते पारे। वस्तुत, बाबा यदि अत्यन्त बेशि रागारागि जबर्दस्ति ना करतेन ता हले हयतो कालक्रमे ए पौराणिक पुतुलके विवाह करे आमिओ एकदिन प्रबल रोखे स्नान आह्निक एवं व्रत-उपवास करते करते गङ्गातीरे सद्गति लाभ करते पारतुम। अर्थात्, मायेर उपर यदि एइ विवाह देवार भार थाकत ता हले तिनि समय निये, अति धीर मन्द सुयोगे क्षणे क्षणे काने मन्त्र दिये, क्षणे क्षणे अश्रुपात क'रे, काज उद्धार करे निते पारतेन। बाबा यखन केवलइ तर्जन गर्जन करते लागलेन आमि ताँके मरिया

ता हले—तो। से की—यह क्या। तोर—तुझे। पछन्द—पसन्द। केन—क्यों। भालो—अच्छी। बललुम—कहा। चेये....देखबार—ताकते रहने के। थाकाओ—होनी, रहनी भी। शोनो—सुनो।

एरइ मध्ये—इसी बीच। तुइ—तूने। की पेलि—क्या पाया। बाँचतेइ.. ना—जिन्दा ही नहीं रह सकता। हाँपिये—हाँफते-हाँफते।

शुकिये गेल—सूख गया। तिनि—वे। बावा—पिता। पाका... दियेछेन—पक्का वचन दिया है। एटा—यह। बले—नामक। बालाइ—बला, मुसीबत। बेशि रागारागि—बहुत क्रुद्ध। हय तो—शायद। पुतुलके—गुड़िया से। रोखे—झोंक, जिद के कारण। करते पारतुम—कर पाता। विवाह देवार—ब्याह करा देने का। काज...पारतेन—काम निकाल ले जाती। मरिया—हताश।

हये वललुम, "छेलेवेला थेके खेते-शुते चलते-फिरते आमाके आत्म-निर्भरतार उपदेश दियेछेन, केवल विवाहेर वेलातेइ कि आत्मनिर्भर चलवे ना।" कलेजे लजिके पास करवार वेलाय छाड़ा न्याय-शास्त्रेर जोरे केउ कोनोदिन सफलता लाभ करेछे, ए आमि देखिनि। संगत युक्ति कुतर्केर आगुने कखनो जलेर मतो काज करे ना, वरञ्च तेलेर मतोइ काज करे थाके। वावा भेवे रेखेछेन, तिनि अन्य पक्षके कथा दियेछेन, विवाहेर औचित्य सम्वन्धे एर चेये वड़ो प्रमाण आर-किछुइ नेइ। अथच आमि यदि ताँके स्मरण करिये दितुम ये, पण्डित-मशायके माओ एकदिन कथा दियेछिलेन, तवु से कथाय शुधु ये आमार विवाह फेँसे गेल ता नय, पण्डित-मशायेर जीविकाओ तार सङ्गे सहमरणे गेल—ता हले एइ उपलक्षे एकटा फौजदारि वावत। वुद्धि विचार एवं रुचिर चेये शुचिता मन्त्रतन्त्र क्रियाकर्म ये ढेर भालो, तार कवित्व ये सुगभीर ओ सुन्दर, तार निष्ठा ये अति महत्, तार फल ये अति उत्तम, सिम्वलिजम्टाइ ये आइडियालिजम् ए कथा वावा आजकाल आमाके शुनिये शुनिये समये असमये आलोचना करेछेन। आमि रसनाके थामिये रेखेछि, किन्तु मनके तो चुप करिये राखते पारि नि। ये कथाटा मुखेर आगार काछे एसे फिरे येत सेटा हच्छे एइ ये, 'ए-सव यदि आपनि मानेन तवे पालवार वेलाय मुरगि पालेन केन।' आरओ एकटा कथा मने आसत; वावाइ एकदिन दिनक्षण पालपार्वण विधिनिषेध दानदक्षिणा निये ताँर

छेलेवेला थेके—वचपन से। शुते—सोते। लजिके—(अं०) लॉजिक, तर्क-शास्त्र में। छाड़ा—सिवा। आगुने—अग्नि में। मतो—समान। भेवे रेखेछेन—सोच रखा है। कथा दियेछेन—वचन दिया है। एर चेये—इसकी अपेक्षा। मशायके—महाशय को। तवु—फिर भी। शुधु—केवल। फेँसे गेल—टूट गया। वावित—आरम्भ हो जाती। चेये—अपेक्षा। ढेर भालो—वहुत अच्छे। आलोचना—चर्चा। थामिये रेखेछि—रोक रखा है। मुखेर...फिरे येत—(मुँह के अग्रभाग) ओठों तक आ कर लौट जाती थी। पालवार वेलाय—पालने की वेर। मुरगि—मुर्गी। पालपार्वण—व्रत-त्यौहार आदि। निये—ले कर।

असुविधा वा क्षति घटले माके कठोर भाषाय ए-सब अनुष्ठानेर पण्डता निये ताड़ना करेछेन। मा तखन दीनता स्वीकार क'रे, अबलाजाति स्वभावतइ अबुझ ब'ले माथा हेँट क'रे विरक्तिर धाक्काटा काटिये दिये ब्राह्मणभोजनेर विस्तारित आयोजने प्रवृत्त हयेछेन। किन्तु, विश्वकर्मा लजिकेर पाका छाँचे ढालाइ करे जीव सृजन करेन नि। अतएव कोनो मानुषेर कथाय वा काजे संगति नेइ ए कथा बले ताके बागिये नेओया याय ना, रागिये देओया हय मात्र। न्यायशास्त्रेर दोहाइ पाड़ले अन्यायेर प्रचण्डता बेड़े ओठे—यारा पोलिटिकाल वा गार्हस्थ्य अयाजिटेशने श्रद्धावान तादेर ए कथाटा मने राखा उचित। घोड़ा यखन तार पिछनेर गाड़िटाके अन्याय मने क'रे तार उपरे लाथि चालाय तखन अन्यायटा तो थेकेइ याय, माझेर थेके तार पा'केओ जखम करे। यौवनेर आवेगे अल्प एकटुखानि तर्क करते गिये आमार सेइ दशा हल। पौराणिकी मेयेटिर हात थेके रक्षा पाओया गेल बटे, किन्तु बाबार आधुनिक युगेर तहबिलेर आश्रयओ खोओयालुम। बाबा बललेन, "याओ, तुमि आत्मनिर्भर करो गे।"

आमि प्रणाम करे बललुम, "ये आज्ञे।"

मा बसे बसे काँदते लागलेन।

बाबार दक्षिण-हस्त विमुख हल बटे, किन्तु माझखाने मा थाकाते

पण्डता—निष्फलता, व्यर्थता। अबुझ ब'ले—निर्बोध है इसलिए। माथा... क'रे—सिर नीचा करके। विरक्तिर—उदासीनता के। पाका...करे—पक्के फर्मे, साँचे में ढाल कर। वा—अथवा। बागिये...याय ना—वश में नहीं किया जा सकता। रागिये...मात्र—(उसे) सिर्फ गुस्सा दिलाया जा सकता है। दोहाइ पाड़ले—दुहाई देने पर। बेड़े ओठे—बढ़ जाती है। यारा—जो लोग। लाथि चालाय—लात चलाता है। थेकेइ याय—रह ही जाता है। माझेर थेके—बीच से, ऊपर से। हल—हुई। मेयेटिर...थेके—लड़की (के हाथों) से। रक्षा...बटे—जान तो बची। बाबार—पिता के। तहबिलेर—तहवील, नकद जमा-जथा का। खोओया-लुम—गँवा दिया। गे—(सम्बोधनसूचक शब्द)।

ये आज्ञे—जो आज्ञा। काँदते लागलेन—रोने लगीं। माझखाने... थाकाते—बीच में माँ के रहने से।

क्षणे क्षणे मानि-अर्डारेर पेयादार देखा पाओया येत। मेघ वर्षण वन्ध करे दिले, किन्तु गोपने स्निग्ध रात्रे शिशिरेर अभिषेक चलते लागल। तारइ जोरे व्यावसा शुरू करे दिलुम। ठिक ऊन-आशि टाका दिये गोड़ापत्तन हल। आज सेइ कारबारे ये मूलधन खाटछे ता ईर्षाकातर जनश्रुतिर चेये अनेक कम हलेओ, विश लक्ष टाकार चेये कम नय।

प्रजापतिर पेयादारा आमार पिछन पिछन फिरते लागल। आगे ये-सव द्वार वन्ध छिल एखन तार आर आगल रइल ना। मने आछे, एकदिन यौवनेर दुर्निवार दुराशाय एकटि षोडशीर प्रति (वयसेर अङ्कटा एखनकार निष्ठावान पाठकदेर भये किछु सहनीय करे वललुम) आमार हृदयके उन्मुख करेछिलुम; किन्तु खवर पेयेछिलुम कन्यार मातृपक्ष लक्ष्य करे आछेन सिविलियानेर प्रति-अन्तत व्यारिस्टारेर नीचे ताँर दृष्टि पौँछय ना। आमि ताँर मनोयोग-मीटरेर जिरो-पयेण्टेर नीचे छिलुम। किन्तु, परे सेइ घरेइ अन्य एकदिन शुधु चा नय, लाञ्च खेयेछि, रात्रे-डिनारेर पर मेयेदेर सङ्गे हुइस्ट खेलेछि, तादेर मुखे बिलेतेर एकेवारे खास महलेर इंरेजि भाषार कथावार्ता शुनेछि। आमार मुशकिल एइ ये, र्‍यासेलस् डेजार्टेड भिलेज एवं अ्याडिसन् स्टील प'ड़े आमि इंरिजि पाकियेछि, एइ मेयेदेर सङ्गे पाल्ला देओया

पेयादार देखा—प्यादे, डाकिये के दर्शन। वन्ध—वन्द। शिशिरेर—ओस का। तारइ जोरे—उसी के वल पर। व्यावसा—व्यवसाय। ऊन-आशि—उनासी। टाका दिये—रुपयों से। गोड़ापत्तन हल—आरम्भ हुआ। खाटछे—लगा हुआ है। चेये—अपेक्षा।

प्रजापतिर—विवाह के देवता। पिछन पिछन—पीछे-पीछे। आगे—पहले। एखन—अव। आगल...ना—कुंडी, वाधा न रही। मने आछे—(मुझे) याद है। पाठकदेर—पाठकों के। ताँर—उनकी। पौँछय ना—नहीं पहुँचती। मनोयोग—ध्यान। जिरो—(अं०) जीरो, शून्य। परे—वाद में। शुधु चा—केवल चाय। मेयेदेर—लड़कियों के। हुइस्ट—(अं०) ह्विस्ट, ताश का एक खेल। एकेवारे—विल्कुल। खास महलेर—विल्कुल अपनी, ठेठ। इंरेजि—अँग्रेजी। कथावार्ता—वातचीत। र्‍यासेलस्—रासेलस। पाकियेछि—पक्की की है, माँजी है। पाल्ला देओया—प्रतियोगिता करना।

आमार कर्म नय। O my, O dear O dear प्रभृति उद्भावनगुलो आमार मुख दिये ठिक सुरे वेरोतेइ चाय ना। आमार यतटुकु विद्या ताते आमि अत्यन्त हाल इंरेजि भाषाय वड़ोजोर हाटे-वाजारे केना-वेचा करते पारि, किन्तु विंशशताब्दीर इंरेजिते प्रेमालाप करार कथा मने करले आमार प्रेमइ दौड़ मारे। अथच एदेर मुखे वांलाभाषार येरकम दुर्भिक्ष ताते एदेर सङ्गे खाँटि वङ्किमि सुरे मधुरालाप करते गेले ठकते हवे। ताते मजुरि पोषावे ना। ता याइ होक्, एइ-सव विलिति-गिल्टि-करा मेये एकदिन आमार पक्षे सुलभ हयेछिल। किन्तु, रुद्ध दरजार फाँकेर थेके ये मायापुरी देखेछिलुम दरजा यखन खुलल तखन आर तार ठिकाना पेलुम ना। तखन आमार केवल मने हते लागल, सेइ-ये आमार व्रतचारिणी निरर्थक नियमेर निरन्तर पुनरावृत्तिर पाके अहोरात्र घुरे घुरे आपनार जड़वुद्धिके तृप्त करत, एइ मेयेराओ ठिक सेइ वुद्धि नियेइ विलिति चालचलन आदवकायदाय समस्त तुच्छातितुच्छ उपसर्गगुलिके प्रदक्षिण क'रे दिनेर पर दिन, वत्सरेर पर वत्सर, अनायासे अक्लान्तचित्ते काटिये दिच्छे। ताराओ येमन छोँया ओ नाओयार लेशमात्र स्खलन देखले अश्रद्धाय कण्टकित हये उठत, एराओ तेमनि एक्से-ण्टेर एकटु खुँत किम्वा काँटा-चाम्चेर अल्प विपर्यय देखले ठिक

मुख दिये—मुँह से। वेरोतेइ चाय ना—निकलना ही नहीं चाहता। यतटुकु—जो थोड़ी-वहुत। हाल—वर्तमान काल, हाल की। वड़ोजोर—मुश्किल से। केना-वेचा—खरीद-फरोख्त। मने करले—सोचने पर। एदेर—इनके। खाँटि—विशुद्ध। ठकते हवे—ठगा जाऊँगा। ताते... पोषावे ना—इसमें मजूरी पूरी नहीं पड़ेगी। याइ होक्—जो हो। गिल्टि-करा—मुलम्मा चढ़ी हुई। दरजार...थेके—दरवाजे की दराज से। आर—और। ठिकाना—पता। पाके—भँवर में। घुरे-घुरे—घूम-घूम कर। नियेइ—ले कर। दिनेर पर दिन—दिन पर दिन। छोँया—स्पर्श। नाओयार—स्नान का। कण्टकित...उठत—रोमाञ्चित हो उठतीं। एराओ—ये भी। खुँत—त्रुटि, दोष।

सेमनि करेइ अपराधीर मनुष्यत्व सम्बन्धे सन्दिहान हये ओठे। तारा दिशि पुतुल, एरा विलिति पुतुल। मनेर गतिवेगे एरा चले ना, अभ्यासेर-दम-देओया कले एदेर चालाय। फल हल एइ ये, मेये जातेर उपरेइ आमार मने मने अश्रद्धा जन्मालो; आमि ठिक करलुम, ओदेर वुद्धि यखन कम तखन स्नान-आचमन-उपवासेर अकर्म-काण्ड प्रकाण्ड ना हले ओरा वाँचे की करे। वइये पड़ेछि, एकरकम जीवाणु आछे से क्रमागतइ घोरे। किन्तु, मानुष घोरे ना, मानुष चले। सेइ जीवाणुर परिवर्धित संस्करणेर सङ्गेइ कि विधाता हतभाग्य पुरुषमानुषेर विवाहेर सम्बन्ध पाति-येछेन।

ए दिके वयस यत वाड़ते चलल विवाह सम्बन्धे द्विधाओ तत वेड़े उठल। मानुषेर एकटा वयस आछे यखन से चिन्ता ना करेओ विवाह करते पारे। से वयस पेरोले विवाह करते दुःसाहसिकतार दरकार हय। आमि सेइ वेपरोया दलेर लोक नइ। ता छाड़ा कोनो प्रकृतिस्थ मेये विना कारणे एक निश्वासे आमाके केन ये विये करे फेलवे, आमि ता किछुतेइ भेवे पाइ ने। शुनेछि भालोवासा अन्ध, किन्तु एखाने सेइ अन्धेर उपर तो कोनो भार नेइ। संसारवुद्धिर दुटो चोखेर चेये आरओ वेशि चोख आछे—सेइ चक्षु यखन विना नेशाय आमार दिके ताकिये देखे तखन आमार

तेमनि करेइ—उसी प्रकार से। सन्दिहान...ओठे—शंकालु हो जाती हैं। दिशि पुतुल—देसी गुडियाँ। विलिति—विलायती। दम...चालाय—चावी भरी जाने वाली कल से ये चलती हैं। मेये...उपरेइ—(सम्पूर्ण) स्त्री-जाति पर। ओदेर—उनमें। बाँचे की करे—जीती कैसे हैं। वइये—पुस्तकों में। घोरे—चक्कर काटता है। पातियेछेन—स्थापित किया है।

ए दिके—इधर। यत—जितनी। वाड़ते चलल—बढ़ने लगी। तत—उतनी। पेरोले—पार हो जाने पर। दरकार—आवश्यकता। वेपरोया—वेपरवाह। ता छाड़ा—इसके अतिरिक्त। केन—क्यों। विये—विवाह। ता—यह। किछुतेइ—किसी तरह भी। भेवे...ने—सोच नहीं पाता। भालोवासा—प्रेम। एखाने—यहाँ। दुटो...चेये—दो आँखों की अपेक्षा। वेशि—अधिक। नेशाय—नशे के। दिके...देखे—ओर ताकती हैं।

मध्ये की देखते पाय आमि ताइ भावि। आमार गुण निश्चयइ अनेक आछे, किन्तु सेगुलो तो धरा पड़ते देरि लागे, एक चाहनितेइ बोझा याय ना। आमार नासार मध्ये ये खर्वता आछे बुद्धिर उन्नति ता पूरण करेछे जानि; किन्तु नासाटाइ थाके प्रत्यक्ष हये, आर भगवान बुद्धिके निराकार करे रेखे दिलेन। याइ होक, यखन देखि कोनो साबालक मेये अत्यल्प कालेर नोटिशेइ आमाके बिये करते अत्यल्पमात्र आपत्ति करे ना, तखन मेयेदेर प्रति आमार श्रद्धा आरओ कमे। आमि यदि मेये हतुम ता हले श्रीयुत सनत्कुमारेर निजेर खर्व नासार दीर्घनिश्वासे तार आशा एवं अहंकार धूलिसात् हते थाकत।

एमनि करे आमार विवाहेर-बोझाइ-हीन नौकाटा माझे माझे चड़ाय ठेकेछे, किन्तु घाटे एसे पौँछय नि। स्त्री छाड़ा संसारेर अन्यान्य उपकरण व्यावसार उन्नतिर सङ्गे बेड़े चलते लागल। एकटा कथा भुलेछिलुम, वयसओ बाड़छे। हठात् एकटा घटनाय से कथा मने करिये दिले।

अभ्रेर खनिर तदन्ते छोटोनागपुरेर एक शहरे गिये देखि, पण्डित-मशाय सेखाने शालवनेर छायाय छोट्ट एकटि नदीर धारे दिव्यि बासा बेँधे बसे आछेन। ताँर छेले सेखाने काज करे। सेइ शालवनेर प्रान्ते आमार ताँबु पड़ेछिल। एखन देश जुड़े

ताइ भावि—वही सोचता हूँ। सेगुलो—वे। धरा...लागे—पकड़ में आने में देर लगती है। चाहनितेइ—नज़र में ही। बोझा...ना—समझ मे नही आता। थाके—रहती है। याइ होक—जो हो। साबालक—बालिग। हतुम—होता। ता हले—तो।

एमनि करे—इसी प्रकार। बोझाइ-हीन—बिना लदी, खाली। माझे माझे—बीच बीच में। चड़ाय ठेकेछे—नदी के द्वीप पर आ कर लगी है। घाटे...नि—घाट, किनारे नहीं पहुँची। छाड़ा—अतिरिक्त। व्यावसार—व्यवसाय की। बेड़े....लागल—बढ़ने लगे। कथा—बात। मने...दिले—याद दिला दी।

खनिर तदन्ते—खान की खोज में। मशाय—महाशय। धारे—किनारे। दिव्यि...बेँधे—अच्छा-खासा घर बना कर। ताँर छेले—उनका लड़का। प्रान्ते—किनारे। ताँबु—तम्बू। देश जुड़े—ज़माने भर में।

आमार वनेर ख्याति।' पण्डित-मशाय बललेन, काले आमि ये असामान्य हये उठब ए तिनि पूर्वेइ जानतेन। ता हबे, किन्तु आश्चर्यरकम गोपन करे रेखेछिलेन। ता छाड़ा कोन् लक्षणेर द्वारा जेनेछिलेन आमि तो ता बलते पारि ने। बोध करि असामान्य लोकदेर छात्र-अवस्थाय षत्वणत्वज्ञान थाके ना। काशीश्वरी श्वशुरबाड़िते छिल, ताइ विना बाधाय आमि पण्डित-मशायेर घरेर लोक हये उठलुम। कयेक वत्सर पूर्वे ताँर स्त्री-वियोग हयेछे—किन्तु तिनि नातनिते परिवृत। सबगुलि ताँर स्वकीया नय, तार मध्ये दुटि छिल ताँर परलोकगत दादार। वृद्ध एदेर निये आपनार वार्धक्येर अपराह्णके नाना रङे रङिन करे तुलेछेन। ताँर अमरुशतक आर्यासप्तशती हंसदूत पदाङ्क-दूतेर श्लोकेर धारा नुड़िगुलिर चारि दिके गिरिनदीर फेनोच्छल प्रवाहेर मतो एइ मेयेगुलिके घिरे घिरे सहास्ये ध्वनित हये उठछे।

आमि हेसे बललुम, "पण्डित-मशाय, व्यापारखाना की!"

तिनि बललेन, "बाबा, तोमादेर इंरेजि शास्त्रे बले ये, शनिग्रह चाँदेर माला परे थाकेन—एइ आमार सेइ चाँदेर माला।"

सेइ दरिद्र घरेर एइ दृश्यटि देखे हठात् आमार मने पड़े गेल, आमि एका। बुझते पारलुम, आमि निजेर भारे निजे क्लान्त हये पड़ेछि। पण्डित-मशाय जानेन ना ये ताँर वयस हयेछे,

---

काले—भविष्य में। ता हबे—सो होगा। ता...पारि ने—सो नहीं कह सकता। बोध करि—लगता है। षत्वणत्वज्ञान—ष और ण के प्रयोग का ज्ञान। श्वशुरबाड़िते—ससुराल में। ताइ—इसलिए। घरेर लोक—घर का आदमी। तिनि—वे। नातनिते—पौत्रियों, दौहित्रियों से। सबगुलि—सभी। ताँर—उनके। दादार—बड़े भाई की। एदेर—इन्हें। करे तुलेछेन—बना लिया है। नुड़िगुलिर—बटियों के। दिके—ओर। मतो—समान। मेयेगुलिके—लड़कियों को।

मशाय—महाशय। व्यापारखाना—मामला।

बाबा—वत्स, बेटा। परे थाकेन—पहने रहते हैं।

मने पड़े गेल—याद आ गया। बुझते पारलुम—समझ गया। हये पड़ेछि—हो गया हूँ। वयस हयेछे—उम्र हो गई है।

किन्तु आमार ये हयेछे से आमि स्पष्ट जानलुम। वयस हयेछे वलते एइटे वोझाय, निजेर चारि दिकके छाड़िये एसेछि, चार पाशे ढिले हये फाँक हये गेछे। से फाँक टाका दिये, ख्याति दिये, वोजानो याय ना। पृथिवी थेके रस पाच्छि ने, केवल वस्तु संग्रह करछि, एर व्यर्थता अभ्यासवशत भुले थाका याय। किन्तु, पण्डित-मशायेर घर यखन देखलुम तखन वुझलुम, आमार दिन शुष्क, आमार रात्रि शून्य। पण्डित-मशाय निश्चय ठिक करे बसे आछेन ये, आमि ताँर चेये भाग्यवान पुरुष—एइ कथा मने करे आमार हासि एल। एइ वस्तुजगत्के घिरे एकटि अदृश्य आनन्दलोक आछे। सेइ आनन्दलोकेर सङ्गे आमादेर जीवनेर योगसूत्र ना थाकले आमरा त्रिशंकुर मतो शून्ये थाकि। पण्डित-मशायेर सेइ-योग आछे, आमार नेइ, एइ तफात। आमि आराम केदारार दुइ हाताय दुइ पा तुले दिये सिगारेट खेते खेते भावते लागलुम, पुरुषेर जीवनेर चार आश्रमेर चार अधिदेवता। बाल्ये मा; यौवने स्त्री; प्रौढ़े कन्या, पुत्रवधू; वार्धक्ये नातनि, नातबउ। एमनि करे मेयेदेर मध्य दिये पुरुष आपनार पूर्णता पाय। एइ तत्त्वटा मर्मरित शालवने आमाके आविष्ट करे धरल। मनेर सामने आमार भावी वृद्धवयसेर शेषप्रान्त पर्यन्त ताकिये देखलुम—देखे तार निरतिशय नीरसताय हृदयटा हाहाकार करे उठल। ऐ मरुपथेर मध्य दिये मुनफार वोझा घाड़े करे निये कोथाय गिये मुख थुबड़े पड़े मरते हवे! आर देरि

वलते—कहने से। छाड़िये एसेछि—पीछे छोड़ आया हूँ। फाँक—दराज। टाका दिये—रुपयों के द्वारा। वोजानो...ना—पाटी नहीं जा सकती। थेके—से। बसे आछेन—बैठे हुए हैं। चेये—अपेक्षा। मने करे—सोच कर। ना थाकले—न रहने पर। तफात—अन्तर। आराम केदारार—आराम कुर्सी के। हाताय—हत्थों पर। पा तुले दिये—पैर रख कर। खेते...लागलुम—पीते-पीते सोचने लगा। नातबउ—पौत्र वधू। एमनि करे—इसी प्रकार। मध्य दिये—बीच से। शेष प्रान्त—आखिरी किनारे। ताकिये देखलुम—ताका। मुनफार—मुनाफे का। घाड़े...निये—(गर्दन) सिर पर उठा कर। मुख थुबड़े—मुँह के बल। आर—और।

करले तो चलवे ना। सम्प्रति चल्लिश पेरियेछि—यौवनेर शेष-थलिटि झेड़े नेवार जन्ये पञ्चाश रास्तार धारे वसे आछे, तार लाठिर डगाटा एइखान थेके देखा याच्छे। एखन पकेटेर कथाटा वन्ध रेखे जीवनेर कथा एकटुखानि भेवे देखा याक। किन्तु, जीवनेर ये अंशे मुलतुवि पड़ेछे से अंशे आर तो फिरे याओया चलवे ना। तवु तार छिन्नताय तालि लागावार समय एखनो सम्पूर्ण याय नि।

एखान थेके काजेर गतिके पश्चिमेर एक शहरे येते हल। सेखाने विश्वपतिवावु धनी वाङालि महाजन। ताँके निये आमार काजेर कथा छिल। लोकटि खुव हुँशियार, सुतरां ताँर सङ्गे कोनो कथा पाका करते विस्तर समय लागे। एकदिन विरक्त हये यखन भावछि, 'एके निये आमार काजेर सुविधा हवे ना', एमन-कि, चाकरके आमार जिनिसपत्र प्याक करते वले दियेछि, हेनकाले विश्वपतिवावु सन्ध्यार समय एसे आमाके वललेन, "आपनार सङ्गे निश्चयइ अनेकरकम लोकेर आलाप आछे, आपनि एकटु मनोयोग करले एकटि विधवा वेँचे याय।"

घटनाटि एइ।—

नन्दकृष्णवावु वेरेलिते प्रथमे आसेन एकटि वाङालि-इंरेजि स्कुलेर हेड्मास्टार हये। काज करेछिलेन खुव भालो। सकलेइ आश्चर्य हयेछिल—एमन सुयोग्य सुशिक्षित लोक देश छेड़े,

---

चल्लिश पेरियेछि—चालीस पार कर गया हूँ। शेष...जन्ये—अन्तिम थैली को झाड़ डालने के लिए। पञ्चाश—पचासवें वर्ष। धारे—किनारे। डगाटा—अग्रभाग, सिरा। एइखान थेके—यहीं से। पकेटेर—जेब की (आर्थिक)। एकटुखानि—तनिक। भेवे...याक—सोच कर देखी जाए। मुलतुवि पड़ेछे—स्थगित हो गया है।

एखान थेके—यहाँ से। गतिके—वजह से। कथा—वात। पाका—पक्की। विरक्त—परेशान। यखन—जव। एके निये—इसको ले कर। काजेर...हवे ना—काम नहीं वनेगा। एमन कि—यहाँ तक कि। जिनिसपत्र—चीज-वस्त। हेनकाले—ऐसे समय। आलाप—परिचय। एकटु—थोड़ा।

वेरेलिते—वरेली में। भालो—अच्छा। आश्चर्य—विस्मित।

एत दूरे, सामान्य वेतने चाकरि करते एलेन की कारणे। केवल ये परीक्षा पास कराते ताँर ख्याति छिल ता नय, सकल भालो काजेइ तिनि हात दियेछिलेन। एमन समय केमन करे बेरिये पड़ल, ताँर स्त्रीर रूप छिल बटे किन्तु कुल छिल ना; सामान्य कोन् जातेर मेये, एमन-कि ताँर छोँओया लागले पानीय जलेर पानीयता एवं अन्यान्य निगूढ़ सात्त्विक गुण नष्ट हये याय। ताँके यखन सबाइ चेपे धरले तिनि बललेन, हाँ, जाते छोटो बटे, किन्तु तबु से ताँर स्त्री। तखन प्रश्न उठल, एमन विवाह वैध हय की करे। यिनि प्रश्न करेछिलेन नन्दकृष्णबाबु ताँके बललेन, "आपनि तो शालग्राम साक्षी करे परे परे दुटि स्त्री विवाह करेछेन, एवं द्विवचनेओ सन्तुष्ट नेइ तार बहु प्रमाण दियेछेन। शालग्रामेर कथा बलते पारि ने किन्तु अन्तर्यामी जानेन, आमार विवाह आपनार विवाहेर चेये वैध, प्रतिदिन प्रति मुहूर्ते वैध—एर चेये बेशि कथा आमि आपनादेर सङ्गे आलोचना करते चाइ ने।"

याके नन्दकृष्ण एइ कथागुलि बललेन तिनि खुशि हन नि। तार उपरे लोकेर अनिष्ट करबार क्षमताओ ताँर असामान्य छिल। सुतरां सेइ उपद्रवे नन्दकृष्ण बेरिलि त्याग करे एइ वर्तमान शहरे एसे ओकालति शुरु करलेन। लोकटा अत्यन्त खुँत्खुँते छिलेन—उपवासी थाकलेओ अन्याय मकद्दमा तिनि किछुतेइ नितेन ना। प्रथमटा ताते ताँर यत असुविधा होक, शेषकाले उन्नति हते लागल। केनना, हाकिमरा ताँके सम्पूर्ण

ता नय—इतना ही नहीं। **हात दियेछिलेन**—हाथ लगाया था। **केमन करे**—क्यों कर। **बेरिये पड़ल**—जाहिर हुआ। **बटे**—अवश्य, सचमुच। **मेये**—स्त्री। **छोँओया लागले**—छूत, स्पर्श होने से। **सबाइ...धरले**—सभी ने आ कर पकड़ा। **तबु**—फिर भी। **तखन**—तब। **एमन**—ऐसा। **यिनि**—जिन्होंने। **परे परे**—एक के बाद एक। **कथा...पारि ने**—बात (तो) नहीं कह सकता। **चेये**—अपेक्षा। **बेशि**—अधिक। **आलोचना**—चर्चा।

कथागुलि—बातें। **तार उपरे**—तिस पर। **बेरिलि**—बरेली। **ओकालति**—वकालत। **खुँत्खुँते**—मीन-मेख निकालने वाले। **अन्याय**—झूठा। **किछुतेइ**—किसी तरह भी। **ताते**—इससे। **केनना**—क्योंकि।

विश्वास करतेन। एकखानि वाड़ि करे एकटु जमिये वसेछेन एमन समय देशे मन्वन्तर एल। देश उजाड़ हये याय। यादेर उपर साहाय्यवितरणेर भार छिल तादेर मध्ये केउ केउ चुरि करछिल वले तिनि म्याजिस्ट्रेटके जानातेइ म्याजिस्ट्रेट वललेन, "साधुलोक पाइ कोथाय ?"

तिनि वललेन, "आमाके यदि विश्वास करेन आमि ए काजेर कतक भार निते पारि।"

तिनि भार पेलेन एवं एइ भार वहन करते करतेइ एकदिन मध्याह्ने माठेर मध्ये एक गाछतलाय मारा यान। डाक्तार वलले, ताँर हृत्पिण्डेर क्रिया वन्ध हये मृत्यु हयेछे।

गल्पेर एतटा पर्यन्त आमार पूर्वेइ जाना छिल। केमन एकटा उच्च भावेर मेजाजे एँरइ कथा तुले आमादेर क्लावे आमि वलेछिलुम, "एइ नन्दकृष्णेर मतो लोक यारा संसारे फेल करे शुकिये मरे गेछे—ना रेखेछे नाम, ना रेखेछे टाका—ताराइ भगवानेर सहयोगी हये संसारटाके उपरेर दिके—"

एइटुकु मात्र वलतेइ भरा पालेर नौका हठात् चड़ाय ठेके याओयार मतो, आमार कथा माझखाने वन्ध हये गेल। कारण, आमादेर मध्ये खुव एकजन सम्पत्ति ओ प्रतिपत्तिशाली लोक खवरेर कागज पड़छिलेन—तिनि ताँर चशमार उपर थेके आमार प्रति दृष्टि हेने वले उठलेन, "हियार हियार !"

वाड़ि करे—घर वना कर। जमिये वसेछेन—जम कर वैठे थे। एमन समय—इसी समय। मन्वन्तर—दुर्भिक्ष। वले—इसलिए।

कतक—कुछ। माठेर मध्ये—मैदान में। गाछतलाय—वृक्ष के नीचे। डाक्तार—डाक्टर।

एतटा पर्यन्त—यहाँ तक। मेजाजे—मानसिक अवस्था में। एँरइ... तुले—इन्हीं की वात उठा कर। आमादेर—अपने। यारा—जो। ना... नाम—न नाम पैदा कर सके। टाका—रुपये।

एइटुकु—इतना-भर। भरा....मतो—(हवा) भरे पाल वाली नौका अकस्मात् नदी के द्वीप में फँस (टकरा) जाने की तरह। माझखाने—वीच में। वन्ध—वन्द। आमादेर मध्ये—हमलोगों के वीच। खवरेर कागज—अखवार। तिनि ताँर—उन्होंने अपने। थेके—से। दृष्टि हेने—दृष्टि निक्षेप करते हुए।

याक गे। शोना गेल, नन्दकृष्णेर विधवा स्त्री ताँर एकटि मेयेके निये एइ पाड़ातेइ थाकेन। देओयालिर रात्रे मेयेटिर जन्म हयेछिल बले बाप तार नाम दियेछिलेन दीपालि। विधवा कोनो समाजे स्थान पान ना बले सम्पूर्ण एकला थेके एइ मेयेटिके लेखापड़ा शिखिये मानुष करेछेन। एखन मेयेटिर वयस पँचिसेर उपर हबे। मायेर शरीर रुग्ण एवं वयसओ कम नय—कोन्‌दिन तिनि मारा याबेन, एइ मेयेटिर कोथाओ कोनो गति हबे ना। विश्वपति आमाके विशेष अनुनय करे बललेन, "यदि एर पात्र जुटिये दिते पारेन तो सेटा एकटा पुण्यकर्म हबे।"

आमि विश्वपतिके शुकनो स्वार्थपर निरेट काजेर लोक बले मने मने एकटु अवज्ञा करेछिलुम। विधवार अनाथा मेयेटिर जन्य ताँर एइ आग्रह देखे आमार मन गले गेल। भावलुम, प्राचीन पृथिवीर मृत म्यामथेर पाकयन्त्रेर मध्ये थेके खाद्य बीज बेर करे पुँते देखा गेछे, तार थेके अंकुर बेरियेछे—तेमनि मानुषेर मनुष्यत्व विपुल मृतस्तूपेर मध्ये थेकेओ सम्पूर्ण मरते चाय ना।

आमि विश्वपतिके बललुम, "पात्र आमार जाना आछे, कोनो बाधा हबे ना। आपनारा कथा एवं दिन ठिक करुन।"

"किन्तु मेये ना देखेइ तो आर—"

"ना देखेइ हबे।"

याक गे—जाने दो। मेयेके—लड़की को। पाड़ातेइ—मुहल्ले में ही। थाकेन—रहती हैं। नाम दियेछिलेन—नाम रखा था। पान ना—नहीं पातीं। बले—इसलिए। थेके—रह कर। लेखापड़ा—लिखना-पढ़ना। मानुष करेछेन—पाल-पोस कर बड़ा किया है। पँचिसेर—पच्चीस के। गति...ना—ठिकाना नहीं होगा। पात्र—वर, लड़का।

शुकनो—शुष्क, रूखा। निरेट...लोक—ठोस काम-काजी व्यक्ति। जन्य—लिए। गले गेल—विगलित हो गया। भावलुम—सोचा। म्यामथेर—(अं०) मैमथ, भीमगज के। मध्ये थेके—में से। बेर करे—निकालकर। पुँते...गेछे—बो कर देखा गया है। बेरियेछे—निकला है। चाय ना—नहीं चाहता।

आपनारा—आपलोग। कथा—बात।

"किन्तु, पात्र यदि सम्पत्तिर लोभ करे से वड़ो वेशि नेइ। मा मरे गेले केवल ऐ वाड़िखानि पावे, आर सामान्य यदि किछु पाय।"

"पात्रेर निजेर सम्पत्ति आछे, सेजन्ये भावते हवे ना।"

"ताँर नाम विवरण प्रभृति—"

"से एखन वलव ना, ता हले जानाजानि हये विवाह फेँसे येते पारे।"

"मेयेर माके तो तार एकटा वर्णना दिते ह्रे।"

"वलवेन, लोकटा अन्य साधारण मानुषेर मतो दोषे गुणे जड़ित। दोष एत वेशि नेइ ये भावना हते पारे; गुणओ एत वेशि नेइ ये लोभ करा चले। आमि यतदूर जानि ताते कन्यार पितामातारा ताके विशेष पछन्द करे, स्वयं कन्यादेर मनेर कथा ठिक जाना याय नि।"

विश्वपतिवावु एइ व्यापारे यखन अत्यन्त कृतज्ञ हलेन तखन ताँर उपरे आमार भक्ति वेड़े गेल। ये कारवारे इतिपूर्वे ताँर सङ्गे आमार दरे वनछिल ना, सेटाते लोकसान दियेओ रेजिस्ट्री दलिल सइ करवार जन्ये आमार उत्साह हल। तिनि यावार समय वले गेलेन, "पात्रटिके वलवेन, अन्य सव विषये याइ होक, एमन गुणवती मेये कोथाओ पावेन ना।"

ये मेये समाजेर आश्रय थेके एवं श्रद्धा थेके वञ्चित ताके यदि हृदयेर उपर प्रतिष्ठित करा याय ता हले से मेये कि आप-

---

वड़ो वेशि—(कुछ) वहुत अधिक। ऐ वाड़िखानि—वह घर।
सेजन्ये—उसके लिए। भावते—सोचना। ता हले—ऐसा होने पर।
फेँसे...पारे—रुक, टूट सकता है। वर्णना—विवरण।
मतो—समान। वेशि—अधिक। भावना—चिन्ता। यतदूर—जहाँ तक। पछन्द—पसन्द। मनेर कथा—मन की वात।
व्यापारे—मामले में। भक्ति—आस्था, श्रद्धा। दरे—दर के कारण। लोकसान दियेओ—नुकसान उठा कर भी। दलिल—दस्तावेज। सइ—दस्तखत, सही। वले गेलेन—कह गए।
मेये—लड़की।

नाके उत्सर्ग करते किछुमात्र कृपणता करबे। ये मेयेर बड़ो रकमेर आशा आछे तारइ आशार अन्त थाके ना। किन्तु, एइ दीपालिर दीपटि माटिर, ताइ आमार मतो मेटे घरेर कोणे तार शिखाटिर अमर्यादा हबे ना।

सन्ध्यार समय आलो ज्वेले बिलिति कागज पड़छि, एमन समय खबर एल, एकटि मेये आमार सङ्गे देखा करते एसेछे। बाड़िते स्त्रीलोक केउ नेइ, ताइ व्यस्त हये पड़लुम। कोनो भद्र उपाय उद्भावनेर पूर्वेइ मेयेटि घरेर मध्ये ढुके प्रणाम करले। बाइरे थेके केउ विश्वास करबे ना, किन्तु आमि अत्यन्त लाजुक मानुष। आमि ना तार मुखेर दिके चाइलुम, ना ताके कोनो कथा बललुम। से बलले, "आमार नाम दीपालि।"

गलाटि भारि मिष्टि। साहस करे मुखेर दिके चेये देखलुम, से मुख बुद्धिते कोमलताते माखानो। माथाय घोमटा नेइ, सादा दिशि कापड़, एखनकार फ्याशने परा। की बलि भावछि, एमन समय से बलले, "आमाके विवाह देबार जन्ये आपनि कोनो चेष्टा करबेन ना।"

आर याइ होक, दीपालिर मुखे एमन आपत्ति आमि प्रत्याशाइ

किछुमात्र—तनिक भी। बड़ो रकमेर—बड़ी-बड़ी। थाके ना—नहीं होता। मतो—समान। मेटे...कोणे—मिट्टी के घर के कोने में। अमर्यादा—अनादर, अपमान।

आलो ज्वेले—बत्ती जला कर। बिलिति—विलायत का। देखा करते—मिलने। बाड़िते—घर पर। ताइ—इसी से। व्यस्त—परेशान। घरेर मध्ये—कमरे में। ढुके—घुस कर। बाइरे थेके—बाहर से (बाहरी रूप देख कर)। केउ—कोई। लाजुक—लजीला। दिके—ओर। चाइलुम—ताका। कथा—बात।

गलाटि...मिष्टि—(गला) स्वर बहुत मीठा है। चेये देखलुम—ताका। माखानो—मिश्रित। माथाय...नेइ—सिर पर घूँघट नहीं। कापड़—साड़ी। एखनकार...परा—वर्तमान फैशन के अनुसार पहनी हुई। की ....भावछि—क्या कहूँ, सोच रहा था। विवाह...जन्ये—विवाह करा देने को।

याइ होक—जो हो।

करि नि। आमि भेवे रेखेछिलुम, विवाहेर प्रस्तावे तार देह मन प्राण कृतज्ञताय भरे उठेछे।

जिज्ञासा करलुम, "जाना अजाना कोनो पात्रकेइ तुमि विवाह करवे ना?"

से वलले, "ना, कोनो पात्रकेइ ना।"

यदिच मनस्तत्त्वेर चेये वस्तुतत्त्वेइ आमार अभिज्ञता वेशि—विशेषत नारीचित्त आमार काछे वांला वानानेर चेये कठिन, तवु कथाटार सादा अर्थ आमार काछे सत्य अर्थ वले मने हल ना। आमि वललुम, "ये-पात्र आमि तोमार जन्ये वेछेचि से अवज्ञा करवार योग्य नय।"

दीपालि वलले, "आमि ताँके अवज्ञा करि ने, किन्तु आमि विवाह करव ना।"

आमि वललुम, "से लोकटिओ तोमाके मनेर सङ्गे श्रद्धा करे।"

"किन्तु, ना, आमाके विवाह करते वलवेन ना।"

"आच्छा, वलव ना, किन्तु आमि कि तोमादेर कोनो काजे लागते पारि ने।"

"आमाके यदि कोनो मेये-इस्कुले पड़ावार काज जुटिये दिये एखान थेके कल्‌काताय निये यान ता हले भारि उपकार हय।"

वललुम, "काज आछे, जुटिये दिते पारव।"

एटा सम्पूर्ण सत्य कथा नय। मेये-इस्कुलेर खवर आमि की जानि। किन्तु, मेये-इस्कुल स्थापन करते तो दोष नेइ।

भेवे रेखेछिलुम—सोच रखा था। अजाना—अपरिचित। पात्रकेइ—लड़के से भी।

चेये—अपेक्षा। वस्तुतत्त्वेइ—भौतिकवाद को ही। वेशि—अधिक। काछे—निकट, लिए। वांला...चेये—बँगला वर्तनी (हिज्जों) की अपेक्षा। वेछेचि—चुना है।

ताँके—उनको। वलवेन ना—न कहें।

कोनो...पारि ने—किसी काम नहीं आ सकता। पड़ावार—पढ़ाने का। जुटिये दिये—जुटा कर। एखान थेके—यहाँ से। निये यान—ले जाएँ। ता हले—तो। भारि—बहुत।

दीपालि बलले, "आपनि आमादेर बाड़ि गिये एकबार मायेर सङ्गे ए कथार आलोचना करे देखबेन?"

आमि बललुम, "आमि काल सकालेइ याव।"

दीपालि चले गेल। कागज-पड़ा आमार बन्ध हल। छातेर उपर बेरिये एसे चौकिते बसलुम। तारागुलोके जिज्ञासा करलुम, 'कोटि कोटि योजन दूरे थेके तोमरा कि सत्यइ मानुषेर जीवनेर समस्त कर्मसूत्र ओ सम्बन्धसूत्र निःशब्दे बसे बसे बुनछ।'

एमन समये कोनो खबर ना दिये हठात् विश्वपतिर मेजो छेले श्रीपति छाते एसे उपस्थित। तार सङ्गे ये-आलोचनाटा हल, तार मर्म एइ—

श्रीपति दीपालिके विवाह करबार आग्रहे समाज त्याग करते प्रस्तुत। बाप बलेन, एमन दुष्कार्य करले तिनि ताके त्याग करबेन। दीपालि बले, तार जन्ये एत बड़ो दुःख अपमान ओ त्याग स्वीकार केउ करबे, एमन योग्यता तार नेइ। ता छाड़ा श्रीपति शिशुकाल थेके धनीगृहे लालित; दीपालिर मते, से समाजच्युत एवं निराश्रय हये दारिद्र्येर कष्ट सह्य करते पारबे ना। एइ निये तर्क चलछे, किछुते तार मीमांसा हच्छे ना। ठिक एइ संकटेर समय आमि माझखाने प'डे एदेर मध्ये आर-एकटा पात्रके खाड़ा क'रे समस्यार जटिलता अत्यन्त

कथार आलोचना—बात की चर्चा। सकालेइ याव—सुबह ही आऊँगा।

कागज-पड़ा—अखबार पढ़ना। बन्ध—बन्द। छातेर—छत पर। बेरिये एसे—निकल कर। बसलुम—बैठ गया। तारागुलोके—तारों से। थेके—से। बसे...बुनछ—बैठे-बैठे बुनते हो।

मेजो छेले—मँझला लड़का। एसे उपस्थित—आ पहुँचा। आलोचनाटा—चर्चा।

बलेन—कहते हैं। तिनि—वे। तार जन्ये—उसके लिए। केउ करबे—कोई करेगा। ता छाड़ा—इसके अतिरिक्त। करते...ना—नहीं कर सकेगा। मीमांसा—समाधान। माझखाने...मध्ये—बीच में पड़ कर इनके बीच।

वाड़िये तुलेछि। एइजन्ये श्रीपति आमाके एइ नाटकेर थेके प्रूफशिटेर काटा अंशेर मतो बेरिये येते बलछे।

आमि बललुम, "यखन एसे पड़ेछि तखन बेरोच्छि ने। आर, यदि बेरोइ ता हले ग्रन्थि केटे तबे बेरिये पड़ब।"

विवाहेर दिनपरिवर्तन हल ना। केवलमात्र पात्रपरिवर्तन हल। विश्वपतिर अनुनय रक्षा करेछि किन्तु ताते तिनि सन्तुष्ट हन नि। दीपालिर अनुनय रक्षा करि नि किन्तु भावे बोध हल से सन्तुष्ट हयेछे। इस्कुले काज खालि छिल किना जानि ने किन्तु आमार घरे कन्यार स्थान शून्य छिल, सेटा पूर्ण हल। आमार मतो बाजे लोक ये निरर्थक नय, आमार अर्थइ सेटा श्रीपतिर काछे प्रमाण करे दिले। तार गृहदीप आमार कल्‌कातार वाड़ितेइ ज्वलल। भेवेछिलुम, समयमतो विवाह ना सेरे राखार मुलतवि असमये विवाह करे पूरण करते हवे, किन्तु देखलुम, उपरओयाला प्रसन्न हले दुटो-एकटा क्लास डिङियेओ प्रोमोशन पाओया याय। आज पञ्चान्न बछर वयसे आमार घर नातनिते भरे गेछे, उपरन्तु एकटि नातिओ जुटेछे। किन्तु, विश्वपतिबाबुर सङ्गे आमार कारबार बन्ध हये गेछे—कारण, तिनि पात्रटिके पछन्द करेन नि।

दिसम्बर-जनवरी १९१७-१८।

वाड़िये तुलेछि—बढ़ा दी है। एइजन्ये—इसीलिए। मतो...बलछे—तरह निकल जाने को कहता है।

एसे पड़ेछि—आ पड़ा हूँ। बेरोच्छि ने—निकलता नहीं। आर—और।

ताते—उससे। हन नि—नहीं हुए। भावे—ढब से। बाजे लोक—तुच्छ व्यक्ति। काछे—निकट। वाड़ितेइ—घर पर ही। भेवेछिलुम—सोचा था। समयमतो—यथासमय। ना...राखार—न निबटा रखने के। मुलतवि—स्थगित कार्य (को)। डिङियेओ—पार करके भी। पञ्चान्न बछर—पचपन बरस। नातनिते—दौहित्रियों, पौत्रियों से। पछन्द—पसन्द।

बँगला शब्दों के उच्चारण की कुछ विशेषताएँ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की २१ कहानियों का यह संग्रह नागराक्षरों में प्रकाशित हो रहा है। मूल बँगला कहानियाँ ज्यों की त्यों हिन्दी में लिख दी गयी हैं। लेकिन बँगला उच्चारण की अपनी विशेषताएँ हैं। हिन्दी उच्चारण से इसमें अन्तर है। बँगला शब्दों के ठीक-ठीक उच्चारण के लिए उन विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है। पाठकों के सुभीते के लिए बँगला उच्चारण की कुछ विशेषताओं पर नीचे प्रकाश डालने की चेष्टा की जा रही है।

(१) बँगला में 'अ' का उच्चारण हिन्दी के 'अ' जैसा नहीं होता। वह 'अ' और 'ओ' के बीच में होता है, जैसे अंग्रेजी के 'not' में 'O'। बँगला में लिखते हैं 'खाव', लेकिन पढ़ते हैं 'खावो' जैसा।

(२) ह्रस्व और दीर्घ इ, उ के उच्चारण में बँगला में काफ़ी स्वतन्त्रता है। यह लचीलापन हिन्दी में नहीं है। दीर्घ ई और ऊ अगर पद के आदि में हों तो इनका उच्चारण प्रायः ह्रस्व जैसा होता है। जैसे 'ईश्वर' का उच्चारण 'इश्वर' और 'पूजा' का 'पुजा' होगा।

(३) एकार का उच्चारण 'ए' और 'ऐ' के बीच जैसा होता है। जैसे बँगला 'एक' में 'ए' का उच्चारण हिन्दी के 'ऐसा' में 'ऐ' के समान होता है।

(४) ऐकार का उच्चारण 'ओइ' जैसा होता है। जैसे, 'ऐकतान'—'ओइकतान'।

(५) अनुस्वार के उच्चारण में 'ग' का अंश निहित रहता है। जैसे, हिमांशु—हिमांग्शु, बांला-बांग्ला।

(६) हिन्दी के समान, पद का अन्त्य वर्ण प्रायः हलन्त उच्चरित होता है, जैसे, आमार—आमार्, आंधार—आँधार्। लेकिन कविता में छन्दानुरोध से 'अ' के उच्चारण का भी अनुसरण होता है। जैसे 'वकुल-बागान' में 'वकुल' का उच्चारण वकुल (ो) जैसा भी हो सकता है।

(७) बँगला में 'क्ष' का उच्चारण पद के आदि में बराबर 'ख' होगा। जैसे, क्षिति—खिति; क्षमा—खमा। लेकिन अन्यत्र 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' होगा। जैसे लक्षण—लक्खण।

(८) बँगला में 'ण' और 'न' दोनों का उच्चारण सदा 'न' ही होता है।

(९) बँगला में 'व' और 'व' का अन्तर नहीं है। ये दोनों ही 'व' पढ़े जाते हैं। तत्सम शब्दों के लिखने में भले ही 'व' को 'व' ही लिखा

जाय लेकिन उसका उच्चारण 'व' होता है। जैसे लिखा तो 'विवश' जाता है लेकिन पढ़ा जाएगा 'विवश'।

(१०) अगर किसी दूसरी भाषा का कोई शब्द अपनाना पड़े और उसमें 'व' का उच्चारण रहे तो उसके लिए बँगला में 'ओय' लिखते हैं। जैसे, 'तिवारी' का 'तिओयारी'; 'हवा' का 'हाओया'। यहाँ 'ओवा' का उच्चारण 'वा' ही होगा।

(११) 'य' के उच्चारण में एक विशेषता है। जब 'य' पद के आदि में हो तो उसका उच्चारण 'ज' होता है। जैसे, यात्रा—जात्रा; योग—जोग। लेकिन 'य' अगर पद के मध्य या अन्त में हो तो उसे 'य' ही पढ़ेंगे। जैसे, नियम—नियम; नयन—नयन; समय—समय।

(१२) बँगला में तीनों सकारों का उच्चारण तालव्य 'श' की तरह होता है। लेकिन दन्त्य 'स' के साथ अगर किसी व्यञ्जन वर्ण का योग हो तो उसका उच्चारण 'स' ही होता है। जैसे, स्तब्ध—स्तब्ध; स्निग्ध—स्निग्ध।

(१३) अगर मकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह वर्ण सानुनासिक द्वित्व हो कर मकार का लोप कर देता है। जैसे, छद्म—छद्दँ; पद्म—पद्दँ। लेकिन पद के आदि में ऐसा होने पर द्वित्व नहीं होता। जैसे, स्मरण—सँरण; स्मृति—सृँति।

(१४) अगर यकार अथवा वकार के साथ किसी वर्ण का योग हो तो वह द्वित्व हो कर यकार-वकार का लोप कर देगा। जैसे, भृत्य—भृत्त; नित्य—नित्त; वाद्य—वाद्द। लेकिन पद के आदि में केवल वकार का लोप हो जाता है। जैसे, द्वार—दार; ज्वाला—जाला।

(१५) अगर यकार में रेफ हो तो पद के मध्य अथवा अन्त में रहने पर भी जकार हो जाता है। जैसे, सूर्य्य—सूर्ज्ज; धैर्य्य—धैर्ज्ज।

(१६) प्रस्तुत ग्रंथ में 'व' के बदले 'ओय' ही लिखा हुआ है, अतएव जहाँ पर 'ओय' हो वहाँ 'व' ही पढ़ना चाहिए। जैसे, पाओया—पावा; खाओया—खावा; याओया—जावा।

बँगला व्याकरण सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें

ऊपर बँगला शब्दों की उच्चारण-सम्बन्धी मुख्य विशेषताओं पर हम प्रकाश डाल चुके। अब बँगला व्याकरण की चर्चा करने जा रहे हैं। व्याकरण की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लेना पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

(क) क्रिया रूप

बँगला में क्रिया के विभिन्न रूप हैं। क्रिया के इन विविध रूपों में जो अपरिवर्तित अंश है वही धातु है। धातु निर्णय का सहज उपाय यह है कि उत्तम पुरुष के वर्तमान काल के धातुरूप के अन्तिम 'इ' को हटा देने से जो रूप रह जाता है वही धातु है। जैसे, आमि याइ, (मैं जाता हूँ)। इसमें 'याइ' का 'इ' हटाने पर 'या' रह जाता है। 'या' धातु है। इसी प्रकार 'आमि कराइ' में 'करा' धातु है।

बँगला भाषा के दो रूप हैं: (१) साधु, और (२) चलित। 'लिखा', 'शुना' साधु रूप है और 'लेखा', 'शोना' चलित रूप। क्रियापद 'कहियाछे' साधु रूप है और 'कयेछे' चलित रूप है। सर्वनामों के विषय में भी यही बात है। अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में कोई भेद नहीं है। बोलने में चलित रूप का प्रयोग होता है और लिखने में साधु रूप का। वैसे आजकल के लेखक लिखने में भी चलित रूप का ही प्रयोग करते हैं।

सकर्मक और अकर्मक के अलावा बँगला में क्रिया के दो भेद और हैं: समापिका और असमापिका।

धातु में जिस विभक्ति के योग से समापिका क्रियापद बनता है उसे 'तिङ' कहते हैं और उस क्रियापद को 'तिङन्त' पद कहते हैं। जैसे, कर् धातु से तिङन्त पद करे, करेन, करिस, करि आदि। इसी प्रकार जिस प्रत्यय के योग से असमापिका क्रियापद अथवा विशेष्य-विशेषण बने, उसे 'कृत्' कहते हैं और उस पद को 'कृदन्त' पद कहते हैं। जैसे कर् धातु से कृदन्त द (असमापिका क्रिया) करिते (करते), करिया (करके), करते, क'रे आदि।

प्रेरणार्थक धातु (णिजन्त धातु) बनाने के लिए बँगला के धातुरूप में 'आ' प्रत्यय लगाते हैं, जैसे कर् से णिजन्त धातु 'करा' होगा।

बँगला में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार क्रिया नहीं बदलती। जैसे, मेयेरा याच्छे (लड़कियाँ जा रही हैं); छेलेरा याच्छे (लड़के जा रहे हैं)।

क्रिया के तीन काल हैं: भूत, भविष्यत् और वर्तमान। लेकिन बँगला की क्रिया का काल-विभाग हिन्दी की तरह नहीं होता।

बँगला के क्रियापद में वचन-भेद नहीं होता। जैसे, से याइतेछे (वह जा रहा है), ताहारा याइतेछे (वे लोग जा रहे हैं)।

पुरुष तीन प्रकार के हैं: प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष के गौरवार्थक और सामान्य दो रूप हैं। जैसे, तिनि करेन (वे करते हैं), से

करे (वह करता है)। मध्यम पुरुष के गौरवार्थक, सामान्य और तुच्छ तीन रूप हैं। जैसे, आपनि करेन (आप करते हैं), तुमि कर (तुम करते हो) तथा तुइ करिस (तू करता है)। उत्तम पुरुष का केवल एक रूप है। जैसे आमि करि (मैं करता हूँ)।

बँगला के काल-भेद तथा उनके नामों की जानकारी भी उपयोगी होगी। बँगला व्याकरणों में दो प्रकार से उनके नाम दिए हुए हैं। नित्यप्रवृत्त, विशुद्ध, अद्यतन, अनद्यतन, परोक्ष, भूत-सामीप्य, वर्तमान-सामीप्य आदि नाम संस्कृत व्याकरण के अनुकरण पर रखे गये हैं। सहज तरीक़े से समझने के लिए उनका नामकरण निम्नलिखित ढँग से किया जाता है :

नाम	उदाहरण (साधु)
नित्यवृत्त वर्तमान	करे (करता है)।
घटमान ,,	करितेछे (कर रहा है)।
पुराघटित ,,	करियाछे (किया है)।
अनुज्ञा ,,	कर (करो)।
साधारण अतीत	करिल (किया)।
नित्यवृत्त ,,	करित (करता)।
घटमान ,,	करितेछिल (कर रहा था)।
पुराघटित ,,	करियाछिल (किया था)।
साधारण भविष्यत्	करिबे (करेगा)।
अनुज्ञा ,,	करिओ (करना)।

क्रिया की विभक्तियाँ

(चलित)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
		गौरवार्थक			
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	छे	छेन	छ	छिस	छि
पुराघटित ,,	एछे	एछेन	एछ	एछिस	एछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	ले	लेन	ले	लि	लाम
नित्यवृत्त ,,	त	तेन	ते	तिस	ताम
घटमान ,,	छिल	छिलेन	छिले	छिलि	छिलाम
पुराघटित ,,	एछिल	एछिलेन	एछिले	एछिलि	एछिलाम
साधारण भविष्यत्	बे	बेन	बे	बि	ब (बो)
अनुज्ञा ,,	बे	बेन	ओ	इस	—

(साधु)

काल का नाम	प्रथम पुरुष सामान्य	प्रथम और मध्यम गौरवार्थक	मध्यम सामान्य	मध्यम तुच्छ	उत्तम पुरुष
नित्यवृत्त वर्तमान	ए	एन	अ	इस	इ
घटमान ,,	इतेछे	इतेछेन	इतेछ	इतेछिस	इतेछि
पुराघटित ,,	इयाछे	इयाछेन	इयाछ	इयाछिस	इयाछि
अनुज्ञा ,,	उक	उन	अ	—	—
साधारण अतीत	इल	इलेन	इले	इलि	इलाम
नित्यवृत्त ,,	इत	इतेन	इते	इतिस	इताम
घटमान ,,	इतेछिल	इतेछिलेन	इतेछिले	इतेछिलि	इतेछिलाम
पुराघटित ,,	इयाछिल	इयाछिलेन	इयाछिले	इयाछिलि	इयाछिलाम
साधारण भविष्यत्	इबे	इबेन	इबे	इबि	इब
अनुज्ञा ,,	इबे	इबेन	इओ (इयो)	इस	—

क्रिया की इन विभक्तियों के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है।

'काट्' (काटना) धातु के नित्यवृत्त वर्तमान का चलित और साधु रूप निम्नलिखित होगा :

चलित	साधु
काटे, काटेन, काट, काटिस, काटि	चलित जैसा ही होगा

घटमान अतीत का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटछिल, काटछिलेन, किटछिले, काटछिलि, तथा काटछिलाम

साधु रूप—काटितेछिल, काटितेछिलेन, काटितेछिले, काटितेछिलि, तथा काटितेछिलाम ।

साधारण भविष्यत् का रूप निम्नलिखित होगा :

चलित रूप—काटबे, काटबेन, काटबे, काटबि, काटबो।

साधु रूप—काटिबे, काटिबेन, काटिबे, काटिबि, काटिबो। इसी प्रकार से अन्य रूप भी समझे जा सकते हैं।

बहुत-से लोग 'लाम' के स्थान पर 'लुम' अथवा 'लेम' का प्रयोग करते हैं।

जैसे, 'काटलाम' (काटा) के बदले 'काटलुम' अथवा 'काटलेम' लिखते हैं।

इसी प्रकार से 'ताम' के बदले 'तुम' अथवा 'तेम' का प्रयोग करते हैं। जैसे, 'काटताम' (काटता) के स्थान पर 'काटतुम' अथवा 'काटतेम' लिखते हैं।

साधारण अतीत में सकर्मक क्रिया में 'ले' तथा अकर्मक क्रिया में 'ल' लगाते हैं। यह चलित रूप में होता है। जैसे, करले (किया), खेले (खाया), दिले (दिया), तथा गेल (गया), शुल (सोया), दौड़ल (दौड़ा)। वैसे इसका व्यतिक्रम भी देखा जाता है। बहुत लोग 'करल' (किया), 'बलल' (बोला) आदि लिखते हैं।

(ख) कारक

बँगला में कारक सात हैं: कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध तथा अधिकरण।

कारक की कई विभक्तियों को मूल विभक्ति कहा जा सकता है। वैसे प्रयोग में आने वाली कई विभक्तियां मुख्यतः कर्ता, कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण सूचक हैं। जैसे के, र, ते क्रमशः कर्म, सम्बन्ध और अधिकरण कारक की विभक्तियाँ हैं। प्रत्येक कारक की अलग विभक्तियाँ नहीं हैं। निम्नलिखित कई विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न कारकों में प्रयुक्त होती हैं:

विभक्ति	कारकों के नाम
ए, य, ते, ये	कर्ता, करण, सम्प्रदान, अधिकरण
रा, एरा	कर्ता (बहुवचन)
दिगके, दिके, देर	कर्म, सम्प्रदान, (बहुवचन)
के, रे	कर्म, सम्प्रदान (एकवचन)
एर (येर), र, कार	सम्बन्ध (एकवचन)
दिगेर, देर	सम्बन्ध (बहुवचन)
देर	कर्म (बहुवचन)
एते	अधिकरण (एकवचन)

बहुत-से स्थानों पर पद योग करने से कारक निष्पन्न होता है। जैसे, बाड़ी थेके (घर से), पेन्सिल दिये (पेन्सिल से), मानुषेर द्वारा (मनुष्य से) आदि। द्वारा, दिये आदि करणकारक-सूचक हैं तथा थेके, अपादानकारक-सूचक। लेकिन द्वारा, दिया आदि को अव्यय मानना उचित है। इनका प्रयोग विभक्ति के बाद भी मिलता है। जैसे, मन्त्रेर द्वारा (मन्त्र से)। इसमें 'एर' सम्बन्धकारक की विभक्ति है और उसके बाद 'द्वारा' का प्रयोग हुआ है।

टा और टि का प्रयोग, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। जैसे, छेलेटा (लड़का), कवितादि (कविता)। इसमें अर्थ ज्यों का त्यों है। टा का प्रयोग प्रायः अनादरसूचक है और 'टि' का प्रयोग बहुत-कुछ आदरसूचक।

गुला, गुलो, गुलि का प्रयोग व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। इनसे बहुवचन सूचित होता है। 'गुला' 'गुलो' अनादर-सूचक हैं और 'गुलि' आदरसूचक। लोकगुला (लोग), जिनिसगुलो (वस्तुएँ), मेयेगुलि (लड़कियाँ)।

'खाना', 'खानि' का प्रयोग केवल पदार्थवाचक शब्दों के साथ होता है। 'खाना' अनादरसूचक है और 'खानि' आदरसूचक। जैसे, मुखखानि (मुख), कागजखाना (कागज़)।

'गण', 'रा', 'एरा' (येरा) का प्रयोग साधारणतः व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तुओं के लिए होता है। जैसे देवगण, छेलेरा (लड़के)।

'ए', 'ये', 'ते', 'ये' के प्रयोग की विधि इस प्रकार है : अकारान्त अथवा व्यञ्जनान्त शब्द हो तो 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे मानुषे, विद्युते। आकारान्त अथवा एकारान्त शब्द हो तो 'य' और 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे छेलेय, सबाय। अगर इनसे भिन्न स्वरान्त शब्द हो तो 'ते' का व्यवहार होता है। जैसे, छुरिते। एकाक्षर शब्द अथवा अन्त में दो स्वर आएँ तो 'ये' का प्रयोग होता है। जैसे, गाये (शरीर में), दइये (दही में)।

विभिन्न कारकों में विभक्ति के प्रयोग

कर्ता कारक :

साधारणतः कर्ता, एकवचन में कोई विभक्ति नहीं होती। जैसे, राम खाच्छे (राम खा रहा है)।

कर्तृवाच्य के प्रयोग से कभी-कभी कर्ता में 'ए' विभक्ति लगती है। जैसे, लोके बले (लोग कहते हैं)।

कर्ता अनिर्दिष्ट होने पर अथवा कर्ता में करण या अधिकरण का भाव रहने पर ए, य, ते, ये, योग करते हैं। जैसे, पोकाय केटेछे (कीड़े ने काटा है), वेदे बले (वेद में कहा गया है), वृष्टिते भासिये दिले (वर्षा ने बहा दिया)।

एक जातीय कर्ता का भाव बताते समय 'ए' का प्रयोग होता है। जैसे, पण्डिते पण्डिते तर्क चलेछे (पण्डितों में तर्क हो रहा है)।

शिव का शिवेर होगा क्योंकि शिव के उच्चारण में व हलन्त की तरह उच्चरित होता है।

विशेषण-पदों में केवल 'र' का योग करते हैं। जैसे, भालर जन्य (अच्छे के लिए)।

समय अथवा अवस्थानवाचक शब्दों में 'कार' योग करते है। जैसे, आजिकार (आज का), उपरकार (ऊपर का)।

व्यक्ति, जन्तु अथवा बड़ी वस्तु के सूचक बहुवचन शब्दों में देर, दिगेर, गंणेर का योग करते हैं। जैसे, छेलेदेर (लड़कों का), जन्तुदिगेर (जन्तुओं का)। व्यक्ति, जन्तु तथा पदार्थवाचक बहुवचन मे गुलार, गुलोर, गुलिर, सकलेर, समूहेर आदि का प्रयोग होता है। जैसे, मेयेगुलिर (लड़कियों का)। जिनिसगुलोर (वस्तुओं का), प्राणि सकलेर (प्राणियों का), इत्यादि।

अधिकरण कारक :

ए, य, ते, ये अधिकरण कारक की विभक्तियां हैं।

अधिकरण दो प्रकार के हैं: कालबोधक और आधारसूचक। क्रिया जब किसी काल में समाप्त होती है तब उसे कालवाचक अधिकरण कहते हैं और जब किसी स्थान पर समाप्त होती है तब वहां आधार-अधिकरण का भाव आ जाता है। प्रभाते आमरा वेड़ाइया थाकि (सवेरे हमलोग टहला करते हैं)। यह कालवाचक अधिकरण का उदाहरण है।

आधार अधिकरण तीन तरह के हैं—ऐकदेशिक, वैषयिक और अभिव्यापक। उदाहरणार्थ :

ऐकदेशिक—ऋषि वने थाकितेन (ऋषि वन में रहते थे)।

वैषयिक—आमि विद्याय आपनार निकट बालक (विद्या में मैं आपके निकट बालक हूँ)।

अभिव्यापक—तिले तैल आछे (तिल में तेल है)।

कालवाचक शब्द के बाद कभी-कभी विभक्ति योग नहीं करते। जैसे, एक समय आमि बिश क्रोस हांटिते पारिताम (एक समय था जब मैं बीस कोस पैदल चल सकता था); ए समय से कोथाय (इस समय वह कहाँ है)। लेकिन अगर विशेषण पद कालवाचक शब्द के पहले न हो तो विभक्ति अवश्य प्रयुक्त होती है। जैसे, दिने घुमाइयो ना (दिन में न सोना)।

क्रिया गमनार्थक होने पर कभी कभी अधिकरण की विभक्ति नहीं लगती। जैसे, काशी पाठाओ (काशी भेजो); कलिकाता याइब (कलकत्ते जाऊँगा)।

बहुवचन में गण, गुला, गुलो, गुलि, सकल आदि के बाद विभक्ति का योग होता है। जैसे, कथागुलिते (बातों में); जीवगणे (जीवों में)।

(ग) सर्वनाम

बँगला में सर्वनाम के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं:

पुरुषवाचक सर्वनाम—आमि (मैं), तुमि (तुम), से (वह) इत्यादि।

निर्देशक या निर्णयसूचक सर्वनाम—ताहा (तद्), इहा (यह), उहा (वह) इत्यादि।

प्रश्नवाचक सर्वनाम—कि (क्या), के (कौन) आदि।

सापेक्ष या समुच्चयी सर्वनाम—ये

अनिर्देश या अनिश्चयसूचक सर्वनाम—केह, केउ (कोई) आदि।

आत्मवाचक सर्वनाम—निजे, आपनि, स्वयं आदि।

साकल्यवाचक सर्वनाम—उभय, सकल, सब आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हैं—उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रथम पुरुष, जिसे हिन्दी में अन्य-पुरुष कहते हैं।

कर्ता कारक के एकवचन में इन पुरुषों के निम्नलिखित रूप हैं:

	सामान्य	तुच्छ	गौरवार्थ
उत्तम पुरुष	आमि (मैं)		
मध्यम पुरुष	तुमि (तुम)	तुइ (तू)	आपनि (आप)
प्रथम पुरुष	से, ताहा, ता (वह)		तिनि (वे)
	ये, याहा, या (जो)		यिनि (जो)
	के (कौन), कि (क्या)		के, किनि (कौन)
	ए, इहा (यह)		इनि (ये)
	ओ, उहा (वह)		उनि (वे)

व्यक्तिबोधक—तिनि, यिनि, के (किनि), इनि, आपनि, तुमि, तुइ, आमि।

व्यक्ति अथवा जन्तुवाचक—से, ये, के।

व्यक्ति, जन्तु अथवा पदार्थवाचक—ए, ओ।

पदार्थ अथवा क्षुद्र जन्तुवाचक—ताहा (ता), याहा (या), कि, इहा, उहा।

वचन और कारक-भेद से सर्वनाम के रूप में परिवर्तन होता है, लेकिन स्त्रीलिंग और पुंलिंग-भेद से सर्वनाम रूप में परिवर्तन नहीं होता। याहाते, ताहाते आदि का प्रयोग क्रिया-विशेषण की तरह होता है।

से, ये, कि, ए, ओ का प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे, से दिन (उस दिन)।

कारकों की विभक्ति सहित सर्वनामों के रूप

उत्तम पुरुष

आमि

(पुंलिंग और स्त्रीलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आमि, मुइ	आमरा, मोरा
कर्म	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरके, मोदिगके, मोदिगेरे, मोदेर
करण	आमाद्वारा, आमार द्वारा, आमाके दिया, आमा-हइते (ह'ते), आमा-कर्तृक	आमादिग (-दिगेर) द्वारा, दिया, कर्तृक; आमादेर दिया, द्वारा
सम्प्रदान	आमाके, आमारे, आमाय, मोरे	आमादिगके, आमादेर, आमादेरे मोदेर, मोदेरे, मोदिगके
अपादान	आमा हइते, आमा ह'ते	आमादेर (आमादिग) हइते
सम्बन्ध	आमार, मोर (मझु), मम	आमादिगेर, आमादेर, मोदेर
अधिकरण	आमाय, आमाते, मोते	आमादिगेते, आमादिगेर, सकले, मोदिगे।

मध्यम पुरुष

तुमि

(स्त्रीलिंग और पुंलिंग में)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तुमि, तुइ	तोमरा, तोरा
कर्म	तोमाके, तोमार, तोके, तोरे तोर	तोमादिगके, तोदेर, तोदिगके
करण	तोमाद्वारा; तोमाकर्तृक, तोर द्वारा	तोमादिगेर द्वारा, तोदेर द्वारा
सम्प्रदान	(कर्म कारक के समान रूप होता है)	
अपादान	तोमा हइते, तोर हइते	तोमादेर हइते, तोदेर हइते
सम्बन्ध	तोमार, तोर, तव	तोमादिगेर, तोमादेर, तोदेर
अधिकरण	तोमाते, तोमाय, तोके, तोय	तोमादिगते, तोमादेर सकले, तोमादिगते

तुइ (तू) शब्द का व्यवहार तीन अर्थों में होता है :

(१) तुच्छार्थ में—निर्लज्ज तुइ क्षत्रिय समाजे (क्षत्रिय समाज में तू निर्लज्ज है)।

(२) स्नेह-वात्सल्य में—तुइ आमार नयनमणि (तू मेरे नयनों की मणि है)।

(३) देवतादि के संबोधन में—तुइ कि बुझिबि श्यामा मरमेर वेदना [श्यामा (माँ काली), तू मर्म-वेदना को क्या समझेगी।]

करण और अपादान का अलग रूप नहीं है। कर्म अथवा सम्बन्ध कारक के रूपों में दिया, द्वारा, हइते योग करने से इन दोनों कारकों का रूप प्राप्त हो जाता है।

आपनि (आप)

चलित		साधु	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
आपनि	आपनारा	आपनि	आपनारा
आपनाके	आपनादिके,-देर	आपनाके	आपनादिगके
आपनार	आपनादेर	आपनार	आपनादिगेर,-देर
आपनाते	—	आपनाते	—

प्रथम पुरुष

तिनि (वे)

	चलित		साधु	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	तिनि	ताँरा	तिनि	ताँहारा
कर्म, सम्प्रदान	ताँके	ताँदिके, ताँदेर	ताँहाके	ताँहादिगके
सम्बन्ध	ताँर	ताँदेर	ताँहार	ताँहादिगेर ताँहादेर
अधिकरण	ताँते	—	ताँहाते	—

यिनि (जो) का रूप तिनि की तरह ही होता है।

उपर्युक्त क्रम के अर्थात् पहली पंक्ति में कर्ता, द्वितीय में कर्म-सम्प्रदान, तृतीय में सम्बन्ध और चतुर्थ में अधिकरण कारक के अन्य सर्वनामों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

इनि (ये)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
इनि	एँरा	इनि	इँहारा
एँके	एँदिके, एँदेर	इँहाके	इँहादिगके
एँर	एँदेर	इँहार	इँहादिगेर, इँहादेर
एँते	—	इँहाते	—

उनि (वे)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
उनि	ओँर	उनि	उँहारा
ओँके	ओँदिके, ओँदेर	उँहाके	उँहादिगके
ओँर	ओँदेर	उँहार	उँहादिगेर, उँहादेर
ओँते	—	उँहाते	—

से (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
से, ता	तारा	से, ताहा	ताहारा
ताके	तादिके, तादेर	ताहाके	ताहादिगके
तार	तादेर	ताहार	ताहादिगेर,ताहादेर
ताते (ताय)	—	ताहाते (ताय)	—

ये, याहा (जो) का रूप से, (ताहा)–जैसा होगा ।

के (कौन)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
के, किनि	काँरा	के, किनि	काँहारा
काके	कादिके, कादेर	काहाके	काहादिगके
कार	कादेर	काहार	काहादिगेर, काहादेर
काते, किसे	—	काहाते	—

ए, इहा (यह)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
ए	एरा	ए, इहा	इहारा
एके	एदिके, एदेर	इहाके	इहादिगके
एर	एदेर	इहार	इहादिगेर, इहादेर
एते	—	इहाते	—

ओ, उहा (वह)

चलित		साधु	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
ओ	ओरा	ओ, उहा	उहारा
ओके	ओदिके, ओदेर	उहाके	उहादिगके
ओर	ओदेर	उहार	उहादिगेर, उहादेर
ओते	—	उहाते	—

ए, इहा, इनि से निकटस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है और ओ, उहा, उनि से दूरस्थ वस्तु या व्यक्ति का निर्देश होता है।

'ताय' (उसको, उसमें) का प्रयोग प्रायः पद्य में होता है।

'किसे' केवल पदार्थ वाचक है।

'किनि' का प्रयोग साधु और चलित दोनों रूपों में प्रायः अप्रचलित हो गया है।